CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रामवेल की परराष्ट्र नीति—क्रामवेल की जीवनी का सारांश—...ल की मृत्यु तथा उसका चरित्र—राजकीय शासन की पुनः ...पना—प्रजातन्त्र-काल का सिंहावलोकन। २४

२२—चार्ल्स द्वितीय

चरित्र तथा धार्मिक विचार—प्यूरिटनों पर अत्याचार—केथलिकों की ...ायता का प्रयत्न—चार्ल्स की परराष्ट्र नीति—हालैंड का युद्ध—डोवर की ...त सन्धि—हालैंड से वैर का अन्त।

चार्ल्स द्वितीय तथा पार्लियामेण्ट—केवेलियर पार्लियामेण्ट तथा ...रेंडन का मंत्रित्व—भयंकर प्लेग तथा अग्नि—केबाल मन्त्रि-मण्डल—...बी का मन्त्रित्व—स्वतन्त्रता-रक्षण नियम—उत्तराधिकार का प्रश्न—...जनैतिक दलबन्दी का प्रारम्भ—चार्ल्स के अन्तिम दिवस। २५६

...३—जेम्स द्वितीय—

चरित्र—मनमथ का विद्रोह तथा खूनी न्यायालय—केथलिक धर्म तथा निरंकुशता का प्रयत्न—जेम्स तथा विश्वविद्यालय—सात पादरियों ...र अभियोग—विलियम को निमंत्रण—रक्तहीन-राज्यक्रान्ति—रक्तहीन ...ाज्य-क्रान्ति का गौरव। २७३

२४—विलियम तृतीय तथा मेरी द्वितीय

अधिकार-घोषणा—विलियम की कठिनाइयाँ—करों की वार्षिक स्वीकृति—उत्तराधिकार-निर्णय-नियम—केबिनेट का प्रारम्भ—धार्मिक शान्ति की स्थापना—प्रेस की स्वतन्त्रता—जातीय ऋण तथा बैंक आफ़ इंगलैंड—विलियम की विदेशी नीति—अँग्रेज़ी उत्तराधिकार का युद्ध—विलियम तथा मेरी का चरित्र। २८१

२५—रानी ऐन

रानी ऐन—स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध—युद्ध का प्रारम्भ—युद्ध में इंगलैंड का भाग—यूट्रेक्ट की संधि—मार्लबरो का प्रारम्भिक जीवन—चरित्र के अवगुण—युद्ध-कला की नीति-निपुणता—पतन तथा मृत्यु—इंगलैंड और स्काटलैंड का संयुक्त राज्य—राजनैतिक दलबन्दी—उत्तराधिकार के लिये षड्यन्त्र। २६...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२६—स्टुअर्ट काल का सिंहावलोकन

इंगलैंड तथा स्काटलैंड—राजसिंहासनों का संयोग—प्रेसबीटी-रियन चर्च—गृह-युद्ध में भाग—प्रजा-तन्त्र-राज्य का काल—पुनर्राज्य स्थापन तथा रक्त-हीन राज्य-क्रान्ति—संयुक्त शासन की स्थापना। ३०४

इंगलैंड तथा आयरलैंड—जेम्स प्रथम— चार्ल्स प्रथम—प्रजातन्त्र राज्य-काल—पुनर्राज्य स्थापना का प्रभाव—रक्त-हीन राज्य-क्रान्ति के पश्चात् की दशा। ३०७

धार्मिक स्थिति—धार्मिक सहन-शीलता का अभाव—ऐंग्लिकन चर्च की प्रधानता—प्यूरिटन दल की प्रधानता—प्यूरटनों पर अत्याचार—केथलिक धर्म के पुनः प्रचार की चेष्टा—सहनशीलता का प्रारम्भ। ३०६

राजा तथा पार्लियामेण्ट—राजा तथा पार्लियामेण्ट में मतभेद—मतभेद के विषय—पार्लियामेण्ट की विजय। ३१२

उपनिवेश तथा व्यापार—समुद्री यात्राएँ—अमेरिका के उप-निवेश—भारतवर्ष में व्यापारिक कोठियाँ—अफ्रीका में व्यापार। ३१४

सामाजिक उन्नति—मध्य श्रेणी—नागरिक जीवन—मनोरंजन तथा पोशाक—व्यापार तथा व्यवसाय—साहित्य तथा विज्ञान। ३२०

हनोवर काल

(१७१४ से)

२७—हनोवर काल की विशेषतायें

मंत्रियों का काल—प्रजा के अधिकार—व्यावसायिक तथा व्यापारिक उन्नति—सामाजिक उन्नति—परराष्ट्र नीति—साम्राज्य की उन्नति। ३३६

२८—जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय

जार्ज प्रथम—जार्ज द्वितीय—प्रथम जेकोबाईट विद्रोह १७१५—अन्तिम जेकोबाईट विद्रोह—जेकोबाईट दल की विफलता। ३४५

विग दल की प्रधानता तथा वालपोल—विग दल का शक्तिकाल—दक्षिण सागर का बुलबुला—वालपोल का मंत्रित्व—वालपोल की गृह-नीति—शासन-सम्बन्धी सुधार - विदेशी नीति—वालपोल का पतन। ३५२

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विदेशी युद्ध तथा बड़ा पिट—आस्ट्रियन उत्तराधिकार का युद्ध—र्षीय युद्ध का आरम्भ—युद्ध की प्रसिद्ध घटनाएँ—युद्ध का अन्त पेरिस की सन्धि—विलियम पिट—पिट की युद्ध-नीति—पिट का तन। ३५७

२९—जार्ज तृतीय तथा अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

अमेरिका के उपनिवेशों में असन्तोष—सप्तवर्षीय युद्ध का प्रभाव—अनुचित कर—युद्ध का आरम्भ—युद्ध की प्रसिद्ध घटनाएँ—समुद्र पर युद्ध—वारशेल्स की संधि—अँग्रेज़ों की विफलता के कारण। ३६७

३०—जार्ज तृतीय तथा छोटा पिट

जार्ज तृतीय का चरित्र तथा नीति—टोरी दल का पुनः शक्तिशाली होना—लार्ड नार्थ का मंत्रित्व—विल्कस तथा जूनियस की आलोचनायें—जान वेज़ली तथा मेथोडिस्ट दल—पिट के मंत्रित्व का आरम्भ—पिट का शासन-सुधार—पिट तथा आयरलैंड—पिट तथा फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति—छोटे तथा बड़े पिट की तुलना। ३७६

३१—फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति तथा नैपोलियन

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति—राज्य-क्रान्ति का इंगलैंड पर प्रभाव—फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का युद्ध—प्रथम मित्र-संघ—अँग्रेज़ों की जल विजय—मिश्र में युद्ध तथा नील नदी की विजय—द्वितीय मित्र-संघ—अमींस की सन्धि। ३८८

नैपोलियन तथा इंगलैंड—युद्ध का पुनरारम्भ—ट्राफलगर का युद्ध—नैपोलियन की विजय—आर्थिक युद्ध तथा उसकी विफलता—प्रायद्वीप का युद्ध—नैपोलियन का पतन—वाटरलू का युद्ध—नैपोलियन के पतन के कारण—पेरिस की संधि। ३९५

इंगलैंड पर युद्ध का प्रभाव—युद्ध से लाभ—आर्थिक हानियाँ—राजनैतिक तथा सामाजिक प्रभाव। ४०५

३२—व्यावसायिक क्रान्ति तथा नये आविष्कार तथा सामाजिक उन्नति

अठारहवीं शताब्दी का अन्तिम भाग—कृषि-क्रान्ति व्यावसायिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रान्ति का अर्थ—कपड़े की नई मशीनों का आविष्कार—भाप का एञ्जिन—लोहे तथा कोयले का प्रयोग—सड़कें तथा नहरें—व्यावसायिक क्रान्ति का प्रभाव। ४०८

उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी—रेलगाड़ी—भाप के जहाज़—डाक का प्रबन्ध—बिजली, तार तथा टेलीफ़ोन—मोटर, हवाई जहाज़ तथा रेडियो—नये आविष्कारों का प्रभाव। ४१

अठारहवीं शताब्दी में सामाजिक स्थिति—पोशाक—नागरिक जीवन—जेलखाने तथा फ़ौजदारी क़ानून—शिक्षा तथा साहित्य। ४२

३३—जार्ज चतुर्थ तथा विलियम चतुर्थ

जार्ज चतुर्थ का चरित्र—यूनान की स्वतन्त्रता का युद्ध—कैथलिकों का उद्धार—फ़ौजदारी क़ानून का सुधार—विलियम चतुर्थ तथा सुधार युग—पार्लियामेण्ट के सुधार का प्रश्न—दासों का उद्धार। ४२

३४—सुधारों का युग

(क) पार्लियामेण्ट के सुधार का आन्दोलन—पार्लियामेण्ट के निर्वाचन में दोष—पहला सुधार-नियम—चार्टिस्ट आन्दोलन—दूसरा सुधार-नियम—गुप्त वोटों का प्रबन्ध—तीसरा सुधार-नियम—सन् १९११ का पार्लियामेण्ट एक्ट—सन् १९१८ तथा १९२८ के सुधार। ४३

(ख) सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के नियम—कारखानों के सुधार के नियम—मज़दूरों का संगठन—दरिद्र संरक्षण-नियम—स्थानीय स्वराज्य—स्वतन्त्र व्यापार—शिक्षा सम्बन्धी सुधार। ४३

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक उन्नति—नये आविष्कारों का प्रभाव—नगरों की सफ़ाई—चिकित्सा विज्ञान की उन्नति—रोगियों की सेवा—जेलों के सुधार—पोशाक—स्त्रियों की स्वतन्त्रता—रीति रिवाज तथा खेल तमाशे। ४४

३५—महारानी विक्टोरिया तथा उसके मुख्य प्रधान मंत्री

महारानी विक्टोरिया—विक्टोरिया का चरित्र—शान्ति तथा सुधार युग। ४४८

लार्ड मेलबोर्न ४५

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर रॉबर्ट पील—प्रारम्भिक जीवन—राजनैतिक विचार—आयर की नीति—आर्थिक सुधार—मज़दूर संरक्षण-नियम—अनाज-नियम। ४५३

लॉर्ड पामर्सटन—प्रारम्भिक जीवन—गृह नीति—परराष्ट्र नीति—पूर्वीय समस्या में भाग—चीन तथा भारतवर्ष—अमेरिकन गृह-युद्ध—जर्मनी का दृढ़ राज्य—पामर्सटन की मृत्यु। ४५७

लॉर्ड डिज़रायले—प्रारम्भिक जीवन—सामाजिक सुधार—परराष्ट्र नीति—साम्राज्य नीति—डिज़रायले की मृत्यु। ४६२

ग्लेड्सटन—प्रारम्भिक जीवन—गृह-नीति तथा सुधार—परराष्ट्र नीति—आयरलैंड की समस्या—ग्लेड्सटन की मृत्यु। ४६६

३६—ब्रिटेन तथा यूरोप

(क) पूर्वी समस्या—टर्की तथा रूस—इंगलैंड की पूर्वीय नीति—क्रीमिया का युद्ध—बालकन प्रायद्वीप का युद्ध—बर्लिन के निर्णय का प्रभाव। ४७३

(ख) मिस्र तथा सूडान—स्वेज़ नहर का खुलना—ब्रिटेन का आधिपत्य—सूडान का विद्रोह—वर्तमान स्थिति। ४७८

(ग) अन्य यूरोपीय राज्य—यूनान तथा बेलजियम की स्वतन्त्रता—ब्रिटेन तथा फ्रान्स—ब्रिटेन तथा इटली—जर्मन साम्राज्य—जापान तथा चीन। ४८०

३७ ब्रिटेन का साम्राज्य

सन् १८१५ की औपनिवेशिक स्थिति। ४८६

कनाडा तथा न्यू फाउण्डलैण्ड—कनाडा की उन्नति—संयुक्त राज्य की स्थापना—न्यू फाउण्डलैंड।

आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड—आस्ट्रेलिया की उन्नति—स्वतन्त्र शासन की स्थापना—न्यूज़ीलैंड। ४९

दक्षिणी अफ्रीका—उपनिवेशों की स्थापना—बोअर युद्ध—दक्षिण अफ्रीका का संयुक्त शासन। ४९

ब्रिटिश साम्राज्य का संगठन—ब्रिटिश राष्ट्र संघ—प्रथम अंग—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रदेश—द्वितीय अंग, अधीन उपनिवेश—तृतीय अंग-अधीन देश—भारतवर्ष।

३८—हनोवर काल में आयरलैंड ४६६

अठारहवीं शताब्दी में आयरलैंड—फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का प्रभाव—आयरलैंड का संयोग—संयोग के पश्चात् की दशा—कैथलिकों के उद्धार का प्रश्न—सरकारी चर्च की सहायता का बन्द होना—संयोग विच्छेद का आन्दोलन—ग्लेड्सटन तथा आयरलैंड—क्रान्तिकारी समाज की उन्नति—महायुद्ध का प्रभाव—वर्तमान आयरिश फ्री स्टेट।

३९—एडवर्ड सप्तम तथा शान्ति-काल

अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव—अन्तर्राष्ट्रीय नीति में परिवर्त्तन—लिबरल दल की उन्नति—मज़दूर दल का संगठन—व्यापारिक सुधार—पार्लियामेएट के दोनों भागों का सम्बन्ध।

४०—जार्ज पंचम ५०६

सम्राट् जार्ज पंचम—सिलवर जुबली—एडवर्ड अष्टम—सम्राट् जार्ज षष्ठ।

यूरोपीय महायुद्ध—युद्ध की तैयारी—बालकन प्रायद्वीप के ईसाई राज्य—जर्मनी की उन्नति—इंगलैंड तथा जर्मनी—युद्ध का आरम्भ—युद्ध में भाग लेने वाले देश—युद्ध का पश्चिमी क्षेत्र—युद्ध का पूर्वीय क्षेत्र—एशियायी क्षेत्र—जल-युद्ध—युद्ध का अन्त—वरशेल्स की सन्धि—युद्ध का प्रभाव—लीग आफ़ नेशन्स। ५१५

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री—एसक्विथ—लायड जार्ज—बानेर ला—रैमसे मैकडोनेल्ड—बाल्डबिन—नेविल चैम्बरलेन। ५१८

४१—वर्त्तमान शासन-प्रणाली ५३०

राजाओं के अधिकार—सम्राट् के विशेष अधिकार—पार्लियामेएट—माध्यमिक काल—पार्लियामेएट—आधुनिक काल—लार्ड सभा—लोक सभा—लोक सभा तथा लार्ड सभा का सम्बन्ध—राज-नियम बनाने की प्रणाली—मन्त्रि-मण्डल।

५३८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

LIST OF MAPS.

1. Physical Features of British Isles (with western portion of Europe.)
2. First Home of the English in Europe.
3. England in 1065.
4. England and the French Possessions of William I.
5. The Angevin Empire.
6. France at the treaty of Bretigni 1360.
7. Extent of the English conquest in France A. D. 1429.
8. England during the Wars of the Roses.
9. The General course of the Armada.
10. British Isles in 1603.
11. Discoveries of England, Spain, and Portugal in the 15th and 16th centuries.
12. England and Wales in 1643.
13. England and Wales in 1644.
14. Western Europe in 1714.
15. British Possessions in 1714.
16. Britain—Jacobite Risings.
17. American Colonies—Seven Years War 1763.
18. British Possessions in 1763.
19. Spain illustrating the Peninsular War.
20. Central and Western Europe in 1815.
21. Industrial Revolution showing industrial centres.
22. Industrial Revolution showing population.
23. Australia.
24. Africa.
25. British Empire (Present day.)
26. British Empire 1815.
27. British Empire 1880,

BATTLE FIELDS.

1. Battle of Marston Moor 1644.
2. Battle of Nasbey 1645.
3. Battle of Blenheim 1704.
4. Battle of Nile 1798.
5. Battle of Trafalgar 1805.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ramji Prasad
(Prava
Class IX.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

PHYSICAL FEATURES OF BRITISH ISLES

with western portion of Europe

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहिला परिच्छेद

इंगलैंड के इतिहास पर भूगोल का प्रभाव

प्रकृति की विशेषताएँ और इतिहास—

मनुष्य जाति का जीवन और उसकी संस्कृति प्रकृति के साँचे में ढली हुई है। किन्तु भूगोल की प्राकृतिक विशेषताएँ एक सी नहीं हैं, इसीलिए देश-देश की सभ्यता तथा संस्कृति में विशेष अन्तर दिखाई पड़ता है। ठंडे देश के रहने वालों की जीवन-शैली गर्म देश के रहने वालों की सी नहीं होती, और न पहाड़ पर रहने वालों की मैदान के रहने वालों की तरह। इंगलैंड ने जिसका भारतवर्ष से राजनैतिक, सामाजिक, तथा आर्थिक दृष्टि से घनिष्ट सम्बन्ध है और जिसके साम्राज्य में सूर्य कभी अस्त नहीं होता, संसार में एक प्रबल और समृद्धिशाली स्थान प्राप्त किया है। इस उन्नति के मार्ग में देश की प्राकृतिक अवस्था ने भी बहुत कुछ साथ दिया है। संस्कृति के उत्थान और पतन की वार्ता को इतिहास कहते हैं। इसलिए किसी देश के इतिहास की बारीकियों को समझने के लिए वहाँ की प्राकृतिक विशेषताओं का जानना अत्यन्त आवश्यक है। अतएव ब्रिटेन के इतिहास का अध्ययन करने से पहले वहाँ की प्राकृतिक विशेषताओं का समझना परम आवश्यक है।

ब्रिटिश द्वीपों की प्राकृतिक विशेषताएँ—

पृथ्वी का मान-चित्र देखने से ज्ञात होगा कि ब्रिटिश द्वीप सभ्य संसार का केन्द्र है। ब्रिटिश द्वीप अथवा बिरतानियाँ, आयरलैंड और दूसरे छोटे-छोटे द्वीप यूरोप के उत्तर-पश्चिम की ओर अटलान्टिक महासागर में बसे हुए हैं। यूरोप के समुद्र तट और इन द्वीपों के बीच में डोवर का जल-डमरू-मध्य है जिसके पश्चिम की ओर इंगलिश-चैनल फैला हुआ है, और उत्तर की तरफ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नार्थ-सी। ब्रिटिश द्वीपों के पश्चिम में अटलांटिक महासागर है, जिसके दूसरी ओर अमेरीका का विस्तृत महाद्वीप है। यूरोप तथा अमेरिका के महाद्वीपों के बीच में स्थित होने के कारण ब्रिटिश द्वीपों ने एक मुख्य स्थान प्राप्त किया है। समुद्र तथा पहाड़ ने इन द्वीपों को तीन मुख्य भागों में बाँट दिया है। किसी काल में जंगल और दलदल भी एक हिस्से को दूसरे हिस्से से अलग करते थे। दक्षिण-पूर्व की ओर उपजाऊ मैदान है। इन मैदानों और समुद्र के बीच में ६०० मील लम्बी एक पहाड़ी श्रृङ्खला है। इस श्रृङ्खला के उस पार सेन्ट जॉर्ज का चैनल है और उसके बाद आयरलैंड का द्वीप, जो बीच में सपाट और दक्खिन-पच्छिम तथा उत्तर-पच्छिम में पहाड़ी है। इन प्राकृतिक विशेषताओं के कारण इङ्गलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड बहुत काल तक एक दूसरे से पृथक रहे।

ब्रिटिश द्वीपों पर भूगोल का प्रभाव—

भूगोल इतिहास की कुञ्जी है, अतएव ब्रिटेन को अपनी प्राकृतिक विशेषताओं के कारण बहुत से लाभ प्राप्त हुए। बहुत दिनों तक समुद्र ने एक दुर्ग की खाई का काम किया। द्वीप होने के कारण यहाँ के निवासी अन्य देशों की अपेक्षा विदेशी जातियों के आक्रमण से बहुत कुछ सुरक्षित रहे। नारमन जाति के आक्रमण के पश्चात् तो कोई सफल आक्रमण हुआ ही नहीं। अतः प्रकृति ने स्वयं इसकी सीमाएँ निर्धारित कर दी हैं। इस स्थिति के कारण फ्रान्स, जर्मनी आदि यूरोप के अन्य देशों की भाँति यहाँ सीमा सम्बन्धी प्रश्नों पर कभी किसी पड़ोसी देश से झगड़ा न हुआ और ये द्वीप यूरोप के भयंकर युद्धों से सुरक्षित रहे। इंगलैंड को यूरोप के कई युद्धों में भाग भी लेना पड़ा, परन्तु द्वीप होने के कारण यहाँ के निवासियों को शत्रुओं के आक्रमण का भय न था और वे शक्तिपूर्वक और निःशंक अपने काम-धन्धों में लगे रहे। परन्तु साथ ही साथ इसी सुविधा के कारण यहाँ के निवासियों को अपने ही ढंग की शासन पद्धति बनाने तथा सामाजिक संगठन करने का पूर्ण अवसर प्राप्त हुआ। साथ ही यूरोप महाद्वीप में जो जाग्रति तथा उन्नति हुई उसके लाभदायक प्रभाव से भी यहाँ के निवासी वंचित न रहे और वे सदैव उसकी संस्कृति तथा सभ्यता के नवीन विचारों से लाभ उठाते रहे हैं। वहाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के राजनैतिक, धार्मिक, सामाजिक आन्दोलनों ने इंगलैंड पर अपना प्रभाव डाला, और सोलहवीं शताब्दी की विद्या की नई जाग्रति तथा धर्म-सुधार आन्दोलन दोनों ने इंगलैंड के जीवन में एक महान् परिवर्तन कर दिया। द्वीप होने ही के कारण यहाँ के निवासी भिन्न-भिन्न जातियों के होते हुए भी कुछ ही काल में एक राष्ट्र में परिणत हो गये। समय समय पर सैक्सन (Saxon) जूट (Jute), आंगल (Angles), डेन (Danes) तथा नारमन (Normans) जातियाँ यहाँ आकर बस गईं और शीघ्र ही हिलमिल कर एक राष्ट्र बन गईं। इसी प्राकृतिक स्थिति के कारण इंगलैंड बेलजियम की रक्षा करने के लिये सदैव तत्पर रहता है, कारण कि निकट होने के कारण शत्रुओं के आक्रमण का वहाँ से भय लगा रहता है। इसी कारण इंगलैंड को लूई चौदहवें, नैपोलियन तथा जर्मनी से युद्ध करने पड़े थे।

ब्रिटिश द्वीप और समुद्री तट—

ब्रिटिश टापुओं के किनारे कटे हुए हैं। इसलिए यहाँ अच्छे बन्दरगाह आसानी से बन सकते हैं। अतएव हर जगह से समुद्र निकट होने के कारण प्रारम्भ से ही यहाँ के लोग जहाज़ बनाने तथा चलाने में बहुत निपुण रहे। जब से यूरोपीय जातियों में जल-शक्ति के लिए प्रति-द्वंद्विता आरम्भ हुई, तभी से ब्रिटिश जाति का भाग्य उदय हुआ। अपनी जल-शक्ति ही के कारण इस जाति ने भारतवर्ष, अफ्रीका, कनाडा तथा आस्ट्रेलिया जैसे बहुत से नये नये सुन्दर देशों और पृथ्वी के अनेक टापुओं पर अधिकार जमाया और सारे भूमंडल पर अपने व्यापार का जाल बिछा कर यूरोप के अन्य राष्ट्रों का मान-मर्दन किया। स्पेन तथा फ्रान्स वालों ने कई बार इंगलैंड पर आक्रमण करने की चेष्टा की, परन्तु अँगरेज़ी जल-शक्ति के सम्मुख उनको अपने उद्देश्य में तनिक भी सफलता न प्राप्त हुई। स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय, फ्रान्स के राजा लूई चौदहवें और नैपोलियन जैसे योद्धाओं ने भी जब इंगलैंड पर आक्रमण करने की चेष्टा की तो इंगलैंड की जल-शक्ति ने उन्हें भी नीचा दिखाया! इस जल-शक्ति के कारण इंगलैंड को अपने साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों की रक्षा और देख-भाल करने में बड़ी सुविधा मिली। वास्तव में अँगरेज़ी साम्राज्य की वर्तमान स्थिति इसी जल-शक्ति का परिणाम है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माध्यमिक काल में व्यापार का केन्द्र अधिकतर रूम सागर ही के चारों ओर था। परन्तु सोलहवीं शताब्दी में अमरीका आदि नवीन देशों का पता लगने तथा नवीन समुद्री-मार्गों के खुलने से व्यापारिक केन्द्र रूम सागर से हट कर अटलांटिक महासागर में आ गया। इस परिवर्तन द्वारा इंगलैंड को विशेष लाभ हुआ और उसकी राजधानी लन्दन धीरे धीरे समस्त भूमंडल के जल-व्यापार का केन्द्र बन गई।

ब्रिटेन का जल-वायु—

ब्रिटिश टापुओं का जल-वायु आरोग्य-वर्द्धक है। न तो वहाँ इतनी ठंड है जो सहन न हो सके और न इतनी गर्मी है जिसके कारण लोग आलसी हो जायँ। यद्यपि यह सच है कि जाड़ों की अपेक्षा गर्मियों में दिन अधिक लम्बे होते हैं, तथापि वहाँ वर्ष के बारहों महीनों में दिवस भर के काम के लिए पर्याप्त प्रकाश रहता है और प्रकृति लोगों के परिश्रम तथा उत्साह में किसी प्रकार की बाधा नहीं डालती। आरोग्य-वर्द्धक जल-वायु ही के कारण यहाँ के मनुष्य महान् परिश्रमी होते हैं और जिस काम में जुट जाते हैं उसको बिना पूरा किये हटते नहीं। परिश्रम ने ही उनको सरल जीवन का मार्ग दिखाया और समय की पाबंदी का पाठ पढ़ाया। ये ही दो मंत्र अंगरेज़ों के उत्थान के मूल कारण हैं।

खनिज पदार्थ और व्यापारिक उन्नति—

इंगलैंड के उत्तर-पश्चिम में लोहे तथा कोयले की बहुत खानें हैं। अठारहवीं शताब्दी से पहले जब लोहे तथा कोयले का उपयोग न होता था, इस भाग का कुछ विशेष महत्व न था। उस समय देश में ग्रामों की संख्या अधिक थी, और खेती यहाँ के निवासियों का मुख्य उद्यम था। उस काल में लन्दन के आसपास, पूर्वी तथा दक्षिणी भागों ही में जो सपाट मैदान हैं और जहाँ देश की अधिकांश जन-संख्या रहती थी व्यापार तथा खेती होती थी; परन्तु नई-नई मशीनों के आविष्कार के कारण जब से लोहे तथा कोयले की आवश्यकता पड़ी, तब ही से इन्हीं खानों के चारों ओर बहुत से कारखाने खोले गये, और वहाँ की जन-संख्या बढ़ने लगी। वर्त्तमान काल में व्यवसाय और व्यापार के केन्द्र इन्हीं उत्तर-पश्चिमी भागों में हैं; और यही भाग अन्य प्रान्तों की अपेक्षा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक धनी भी है। देश के बड़े-बड़े नगर भी यहीं दिखाई देते हैं, जिससे भागों का राजनैतिक क्षेत्र में भी अब अधिक महत्व हो गया और पार्लियामेण्ट की निर्वाचन-पद्धति में सुधार करना भी आवश्यक हो गया। देश के पूंजीपतियों ने भी खेती की ओर अधिक ध्यान न देकर अपना धन कारखानों में लगाया और इन्हीं खनिज पदार्थों के कारण देश का व्यापार बहुत बढ़ गया है और देश माला-माल हो गया है। व्यापार की उन्नति के कारण यहाँ की जन-संख्या भी बढ़ती गई और ग्रामों की अपेक्षा देश में नगर अधिक दिखाई पड़ने लगे। व्यापार ही की उन्नति के कारण इंगलैंड इतना बड़ा साम्राज्य स्थापित कर सका और यूरोप के भयङ्कर युद्धों में सफलता पूर्वक भाग ले सका।

वर्त्तमान काल में लोगों का मुख्य उद्यम व्यवसाय है और देश कारखानों से भरा पड़ा है। उत्तर-पश्चिमी भाग के लैंकाशायर (Lancashire) प्रान्त में प्रति वर्ष लाखों करोड़ों रुपयों का सूती कपड़ा तैयार होता है और विदेशों को भेजा जाता है। वहाँ सूती कपड़े के बनने का मुख्य कारण यह है कि वहाँ की वायु में नमी है और इस कारण तार अच्छा निकलता है। इसी प्रकार ऊनी कपड़े के बड़े-बड़े कारखाने लीड्स (Leeds) में पाये जाते हैं। इंगलैंड सदैव से ऊन के लिये प्रसिद्ध है और यहाँ से बहुत सा ऊन यूरोप भेज दिया जाता था। परन्तु जब से यहाँ ऊनी कपड़ों के कारखाने खुल गये, विदेशों को ऊन भेजना बिल्कुल बन्द कर दिया गया और उलटा आस्ट्रेलिया तथा दक्षिण अफ्रीका से कच्चा ऊन मँगाना पड़ता है। इसी प्रकार बरमिंघम (Birmingham) तथा शेफील्ड के कारखानों में लोहे का सब प्रकार का सामान तैयार होता है। इन कारखानों के कारण देश का व्यापार दिन प्रतिदिन उन्नति करता गया। वास्तव में अँग्रेज़ जाति की उन्नति का प्रधान कारण उनका व्यापार ही है, और व्यापार ही की रक्षा करना उन्होंने अपना एक परम कर्तव्य भी समझ रखा है और इसी कारण फ्रान्स आदि देशों से उन्हें कई युद्ध भी लड़ने पड़े।

स्काटलैंड तथा आयरलैंड—

इंगलैंड तथा स्काटलैंड वास्तव में एक ही टापू के दो भाग हैं। परन्तु दोनों देशों के बीच में पर्वत-श्रेणियाँ होने के कारण एक देश दूसरे से बहुत दिनों तक पृथक रहा। दोनों देशों में अलग-अलग राज्य स्थापित हुए, जिनमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कई शताब्दियों तक पारस्परिक झगड़े भी चलते रहे। सन् १६०३ से इंगलैंड और स्काटलैंड के राजसिंहासनों पर एक ही राजा बैठने लगा, और सन् १७०७ में दोनों देशों की पार्लियामेण्टों के मिल जाने से दोनों देश अब तक संयुक्त-राज्य में परिणत हो गये हैं। वर्त्तमान "ब्रिटिश जाति" शब्द इंगलैंड तथा स्काटलैंड दोनों देशों के निवासियों पर समान रूप से लागू है।

आयरलैंड और ब्रिटेन द्वीप के बीच आयरिश सागर है। आयरलैंड और इंगलैंड के निवासियों में जातीय तथा धार्मिक भेद भी हैं जिसके कारण दोनों का निर्वाह बहुत कठिन है। इंगलैंड के शासकों की आयरलैंड पर सदैव दृष्टि रही और एलिज़बेथ के राज्य-काल में उन्होंने उसे अपने अधीन कर लिया। सन् १८०१ में आयरलैंड भी स्काटलैंड की भाँति ब्रिटिश संयुक्त-राज्य में मिला लिया गया, परन्तु इससे आयरिश प्रश्न का निबटारा न हुआ। आयरलैंड वाले बराबर स्वतन्त्र होने का उद्योग करते रहे और अब कहीं बीसवीं शताब्दी में जाकर उनकी यह इच्छा कुछ अंश तक पूरी हुई है।

Exercises

1. How has the geographical position of England affected the course of her history ?
2. Point out the importance of sea as a factor in the growth of England.
3. What natural advantages have favoured the quick development of the British power in modern times ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राचीन काल का सारांश

(१०६६ तक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरा परिच्छेद

रोमन जाति का राज्य

ईसा से ५५ वर्ष पूर्व	जूलियस सीज़र का आक्रमण
सन् ४३	रोमन राज्य का प्रारम्भ।
,, ४१०	रोमन राज्य का अन्त।

ब्रिटेन के प्राचीन निवासी—

प्राचीन काल में जब भारतवर्ष, चीन, मिस्र इत्यादि पूर्वीय देश सभ्यता के केन्द्र थे, उस समय ब्रिटिश टापुओं में असभ्य तथा जंगली जातियाँ बसी हुई थीं। देश घने जंगलों से भरा हुआ था, और यहाँ के प्राचीन निवासी शिकार करके अपना निर्वाह करते थे और रात्रि को खोहों में रहते थे। वे रंग के काले थे और पत्तों तथा जानवरों की खालों से अपना शरीर ढकते थे। वे धातुओं के प्रयोग तक से परिचित न थे। वे छिले हुए पत्थरों के टुकड़ों को नुकीला करके उनसे कुल्हाड़ी तथा तीर का काम लेते थे। यह पता नहीं चलता कि ये लोग ब्रिटिश टापुओं में कब और कहाँ से आकर बसे और कौन सी भाषा बोलते थे। समय बीतने पर आइबीरियन नाम की एक नई जाति यहाँ आकर बसी। इन लोगों को भी सभ्य होने में सहस्रों वर्ष लग गये होंगे। ये लोग बाद में खेती करने लगे थे और ऊन का कपड़ा भी तैयार करने लगे थे। इसी समय रूम सागर से कुछ व्यापारी ब्रिटेन आकर टिन ले जाया करते थे, जिससे ब्रिटेन के निवासियों का अन्य देशों से सम्बन्ध भी आरम्भ हुआ। ईसा से लगभग ७०० वर्ष पूर्व एक नई गोरे रंग की जाति इन द्वीपों में आकर बसी और उसने प्राचीन काले निवासियों को निकाल बाहर किया। यह नई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाति केल्ट (Celts) के नाम से प्रसिद्ध है और इसकी कई शाखाएँ थीं। आयरलैंड में बसने वाली शाखा स्काट (Scots), ब्रिटेन के उत्तर वाली शाखा पिक्ट (Picts), और ब्रिटेन के दक्षिण वाली शाखा ब्रिटन (Britons) कहलाती थी। इन सब में ब्रिटेनों की संख्या अधिक थी और उन्हीं के नाम पर इस द्वीप का नाम ब्रिटेन (Britain) पड़ा।

ब्रिटन जाति की संस्कृति—

नई ब्रिटन जाति में थोड़ी-बहुत सभ्यता थी और वह धातुओं के प्रयोग से परिचित थी। ब्रिटन लोग अधिकतर खेती करके अपना निर्वाह करते तथा भेड़ें और गाएँ भी पालते थे। वे पड़ौसी देशों से थोड़ा-बहुत व्यापार भी करते थे, और इन द्वीपों का टिन विदेशों को भेज कर उसके बदले वस्त्र तथा शस्त्र इत्यादि मँगाया करते थे। वे लकड़ी या मिट्टी के मकान बनाते थे, और उन्होंने जंगलों में कुछ गढ़ भी बना रखे थे, जिनके चारों ओर खाइयाँ खुदी हुई थीं।

ब्रिटनों का धर्म बहुत साधारण था, और वे प्राकृतिक पदार्थ सूर्य, चन्द्रमा, जल, वृक्ष इत्यादि की पूजा करते थे। वे अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिये उनके सामने जानवरों और कभी-कभी मनुष्यों तक की बलि देते थे। उनके पुरोहित ड्रूड (Druids) कहलाते थे, जिनका समाज में बड़ा आदर होता था। यही पुरोहित जाति के मुखिया भी होते थे और केवल इन्हीं में थोड़ी-बहुत शिक्षा पाई जाती थी। जाति के अन्य लोग पूर्णतया अज्ञान में डूबे हुए थे और उनके पुरोहित जिस प्रकार चाहते थे उस प्रकार वे चलते थे।

ब्रिटन जाति के लोग बेलजियम तथा फ्रान्स से व्यापार भी करने लगे थे। वे अपने यहाँ से टिन, लोहा, मोती आदि बहुत सी वस्तुएँ विदेशों को भेजते थे, और कपड़ा, शस्त्र आदि वहाँ से मंगाते थे। ईसा से लगभग २०० वर्ष पूर्व यूनान से भी व्यापार आरम्भ हो गया, जिसके कारण ब्रिटन जाति की सभ्यता तथा संस्कृति दिन प्रतिदिन उन्नति करती जाती थी।

रोमन जाति का आक्रमण—

ईसा से लगभग दो शताब्दी पूर्व यूरोप में रूम सागर (Medi-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

erranean Sea) के तट पर इटेली में रोमन साम्राज्य का जन्म हुआ। मन जाति ने अफ्रीका, एशिया तथा यूरोप के बहुत से भागों को पराजित करके अपने अधीन किया, और उसके साम्राज्य का विस्तार देशान्तरों में फैल गया। प्रसिद्ध रोमन योद्धा जूलियस सीज़र (Julias Caesar) जिस समय

जूलियस सीज़र

फ़्रान्स को विजय कर रहा था, उस समय ब्रिटन जाति के कुछ लोगों ने जाकर फ़्रान्स वालों को सजातीय होने के कारण सहायता पहुँचाई। यह देखकर जूलियस सीज़र ने दो बार ब्रिटेन द्वीप पर आक्रमण किया और यहाँ वालों को पराजित करके जंगलों में भगा दिया, परन्तु सीज़र का द्वीप के जंगलों और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दलदलों में घुसने का साहस न हुआ, और फ्रान्स में विद्रोह हो जाने के कारण वह अपनी विजय को अधूरी ही छोड़कर वहाँ लौट आया। फ्रान्स से फिर रोम वापस चला गया और अब उसने अपने आपको रोमन साम्राज्य सम्राट् बनाने की चेष्टा की। इस पर रोमन बिगड़े और उसका वध कर डाला। इस घटना के लगभग सौ वर्ष तक इंगलैंड पर रोमनों का कोई आक्रमण न हुआ। सीज़र ने अपने आक्रमण के इतिहास (Commentaries) यहाँ के निवासियों के रहन-सहन का वृत्तान्त लिखा है और प्राचीन ब्रिटन जाति के इतिहास का बहुत कुछ पता इसी से लगता है।

रोमन-विजय—

सीज़र के आक्रमण के लगभग एक शताब्दी पश्चात् रोमनों ने इस द्वीप पर फिर आक्रमण किया, और इस बार ब्रिटनों को पराजित करके द्वीप के दक्षिणी भाग को रोमन साम्राज्य का एक अङ्ग बना लिया। इस समय रोम में सम्राट् क्लोडियस (Claudius) राज्य कर रहा था, और उसी ने ब्रिटेन पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी थी। द्वीप में रोमन राज्य की सीमा नियत करने तथा उत्तर से पिक्ट जाति के आक्रमणों को रोकने के अभिप्राय से सोलवे फर्थ (Solway Firth) से टाइन (Tyne) तक ८० मील लम्बी एक दीवार (Hadrian wall) बनवाई गई जिसके खँडहरों के चिह्न आज तक दिखाई पड़ते हैं और इंगलैंड की सीमा रेखा भी इसी स्थान में है।

रोमन-विजय का प्रभाव—

सन् ४३ से ४१० तक लगभग ३५० वर्ष तक ब्रिटेन का दक्षिणी भाग रोमन साम्राज्य का अङ्ग बना रहा। यहाँ का शासन-प्रबन्ध एक रोमन गवर्नर द्वारा होता था, और यहाँ रोमनों की सुसज्जित सेनाएँ भी रहती थीं। रोमनों ही के सम्पर्क से ब्रिटेन में वास्तविक सभ्यता का आरम्भ हुआ। जंगल तथा दलदलें साफ़ की गईं और उनके स्थान पर अब यहाँ सुन्दर नगर बनवाए गये। नगरों में सुन्दर-सुन्दर भवन, चौड़े-चौड़े बाज़ार, हिमाम, न्याय-मन्दिर तथा पुस्तकालय बनवाये गये। नगरों में रोमनों के राज-नियम तथा उनकी भाषा लैटिन का प्रचार हुआ। सरकारी सब कार्य लैटिन भाषा में होते थे। लोग रोमन वस्त्र भी पहनने लगे थे। एक स्थान से दूसरे स्थान तक जाने के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लिये पक्की सड़कें भी बनवाई गई जो रोमन सेनाओं के आने-जाने के लिये आवश्यक थीं। इन्हीं सड़कों द्वारा व्यापार की भी वृद्धि हुई, और इन द्वीपों का अनाज रोमन सेनाओं की रसद के लिये विदेशों में भी भेजा जाने लगा। देश में पूर्ण शान्ति थी। डकैती अथवा लूट-मार का कोई भय नहीं था। विदेशों से

रोमन काल का बाज़ार

व्यापार भी होता था और देश की रक्षा के लिये एक जहाज़ी बेड़ा भी था। रोमन काल ही में ब्रिटेन में ईसाई धर्म का प्रवेश हुआ, और कई नगरों में गिर्जाघर बनाए गये। प्राचीन पुरोहित, अर्थात् ड्रूड (Druids) निकाल बाहर किये गये, परन्तु फिर भी ईसाई धर्म की मानता देश में बहुत थोड़ी ही हो सकी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन सब लाभों के साथ-साथ ब्रिटेन को बहुत कुछ हानि भी हुई। रो
ने यह प्रयत्न कभी नहीं किया कि ब्रिटेन जाति सबल हो सके, और आप
काल में अपनी रक्षा कर सके। देश के शासन-कार्य में भी उन्होंने ब्रिटनों
उच्च स्थान न दिये। नगर-निवासियों के अतिरिक्त उनकी सभ्यता का प्र
अन्य किसी पर नहीं पड़ा। ग्रामीणों की शिक्षा के लिये कोई प्रबन्ध न कि
गया और वैसे कें वैसे ही असभ्य बने रहे। परतन्त्र होने के कारण ब्रिटन ज
में से आत्म-गौरव तथा वीरता के गुण लुप्त हो गये; और स्वयं रोम पर
असभ्य जातियों नें आक्रमण किये तो रोमन सेनाओं को अपने देश की रक्षा
कारण ब्रिटेन द्वीप से चला जाना पड़ा, और ब्रिटिश जाति बलहीन होने
कारण अपनी रक्षा न कर सकी। इस प्रकार पाँचवीं शताब्दी के आरम्भ
रोमन जाति ने ब्रिटेन द्वीप को खाली कर दिया, और देश की रक्षा का भ
स्वयं निर्बल ब्रिटनों ही पर पड़ा।

Exercises

1. Give a brief account of the history of the ancien[t] Britons. What do you know of their ways o[f] living on the eve of the Roman conquest?
2. Narrate briefly the story of the Roman occupatio[n] of Britain. What were its effects on the civili-sation of the land?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसरा परिच्छेद

प्राचीन अँग्रेज़ जाति

सन् ४४६	अँग्रेज़ों के आगमन का प्रारम्भ।
,, ५६७	आगस्टाईन द्वारा ईसाई मत का प्रचार।
,, ६२७	पोलिन्स का धर्म प्रचार।
,, ६६४	विटबी की धर्म-सभा।
,, ७३५	विद्वान् बीड की मृत्यु।

(क) अँग्रेज़ों का आगमन

आँगल जाति का प्रवेश—

रोमन जाति के चले जाने के पश्चात् ब्रिटेन द्वीप को नये शत्रुओं ने आ घेरा। जर्मनी में रहने वाली जूट (Jutes), सेक्सन (Saxons) तथा आँगल (Angles) जातियों ने ब्रिटेन पर आक्रमण पर आक्रमण किये; और लगभग १५० वर्ष के भीतर उन्होंने इस द्वीप को पूर्णतया अपने अधीन कर लिया। ब्रिटन लोग पहाड़ियों में खदेड़ दिये गये, और उन्हें वेल्स (Wales) तथा कार्नवाल (Cornwall) में जाकर शरण लेनी पड़ी, जहाँ वे अब भी अधिक संख्या में पाये जाते हैं। आक्रमणकारियों में आँगल अधिक संख्या में आये थे, और वे ब्रिटेन के दक्षिणी भाग में बसे थे, अतः इस भाग का नाम इंगलैंड पड़ा और इसके निवासी अँग्रेज़ (English) कहलाये। अँग्रेज़ों का पहला आक्रमण सन् ४४६ में हुआ था, और वे पहले-पहल दक्षिण में थेनेट (Thanet) नामक स्थान पर आकर उतर जाते थे। उन्होंने इंगलैंड को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपना घर बना लिया, तथा वे धीरे-धीरे समस्त द्वीप में फैल गये और यहाँ बसने लगे। वे तब से बराबर यहीं बसे हुए हैं, और इस समय से इंगलैंड के इतिहास को इसी नई जाति का इतिहास समझना चाहिये।

आँगलों का प्रवेश

अँग्रेज़ों के आगमन का प्रभाव—

अँग्रेज़ अपने प्राचीन निवास-स्थान में ग्रामीण जीवन व्यतीत करते थे और वे अभी अच्छी तरह सभ्य भी नहीं हो पाए थे। उन्होंने आकर रोमन काल के बहुत से नगरों को उजाड़ डाला और स्वयं ईसाई न होने के कारण उन्होंने गिर्जाघरों तक को न छोड़ा। खेती उनका प्रधान उद्यम था और वे लकड़ी के घर बनाकर रहते थे। वे अपनी नावों में बैठकर नदियों द्वारा यात्रा करते थे। ये लोग रोमन काल की सड़कों तथा नगरों को नहीं बरतते थे, अतः सड़कें वीरान पड़ी रहीं और नगर भी खाली पड़े रहने के कारण धीरे-धीरे नष्ट हो गये। लूट-मार की रुचि भी वे आदि स्थान से लेकर आए थे। इस प्रकार उनके ब्रिटेन द्वीप में बसने पर यहाँ जो कुछ रोमन काल में थोड़े बहुत सभ्यता के चिन्ह आरम्भ हुए थे वे सब लुप्त होने लगे और देश फिर से पहले के समान असभ्य हो गया। ये लोग कई देवी देवताओं की पूजा करते थे इस कारण यहाँ से ईसाई धर्म भी उठ गया और फिर वही पत्थरों तथा वृक्षों की पूजा होने लगी। परन्तु नई आने वाली अंग्रेज जाति समुद्र-कला में निपुण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

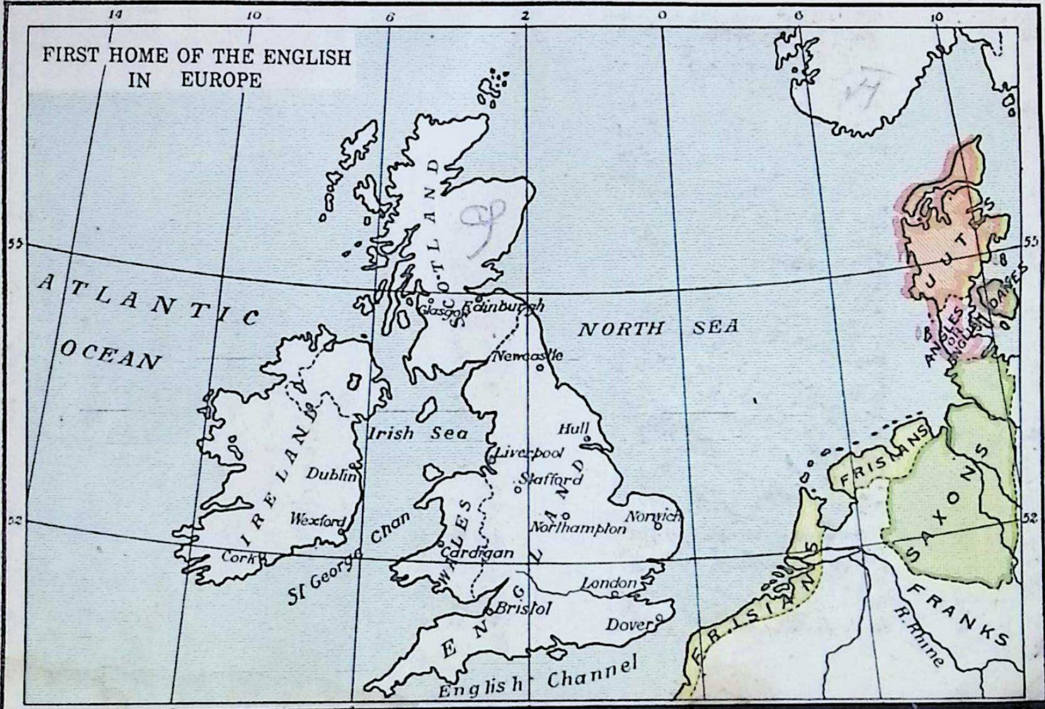

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
class – X Jh
Benares

थी और उसने नावों तथा छोटे जहाज़ों द्वारा निकट के देशों से व्यापार आरम्भ किया और इस प्रकार प्राचीन काल ही से अंग्रेज़ों की भावी समुद्री शक्ति के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

(ख) ईसाई धर्म का प्रचार

आगस्टाईन का आगमन —

यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि अंग्रेज़ों ने आते ही इंगलैंड से ईसाई धर्म को नष्ट कर दिया। फिर भी ईसाई धर्म के थोड़े बहुत चिह्न ब्रिटनों में रह गये और दक्षिणी वेल्स तथा स्काटलैंड में ब्रिटन पादरी बराबर ईसाई धर्म का प्रचार करते रहे। ये लोग इस कार्य में असफल रहे और अन्त में

ईसाई मत का प्रचार

अंग्रेज़ों को ईसाई बनाने तथा देश में फिर से ईसाई धर्म का प्रचार करने का कार्य सातवीं शताब्दी में रोमन पादरियों द्वारा आरम्भ हुआ। कहते हैं कि एक समय रोम के प्रसिद्ध पोप ग्रीगरी (Gregory) ने कुछ अंग्रेज़ी बालकों को रोम के बाज़ार में दास रूप में बिकते हुए देखा। उनकी सुन्दरता से आकृष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

class – X Jh
Benares …

थी और उसने नावों तथा छोटे जहाज़ों द्वारा निकट के देशों से व्यापार आरम्भ किया और इस प्रकार प्राचीन काल ही से अंग्रेज़ों की भावी समुद्री शक्ति के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

(ख) ईसाई धर्म का प्रचार

आगस्टाईन का आगमन —

यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि अंग्रेज़ों ने आते ही इंगलैंड से ईसाई धर्म को नष्ट कर दिया। फिर भी ईसाई धर्म के थोड़े बहुत चिह्न ब्रिटनों में रह गये और दक्षिणी वेल्स तथा स्काटलैंड में ब्रिटन पादरी बराबर ईसाई धर्म का प्रचार करते रहे। ये लोग इस कार्य में असफल रहे और अन्त में

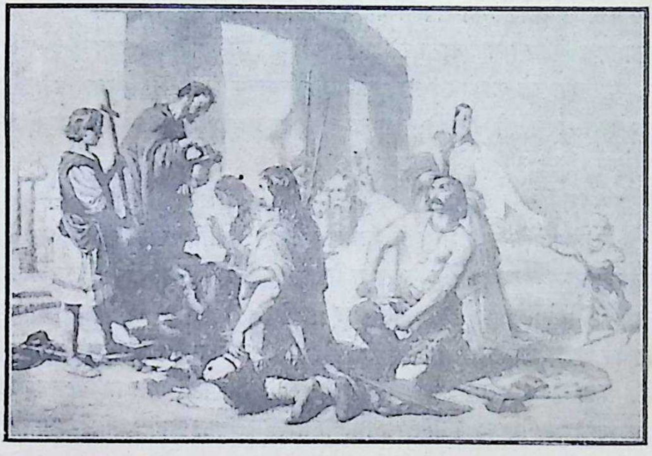

ईसाई मत का प्रचार

अंग्रेज़ों को ईसाई बनाने तथा देश में फिर से ईसाई धर्म का प्रचार करने का कार्य सातवीं शताब्दी में रोमन पादरियों द्वारा आरम्भ हुआ। कहते हैं कि एक समय रोम के प्रसिद्ध पोप ग्रीगरी (Gregory) ने कुछ अंग्रेज़ी बालकों को रोम के बाज़ार में दास रूप में बिकते हुए देखा। उनकी सुन्दरता से आकृष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होकर ग्रीगरी की यह इच्छा हुई कि ब्रिटेन द्वीप को, जहाँ पहले भी रोमन-काल में ईसाई मत का प्रचार हो चुका था, फिर से ईसाई बनाया जाय। उसने आगस्टाईन (Augustine) नामक एक प्रसिद्ध पादरी को इंगलैंड में ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये भेजा और सन् ५९७ ई० में उसने कैंट (Kent) के राजा ऐथलबर्ट (Ethelbert) के दरबार में जाकर ईसाई धर्म का प्रचार आरम्भ किया। ऐथलबर्ट का विवाह पहले ही फ्रान्स की एक ईसाई राजकुमारी से हो चुका था। अतः उसने शीघ्र ही ईसाई धर्म को ग्रहण किया और उसके साथ साथ उसकी अधिकांश प्रजा भी ईसाई हो गई। आगस्टाईन को कैंटरबरी (Canterbury) के स्थान पर गिर्जा बनाने की आज्ञा देदी गई और वह वहाँ का पहला लाट पादरी (Archbishop) नियत हुआ। अंग्रेज़ों का सब से पहला गिर्जा कैंटरबरी में बनने के कारण उसका देश में अब तक अन्य गिर्जाघरों की अपेक्षा अधिक आदर होता है। इस प्रकार इंगलैंड का रोमन चर्च से गहरा सम्बन्ध स्थापित हुआ और चर्च ही के द्वारा यूरोप की संस्कृति तथा सभ्यता का प्रभाव इंगलैंड पर पड़ने लगा और देश धीरे-धीरे फिर से सभ्य हो गया।

ईसाई मत का फैलना —

इंगलैंड के एक भाग में प्रवेश होते ही ईसाई धर्म अन्य भागों में फैलना आरम्भ हुआ। कैंट के राजा ऐथलबर्ट की कन्या का विवाह उत्तरी प्रान्त (Northumbria) के राजा एडविन (Edwin) के साथ हुआ और वह अपने साथ पोलिन्स (Paulins) नामक एक पादरी को लेती गई। पोलिन्स ने जाकर उत्तरी प्रान्तों में ईसाई धर्म को फैलाया और उसको राजा एडविन ने यार्क (York) के गिर्जाघर का लाट पादरी (Archbishop) बनाया।

इंगलैंड के इस समय के राजाओं में से कई ने ईसाई धर्म का विरोध भी किया और उन्होंने ईसाइयों को भाँति-भाँति के कष्ट भी दिये। परन्तु यह विरोध सफल न हो सका और ईसाई धर्म धीरे-धीरे उन्नति पाता गया। लगभग सातवीं शताब्दी के मध्य तक समस्त इंगलैंड ने ईसाई धर्म ग्रहण कर लिया और इस प्रकार यह धर्म अब द्वीप का जातीय धर्म बन गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Class – XII.
Admission School.
Benares city

अँग्रेज़ी चर्च का संगठन--

आगस्टाईन तथा पोलिन्स (Paulins) के अतिरिक्त जिनको रोम के पोप ने भेजा था, अन्य ईसाई संस्थाओं के प्रचारकों ने भी ईसाई धर्म के फैलाने में बहुत कुछ भाग लिया था, जिसके कारण देश के भिन्न-भिन्न भागों में भिन्न-भिन्न धार्मिक रीतियाँ प्रचलित थीं। इस धार्मिक भेद को हटाने के लिए सन् ६६४ में (Whitby) विटबी के स्थान पर एक बड़ी धर्म-सभा बुलाई गई, जिसके सम्मुख यह प्रश्न रक्खा गया कि इंगलैंड के ईसाई किस उपासना-प्रणाली को ग्रहण करें। इस धर्म-सभा ने यह निश्चित किया कि इंगलैंड के ईसाइयों के लिये यही उचित होगा कि वे रोमन चर्च ही के ढंग पर अपनी उपासना तथा पूजा-विधि बनावें। यह निर्णय देश के लिये बहुत लाभदायक सिद्ध हुआ, क्योंकि रोम उस समय समस्त यूरोप में सभ्यता तथा संस्कृति का केन्द्र था और उसका अनुकरण करने से इंगलैंड को एक संगठित चर्च का नमूना मिल गया। इसके पश्चात् इंगलैंड के ईसाइयों ने भी रोमन ढंग के अनुसार अंग्रेज़ी चर्च का संगठन किया और चर्च के कर्मचारियों की भिन्न-भिन्न श्रेणियाँ बनादी गईं। प्रत्येक मोहल्ले में एक पुरोहित (Priest) होता था, और सारे पुरोहित नगर या ज़िले के पादरी (Bishop) के अधीन होते थे। समस्त पादरियों का स्वामी प्रान्त का लाट पादरी (Arch-bishop) होता था, और इन सब के ऊपर रोम का पोप (Pope) समस्त अँग्रेज़ी चर्च (English Church) का अधिष्ठाता माना जाने लगा।

ईसाई धर्म का प्रभाव—

ईसाई मत के फैलने का अँग्रेज़ों के जीवन पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा। वे अब निर्दयी तथा लड़ाके न रहे और ईसाई धर्म की उच्च शिक्षाओं ने उनको शान्तिमय जीवन विताने का उपदेश दिया। आगे चल कर हम देखेंगे कि धार्मिक एकता ही के कारण जातीय एकता का भी विकास हुआ। पादरियों ही के द्वारा देश में विद्या का प्रचार आरम्भ हुआ और प्राचीन तथा माध्यमिक काल में शिक्षा का अधिकतर प्रबन्ध चर्च के पदाधिकारियों ही के हाथ में रहा। लोगों ने लैटिन भाषा का बोलना तथा लिखना-पढ़ना सीख लिया। देश में स्थान-स्थान पर मठ (Monasteries) बनवाए गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इन मठों में धार्मिक कार्य के साथ-साथ शिक्षा का भी प्रचार होता था और कई परोपकार के काम भी किये जाते थे। रोगियों को औषधि दी जाती थी और यात्रियों को ठहराने तथा खिलाने-पिलाने का भी प्रबन्ध किया जाता था। इस काल में पादरी ही अधिकतर शिक्षित होते थे और इस कारण देश के राजनैतिक पदों में भी इन्हीं की प्रधानता रहती थी। इस काल के राजा अधिकतर पादरियों ही को अपना मुख्य सलाहकार बनाते थे, क्योंकि उनका विश्वास था कि वे निःस्वार्थ भाव से देश की सेवा करेंगे। प्राचीन काल के प्रसिद्ध कवि तथा लेखक भी पादरियों ही में से हुए और इस प्रकार देश के सभ्य जीवन के प्रत्येक विभागों में चर्च ही की तूती बोलती रही।

(ग) प्राचीन राजनैतिक तथा सामाजिक जीवन

विटान सभा—

अँग्रेज़ जाति सदैव से स्वतन्त्रता-प्रिय रही है। प्राचीन काल में इंगलैंड का शासन बहुत कुछ लोकमत द्वारा ही होता था। प्रत्येक ग्राम तथा नगर के निवासी एक स्थान पर एकत्र होकर सभाएँ करते थे जो 'जन-सभाएँ' (Folk-moots) कहलाती थीं। इन सभाओं में नेता चुने जाते थे और मुख्य-मुख्य प्रश्नों का निर्णय होता था। जब समस्त देश में एक-छत्र-राज्य स्थापित हो गया तो देश भर के नागरिकों का एक स्थान पर एकत्र होना असम्भव जान पड़ा। इसलिये एक विशेष प्रकार की सभा स्थापित की गई जो विटान (Witan) के नाम से प्रसिद्ध हुई और जिसे पार्लियामेण्ट का प्राचीन रूप समझना चाहिये। इस सभा में राज्य के प्रधान कर्मचारी, बड़े ज़मींदार, तथा मुख्य पादरी सम्मिलित होते थे। राज-काज के संचालन में राजा इसी सभा से सहायता लेता था। इस सभा की बड़ी प्रतिष्ठा थी, यहाँ तक कि राजसिंहासन के उत्तराधिकार के प्रश्नों का निबटारा करने तक का इसी सभा को अधिकार था।

सामाजिक स्थिति—

प्राचीन काल में कृषि ही देश-वासियों का प्रधान उद्यम था, और इसीलिये अधिकतर लोग ग्रामों में ही बसे हुए थे। व्यापार, जो केवल नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मात्र ही को था, और दो-चार गिने-चुने स्थान ही नगर कहे जाते थे। इस काल में भूमिपति होना ही नागरिकता (Citizenship) का मुख्य लक्षण माना जाता था; और जिनके पास भूमि नहीं थी, उनको किसी भूमिपति के आश्रय में रहना पड़ता था जो उनके सदाचार के लिये भी उत्तरदायी होता था। इस काल के मकान बड़े भोंड़े और लकड़ी के बने होते थे, जिनमें हवा, रोशनी इत्यादि का भी उचित प्रबन्ध न होता था। वस्त्र भी मोटे-भोटे होते थे, और इस काल का सामाजिक जीवन हमारे भारतवर्ष के ग्रामीण जीवन से बहुत कुछ मिलता-जुलता था।

प्राचीन साहित्य—

प्राचीन काल का सब से प्रसिद्ध कवि कीडमन (Caedmon) माना जाता है, जो पहले एक गड़रिया था और उसके पश्चात् एक मठ का अधिष्ठाता हुआ। गद्य लेखकों में सब से उच्च स्थान विद्वान् बीड (Venerable Bede) का है, जिसने इंगलैंड का धार्मिक इतिहास (Ecclesiastical History) लिखा है; जिससे तत्कालीन धार्मिक स्थिति के साथ-साथ देश के सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन का भी बहुत कुछ पता चलता है। परन्तु वास्तविक साहित्य क्या वस्तु है यह लोग अभी जानते भी न थे, और अधिकतर रचनाएँ बाइबिल तथा धार्मिक कथाओं ही के आधार पर होती थीं।

Exercises.

1. Who were the Anglo-Saxons ? Give an account of their conquest of England.
2. How did Christianity spread in England ? Discuss the importance of the Synod of Whitby.
3. Give a brief account of the social and political life in England during the Anglo-Saxon Period.
4. Write short notes on :—
   Angles, Augustine, Caedmon and the Witan.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौथा परिच्छेद

प्राचीन काल के प्रसिद्ध राजा

सन् ८२६	एक-छत्र-राज्य की स्थापना।
,, ८७१—९०१	महान ऐल्फ्रेड।
,, ८७८	वेडमोर की संधि।
,, १०१६	डेनों की विजय।
,, १०४२	डेन राज्य का अन्त।
,, १०४२—१०६६	साधु एडवर्ड।
,, १०६६	नार्मनों की विजय।

(क) ऐलफ्रेड तथा डेन जाति के आक्रमण

प्राचीन सप्त राज्य—

आँगल, सेक्सन तथा जूट, जिनसे मिलकर अँग्रेज़ जाति बनी है, पहले टोलियाँ बनाकर रहते थे। जब अँग्रेज़ द्वीप भर में फैल गये और उन्होंने इसी देश को अपना घर बना लिया, उस समय उन्होंने धीरे-धीरे छोटे-छोटे राज्य स्थापित करने आरम्भ किये। ये राज्य आये दिन आपस में युद्ध करते थे और यहाँ के प्राचीन निवासी ब्रिटनों से भी उन्हें युद्ध करना पड़ता था, क्योंकि वे कभी-कभी एकत्र होकर अँग्रेज़ों पर आक्रमण कर देते थे। छठी शताब्दी के मध्य में इंगलैंड सात छोटे-छोटे राज्यों (Heptarchy) में विभक्त था, जिनमें कभी एक और कभी दूसरे राज्य की भक्ति प्रदान हो जाती थी। उन सप्त राज्यों में नार्दम्ब्रिया (Northumbria), मर्सिया (Mercia) और वेसेक्स (Wessex) तीन मुख्य राज्य थे। इसी सप्त-राज्य के काल में देश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में ईसाई धर्म का प्रचार हुआ, जो एक राज्य से दूसरे राज्य में फैलकर धीरे-धीरे समस्त इंगलैंड का जातीय धर्म होगया।

एक-छत्र-राज्य की स्थापना—

नवीं शताब्दी के आरम्भ में सप्त राज्यों में से वेसेक्स (Wessex) के राजा की शक्ति अन्य राज्यों की अपेक्षा बहुत अधिक बढ़ गई। उसी समय डेन जाति के आक्रमण आरम्भ हो जाने के कारण अन्य राज्य शक्तिहीन हो चले थे और देश में इन आक्रमणों का सामना करने के लिये एक-छत्र-राज्य की आवश्यकता भी बहुत थी। ऐसी स्थिति में वेसेक्स के राजा एगबर्ट (Egbert) को अन्य राज्यों ने भी अपना सम्राट् मान लिया, और अब सन् ८२९ में समस्त इंगलैंड पर एक ही राजा का झण्डा फहराने लगा। इस प्रकार एगबर्ट के समय से इंगलैंड में छोटे-छोटे राज्यों का काल समाप्त हुआ और इसी समय से देश में एक-छत्र-राज्य स्थापित होने के कारण इंगलैंड के राजवंश की नींव पड़ी और वर्तमान सम्राट् जार्ज पष्ट का पता इसी राजवंश से लगाया जा सकता है।

महान ऐलफ्रेड—

एगबर्ट के राजवंश का सब से प्रसिद्ध राजा उसका सब से छोटा पौत्र ऐलफ्रेड माना जाता है, जो अपने उत्तम गुणों के कारण "महान ऐलफ्रेड" (Alfred the Great) के नाम से प्रसिद्ध है। उसे लड़कपन ही से विद्या का प्रेम था और वह राजा होने के साथ-साथ अपने समय का प्रसिद्ध विद्वान् भी माना जाता है। वह प्रजा का सच्चा हितैषी था और उसने अपना समस्त जीवन प्रजा ही के हित-चिन्तन में व्यतीत किया। वह वीर योद्धा भी था और उसने स्वयं अपने राज्य-काल में युद्धों में मुख्य भाग लिया।

डेन जाति के आक्रमण—

ऐलफ्रेड के राज्य-काल में सब से बड़ा भय डेन जाति (Danes) के आक्रमणों का था। डेन लोग डेनमार्क (Denmark) तथा नार्वे (Norway) के निवासी थे, और उन्होंने अभी तक ईसाई धर्म को ग्रहण नहीं किया था। वे अभी तक लूट-मार ही के भरोसे निर्वाह करते थे, और इंगलैंड पर आक्रमण करने का भी उनका मुख्य उद्देश्य लूट-मार करना ही था। परन्तु धीरे-धीरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्होंने लूट-मार के साथ-साथ इंगलैंड में बसना भी आरम्भ कर दिया, और इस समय तक देश में डेन लोग काफ़ी संख्या में बस चुके थे। इन लोगों से युद्ध करने में ऐलफ्रेड के पिता और तीनों भाई सन् ८७१ तक मर चुके थे,

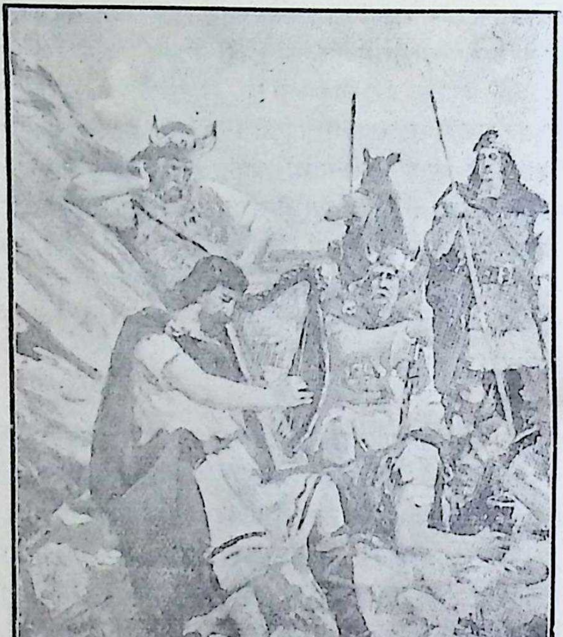

ऐलफ्रेड डेनों के खेमे में

और अब वेसेक्स की रक्षा का भार केवल उसी पर पड़ा। ऐलफ्रेड के राजा होते ही डेन जाति के प्रसिद्ध सेनापति गुथरम (Guthrum) ने भारी सेना

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकर इंगलैंड पर आक्रमण किया और समस्त वेसेक्स को कुचल डाला। ऐलफ्रेड भी अपनी जान बचाकर भागा और जाकर एक टापू में शरण ली।

कुछ काल पश्चात् उसने एक सेना एकत्रित की और इंगलैंड आ कूदा। अब उसने बड़ी वीरता से गुटरम का सामना किया, परन्तु अन्त में उसने यही उचित समझा कि इन लोगों से बटवारे की संधि कर ली जाय। अतः सन् ८७८ में वेडमोर (Wedmore) के स्थान पर संधि हुई, जिसके अनुसार इंगलैंड का उत्तरी तथा पूर्वी भाग गुटरम को मिला, और वेसेक्स तथा मर्सिया का पश्चिमी भाग ऐलफ्रेड के अधीन रहा। लन्दन भी ऐलफ्रेड के भाग में आया। इसके अतिरिक्त गुटरम ने अपने साथियों सहित ईसाई होना स्वीकार कर लिया, जिसके कारण अँग्रेज़ों तथा डेन लोगों में जो धार्मिक भेद के कारण घृणा का भाव था, उसका अन्त हुआ।

डेन लोगों से बटवारे की संधि कर लेना ऐलफ्रेड का गूढ़ राजनीतिज्ञ होना सिद्ध करता है। डेन लोगों को बिल्कुल देश से निकाल देना असम्भव था, और ऐसी स्थिति में बटवारा कर लेने ही में हित था। आगे चलकर ऐलफ्रेड के उत्तराधिकारियों ने अवसर पाकर शेष भाग भी डेनों से छीन लिया, जिसके कारण अँग्रेज़ी राज्य फिर संगठित होगया।

ऐलफ्रेड के सुधार—

विदेशी आक्रमणों को शान्त करके ऐलफ्रेड ने सुधारों की ओर ध्यान दिया। सब से पहले उसने देश की रक्षा के हेतु एक बहुत अच्छा जहाज़ी बेड़ा बनवाया, और अपनी प्रजा को नाविक होने तथा विदेशों में व्यापार करने के लिए उत्साहित किया। अँग्रेज़ों की वर्तमान जगत-प्रसिद्ध जहाज़ी सेना की इसी समय से नींव पड़ना मानी जाती है। सेना का भी उचित प्रबन्ध किया गया। देश में शान्ति स्थापित रखना और न्याय करना उसकी राजनीति का मुख्य ध्येय था। उसने देश के रीति-रिवाजों को एक पुस्तक में लिखवाया। न्यायाधीश न्याय करते समय उस पुस्तक को प्रयोग में लाते थे। न्याय अधिकतर पञ्चायतों द्वारा होता था। इस प्रकार न्यायक्रम के संगठन का उत्तम किया। उसने धार्मिक क्षेत्र में भी बहुत से सुधार किये और बहुत से गिर्जाघर प्रबन्ध तथा सदाचारी मठ बिल्कुल नये सिरे से बनवाये, जिनमें उसने योग्य तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदाचारी पादरियों को नियत किया। उसके राज्य-काल में विद्या की उन्नति के लिए भी चेष्टा की गई। विद्वानों का आदर किया जाता था और उच्च श्रेणी के बालकों के लिये पाठशालाएँ खोली गईं। ऐलफ्रेड ने बहुतसी उत्तम पुस्तकें लिखवाईं जिनमें सबसे प्रसिद्ध आँगल-सेक्सन (Anglo-Saxon Chronicle) इतिहास है, जो नार्मन-विजय के पूर्व-काल की घटनाओं के लिए अब तक सब से प्रमाणिक पुस्तक मानी जाती है। बीड (Bede) का धार्मिक इतिहास, प्रार्थना पुस्तक और पुस्तकों का अनुवाद भी अँग्रेज़ी भाषा में करवाया गया।

(ख) डेन जाति की विजय

ऐलफ्रेड के उत्तराधिकारी—

सन् ६०१ में राजा ऐलफ्रेड परलोक सिधारा। उसके उत्तराधिकारियों में सबसे प्रसिद्ध नाम राजा एडगर (Edgar) का है जिसके दरबार में डन्सटन (Dunstan) नामक योग्य राजनीतिज्ञ रहता था। इन उत्तराधिकारियों ने अवसर पाकर पहले तो डेन लोगों को इंगलैंड से निकाल बाहर किया, और समस्त देश पर अपना फिर राज्य फैला लिया। परन्तु उनकी यह सुख और शान्ति अधिक काल तक स्थायी न रह सकी। ऐलफ्रेड की मृत्यु के लगभग एक शताब्दी बाद डेन लोगों के आक्रमण फिर बड़े वेग से आरम्भ हुए, और इस समय अँग्रेज़ी राजाओं के अयोग्य तथा शक्ति-हीन होने के कारण डेन जाति को अपना राज्य स्थापित करने में कोई कठिनाई न हुई।

डेनों की विजय तथा केन्यूट—

इस समय डेन केवल लुटेरे नहीं रहे थे परन्तु अब वे सुसज्जित सैनिक हो चुके थे, और उन्होंने डेनमार्क तथा नार्वे में एक शक्तिशाली राज्य की भी स्थापना करली थी। डेन लोगों ने अंग्रेज़ी राजा एथेलरेड (Ethelred) तथा एडमण्ड (Edmund) के राज्य-काल में कई बार आक्रमण किये। एथेलरेड में एक अवगुण यह था कि डेनों को धन देकर लौटा दिया करता था। धन के लालच से डेनों के आक्रमण बार-बार होते थे। डेनों को धन देने के लिये राजा ने देश के धनी लोगों पर डेनगेल्ड नामक एक कर लगा दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह कर इंगलैंड के राजा बहुत काल तक प्रजा से वसूल करते रहे। अन्त में सन् १०६६ में डेन जाति के राजा केन्यूट (Canute) ने इंगलैंड को अपने अधीन कर लिया। इस प्रकार इंगलैंड अब डेन राज्य का भाग हो गया, और उसकी स्वतन्त्रता कुछ काल के लिये नष्ट होगई।

केन्यूट का शासन—

केन्यूट विदेशी राजा अवश्य था परन्तु फिर भी उसने अँग्रेज़ों का बहुत कुछ उपकार किया। केन्यूट की गणना यूरोप के प्राचीन काल के महान् शासकों में की जाती है। उसने ईसाई धर्म स्वीकार किया और अपने पूर्वजों की अपेक्षा कहीं अधिक सभ्य था। वह इंगलैंड में रहना अधिक पसन्द करता था, क्योंकि यह देश नार्वे तथा डेनमार्क की अपेक्षा सभ्य था। उसने इंगलैंड के भूतपूर्व राजा एथेलरेड की विधवा से विवाह किया, और अँगरेज़ों तथा डेनों दोनों के प्रति समता का व्यवहार किया और कई अंग्रेज़ों को उसने अपना मुख्य सलाहकार भी बनाया। उसने शीघ्र ही समझ लिया कि वह इतने बड़े साम्राज्य पर अकेला शासन नहीं कर सकता, अतः उसने अपने साम्राज्य को सूबेदारों में बाँट दिया। इंगलैंड भी चार सूबों में बाँटा गया। प्रत्येक सूबे में एक सूबेदार, जो Jarl अथवा Earl कहलाता था, शासन करता था। इंगलैंड में सब से बड़ा अर्ल वेसेक्स का सूबेदार गाडविन (Godwin) था। उसके राज्य-काल में देश के व्यापार की बहुत उन्नति हुई और इंगलैंड का दूसरे देशों से भी सम्बन्ध स्थापित होने लगा।

डेन राज्य का अन्त—

केन्यूट की मृत्यु के पश्चात् उसके दो पुत्रों ने एक-दूसरे के बाद इंगलैंड में राज्य किया, परन्तु वे दोनों अत्याचारी तथा निर्बल थे। सन् १०४२ में दूसरे पुत्र की मृत्यु होने पर अँग्रेज़ों ने सुगमतापूर्वक अपने प्राचीन राजा एथेलरेड के पुत्र को जो "साधु एडवर्ड" (Edward, the Confessor) के नाम से प्रसिद्ध है अपना राजा बना लिया, और इस प्रकार २५ वर्ष के पश्चात् इङ्गलैंड एक विदेशी राज्य की अधीनता से निकल कर फिर स्वतन्त्र हो गया और ऐलफ्रेड की सन्तान ने फिर से इङ्गलैंड में राज्य किया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) नार्मन राज्य की स्थापना

साधु एडवर्ड—

साधु एडवर्ड के विचार पवित्र तथा धार्मिक थे और उसका स्वभाव भी बहुत अच्छा था। अपने धार्मिक तथा पवित्र जीवन के कारण ही उसे साधु

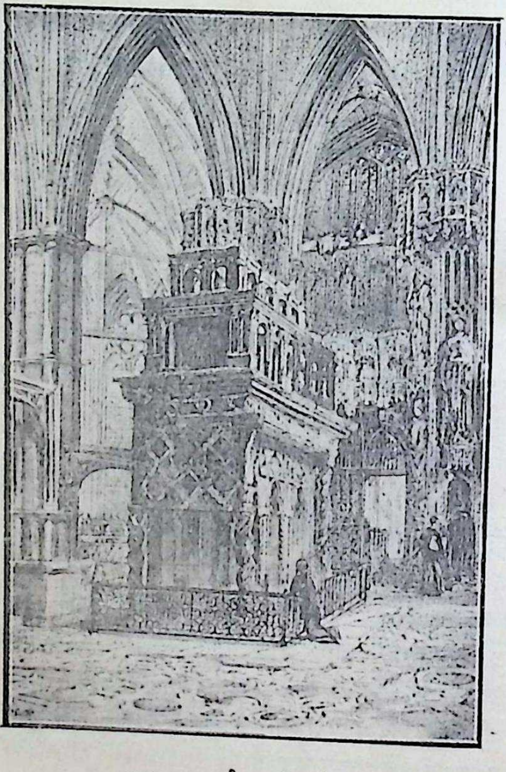

साधु एडवर्ड का गिर्जाघर

एडवर्ड (Edward, the Confessor) की उपाधि मिली। वेस्टमिनिस्टर (Westminister Abbey) का बड़ा गिर्जाघर उसी के समय में आरम्भ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

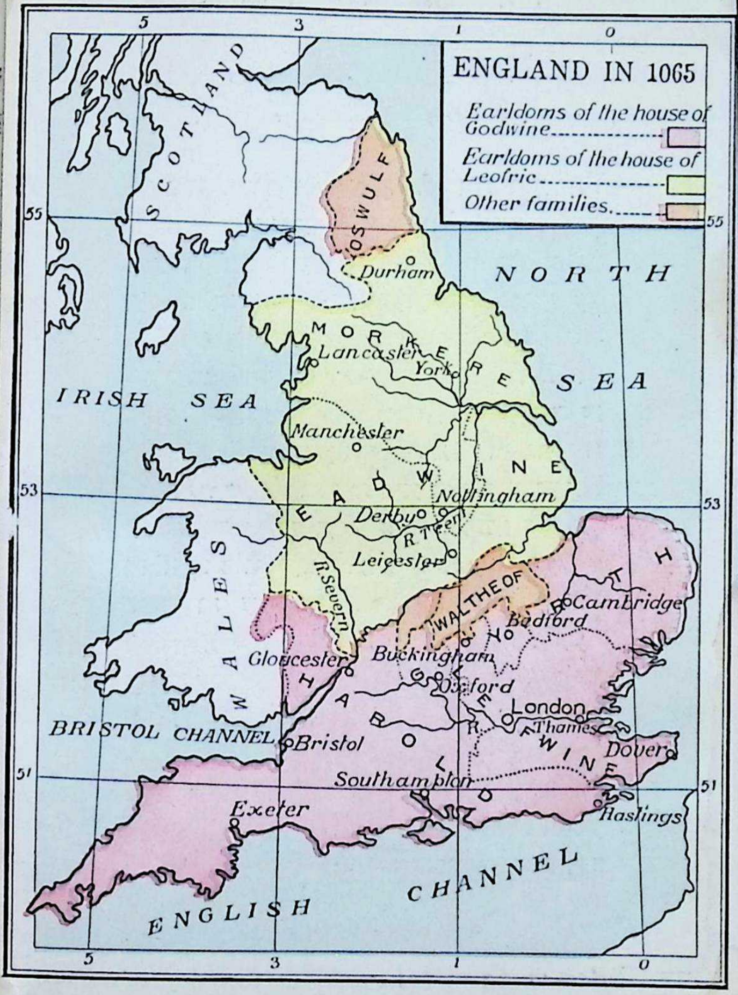

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किय
राज्य
गड़ब
देश
नार्म

और
राजा
राज्य
अँग्रे
शार्ल
विरो
झगड़
देश
वापि
गाडी
कुछ
राज

और
मृत्यु
ममेर
इङ्गले
न क
विन
विलि

आग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया था। परन्तु शासन-कार्य्य में उसे कोई रुचि न थी; इस कारण उसके राज्य-काल में शासन के सूत्र ढीले पड़ गए, और देश में कई प्रकार की गड़बड़ फैलने लगी। इसका बुरा परिणाम शीघ्र ही प्रतीत होने लगा और देश पर एक दूसरे विदेशी आक्रमण की तैयारी होने लगी।

नार्मनों का ज़ोर—

साधु एडवर्ड की माता फ्रान्स के नार्मण्डी प्रान्त की राजकुमारी थी, और स्वयं उसका पालन-पोषण बहुत दिनों तक फ्रान्स ही में हुआ था। राजा होते ही उसने अपने दरबार में नार्मनों को भरना आरम्भ किया, और राज्य तथा चर्च के सारे बड़े-बड़े पदों पर उन्हीं को नियत कर दिया। इससे अँग्रेज़ बहुत अप्रसन्न हुए, और गाडविन (Godwin) नामक एक शक्तिशाली अँग्रेज़ी सरदार ने जाति का नेता बन कर दरबार में विदेशी नार्मनों का विरोध करना आरम्भ किया। इस सम्बन्ध में साधु एडवर्ड और गाडविन में झगड़ा भी ख़ूब चला। राजा ने गाडविन को देश निकाला दे दिया, परन्तु देशवासियों ने उसके पक्ष में इतना बड़ा आन्दोलन खड़ा किया कि राजा उसे वापिस बुलाने पर बाध्य हुआ। इंगलैंड लौटने के थोड़े ही दिनों पश्चात् गाडविन की मृत्यु हो गई, और इस कारण विदेशी नार्मनों के विरुद्ध आन्दोलन कुछ काल के लिए ठंडा पड़ गया।

राजा हेरोल्ड —

सन् १०६६ में साधु एडवर्ड की मृत्यु हुई। उसके कोई सन्तान नहीं थी, और इस समय राजवंश का कोई अन्य उत्तराधिकारी भी मौजूद न था। अपनी मृत्यु-शैया पर साधु एडवर्ड ने यह इच्छा प्रकट की थी कि मेरे पश्चात् मेरा ममेरा भाई नार्मण्डी का शासक विलियम (Willam of Normandy) इङ्गलैंड के राजसिंहासन पर बैठे। परन्तु अँग्रेज़ इस प्रस्ताव को कदापि पसन्द न कर सकते थे, और उन्होंने साधु एडवर्ड के मरते ही अपने जातीय नेता गाडविन के पुत्र हेरोल्ड (Harold) को सर्व सम्मति से राजा बना लिया।

विलियम का आक्रमण—

हेरोल्ड के इंगलैंड के राज्यसिंहासन पर बैठते ही नार्मण्डी का विलियम आग-बबूला हो गया, क्योंकि इससे उसकी आशाओं पर पानी फिर गया। वह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बहुत दिनों से इङ्गलैंड के राजसिंहासन पर ताक लगाये बैठा था, और उ
के दबाव से साधु एडवर्ड ने अपने दरबार में नार्मनों की भरती की थी, त
उसे अपना उत्तराधिकारी नियत किया था। इस उत्तराधिकार के लिए व
हेरोल्ड की भी अनुमति ले चुका था। एक बार जब राजा होने से पहले हेरो
का जहाज़ नार्मण्डी के तट पर टकराया था, उस समय विलियम ने बलपूर्व
उससे यह वचन ले लिया था कि इंगलैंड का राजसिंहासन प्राप्त करने में
तुम्हारी सहायता करूँगा।

इन सब कारणों से हेरोल्ड के राजा होते ही विलियम ने इंगलैंड प
आक्रमण करने की ठान ली और वह एक बहुत बड़ी सेना लेकर इङ्गलैंड
दक्षिणी भाग में आ धमका। १४ अक्टूबर सन् १०६६ के दिन हेस्टिं
(Hastings or Senlac) के स्थान पर हेरोल्ड तथा विलियम में घो
संग्राम हुआ। इस संग्राम में डाह के कारण बहुत से अँग्रेज़ी सरदारों ने हेरोल
को सहायता न दी और उसको केवल अपने ही बल-बूते पर विलियम क
सामना करना पड़ा। अँग्रेज़ी पैदल सेना नार्मन घुड़-सवारों के सामने न ठह
सकी और वीर हेरोल्ड लड़ता-लड़ता मारा गया। नार्मनों की पूर्ण विजय हु
और इसके उपरान्त विलियम ने बड़े समारोह से लन्दन में प्रवेश किया। अँग्रेज़
ने भी अब विलियम को राजा स्वीकार कर लेने ही में भलाई समझी
वेस्टमिनिस्टर (Westminister Abbey) के बड़े गिर्जाघर में स्व
विटान (Witan) सभा की अनुमति से उनका राज्याभिषेक हुआ औ
उसका इङ्गलैंड का राजा बनने का हार्दिक-मनोरथ पूरा हो गया। साधु एडव
ही के समय से नार्मन-विजय के लक्षण प्रस्तुत होने लगे थे, और अब हेस्टिंग
की विजय के पश्चात् नार्मन राज्य की वास्तविक स्थापना हुई। इस प्रका
इंगलैंड के इतिहास में आँगल-सेक्सन राज्य-काल समाप्त होता है और इ
समय से नार्मन-राज्य का आरम्भ होता है।

Exercises.

1. How was the whole of England brought under one Central Government?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Why is Alfred regarded as the greatest king of England ? Give some account of his important reforms.
3. Who were the Danes ? What settlement did King Alfred make with them ?
4. Give a brief account of the Danish Rule in England.
5. Who was Edward, the Confessor ? How far is it correct that the foundation of the Norman Conquest had been laid during his reign ?
6. How was the Norman rule established in England ? What led to the defeat of the Anglo-Saxons at Hastings ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माध्यमिक काल
(१०६६ से १४८५ तक)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

This book is belongs to
Mr. Ramjee Prasad
Private candidates of class IX.
Meston High school Ramnagar
Benares state
Date 24/10/44.
History of English people.

Ramji P.d.

This book is belong to
Mr. Ramji Prasad.
rivate a student of class IX th
Meston High school
Ram nagar Benares state
Date 16/11/45

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

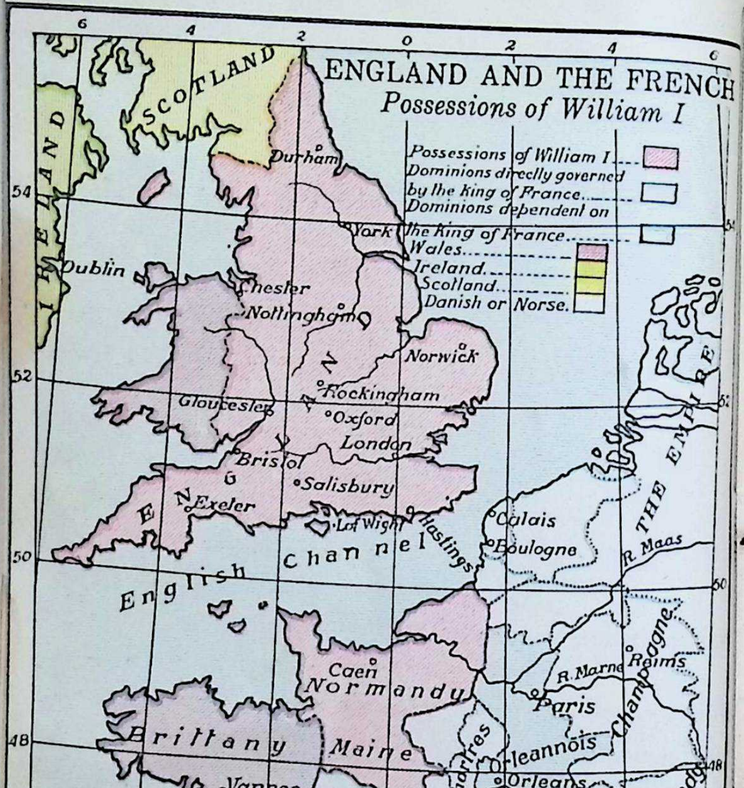

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पाँचवा परिच्छेद

नार्मन राज्य

सन् १०६६–१०८७	विलियम विजयी (विलियम प्रथम)
,, १०८७–११००	विलियम रूफस (विलियम द्वितीय)
,, ११००–११३५	हेनरी प्रथम
,, ११३५–११५४	राजा स्टेफन
सन् १००६	डूम्स-डे-बुक
,, ११००	स्वतंत्रता-पत्र
,, ११५३	वेलिंगफ़ोर्ड की संधि
,, ११५४	नार्मन राज्य का अधिकार

विलियम का राज्याधिकार—

विलियम को इंगलैंड का राज्य-सिंहासन वास्तव में हेस्टिंग्स के युद्ध में विजयी होने के कारण प्राप्त हुआ ; परन्तु उसने राज्याधिकार के लिये दो अधिकार और उपस्थित किये। पहला यह है कि साधु एडवर्ड ने उसे अपना उत्तराधिकारी बनाया था ; और दूसरा यह कि विटान सभा ने उसे अपना राजा स्वीकार किया था।

समस्त इंगलैंड पर अधिकार—

यद्यपि हेस्टिंग्स के युद्ध के पश्चात् विलियम का इंगलैंड के सिंहासन पर अधिकार तो होगया, तथापि आगामी पाँच वर्ष तक उसको दम मारने तक का अवकाश न मिला। अंग्रेजों की दृष्टि में विलियम विदेशी था, अतः उसके आधिपत्य को स्वीकार करना उनके लिये असह्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था, दूसरे नार्मन अंग्रेज़ों से घृणा करते थे और बहुत से नार्मन बैरनों ने इनकी सम्पत्ति भी हस्तगत करली थी। इन कारणों से विद्रोह की ज्वाला भभक उठी। सन् १०६७ से लेकर सन् १०७२ तक विलियम को अंग्रेज़ देश-भक्तों के साथ लड़ना पड़ा। परन्तु विलियम को इस विद्रोह के दमन करने में कोई आपत्ति न हुई, कारण कि अंग्रेज़ सरदार अथवा बैरन एक दूसरे से ईर्षा रखते थे और इस कारण उन सब ने मिलकर विलियम का सामना न किया। विलियम ने एक एक करके सबको परास्त किया और उनकी भूमि छीनकर अपने नार्मन बैरनों में बाँट दी। इस प्रकार समस्त इंगलैंड पर विलियम का अधिकार हुआ और फिर उसने चैन से शासन किया। वह विजयी विलियम के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह विलियम प्रथम के नाम से भी प्रसिद्ध है, क्योंकि इस नाम का वह पहला राजा था।

फ्यूडल प्रथा—

नार्मन विजय के पश्चात् इंगलैंड में एक नये ढंग की ज़मींदारी-प्रथा आरम्भ हुई जो फ्यूडलिज़्म (Feudalism) के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रथा के अनुसार राजा समस्त भूमि का स्वामी माना जाता था, और उसकी ओर से ज़मींदारों को इस शर्त पर भूमि दी जाती थी कि वे राजा की सहायता के लिये सदैव कुछ सेना तैयार रक्खेंगे और आवश्यकता पड़ने पर उसकी ओर से लड़ेंगे। जिन ज़मींदारों को राजा स्वयं भूमि देता था वे बड़े ज़मींदार अथवा बैरन (Barons) कहलाते थे और उनको राजा के सम्मुख स्वामिभक्ति की शपथ खानी पड़ती थी। बड़े ज़मींदार अपनी भूमि अन्य लोगों को देते थे। ये लोग छोटे ज़मींदार कहलाते थे और बड़े ज़मींदारों को अपना स्वामी समझते थे। अपने स्वामियों की भक्ति करना ही इनका कर्त्तव्य होता था।

फ्यूडल प्रथा का सुधार—

इस प्रथा में सब से बड़ा दोष यह था कि सेना एकत्रित करने के लिये राजा को सदा बड़े ज़मींदारों पर निर्भर रहना पड़ता था। बड़े ज़मींदार अपने छोटे ज़मींदारों की सहायता से राजा के विरुद्ध बहुत बड़ा विद्रोह खड़ा कर सकते थे। विलियम ने इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया। सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से पहले उसने सालिसबरी (Salisbury) नामक स्थान पर एक बहुत बड़ी सभा बुलाई, जिसमें बड़े तथा छोटे दोनों ज़मींदारों को शपथ खानी पड़ी कि हम सब की भूमि का वास्तविक स्वामी राजा है और इसलिये हमारा प्रथम कर्त्तव्य राजा ही के प्रति होगा। फ्यूडल प्रथा का विस्तार पूर्वक वर्णन आगे चलकर पृथक अध्याय में किया जावेगा।

डूम्स-डे-बुक—

ज़मींदारों पर अपना प्रभाव स्थायी रखने के लिये विलियम ने बड़े परिश्रम से सारे देश की भूमि की नाप-तोल कराई जिससे राजा को लगान वसूल करने में कोई आपत्ति न हो। उसने एक बहुत बड़ा रजिस्टर तैयार कराया जो 'डूम्स-डे-बुक' (Domes-day-Book) के नाम से प्रसिद्ध है। इस रजिस्टर में ज़मींदारों का नाम, उसकी भूमि की नाप-तोल और उसके पैदावार तथा लगान इत्यादि का वर्णन होता था, जिससे कोई ज़मींदार राजा को धोखा न दे सके।

धार्मिक सुधार—

विलियम ने चर्च में भी कुछ सुधार किये। बहुत से अँग्रेज़ी पदों पर उसने अपने विश्वासपात्र नार्मन बिशपों को नियुक्त किया, और इटली से लेनफ्रेंक (Lanfranc) नामक एक प्रसिद्ध विद्वान् को बुला कर उसे केन्टरबरी का लाट पादरी बनाया। विलियम ने चर्च को अपनी अलग धार्मिक अदालतें बनाने की आज्ञा दे दी, जिनमें पादरियों के अपराधों की जाँच होती थी और उन्हें धर्म-व्यवस्था के अनुसार दंड दिया जाता था। परन्तु बिशपों को वह स्वयं नियुक्त करता था और उसकी आज्ञा के बिना चर्च में कोई नया नियम भी नहीं बन सकता था। बहुत से नये गिर्जे तथा मठ भी बनवाये गये। इन सुधारों के प्रभाव से देश की संस्कृति ने भी बहुत उन्नति की।

विलियम का राज्य संगठन—

विलियम की शासन नीति से अप्रसन्न होकर कुछ नार्मन बैरनों ने विद्रोह किया, परन्तु वह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया। परन्तु इस विद्रोह ने राजा को अपनी शक्ति और भी अधिक संगठित करने पर बाध्य किया। उसने यह आवश्यक समझा कि नार्मन बैरनों के उपद्रवों को शान्त करने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अंग्रेज़ों की सहायता की आवश्यकता है; अतः उसने अँग्रेज़ों की पुरानी जातीय सेना (Fyrd) को फिर से संगठित किया। डेनगेल्ड (Danegeld) नामी कर सब से वसूल किया जाता था और राजा के कर्मचारी पुलिस का भी प्रबन्ध समस्त देश में करते थे। शासन कार्य में सहायता देने के लिये विटान सभा के स्थान में महासभा (Great Council) की स्थापना की गई जिसमें राजा के प्रमुख ज़मींदार (Barons) तथा विशप सम्मिलित होते थे। इस प्रकार विलियम ने देश में दृढ़ केन्द्रीय-शासन की स्थापना की।

विलियम रूफस तथा एनसल्म—

सन् १०८७ में विजयी विलियम की मृत्यु हुई और उसकी वसीयत के अनुसार उसका दूसरा पुत्र विलियम रूफस इंगलैंड का राजा हुआ। राज-सिंहासन पर बैठने के कुछ ही दिन बाद नार्मन बैरनों ने उसके बड़े भाई राबर्ट (Robert) का पक्ष लेकर विद्रोह खड़ा कर दिया। रूफस अपने पिता की भाँति वीर तथा साहसी था। उसने अंग्रेज़ी सेना की सहायता से विद्रोहियों का दमन किया और बहुतसों को देश निकाला दे दिया। रूफस स्वभाव का बड़ा दुष्ट तथा लालची था। उसने बैरनों तथा जन-साधारण से विविध बहाने बनाकर खूब धन वसूल किया, यहाँ तक कि चर्च तक को न छोड़ा। वह विशपों की जगह खाली होने पर चर्च की आय स्वयं हड़प कर जाता और बहुत दिनों तक नए विशपों की नियुक्ति न करता था। रूफस ने केन्टरबरी के लाट पादरी के पद को भी बहुत दिनों तक खाली रखा, परन्तु अन्त में जब वह एक बार बहुत बीमार पड़ा तो उसे बहुत पश्चात्ताप हुआ और उसने एनसल्म (Anselm) नामक एक विद्वान् को उक्त पद पर नियुक्त किया। अच्छा होते ही रूफस का एनसल्म से इस बात पर झगड़ा चलने लगा कि विशप राजा के अधीन हैं या रोम के पोप के। इस झगड़े का कोई निपटारा न हो सका और अन्त में तंग आकर एनसल्म को देश छोड़ कर रोम चला जाना पड़ा। इससे रूफस बहुत बदनाम होगया। अन्त में एक दिन जब वह शिकार खेलने के लिये एक जंगल में गया तो किसी ने उसे एक तीर मारा और उसकी मृत्यु होगई जिससे प्रजा को बड़ी प्रसन्नता हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेनरी प्रथम तथा उसकी नीति—

रूफस की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई, "हेनरी प्रथम" (Henry I) के नाम से राजा हुआ। वह विजयी विलियम का सबसे योग्य पुत्र था। वह यह भली भाँति जानता था कि नार्मन वैरन उसके भाई राबर्ट का पक्ष लेकर, जो उस समय धर्म-युद्ध (Crusades) के लिये पैलस्टाइन गया हुआ था, एक दिन अवश्य उपद्रव करेंगे। इस कारण उसे अपने नार्मन वैरनों पर भरोसा न था, अतः उसने अंग्रेज़ों को ही अपना विश्वासपात्र बनाना उचित समझा। हेनरी ने स्काटलैंड की राजकुमारी से विवाह किया, जिसका अपनी माता द्वारा महान् एल्फ्रेड के राजवंश से सम्बन्ध था। दूसरे, उसकी शिक्षा तथा पालन-पोषण इंगलैंड में हुआ था और अंग्रेज़ी भाषा का भी उसे ज्ञान था। इसलिये अंग्रेज़ी जनता धीरे-धीरे उसका विदेशीपन भूलकर उसे अपना जातीय राजा समझने लगी। हेनरी ने अंग्रेज़ी प्रजा को प्रसन्न करने के लिए "स्वतंत्रता का चार्टर" (Charter of Liberties) प्रकाशित किया; जिसमें उसने वचन दिया कि मैं साधु एडवर्ड के अनुसार ही शासन व्यवस्था करूँगा, अब न तो वैरनों से किसी प्रकार का अनुचित कर वसूल किया जायगा और न चर्च की सम्पत्ति पर ही नीयत बिगाड़ूँगा। इस चार्टर ने चर्च तथा प्रजा सबको प्रसन्न किया।

हेनरी के अनुमान के अनुसार जब राजा का ज्येष्ठ भाई राबर्ट धर्म-युद्ध से लौट कर आया, तो वैरनों ने उसका पक्ष लेकर विद्रोह किया। हेनरी ने तुरन्त नार्मण्डी जाकर अपने भाई को पराजित किया और क़ैद करके इंगलैंड ले आया। उस बेचारे को अपना शेष जीवन कारागार में काटना पड़ा।

शासन-सुधार—

इंगलैंड के इतिहास में हेनरी 'न्यायसिंह' (Lion of Justice) के नाम से प्रसिद्ध है। उसने देश की न्याय-प्रणाली में बहुत कुछ सुधार किया और राजकीय न्यायालय स्थापित किये जिनका उल्लेख हम आगे चल कर करेंगे। उसने केन्द्रीय शासन को भी दृढ़ करने का प्रयत्न किया और राज्य-प्रबन्ध के लिये मन्त्रियों की एक सभा (Curia Regis or Royal Court) स्थापित की जिसके सदस्य ग्रेट काउन्सिल (Great Council)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नामक राजा की बड़ी सभा में से नियुक्त किये जाते थे। नार्मन राज्य में यह 'ग्रेट काउन्सिल' प्राचीन काल की 'विटान सभा' के स्थान पर थी और इसे विजयी विलियम ने स्थापित किया था। हेनरी ने राज-कोष का भी उचित प्रबन्ध किया और उसकी देख-भाल के लिए राज्य-मन्त्रियों का एक विशेष विभाग स्थापित किया जो "राजकीय कोष-विभाग" (Court of Royal Exchequer) के नाम से प्रसिद्ध है।

गृह-युद्ध तथा नार्मन वंश का अन्त—

हेनरी की मृत्यु के पश्चात् राजसिंहासन के लिये झगड़ा प्रारम्भ हुआ, क्योंकि उसके कोई पुत्र न था; केवल मेटिल्डा (Matilda) नामक एक पुत्री और स्टेफन (Stephen) नामक एक भानजा ही उसके उत्तराधिकारी हो सकते थे। बैरन लोग इस अवसर से लाभ उठाकर विविध दलों में विभक्त हो गये। किसी ने किसी का पक्ष लिया और किसी ने किसी का। इस प्रकार एक भयंकर गृह-युद्ध आरम्भ हुआ, जो पूरे १६ वर्ष तक चलता रहा। इस युद्ध से देश में बड़ी अशान्ति रही। अन्त में वेलिंगफ़ोर्ड (Wellingford) की संधि के अनुसार यह निश्चय हुआ कि स्टेफन आजन्म राजा रहे और उसकी मृत्यु के पश्चात् मेटिल्डा का पुत्र राजसिंहासन पर बैठे। इसके थोड़े ही दिनों बाद स्टेफन परलोक सिधारा और सन्धि के अनुसार मेटिल्डा का पुत्र "हेनरी द्वितीय" के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। हेनरी द्वितीय के राज्याभिषेक के समय से नार्मन वंश के राज्य का अन्त हुआ।

नार्मल काल की विशेषता—

नार्मन राजा स्वेच्छाचारी थे, उन्होंने इङ्गलैंड में प्रथम बार केन्द्रीय शासन की स्थापना की। उन्होंने यूरोप की भाँति इंगलैंड में भी फ्यूडल प्रथा प्रचलित की, जिसके अनुसार सब बैरनों ने स्वामिभक्ति की शपथ खाकर उनकी अधीनता स्वीकार की। केन्द्रीय शासन स्थापित करके नार्मन देश को पूर्ण शान्ति प्रदान की और अब देश पर विदेशियों के आक्रमण का भय नहीं रहा। उस समय बड़े बैरन अधिकतर नार्मन होते थे। भूमि छिन जाने के कारण अँग्रेज़ों की स्थिति केवल दासों (Serfs or Villiens) के समान रह गई थी; परन्तु इसका यह प्रभाव अवश्य पड़ा कि विदेशियों द्वारा उन पर जो आपत्ति

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आई उसके कारण अँग्रेज़ों में संगठन तथा एकता का भाव उत्पन्न हो गया।

प्राचीन काल की 'विटान' के स्थान पर अब शासन-कार्य्य ग्रेट काउन्सिल के द्वारा होने लगा, जिसमें बड़े भू-पति तथा बड़े विशप सम्मिलित होते थे। राजकीय अदालतों की भी इसी समय स्थापना हुई, जिन्होंने बैरनों को दबाए रखने में पर्याप्त कार्य कर दिखाया।

इसी समय चर्च की पृथक अदालतों की स्थापना हुई, जिनमें धार्मिक नियमों के अनुसार पादरीवर्ग का न्याय होता था। नार्मन काल में इंगलैंड का यूरोप से अधिक सम्बन्ध हो गया, जिसके कारण देश की सभ्यता की उन्नति पर बड़ा प्रभाव पड़ा और देश में फ्रेंच भाषा तथा फ्रांसीसी संस्कृति का प्रचार आरम्भ हुआ और फ्रेंच भाषा ही राजकीय भाषा हुई। इसी समय यूरोप की भाँति, इंगलैंड में भी, बड़ी-बड़ी इमारतें तथा गिर्जाघर दिखाई पड़ने लगे। नार्मनों तथा अँग्रेज़ों के सम्पर्क से देश में एक नवीन संस्कृति का विकास हुआ।

Exercises

1. What were the most important effects of the Norman conquest upon England ?
2. What do you understand by the term Feudalism ? What changes were introduced in the system in England by William the Conqueror ?
3. What measures were adopted by the Norman Kings to check the powers of the barons ?
4. How did Henry I improve the condition of his subjects ? What administrative reforms were introduced by him ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The Norman Kings.

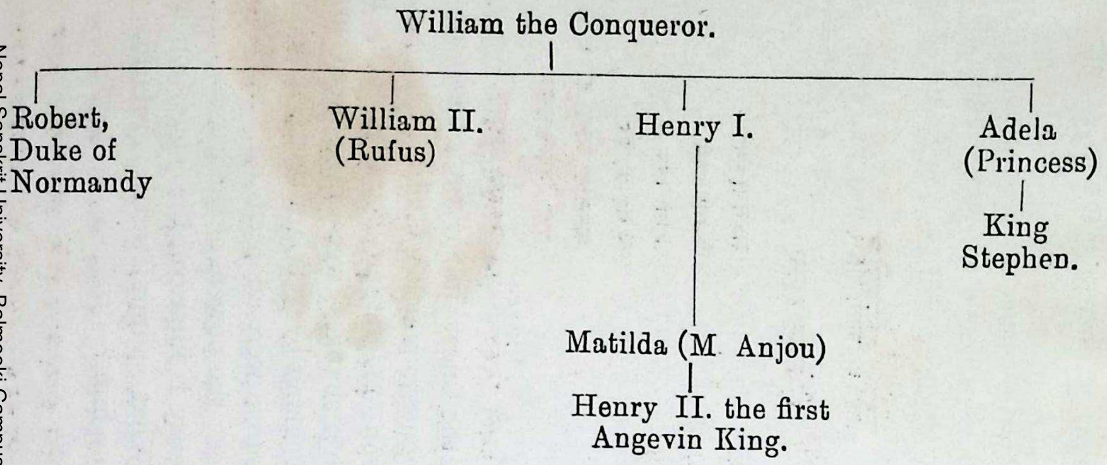

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छठा परिच्छेद

ऍंजिवन राज्य

सन् ११५४–११८९	हेनरी द्वितीय
,, ११८९–११९९	रिचार्ड प्रथम
,, ११९९–१२१६	राजा जान
,, ११७०	बेकेट का बध
,, १२०४	फ्रान्सीसी प्रान्तों की हानि
,, १२१५	महा स्वतन्त्रता-पत्र

(क) हेनरी द्वितीय तथा शासन-सुधार

हेनरी द्वितीय का राज्य-विस्तार—

माध्यमिक इंगलैंड के शासकों में हेनरी द्वितीय का सबसे उच्च स्थान है। उसने ऐसे कठिन समय में भी योग्यता पूर्ण शासन किया और देश की भलाई के लिये भी उसने कई लाभदायक कार्य किये। विदेशी होते हुए भी हेनरी सन् १०६६ के पश्चात् पहला राजा था जिसके शरीर में एलफ्रेड के रक्त का सञ्चार था। इन कारणों से अँग्रेज़ी प्रजा उसे अपना जातीय राजा मानती थी। हेनरी का पिता फ्रान्स के अँजू नामक प्रान्त का शासक (Count of Anjou) था, इसलिये उसका राज-वंश ऍंजिवन (Angevins) के नाम से प्रसिद्ध है। वह केवल २१ वर्ष की अवस्था में इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठा। इंगलैंड के अतिरिक्त नार्मण्डी, अन्जुआ इत्यादि फ्रान्स के सात प्रान्त भी उसके अधीन थे, जिसके कारण फ्रान्स ही में उसकी शक्ति अपने स्वामी फ्रान्स-नरेश से भी कहीं बढ़ कर थी। स्काटलैंड का राजा भी उसका आधिपत्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वीकार करने को वाध्य हुआ, और अन्त में आयरलैंड के भी कुछ सरदा[रों] ने उसे अपना स्वामी स्वीकार कर लिया। इतना बड़ा राज्य विस्तार होने [के] कारण, हेनरी द्वितीय तत्कालीन यूरोप के बहुत बड़े राजाओं में माना गया [और] उसके द्वारा अन्य यूरोपीय देशों से इंगलैंड का सम्बन्ध और भी घनिष्ठ [हो] गया। हेनरी की इस विशाल शक्ति के कारण इंगलैंड के बैरन बिल्कुल शा[न्त] रहे जिससे वह सफलता पूर्वक शासन कर सका।

शासन-सुधार—

हेनरी ने यह बात भले प्रकार समझ ली थी कि देश में स्थायी शा[न्ति] बनाए रखने के लिये बैरनों की शक्ति को कुचल देना अत्यन्त आवश्यक है [।] पिछले १६ वर्ष के गृह-युद्ध की गड़बड़ी में बिना राजा की आज्ञा के कितने [ही] बैरनों ने जो गढ़ बनवा लिए थे वे सब हेनरी ने तुड़वा दिये। हेनरी को य[ह] भी पसन्द न था कि उसे सेना के लिए सदैव बैरनों का मुँह ताकना पड़े [।] अतः उसने यह प्रथा चलाई कि बैरन लोग सेना के बदले धन (Scutage[)] दिया करें। इस धन से राजा ने अपनी एक स्थाई सेना बना ली, जिस[से] राजकीय शक्ति और भी अधिक बढ़ गई। इसके अतिरिक्त हेनरी ने प्राची[न] काल की जातीय सेना (Fyrd or Militia) का पुनः संगठन किय[ा] और आज्ञा दी कि प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक को शस्त्रों से सुसज्जित होक[र] युद्ध के लिए तैयार रहना चाहिये।

हेनरी ने अदालतों में भी सुधार किये। उसने ज़िले की अदालतों के शेरिफ़ों (Sheriffs) के कार्य की देख-भाल का भी प्रबन्ध किया; और देश-भर के अच्छे-अच्छे नियमों को एकत्र करके सार्वजनिक (Common law) क़ानून की नींव डाली। हेनरी ने जूरी प्रथा भी प्रचलित की, जिसके अनुसार प्रत्येक फ़ौजदारी मुक़दमे में कुछ स्थानीय नागरिक जजों को सहायता देने के लिये बुलाये जाते थे। इस प्रथा का बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा और जनता समझने लगी कि न्याय-कार्य में भी उसको भाग लेने का अवसर मिलता है।

टामस बेकेट तथा चर्च की स्वतन्त्रता—

केन्टर्बरी के लाट पादरी के मरने पर हेनरी ने उसका स्थान अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

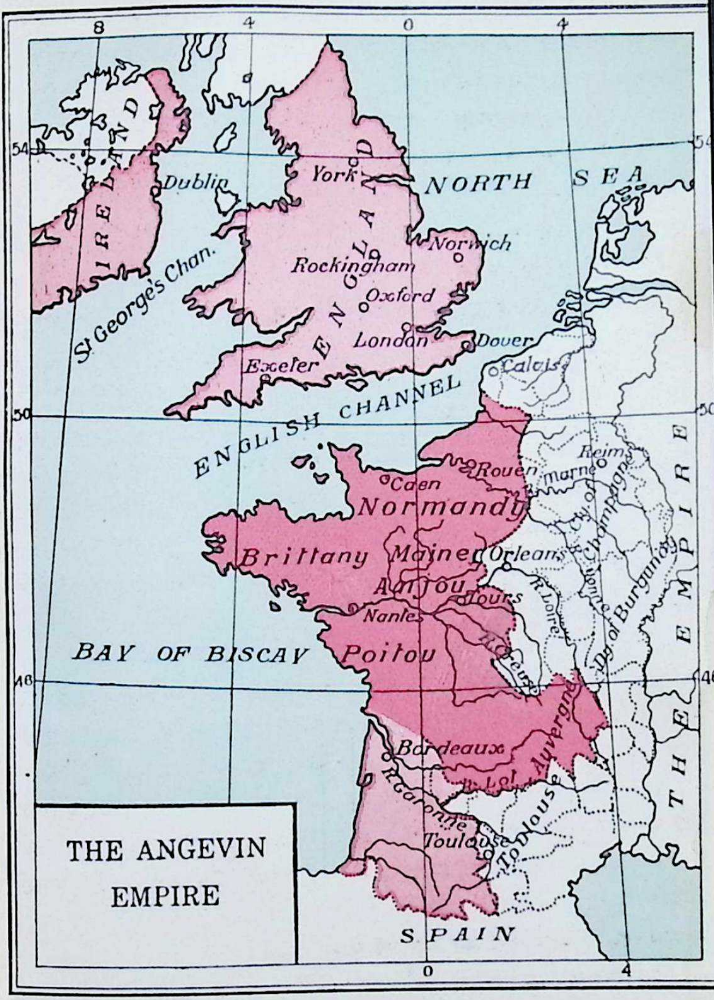

THE ANGEVIN EMPIRE

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजमन्त्री तथा परम मित्र टामस वेकेट (Thomas Becket) को प्रदान किया। उस समय चर्च की स्वतन्त्रता की लहर समस्त यूरोप में फैल रही थी। टामस वेकेट भी उसका पक्का समर्थक था। लाट पादरी होते ही वेकेट ने भी चर्च की स्वतन्त्रता का प्रश्न इंगलैंड में छेड़ दिया और यह चाहा कि धार्मिक अदालतों पर राजा का कोई अधिकार न रहे, और चर्च के अधिकारी

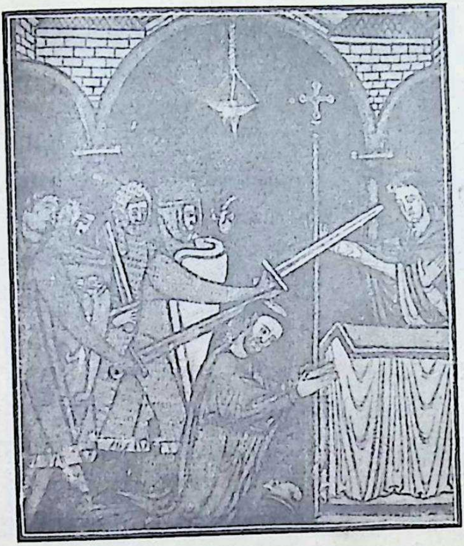

वेकेट का वध

ही जिस प्रकार चाहें पादरियों के अपराधों का निर्णय करें। हेनरी इस स्थिति को स्वीकार न कर सकता था। वह स्वयं चर्च की कुरीतियों को दूर करना चाहता था। उसने चर्च की अदालतों पर अधिकार जमाने के लिए सन् ११६४ ई० में कुछ नियम (Constitutions of Clarendon) बनाये जिनके अनुसार यह निश्चित हुआ कि अन्य लोगों की भाँति पादरियों के अपराधों का निर्णय भी राजकीय अदालतों में ही हुआ करे। उसी के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुसार यह भी तय हुआ कि जिन पादरियों के पास जागीरें हैं उन्हें भी अ ज़मींदारों की भाँति राज-भक्ति की शपथ लेनी पड़ेगी। बेकेट ने इस नियम विरोध किया और सात वर्ष तक राजा से उसका खूब झगड़ा चला। में क्रोध में आकर एक दिन हेनरी यह कह बैठा कि क्या कोई मेरा ऐसा नहीं है जो इस झगड़ालू पादरी से मेरा पीछा छुड़ा दे। राजा के चार इन शब्दों को सुनकर केन्टर्बरी के गिरजे में जा धमके, और उन्होंने गिरजा ही में बेकेट का वध कर डाला। अब तो बेकेट शहीद प्रसिद्ध हो गया उसकी हत्या के समाचार ने समस्त यूरोप में हलचल मचा दी। स्वयं हे को अपने क्रोध में कहे हुए शब्दों पर पश्चात्ताप हुआ और उसने बेकेट समाधि पर क्षमा माँगी। विवश होकर हेनरी ने अब धार्मिक अदालतों स्वतन्त्र छोड़ दिया, और इस प्रकार बेकेट को मृत्यु के पश्चात् अपने उद्दे में सफलता प्राप्त हुई। धार्मिक अदालतें ज्यों की त्यों स्वतन्त्र बनी रहीं अ लगभग ३५० वर्षों तक इन पर राजा का कोई अधिकार न हो सका।

(ख) वीर रिचार्ड तथा धर्म-युद्ध

धर्म-युद्ध में रिचार्ड का भाग —

सन् ११८९ में हेनरी द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र "रिचा प्रथम" (Richard I) के नाम से राजा हुआ। रिचार्ड बड़ा वीर योद्धा थ उसके राज्य-काल की सब से प्रसिद्ध घटना उसका धर्म-युद्धों में भाग लेना है ये धर्म-युद्ध जरूसलम के सम्बन्ध में हुए, जहाँ ईसाई धर्म के जन्मदा ईसामसीह को सूली दी गई थी। इस स्थान पर एशिया के तुर्क मुसलमा ने अधिकार कर लिया था और वे ईसाई यात्रियों को अनेक प्रकार के क देते थे। ईसाई-तीर्थ-स्थान को स्वतन्त्र करना यूरोप के समस्त ईसाई रा अपना कर्त्तव्य समझते थे। उन्होंने बड़े जोश में आकर मुसलमानों के विरु बड़ी वीरता से युद्ध किया। जिन लोगों ने इन धर्म-युद्धों में भाग लिय पोप ने उन्हें लाल काँटे (Red Crosses) बाँटे और वे अब क्रुसेड कहलाये। ये युद्ध भी क्रसेड्स (Crusades) के नाम से प्रसिद्ध हैं औ वे लगभग २०० वर्ष तक चलते रहे। जिस धर्म-युद्ध में वीर रिचार्ड ने भा लिया वह तीसरा था। उसमें उसे तुर्क सम्राट् सलादीन का सामना करन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Admission School Benares City 31/10/43.

पड़ा। जरूसलम पर तो रिचार्ड अधिकारी न हो सका, परन्तु उसकी वीरता से प्रसन्न होकर सलादीन ने यह वचन अवश्य दे दिया कि ईसाई यात्रियों की तीर्थ-यात्रा में अब किसी प्रकार की बाधा न डाली जायगी।

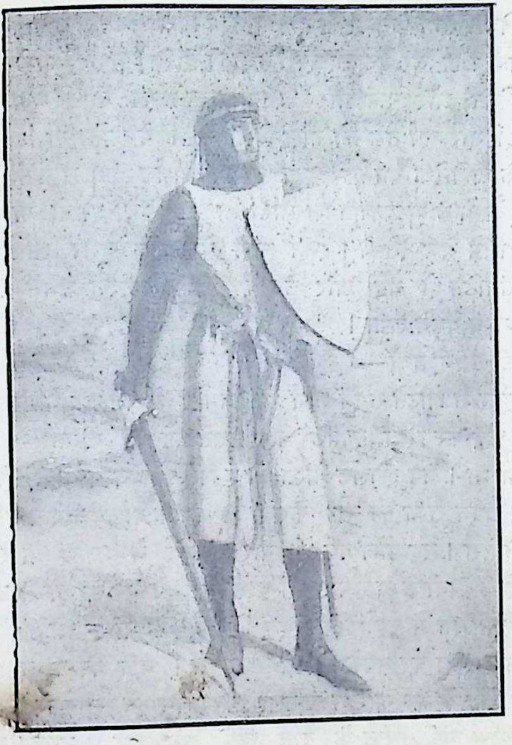

क्रुसेडर

धार्मिक युद्धों का प्रभाव—

इंगलैंड के इतिहास में धार्मिक युद्धों का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इनके द्वारा यहाँ के निवासियों को पूर्वीय देशों के सम्पर्क में आने का अवसर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मिला। इस काल में यूरोप तथा पश्चिमी देशों की अपेक्षा एशिया के पूर्वी देश सभ्यता में कहीं बढ़े-चढ़े थे, और इस कारण इस सम्पर्क से यू वालों ने पूर्वीय देशों से बहुत कुछ सीखा। इसी सम्पर्क के द्वारा यूरोप त एशिया दोनों के व्यापार की भी बहुत उन्नति हुई। यूरोप से एशिया ईसाई पवित्र स्थानों के लिए सेनाएँ जहाज़ों द्वारा भेजी जाती थीं। व्यापारि ने यह अच्छा अवसर देखकर इन्हीं जहाज़ों द्वारा व्यापार का माल भी भेज आरम्भ किया; और रूमसागर के बन्दरगाहों पर बहुत बड़ा व्यापार लगा, जहाँ भारतवर्ष तक का माल बिकने के लिये आता था।

इसके अतिरिक्त धार्मिक युद्धों द्वारा इंगलैंड के राजाओं को बहुत झगड़ालू बैरनों से छुटकारा मिल जाता था और वे इनको पवित्र स्थानों लड़ने के लिये भेज देते थे। इन्हीं युद्धों के द्वारा यूरोप की समस्त ईस जातियाँ संगठित हो गईं और सधर्मी होने के कारण उनमें प्रेमभाव त परस्पर सम्बन्ध बढ़ने लगा।

रिचार्ड की आपत्तियाँ—

धर्म-युद्ध से लौटते समय मार्ग में जर्मनी के सम्राट् ने रिचार्ड को ए टावर में क़ैद कर दिया, क्योंकि वह उससे उसकी वीरता के कारण ब ईर्षा रखता था। जब इंगलैंड वालों को इसका पता चला तो उन्होंने बहुत धन देकर अपने राजा को मुक्त कराया। इसके पाँच वर्ष बाद वीर रिचा परलोक सिधारा। यह पाँच वर्ष भी वीर रिचार्ड ने फ्रान्स के राजा अथव अपने विद्रोही बैरनों से युद्ध करने में व्यतीत किये। अपनी वीरता तथा व के कारण इतिहास में वह "सिंह हृदय रिचार्ड" के नाम से प्रसिद्ध है। वास्त में वह अपने समय का सबसे अच्छा योद्धा था। यदि फ्रान्स तथा आस्ट्रि के शासक डाह के कारण उसे अकेला यरुशलम में छोड़कर चले न आ तो वह अवश्य तुर्की सम्राट् के दाँत खट्टे कर देता। उसकी मृत्यु का कारण एक युद्ध में उसके तीर लगना था। रिचार्ड अपने दस वर्ष के राज्य काल में केवल सात महीने इंगलैंड में रहा, परन्तु उसकी अनुपस्थिति कारण शासन-कार्य्य में कोई बाधा नहीं पड़ी, जिससे विदित होता है कि रिचार्ड के पिता हेनरी द्वितीय ने शासन-क्रम की नींव कितनी दृढ़ कर दी थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) जान तथा महा स्वतन्त्रता-पत्र

राजा जान तथा फ्रान्सीसी प्रान्तों की हानि—

रिचार्ड प्रथम के कोई पुत्र न था, इसलिए उसकी मृत्यु के पश्चात् सन् ११६६ में उसका छोटा भाई जान (John) राजसिंहासन पर बैठा। जान इंगलैंड का सबसे निकृष्ट राजा हुआ है और इसने अपनी प्रजा के हित की ओर तनिक भी ध्यान न दिया। थोड़े ही दिनों में उसकी प्रजा उसके बुरे शासन से तंग आ गई थी और फ्रान्स के प्रान्तों ने विद्रोह खड़ा कर दिया। फ्रान्स के राजा ने इस अवसर से लाभ उठा कर फ्रान्स के अँग्रेज़ी प्रान्तों पर अपना अधिकार जमा लिया और जान कुछ न कर सका। नारमण्डी, अँजू इत्यादि सब प्रान्त छिन गये और फ्रान्स में केवल गेसकनी नामक एक छोटा-सा प्रान्त अँग्रेज़ों के अधिकार में रह गया। इस हानि से इंगलैंड को एक विशेष लाभ भी हुआ। वह यह कि अँग्रेज़ी राजा और बैरन अब इंगलैंड ही को अपना देश समझ कर उसी के शासन-प्रबन्ध की ओर अधिक ध्यान देने लगे।

जान तथा पोप--

इसके बाद जान का पोप से झगड़ा प्रारम्भ हुआ। केन्टर्बरी के लाट पादरी की जगह खाली हुई, जिसके लिए राजा तथा पादरियों में मत-भेद हुआ और दोनों ने रोम के पोप की स्वीकृति के लिए अलग-अलग नाम भेजे, परन्तु पोप ने दोनों में से किसी को स्वीकार नहीं किया। उसने अपनी ओर से स्टेफन लेंगटन (Stephen Langton) नामक एक तीसरे व्यक्ति को इस पद पर नियुक्त कर दिया। जान ने, इस विचार से कि पोप अँग्रेज़ी राजा के विशेष अधिकार को भी छीनना चाहता है, स्टेफन लेंगटन को इंगलैंड में आने तक की आज्ञा न दी। इस पर उसका पोप से सात वर्ष तक झगड़ा चला और अन्त में पोप ने क्रोधित होकर राजा जान को ईसाई धर्म से पतित कर दिया, और फिर यह आज्ञा निकाली कि इंगलैंड के गिरजों में सब प्रकार के धार्मिक संस्कार बन्द कर दिये जायँ। इससे लोगों को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि विवाह तथा मृतक संस्कार उस समय गिरजों ही में हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करते थे। अन्त में जान को दब कर पोप से क्षमा-याचना करनी पड़ी। इसका फल यह हुआ कि इंगलैंड में पोप की प्रधानता स्थापित होगई और जान को प्रति वर्ष पोप के कोष के लिए कर देने की प्रतिज्ञा करनी पड़ी। इस प्रकार अब इंगलैंड धार्मिक-क्षेत्र के अतिरिक्त राजनैतिक-क्षेत्र में भी पोप के अधीन हुआ। स्टेफन लेंगटन को भी इंगलैंड आने की आज्ञा मिल गई और उसने केन्टबरी के लाट।पादरी का पद ग्रहण किया।

जान तथा बैरन—

अब यह समझ कर कि पोप उसका सहायक है, जान ने अपने खोये हुए प्रान्तों को फिर से प्राप्त करने के लिये प्रयत्न किया। उसने इटली तथा जर्मनी के शासकों की सहायता लेकर फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिया। परन्तु फ्रान्स के राजा ने मित्र सेनाओं को सन् १२१४ में बुरी तरह परास्त किया और जान को निराश होकर इंगलैंड लौटना पड़ा। यहाँ आकर उसने बैरनों को तंग करना आरम्भ किया और उसका शासन दिन प्रति दिन बिगड़ता ही गया। बैरन तथा ग्रेट काउंसिल के सदस्यगण इस आपत्ति के निवारण का उपाय सोचने लगे। अन्त में उन्होंने नये लाट पादरी स्टेफन लेंगटन ही को अपना नेता बनाया और कुछ राजनैतिक सिद्धान्त भी निर्णय किये जिससे राजा के अत्याचारों को रोका जाय। उन्होंने एक "महा स्वतन्त्रता-पत्र" (Magna Charta) तैयार किया और राजा जान को उस पर हस्ताक्षर करने के लिये बलपूर्वक बाध्य किया। सन् १२१५ ई० की १५ जून को रनीमेड (Runnymede) नामक स्थान पर उपर्युक्त महा स्वतन्त्रता-पत्र पर राजा के हस्ताक्षर हुए और इस प्रकार जनता के अधिकारों की रक्षा का बीज बोया गया। इस पत्र का विस्तार पूर्वक वर्णन एक अगले अध्याय में किया जावेगा।

वास्तव में राजा जान महा स्वतन्त्रता-पत्र का पालन करने के लिए तैयार न था। पोप ने भी उसे अपना प्रण तोड़ने की आज्ञा दे दी, क्योंकि इस पत्र पर राजा से बलपूर्वक हस्ताक्षर करवाये गये थे। इसलिए अपना प्रण तोड़ने के कारण बैरनों से उसका सशस्त्र झगड़ा हुआ। इस समय जान ने अपनी सहायता के लिये विदेशों से सेना बुलाई। इससे क्रोधित होकर बैरनों ने फ्रान्स के युवराज को निमन्त्रण भेजा कि वह आकर इंगलैंड का राजसिंहासन ग्रहण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करे। यह इशारा पाते ही युवराज इंगलैंड आ धमका और उसने कुछ भाग पर अधिकार भी कर लिया। परन्तु इसी बीच में देश के सौभाग्य से १६ अक्टूबर सन् १२१६ को जान परलोक सिधारा और उसकी मृत्यु पर किसी ने शोक नहीं मनाया। उसकी मृत्यु के पश्चात् गृह-युद्ध समाप्त हुआ; फ्रान्सीसी राजकुमार भगा दिया गया और जान का केवल ६ वर्ष का पुत्र हेनरी तृतीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठाया गया। यह कहना सत्य है कि यदि जान मूर्ख तथा कायर न होता अथवा उसका उत्तराधिकारी शक्तिशाली होता तो अँग्रेज़ी प्रजा हेनरी द्वितीय के स्थापित किये हुए निरंकुश शासन की शृङ्खला में बहुत काल तक जकड़ी रहती।

Exercises

1. Enumerate the important administrative reforms of Henry II.
2. What measures did Henry II adopt to check the Barons and to increase his own power ?
3. What was the point at issue in the controversy between Henry II and Thomas Becket ? How was the controversy settled ?
4. What part did Richard I play in the Crusades ?
5. Why is John regarded as one of the worst English Kings ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

The Angevin and Plantagenet Kings.

- Henry II
  - Richard I
  - Prince Geoffrey
    - Prince Arthur
  - King John
    - Henry III
      - Edward I
        - Edward II
          - Edward III
            - Black Prince
              - Richard II

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

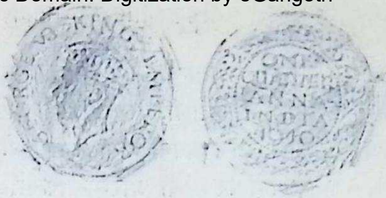

सातवाँ परिच्छेद

प्लानटिजनेट वंश

सन् १२१६–१२७२	हेनरी तृतीय
,, १२७२–१३०७	एडवर्ड प्रथम
,, १३०७–१३२७	एडवर्ड द्वितीय
,, १२६५	साइमन की पार्लियामेण्ट
,, १२८२	वेल्स की विजय
,, १२६५	आदर्श पार्लियामेण्ट (The Model Parliament)
,, १२६६	स्काटलैंड की विजय
,, १३१४	वेनकवर्न का युद्ध
,, १३२८	स्काटलैंड की स्वतन्त्रता

(क) पार्लियामेण्ट का विकास

हेनरी तृतीय का निकृष्ट शासन—

राजा जान की मृत्यु के पश्चात् उसका नौ वर्ष का पुत्र "हेनरी तृतीय" के नाम से राजा बनाया गया। जान के राज्य-काल में फ्रान्स के अँजू, नारमण्डी इत्यादि प्रान्त अँग्रेज़ों के हाथ से निकल चुके थे, इसलिए हेनरी तृतीय के समय से एँजिवन वंश के स्थान पर प्लानटिजनेट (Plantagenet) नाम प्रसिद्ध हुआ, क्योंकि इस वंश ने पीले रंग के फूल को अपना राजचिह्न बनाया, जिसे लैटिन भाषा में (Plantagenista) कहते हैं। हेनरी की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाल्यावस्था में शासन का प्रबन्ध उसके मन्त्रियों ने किया। बड़ा होकर उस[ने] स्वयं शासन की बागडोर सँभाली, परन्तु वह भी अपने पिता की भाँति रा[ज] कार्य के अयोग्य था। उसने अपनी माता तथा स्त्री के सम्बन्धियों को, [जो] विदेशी थे, बड़े-बड़े पदों पर भरना प्रारम्भ किया, और कितने ही अनुचि[त] कर भी लगाये, जिससे इंगलैंड के बैरनों में असन्तोष फैलने लगा। बैरनों [को] रुष्ट करने के और भी अन्य कारण थे। वह पोप को अपना सच्चा हितै[षी] समझता था और उसे इंगलैंड में धन एकत्र करने तथा अपने विशेष नियु[क्त] करने की आज्ञा दे दी। उसने फ्रान्स में अपने खोये हुए प्रान्तों को फिर [से] प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु धन व्यय होने के अतिरिक्त कोई परिणा[म] न निकला। उसने पोप के परामर्श से अपने छोटे भाई रिचार्ड को जर्म[न] साम्राज्य का सम्राट् बनाने की चेष्टा की, परन्तु यह प्रयत्न भी निष्फल हुआ और उसमें भी बहुत-सा अँग्रेज़ी धन नष्ट हुआ। सन् १२७५ में एक भयान[क] अकाल पड़ा, फिर भी राजा ने पोप को धन भेजने के लिये महासभा के सन्मु[ख] एक प्रस्ताव पेश किया।

बैरनों का विद्रोह—

बैरन राजा को धन देते-देते तंग आगये और उन्होंने अब राजा [के] निरंकुश शासन का अन्त करने की ठान ली। बैरनों ने साइमन-डी-मान्टफो[र्ड] (Simon-de-Montford) को अपना नेता बनाया। साइमन वास्तव में फ्रान्सीसी था, परन्तु उसने इङ्गलैंड को अपना देश बना लिया था। राजा की बहिन से उसका विवाह हो चुका था, परन्तु उसने इस सम्बन्ध का विचार न कर अत्याचारी राजा के विरुद्ध आन्दोलन करना अपना कर्त्तव्य समझा। सन् १२६८ में आक्सफोर्ड नामक स्थान पर महासभा की एक बैठक हुई, जिसमें साइमन के नेतृत्व में एक नवीन शासन-प्रणाली (Provisions of Oxford) बनाई गई। इस समय महासभा (Great Council) पार्लिया-मेण्ट (Parliament) के नाम से प्रसिद्ध हुई। इसके अनुसार सारे विदेशी लोग बड़े-बड़े पदों से हटा दिये गये और शासन-कार्य १५ (Council of Fifteen) सदस्यों की एक समिति को सौंपा गया। राजा ने शासन-प्रणाली की नई योजना को स्वीकार किया और पाँच वर्ष तक यह नया प्रबन्ध चलता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहा, परन्तु अवसर पाकर हेनरी ने उसे ठुकरा दिया जिससे राज्यव्यवस्था पहले की भाँति फिर बिगड़ने लगी। यह देख कर साइमन तथा उसके सहायक बैरनों ने राजा के विरुद्ध शस्त्र उठाये और ल्यूस (Lewis) के युद्ध में हेनरी तथा उसका ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड दोनों क़ैद कर लिये गये।

१२६५ की प्रसिद्ध पार्लियामेण्ट—

कुछ दिन बाद राजा फिर से सिंहासन पर बैठाया गया, परन्तु साइमन का उस पर पूर्ण अधिकार था और वह जैसा चाहता उससे करवाता था। परन्तु साइमन की इस शक्ति को देख कर बहुत से बैरन उससे ईर्षा रखने लगे और सशस्त्र उससे लड़ने के लिये तैयार थे। ऐसी स्थिति में उसके लिये यह अनिवार्य हो गया कि वह साधारण जनता की भी सहानुभूति प्राप्त करे। राजा के क़ैद होने पर साइमन ने शासन-कार्य स्वयं सँभाला। अतः सन् १२६५ में उसने पार्लियामेण्ट की एक बैठक की, जिसमें बैरनों तथा बिशपों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्त (County) तथा प्रत्येक नगर (Borough) से दो-दो प्रतिनिधि बुलाये गये। यह पहला अवसर था जब जन-साधारण के प्रतिनिधियों को बड़े बैरनों तथा बड़े बिशपों के साथ पार्लियामेण्ट में स्थान मिला। इसीलिए इतिहास में साइमन लोक-सभा (House of Commons) का जन्मदाता कहलाता है। उसकी पार्लियामेण्ट में बैरन, बिशप तथा साधारण प्रतिनिधि सब एक ही स्थान पर सम्मिलित हुए थे।

साइमन का पतन—

अब बैरन साइमन से और भी अधिक डाह रखने लगे, जिससे उसकी शक्ति बहुत क्षीण होगई। उनको यह भी पसन्द न था कि नगरों तथा प्रान्तों के प्रतिनिधि महासभा में आकर सम्मिलित हों। इसी बीच में युवराज एडवर्ड जेल से निकल भागा और विरोधी बैरनों ने उसका साथ दिया; और उसने इवेशम (Evesham) नामक स्थान पर साइमन को परास्त कर उसे परलोक पहुँचाया। हेनरी तृतीय अब फिर शान्तिपूर्वक राज्य करने लगा, परन्तु पाँच वर्ष बाद उसकी मृत्यु हो गई और युवराज एडवर्ड ३३ वर्ष की उमर में "एडवर्ड प्रथम" के नाम से राजा हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एडवर्ड प्रथम तथा आदर्श पार्लियामेण्ट—

एडवर्ड बड़ा वीर और पराक्रमी था। उसने अपने सुन्दर डील-डौल तथ श्रेष्ठ बुद्धि से इंगलैंड के राजसिंहासन को सुशोभित किया। उसने इंगलैंड के शासन-पद्धति में कई ऐसे लाभदायक स्थाई परिवर्तन किये जिनके कार उसे इंगलैंड के शासकों में एक सर्व श्रेष्ठ स्थान मिला है।

एडवर्ड बड़ा योग्य राजनीतिज्ञ था, उसने समझ लिया कि शासन संचालन तथा नये करों के लगाने में प्रजा की सब श्रेणियों की सहानुभू प्राप्त करना बहुत उपयोगी होगा। इस समय स्काटलैंड, वेल्स और फ्रान से राजा को युद्ध लड़ने पड़े थे, अतः धन की भी बहुत आवश्यकता थी यही सब सोचकर एडवर्ड प्रथम ने सन् १२९५ में एक पार्लियामेण्ट बुलाई जे "आदर्श पार्लियामेण्ट" के नाम से प्रसिद्ध है। इस पार्लियामेण्ट में बड़े बैरन बड़े बिशप, छोटे पादरियों के प्रतिनिधि और प्रत्येक प्रान्त तथा नगर से दो-दो प्रतिनिधि बुलाये गये। साइमन ने अपनी पार्लियामेण्ट में छोटे पादरियों के प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया था और कई ऐसे प्रान्तों तथा नगरों को भी छोड़ दिया था जहाँ के निवासी उसके समर्थक न थे। परन्तु एडवर्ड प्रथम की आदर्श पार्लियामेण्ट पूर्ण रूप से जातीय प्रतिनिधि सभा थी और भविष्य की पार्लियामेण्ट इसी के आधार पर बनाई गई।

यह समझना भूल होगी कि एडवर्ड अब पार्लियामेण्ट के अधीन हो गया। वह अब भी कई प्रकार के कर बिना पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के लगाता था अथवा पुराने करों को बढ़ा देता था। परन्तु बैरनों और बिशपों के बाध्य करने पर एडवर्ड ने जान के "महान स्वतन्त्रता-पत्र" के सिद्धान्तों पर हस्ताक्षर किये और वचन दिये कि किसी प्रकार का नया कर पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना नहीं लगाया जावेगा। परन्तु इस पत्र को स्वीकार कर लेने का यह अर्थ नहीं है कि एडवर्ड की शक्ति में कोई कमी आई हो। भविष्य में जाकर इसका परिणाम अवश्य अच्छा निकला।

राज-नियमों का सुधार—

देश के हित के लिये एडवर्ड प्रथम ने कई लाभदायक राज-नियम बनाये और पुराने राज-नियमों में संशोधन किया। उसने भूमि सम्बन्धी कई उपयोगी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नियम बनाये, और प्रजा की धन-सम्पत्ति की रक्षा के लिये भी नये नियम बनाये। इन सब राज-नियमों का उल्लेख एक पृथक अध्याय में किया जावेगा।

एडवर्ड प्रथम ने एक और राज-नियम द्वारा यहूदियों को सन् १२६० में इंगलैंड से निकाल दिया क्योंकि वह बहुत ज़्यादा ब्याज लेते थे। साथ ही

प्रथम प्रिंस आफ़ वेल्स

विधर्मी होने के कारण ईसाई लोग उनसे घृणा भी करते थे। परन्तु राजा का यह कार्य अनुचित था और यहूदी ३६० वर्ष तक इंगलैंड वापस न आ सके।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) वेल्स तथा स्काटलैंड की विजय

वेल्स की विजय--

एडवर्ड यह भली भाँति समझता था कि देश में शान्ति स्थापित र के लिये यह परम आवश्यक था कि स्काटलैंड तथा वेल्स दोनों देश इंग की अधीनता में लाये जावें, क्योंकि इन दोनों देशों की असभ्य जातियाँ अ दिन इंगलैंड के सीमा प्रान्तों में लूटमार करती थीं। इस समय स्काट तथा वेल्स के शासक पूर्णतया स्वतन्त्र थे और वे इंगलैंड के राजा आधिपत्य स्वीकार करने को तैयार न थे। प्राकृतिक दृष्टि से वेल्स को इंगलैंड का एक भाग ही समझना चाहिये। वहाँ के अधिकांश निवा प्राचीन ब्रिटनों की सन्तान होने के कारण अँग्रेज़ों में सम्मिलित होना न चाहते थे। इस समय वेल्स का राजा ललुलिन (Llewlyn) अपने बहुत शक्तिशाली समझता था; इसी अभिमान में चूर होकर उसने एड प्रथम के आधिपत्य को स्वीकार करना पसन्द न किया। ऐसी स्थिति एडवर्ड प्रथम ने वेल्स पर चढ़ाई की और ललुलिन मारा गया और उ भाई डेविड को फाँसी दी गई। सन् १२८२ में एडवर्ड ने वेल्स को अँग्रे राज्य में मिला लिया। वेल्स ही के एक गढ़ में एडवर्ड के युवराज का ज हुआ जिसको वेल्स वालों ने अपना राजा स्वीकार किया और वह प्रिंस ऑ वेल्स के नाम से प्रसिद्ध हुआ। तभी से यह प्रथा चली आती है कि इंगलै के राजा का ज्येष्ठ पुत्र अर्थात् युवराज प्रिंस ऑफ़ वेल्स कहलाता है। इ प्रकार वेल्स इंगलैंड के अधीन तो हुआ, परन्तु बहुत काल तक वहाँ शासन-कार्य इंगलैंड से पृथक रहा। अन्त में सन् १५३६ ई० में हेन अष्टम ने वेल्स को पूर्णतया इंगलैंड में मिला लिया और वहाँ के प्रतिनि अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट में सम्मिलित होने लगे।

स्काटलैंड की विजय—

वेल्स की भाँति एडवर्ड प्रथम ने स्काटलैंड को भी विजय करने की चे की और अपने जीवन के पिछले २३ वर्ष स्काटलैंड पर विजय प्राप्त करने व्यतीत कर दिये, फिर भी उसे सफलता प्राप्त न हुई। सन् १२८६ में स्काटलैं के राजा तृतीय की मृत्यु हुई। इस राजा की उत्तराधिकारिणी उसकी धेवत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी। यह दो वर्षीय कन्या नार्वे के राजा की पुत्री थी। दुर्भाग्यवश स्काटलैंड आते समय मार्ग में इसकी मृत्यु हो गई। इस बालिका की मृत्यु के पश्चात् कितने ही दूर के नातेदारों ने स्काटलैंड के राजसिंहासन पर अपना अधिकार जतलाना आरम्भ किया। अन्त में सबने इसके निबटारे के लिए एडवर्ड

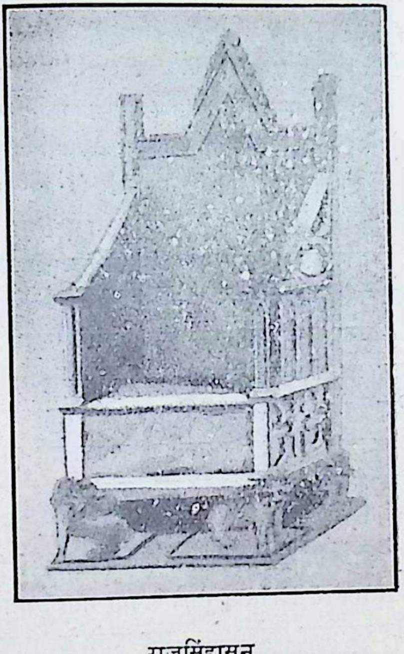

राजसिंहासन

प्रथम को पंच नियत किया और उसके निर्णय के अनुसार जान बेलियल (John Balliol) स्काटलैंड का राजा बनाया गया, और ठहरी हुई शर्त के अनुसार बेलियल को एडवर्ड प्रथम का आधिपत्य स्वीकार करने की शपथ लेनी पड़ी।

इसके कुछ ही दिनों बाद स्काटलैंड में विद्रोह खड़ा हो गया। एडवर्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्काटलैंड की अदालतों की अन्तिम अपील सुनने का अधिकार जतलाता परन्तु बेलियल तथा स्काटलैंड-निवासी इसे मानने को तैयार न थे। बीच में बेलियल ने इंगलैंड के शत्रु फ्रान्स से संधि करली, जिसका समा पाकर एडवर्ड ने तुरन्त स्काटलैंड पर चढ़ाई कर दी। स्काटलैंड की डनबर (Dunbar) नामक स्थान पर परास्त हुई और एडवर्ड ने बेलि को गद्दी से उतार कर स्काटलैंड को पूर्णतया अपने राज्य में मिला लि इसी समय एडवर्ड ने स्काटलैंड के राजसिंहासन का वह शुभ पत्थर ले लि जिसके विषय में यह विश्वास किया जाता था कि उसको साधु या (St. Jacob) ने अपना उस समय तकिया बनाया था जब उसे ई के दर्शन हुए थे। इंगलैंड में लाकर एडवर्ड ने इस पत्थर को अ राजसिंहासन (Coronation Chair) में लगवा दिया; और आज इसी पर बैठा कर इंगलैंड के राजाओं का राज्याभिषेक संस्कार होता है।

स्काटलैंड की स्वतन्त्रता का युद्ध--

स्काटिश जनता इस अपमान को कदापि सहन नहीं कर सक थी। फिर क्या था, विलियम वालेस (William Wallace नामक एक स्काटिश सरदार ने स्काट जाति का नेता बन कर, स्वतन्त्रता युद्ध छेड़ दिया। एडवर्ड ने फिर स्काटलैंड पर चढ़ाई की और फालक (Falkirk) नामक स्थान पर वालेस को परास्त कर बड़ी निर्दयता उसका वध कराया।

फिर भी विद्रोह की अग्नि पूर्णतया शान्त न हुई और ब्रिटिश जनता अब राबर्ट ब्रूस (Robert Bruce) को अपना नेता बना कर युद्ध जा रक्खा। एडवर्ड फिर स्काटिश विद्रोह को दमन करने के लिए रवाना हुअ परन्तु अब की बार मार्ग ही में उसकी मृत्यु हो गई।

एडवर्ड प्रथम का उत्तराधिकारी एडवर्ड द्वितीय बड़ा कायर राजा निकला उसके राज्यकाल में स्काटलैंड निवासियों को अपनी शक्ति एकत्र करने अच्छा अवसर मिल गया। सन् १३१४ में अँग्रेज़ों ने स्काटलैंड पर फि आक्रमण किया, परन्तु बेनकबर्न (Bannockburn) के युद्ध में अँग्रे सेना बुरी तरह परास्त हुई और स्काटलैंड-निवासी अपने देश को स्वतन्त्र कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के प्रयत्न में सफल हुए। इसके कुछ वर्षों बाद नार्थहेम्पटन (Northampton) की संधि के अनुसार, स्काटलैंड की स्वतन्त्रता पूर्णतया मान ली गई और राबर्ट ब्रूस वहाँ का स्वतन्त्र राजा हो गया। परन्तु दोनों में शत्रुता दिन प्रति दिन बढ़ती चली गई और लगभग तीन सौ वर्ष तक सीमा प्रान्तों पर अँग्रेज़ तथा स्काच आक्रमण तथा लूट-मार करते रहे। कहीं जब सन् १६०३ में दोनों देशों का राजा एक हुआ तब जाकर शान्ति हुई।

एडवर्ड द्वितीय—

स्काटलैंड द्वारा परास्त होने के कारण एडवर्ड द्वितीय की बड़ी मान-हानि हुई। इंगलैंड के शासन-कार्य में भी वह बड़ा निकम्मा सिद्ध हुआ। अन्त में स्वयं उसकी रानी ने कुछ बैरनों से मिल कर उसे राजसिंहासन से उतार दिया। सन् १३२७ में उसके पुत्र को एडवर्ड तृतीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठाया गया और उसके अल्पायु होने के कारण तीन वर्ष तक एक संरक्षक सभा ने शासन-कार्य चलाया, और १८ वर्ष की आयु में राज्य का सब कार्य एडवर्ड ने स्वयं सँभाला। राजच्युत होने के थोड़े ही दिनों बाद एडवर्ड द्वितीय को किसी ने एक गढ़ में मार डाला।

Exercises.

1. Why did the Barons rebel against Henry III, and what was the result of the revolt?
2. Describe the part played by Simon-de-Montford in determining the future of the English Parliament.
3. Give a brief account of Edward I's Model Parliament, and discuss its constitutional importance.
4. How did Edward I bring Wales and Scotland under his control?
5. Give an account of the struggle of the Scots for the independence of their country, with special

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

for the independence of their country, with speci reference to the part played therein by Walla and Robert Bruce.

6. Form an estimate of Edward I as a law giv and administrator.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आठवाँ परिच्छेद

शतवर्षीय युद्ध

एडवर्ड तृतीय	सन् १३२७–१३७७
रिचार्ड द्वितीय	,, १३७७–१३९९
हेनरी चतुर्थ	,, १३९९–१४१३
हेनरी पंचम	,, १४१३–१४२२
हेनरी षष्ठ	,, १४२२–१४६१
सन् १३४६	क्रेसी का युद्ध
,, १३५६	पायटियर्स का युद्ध
,, १३६०	ब्रेटिगनी की संधि
,, १४१५	एगिन कोर्ट का युद्ध
,, १४२०	ट्रायस की संधि
,, १४३०	जोन आफ आर्क का प्राण-त्याग

एडवर्ड तृतीय तथा शतवर्षीय युद्ध का प्रारम्भ—

एडवर्ड तृतीय का शासन-काल फ्रान्सीसी शतवर्षीय युद्ध के प्रारम्भ होने के लिए प्रसिद्ध है। ऊपर कहा जा चुका है कि नार्मन तथा एँजिवन राज्य-काल में फ्रान्स का पर्याप्त भाग अँग्रेज़ी राजाओं के अधीन था। परन्तु राजा जान के समय में गेसकनी प्रान्त के अतिरिक्त, फ्रान्स वाला शेष भाग अँग्रेज़ों के हाथ से निकल गया। तब से अँग्रेज़ी राजाओं की बराबर यह अभिलाषा बनी रही कि फ्रान्स में अपने खोये हुए स्थानों को पुनः प्राप्त किया जाय। युद्ध के और भी कई कारण थे। फ्रान्स के राजा ने कई बार स्काटलैंड को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इंगलैंड के विरुद्ध सहायता पहुँचाई थी। दूसरे, फ्रान्स का राजा यह चाहता था कि फ्लान्डर्स प्रान्त, जो इस समय फ्रान्स के अधीन था, इंगलैं ऊन न मँगा कर फ्रान्स से ऊन मोल ले लिया करे। जब राजा ने उन्हें किया तो फ्लान्डर्स वालों ने विद्रोह खड़ा कर दिया और एडवर्ड तृतीय सहायता माँगी। इसके लिये एडवर्ड तुरन्त तैयार हो गया, क्योंकि फ्ला के साथ व्यापार करने से अँग्रेज़ी राज-कोष को बहुत लाभ पहुँचता था। करने के लिये एडवर्ड को एक बहाना भी मिल गया। उस समय फ्रान्स राजा फिलिप चतुर्थ की मृत्यु हो गई। उसके कोई पुत्र न था, अत राजसिंहासन के लिए कई दावेदार खड़े हुए। एडवर्ड तृतीय ने भी फि चतुर्थ का धेवता (पुत्री का पुत्र) होने के कारण अपना अधिकार जतल प्रारम्भ किया और यही बहाना लेकर उसने फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध छेड़ दिय सत्य तो यह है कि एडवर्ड फ्रान्स के सिंहासन पर बैठ नहीं सकता था, क्यों राजकुमारी अथवा उसकी संतान वहाँ के नियमों के अनुसार राजाओं उत्तराधिकारी नहीं बनाये जाते। एडवर्ड की तो एकमात्र यह इच्छा थी किसी प्रकार फ्रान्स में अँग्रेज़ी प्रान्तों पर फिर से अधिकार प्राप्त हो। यह यु बहुत काल तक चलता रहा और लगभग एक शताब्दी तक फ्रान्स तथा इंगलैं दोनों के पारस्परिक विरोध में बिल्कुल कमी न आई ; और इसी कारण य युद्ध शतवर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

फ्रान्स में अँग्रेज़ी विजय—

यह युद्ध सन् १३३७ में आरम्भ हुआ और पहले तीन वर्ष तक कि पक्ष की विजय न हुई। परन्तु सन् १३४० में सल्यूस (Sluys) के निक एक घमासान जल-युद्ध हुआ, जिसमें अँग्रेज़ों ने फ्रान्सीसी जहाज़ी बेड़े को बु तरह नष्ट कर डाला। इंगलैंड के इतिहास में यह पहला जल-युद्ध था जिस अँग्रेज़ों ने विजय प्राप्त की। इस युद्ध के पश्चात् अँग्रेज़ी चैनेल (English channel) पर इंगलैंड का अधिकार हो गया और अब फ्रान्स को सेन भेजना भी सरल हो गया। फिर सन् १३४६ में एडवर्ड तृतीय ने फ्रान्स प आक्रमण किया और क्रेसी (Crecy) नामक स्थान पर भयंकर युद्ध हुआ। इस युद्ध में अँग्रेज़ी तीरन्दाज़ों ने फ्रान्सीसियों की बहुत बड़ी सेना को नष्ट क

Nepal Sanskrit University, Valmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

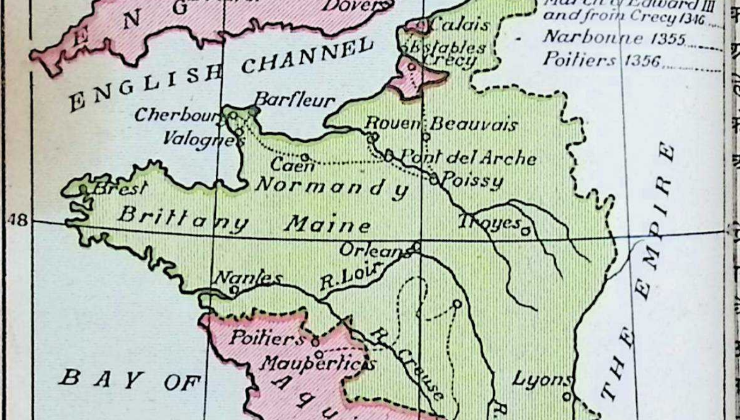

FRANCE AT THE TREATY OF BRETIGNI 1360

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दिया और अँग्रेज़ों की पूर्ण विजय हुई। एक वर्ष पश्चात् केले के प्रसिद्ध गढ़ पर एडवर्ड ने अधिकार कर लिया और यह गढ़ लगभग २०० वर्ष तक इंगलैंड के अधिकार में रहा। दस वर्ष बाद पायटियर्स (Poitiers) के युद्ध में अँग्रेज़ों ने फिर फ्रान्सीसियों को बुरी तरह परास्त किया और अब की बार स्वयं फ्रान्स-नरेश अंग्रेज़ों के हाथों क़ैद हो गया। ऐसी स्थिति में सन् १३६० में ब्रेटिगनी (Bretigny) नामक स्थान पर फ्रान्सीसियों को अंग्रेज़ों से संधि करनी पड़ी। इस युद्ध में फ्रान्स के लगभग तिहाई भाग पर अँग्रेज़ों ने अधिकार जमा लिया, और उक्त संधि में उनका यह अधिकार स्वीकृत कर लिया गया। इतना ही नहीं, अपने राजा को मुक्त करने के लिये फ्रान्सीसियों को बहुत-सा धन भी देना पड़ा।

अँग्रेज़ी शक्ति का पतन—

एडवर्ड तृतीय ने युवराज को, जो काला कवच पहनने के कारण ब्लेक प्रिंस (Black Prince) के नाम से प्रसिद्ध है, फ्रान्स के जीते हुए भाग पर राज्य करने के लिए भेजा। अँग्रेज़ों ने फ्रान्सीसी प्रजा पर बहुत अत्याचार किया और बहुत से कर भी लगाये जिसके कारण उसमें जातीयता का जोश उबल पड़ा और उन्होंने विद्रोह किया और फ्रान्स के राजा ने विद्रोहियों की सहायता की। इसी बीच में ब्लेक प्रिंस की मृत्यु हो गई। इस अवसर से लाभ उठा कर फ्रान्सीसियों ने धीरे-धीरे अँग्रेज़ी सेना को निकाल बाहर किया और कई नगरों तथा दुर्गों पर अधिकार किया। अन्त में एडवर्ड तृतीय के जीवनकाल में ही थोड़े-से बन्दरगाहों के अतिरिक्त फ्रान्स का शेष भाग फिर अँग्रेज़ों के हाथ से निकल गया और सन् १३९६ में एडवर्ड तृतीय के उत्तराधिकारी रिचार्ड द्वितीय ने फ्रान्स से संधि करली। इस प्रकार फ्रान्सीसी शतवर्षीय युद्ध का प्रथम भाग समाप्त हुआ।

हेनरी पंचम तथा युद्ध का पुनः आरम्भ—

सन् १४१३ में हेनरी पंचम इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठा। इस समय फ्रान्स का शतवर्षीय युद्ध बन्द था, परन्तु हेनरी के राज्यारूढ़ होते ही वह फिर आरम्भ हो गया। हेनरी का दृढ़ विचार था कि इंगलैंड के उपद्रवी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ाबर बढ़ता चला जाता था और ऐसा प्रतीत होता था कि आरलीन्स नगर भी उनका अधिकार होने ही वाला है। ऐसी विपत्ति के समय जोन ऑफ़ ार्क (Joan of Arc) नामक एक कृषक की लड़की ने फ्रान्स का ारुद्धार किया। उसने डाफिन से कहा कि मेरे लिए यह दैवी आदेश हुआ

जोन आफ़ आर्क

कि मैं आरलीन्स से अँग्रेज़ों को भगा कर रीम्स (Rheims) के गिर्जाघर ं आपका राज्याभिषेक करूँ। उस दैवी संदेश को सुनकर युवराज तथा ासके सरदारों का साहस बढ़ा और वे जोन की आज्ञा पालन करने के लिये ायार हो गये। जोन मर्दाने कपड़े पहन एक घोड़े पर सवार हुई और हाथ एक सुन्दर झण्डा लेकर आगे बढ़ी। जोन के तेज तथा साहस ने फ्रान्सीसी ानिकों में एक नई जान फूँक दी और वे इस वीरांगना की अध्यक्षता में इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वीरता से लड़े कि अँग्रेज़ों को मैदान छोड़ना पड़ा। जोन ने अपने कथ-नुसार रीम्स लेजाकर डाफिन का राज्याभिषेक किया, और वह चार्ल्स स- के नाम से फ्रान्स का राजा हुआ। थोड़े ही दिनों बाद जोन धोखे अँग्रेज़ों के हाथ पड़ गई, और उन्होंने उसे सन् १४३१ में जादूगरनी ठहरा- जीवित ही जलवा दिया। जोन के बलिदान के बाद फ्रान्स एक संग- देश बन गया और फ्रान्सीसियों का जोश और भी बढ़ गया और उन्- धीरे-धीरे अँग्रेज़ी सेना को फ्रान्स खाली करने के लिए बाध्य किया। अ- में अंग्रेज़ों के अधीन केवल केले (Calais) का गढ़ रह गया। इ- प्रकार सन् १४५३ में शतवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ और परिणाम यह निक- कि युद्ध से पहिले फ्रान्स में अँग्रेज़ों की जो थोड़ी-बहुत शक्ति थी वह भी जा- रही।

शतवर्षीय युद्ध का प्रभाव—

इंगलैंड तथा फ्रान्स का शतवर्षीय युद्ध इतने अधिक काल तक चल- और उसके कारण दोनों देशों की शत्रुता इतनी गहरी होगई कि दोनों देश- उसको सुगमता से भूल न सके। इस समय का अँग्रेज़ों और फ्रान्सीसि- का बैर-भाव कई शताब्दियों तक चलता रहा। इस युद्ध के काल में अँग्रे- ने फ्रान्स में कई बार विजय प्राप्त करके वहाँ अँग्रेज़ी साम्राज्य स्थापित क- का प्रयत्न किया था, परन्तु अन्त में इस साम्राज्य का कोई भाग अँग्रेज़ों हाथ में न बचा। इसके कारण आगे चलकर भी अँग्रेज़ी शासकों की य- अभिलाषा रही कि फ्रान्स में शतवर्षीय युद्ध के अँग्रेज़ी साम्राज्य को फिर स्थापित किया जाय; और कई शताब्दियों तक वे अपने सिक्कों तथा घोषणा- में "फ्रान्स का राजा" की उपाधि का बराबर प्रयोग करते रहे।

इसके अतिरिक्त इन युद्धों ने दोनों देशों में सामाजिक तथा आर्थि- उन्नति के द्वार को कुछ दिनों के लिये बन्द कर दिया। इन युद्धों के का- में लोगों की प्रकृति झगड़ालू हो गई थी और बहुत से सेना में भरती हो- युद्ध में भाग लेने के लिये गये थे। परन्तु युद्ध के समाप्त होते ही बहुत- सैनिक बेकार फिरने लगे और वे देश ही में उपद्रव खड़ा करके अपनी जीवि- चलाने के अवसर की ताक में रहने लगे। बैरनों को भी इस युद्ध से म-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की चाट पड़ गई थी, और आगे चलकर हम देखेंगे कि शतवर्षीय युद्ध के थोड़े ही समय पश्चात् अँग्रेज़ी बैरनों ने आपस में लड़ना आरम्भ कर दिया, जिसके कारण "ऐज़ेज़ के युद्ध" (Wars of the Roses) की नींव पड़ी। इन्हीं युद्धों के कारण पार्लियामेण्ट को भी अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा अवसर मिला। युद्ध के कारण राजाओं को धन की आवश्यकता होती थी, और धन की स्वीकृति के लिये उन्हें बार-बार पार्लियामेण्ट बुलानी पड़ती थी और उसका दबाव मानना पड़ता था।

Exercises

1. Describe the events leading to the outbreak of the Hundred Years War.
2. What victories were secured by England in the earlier part of the Hundred Years War? What was the position at the time of the treaty of Bretigny?
3. How did the French War break out again during the reign of Henry V? Describe the position at the treaty of Troyes and compare it with that at Bretigny.
4. What do you know of Joan of Arc? What part did she play in the restoring independence of France?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नवाँ परिच्छेद

लंकास्टर तथा यार्क वंश

सन् १३७७–१३९९	रिचार्ड द्वितीय
,, १३९९–१४१३	हेनरी चतुर्थ
,, १४१३–१४२२	हेनरी पंचम
,, १४२२–१४६१	हेनरी षष्ठ
,, १४६१–१४८३	एडवर्ड चतुर्थ
,, १४८३	एडवर्ड पंचम
,, १४८३--१४८५	रिचार्ड तृतीय
,, १४५५	सेन्ट एलबन्स का युद्ध
,, १४६०	वेकफ़ील्ड का युद्ध
,, १४६१	टाउटन का युद्ध
,, १४७१	बारनेट तथा ट्यूक्सबरी का युद्ध
,, १४८५	बासवर्थ का युद्ध

रिचार्ड द्वितीय का राज्यच्युत होना—

एडवर्ड तृतीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पौत्र ग्यारह वर्ष की आ रिचार्ड द्वितीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठा । उसके राज्यकाल प्रारम्भिक वर्षों में शासन-कार्य का संचालन उसके चचा के द्वारा होता र उसके चचा जॉन ऑफ गांट (John of Gaunt) का, जो लंका का ड्यूक (Duke of Lancaster) था, रिचार्ड पर बहुत प्रभाव था शासन कार्य में उसका बहुत हाथ था । किसानों का एक भयंकर वि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसका वर्णन हम आगे करेंगे, इसी के राज्य-काल में हुआ था। इस विद्रोह को शान्त करके राजा ने यह आशा दिलाई थी कि बड़ा होने पर वह एक योग्य शासक होगा।

२४ वर्ष की आयु में शासन-कार्य राजा ने स्वयं सँभाला, और ६ वर्ष तक बैरनों तथा पार्लियामेण्ट की सहायता से शान्ति पूर्वक राज्य करता रहा। परन्तु सन् १३९७ में रिचार्ड ने पार्लियामेण्ट तथा बैरनों को ठुकरा कर निरंकुश शासन करने की ठानी, जिसके कारण उसने प्रजा को असंतुष्ट कर दिया। वह बार बार पार्लियामेण्ट को बुलाना नहीं चाहता था, अतः उसने पार्लियामेण्ट में अपने मित्र तथा सहायक भर कर उनसे अपने जीवन भर के लिये धन की स्वीकृति करा ली। उसने एक अनुचित कार्य यह और किया कि अपने एक चचा और कई बैरनों का वध करवा डाला। अपने लिये सब से अधिक बुरा कार्य उसका यह था कि उसने अपने चचा जान ऑफ़ गान्ट के पुत्र हेनरी को १० वर्ष का देश-निकाला दे दिया और सन् १३९९ में उसके पिता की मृत्यु होने पर उसकी सब जागीर पर अपना अधिकार कर लिया। हेनरी कुछ काल तक विदेशों में घूमता फिरा, परन्तु अन्त में अवसर पाकर वह एक छोटी-सी सेना लेकर इंगलैंड में आ धमका। असन्तुष्ट बैरनों की सहायता से उसने शीघ्र ही रिचार्ड को क़ैद कर लिया, और इंगलैंड के राजसिंहासन पर अपना अधिकार जमाया। पार्लियामेण्ट ने भी तुरन्त ही उसका राज्य-अधिकार स्वीकार किया और यह घोषणा की कि अत्याचारी होने के कारण रिचार्ड राज्यच्युत किया गया और उसके स्थान पर हेनरी अब इंगलैंड का नियमानुसार राजा हुआ। कुछ दिनों पश्चात् रिचार्ड बन्दीगृह में ही परलोक सिधारा।

हेनरी चतुर्थ तथा पार्लियामेण्ट की प्रधानता—

हेनरी "हेनरी चतुर्थ" के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। उसके राज्याभिषेक के समय से लंकास्टर वंश का प्रारम्भ होता है। हेनरी बैरनों तथा पार्लियामेण्ट की सहायता से राजा हुआ था; इसलिए उसने तथा अन्य लंकास्टर राजाओं ने पार्लियामेण्ट को सदा प्रसन्न रखने का प्रयत्न किया, जिससे इस काल में पार्लियामेण्ट को अपनी शक्ति बढ़ाने का सुन्दर अवसर प्राप्त हुआ। अपनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिति दृढ़ करने के लिए हेनरी चर्च को भी प्रसन्न रखता था। लार्डों के विरुद्ध उसने बड़े कड़े नियम बनाए और उनके बहुत से नेताओं को जीवित जलवा दिया। अब बैरन बहुत उपद्रव मचाने लगे थे, और हेनरी के राज्यकाल में उन्होंने कई विद्रोह भी कर डाले, परन्तु वे सब दमन कर दिये गये। परन्तु बैरनों की आपस की डाह बढ़ती गई और अन्त में एक भयङ्कर गृह-युद्ध (Wars of theRoses) छिड़ गया।

हेनरी पंचम—

हेनरी चतुर्थ की मृत्यु के बाद उसका ज्येष्ठ पुत्र हेनरी पंचम सन् १४१३ में राजसिंहासन पर बैठा। वह बड़ा वीर योद्धा था और लँकास्टर वंश में सर्व-श्रेष्ठ राजा माना जाता है। फ्रान्सीसी शतवर्षीय युद्ध की एगिन-कोर्ट की प्रसिद्ध विजय जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है उसी के राज्य काल में हुई, और उसी ने ट्रायस की संधि कराई जिसके द्वारा वह फ्रान्स के राजसिंहासन का उत्तराधिकारी स्वीकार किया गया। परन्तु थोड़े ही दिन बाद काल-कवलित होने के कारण वह अपनी विजय का अधिक आनन्द न उठा सका।

हेनरी षष्ठ तथा रिचार्ड ड्यूक ऑफ़ यार्क—

हेनरी पंचम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र हेनरी षष्ठ केवल नौ मास की आयु में राजा बनाया गया। उसकी अल्प आयु के काल में फ्रान्सीसी विजयों का पतन हो गया और धीरे-धीरे अँग्रेज़ी सेना फ्रान्स से निकाल दी गई। हेनरी षष्ठ स्वभाव का बहुत सीधा था और बड़े होने पर भी इसने कोई विशेष योग्यता न दिखाई और कुछ समय बाद उसके पागल हो जाने के कारण शक्तिशाली बैरनों ने गड़बड़ी मचानी आरम्भ कर दी। शासन-प्रबन्ध के लिए कुटुम्बी लोग आपस में लड़ने लगे। इन सब में रिचार्ड ड्यूक ऑफ़ यार्क मुख्य था और यही राज्य का संरक्षक बना। रिचार्ड बड़ा योग्य था और राजा के पागलपन के काल में उसने शासन का कार्य सफलता पूर्वक चलाया। यह देखकर हेनरी षष्ठ की रानी उससे डाह रखने लगी, क्योंकि उसको भय था कि कहीं उसके पुत्र को राजसिंहासन से वंचित करके वह स्वयं राजा न बन जाय। कुछ समय पीछे हेनरी स्वस्थ हो गया और रानी के कहने से उसने यार्क को संरक्षक के पद से हटा दिया, और ड्यूक ऑफ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सामरसेट (Duke of Somerset) को उसका स्थान दिया। ऐसी स्थिति में यार्क ने सशस्त्र विद्रोह आरम्भ किया, जिससे यार्क तथा लंकास्टर वंशों में भयंकर युद्धों का सिलसिला आरम्भ हो गया, जिसने ३० वर्ष तक देश को घोर आपत्ति में डाल दिया।

रोज़ेज़ के युद्ध का प्रारम्भ—

शक्ति-शाली बैरनों ने यह अवसर अच्छा समझ कर अपनी-अपनी इच्छानुसार विविध पक्षों का समर्थन प्रारम्भ कर दिया, और इसी समय उन्होंने आपस के बैर-भाव भी निकाले। शतवर्षीय युद्ध के कारण भी लोगों की प्रकृति झगड़ालू होगई थी और उन्हें युद्ध की चाट पड़ गई थी। इसी समय फ्रान्सीसी शतवर्षीय युद्ध के समाप्त होने के कारण बहुत से सैनिक बेकार फिरते थे। इस प्रकार दोनों पक्षों को सेना एकत्र करने में भी कोई कठिनाई न हुई। फिर क्या था, बखेड़े ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया। लंकास्टर-दल ने लाल गुलाब और यार्क-दल ने सफ़ेद गुलाब को अपना चिह्न बनाया, जिसके कारण इन दोनों वंशों का पारस्परिक झगड़ा रोज़ेज़ के युद्ध (Wars of the Roses) के नाम से प्रसिद्ध है। यार्क दल का नेता स्वयं रिचार्ड, ड्यूक ऑफ़ यार्क था, और लंकास्टर दल का नेतृत्व स्वयं रानी ने ग्रहण किया।

इन युद्धों की सबसे पहली लड़ाई सेंट एलबंस (St. Albans) नामक स्थान पर सन् १४५५ में हुई। रिचार्ड ड्यूक ऑफ यार्क ने हेनरी षष्ठ को परास्त कर क़ैद कर लिया और उसे यह समझौता करने पर बाध्य किया कि उसकी मृत्यु के पश्चात् सिंहासन का उत्तराधिकारी यार्क और उसके वंशज होवेंगे। एडवर्ड तृतीय की संतान होने के कारण यार्क भी राजसिंहासन का उत्तराधिकारी हो सकता था। परन्तु रानी इस समझौते के लिए तैयार न थी। क्योंकि इससे उसके पुत्र का हक़ मारा जाता था। उसने अपने दल का संगठन किया और वह यार्क से लड़ने के लिए तैयार हो गई। सन् १४६० में वेकफ़ील्ड (Wakefield) नामक स्थान पर रानी ने यार्क-दल को परास्त किया, और इस युद्ध में यार्क स्वयं मारा गया।

यार्क-दल की विजय तथा एडवर्ड चतुर्थ—

ऐसा प्रतीत होता था कि लंकास्टर वंश की पूर्ण विजय हो गई। इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीच में रानी ने कई कार्य ऐसे किये जिसके कारण लोग उससे घृणा करने लगे। उसने सेंट एलबंस और वेकफील्ड के युद्धों के पश्चात् यार्क के पक्षपातियों का बड़ा अपमान किया और बड़ी निर्दयता पूर्वक उनका वध कराया। रानी के सैनिकों ने जब वह लन्दन में प्रवेश करने जा रही थी रास्ते में बड़ी लूट-मार मचाई, जिसके कारण लन्दन-निवासियों ने रानी को नगर में पैर भी न रखने दिया। अब यार्क के पुत्र एडवर्ड ने यार्क-दल का नेतृत्व ग्रहण किया और युद्ध जारी रक्खा और लन्दन-निवासियों ने उसका स्वागत किया। सन् १४६१ में टाउटन के युद्ध में एडवर्ड ने लंकास्टर-दल को बुरी तरह परास्त किया, अब राजा रानी तथा राजकुमार तीनों स्काटलैंड भागे। एक बार फिर सन् १४६४ में राजा और रानी ने यार्क-दल को परास्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे स्वयं बुरी तरह परास्त हुए। हेनरी षष्ठ टावर में क़ैद कर लिया गया, उसकी रानी फ्रान्स भाग गई और एडवर्ड को "एडवर्ड चतुर्थ" के नाम से पार्लियामेण्ट ने राजा स्वीकार कर लिया।

एडवर्ड चतुर्थ ने सिंहासन पर बैठते ही समर्थकों को पार्लियामेण्ट में भरना आरम्भ किया। उसने पार्लियामेण्ट ही के एक नियम (Act of Attainder) द्वारा १४ लार्डों तथा १०० से अधिक लंकास्टर वंश के पक्षपातियों का वध कराया। एडवर्ड के दान (Benevolence) के रूप में प्रजा से बलपूर्वक धन भी खूब वसूल किया, जिसके कारण उसे पार्लियामेण्ट तक बुलाने की आवश्यकता न रही। उसका शासन-कार्य में प्रधान सहायक वार्विक (Earl of Warwick) था, जो इतिहास में किंग-मेकर (King maker) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि उसके पास इतने सिपाही थे कि वह उनके बल पर जिसे चाहे राजा बना सकता था और जिसे चाहे सिंहासन से उतार सकता था। कुछ दिन तक तो दोनों की खूब निभी, परन्तु फिर दोनों में झगड़ा होने लगा और वार्विक ने लंकास्टर-वंश का राज्य पुनः स्थापन करने की चेष्टा की। वार्विक देश छोड़कर फ्रान्स भागा। वहाँ से हेनरी षष्ठ की रानी और राजकुमार को साथ लेकर इंगलैंड लौटा। उनके वहाँ आते ही बहुत से लोग उनकी सेना के साथ हो लिये और एडवर्ड देश छोड़कर फ्लान्डर्स भाग जाने पर बाध्य हुआ। बुड्ढा हेनरी षष्ठ फिर से राजसिंहासन पर बैठाया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया। सात ही मास बीतने पाये थे कि एडवर्ड एक सेना लेकर इंगलैंड आ धमका, और अब एडवर्ड ने बारनेट (Barnet) तथा ट्युक्सबरी (Tewkesbury) नामक स्थान पर वार्विक तथा लंकास्टर दल को बुरी तरह परास्त किया। इसी युद्ध के बाद बूढ़े राजा हेनरी षष्ठ तथा

एडवर्ड चतुर्थ

उसके राजकुमार का वध कर डाला गया, जिससे यार्क वंश के मार्ग में किसी प्रकार का काँटा न रहे। हेनरी षष्ठ की रानी फ्रान्स चली गई और इसके पश्चात् एडवर्ड चतुर्थ को अपने राज्य-काल का शेष भाग शान्ति पूर्वक व्यतीत करने का अवसर मिल गया।

रिचार्ड तृतीय—

सन् १४८३ में एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु हुई, और उसका लड़का एडव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीच में रानी ने कई कार्य ऐसे किये जिसके कारण लोग उससे घृणा करने लगे। उसने सेंट एलबंस और वेकफील्ड के युद्धों के पश्चात् यार्क के पक्षपातियों का बड़ा अपमान किया और बड़ी निर्दयता पूर्वक उनका वध कराया। रानी के सैनिकों ने जब वह लन्दन में प्रवेश करने जा रही थी रास्ते में बड़ी लूट-मार मचाई, जिसके कारण लन्दन-निवासियों ने रानी को नगर में पैर भी न रखने दिया। अब यार्क के पुत्र एडवर्ड ने यार्क-दल का नेतृत्व ग्रहण किया और युद्ध जारी रक्खा और लन्दन-निवासियों ने उसका स्वागत किया। सन् १४६१ में टाउटन के युद्ध में एडवर्ड ने लंकास्टर-दल को बुरी तरह परास्त किया, अब राजा रानी तथा राजकुमार तीनों स्काटलैंड भागे। एक बार फिर सन् १४६४ में राजा और रानी ने यार्क-दल को परास्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे स्वयं बुरी तरह परास्त हुए। हेनरी षष्ठ टावर में क़ैद कर लिया गया, उसकी रानी फ्रान्स भाग गई और एडवर्ड को "एडवर्ड चतुर्थ" के नाम से पार्लियामेण्ट ने राजा स्वीकार कर लिया।

एडवर्ड चतुर्थ ने सिंहासन पर बैठते ही समर्थकों को पार्लियामेण्ट में भरना आरम्भ किया। उसने पार्लियामेण्ट ही के एक नियम (Act of Attainder) द्वारा १४ लार्डों तथा १०० से अधिक लंकास्टर वंश के पक्षपातियों का वध कराया। एडवर्ड के दान (Benevolence) के रूप में प्रजा से बलपूर्वक धन भी खूब वसूल किया, जिसके कारण उसे पार्लियामेण्ट तक बुलाने की आवश्यकता न रही। उसका शासन-कार्य में प्रधान सहायक वार्विक (Earl of Warwick) था, जो इतिहास में किंग-मेकर (King maker) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि उसके पास इतने सिपाही थे कि वह उनके बल पर जिसे चाहे राजा बना सकता था और जिसे चाहे सिंहासन से उतार सकता था। कुछ दिन तक तो दोनों की खूब निभी, परन्तु फिर दोनों में झगड़ा होने लगा और वार्विक ने लंकास्टर-वंश का राज्य पुनः स्थापन करने की चेष्टा की। वार्विक देश छोड़कर फ्रान्स भागा। वहाँ से हेनरी षष्ठ की रानी और राजकुमार को साथ लेकर इंगलैंड लौटा। उनके वहाँ आते ही बहुत से लोग उनकी सेना के साथ हो लिये और एडवर्ड देश छोड़कर फ्लान्डर्स भाग जाने पर बाध्य हुआ। बूढ़ा हेनरी षष्ठ फिर से राजसिंहासन पर बैठाया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया। सात ही मास बीतने पाये थे कि एडवर्ड एक सेना लेकर इंगलैंड आ धमका, और अब एडवर्ड ने बारनेट (Barnet) तथा ट्युक्सबरी (Tewkesbury) नामक स्थान पर वार्विक तथा लंकास्टर दल को बुरी तरह परास्त किया। इसी युद्ध के बाद बूढ़े राजा हेनरी षष्ठ तथा

एडवर्ड चतुर्थ

उसके राजकुमार का वध कर डाला गया, जिससे यार्क वंश के मार्ग में किसी प्रकार का काँटा न रहे। हेनरी षष्ठ की रानी फ्रान्स चली गई; और इसके पश्चात् एडवर्ड चतुर्थ को अपने राज्य-काल का शेष भाग शान्ति पूर्वक व्यतीत करने का अवसर मिल गया।

रिचार्ड तृतीय—

सन् १४८३ में एडवर्ड चतुर्थ की मृत्यु हुई, और उसका लड़का एडवर्ड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पंचम के नाम से राजा हुआ। एडवर्ड के अल्पायु होने के कारण उसका चचा रिचार्ड संरक्षक बनाया गया। रिचार्ड बड़ा दुष्ट था, और उसने थोड़े ही दिनों में एडवर्ड पंचम तथा उसके छोटे भाई को गुप्त रूप से मरवा डाला और स्वयं "रिचार्ड तृतीय" के नाम से राजा बन बैठा। इस हत्या का समाचार फैलने से प्रजा में बहुत असन्तोष फैला।

बासवर्थ का युद्ध तथा ट्यूडर राज्य का प्रारम्भ—

शीघ्र ही रिचार्ड के विरुद्ध विद्रोह खड़ा हो गया, और लंकास्टर वंश के बचे हुए पक्षपातियों ने हेनरी ट्यूडर (Henry Tudor) के पास प्रार्थना-पत्र भेजा कि आप इंगलैंड का राजसिंहासन ग्रहण कर देश में शान्ति स्थापित करें। हेनरी की माता लंकास्टर वंश की राजकुमारी थी और उसका पिता वेल्स का एक प्रसिद्ध ज़मींदार था। इसी बीच में हेनरी ने एडवर्ड चतुर्थ की राज-कन्या से विवाह करने का वचन दिया, जिसके कारण यार्क दल वालों ने भी कुछ अंशों में उसका साथ दिया। हेनरी फ्रान्स से इंगलैंड आया और तुरन्त ही उसने बासवर्थ (Bosworth) के मैदान में रिचार्ड तृतीय को परास्त किया। युद्ध-क्षेत्र में रिचार्ड मारा गया और हेनरी ट्यूडर "हेनरी सप्तम" के नाम से इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठा। इस प्रकार सन् १४८५ में रोज़ेज़ के युद्ध समाप्त हुए और ट्यूडर वंश के राज्य का आरम्भ हुआ।

गुलाबों के युद्ध का प्रभाव—

गुलाबों के युद्ध के कारण देश में पूरे तीस वर्ष तक अशान्ति रही और इस सम्बन्ध में निर्दोष व्यक्तियों के प्राण हरे गये। इन युद्धों के तीन महत्त्वपूर्ण परिणाम निकले। प्रथम यह कि इन युद्धों में बहुत-से बड़े-बड़े बैरनों के कुटुम्ब नष्ट हो गये, और उनके स्थान पर अब व्यापारी तथा मध्य श्रेणी के लोगों को शक्ति-उपार्जन का अवसर मिला। द्वितीय यह कि इन युद्धों के परिणाम-स्वरूप फ्यूडल प्रथा (Feudalism) का अन्त हुआ। इस प्रथा के अनुसार जिस बैरन का कुटुम्ब नष्ट हो जाता था उसकी जागीर तथा सम्पत्ति पर राजा अधिकार कर लेता था। रोज़ेज़ के युद्ध में बैरनों के इतने कुटुम्ब नष्ट हुए कि अधिकतर जागीरें राजा के अधिकार में आगईं, और इस प्रकार फ्यूडल प्रथा धीरे-धीरे लुप्त होने लगी। तृतीय प्रभाव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

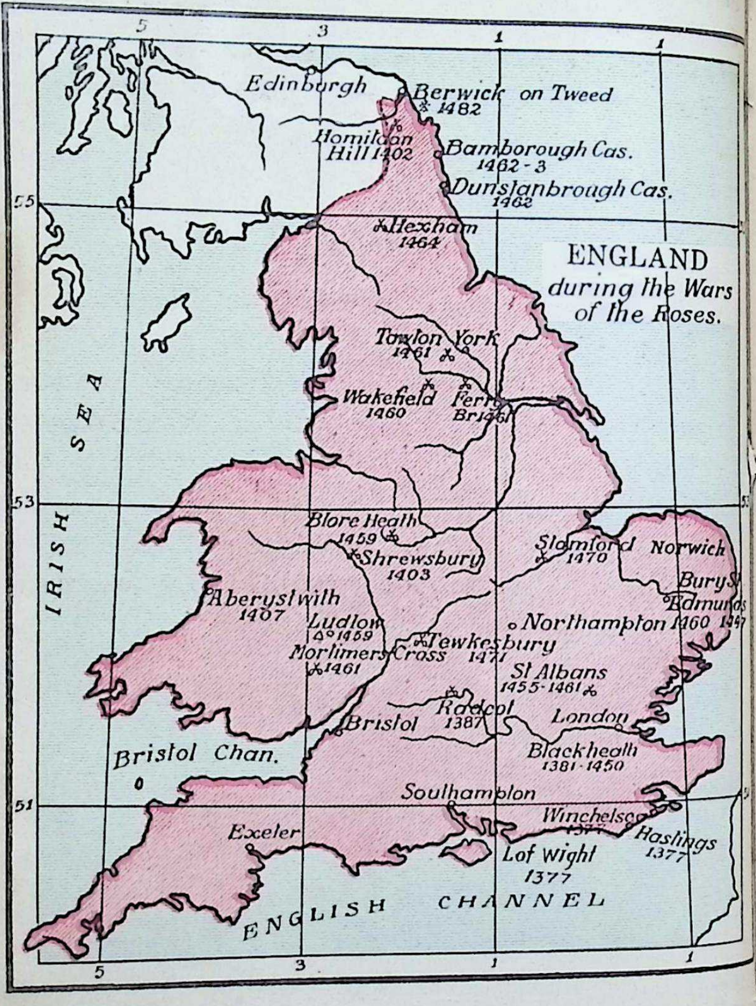

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह पड़ा कि बैरनों की शक्ति नष्ट हो जाने के पश्चात् राजत्व की शक्ति बढ़ने लगी और आगे चलकर हम देखेंगे कि ट्यूडर राज्य के आरम्भ काल से देश में शक्तिशाली केन्द्रीय शासन की स्थापना हुई, और इसी के साथ-साथ राजाओं को अपनी निरंकुशता बढ़ाने का भी अच्छा अवसर प्राप्त हुआ।

रोज़ेज़ के युद्ध के समाप्त होने के समय से इंगलैंड के इतिहास में माध्यमिक काल का भी अन्त माना जाता है। इसके पश्चात् आधुनिक काल का आरम्भ हुआ, जिसका अगले खंडों में वर्णन किया जावेगा।

Exercises

1. How did the succession of Henry IV improve the position of the Parliament ?
2. How did the Wars of the Roses begin ? Discuss the claims of the rival Houses for the throne of England.
3. How did the Wars of the Roses come to an end ? What were their important effects ?
4. Trace the circumstances leading to the establishment of the Tudor Rule in England.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Houses of York and Lancaster.

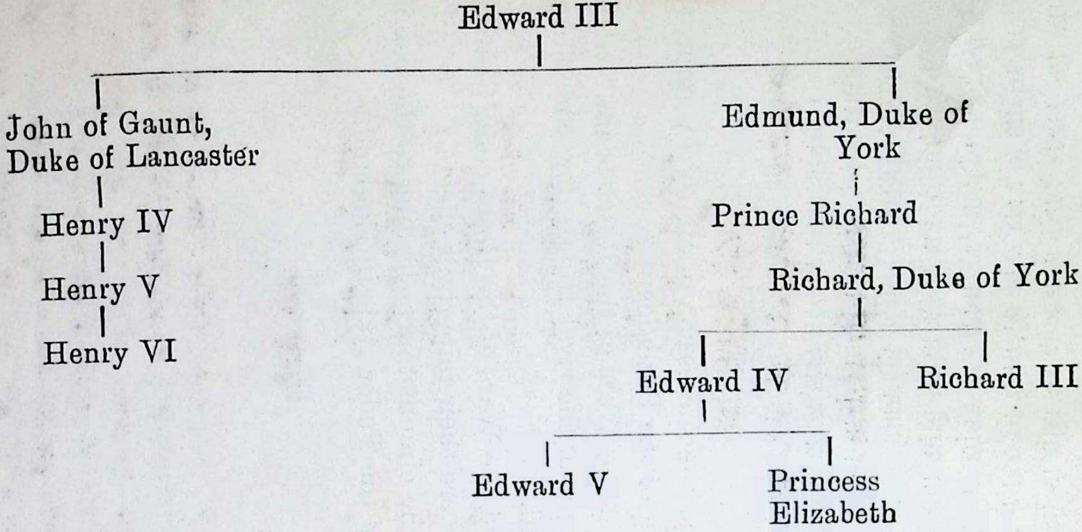

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दसवाँ परिच्छेद

माध्यमिक काल की राजनैतिक, सामाजिक तथा आर्थिक दशा

सन् १०८६	सालिसबरी की शपथ
,, १०८६	डूम्स-डे-बुक
,, ११००	स्वतन्त्रता-पत्र
,, १२१५	महा-स्वतन्त्रता-पत्र
,, १२६५	साइमन की पार्लियामेण्ट
,, १२६५	आदर्श पार्लियामेण्ट
,, १३४८	काली महामारी
,, १३८१	किसानों का विद्रोह
,, १४८५	फ़्यूडल प्रथा का अन्त

फ्यूडल प्रथा

फ्यूडल प्रथा—

नार्मन विजय के पश्चात् समस्त इंगलैंड में एक नये ढङ्ग की ज़मींदारी-प्रथा आरम्भ हुई जो फ़्यूडलिज़्म (Feudalism) के नाम से प्रसिद्ध है। इस प्रथा के अनुसार राजा समस्त भूमि का स्वामी माना जाता था, और उसकी ओर से ज़मींदारों को इस शर्त पर भूमि दी जाती थी कि वे राजा की सहायता के लिए सदैव कुछ सेना तैयार रक्खेंगे और आवश्यकता पड़ने पर स्वयं उसकी ओर से लड़ेंगे और राजा को निर्धारित कर देंगे। जिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़मींदारों को राजा स्वयं भूमि देता था वे मुख्य ज़मींदार अथवा बैरन (Baron or Tenant in chief) कहलाते थे और उनको राजा के सम्मुख स्वामि भक्ति की शपथ खानी पड़ती थी। बैरन को अपनी जागीर बेचने अथवा किसी और को दे देने का अधिकार न था। यदि किसी बैरन का कोई उत्तराधिकारी न होता तो जागीर राजा के पास वापस चली जाती थी। राजा भी कुछ भूमि अपने लिये रखता था। मुख्य ज़मींदार अपनी भूमि अन्य लोगों को दे और कुछ भूमि अपने लिये रख लेते थे। ये लोग छोटे ज़मींदार कहलाते थे और बड़े ज़मींदारों को अपना स्वामी समझते थे। अपने स्वामियों की भक्ति करना ही इनका कर्त्तव्य होता था। अन्त में ये छोटे ज़मींदार भी इसी प्रकार अपनी भूमि को कृषकों को बाँट देते थे।

कृषक दो प्रकार के होते थे, स्वतन्त्र कृषक और विलेन (Villien or serf) जिनकी स्थिति दासों की सी होती थी। स्वतन्त्र कृषकों के पास विलेनों की अपेक्षा भूमि अधिक होती थी, और अपनी भूमि के लिये उन्हें केवल कुछ वार्षिक कर देना पड़ता था। उन्हें यह भी स्वतन्त्रता थी कि वे अपनी भूमि छोड़ कर अन्य स्थानों में जा सकें। विलेनों को कुछ अधिकार अवश्य प्राप्त थे, परन्तु कई बातों में उनकी स्वतंत्रता सीमित थी। विलेनों को सप्ताह में दो तीन दिन स्वामी की भूमि पर काम करना पड़ता था। वे भूमि छोड़ कर कहीं अन्य स्थान में नहीं जा सकते थे, और न अपने स्वामी की आज्ञा बिना वे अपनी पुत्री का विवाह तक कर सकते थे। देश की सम्पूर्ण जन-संख्या में से लगभग दस प्रति सैकड़ा मनुष्य विलेन अथवा दास थे। छोटे ज़मीदारों और विलेनों को अपने स्वामी की ज्येष्ठ कन्या के विवाह के समय या ज्येष्ठ पुत्र के नाईट (Knight) होने के संस्कार के समय कुछ नियत भेंट भी देनी पड़ती थी। वह ग्राम जिसमें बैरन का महल और जिसके निज की भूमि होती थी मेनर कहलाता था। प्रत्येक मेनर में एक अदालत (Manorial Court) होती थी, जिसमें ज़मींदार स्वयं या उसकी ओर से कोई कर्मचारी आसामियों के झगड़ों का फैसला करता था।

फ्यूडल प्रथा का सुधार—

इस प्रथा में सबसे बड़ा दोष यह था कि सेना एकत्रित करने के लिए

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा को बड़े ज़मींदारों पर सदा निर्भर रहना पड़ता था। बड़े ज़मींदार अपने छोटे ज़मींदारों की सहायता से राजा के विरुद्ध बहुत बड़ा विद्रोह खड़ा कर सकते थे। फ्रान्स आदि देशों में भी उस समय यही प्रथा प्रचलित थी, जिसके कारण वहाँ के राजाओं को बैरनों के विद्रोहों से कभी चैन नहीं मिलता था। विलियम ने इन दोषों को दूर करने का प्रयत्न किया। सबसे पहले उसने सालिसबरी (Salisbury) नामक स्थान पर एक बहुत बड़ी सभा बुलाई, जिसमें बड़े तथा छोटे ज़मींदारों को शपथ खानी पड़ी कि हम सबकी भूमि का वास्तविक स्वामी राजा है, इसलिये हमारा प्रथम कर्त्तव्य राजा ही के प्रति होगा। इसका यह अर्थ हुआ कि जब बड़े ज़मींदार राजा के विरुद्ध विद्रोह करें तो उनके अधीन छोटे ज़मींदार उस विद्रोह में भाग लेने के लिये बाध्य न किये जा सकें, क्योंकि इस नई शपथ के अनुसार सबका प्रथम कर्त्तव्य राज-भक्ति था। इसके अतिरिक्त विलियम ने प्रत्येक बड़े ज़मींदार की जागीर देश के भिन्न-भिन्न भागों में बाँट दी, जिससे कोई भी ज़मींदार देश के एक विशेष भाग में सीमा से अधिक शक्तिशाली न हो पावे।

विलियम की इस नीति ने नार्मन बैरनों को क्रोधित कर दिया, और उनमें से दो बड़े बैरनों ने विद्रोह भी किया। विद्रोह को शान्त करने के पश्चात् विलियम ने नार्मन बैरनों को और भी अधिक शक्तिहीन बनाने की ठानी। उसने अँग्रेज़ों के प्रति अच्छा व्यवहार करना आरम्भ किया, ताकि समय पड़ने पर नार्मन बैरनों के विरुद्ध वे उसकी सहायता कर सकें। उसने स्थान स्थान पर नये गढ़ बनवाए और उनमें सेनाएँ रखीं। उसने अंग्रेज़ों की प्राचीन जातीय सेना (Fyrd) को फिर से संगठित किया। उसने फ़्यूडल जागीरों के साथ साथ सब प्रान्तों में अंग्रेज़ी अदालतों (Shire Courts) को भी कायम रखा, जिसके कर्मचारी डेनगेल्ड आदि कर सबसे वसूल करते थे, पुलिस का भी प्रबन्ध करते और न्याय भी करते थे। इन उपायों से विलियम ने नार्मन बैरनों को फिर उपद्रव करने का अवसर न दिया।

डूम्स-डे-बुक--

ज़मींदारों पर अपना प्रभाव स्थायी रखने के लिये विलियम ने बड़े परिश्रम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सारे देश की भूमि की नाप-तोल कराई जिससे राजा को लगान वसूल करने में कोई असुविधा न हो । उसने एक बहुत बड़ा रजिस्टर तैयार कराया जो 'डूम्स-डे-बुक' (Domes-day-Book) के नाम से प्रसिद्ध है। इस रजिस्टर में ज़मींदारों का नाम, उसकी भूमि की नाप-तोल, पैदावार तथा लगान इत्यादि का वर्णन होता था, जिससे कोई ज़मींदार राजा को धोखा न दे सकें। इस रजिस्टर का कुछ भाग अब तक मौजूद है और उसके पढ़ने से माध्यमिक इंगलैंड के ग्रामीण जीवन का बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त हो सकता है।

बैरनों के सैनिक बल का नष्ट होना—

विलियम की यह शासन-व्यवस्था बहुत कुछ सफल साबित हुई । फिर भी बैरनों की ओर से राजाओं को सदैव भय बना रहता था । हेनरी प्रथम, हेनरी द्वितीय, एडवर्ड प्रथम जैसे शक्तिशाली राजाओं के तो समय में बैरन अपना सिर ऊँचा नहीं कर सकते थे और न विद्रोह करने का उन्हें साहस होता था । परन्तु जान, हेनरी तृतीय, एडवर्ड द्वितीय जैसे शक्तिहीन राजा जब राजसिंहासन पर बैठे, तब बैरनों ने बड़े-बड़े उपद्रव मचाये और राजाओं को चैन न लेने दिया । हेनरी प्रथम की मृत्यु के पश्चात् बैरनों को उपद्रव मचाने का अवसर प्राप्त हुआ और उन्होंने बराबर १९ वर्ष तक देश को आपत्ति में डाल रखा । इसी प्रकार राजा जान तथा हेनरी तृतीय को तंग किया, और एडवर्ड द्वितीय तथा रिचार्ड द्वितीय को तो राजसिंहासन से उतार मृत्यु के घाट लगाया ।

शक्तिशाली राजा बराबर बैरनों को शक्तिहीन करने का कुछ न कुछ उपाय करते रहे । हेनरी द्वितीय ने यह प्रथा चलाई कि बैरन सेना के बदले राजा को धन दिया करें । इस धन से राजा ने अपनी एक स्थायी सेना बना ली जिससे राजकीय शक्ति और भी अधिक दृढ़ हो गई । इसके अतिरिक्त हेनरी ने प्राचीन काल की अँग्रेज़ी जातीय सेना (Fyrd or Militia) का पुनः संगठन किया और आज्ञा दी कि प्रत्येक स्वतन्त्र नागरिक शस्त्रों से सुसज्जित होकर राजा की सहायता के लिये युद्ध करने को तैयार रहे। बैरनों को यह भी आज्ञा न थी कि अन्य देशों के समान वे आपस में युद्ध कर सकें। राजाओं ने यह भी प्रबन्ध किया था कि वे विदेशी युद्धों में भी भाग न

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सकें। इस प्रकार बैरन केवल अपनी ज़मींदारी की देख-भाल करने में लग गये और धीरे-धीरे उनका सैनिक बल बिल्कुल नष्ट हो गया।

फ़्यूडल बैरनों की संख्या का कम होना—

बैरनों ने अब स्वतन्त्र होने का अपना पुराना विचार त्याग दिया। देश के शासन-प्रबन्ध में भाग लेना तथा राजा की नीति पर अपना प्रभाव डालना वे अपना मुख्य कर्तव्य समझने लगे। वे अब शस्त्रों का प्रयोग त्याग कर पार्लियामेण्ट द्वारा अपने अधिकारों के लिए लड़ने लगे। आपस में विवाह सम्बन्ध इत्यादि करने के कारण बैरनों के कुटुम्बों की संख्या धीरे-धीरे घटती चली गई। एडवर्ड तृतीय ने अपने पाँच लड़कों का विदेशी राज-वंशों में विवाह न करके बैरनों के ही बड़े-बड़े कुटुम्बों में विवाह किया जिसके कारण उनकी बहुत-सी जागीर राज-घराने में आई। इस प्रकार बैरनों के बहुत-से पुराने घराने राजा के सम्बन्धी हो गये। इस प्रकार बारहवीं, तेरहवीं और चौदहवीं शताब्दियों में फ़्यूडल बैरनों की संख्या बराबर घटती चली गई।

फ़्यूडल प्रथा का अन्त—

बैरनों की संख्या तो अवश्य कम होगई, परन्तु अब जो बैरनों के बड़े-बड़े घराने थे वे राजा के सम्बन्धी थे, और सम्बन्धी होने के कारण वे अपना राज्याधिकार भी जतलाने लगे। वे लन्दन नगर में अपने मकान बनवा कर रहने लगे। वे पार्लियामेण्ट में अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाने का प्रयत्न करने लगे, और पार्लियामेण्ट द्वारा मनमाने अत्याचार भी करने लगे। बहुत-से राजाओं का जीवन भी उन्होंने दुःखमय कर दिया। यही नहीं बल्कि शीघ्र ही उनमें आपस में भी ईर्षा-द्वेष की अग्नि प्रज्वलित हुई यहाँ तक कि गृह-युद्ध (Wars of the Roses) की नौबत आई जो तीस वर्ष तक चलता रहा। रोज़ेज़ के युद्ध में जो बैरन जिस किसी अन्य बैरन पर अधिकार कर लेता था तो वह उसको और उसके समस्त कुटुम्ब का वध कर डालता था। फ़्यूडल प्रथा के अनुसार जो कुटुम्ब नष्ट हो जाता था, उसकी जागीर तथा सम्पत्ति पर राजा अधिकार कर लेता था। इन युद्धों में बैरनों के कुटुम्ब के कुटुम्ब नष्ट हो गये और उन सबकी जागीर राजा के अधिकार में आई, और इस प्रकार फ़्यूडल प्रथा लगभग लुप्त ही हो गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धार्मिक परिवर्तन

इंगलैंड में ईसाई-धर्म का प्रवेश—

रोमन राज्य स्थापित होने से पहले इंगलैंड के निवासियों का धर्म ब[हुत] सरल और पाखण्ड रहित था। वे प्राकृतिक पदार्थ सूर्य, चन्द्रमा, जल, [वृ]क्ष आदि और कई प्रकार के भूत-प्रेतों की पूजा करते थे। वे अपने देवताओं [को] प्रसन्न करने के लिये उनके सम्मुख जानवरों और कभी-कभी मनुष्यों तक [की] बलि देते थे। इंगलैंड में रोमन राज्य के स्थापित होने पर रोमन सभ्यता [के] प्रचार के साथ-साथ रोमन देवी-देवताओं की भी पूजा होने लगी और ब्रिट[न] का प्राचीन धर्म लोप होने लगा। कुछ ही समय बीतने पर ईसाई-मत रोम[न] साम्राज्य का राज-धर्म स्वीकार किया गया और लगभग उसी समय इ[स] नवीन मत ने इंगलैंड में भी प्रवेश किया, परन्तु जन-साधारण ने इसे अ[धिक] नहीं अपनाया।

ईसाई-धर्म का प्रचार—

ईसाई-धर्म के जन्मदाता ईसामसीह थे। उनका जन्म मध्य एशिया के पैलेस्टाईन प्रान्त में हुआ था। उनके माता-पिता यहूदी थे और यहूदी-धर्म के मानने वाले थे। ईसामसीह के विचार बहुत उच्च कोटि के थे। यहूदी-ध[र्म] में जो कुरीतियाँ प्रचलित हो गई थीं उनको देखकर उनके हृदय पर बहु[त] चोट लगी और उनको दूर करने का उन्होंने निश्चय किया। जब वे ३० व[र्ष] के हुए तो उन्हें ज्ञान हुआ कि ईश्वर ने उन्हें लोगों को सत्य-मार्ग तथा सत्[य] धर्म का उपदेश देने के लिए भेजा है। सारांश में उनका कहना था कि ईश्वर एक है और हम मनुष्य-मात्र उसकी संतान हैं, अतः हमारा कर्त्तव्य है कि हम सब परस्पर एक दूसरे से प्रेम रखें और दुखी भाइयों की सहायता करें। अपने जीवन-काल में उन्होंने थोड़े बहुत शिष्य बनाये थे और उनक[ी] मृत्यु के बाद उन शिष्यों ने एशिया तथा यूरोप के कई देशों में ईसाई-धर्म का प्रचार किया। रोमन साम्राज्य में भी ईसाई-धर्म का थोड़ा बहुत प्रचार होता रहा और जब रोमन सम्राट् कान्सटेनटाइन (Constantine) ने इस धर्म को स्वीकार किया तो एक घोषणा द्वारा उसने सन् ३२३ में ईसाई-धर्म को रोमन साम्राज्य का राज-धर्म बना दिया। रोम जो रोमन साम्राज्य की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजधानी थी ईसाई-धर्म की भी एक बड़ी धर्मपीठ हुई। इसका धर्माधिकारी पोप (Pope) के नाम से प्रसिद्ध हुआ, और समय बीतने पर वह समस्त ईसाई-संसार का जगद्गुरु स्वीकार किया गया। कुछ काल के लिए तो पोप की सत्ता यहाँ तक बढ़ गई कि वह राजाओं तक को राजपद देता तथा उन्हें पदच्युत करता था।

इंगलैंड में ईसाई-धर्म का प्रचार—

रोमनों ने इंगलैंड में कुछ गिर्जे भी बनवाये थे, परन्तु रोमन सेनाओं के इंगलैंड से चले जाने के बाद जब आंगल और सेक्सन जाति के लोग वहाँ आकर बसे तो उन्होंने गिर्जों को नष्ट कर दिया और ईसाई-धर्म लोप-सा हो गया। इसके बाद सन् ५९७ में रोम के पोप ग्रीगोरी ने आगस्टाइन (Augustine) नामक एक भिक्षु को इंगलैंड में ईसाई-धर्म का प्रचार करने के लिये भेजा। वह केण्ट (Kent) के राजा एथलबर्ट (Ethelbert) के दरबार में पहुँचा। राजा और उसके दरबारियों ने ईसाई-धर्म को स्वीकार किया। आगस्टाइन के साथ ४० भिक्षु और आये थे। उन्होंने फिर धीरे-धीरे देश के दूसरे भागों में भी इस धर्म का प्रचार किया। इस प्रकार २०० वर्ष के उद्योग के पश्चात् सातवीं शताब्दी के मध्य तक समस्त इंगलैंड ने ईसाई-धर्म को अपना जातीय धर्म बना लिया। कुछ काल पश्चात् इंगलैंड का चर्च पूर्णतया रोमन चर्च के अधीन हुआ और रोमन चर्च के ही ढंग पर वहाँ पूजा-विधि होने लगी। महान् एलफ्रेड तथा साधु एडवर्ड आदि राजाओं ने ईसाई-धर्म के सिद्धान्तों को उन्नति देने के लिये बहुत-से सुधार किये और गिर्जे तथा मठ बनवाये।

चर्च का संगठन—

इसी सम्बन्ध में अँग्रेज़ी चर्च के संगठन का उल्लेख करना भी आवश्यक जान पड़ता है। इंगलैंड में पहला गिर्जा केन्टरबरी था और इसी स्थान से देश में ईसाई-धर्म के प्रचार का प्रबन्ध किया गया था। इसी कारण यहाँ का बिशप आर्चबिशप (Arch-bishop) अथवा प्रमुख धर्माधिकारी के नाम से प्रसिद्ध हुआ, और उसी के हाथ से राज्याभिषेक कराया जाता है और देश की धार्मिक व्यवस्था भी उसी के हाथ में है। उसके बाद यार्क के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आर्चबिशप का स्थान मुख्य माना जाता है। देश के प्रत्येक नगर तथा ग्राम में गिर्जाघर बने हुए हैं, और इनमें छोटे पादरी (Clergy) काम करते हैं। प्रार्थना तथा धर्मोपदेश के अतिरिक्त मृतक संस्कार तथा विवाह कराना भी पादरियों का ही कार्य था। गिर्जाघरों के अतिरिक्त देश में बहुत से मठ (Monasteries) भी बने हुए थे। इन मठों में ईसाई भिक्षु और जो स्त्री अथवा पुरुष विरक्त जीवन व्यतीत करना चाहते थे रहते थे। धर्मोपदेश शिक्षा प्रचार, रोगियों को औषधि बाँटना, यात्रियों को भोजन देना, अनाथ तथा अपंगों को आश्रय देना आदि अनेक कार्य इन मठों में होते थे। संक्षेप में इन भिक्षुओं का कार्य अपनी आत्मोन्नति करना तथा मनुष्यमात्र की सेवा करना था। इन लोगों के प्रयत्न से देश की संस्कृति तथा सभ्यता ने बहुत उन्नति की। बहुत से भक्तगणों ने गिर्जाघरों तथा मठों को बड़ी-बड़ी रक़में तथा भूमि दान दी थी, जिसके कारण उनका काम सरलता पूर्वक चलता था। उस समय इंगलैंड का चर्च समस्त पश्चिमी यूरोप के धर्मगुरु पोप की अधीनता में था और पादरी तथा मठों के भिक्षु उसे प्रति वर्ष धार्मिक कर भी भेजते थे। उस समय पादरियों के अतिरिक्त अन्य कोई शिक्षित होता ही न था, अतः बड़े-बड़े राजपदों पर भी यही लोग नियुक्त किये जाते थे। संक्षेप में चर्च उस समय एक बहुत प्रभावशाली संस्था थी।

नार्मनों के धार्मिक सुधार—

समय बीतने पर पादरी लोग तथा मठों के बहुत से भिक्षुक अपने कर्तव्यों को भूल गये और विलासता में अपना जीवन व्यतीत करने लगे। उनके आचरण शुद्ध नहीं रहे और बहुत-सों का तो जीवन अत्यन्त घृणित था। जनता में विद्या-प्रचार नहीं था और वह घोर अन्धकार में पड़ी हुई थी। बाइबिल में क्या लिखा है, यह वह नहीं समझ सकती थी। पादरी लोग जैसा चाहें उन्हें उलटा-सीधा बहका कर धन ऐंठते थे। ऐसी स्थिति देख कर नार्मन राजाओं ने चर्च में भी सुधार करना आवश्यक समझा। विलियम ने गिर्जों में से पुराने पादरियों को निकाल उनके स्थान पर अपने विश्वासपात्र नार्मन बिशपों को नियुक्त किया, और इटली से लेनफ्रेंक (Lanfranc) नामक एक प्रसिद्ध विद्वान् को बुला कर उसे केन्टरबरी का लाट पादरी बनाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विलियम ने चर्च को अपनी अलग धार्मिक अदालतें बनाने की आज्ञा दे दी, जिनमें पादरियों के अपराधों की जाँच होती थी और उन्हें धर्म-व्यवस्था के अनुसार दंड दिया जाता था। विलियम के इस सुधार ने एक भारी समस्या उपस्थित कर दी। भारी से भारी अपराध करने पर भी पादरी लोग नाम-मात्र दंड देकर छोड़ दिये जाते थे। मनुष्य-हत्या जैसे अपराध पर भी उन्हें केवल यह दंड मिलता था कि वे पदच्युत कर दिये जाते थे। परन्तु विलियम ने यह कार्य समय के अनुसार किया, क्योंकि समस्त यूरोप में उस समय चर्च की स्वतन्त्रता की लहर चल रही थी। विलियम स्वेच्छाचारी होने के कारण चर्च को अपने अधीन ही रखना चाहता था, अतः उसने यह नियम बनाया कि बिना उसकी अनुमति के इंगलैंड में रोम के पोप की कोई आज्ञा (Papal Bull) चालू नहीं हो सके और न देश से कोई धार्मिक अपील पोप के पास जा सके। विलियम विशपों को स्वयं नियुक्त करता था और उसकी आज्ञा के बिना चर्च सम्बन्धी कोई नया नियम भी नहीं बन सकता था।

हेनरी प्रथम तथा चर्च—

विलियम रूफस के राज्य-काल में ऐनसल्म (Anselm) नामक एक विद्वान को केन्टरबरी का आर्चविशप बनाया गया। इस समय यूरोप में यह आन्दोलन चल रहा था कि विशप पोप के अधीन हैं और राजाओं को विशप नियुक्त करने का कोई अधिकार नहीं है। इसी प्रश्न पर रूफस तथा ऐनसल्म में झगड़ा यहाँ तक बढ़ा कि उसे देश छोड़ कर भाग जाना पड़ा। फिर हेनरी प्रथम के राजा होने पर ऐनसल्म रोम से वापिस बुला लिया गया। परन्तु हेनरी का उससे यह समझौता हो गया कि विशपों का चुनाव पादरी लोग स्वयं करें, परन्तु उनके पास चर्च सम्बन्धी भूमि होने के कारण उन्हें राजा के सम्मुख राज-भक्ति की शपथ खानी पड़ेगी। इसके बाद अब तक इंगलैंड में यह प्रथा चली आती है कि चर्च में कोई उच्च पद खाली होने पर राजा अमुक व्यक्ति को नामज़द कर देता है और पादरी लोग उसे ही चुन लेते हैं। हेनरी प्रथम के बाद चर्च के झगड़े ने एक भयङ्कर रूप धारण किया।

टामस बेकेट तथा चर्च की स्वतन्त्रता—

केन्टरबरी के लाट पादरी के मरने पर हेनरी द्वितीय ने उसका स्थान अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजमंत्री तथा परम मित्र टामस बेकेट (Thomas Becket) को प्रदान किया। उस समय चर्च की स्वतन्त्रता की लहर समस्त यूरोप में फैल रही थी। पहले टामस बेकेट भी उसका पक्का समर्थक था। लाट पादरी होते ही बेकेट ने भी चर्च की स्वतन्त्रता का प्रश्न इंगलैंड में छेड़ दिया और यह चाहा कि धार्मिक अदालतों पर राजा का कोई अधिकार न रहे, और चर्च के अधिकारी ही जिस प्रकार चाहें पादरियों के अपराधों का निर्णय करें। हेनरी इस स्थिति को स्वीकार न कर सकता था, क्योंकि वह यह आवश्यक समझता था कि न्याय-क्षेत्र में पादरियों के प्रति भी साधारण प्रजा के समान व्यवहार होना चाहिये। उसने चर्च की अदालतों पर अधिकार जमाने के लिए कुछ नियम (Constitutions of Clarendon) बनाये जिनके अनुसार यह निश्चित हुआ कि अन्य लोगों की भाँति पादरियों के अपराधों का निर्णय भी राजकीय अदालतों में ही हुआ करे। उसी के अनुसार यह भी तय हुआ कि जिन पादरियों के पास जागीरें हैं उन्हें भी अन्य ज़मींदारों की भाँति राज-भक्ति की शपथ लेनी पड़ेगी। बेकेट ने इस नियम का विरोध किया और सात वर्ष तक राजा से उसका खूब झगड़ा चला। अन्त में केन्टबरी के गिरजे में ही बेकेट का वध कर डाला गया और उसकी हत्या के समाचार ने समस्त यूरोप में हलचल मचा दी। स्वयं हेनरी को पश्चात्ताप हुआ और उसने बेकेट की समाधि पर क्षमा माँगी। विवश होकर हेनरी ने अब धार्मिक अदालतों को स्वतन्त्र छोड़ दिया; और इस प्रकार बेकेट की मृत्यु के पश्चात् उसे अपने उद्देश्य में सफलता प्राप्त हुई। धार्मिक अदालतें ज्यों की त्यों स्वतन्त्र बनी रहीं और लगभग ३५० वर्षों तक इन पर राजा का कोई अधिकार न हो सका। जो अपराधी थोड़ी-सी भी लैटिन भाषा जानता हो अपने आपको पादरी कहकर मुक्त कर सकता था।

इंगलैंड पोप की अधीनता में –

इसके बाद राजा जान का पोप से झगड़ा प्रारम्भ हुआ। केन्टबरी के लाट पादरी की जगह खाली होने पर राजा तथा पादरियों में मत-भेद हुआ और दोनों ने रोम के पोप की स्वीकृति के लिए अलग-अलग नाम भेजे, परन्तु पोप ने दोनों में से किसी को स्वीकार न करके अपनी ओर से स्टीफ़न लेंगटन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Stephen Langton) नामक एक तीसरे व्यक्ति को इस पद पर नियुक्त कर दिया। जान ने, इस विचार से कि पोप अँग्रेज़ी राजा के विशेष अधिकार को भी छीनना चाहता है, स्टेफन लेंगटन को इंगलैंड में आने तक की आज्ञा न दी। इस पर उसका पोप से सात वर्ष तक झगड़ा चला। अन्त में पोप ने क्रोधित होकर राजा जान को ईसाई-धर्म से पतित कर दिया, और फिर यह आज्ञा निकाली कि इंगलैंड के गिरजों में सब प्रकार के धार्मिक संस्कार बन्द कर दिये जायँ। इससे लोगों को बड़ा कष्ट हुआ क्योंकि विवाह तथा मृतक संस्कार उस समय गिरजों ही में हुआ करते थे। अन्त में जान को दबकर पोप से क्षमा-याचना करनी पड़ी। इसका फल यह हुआ कि इंगलैंड में पोप की प्रधानता स्थापित हो गई और जान को प्रति वर्ष पोप के कोष के लिए कर भेजने की प्रतिज्ञा करनी पड़ी। इस प्रकार अब इंगलैंड धार्मिक-क्षेत्र के अतिरिक्त राजनैतिक-क्षेत्र में भी पोप के अधीन हुआ। स्टेफन लेंगटन को भी इंगलैंड आने की आज्ञा मिल गई और उसने केन्टर्बरी के लाट पादरी का पद ग्रहण किया। पोप ने अब इंगलैंड के धार्मिक पदों पर इटेलियन तथा फ्रान्सीसी बिशपों को नियुक्त करना आरम्भ किया। इंगलैंड बहुत दिन तक इस स्थिति को सहन न कर सका। सन् १३५१ में एक नियम बनाया गया जिसके द्वारा पोप बिशपों को नियुक्त न कर सकेगा, और दो वर्ष पश्चात् सन् १३५३ से पोप के पास धार्मिक अपीलें भी भेजना बन्द कर दिया गया।

माध्यमिक चर्च के दोष —

चर्च के स्वतन्त्र हो जाने से बिशप तथा पादरियों पर राजा का तनिक भी दबाव न रहा, और उन्होंने आनन्दमय जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया। वे अपने उच्च आदर्श से गिरने लगे और धार्मिक कार्य्यों में उनकी रुचि न रही। स्वयं उनके धर्म-गुरु अर्थात् रोम के पोप का जीवन स्पष्ट रूप से सांसारिक होगया; और उसने कई प्रकार के धर्म-कर लगा कर ईसाई देशों से खूब धन चूसा। एडवर्ड तृतीय के राज्य-काल में अँग्रेज़ों की दृष्टि में पोप का महत्त्व इतना गिर गया कि उसके विरुद्ध कई नियम बनाये गये, परन्तु चर्च के शक्तिशाली होने के कारण इन नियमों का कोई विशेष परिणाम न निकला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जान विकलिफ तथा पोप के विरुद्ध आन्दोलन--

रोमन चर्च के दोषों को जनता पर प्रकाशित तथा पोप के प्रति अश्रद्धा प्रगट करने का कार्य सबसे पहले जान विकलफ़ (John Wycliffe) नामक एक अध्यापक ने किया। यह आक्सफ़ोर्ड विश्वविद्यालय का एक विद्वान् था। उसने सर्वसाधारण के लाभ के लिए अधिकांश बाइबिल का

विकलिफ़

अनुवाद अँग्रेज़ी भाषा में किया। विकलिफ़ ने चर्च की कई प्रचलित आज्ञाओं का विरोध किया और अन्त में उसने स्पष्ट रूप से कह दिया कि जीवन उद्धार के लिए पोप तथा पादरियों का सहारा ढूँढ़ने की कोई आवश्यकता नहीं है। उसने बतलाया कि पोप को धर्म-गुरु मानना मूर्खता है और उसके कोष के लिए धर्म-कर भेजना सर्वथा व्यर्थ है। विकलिफ़ के अनुयायी लालर्डस (Lollards) के नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनका अर्थ "व्यर्थ बकवादी" का है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विकलिफ़ की विफलता—

जनता पोप को धन भेजने के तो अवश्य विरुद्ध थी, परन्तु अज्ञान के कारण अपने प्राचीन धर्म में किसी प्रकार के परिवर्तन के नाम से वह घबराती थी। विशपों के प्रभाव के कारण सरकार ने भी लालर्ड दल को दबाने का बहुत कुछ प्रयत्न किया और उनके कितने ही नेता धर्म-विरोध के अपराध में जीवित जला दिये गए। इस प्रकार विकलिफ़ का आन्दोलन विफल रहा और थोड़े ही दिनों में लालर्डों का दल नष्ट हो गया। यह मानना पड़ेगा कि विफल होने पर भी विकलिफ़ पहला विद्वान् था जिसने पोप के विरुद्ध आन्दोलन करके चर्च-सुधार की ओर जनता का ध्यान आकर्षित किया और इसी कारण वह इंगलैंड में 'धर्म-सुधार के प्रथम जन्मदाता' (The Morning Star of the Reformation) के नाम से प्रसिद्ध है।

महा-स्वतन्त्रता-पत्र

नार्मन बैरन—

अँग्रेज़ जाति सदैव स्वतन्त्रता प्रेमी रही है। नार्मन बैरनों ने जब छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने के स्वप्न को त्याग दिया, तो वे ग्रेट काउंसिल द्वारा अपने अधिकारों को बढ़ाने का प्रयत्न करने लगे। योग्य राजाओं के समय में तो वे कुछ नहीं कर सकते थे, परन्तु निर्बल राजाओं के हाथ में शासन-कार्य पड़ने पर उनको अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा अवसर प्राप्त होजाता था। हेनरी द्वितीय के शासन प्रबन्ध ने बैरनों को एक शृङ्खला में जकड़ रखा था। परन्तु राजा जान (John) के सिंहासनारूढ़ होते ही बैरनों को राजा की शक्ति को सीमित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

राजा जान के शत्रु—

ऊपर बतलाया जा चुका है कि जान इंगलैंड के इतिहास में एक अत्यन्त मूर्ख राजा हुआ है। जान ने छोटे से बड़े सब बैरनों से धन ऐंठना आरम्भ किया और प्रत्येक को अपना शत्रु बनाया। उसने अपनी मूर्खता वश फ्रान्स के राजा, पोप तथा अपने बैरनों से शत्रुता मोल ली, और प्रत्येक ने उसे नीचा दिखलाया। उसकी मूर्खता तथा कायरता से लाभ उठाकर फ्रान्स के राजा ने नारमण्डी इत्यादि सब अँग्रेज़ी प्रान्तों पर अधिकार कर लिया, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केवल एक गेसकनी (Gascony) का प्रान्त इंगलैंड के अधिकार में र गया। फ्रान्सीसी प्रान्तों के हाथ से निकल जाने के कारण जान की शक्ति में कमी आई और इससे उत्सुक होकर बैरन राजा की नीति का बुरी तरह कटाक्ष करने लगे। इसी प्रकार जान ने पोप से भी झगड़ा मोल लिया। केन्टरबरी के आर्च-बिशप के पद पर पोप ने स्टेफन लैंगटन नामक एक योग्य व्यक्ति को नियुक्त किया। जान ने पोप की इस आज्ञा को ठुकराया और इस पर सात वर्ष तक पोप से झगड़ा चला। अन्त में राजा पोप का आधिपत्य स्वीकार करने तथा उसे वार्षिक कर भेजने पर बाध्य हुआ। जान की इस हरकत ने बैरन तथा साधारण जनता सबको अप्रसन्न कर दिया। इतना अपमानित होने पर भी जान ने एक भारी मूर्खता यह और की कि अपने खोये हुए फ्रान्सीसी सूबों को फिर से प्राप्त करने के अभिप्राय से फ्रान्स के राजा से झगड़ा मोल लिया, और धन के लिए बैरनों को बहुत तंग किया।

महा-स्वतन्त्रता-पत्र—

इस प्रकार राजा जान का शासन दिन-प्रति-दिन बिगड़ता चला गया और बैरन तथा ग्रेट काउंसिल के सदस्यगण इस आपत्ति के निवारण का उपाय सोचने लगे। अन्त में उन्होंने नये लाट पादरी स्टेफन लैंगटन ही को अपना नेता बनाया और कुछ राजनैतिक सिद्धान्त भी निर्णय किये जिससे कि राजा के अत्याचारों को रोका जाय। इस फ्रान्सीसी युद्ध में भी पराजित होकर जब जान इंगलैंड लौटा तो उन्होंने इन सिद्धान्तों को राजा के सम्मुख पत्र के रूप में पेश किया, जिस पर कि उसे बाध्य होकर हस्ताक्षर करने पड़े। इस पत्र का नाम महा-स्वतन्त्रता-पत्र (Magna Charta) पड़ा। इस पत्र में ६३ धारायें थीं, परन्तु मुख्य धारायें ये थीं :—

(१) ग्रेट काउंसिल की अनुमति बिना राजा ज़मींदारों पर नये कर नहीं लगा सकता। (२) कोई स्वतन्त्र नागरिक नियमानुसार अपराध सिद्ध हुए बिना न तो जेल भेजा जायगा और न देश से निकाला जायगा। (३) किसी भी व्यक्ति पर उसकी हैसियत से अधिक अथवा उसके अपराध के परिमाण से अधिक जुर्माना नहीं लिया जायगा। (४) अदालतें जिनमें जन-साधारण के मामले ... अदालतें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के साथ-साथ दौरे पर न जायँगी, किन्तु उनके लिए स्थान नियत किये जावें। (५) चर्च स्वतन्त्र रहेगा और उसके अधिकारों में कोई हस्तक्षेप न किया जायगा, और पादरी अपने बिशपों का चुनाव स्वतन्त्रतापूर्वक करेंगे। (६) बड़े ज़मींदारों तथा बड़े पादरियों को ग्रेट काउंसिल में सदा स्थान दिया जावेगा। (७) विदेशी व्यापारियों को युद्धकाल के अतिरिक्त देश में आने-जाने में कोई रुकावट न डाली जायगी। (८) समस्त राज्य में माप व तोल के पैमाने एक समान होंगे।

महा-स्वतन्त्रता-पत्र का गौरव—

इंगलैंड के राजनैतिक इतिहास में इस स्वतन्त्रता-पत्र का बड़ा ऊँचा स्थान है। इस पत्र के तैयार करने का अर्थ यह था कि उस समय राष्ट्रीयता का भाव जागृत हो चला था। यह पहला राजनियम था जिसके अनुसार राजा की शक्ति को सीमित तथा प्रजा के अधिकारों को निश्चित करने का प्रयत्न किया गया। हेनरी प्रथम तथा हेनरी द्वितीय के राज्यकाल में बैरनों की शक्ति को कम करने का उपाय किया गया था; परन्तु इस पत्र के द्वारा राजा की शक्ति को सीमित करने का प्रयत्न किया गया। अब राजा की इच्छा की अपेक्षा देश के क़ानून की प्रधानता स्वीकृत की गई। इसी स्वतन्त्रता-पत्र पर इंगलैंड का वर्त्तमान नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government) निर्भर है। इससे ग्रेट काउंसिल का रूप भी निश्चित हो गया और थोड़े ही दिनों बाद से वह पार्लियामेण्ट के नाम से पुकारी जाने लगी। परन्तु उस समय ग्रेट काउंसिल, बड़े ज़मींदारों तथा बिशपों के हाथ में थी और उसमें जन-साधारण का प्रवेश न हो सकता था।

एडवर्ड प्रथम के समय में राजा जान का 'महा-स्वतन्त्रता-पत्र' पुनः प्रकाशित किया गया और इस बार उसमें कई नई धारायें और मिला दी गईं। यह बात बिल्कुल स्पष्ट करदी गई कि राजा को प्रत्येक नये कर के लिए पार्लियामेण्ट की स्वीकृति लेनी होगी और प्रजा की स्वतन्त्रता की रक्षा करनी पड़ेगी। इसी कर की स्वीकृति के आधार पर पार्लियामेण्ट की शक्ति निर्भर है और इसी के द्वारा पार्लियामेण्ट की भावी शक्ति की नींव पड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्याय-प्रणाली

प्राचीन काल में न्याय-प्रथा—

अँग्रेज़ जाति सदैव से स्वशासन की प्रेमी रही है। एंग्लो-सेक्सन काल में भी वे अपने बहुत से आपस के झगड़े स्थानीय सभाओं द्वारा तय कर लिया करते थे। ग्रामों में स्वतन्त्र नागरिकों की पंचायतें (Village-moots) आपस के बहुत से झगड़ों का निपटारा कर लिया करती थीं और छोटे-छोटे अपराधों का दण्ड भी दिया करती थीं। इनके ऊपर ज़िलों की अदालतें होती थीं जो 'शत सभा' (Hundred Moots) कहलाती थीं। 'शत सभाओं' के अधीन लगभग सौ कुटुम्बों की बस्ती होती थी। फिर इनके ऊपर समस्त प्रान्त (County or Shire) के लिए 'प्रान्तीय सभा' (Shire Moot) होती थी। इस सभा में ग्राम-सभाओं तथा शत-सभाओं के प्रतिनिधि आते थे, और राज्य के प्रधान कर्मचारी और बड़े-बड़े बिशप भी सम्मिलित होते थे, और राजा भी अपना एक प्रतिनिधि, जो "रीव" (Shire Reeve) कहलाता था भेजता था। "प्रान्तीय सभा" प्रान्त की सबसे बड़ी अदालत मानी जाती थी, और भूमि सम्बन्धी बड़े झगड़ों का निपटारा करना तथा बड़े अपराधियों को दण्ड देना उसी के अधिकार में था। इसी प्रकार नगरों में भी नगर सभायें (Town-moots) न्याय करती थीं। इन सभाओं में राज्य के कर्मचारी तथा प्रत्येक नगर के लगभग १० या १२ प्रतिष्ठित नागरिक सम्मिलित होते थे।

प्राचीन स्थानीय नियम—

न्याय किसी विशेष नियमों द्वारा नहीं किया जाता था। भिन्न-भिन्न स्थानों में ग्राम के अथवा नगर के भिन्न-भिन्न स्थानीय नियम (Local Laws) प्रचलित थे। प्रत्येक अपराध के दण्ड में, चाहे जन-हत्या क्यों न हो, प्रायः जुर्माना लिया जाता था। जुर्माने का थोड़ा या बहुत होना पीड़ित की हैसियत पर होता था। न्याय के समय अपराधी तथा पीड़ित दोनों को शपथ खानी पड़ती थी, कभी कभी गवाह भी पेश किये जाते थे और वे केवल शपथ खाकर यह कहते थे कि अमुक पुरुष अपराधी है या नहीं। कभी-कभी अपराधियों को अपने आपको निर्दोषी साबित करने के लिए जलती आग पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चलना पड़ता था, गहरे पानी में डूबना पड़ता था या जलता हुआ गर्म लोहा अपने हाथ पर रखना पड़ता था। घाव नियत दिन में भर जाने चाहियें, अन्यथा वह अपराधी समझा जाता था और उसे दण्ड होता था। अधिक जुर्माने का दण्ड दिया जाता था और जेल तो बहुत कम लोगों को होती थी। केवल राजद्रोह के अपराध में मृत्यु-दण्ड अथवा देश-निकाला दिया जाता था।

नार्मन काल में राजकीय न्यायालयों की स्थापना

नार्मन काल में एक-छत्र-राज्य स्थापित होने से यह आवश्यक जान पड़ा कि न्याय का भी प्रबन्ध संगठित रूप से हो और समस्त देश में एक समान नियम प्रचलित हों। फ्यूडल प्रथा के स्थापित होने में बैरनों ने अपनी अपनी ज़मींदारियों में अपनी अदालतें (Major Courts) स्थापित कीं जिनमें या तो ज़मींदार स्वयं या उसकी ओर से उसका कोई विशेष कर्मचारी आसामियों के आपस के झगड़ों को तय करता था। इन ज़मींदारी अदालतों के साथ-साथ विलियम विजयी ने सेक्सन काल की पुरानी अदालतों (Shire Courts) को भी क़ायम रक्खा, जिससे न्याय राजा की इच्छा के अनुसार हो और जन-साधारण तथा राजा का सम्बन्ध भी बना रहे। विलियम ने नार्मन प्रजा की रक्षा हेतु एक यह नियम बनाया कि यदि एक भी नार्मन की किसी स्थान में हत्या हो गई, तो समस्त ज़िले (Hundred) पर भारी जुर्माना किया जायगा। उसके राज्य-काल में मृत्यु-दण्ड, जो पहले छोटे छोटे अपराधों के बदले भी दिया जाता था, बिल्कुल बन्द कर दिया। विलियम विजयी के पश्चात् उसके उत्तराधिकारियों ने न्याय-प्रणाली में अनेक प्रशंसनीय सुधार किये जिसके कारण जनता को न्याय प्राप्त करने में बड़ी सुविधा हुई।

हेनरी प्रथम ने पुरानी अदालतों (Hundred and Shire Courts) में सुधार करके उनको राजकीय संस्था बनाने का प्रयत्न किया और अब वे पूर्ण रूप से राजकीय अदालतें (Royal Courts) बन गईं। । हेनरी प्रथम इन अदालतों के पदाधिकारियों (Sheriffs) को स्वयं नियुक्त करता था। ग्रेट काउंसिल एक बहुत बड़ी सभा थी, अतः राजा ने शासन-कार्य को सरल करने के लिए उसमें से कुछ सदस्य छाँट कर मन्त्रियों की एक सभा (Curia Regis or King's Court) बनाई, जिसका एक कार्य न्याय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का उचित प्रबन्ध करना था। राजा इस सभा का सभापति होता था। यह सभा देश में अपील की सबसे बड़ी अदालत थी। इस अदालत में बड़े बैरनों के आपस के झगड़ों का निपटारा होता था, और लूट-मार, जन-हत्या इत्यादि बड़े-बड़े अपराधों के मुक़दमे भी सुने जाते थे और उन लोगों को दण्ड दिया जाता था जो राजा के शासन का विरोध करते थे। राजा की आज्ञा से फ़्यूडल या ज़मींदारी अदालतों के भी बहुत से मुक़दमे इस अदालत के सामने पेश होते थे। इसी अदालत के न्यायाधीश राजकीय अथवा ज़मींदारी अदालतों के काम की जाँच करते थे, और दौरे पर जा-जा कर बहुत से मुक़दमों का फैसला भी करते थे। इस प्रबन्ध के कारण देश के स्थानीय क़ानून (Local Laws) धीरे-धीरे लुप्त होने लगे, और उनके स्थान में समस्त देश के लिए सार्वजनिक क़ानून का प्रचार हुआ। मृत्यु-दण्ड, जो विलियम विजयी ने बन्द कर दिया था, फिर चोरी, डकैती आदि छोटे-छोटे अपराधों के बदले दिया जाने लगा। उसके राज्य-काल में कोई अपराधी राजदण्ड से बच नहीं सकता था, और सैकड़ों चोर डाकू प्रत्येक वर्ष बध कर दिये जाते थे। इस कड़े शासन के कारण देश में अब लूट-मार का भय नहीं रहा; लोग अपना सोना, चाँदी बे-खटके कहीं भी ले जा सकते थे। इन्हीं कारणों से हेनरी प्रथम "न्याय का सिंह" (Lion of Justice) कहलाता है।

हेनरी द्वितीय का न्याय-प्रबन्ध तथा जूरी-प्रथा--

स्टेफन और मेटिल्डा के गृह-युद्ध ने हेनरी प्रथम के किये कराये प्रबन्ध को बहुत हानि पहुँचाई। हेनरी द्वितीय ने फिर से न्याय-प्रणाली का संगठन किया, और वर्तमान न्याय-प्रथा की नींव डाली। उसने प्रान्तीय अदालतों में से जितने पुराने शैरिफ थे सब निकाल बाहर किये और उनके स्थान में योग्य व्यक्ति नियुक्ति किये। उसने देश को ६ प्रान्तों में बाँट दिया और प्रत्येक प्रान्त में दौरा करने वाले जजों की नियुक्ति की, जो राजकीय अदालतों में जा—जा कर न्याय कर न्याय करते थे; और इस प्रकार दौरा करने वाले जजों की प्रथा ने देश की न्याय-प्रणाली में एक दृढ़ रूप धारण कर लिया। ये जज फौजदारी तथा दीवानी सब प्रकार के मुकदमों के फैसले करते थे और स्थानीय अदालतों के कार्य की जाँच करते थे। ये जज क्यूरिया रेगिस के सदस्य होते थे, अतः

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनके प्रभाव से केन्द्रीय शासन खूब दृढ़ हो गया। राजा ने यह भी आज्ञा निकाल दी थी कि अमुक प्रकार के मुक़दमे ज़मींदारी अदालतों में पेश ही न हों और उनका फ़ैसला राजकीय जज ही करेंगे। इसका फल यह निकला कि इन अदालतों (Feudal or manor courts) की शक्ति शनैः शनैः कम होती चली गई; और देश से स्थानीय क़ानून लुप्त होकर उसके स्थान में "सार्वजनिक क़ानून" (Common law) की नींव पड़ी। हेनरी द्वितीय के राज्य काल के कुछ वर्षों बाद अग्नि-परीक्षा, जलपरीक्षा आदि द्वारा जो अपराधियों की जाँच की प्रथा प्राचीन काल से चली आती थी, बन्द कर दी गई।

हेनरी द्वितीय ने अँग्रेज़ी शासन-प्रणाली में जूरी प्रथा (Jury System) भी प्रचलित की। उस समय जूरी के सदस्यों का कार्य केवल यह होता था कि वास्तविक अपराधियों को राजकीय दौरा करने वाली अदालतों के सम्मुख पेश कर दें। वे न्याय करने में आजकल के समान जजों को अपनी सम्मति नहीं दे सकते थे। आगे चलकर राजा ने भूमि सम्बन्धी झगड़ों के लिए भी न्यून रूप में यही प्रबन्ध किया। हेनरी द्वितीय के इस प्रबन्ध ने प्रजा के हृदय पर बहुत अच्छा प्रभाव डाला और जनता यह समझने लगी कि न्याय-कार्य में राजा सर्वसाधारण को भी भाग देता है। धीरे-धीरे आगे चलकर जूरी-प्रथा में अनेक सुधार किये गये और वह न्याय-प्रणाली का मुख्य अंग बन गई।

एडवर्ड प्रथम का न्याय-प्रबन्ध तथा उसके राज नियम—

इस प्रकार न्याय क्रम में बराबर सुधार होते चले गये। एडवर्ड प्रथम के समय में जाकर न्याय के लिये बहुत ही अच्छा प्रबन्ध हो गया था। फ़्यूडल अदालतों के अधिकार कम कर दिये गये, और अब यह भी स्पष्ट कर दिया गया कि उनके क्या क्या अधिकार रहेंगे। प्रान्तों की अदालतों (Shire Courts) और दौरा करने वाले जजों के अतिरिक्त लन्दन में अपील की सबसे बड़ी तीन केन्द्रीय अदालतें थीं जिनमें राजा, उसके बड़े बैरन तथा योग्य जज बैठ कर न्याय करते थे। न्याय-कार्य में अब योग्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वकील उनकी सहायता भी करने लगे थे। एडवर्ड प्रथम ने एक कालेज खुलवाया था जिसमें न्याय सम्बन्धी शिक्षा दी जाती थी। एडवर्ड प्रथम कुछ राजकर्मचारी भी यह जाँच करने के लिये नियुक्त किये कि कहीं जज लो घूँस इत्यादि लेकर अन्याय तो नहीं करते; और जाँच करने पर जो जज अपरा साबित हुए उन पर या तो भारी जुर्माने हुये या वे पदच्युत कर दिये गये।

एडवर्ड प्रथम ने बहुत से अन्य लाभदायक क़ानून भी बनाये, पर उनमें से दो तीन बड़े महत्त्वपूर्ण हैं। उसने एक नियम (Statute o West Minister II) बनाया कि ज़मींदार चाहे तो अपनी सम्पत्ति अपने सब से बड़े पुत्र को वसियत में दे सकता है, जिससे ज़मींदारों का य भय जाता रहा कि उनकी भूमि छोटे-छोटे भागों में बंट जायगी। राजा ने एक और नियम (West Minister III) बनाया कि किसी व्यक्ति को यह अधिकार न रहेगा कि वह किसी किसान से उसके ज़मींदार (Lord) की आज्ञा बिना भूमि मोल ले सके। इस नियम के कारण देश में बहुत से छोटे-छोटे नये ज़मींदार बन गये और फ़्यूडल प्रथा धीरे-धीरे लुप्त होने लगी। उसने एक नियम (Statute of Mortmain) द्वारा यह आज्ञा निकाल कि कोई व्यक्ति बिना राजा की आज्ञा के चर्च को भूमि दान नहीं दे सकता क्योंकि चर्च के पास भूमि जाने से राजकोष को हानि होती थी। हेनरी प्रथम की मृत्यु के पश्चात् अराजकता के काल में देश चोर, डाकू और बदमाशों से भरा हुआ था। उन सबको रोकने के लिये एडवर्ड प्रथम ने एक नियम (Statute of Winchester) बनाया। इस नियम में तीन मुख्य बातें थीं। एक यह कि यदि किसी ज़िले में कोई डकैती अथवा जन-हत्या होगी तो वह ज़िला उसके लिए उत्तरदायी होगा। दूसरे यह कि प्रत्येक नगर के दर्वाज़े सूर्यास्त के समय बन्द कर दिये जावें और नये आदमियों से राज कर्मचारी जो कुछ पूछें बतलावें। तीसरे यह कि बड़ी सड़कों के दोनों ओर दो दो सौ फीट तक कोई पेड़, झाड़ी या किसी प्रकार की आड़ न रहे, ताकि यात्रियों को लूट-मार का भय न रहे।

धार्मिक अदालतें—

चर्च के सम्बन्ध में हम ऊपर बतला आये हैं कि विलियम विजयी ने चर्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को अपनी धार्मिक अदालतें बनाने का अधिकार दे दिया था। इन अदालतों में पादरियों के अपराधों की जाँच होती थी और धार्मिक नियमों द्वारा उन्हें दण्ड मिलता था। यह दण्ड नाम मात्र होता था। राजा हेनरी द्वितीय को यह भेद भाव पसन्द न आया, और उसने पादरियों को राजकीय अदालतों के अधीन करने का प्रयत्न किया। परन्तु इस कार्य में उसको सफलता प्राप्त न हुई, और हेनरी अष्टम के शासन काल तक धार्मिक अदालतें स्वतन्त्र बनी रहीं। फिर भी राजा एडवर्ड प्रथम ने इतना अवश्य किया कि धार्मिक अदालतों के अधिकारों को स्पष्ट करके एक सीमा में बाँध दिया।

राज कर्मचारी तथा बैरन--

उस समय राजा के मन्त्रियों तथा अन्य बड़े राजकर्मचारियों पर साधारण नियमों द्वारा अभियोग नहीं चलाया जा सकता था। अतः पार्लियामेण्ट ने एडवर्ड तृतीय के शासन काल में सन् १३७३ में यह अधिकार प्राप्त किया कि पार्लियामेण्ट स्वयं उन पर अभियोग (Impeachment) चला सकती है। यह अभियोग लोक सभा चलाती थी और लार्ड सभा उसका निर्णय करती थी। फिर आगे चलकर रोज़ेज़ के युद्ध काल से एक विशेष प्रकार के नियम (Acts of Attainder) पार्लियामेण्ट में पास होने लगे जिनके द्वारा पार्लियामेण्ट कोई अभियोग चलाये बिना चाहे जिस व्यक्ति को देश द्रोही के अपराध में प्राण-दण्ड दे सकती थी। इन दोनों प्रकार के नियमों द्वारा बहुत से निर्दोषी व्यक्तियों का रक्तपात किया गया।

बैरनों के मुक़दमे राजकीय अदालतों में नहीं हुआ करते थे। जब कभी राजा शक्तिहीन हो जाते थे, ये बैरन राजकीय अदालतों के जजों को भी डांट डपट लेते थे। वे अपने सेवकों को भी राजकीय अदालतों में जाकर राज-दण्ड से बचा लाते थे। इस कारण चौदहवीं शताब्दी के अन्त से ही देश में बड़ी अशान्ति छाई हुई थी।

सार्वजनिक कानून की विशेषता—

फिर भी यूरोप के अन्य देशों की अपेक्षा इंगलैंड का सार्वजनिक कानून (Common Law) लोकप्रिय था। कानून चाहे कड़े थे या सरल परन्तु वे थे सब सार्वजनिक। किसी राजा अथवा उसके राज कर्मचारियों का शब्द

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कानून नहीं हो सकता था। जूरी प्रथा चलने से देश के सर्व साधारण को भी न्याय-कार्य में भाग मिलने लगा था। फ़्यूडल प्रथा के लुप्त होने से फ़्यूडल अदालतों का भी अन्त हो गया, और देश के सार्वजनिक कानून ही की प्रधानता स्थापित हुई। जज कानूनों के बन्धन में थे और इन्हीं के अनुसार न्याय कर सकते थे। कानून में किसी प्रकार का परिवर्तन पार्लियामेण्ट के प्रतिनिधियों की सम्मति विना नहीं हो सकता था।

पार्लियामेण्ट का विकास

पार्लियामेण्ट का प्राचीन-रूप—

अँग्रेज़ जाति सदैव स्वतन्त्रता की प्रेमी रही है और उसमें स्वशासन की प्रथा प्राचीन काल से चली आती है। नार्मन-विजय के पूर्व विटान सभा देश के शासन-कार्य की देख-भाल करती थी। इसके स्थान पर नार्मन-काल में ग्रेट काउंसिल की स्थापना हुई जिसमें भूमिपति तथा बड़े पादरी सम्मिलित होते और वे शासन-कार्य में राजा को सलाह देते थे। योग्य राजाओं के समय में तो उनकी अधिक नहीं चलती थी, परन्तु निर्बल राजाओं के हाथ में शासन-कार्य पड़ने पर उनको अपनी शक्ति बढ़ाने का अच्छा अवसर प्राप्त होता था। इंगलैंड की वर्तमान पार्लियामेण्ट का जन्म वास्तव में इसी ग्रेट काउंसिल के आधार पर है। माध्यमिक काल में ज़मींदारों तथा बिशपों ही ने राजाओं से लड़कर बहुत से अधिकार प्राप्त किये।

पार्लियामेण्ट का रूप निर्णय—

पार्लियामेण्ट के उत्थान का इतिहास राजा जान के "महा-स्वतन्त्रता-पत्र (Magna Charta) के समय से आरम्भ होता है, जिसमें राजा के स्वेच्छाचार को सीमित करने का पहली बार प्रयत्न किया गया। इसी स्वतन्त्रता-पत्र में ग्रेट काउंसिल के मुख्य अधिकार अर्थात् नए कर की स्वीकृति देने के अधिकार को पहली बार स्पष्ट किया गया।

इसके पश्चात् हेनरी तृतीय के राज्य-काल में साइमन-डे-मोन्टफोर्ट के नेतृत्व में जन-साधारण के प्रतिनिधियों का पहली बार ग्रेट काउंसिल में प्रवेश हुआ। इसी समय से ग्रेट काउंसिल का नाम पार्लियामेण्ट (Parliament) पड़ा। इस राजा तथा उसके पुत्र एडवर्ड के क़ैद होने पर शासन-कार्य साइमन-डे-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मोन्टफोर्ट (Simon de Montfort) ने स्वयं सँभाला। परन्तु शीघ्र ही दूसरे बैरन उससे ईर्ष्या रखने लगे। जनता से सहायता प्राप्त करने के अभिप्राय से उसने सन् १२६५ में ग्रेट काउंसिल का एक अधिवेशन किया जिसमें बैरनों तथा बिशपों के अतिरिक्त प्रत्येक प्रान्त (County) तथा प्रत्येक नगर (Borough) से दो-दो प्रतिनिधि बुलाये गये। यह पहला

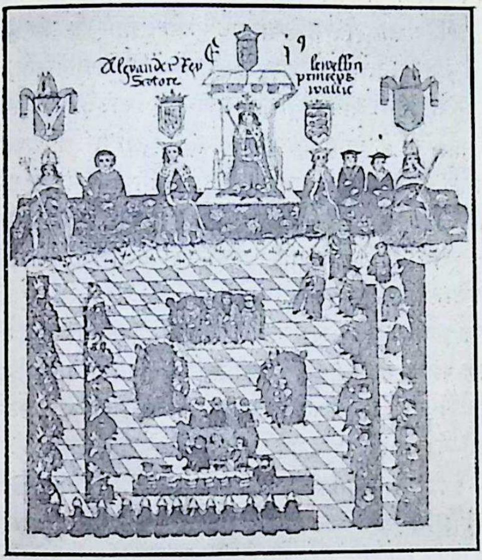

लार्ड-सभा

अवसर था जब जनसाधारण के प्रतिनिधियों को बड़े बैरनों तथा बड़े बिशपों के साथ पार्लियामेण्ट में स्थान मिला। इसीलिये इतिहास में साइमन लोक-सभा (House of Commons) का जन्मदाता कहलाता है। उसकी ग्रेट काउंसिल में बैरन, बिशप तथा साधारण जनता के प्रतिनिधि सब एक ही स्थान पर सम्मिलित हुए थे। थोड़े समय पश्चात् ग्रेट काउंसिल के लिए "पार्लियामेण्ट" शब्द का ही प्रयोग होने लगा। अभी पार्लियामेण्ट दो भागों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(House of Lords and House of Commons) में विभक्त नहीं हुई थी।

एडवर्ड प्रथम तथा आदर्श पार्लियामेण्ट—

एडवर्ड बड़ा योग्य शासक था ; उसने समझ लिया कि शासन-संचालन तथा नये करों के लगाने में प्रजा की सब श्रेणियों की सहानुभूति प्राप्त करना बहुत उपयोगी होगा। यही सोचकर एडवर्ड प्रथम ने सन् १२९५ में एक पार्लियामेण्ट बुलाई जो "आदर्श पार्लियामेण्ट" के नाम से प्रसिद्ध है। इस पार्लियामेण्ट में बड़े बैरन, बड़े बिशप, छोटे पादरियों के प्रतिनिधि और प्रत्येक प्रान्त तथा नगर से दो दो प्रतिनिधि बुलाये गये। साइमन ने अपनी पार्लियामेण्ट में छोटे पादरियों के प्रतिनिधियों को नहीं बुलाया था, और कई ऐसे प्रान्तों तथा नगरों को भी छोड़ दिया था जहाँ के निवासी उसके समर्थक न थे, और बैरन भी केवल २३ सम्मिलित हुए थे। परन्तु एडवर्ड प्रथम की आदर्श पार्लियामेण्ट पूर्ण रूप से जातीय प्रतिनिधि सभा थी और भविष्य की पार्लियामेण्ट इसी के आधार पर बनाई गई।

कुछ काल पश्चात् छोटे पादरियों ने अपना प्रतिनिधि भेजना बन्द कर दिया, और बड़े पादरी तथा ज़मींदार अपनी बैठक जनसाधारण के प्रतिनिधियों से अलग करने लगे। इस प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दी के आरम्भ में पार्लियामेण्ट दो भागों में विभक्त हो गई। पादरियों तथा ज़मींदारों वाला भाग "लार्ड-सभा" (House of Lords) कहलाया, और जन-साधारण के प्रतिनिधियों की सभा "लोक सभा" (House of Commons) के नाम से प्रसिद्ध हुई।

माध्यमिक पार्लियामेण्ट के अधिकार—

माध्यमिक काल में पार्लियामेण्ट के अधिकार स्पष्ट रूप से निश्चित नहीं हो पाये थे। नए राज-करों के लिए पार्लियामेण्ट की स्वीकृति आवश्यक थी, परन्तु शक्ति-शाली राजा प्रायः मनमाने राज-कर भी लगाते रहते थे। आज-कल की भाँति राज-नियम भी पार्लियामेण्ट ही में तैयार होते थे। पार्लियामेण्ट के बुलाने पर उसके सदस्य राजा से प्रार्थना करते थे कि उनकी अमुक शिकायतें दूर कर दी जायँ और फिर उनके आधार पर राजा की ओर से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज-नियम प्रकाशित होते थे। इस प्रकार पार्लियामेण्ट की शक्ति का प्रारम्भ-मात्र ही था, परन्तु धीरे-धीरे उसकी भावी-शक्ति के लक्षण भी दिखाई देने लगे और उसने देश की शासन-प्रणाली में भी एक महत्त्व पूर्ण स्थान प्राप्त किया था।

पार्लियामेन्ट की प्रधानता—

इस समय पार्लियामेण्ट में बैरनों का ही ज़ोर था। बैरनों में परस्पर दलबन्दियाँ हो जाने के कारण वे एक दूसरे को नीचा दिखाना चाहते थे। इन लोगों के आपस के द्वेष के कारण पार्लियामेण्ट की शक्ति बढ़ती चली गई।

सन् १३११ में एक राज नियम बना जिसके अनुसार राजा अपने मंत्रियों को पार्लियामेण्ट की सम्मति बिना नियुक्त न करेगा और उसे पार्लियामेण्ट का भी अधिवेशन कम से कम वर्ष में एक बार अवश्य करना पड़ेगा। उसके पश्चात् सन् १३२२ में यह निश्चय हुआ कि अमुक प्रकार के नियम सम्पूर्ण पार्लियामेण्ट की स्वीकृति बिना पास नहीं किये जायँगे। फिर सन् १३२७ में पार्लियामेण्ट की शक्ति यहां तक बढ़ी कि जब बैरनों तथा बिशपों ने एडवर्ड द्वितीय को पदच्युत करना चाहा तो पहले उन्हें पार्लियामेण्ट की स्वीकृति ले लेनी पड़ी। बैरनों के ही उद्योग से सन् १३७३ में पार्लियामेण्ट ने मन्त्रियों तथा अन्य राज-कर्मचारियों पर अभियोग चलाने (Impeachment) का अधिकार प्राप्त किया, जिसका फल यह हुआ कि मन्त्री तथा राज-कर्मचारी पार्लियामेण्ट से भय खाने लगे। आगे चलकर सन् १३९९ में जब पार्लियामेण्ट ने रिचार्ड द्वितीय को राज्यच्युत करके उसके स्थान पर लंकास्टर वंश के हेनरी चतुर्थ को राजा बनाया, तो उसने अपनी शक्ति का पूर्ण परिचय दिया।

हेनरी चतुर्थ तथा उसके वंश के अन्य राजाओं ने पार्लियामेण्ट को प्रसन्न रखने की सदैव चेष्टा की, क्योंकि वे जानते थे कि लंकास्टर वंश का राज्याधिकार केवल पार्लियामेण्ट की कृपा से पुष्ट हुआ था। सन् १४०६ में एक नियम यह और बना कि राजा अपनी काउंसिल के सदस्यों तथा मन्त्रियों के पदों पर ऐसे लोगों को नियुक्त करे जिनके लिये पार्लियामेण्ट अपनी स्वीकृति दे। हेनरी षष्ठ के शासन-काल में पार्लियामेण्ट ने राज-नियम बनाने का कार्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी पूर्णतया अपने अधिकार में किया। अब तक यह प्रथा थी कि पार्लियामेण्ट राजा के पास प्रार्थना पत्र भेजती थी कि वह अमुक प्रकार का नियम बना दे। अब वह प्रार्थना प्रस्ताव (Bill) के रूप में पार्लियामेण्ट के सम्मुख रखी जाती थी, और वहाँ पास होने के पश्चात् राजा उस पर अपनी स्वीकृति अथवा अस्वीकृति देता था। यही प्रथा अब तक चली आती है।

पार्लियामेण्ट का शक्तिहीन होना—

उस समय की पार्लियामेण्ट जनता की प्रतिनिधि सभा न थी। उसमें बड़े-बड़े स्वार्थी बैरनों का ज़ोर था और वे जो नियम चाहते थे बनवा लेते थे। गुलाबों के युद्ध के प्रारम्भिक काल में बैरनों ने एक भयङ्कर प्रथा पार्लियामेण्ट में प्रचलित की। वे चाहे जिसके विरुद्ध एक विशेष प्रकार का नियम (Act of Attainder) पार्लियामेण्ट में पास करा लिया करते थे जिसके अनुसार पार्लियामेण्ट बिना अभियोग चलाये चाहे जिस व्यक्ति को देश-द्रोही ठहरा कर प्राण-दण्ड दे सकती थी। इस प्रकार के नियमों द्वारा बहुत से निर्दोष लोगों का रक्तपात किया गया, और इसका फल यह निकला कि पार्लियामेण्ट शीघ्र ही बदनाम होगई। अच्छा अवसर देखकर यार्क वंश के राजा एडवर्ड चतुर्थ ने पार्लियामेण्ट के बिना ही शासन-कार्य चलाया। जब उसे धन की आवश्यकता होती थी, वह बलपूर्वक प्रजा से दान (Benevolence) वसूल करता था। वह पार्लियामेण्ट की सम्मति बिना ही अपनी काउंसिल के सदस्यों को नियुक्त करने लगा। इस प्रकार लंकास्टर वंश के काल तक पार्लियामेण्ट ने जो शक्ति प्राप्त की थी, वह यार्क वंश के राजाओं ने नष्ट कर दी। सन् १४८५ में जब ट्यूडर वंश का राजा हेनरी सप्तम राजसिंहासन पर बैठा तो पार्लियामेण्ट बिल्कुल शक्तिहीन थी, और मुख्यतः इसी कारण उसे स्वेच्छाचारी शासन स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ।

सामाजिक तथा आर्थिक परिवर्तन

नार्मन तथा अंग्रेज़—

नार्मन राज्य स्थापित होने पर देश की तीन चौथाई से अधिक भूमि नार्मन बैरनों को बाँट दी गई और अधिकांश अँग्रेज़ उनके दास (Serf)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के रूप में रहना पड़ा। बहुत ही कम ऐसे अँग्रेज़ थे जिन्हें शासन-कार्य में भाग दिया गया था। लगभग एक शताब्दी तक अँग्रेज़ी जनता नार्मनों को अपना शत्रु समझती रही, और नार्मन अपने आपको विदेशी मानते रहे और इंगलैंड को अपना देश नहीं समझते थे। परन्तु नार्मन तथा अन्य राजाओं की यह नीति रही कि देश के समस्त निवासियों को मिला कर एक राष्ट्र में परिणत कर दें। हेनरी प्रथम ने स्काटलैंड की राजकुमारी से विवाह करके तथा स्वतन्त्रता-पत्र प्रकाशित करके अँग्रेज़ों से प्रेम-भाव बढ़ाया। हेनरी द्वितीय ने अपनी राजकीय अदालतों में नार्मन तथा अँग्रेज़ों को समान रूप से स्थान दिया। राजा जान के राज्यकाल में फ्रान्स में अँग्रेज़ी सूबों के हाथ से निकल जाने के कारण नार्मन बैरन अपने आपको इंगलैंड के निवासी समझने लगे और वे यहाँ के ही शासन सुधार तथा सामाजिक उन्नति को ही अपना कर्त्तव्य समझने लगे। इसी प्रकार धीरे-धीरे अँग्रेज़ों और नार्मनों में विवाह-सम्बन्ध भी होने लगे, और अब दोनों जातियाँ अपने को एक दूसरे से पृथक् न समझ कर हिल-मिल कर एक ही हो गईं।

दासता का अन्त—

हम ऊपर यह बतला आये हैं कि फ्यूडल प्रथा के स्थापित होने से इंगलैंड में दासों (Serfs) की संख्या बहुत बढ़ गई थी। ये दास सप्ताह में दो तीन दिन अपने स्वामी के खेतों पर काम करते थे, और बाक़ी दिनों में वे अपने खेतों पर, जो उनको अपने स्वामी की कृपा से मिले हुए थे, काम करते थे। फ्यूडल प्रथा के नियमों के अनुसार वे अपनी भूमि तथा अपने स्वामी को त्याग नहीं सकते थे, और इसी कारण इन सर्फों की दशा दासों के समान थी। इस प्रकार देश में बहुत कम ऐसे अँग्रेज़ थे जो अपने को स्वतन्त्र नागरिक कह सकें। समय बीतने पर भूमिपतियों ने अपने आसामियों से सेवा के बदले धन लेना आरम्भ किया और इस धन से वे मज़दूरी देकर चाहे जिससे अपने खेतों पर काम करा लेते थे। इस प्रकार बहुत से कृषक स्वतन्त्र हो गये और वे जहाँ चाहते मज़दूरी कर सकते थे। उनका अपने स्वामी के साथ केवल इतना सम्बन्ध रह गया था कि समय पर अपने खेतों का लगान दे दिया करें। परन्तु चौदहवीं शताब्दी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में एक ऐसी घटना हुई जिसने मज़दूरों की स्थिति में एक भारी परिवर्तन कर दिया।

महामारी तथा उसके परिणाम—

सन् १३३८ और १३६२ के बीच में तीन बार महामारी का आक्रमण हुआ। इसके कारण गाँव के गाँव उजड़ गये! इंगलैंड की लगभग आधी जन-संख्या नष्ट हो गई, बहुत सी भूमि बेकार पड़ी रही, क्योंकि खेतों पर काम करने के लिए आदमियों का मिलना दुर्लभ हो गया। ऐसी स्थिति में मज़दूरी की दर बहुत बढ़ गई, जिससे भूमिपतियों की बड़ी हानि होने लगी। भूमिपतियों ने पार्लियामेण्ट द्वारा मज़दूरों को मज़दूरी की पुरानी दर लेने पर वाध्य करने के लिए कई नियम स्वीकृत कराये; परन्तु इसका कोई परिणाम न निकला, क्योंकि पुरानी मज़दूरी पर अब निर्वाह भी होना कठिन था। इस प्रकार मज़दूरों तथा ज़मींदारों में परस्पर झगड़े की नींव पड़ी। उसी समय लालर्डस (Lollards) प्रचार कर रहे थे कि मनुष्य मात्र सब एक समान हैं और धन सम्पत्ति का बटवारा भी समान रूप से होना चाहिये। इस प्रकार की शिक्षा ने किसान तथा मज़दूरों को ज़मींदारों तथा पूंजीपतियों के विरुद्ध कर दिया।

किसानों का विद्रोह—

मज़दूरों की कमी होने के कारण ज़मींदारों ने अनाज बोने के स्थान में भेड़ें रखना आरम्भ किया, क्योंकि उसमें कम मज़दूरों की आवश्यकता पड़ती थी और लाभ भी अधिक होता था। इससे खेतों पर काम करने वाले मज़दूरों का असंतोष और भी बढ़ गया। इसी समय शत वर्षीय युद्ध के लिए एक नया कर (Poll Tax) लगाया गया; इससे मज़दूरों की दशा अत्यन्त सोचनीय होने लगी, क्योंकि यह कर ग़रीब-अमीर सबको देना पड़ता था। सन् १३८१ में किसानों तथा मज़दूरों ने तंग आकर एक भयङ्कर विद्रोह खड़ा कर दिया जो "किसानों का विद्रोह" (Peasants' Revolt) के नाम से प्रसिद्ध है। उन्होंने ज़मींदारों के मकानों को जलाना तथा अदालती काग़ज़ों को नष्ट करना आरम्भ किया। बालक राजा रिचार्ड द्वितीय ने बड़ी चतुराई से विद्रोह को शान्त किया। फिर विद्रोहियों को कड़े-कड़े दण्ड दिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गये और नये नियमों के अनुसार मज़दूरों की दशा और भी गिर गई। परन्तु समय बीतने पर ज़मींदारों को अनुभव होने लगा कि मज़दूरों पर अत्याचार करने से कोई विशेष लाभ नहीं होता। ज़मींदारों ने अपनी खेती की ज़मीन ठेके (Lease) पर उठाना और स्वयं ऊन के व्यापार को उन्नति देना प्रारम्भ किया। बहुत-से खेतों में अब भेड़ों के लिए चरागाह बना दी गईं और खेती के स्थान पर ऊन का व्यवसाय ही अब देश का प्रधान उद्यम होने लगा। इसके कारण माध्यमिक इंगलैंड का ग्रामीण जीवन अब पहले से बिल्कुल भिन्न होगया। धीरे-धीरे किसानों तथा मज़दूरों की दशा सुधरती चली गई और दासता बिल्कुल लुप्त हो गई।

व्यापारिक उन्नति—

नार्मन विजय के पश्चात् देश में शान्ति स्थापित हुई, जिसके कारण देश के धनधान्य की भी वृद्धि हुई। अँग्रेज़ों का मुख्य उद्यम कृषि था और वह बराबर उन्नति करती रही। नार्मनों के आगमन से इंगलैण्ड का यूरोप के अन्य देशों के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित हुआ, जिसके कारण देश के व्यापार ने भी उन्नति की।

यहूदी—

देश में धन की बहुत कमी थी और उस समय यहूदी (Jews) ही इतने धनवान थे कि आवश्यकता पड़ने पर कृषि अथवा व्यापार के लिये ऋण दे सकें। इसी कारण नार्मन राजाओं ने यहूदियों को इंगलैण्ड में लाकर बसाया था। आवश्यकता पड़ने पर वे राजा को भी धन की सहायता देते थे और इसी कारण राजा उनकी रक्षा का प्रबन्ध करते थे। परन्तु ब्याज की दर उन्होंने इतनी बढ़ा रक्खी थी कि शीघ्र ही इंगलैण्ड निवासी उनसे घृणा करने लगे। तंग आकर एडवर्ड प्रथम ने उन्हें देश से निकाल दिया, और फिर वे ३६० वर्ष तक इंगलैंड वापिस न आ सके।

अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार—

मध्यकाल का अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार प्रारम्भ में विदेशियों ही के हाथ में था। इटली, फ्रान्स, फ़्लान्डर्स आदि देशों के व्यापारी यहाँ विदेशों से अनेक वस्तुएँ लाकर बेच जाते थे और यहाँ से ऊन तथा चमड़ा ले जाते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इंगलैंड के ऊन की माँग यूरोप के देशों में, मुख्यतः फ़्लान्डर्स में बहुत थी और इसी कारण चौदहवीं शताब्दी के मध्य से इंगलैण्ड के ज़मींदारों ने कृषि के स्थान पर भेड़ें पालना आरम्भ कर दिया था। पन्द्रहवीं शताब्दी में अँग्रेज़ी व्यापारियों ने भी विदेशों से व्यापार करना आरम्भ किया। विदेशों से व्यापार के लिये कई कम्पनियाँ खुलीं और यहाँ के व्यापारियों ने विदेशों में कई कोठियाँ तथा कारखाने भी खोले। अपने विदेशी व्यापार की रक्षा के लिये वे समुद्रों पर जहाज़ी बेड़े भी रखने लगे। इसका परिणाम यह हुआ कि धीरे-धीरे अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार विदेशियों के हाथ से निकल गया और अँग्रेज़ी व्यापारियों ही का उस पर अधिकार हुआ।

माध्यमिक काल के मेले तथा हाटें—

माध्यमिक काल में आजकल के समान व्यापारिक केन्द्र अथवा प्रसिद्ध नगर न थे। सप्ताह में एक दो बार बड़ी-बड़ी बस्तियों में मेले तथा हाटें लगा करती थीं जहाँ आकर व्यापारी अपना माल बेचते थे। वार्षिक मेलों में, जो लन्दन, विन्चेस्टर, केम्ब्रिज आदि नगरों में लगते थे, विदेशों से व्यापारी आते और यहाँ के व्यापारियों को माल बेच जाते थे। फिर अँग्रेज़ी व्यापारी इन वस्तुओं को देश के भिन्न-भिन्न भागों में ले जाकर मेलों अथवा हाटों के अवसर पर बेच देते थे।

विदेशों से आने जाने वाली वस्तुओं से राजा को कर के रूप में बहुत-सा धन मिलता था। इसी प्रकार मेले तथा हाटों में उन ज़मींदारों को भी धन मिलता था जिनके किसी नगर या बस्ती में ये मेले अथवा हाटें लगती थीं।

ऊन का व्यापार तथा नगरों की उन्नति—

हम ऊपर बतला आये हैं कि इंगलैंड में ऊन बनाने का व्यवसाय धीरे-धीरे बहुत फैल गया, परन्तु यह ऊन फ़्लान्डर्स आदि देशों को भेज दिया जाता था। एडवर्ड प्रथम, एडवर्ड तृतीय आदि राजाओं के उद्योग से दूसरे देशों को ऊन कम भेजा जाने लगा, और फ़्लान्डर्स से बहुत से कारीगरों ने आकर इंगलैंड ही में लोगों को ऊनी वस्तुएँ बनाना सिखाया। धीरे-धीरे देश के अधिकांश ऊन की खपत वहीं होने लगी। ऊनी वस्त्र अब इतने तैयार होने लगे कि इंगलैंड दूसरे देशों को भी ऊनी वस्त्र भेजने लगा। इतना ध्यान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रखना चाहिये कि उस समय छोटे-छोटे जुलाहे अपने घरों ही में चर्खों और कर्घों की सहायता से कपड़ा बनाया करते थे।

व्यापार में उन्नति होने के कारण देश में नगरों की भी संख्या बढ़ी। लन्दन तो सबसे बड़ा व्यापारिक केन्द्र था ही, परन्तु धीरे-धीरे देश में बहुत से नगर बसने लगे। उस समय के नगर वर्तमान नगरों से बहुत छोटे होते थे। राजा तथा ज़मींदार लोगों को नगर बसाने में उत्साहित करते थे, क्योंकि वहाँ मेले अथवा हाटें लगने से उन्हें कर के रूप में धन मिलता था। धीरे-धीरे नगर निवासियों ने अपने स्वामियों को कुछ धन देकर अपने-अपने नगरों को स्वतन्त्र कराना आरम्भ किया। राजा अथवा ज़मींदार, जिसकी भूमि पर वह नगर हो, नगर निवासियों को धन के बदले स्वतन्त्रता-पत्र (Charter) प्रदान करता था, और उन्हें अपने प्रतिनिधियों द्वारा अपने नगर का स्व-शासन (Self-Government) करने का अधिकार होता था। इस प्रकार इंगलैंड में "स्थानीय स्वराज्य" (Local Self-Government) की नींव पड़ी।

व्यापारिक तथा व्यवसायिक संघ—

नगरों की उन्नति के साथ-साथ व्यापारियों ने अपने व्यापारिक संघ (Merchant Guilds) स्थापित किये। इन गिल्डों का काम संगठित रूप से व्यापार सम्बन्धी बातों तथा नियमों की देखभाल करना था। शिल्पकारों से काम लेना, वस्तुओं का भाव नियत करना तथा उनके बिकवाने का प्रबन्ध करना, यह सब गिल्डों ही का काम था। गिल्ड इतने शक्तिशाली हो गये थे कि कोई नया आदमी जब तक अनुभव प्राप्त न करले तब तक कोई व्यापार या व्यवसाय पृथक् रूप से नहीं कर सकता था। धीरे-धीरे शिल्पकारों ने भी अपने संघ (Craft Guilds) स्थापित किये। इनका कार्य यह था कि पूंजीपतियों तथा शिल्पकारों के आपस के झगड़ों का निपटारा करावें तथा शिल्पकारों को संगठित रखें।

व्यापारियों का शासन पर प्रभाव—

व्यापार की उन्नति के कारण समाज में व्यापारियों का बहुत प्रभाव बढ़ गया। लन्दन तथा अन्य नगरों के व्यापारी इतने धनवान हो गये थे कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विदेशियों के स्थान में वे सब राजाओं को आर्थिक सहायता देने लगे थे इसी कारण शासन नीति पर भी उनका प्रभाव पड़ने लगा। सरकार ने भी स्वदेशी व्यवसाय को उन्नति देने के लिये बहुत से राज-नियम बनाये अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार तथा जहाज़ बनाने का व्यवसाय दिन प्रति दिन उन्नति पाता गया। हम आगे चलकर देखेंगे कि यही व्यापारी पार्लियामेण्ट में प्रवेश करके शासन सम्बन्धी कार्य में कितना भाग लेते हैं।

माध्यमिक जीवन

व्यापार तथा सभ्यता--

हम ऊपर पढ़ आये हैं कि माध्यमिक काल का व्यापार बहुत फैला हुआ नहीं था, और आस-पास भी छोटी-छोटी बस्तियों ही में थोड़ा-बहुत व्यापार होता था। आजकल की तरह इंगलैंड में उस समय बहुत बड़े-बड़े नगर नहीं थे। अधिक जन-संख्या ग्रामों ही में बसी हुई थी, क्योंकि देश का प्रधान आधार कृषि पर ही था। चौदहवीं शताब्दी में कृषि के साथ-साथ भेड़ें पालने का व्यवसाय प्रारम्भ हुआ और कच्चा ऊन फ़्लान्डर्स आदि विदेशों को जाने लगा। लोगों के रहन-सहन में भी थोड़ी बहुत उन्नति हुई और देश में भूमिपतियों के गढ़ तथा अधिक धनिक लोगों के सुन्दर भवन दिखाई देने लगे। मध्यकाल की सब से प्रसिद्ध इमारत वेस्टमिनिस्टर एबे मानी जाती है, जिसका वर्त्तमान रूप बहुत कुछ हेनरी द्वितीय का निर्धारित किया हुआ है।

शिक्षा-प्रचार तथा अँग्रेज़ी भाषा—

मध्यकाल में इंगलैंड में विश्वविद्यालयों की भी स्थापना हुई, जिनके द्वारा उच्च शिक्षा के प्रचार की नींव पड़ी। इंगलैंड का सबसे प्राचीन विश्वविद्यालय आक्सफोर्ड का है, जिसका प्रारम्भ हेनरी द्वितीय के राज्यकाल में हुआ। थोड़े ही काल पश्चात् तेरहवीं शताब्दी के आरम्भ में केम्ब्रिज विश्वविद्यालय की स्थापना हुई। परन्तु पादरियों तथा भिक्षुओं (Monks) के अतिरिक्त जन-साधारण में अभी तक शिक्षा का अभाव था और वे केवल इन विश्वविद्यालयों में पढ़ने जाते थे; बैरन तथा उच्च घराने के लोग अपने ही घरों में शिक्षा प्राप्त करने का प्रबन्ध करते थे। तेरहवीं शताब्दी के अन्त में केम्ब्रिज [illegible] हुई, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वहाँ सब श्रेणियों के लड़के पढ़ने जाने लगे। पन्द्रहवीं शताब्दी में तो समस्त देश में स्थान स्थान पर स्कूल खुलवाये गये। नार्मन राज्य दरबार में तथा उच्च श्रेणियों में अधिकतर फ्रेंच भाषा ही का ज़ोर था, और चर्च तथा धार्मिक क्षेत्र में लेटिन भाषा का प्रयोग होता था। परन्तु चौदहवीं तथा पन्द्रहवीं शताब्दी में इंगलैंड निवासियों का ध्यान अपनी अँग्रेज़ी भाषा की उन्नति की

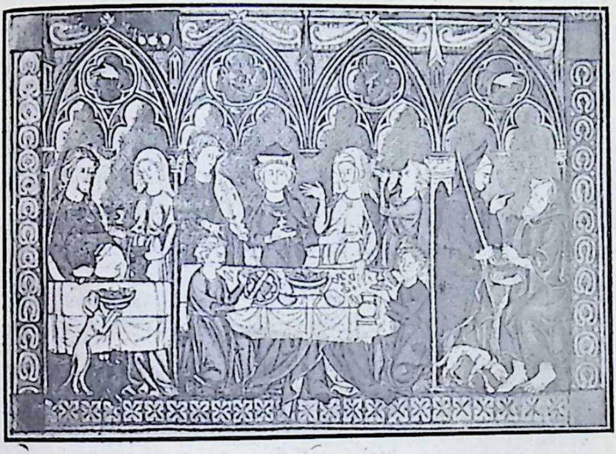

प्राचीन अँग्रेज़ी भोजनालय

ओर आकर्षित होने लगा। शतवर्षीय युद्ध के पश्चात् फ्रेंच के स्थान पर धीरे-धीरे अँग्रेज़ी भाषा का अधिकार हो गया और सब श्रेणी के लोगों ने अँग्रेज़ी भाषा को अपनी मातृ-भाषा बनाया। स्कूल और कालेजों में भी अँग्रेज़ी भाषा के द्वारा शिक्षा दी जाने लगी। अदालतों में तो सन् १३६२ से ही अँग्रेज़ी का प्रयोग होने लगा।

अँग्रेज़ी साहित्य का विकास—

उस काल में पुस्तकें सब हाथ की लिखी होती थीं और पुस्तकों का लिखना अधिकतर पादरियों तथा भिक्षुओं का कार्य था। ये पुस्तकें प्रायः देखने में बड़ी सुन्दर होती थीं और उन पर स्वर्ण तथा अनेक प्रकार के रंगों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से सजावट की जाती थी। परन्तु ये पुस्तकें केवल धनिक लोग ही मोल ले सकते थे। भाग्यवश उस समय जर्मनी में छापे की कल का आविष्कार हुआ, और विलियम केस्टन (William Caston) नामक एक अँग्रेज़ी व्यापारी छापे का काम सीख कर यूरोप से लौटा और सन् १४७६ में उसने एक छापा-खाना इंगलैंड में खोला। कुछ ही दिन बाद और भी बहुत से छापेखाने खुल गये। पुस्तकें अब अधिक संख्या में छपने लगीं और इस कारण शिक्षा का प्रचार भी दिन प्रति दिन उन्नति पाने लगा।

अँग्रेज़ी भाषा का प्रचार बढ़ने के कारण अँग्रेज़ी कवियों का भी विकास हुआ। मध्य कालीन अँग्रेज़ी साहित्य का सबसे प्रथम कवि चौसर (Chaucer) माना जाता है, जिसने चौदहवीं शताब्दी के अन्त काल में अपनी प्रसिद्ध रचना केन्टरबरी टेल्स (The Canterbury Tales) प्रकाशित की। परन्तु कला तथा साहित्य दोनों विभागों में अभी मौलिकता की कमी थी, और उस काल की अँग्रेज़ी रचनाओं में अधिकतर फ्रेंच तथा लेटिन पुस्तकों का अनुवाद मात्र ही होता था।

Exercises

1. Trace the various stages in the growth of the Parliament in the Mediaeval Period.
2. What led to the Peasant Revolt in the reign of Richard II ? What were its effects ?
3. State the evils in the Mediaeval Church, and give a brief account of Wycliffe's movement to remedy them.
4. What was the Black Death ? Point out its social and economic effects.
5. In what ways did the Parliament of the Middle Ages differ from a Modern Parliament ?
6. Write a short note on the general life and culture in England during the Mediaeval Ages.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

7. What measures did the Kings adopt to check the Barons and to increase their own powers ?
8. What was the point at issue in the controversy between Henry II and Thomas Becket ? How was the controversy settled ?
9. Describe the events leading to the grant of Magna Charta, and discuss its constitutional importance ?
10. Give a brief account of Edward I's Model Parliament and discuss its constitutional importance.
11. Form an estimate of Edward I as a Law Giver and Administrator.
12. What do you understand by the term "Feudalism" ? What changes were introduced in the system in England by William the Conqueror ? How did feudalism end in England ?
13. What do you know about the Legal Institutions of England in the Mediaeval Ages ? How did the Common Law become supreme in England ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माध्यमिक काल के शासकों की सूची

नार्मन वंश

विलियम प्रथम	सन् १०६६—१०८
विलियम रूफस	,, १०८७—११०
हेनरी प्रथम	,, ११००—११३
राजा स्टेफन	,, ११३५—११५

एंजिवन वंश

हेनरी द्वितीय	सन् ११५४—११८
रिचार्ड प्रथम	,, ११८६—११९९
राजा जान	,, ११९९—१२१६

प्लानटिजनेट वंश

हेनरी तृतीय	सन् १२१६—१२७
एडवर्ड प्रथम	,, १२७२—१३०
एडवर्ड द्वितीय	,, १३०७—१३२
एडवर्ड तृतीय	,, १३२७—१३७
रिचार्ड द्वितीय	,, १३७७—१३९९

लंकास्टर वंश

हेनरी चतुर्थ	सन् १३९९—१४१३
हेनरी पंचम	,, १४१३—१४२२
हेनरी षष्ठ	,, १४२२—१४६१

यार्क वंश

एडवर्ड चतुर्थ	सन् १४६१—१४८३
एडवर्ड पंचम	,, १४८३
रिचार्ड तृतीय	,, १४८३—१४८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Houses of York and Lancaster

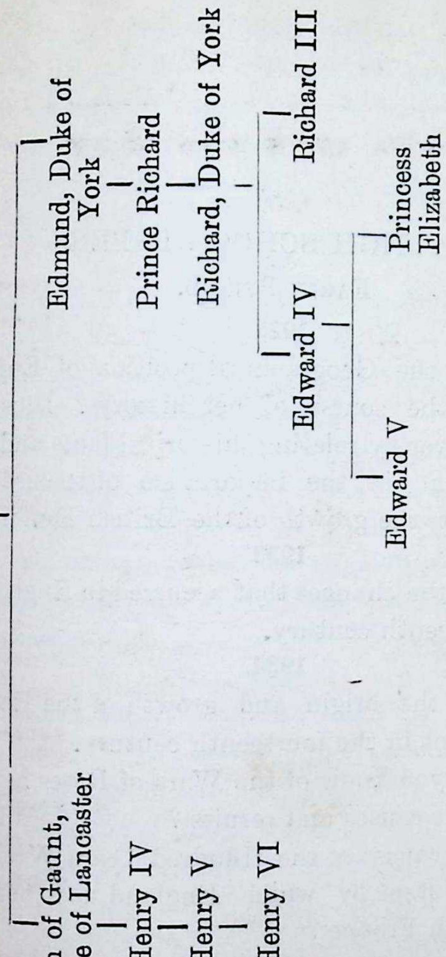

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

U. P. HIGH SCHOOL PAPERS

EARLY PERIOD.

1928.

1. How has the Geographical position of England affected the course of her history? Illustrate your answer by relating historical facts and specially point out the importance of the sea as a factor for the growth of the British Empire.

1933.

1. Describe the changes that occurred in England in the fourteenth century.

1934.

1. Describe the origin and growth of the English Parliament in the fourteenth century.
2. What do you know of the Wars of Roses? What were their causes and results?
3. State the causes of the Hundred Years War, and trace the steps by which England lost her possessions in France?

1935.

1. In what ways did the Geographical position of England influence the course of English History?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. By what measures did William the Conqueror and his successors weaken the power of Barons and strengthen their own position as kings ?
3. Write short notes on :—
Model Parliament 1295, John Wycliffe, Black Death 1348.

1936.

1. Show how the geographical situation, the climate, and the natural resources, of Great Britain have contributed in making her one of the greatest powers in the modern world.
2. Give a brief account of the reign of Edward I. Why is he regarded as one of the best kings of the Mediaeval Period ?
3. Describe the growth of the English Parliament during the thirteenth and the fourteenth centuries.

1937.

1. Give an account of the reign of William, the Conqueror, and describe the measures adopted by him to consolidate his position in England.
2. Describe the reign of King John. Why is it regarded as a landmark in English history.

1938.

1. Discuss the influence of sea in making Great Britain one of the biggest powers of the world.
2. Give a brief outline of the growth of the Parliament from the 13th to the 15th century.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. What was the Peasants' Revolt? Discuss its social and economic effects.

RAJPUTANA HIGH SCHOOL PAPERS

1935.

1. Show how the Geographical position of Great Britain has affected the history of the country.

1937.

1. Illustrate by a map the dominions of Henry II in France. How were they acquired and lost?
2. Describe the events which led to the grant of Magna Charta, and mention its main provisions.
3. Mention the chief events of the reign of Edward I.

1938

1. Give a brief account of the reign of William the Conqueror.
2. Describe the causes and the general results of the Hundred Years' War.
3. Why did the power of the Parliament increase in the reign of Henry IV?

1939.

1. How did Edward I include Wales and Scotland in the Kingdom of England?
2. What were the causes and consequences of the Wars of the Roses?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

TIME CHART OF THE EARLY PERIOD UPTO 1485 A. D.

Cen-	Dynasty	Kings	Political	Dates	Social Changes	Religious changes	Foreign Relations.
Earliest Time					Wild people living They were dark in colour They lived in caves or on trees, ate flesh, and used rough stones		
[illegible] 500 B. C.			Keltic Britons in Britain. Julius Caesar invaded England	700 B. C. 55 B. C.	They were a bit civilized, and were occupied in trade and agriculture Written history of England began	Worship of the Sun, the Moon and other gods and goddesses Human Sacrifices Driuds were their priests	
to 400 A. D.	Roman Period		Rule of the Roman Governors. Roman Wall from Tyne to Solway. Roman Armies left Britain.	 121 A. D. 410 A. D.	Roman Civilization introduced in England Roads, towns and buildings built	Christianity introduced in England	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Con-tury.	Dynasty	Lings	Political	Dates	Social Changes	Religious changes	Foregn Relations
to 1066 A. D.	Saxon Kings		Saxons, Angles etc. settle in England. Many small Saxon Kingdoms. Struggle for mastery between Saxon Kings.	449 597 700	Roman towns deserted England again uncivilized Saxons lived in villages and tilled land Village moots formed	Saxon gods worshipped Augustine came in 597 A. D. and Christianity in Kent Kingdom England again a Christian Country. Bede of Jarrow	
	English Kings	Egbert Alfred Edgar and Ethelred	First Danish Raid. Egbert overlord of England. Egbert beats Danes. Treaty between Alfred and Guthrum. First English Navy. Repeated raids of Danes. Danegeld leived.	787 827 871 to 901	Monks taught children Alfred opened schools and translated books Saxons grow idle and unprogressive	Roman Church rules adopted Many Monasteries buiit Guthrum baptized	Trade with other European Countries

	Danish Rule	Canute and his two Sons	Canute overlord of England. Peace in England.	1016 to 1042		Canute turns Christian	Canute ruled Denmark, Norway and

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

	Ethelred	Danegeld leived.				
Danish Rule	Canute and his two Sons	Canute overlord of England. Peace in England. English Barons. Earl Godwin great.	1016 to 1042		Canute turns Christian	Canute ruled Denmark, Norway and England
English Kings Rule	Edward, the Con-fessor Harold	Many Normans in England William of Nor-mandy invaded England Battle of Hastings and Harold killed	1042 1066	Westminister Abbey built		
Norman Kings	William, the Con-queror. William II	William I over-lord of England. Fendal System in-troduced in Eng-land Oath of Salisbury Domesday Book. Great Council. High and improper taxes Castles built to overawe Saxons	1066 to 1087	French language and Culture in England Many English people made serfs.	Church Courts Separate	Relation with France through Nor-mandy

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Century.	Dynasty.	Kings.	Political.	Dates.	Social Changes.	Religious changes.	Foreign Relations.
		Henry I	Henry married Saxon Princess. Charter of Liberties. Curia Regis. Travelling Judges.	1100 to 1135	The English people treated kindly	Aunselm appointed Archbishop. Bishops to do homage to the king for their Lands	Robert on the First Crusade. War with Robert. Normandy under Henry
		Stephen	Civil War.	1135 to 1154	Many new castles built by Barons		
1154 to 1216	Angeven Kings.	Henry II	Castles of the Barons demolished, order restored. Scoutage tax introduced. Judges sent round again.	1154 to 1189		Attempt to bring clergy under civil law. Becket murdered, and Church courts left free	Seven provinces of France under Henry. King of Scotland pays homage to Henry. Henry overlord of Ireland
		Richard I		1189 to 1199			Richard on Crusade
		John	Magna Charta. Barons, War.	1199 to 1216		Stephen Langton Archbishop. John, Pope's Vassal	War between John and the King of France
							All French provinces except ...

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

				1216		John, Pope's Vassal	King of France
							All French provinces except Gascony lost
1216 to 1399	Plantagenet Kings.	Henry III	Baron's War. Simon's Parliament	1216 to 1272			
		Edward I	Conquest of Wales. Model Parliament. Statue of Mortmain.	1272 to 1307	Land Acts— Westminster II : Westminster III. Jews expelled		Congest of wales Scotland overrun
		Edward II		1307 to 1327			Battle of Bannockburn and independence of Scotland
		Edward III	Power of Parliament increased due to wars with France	1327 to 1377	Black Death. Statutes of Labourers. Wages rise. Sheep farms increase and lands enclosed Woolen trade	Foreigners not to be appointed bishops in England.	Hundred Years' War begins Battles of Crecy and Poitiers Calais taken by the English
		Richard II	Peasant's Revolt. Richard deposed.	1377 to 1399	English in Law Courts Chaucer's Canterbury Tales	John Wycliffe preached against the Pope and the clergy. Bible translated.	Loss of French possessions

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Century.	Dynasty.	Kings.	Political.	Dates.	Social Changes.	Religious changes.	Foreign Relations.
1399 to 1461	Lancater Dynasty.	Henry IV	Parliament chose Henry their King. Parliament grows stronger.	1399 to 1413	Villienage nearly disappeared	Lollards burnt alive	
		Henry V		1413 to 1422			Victory of Agincourt. Half France taken.
		Henry VI	Wars of the Roses begin. Duke of York killed at Wakefield.	1422 to 1461			Joan of Arc. saves Orleans. Loss of French possessions except Calais
1461 to 1485	York Dynasty.	Edward IV	Lancasterian party totally defeated. Edward nearly absolute. Act of Attainder and the execution of the king's opponents. Execution of Henry VI and his son	1461 to 1483	Caxton's Printing Press	Church falling from its high ideals	
		Edward V	Edward V and his younger brother murdered	1883			

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

V	younger brother murdered
Richard III	Revolt against Richard III. Battle of Bosworth. Wars of Roses end. Henry Tudor made King.

Brij Nath Pandey
Class - IXth

Central Hindu School
Benaras
1948

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Century.	Dynasty.	Kings.	Political.	Dates.	Social Changes.	Religious changes.	Foreign Relations.
1399 to 1461	Lancater Dynasty.	Henry IV	Parliament chose Henry their King. Parliament grows stronger.	1399 to 1413	Villienage nearly disappeared	Lollards burnt alive	
		Henry V		1413 to 1422			Victory of Agincourt. Half France taken.
		Henry VI	Wars of the Roses begin Duke of York killed at Wakefield.	1422 to 1461			Joan of Arc saves Orleans. Loss of French possessions except Calais
1461 to 1485	York Dynasty.	Edward IV	Lancasterian party totally defeated. Edward nearly absolute. Act of Attainder and the execution of the king's opponents Execution of Henry VI and his son	1461 to 1483	Caxton's Printing Press	Church falling from its high ideals	
		Edward V	Edward V and his younger brother murdered	1883			
		Richard	Revolt againt				

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

V	younger brother murdered
Richard III	Revolt against Richard III. Battle of Bosworth. Wars of Roses end. Henry Tudor made King.

Brij Nath Pandey
Class - Xth
Central Hindu School
Benares
7968

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

This book is belong to—
Mr. Ram ji Prasad
Private candidates
of class IX th Meston
High school Ramnagar
Benares State
Date 11/8/45

ट्यूडर काल

(१४८५—१६०३)

Ram ji Prasad.

Ram ji Prasad.
clas[s?] IX th

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्यारहवाँ परिच्छेद

आधुनिक काल का आरम्भ

(ट्यूडर काल की विशेषतायें)

आधुनिक इंगलैंड—

यूरोप के अन्य देशों की भाँति पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त से इंगलैंड भी माध्यमिक काल से निकल कर आधुनिक काल में प्रवेश करता है। इंगलैंड में इस नये परिवर्तन के साथ ही ट्यूडर राज्य की स्थापना होती है। इस समय से जीवन के प्रत्येक विभाग में नवीनता दिखाई पड़ने लगी, और इंगलैंड में एक नये ढंग की उन्नति आरंभ हुई। मध्यकालीन सभ्यता का युग समाप्त हुआ और अब देश में नवीन सभ्यता के लक्षण दिखाई देने लगे।

राजकीय शक्ति—

ट्यूडर काल के पूर्व इंगलैंड में बैरनों ने उपद्रव मचा रक्खे थे और राज्य-प्रबन्ध में भी उनका बहुत कुछ प्रभाव था। परन्तु इस समय के आरंभ से बैरनों की शक्ति का अन्त होता है, और राजाओं को इच्छानुसार शासन करने का अवसर मिल जाता है। इस समय से राजाओं की शक्ति बढ़ने लगी, और बैरनों ने जो क्रान्ति कर रक्खी थी उसके स्थान पर एक प्रबल शासन की स्थापना हुई, जिसके द्वारा देश में शान्ति की स्थापना होने लगी।

राष्ट्रीयता का विकास—

ट्यूडर काल ही से देश में शान्ति स्थापित होने के कारण लोगों का ध्यान राजनैतिक विषयों की ओर आकर्षित हुआ, जिससे देश में राष्ट्रीयता के भाव जाग्रत होने लगे। इसी समय यूरोप में भी राष्ट्रीय राज्यों का जन्म हुआ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और प्रत्येक देश में अपनी ही भाषा, तथा अपनी ही जातीय सभ्यता इत्यादि को अपनाने की लहर चलने लगी। माध्यमिक इंगलैंड में फ्रान्सीसी भाषा तथा सभ्यता का बहुत ज़ोर था, परन्तु आधुनिक काल के आरंभ से, राष्ट्रीय भावों के कारण इंगलैंड निवासी भी अपने ही देश की भाषा तथा सभ्यता को उन्नति देने में गौरव समझने लगे।

अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति—

इसी समय में इंगलैंड यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त करता है। अब से अँग्रेज़ी राजाओं ने फ्रान्स में खोई हुई अपनी भूमि को पुनः प्राप्त करने के विचार को व्यर्थ समझा, और अब उन्होंने इंगलैंड के विकास के लिये यूरोप के अन्य क्षेत्रों तथा भूमण्डल के दूसरे प्रदेशों की ओर ध्यान देना आरंभ किया। इंगलैंड के शक्ति-शाली होने पर यूरोप के अन्य देश भी उसका मान करने लगे तथा उसकी सहायता के इच्छुक रहने लगे। इसी समय से इंगलैंड ने "समान-शक्ति" (Balance of Power) के सिद्धान्त का प्रचार किया, जिसके कारण इंगलैंड किसी यूरोपीय राष्ट्र की इतनी शक्ति नहीं बढ़ने देता जिससे दूसरे देशों को भय रहने लगे।

विद्या की उन्नति—

पन्द्रहवीं शताब्दी में केवल इंगलैंड ही में नहीं, प्रत्युत समस्त यूरोप में विद्या की बड़ी हीन दशा थी; परन्तु ट्यूडर काल से यूरोप में नये विचारों की जाग्रति हुई, जिससे विद्या तथा साहित्य का पुनरुद्धार (Renaissance) हुआ। यूरोप के यूनानी तथा रोमन विद्वानों ने, जिनको तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया (Constantinople) से निकाल भगाया था, समस्त यूरोप में फैल कर विद्या का प्रचार किया। इसी समय छापे की कल तथा गोला-बारूद जैसे महत्त्वपूर्ण आविष्कार हुए, जिनके कारण नवीन सभ्यता की उन्नति में बहुत सहायता मिली। इंगलैंड में सबसे पहले छापे की कल केक्सटन (Caxton) ने सन् १४७४ में खोली थी। इसके कारण इंगलैंड में विद्या ने बड़ी उन्नति की और आक्सफ़ोर्ड तथा केम्ब्रिज के विश्वविद्यालय विद्या के केन्द्र हो गये। इस काल का सबसे प्रसिद्ध विद्वान सर टामस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूर हुआ है, जिसने अपने प्रबल लेखों द्वारा जनता का ध्यान देश-सुधार की ओर आकर्षित किया। विद्या ही के प्रचार के कारण धर्म-सुधार (Reformation) का विकास हुआ, जिसका विस्तार-पूर्वक उल्लेख आगे किया जायगा।

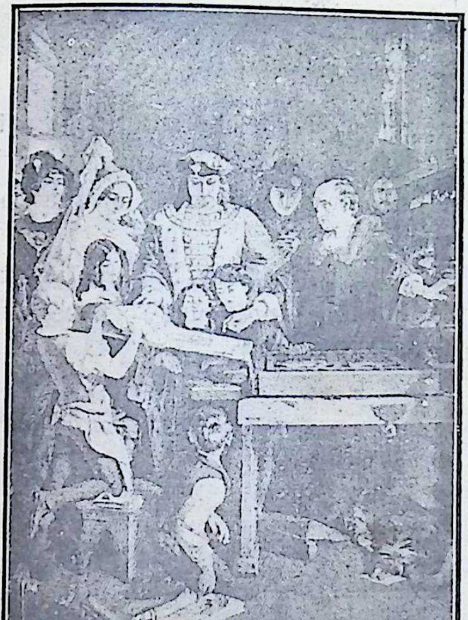

केक्सटन के छापे की कल

नये देशों की खोज—

इसी समय कुतुबनुमा का आविष्कार हुआ, जिससे लोगों को बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राएँ करने का साहस हुआ। कोलम्बस द्वारा अमेरिका का पता लगाने के कारण यूरोप का व्यापारिक केन्द्र रूमसागर से उठ कर ऐटलाण्टिक महासागर में आगया, जिससे इंगलैंड ने बहुत लाभ उठाया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी समय वास्कोडिगामा ने उत्तमाशान्तरीप (Cape of Good Hope) हो कर भारतवर्ष का समुद्री मार्ग खोज निकाला, जिसके परिणाम स्वरूप यूरोप-निवासियों का भारत के साथ व्यापार प्रारम्भ हुआ। इसी व्यापार द्वारा आगे चलकर इंगलैण्ड को भारतवर्ष में अपना साम्राज्य स्थापित करने का अवसर मिला।

Exercises

1. What were the chief characteristics introduced with the commencement of the Tudor Period? What was their general effect on the conditions in the country?
2. How far are we justified in treating the year 1485 as the breaking point between mediæval and modern England?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Edward III

House of Lancaster (Red Rose)	House of York (White Rose)
John of Gaunt, Duke of Lancaster	Edmund, Duke of York
John Beaufort, Earl of Somerset	Richard, Earl of Cambridge
John Beaufort, Duke of Somerset	Richard, Duke of York
Margaret Beaufort, married Edmund Tudor, Earl of Richmond	Edward IV
Henry VII	Elizabeth of York

Henry VII married Elizabeth of York (Union of the Roses)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारहवाँ परिच्छेद

हेनरी सप्तम

(निरंकुश शासन की स्थापना)

सन् १४८५	हेनरी सप्तम का राज्याभिषेक
,, १४८७	स्टार चेम्बर अदालत
,, १४६२	पार्किन वारवेक का षड्यन्त्र
,, १५०२	मारग्रेट का विवाह
,, १५०६	हेनरी सप्तम की मृत्यु

ट्यूडर वंश के राज्य की स्थापना—

ऊपर बतलाया जा चुका है कि सन् १४५५ से १४८५ तक इंगलैंड के दो राजवंश, लंकास्टर तथा यार्क, राजसिंहासन के लिये परस्पर युद्ध करते रहे। इन युद्धों में इंगलैंड के सभी बैरनों ने भाग लिया था और देश में अराजकता-सी फैली हुई थी। ये बैरन जो किसी समय प्रजा के अधिकारों की रक्षा करते थे अब स्वयं अपने सशस्त्र सेवकों को लेकर इधर उधर लूट-मार करने लगे थे। वास्तव में उस समय ऐसे शासक की आवश्यकता थी जो अपने प्रबल शासन द्वारा बैरनों का दमन कर देश में शान्ति स्थापित कर सके। भाग्यवश हेनरी ट्यूडर एक ऐसा व्यक्ति भी मिल गया जिसने शत्रुओं को पराजित कर गुलाबों के युद्ध को समाप्त किया। इस प्रकार सन् १४८५ में बासवर्थ के मैदान में हेनरी ट्यूडर हेनरी सप्तम के नाम से इंगलैंड का राजा स्वीकार किया गया और अब इंगलैंड में ट्यूडर वंश के राज्य की स्थापना हुई और साथ ही शान्ति भी स्थापित हुई जो पांच शासकों के राज्य-काल तक रही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेनरी सप्तम का राज्याधिकार—

कहा जाता है कि मारग्रेट का पुत्र होने के कारण हेनरी राजसिंहासन का अधिकारी था। मारग्रेट लंकास्टर वंश की अन्तिम सन्तान थी। परन्तु जितना अधिकार हेनरी का था उतना ही यार्क वंश की अन्तिम संतान होने के कारण एडवर्ड चतुर्थ की पुत्री एलिज़बेथ का भी था। हेनरी ने

हेनरी सप्तम

पाही थे जिन्हें वे
सिपाही प्रजा पर मन एलि रके इस अधिकार के प्रश्न को समाप्त किया। एडवर्ड
विरुद्ध कोई अभियो चतु Warwick) नामक एक भतीजा भी इस समय
लाते थे। जी के भय से हेनरी ने उसे टावर में बन्द कर दिया।
हेनरी ने इसव या के अनुसार युद्ध में विजयी होने वाला राजसिंहासन
(Statute of M जाता था। हेनरी ने बासवर्थ (Bosworth)
अ०—६ ार्ड तृतीय को मृत्यु के घाट उतार कर सिंहासन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राप्त किया था। अतः विजयी होने के कारण भी वही सिंहासन का अधिकारी हुआ।

(3) प्राचीन काल से कुछ ऐसी प्रथा चली आ रही थी कि सिंहासन के उत्तराधिकार के लिये जब कभी झगड़ा होता था, तब राजा होने के लिए चर्च तथा विटान (Witan) सभा की स्वीकृति की भी आवश्यकता पड़ती थी। परन्तु पन्द्रहवीं शताब्दी में चर्च के शक्तिहीन हो जाने के कारण यह अधिकार पार्लियामेण्ट को प्राप्त हुआ। पार्लियामेण्ट ने भी हेनरी को राजा स्वीकार कर लिया, और यही उसका सबसे बड़ा अधिकार था। इसके अतिरिक्त जब हेनरी का यार्क वंश की राजकुमारी एलिज़बेथ से विवाह हो गया तो पार्लियामेण्ट ने उसे तथा उसकी सन्तान को भविष्य के लिए अपना शासक स्वीकार कर लिया। हेनरी की यह इच्छा थी कि यार्क तथा लंकास्टर दोनों वंश के समर्थक उसको अपना वास्तविक राजा समझें। इसी लिए पहले तो उसने एलिज़बेथ से विवाह किया और उसने अपने राजचिह्न में दोनों वंशों के चिह्नों, अर्थात् लाल तथा सफ़ेद गुलाबों, को मिला लिया। ऐसा करने से हेनरी का यह उद्देश्य था कि देश में शान्ति स्थापित हो और जनता गुलाबों के युद्ध के अशान्ति काल को भूल जाय, क्योंकि राजसिंहासन दृढ़ करने के लिए शान्ति की अत्यन्त आवश्यकता थी।

हेनरी के विरुद्ध षडयन्त्र—

इतना उद्योग करने पर भी यार्क वंश वाले सन्तुष्ट न हुए। उन्होंने हेनरी को सिंहासन से हटाने के लिये कई षड्यन्त्र रचे और उसके विरुद्ध दो भूँठे दावेदार खड़े किये गये। पहले उन्होंने लेम्बर्ट सिमनल (Lambert
Simnel) नामक एक चौदह वर्ष के छोटे व में यह प्रका दमन कर देश में
किया कि वह एडवर्ड चतुर्थ का भतीजा अर्ल (Ed व्यक्ति भी मिल गया
Warwick) है और लन्दन के जेल से भा। फिर या। इस प्रकार
आयरलैंड के डबलिन नगर का राजा घोषित आक्रमण क सम के नाम से
दिया और लंकाशायर प्रान्त में आ धमके। छ अशान्ति डर वंश के राज्य
फैली, परन्तु लोगों को शान्त करने के लिए अर्ल आफ़ पांच शासकों के
वारविक को तुरन्त ही टावर में से निकाला दिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिणाम यह हुआ कि सिमनल का धोखा सबको प्रकट हो गया। हेनरी ने इस उपद्रव को शीघ्र ही सन् १४८७ में शान्त किया और सिमनल को बालक समझ कर शाही रसोईघर में रख लिया।

कुछ दिनों बाद सन् १४९२ में यार्क दल वालों ने परकिन वारबेक (Perkin Warbeck) नामक एक दूसरा झूँठा दावेदार खड़ा किया। इसको एडवर्ड चतुर्थ का छोटा पुत्र बतलाया गया और इसके विषय में यह प्रसिद्ध किया कि वह किसी प्रकार रिचार्ड तृतीय के चंगुल से भाग निकला था। वारबेक को फ्रान्स तथा आयरलैंड दोनों देशों से पर्याप्त सहायता मिली और वह एक छोटी-सी सेना लेकर इंगलैंड आ पहुँचा, परन्तु उसे वहाँ कोई सहायता न मिली। अन्त में सन् १४९७ में हेनरी ने उसे सुगमता पूर्वक परास्त कर बन्दीगृह पहुँचवा दिया। कुछ दिन पश्चात् बन्दीगृह में परकिन तथा अर्ल आफ़ वारविक ने षड्यन्त्र किया और बन्दीगृह से भाग जाने का प्रयत्न किया। यह भेद तुरन्त खुल गया और हेनरी ने दोनों को मृत्यु के घाट उतारा। इसके पश्चात् हेनरी के विरुद्ध इस प्रकार का फिर कोई उपद्रव न हुआ और अब वह शान्ति-पूर्वक राज्य करने लगा।

बैरनों का दमन—

हेनरी योग्य शासक था। उसकी प्रबल इच्छा थी कि ट्यूडर वंश की नींव दृढ़ की जाय। इसके लिए देश में पूर्ण शान्ति का होना परम आवश्यक था। वह भली भाँति समझता था कि देश में अशान्ति का मूल कारण बैरन ही हैं। इन लोगों ने देश में बड़ा उपद्रव मचा रक्खा था। उन्होंने अपने अपने महलों की क़िले-बन्दी कर रक्खी थी। प्रत्येक के पास काफ़ी सिपाही थे जिन्हें वे अपने वंशीय-चिह्न की फ़ौजी वर्दी पहनाते थे। ये सिपाही प्रजा पर मनमाना अत्याचार करते और जब कभी अदालतों में उनके विरुद्ध कोई अभियोग चलता, तो उनके स्वामी अपना ज़ोर दिखाकर उन्हें छुड़ा लाते थे।

हेनरी ने इसका दमन करने के लिए कई उपाय निकाले। एक नियम (Statute of Maintenance and Livery) के अनुसार यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निश्चित किया गया कि बैरन अपने अपने यहाँ नियमित संख्या से अधिक सेवक न रक्खें और न अदालतों में उनके पक्ष में पैरवी करें। इसी नियम के अनुसार बैरनों के सेवक विशेष प्रकार की वर्दियाँ नहीं पहन सकते थे। इन नियमों का पालन पूर्णतया किया गया और जो बैरन इन नियमों का पालन नहीं करते थे उन पर भारी जुर्माने किये जाते थे। अब बैरन लोग सेवकों द्वारा प्रजा पर अत्याचार अथवा राजा के विरुद्ध विद्रोह नहीं कर सकते थे; और न वे अब अपने सेवकों को राजदण्ड ही से बचा सकते थे।

इसके अतिरिक्त हेनरी ने एक विशेष प्रकार का न्यायालय भी स्थापित किया। इस न्यायालय का नाम "कोर्ट आफ़ स्टार चैम्बर" (Court of Star Chamber) था। इस न्यायालय का यह नाम इसलिए पड़ा कि उसके भवन की छत में सितारों की सजावट थी। राजा ने इसमें उच्च कोटि के ऐसे न्यायाधीश नियुक्त किये, जिन्हें न तो बैरनों से किसी प्रकार का भय था और न जो उनसे कोई सम्बन्ध रखते थे। इस न्यायालय के न्यायाधीश राजा की प्रीवी काउंसिल के मुख्य-मुख्य सदस्य तथा दो जज हुआ करते थे। साधारण अदालतों में बैरनों के मुक़दमों का न्याय ठीक-ठीक नहीं हो सकता था। बहुत से बैरन तथा कुलीन–वंशीय सरदारों के मुक़दमे देश के नियमों के अनुसार इन अदालतों में हो ही नहीं सकते थे और न वे लोग इन अदालतों की सत्ता को मानने के लिए ही तैयार थे। यदि कोई ऐसा प्रसंग भी पड़ जाय तो वे न्यायाधीशों को डाट-डपट भी सकते थे। इस न्यायालय द्वारा बैरनों को कड़े-कड़े दण्ड दिये गये, जिससे शीघ्र ही उनकी रही-सही शक्ति का अन्त हो गया। इसी समय गोले-बारूद का भी आविष्कार हुआ था। राजा के अतिरिक्त कोई बड़े से बड़ा बैरन भी इसका उपयोग न कर सकता था। इससे ट्यूडर राजाओं को अपनी शक्ति बढ़ाने में पर्याप्त सहायता मिली। अब भारी-भारी शस्त्रधारी तथा तीरंदाज़ों का समय गया; यदि कोई बैरन विद्रोह करता तो उसकी गढ़ी (Castle) को तुरन्त तोपों से उड़ा दिया जा सकता था।

धन-उपार्जन—

हेनरी की आरम्भ ही से बड़ी इच्छा थी कि राजा-शक्ति को बढ़ा कर निरं-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुश शासन स्थापित किया जाय। माध्यमिक काल में पार्लियामेण्ट ने यह अधिकार प्राप्त कर लिया था कि बिना उसकी स्वीकृति के राजा प्रजा से कोई नया कर वसूल नहीं कर सकता था। परन्तु वह धन के लिए पार्लियामेण्ट का मुँह ताकना नहीं चाहता था। अतः उसने धन एकत्र करने के कई उपाय निकाल लिये। न्यायाधीश अधिकतर अपराधियों को जुर्माने का ही दण्ड देने लगे। स्टार चेम्बर द्वारा भी भारी-भारी जुर्माने वसूल किये गये। विद्रोहियों की धन-सम्पत्ति ज़ब्त करने से भी राजकोष में धन की बहुत वृद्धि हुई। इस कार्य में हेनरी को अपने दो मंत्रियों एम्पसन (Empson) तथा डडले (Dudley)से बहुत सहायता मिली। उसके एक और मंत्री कार्डीनल मार्टन ने धन संग्रह करने की एक नई युक्ति (Morton's Fork) निकाली, जिसके अनुसार ग़रीब तथा अमीर सबको राजकोष की सहायता के लिए बाध्य होना पड़ा। जो धनाढ्य थे उनसे कहा गया कि राजा को धन की सहायता देना तुम्हारा कर्त्तव्य है। जो ग़रीब थे उनसे कहा गया कि तुम्हारे ढंग से प्रतीत होता है कि तुमने बहुत धन बचाया होगा, अतः तुम्हें राजकोष के लिये अवश्य कुछ देना चाहिये। सन् १४६२ में फ्रान्स से युद्ध करने के लिये प्रजा से भेंट (Benevolence) के रूप में बहुत-सा धन वसूल किया, और फिर फ्रान्स के राजा चार्ल्स अष्टम से एक भारी रक़म इसलिये वसूल की कि वह बिना युद्ध किये अपने देश को लौट आया। इस प्रकार हेनरी ने अपने उत्तराधिकारियों के लिये ४५ लाख पाउण्ड छोड़ा, जो उस काल में एक बड़ी भारी रक़म समझी जाती थी। अतएव धन स्वीकृति के लिए पार्लियामेण्ट बुलाने की हेनरी को बहुत कम आवश्यकता हुई। अतः पार्लियामेण्ट के सदस्यों को आपस में मिलने तथा अपनी शक्ति बढ़ाने का बहुत कम अवसर मिल सका।

विदेशी नीति तथा वैवाहिक सम्बन्ध—

हेनरी की इच्छा थी कि विदेशी राज्यों से इंगलैंड का मित्रतापूर्ण व्यवहार रहे और विदेशों में इंगलैंड का मान बढ़ जाय। इससे उसे कई लाभ जान पड़े। प्रथम यह कि उससे विद्रोहियों को विदेशों से किसी प्रकार की सहायता न मिल सकेगी। द्वितीय उसके राजवंश की स्थिति दृढ़ हो जायगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तृतीय विदेशों से व्यापारिक लाभ होगा। पहले तो उसने फ्रान्स में खोये हुए अँग्रेज़ी सूबों को पुनः प्राप्त करने के अभिप्राय से फ्रान्स के राजा से युद्ध छेड़ दिया और अपनी सेनायें फ्रान्स भी ले गया। परन्तु शीघ्र ही उसको प्रतीत होने लगा कि इस प्रयत्न में हानि के अतिरिक्त लाभ की कोई आशा नहीं है। उधर फ्रान्स के राजा की इच्छा इटली पर आक्रमण करने की थी, अतः उसने हेनरी को डेढ़ लाख पाउण्ड इसलिये दिये कि वह युद्ध न करे और इंगलैंड वापस चला जाय। फ्रान्स के राजा से इटेपिल्स (Etaples) नामक स्थान पर सन्धि इस प्रकार हुई और दोनों देशों में मित्रता होगई।

हेनरी की विदेशी नीति का एक यह भी उद्देश्य था कि विदेशों के साथ इंगलैंड के व्यापार की खूब उन्नति हो। इस आशय से हेनरी ने आष्ट्रिया के सम्राट् मेक्सीमिलियन (Maximilian) से सन् १४९६ में सन्धि की, जिसके अनुसार इंगलैंड, हालैंड तथा फ़्लांडर्स (Flanders) में व्यापारिक सम्बन्ध स्थापित हो गया। फ़्लांडर्स वाले इस सन्धि को उत्कृष्ट संधि (Magnus Intercursus) कहते थे, क्योंकि उससे दोनों देशों के व्यापार में खूब उन्नति हुई। इंगलैंड का कच्चा ऊन फ़्लांडर्स भेजा जाने लगा और वहाँ से बढ़िया ऊनी कपड़ा इंगलैंड आने लगा।

हेनरी ने विदेशी राज्यों में इंगलैंड का महत्त्व बढ़ाने और उनसे मित्रता करने की एक और नयी विधि निकाली। उसने अपने पुत्र-पुत्रियों का विवाह देशान्तर के राजवंशों में करना प्रारम्भ किया। उसने अपने बड़े पुत्र आर्थर का विवाह स्पेन की राजकुमारी कैथरीन (Catherine) से किया क्योंकि स्पेन एक तो संगठित और बलवान राज्य था और दूसरे इस विवाह में हेनरी को दहेज़ में एक बहुत बड़ी रक़म मिली। परन्तु दुर्भाग्य से कुछ दिनों बाद आर्थर का देहान्त हो गया। यह सोच कर कि कहीं स्पेन जैसे प्रबल राज्य से सम्बन्ध विच्छेद न हो जाये, हेनरी ने कैथरीन का विवाह अपने दूसरे पुत्र से कर दिया जो आगे चल कर हेनरी अष्टम के नाम से इंगलैंड का राजा हुआ। ईसाई-धर्म की दृष्टि से ऐसा विवाह विधिविहित था; इसलिये हेनरी को इस विवाह के लिये पोप से विशेष आज्ञा मांगनी पड़ी। दूसरा महत्त्वपूर्ण विवाह हेनरी की पुत्री मारग्रेट (Margaret) का स्काटलैंड के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा जेम्स चतुर्थ से हुआ। इसी विवाह द्वारा इंगलैंड तथा स्काटलैंड में मित्र-भाव का बीज बोया गया, जिसके कारण आगे चलकर दोनों देश एक संयुक्त राज्य में परिणत हुए।

आयरिश नीति—

हेनरी ने आयरलैंड पर भी अपना अधिकार दृढ़ करने की चेष्टा की। माध्यमिक काल में इंगलैंड के राजा हेनरी द्वितीय ने आयरलैंड के कुछ भाग पर अपना अधिकार जमा लिया था और उसने "आयरलैंड के स्वामी" (Lord of Ireland) की उपाधि भी ग्रहण की थी। परन्तु बहुत काल तक अँग्रेज़ी राजाओं का अधिकार केवल पूर्वी तट पर थोड़े-से भाग (English Pale) में माना जाता था और द्वीप का अन्य भाग वास्तव में पूर्णतया स्वतंत्र था। अब हेनरी सप्तम ने आयरलैंड को दबाने का एक उत्तम उपाय निकाला। उसने एक अँग्रेज़ी लार्ड, जिसका नाम पाइनिंग (Earl of Poyning) था, आयरलैंड में अपना प्रतिनिधि बना कर भेजा। पायनिंग ने दबाव डालकर आयरलैंड की पार्लियामेण्ट को एक नियम (Poyning's Law) पास करने पर बाध्य किया, जिसका यह आशय था कि आयरलैंड को प्रत्येक नियम के लिए अँग्रेज़ी सरकार की स्वीकृति प्राप्त करनी होगी, भविष्य में बिना राजा की आज्ञा के आयरिश पार्लियामेण्ट का कोई अधिवेशन नहीं होगा, और इंगलैंड के सब राज-नियम आयरलैंड पर भी लागू होंगे। इसका यह प्रभाव पड़ा कि आयरलैंड की पार्लियामेण्ट की स्वतन्त्रता का अन्त हुआ, और वह नियम बनाने के कार्य में अँग्रेज़ी सरकार के अधीन हो गई। यह नियम बहुत काल तक बना रहा, और इसके द्वारा अँग्रेज़ी राजा आयरलैंड पर मनमाने अत्याचार करते रहे।

व्यापारिक उन्नति—

हेनरी की शासन-नीति का एक ध्येय यह भी था कि देश के व्यापार की खूब उन्नति हो। इस अभिप्राय से उसने अपना बहुत-सा धन जहाज़ बनवाने में व्यय कर दिया, क्योंकि वह यह भली भांति जानता था कि विदेशों से व्यापार के लिये एक प्रबल जहाज़ी बेड़े की आवश्यकता है। ये जहाज़ सैनिकों तथा शस्त्रों से भी सुसज्जित रखे जाते थे, ताकि समय पड़ने पर वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समुद्री डाकुओं से जहाज़ों की रक्षा कर सकें और साथ ही इंगलैंड के समुद्री किनारों की भी रक्षा करते रहें।

व्यापार को ही उन्नति देने के अभिप्राय से उसने विदेशों से संधियाँ भी कीं। फ्लांडर्स तथा हालैंड से संधि करने का अभिप्राय केवल यही था कि इंगलैंड का ऊन विदेशों में जाकर बिके। उसने फ्लांडर्स से बहुत-से कारीगरों को भी इंगलैंड आकर बसने के लिये बुलवाया, ताकि वे अँग्रेज़ों को कपड़ा बुनना सिखावें। महामारी के पश्चात् जब मज़दूरों की कमी हो गयी तो जमींदारों ने भेड़ें पालना आरम्भ कर दिया था। अब मज़दूर लोग जो खेतों पर काम करते थे बेकार हो गये। उनमें से बहुत-सों ने बाध्य होकर ऊन का कातना तथा कपड़ा बुनना सीखा। इसका परिणाम यह निकला कि ग्रामों में इतना ऊनी कपड़ा तैयार होने लगा कि फ्लांडर्स तथा हालैंड से ऊनी कपड़ा मँगाने के स्थान में उलटा इंगलैंड से वहां जाकर बिकने लगा। इस प्रकार हेनरी सप्तम के उद्योग से देश के व्यापार ने खूब उन्नति पाई।

समुद्र-यात्राएँ—

हेनरी सप्तम के राज्य-काल में कई प्रसिद्ध समुद्र-यात्राएँ भी हुईं। इसी समय कुतुबनुमा का आविष्कार हुआ जिसके कारण नाविक-विद्या में बड़ी उन्नति हुई। भारतवर्ष, चीन, अरब आदि पूर्वी देशों से बहुत-सी वस्तुएँ यूरोप बिकने के लिये आया करती थीं; परन्तु जब सन् १४५३ में कुस्तुनतुनिया पर तुर्कों का अधिकार हो गया, तो उन्होंने यूरोप निवासियों के लिये पुराने व्यापारिक मार्गों को बन्द कर दिया। इस कारण दूसरा मार्ग ढूँढ़ निकालने के लिये कितने ही साहसी लोग यत्न करने लगे। कुतुबनुमा के आविष्कार के कारण यूरोप के नाविक बे-खटके समुद्रों में घूमने लगे और उन्होंने जल-मार्गों का तलाश करना आरम्भ किया। इसी काल में यूरोप के प्रसिद्ध नाविक कोलम्बस (Columbus) तथा वासको-डि-गामा (Vasco de Gama) ने यूरोपीय जातियों के लिए उपनिवेश तथा व्यापार के नये द्वार खोले। कोलम्बस ने वेस्ट इन्डीज़ (West Indies) तथा अमेरिका का पता लगाया, और वास्को-डि-गामा ने अफ्रीका का चक्कर लगा कर, भारतवर्ष के लिए समुद्री मार्ग खोज निकाला। हेनरी सप्तम ने भी इस व्यापारिक तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

औपनिवेशिक उन्नति में भाग लेने का प्रयत्न किया, और उसने भी जान कैबट (John Cabot) नामक एक इटेलियन को आज्ञा-पत्र प्रदान किया, जिसका यह आशय था कि जिन नये प्रदेशों में कैबेट के जहाज़ पहुँचें वहाँ अँग्रेज़ी झंडा गाड़ कर इंगलैंड के राजा के नाम से अधिकार जमा लिया जाय। कैबेट ने सन् १४६७ में उत्तरी अमेरीका की यात्रा की और उसके पूर्वी तट पर लेब्रेडर

कोलम्बस अमेरिका में

(Labrador) तथा न्यूफाउंडलैंड (Newfoundland) का पता लगाया और हेनरी सप्तम के नाम से उन पर अधिकार किया। लौटने पर हेनरी ने कैबेट को दस पाउण्ड इनाम के रूप में दिये। इस प्रकार उत्तरी अमेरिका में अँग्रेज़ी उपनिवेशों की नींव पड़ी और साथ ही साथ इंगलैंड यूरोप वालों के लिये व्यापारिक केन्द्र भी बन गया।

हेनरी सप्तम के राज्य-काल का महत्त्व—

हेनरी महान् के राज्य-काल में माध्यमिक काल के दोषों का निवारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ और आधुनिक काल के प्रसिद्ध लक्षणों की नींव पड़ी। इसीलिए उसके राज्यकाल को अँग्रेज़ी इतिहास के माध्यमिक तथा आधुनिक काल की सीमा माना जाता है। उसके राज्याभिषेक के समय से गुलाबों के युद्ध के काल की गड़बड़ी समाप्त हुई, और उसकी बुद्धिमानी के नियमों तथा उपायों द्वारा बैरनों की बढ़ी-चढ़ी शक्ति का अन्त हुआ। बैरनों द्वारा जो अराजकता देश में फैली हुई थी, उससे देशवासी तंग आ गये थे। इसलिए प्रजा ने शान्ति-स्थापन नीति का हार्दिक स्वागत किया। हेनरी ने पार्लियामेण्ट को भली भाँति मुट्ठी में किया और इस प्रकार ट्यूडर निरंकुश शासन के लिए रास्ता साफ़ किया।

इसके अतिरिक्त हेनरी के राज्य-काल में इंगलैंड की भावी राष्ट्रनीति का रूप निर्णय हुआ, जिसके द्वारा इंगलैंड की प्रधानता यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ी, और फ्रान्स तथा स्पेन जैसे शक्तिशाली देश इंगलैंड से मित्रता करने के इच्छुक रहने लगे। इसी काल में समुद्रयात्रा तथा व्यापार की उन्नति होने के कारण अँग्रेज़ों की आर्थिक दशा सुधरने लगी, और इंगलैंड का विदेशी व्यापार बढ़ने लगा। इसी के साथ-साथ विद्या की भी उन्नति आरम्भ होने के कारण देश में एक नये प्रकार की जागृति दिखाई पड़ने लगी जिसका विस्तृत वर्णन अगले परिच्छेद में किया जायगा।

Exercises

1. Discuss the claims of Henry VII to the throne of England.
2. What measures did Henry VII take to overcome the difficulties with which he was confronted?
3. How did Henry VII establish a strong monarchy in England and how far was he successful in this attempt?
4. Describe the foreign policy of Henry VII and estimate its importance.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेरहवाँ परिच्छेद

हेनरी अष्टम

सन् १५०९	हेनरी अष्टम का राज्याभिषेक
,, १५१३	फ़्लाडन का युद्ध
,, १५२९	वूल्ज़े का पतन
,, १५३३	एनिबोलिन से विवाह
,, १५३५	Act of Supremacy
,, १५३६—३८	मठों का नाश
,, १५३९	Statute of six Articles.
,, १५४२	सोलवे मास का युद्ध
,, १५४७	हेनरी अष्टम की मृत्यु

हेनरी का चरित्र--

हेनरी सप्तम की मृत्यु के पश्चात् सन् १५०९ में हेनरी अष्टम केवल १४ वर्ष की आयु में इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठा। वह डील-डौल का इतना सुन्दर था कि सचमुच राजा जान पड़ता था। उसे खेल-कूद और शिकार का बड़ा शौक़ था। हास्य-प्रिय होने के कारण वह शीघ्र ही प्रजा का प्रेम-पात्र बन गया। वह बुद्धिमान तथा विद्वान् था और विद्वानों का आदर करता था। वह फ्रेंच, लेटिन और स्पेनिश भाषा भली प्रकार समझता था। हेनरी सप्तम जितना कंजूस था, उतना ही वह फ़िज़ूलखर्च था। उसने अपने ठाट-बाट में राजकोष का बहुत-सा धन नष्ट कर दिया था। वह बड़ा स्वार्थी, कृतघ्न तथा निर्दयी था। केवल जनता को प्रसन्न करने के लिये उसने अपने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पिता के विश्वासपात्र तथा राजभक्त मंत्री एम्पसन और डडले का, जिन्होंने प्रजा को कष्ट देकर राजकोष के लिये बहुत-सा धन संग्रह किया था, वध करवा डाला। परन्तु यह सब दोष होते हुए भी हेनरी अष्टम एक योग्य राजनीतिज्ञ हुआ, उसकी लोकप्रियता में कभी कोई विशेष कमी न पड़ी।

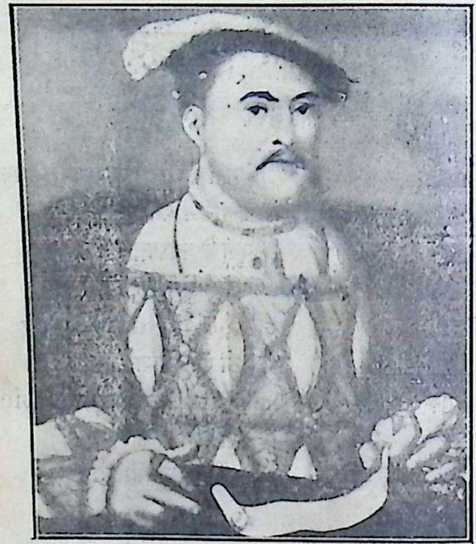

हेनरी अष्टम

स्काटलैंड तथा फ्रान्स से युद्ध—

हेनरी के सिंहासन पर बैठने के समय फ्रान्स और स्पेन आपस में लड़ रहे थे। ऐसी अवस्था में यह जोशीला नवयुवक अपने पिता की भाँति चुपचाप बैठा न रह कर यूरोप के रणक्षेत्र में कूद पड़ा, और फ्रान्स में खोये हुए अँग्रेज़ी सूबों को पुनः प्राप्त करने के लिए उससे युद्ध छेड़ दिया। इस कार्य में हेनरी ने स्पेन और आस्ट्रिया से भी सहायता प्राप्त की।

सन् १५१३ में हेनरी ने फ्रांसीसियों को गेनगेट के पास लड़ाई में परास्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया। फ्रांसीसी सेना जान बचाने के लिये घोड़ों पर ऐड़ (Spurs) लगा कर इस बुरी तरह से भागी कि यह युद्ध ऐड़ों का युद्ध (Battle of Spurs) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। इसी वर्ष स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ ने फ्रांस का पक्ष लेकर इंगलैंड पर चढ़ाई कर दी, और फ़्लोडिन फ़ील्ड (Flodden Field) के मैदान में युद्ध हुआ, जिसमें स्काटिश सेना परास्त हुई और जेम्स चतुर्थ मारा गया। परन्तु शीघ्र ही स्पेन तथा फ्रांस में सन्धि हो जाने के कारण हेनरी भी फ्रान्स तथा स्काटलैंड से सन्धि करके इन युद्धों से अलग हो गया, और उसने अपनी छोटी बहन मेरी (Mary) का विवाह फ्रान्स के राजा लुई द्वादश के साथ कर दिया। इन युद्धों का केवल यह परिणाम हुआ कि इंगलैंड की प्रतिष्ठा यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में फिर से बढ़ गई, और फ्रान्स और स्पेन जैसे शक्तिशाली राज्य इंगलैंड की मित्रता के इच्छुक रहने लगे।

समान शक्ति—

शीघ्र ही फ्रांस और स्पेन के बूढ़े राजाओं की मृत्यु हुई और उनके स्थान पर दोनों देशों में नवयुवक राज-सिंहासनारूढ़ हुए, और दोनों में युद्ध की तैयारी होने लगी। दोनों राजे हेनरी को अपने अपने पक्ष में लेना चाहते थे। ऐसी अवस्था देखकर हेनरी के मन्त्री वूल्ज़े (Wolsey) ने सलाह दी कि कभी इस देश की सहायता की जावे और कभी उसकी, जिससे इन देशों की शक्ति सीमा से अधिक न बढ़ने पावे। इस प्रकार वूल्ज़े ने यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में एक नई नीति का सञ्चालन किया, जिसे "समान शक्ति" (Balance of Power) कहते हैं।

प्रथम, सन् १५२० में फ्रान्स का राजा हेनरी से केले (Calais) के समीप भेंट करने आया। हेनरी तथा फ्रान्स के राजा की भेंट ऐसे ठाठ-बाट से एक विशाल मण्डप में हुई कि जिस स्थान पर वह मिले वहाँ इतना धन फूँका गया था कि वह स्थान "स्वर्ण-वस्त्र की भूमि" (Field of Cloth of Gold) के नाम से प्रसिद्ध हो गया। वहाँ दोनों राजाओं ने मित्रता की शपथ ली। परन्तु यह शपथ मित्रता से रहित थी। वूल्ज़े की सम्मति मान कर हेनरी एक ही [illegible] विरुद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युद्ध छेड़ दिया। यह युद्ध कई वर्षों तक चलता रहा, परन्तु इसका कोई विशेष परिणाम न निकला। स्पेन के राजा चार्ल्स की शक्ति बराबर बढ़ती चली गई और उसकी शक्ति अधिक बढ़ते देख कर हेनरी ने उसका पक्ष छोड़ दिया और फ्रान्स के राजा से सन्धि कर ली। परन्तु इस सन्धि का भी कोई परिणाम नहीं निकला। अन्ततः कोई लाभ न देखकर इंगलैंड ने यूरोप के युद्धों में भाग लेना छोड़ दिया।

इन युद्धों में इंगलैंड का बहुत धन व्यय हुआ और कभी-कभी प्रजा से भी बलपूर्वक धन वसूल करने की आवश्यकता हुई। इन सबका दोष वूल्ज़े पर आया और वह देश में बदनाम भी बहुत हुआ, क्योंकि देश को इन युद्धों का कोई विशेष लाभ प्रतीत न होता था। परन्तु सत्य तो यह है कि इस "समान-शक्ति-नीति" (Balance of Power) ही के कारण इंगलैंड का यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में प्रवेश हुआ और उसकी गणना यूरोप के मुख्य राज्यों में होने लगी।

कार्डीनल वूल्ज़े—

ट्यूडर काल में टामस वूल्ज़े इंगलैंड का बड़ा भारी राजनीतिज्ञ हुआ है। वह इप्सविच (Ipswich) नगर के एक व्यापारी का पुत्र था। उसने केवल १५ वर्ष की अवस्था में बी० ए० की उपाधि प्राप्त करके हेनरी सप्तम के दरबार में प्रवेश किया और अपनी योग्यता के कारण वह दिन प्रति दिन उन्नति करता गया। हेनरी अष्टम के समय में वह धार्मिक तथा राजनैतिक दोनों क्षेत्रों के सर्वोत्तम पदों पर सुशोभित हुआ। वह लार्ड चांसलर (Lord Chancellor) के पद पर नियुक्त किया गया और रोम के पोप की ओर से इंगलैंड का कार्डीनल (Cardinal) तथा पोप का प्रतिनिधि बनाया गया। उसकी कांक्षा बढ़ती चली जाती थी और वह पोप बनने का इच्छुक था।

वूल्ज़े पहला राजनीतिज्ञ था जिसने यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में इंगलैंड की प्रतिष्ठा बढ़ाई, और "समान शक्ति" के नये सिद्धान्त का प्रचार किया। वह पक्का स्वामि-भक्त था। उसने राजसत्ता बढ़ाने में भी हेनरी की पूरी सहायता की। वह ... उसके नेतृत्व में इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्यायालय की शक्ति और भी बढ़ गई, जिससे उसने बैरनों की रही-सही शक्ति को भी समूल नष्ट कर दिया। वूल्ज़े ग़रीबों का सच्चा हितैषी था, उसने उनके हितार्थ बहुत-से काम किये। वह विद्या-प्रेमी था, उसने विद्या प्रचार के लिये बहुत-से स्कूल खुलवाये और आक्सफ़ोर्ड में एक कालेज स्थापित किया, जो आगे चलकर क्राइस्ट चर्च (Christ Church) कालेज के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह राजकीय जीवन व्यतीत करता था और बड़े ठाट-बाट से रहता था। देश के बड़े बड़े बैरन उसकी चापलूसी करते थे, परन्तु मन ही मन वे उससे डाह रखते और उसके पतन के इच्छुक रहते थे। फ्रान्सीसी युद्धों के लिये वूल्ज़े ने बड़ी कठोरता से प्रजा से धन वसूल किया। इस कारण वह जनता का भी अप्रिय हो गया।

वूल्ज़े का पतन— Down fall of Wolsey

कुछ ही दिनों बाद एक ऐसी घटना हुई जिससे वूल्ज़े के पतन का अवसर आ पहुँचा। हेनरी ने अपनी रानी कैथरीन (Catherine) का परित्याग करना चाहा, और उसके लिये रोम के पोप से आज्ञा माँगी। पोप ने इस प्रश्न की जाँच करने के लिये अपने एक प्रतिनिधि और वूल्ज़े को नियुक्त किया। कुछ दिनों पश्चात् पोप ने आज्ञा दी कि यह जाँच रोम में होगी, अतएव उसने अपने प्रतिनिधि को वापस बुला लिया। हेनरी की इस निराशा का सारा क्रोध वूल्ज़े पर उतरा। वूल्ज़े सब पदों से हटा दिया गया, वह केवल यार्क का पादरी रह गया। शीघ्र ही राजद्रोह का अपराध लगाकर हेनरी ने उसे लन्दन के न्यायालय में उपस्थित होने की आज्ञा दी। लन्दन जाते समय वह बीमार होगया और लीस्टर के गिर्जे में इस योग्य राजनीतिज्ञ ने सन् १५३० में परलोक-यात्रा की। अपने ऐसे स्वामि-भक्त सेवक को इस प्रकार कष्ट देकर हेनरी ने यह सिद्ध कर दिया कि वह कितना निर्दयी था और उसका क्रोध किस सीमा तक पहुँच सकता था।

नई जागृति तथा विद्या की उन्नति—

यूरोप के इतिहास में सोलहवीं शताब्दी भिन्न-भिन्न प्रकार की उन्नति तथा जागृति का काल है। हम ऊपर बतला चुके हैं कि पन्द्रहवीं शताब्दी के अन्त में विद्या का पुनरुद्धार (Renaissance) हुआ, जिसके द्वारा जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वल्टूँ का पतन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के प्रत्येक विभाग में एक नई जागृति की लहर उठने लगी। कुस्तुनतुनिया पर जब तुर्कों का अधिकार हो गया तो यूनानी विद्वान अपने हस्तलिखित ग्रन्थ लेकर यूरोप के अन्य देशों में आश्रय प्राप्त करने के लिये चले गये। लोगों ने इनकी पुस्तकों को बड़े चाव से पढ़ना आरम्भ किया और शीघ्र ही समस्त यूरोप में ज्ञान का प्रचार होने लगा। स्थान-स्थान पर यूनानी भाषा सीखने के लिये स्कूल खोले गये। ठीक इसी समय छापे की कल के आविष्कार के कारण पुस्तकें पर्याप्त संख्या में छपने लगीं और सर्वसाधारण के हाथों तक पहुँचने लगीं। यूनानी भाषा सिखाने के स्कूल इंगलैंड में भी खोले गये और वे ग्रामर स्कूल्स (Grammar Schools) के नाम से प्रसिद्ध हुए, क्योंकि उनमें पढ़ाई के मुख्य विषय यूनानी भाषा तथा उसका व्याकरण होते थे। स्कूलों के अतिरिक्त स्थान-स्थान पर पुस्तकालय भी खोले गये, जिनमें सबसे प्रसिद्ध आक्सफोर्ड का बोडलियन पुस्तकालय (Bodleian Library) था।

इंगलैंड के प्रसिद्ध विद्वान्—

उस काल में इंगलैंड में भी यूनानी भाषा के कई प्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं; उनमें से प्रथम स्थान टामस लिनेकर (Thomas Linacre) को दिया जाता है। उसने इटेली जाकर यूनानी विद्या का अध्ययन किया था। देश में बड़े-बड़े विद्वान उससे यूनानी सीखते थे, और हेनरी सप्तम ने भी उसे अपने बालकों का शिक्षक नियुक्त किया था। वह उच्च-कोटि का चिकित्सक भी था और चिकित्सकों के एक कालेज की भी उसने नींव डाली थी। इरैसमस (Erasmus), डीन कालेट (Dean Colet), तथा सर टामस मूर, इंगलैंड के तीनों प्रसिद्ध विद्वान् लिनेकर के ही शिष्य थे। इरैसमस डच जाति का था, और इंगलैंड आने पर आक्सफोर्ड को उसने अपना निवास-स्थान बनाया। कुछ दिन पश्चात् वह केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में यूनानी भाषा पढ़ाने लगा। उसने कई पुस्तकें रची हैं, परन्तु उसकी सबसे प्रसिद्ध रचना बाइबिल के "नये नियम" (New Testament) का ग्रीक भाषा से लेटिन भाषा में अनुवाद करना है। उसने एक पुस्तक द्वारा पादरियों के अज्ञान और ढकोसलों को जनता के सम्मुख प्रकट कर दिया और इस प्रकार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain, Digitization by eGangotri

लोगों को धर्म-सुधार की आवश्यकता बतलाई। इरेसमस का दूसरा प्रसिद्ध शिष्य कालेट था। उसने सेंटपाल नाम की एक पाठशाला खोली जिसमें ग्रीक तथा लेटिन भाषाएँ पढ़ाई जाती थीं और जहाँ याद न करने पर बालकों पर मार नहीं पड़ती थी। उसकी यह चेष्टा थी कि शिक्षा-पद्धति ऐसी हो जिससे स्वयं बालकों को विद्या पढ़ने का चाव बढ़े। इरेसमस का तीसरा प्रसिद्ध शिष्य सर टामस मूर था। यह अपनी योग्यता के कारण हेनरी अष्टम का लार्ड चांसलर कुछ काल के लिये बनाया गया। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक यूटोपिया (Utopia) द्वारा चर्च तथा शासन के दोष जनता पर प्रकाशित कर दिये। हेनरी का वह परम मित्र था; परन्तु जब उसने राजा को चर्च का अधिष्ठाता स्वीकार करने से इन्कार किया तो वह भी राजा की क्रोधाग्नि का शिकार बना।

विद्या की उन्नति का प्रभाव—

इसकी लहर के कारण नये-नये आविष्कार निकाले गये, और बहुत-से प्राचीन विचारों तथा विश्वासों में भी बहुत कुछ परिवर्तन होने लगा। मध्य काल में राजनैतिक, धार्मिक तथा सामाजिक क्षेत्र में बहुत-से अन्ध-विश्वास फैले हुए थे, परन्तु विद्योन्नति की लहर के सामने इनका ठहरना असम्भव हो गया। अब धीरे-धीरे जनता की आँखें खुलनी आरम्भ हुईं, और उसका ध्यान छान-बीन की ओर आकर्षित हुआ।

चर्च की त्रुटियाँ—

नई जागृति का सबसे बड़ा प्रभाव धार्मिक विचारों पर पड़ा। प्राचीन काल से यूरोप के ईसाई-देश, रोम के पोप को ईसाई-धर्म का मुखिया मानते थे, और वह पृथ्वी पर मसीह का प्रतिनिधि समझा जाता था। सब ईसाई-देशों के पादरी पोप ही के अधीन होते थे और धर्म सम्बन्धी विषयों में उसी की आज्ञा मानी जाती थी। पन्द्रहवीं शताब्दी तक तो लोगों के अन्ध-विश्वास के कारण यह प्रबन्ध ठीक चलता रहा, परन्तु अब जागृति की लहर के कारण लोगों ने स्वयं बाईबिल पढ़ना आरम्भ किया और अब इन्हें पोप तथा अन्य पादरियों के आचार में बहुत से दोष दिखाई देने लगे। अब लोग यह समझने लगे कि पोप ने जो रुपया ठगने की अनेक युक्तियाँ निकाल रक्खी हैं, वे सर्वथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुचित हैं। इसके कारण लोगों को पोप के कोप के लिये धर्म-कर भेजना अखरने लगा और वे यह समझ गये कि उनसे जो रुपया चूसा जाता है वह सब पोप के दरबार में सांसारिक भोग-विलास की सामग्री एकत्र करने में व्यय होता है। यह देखकर लोगों की पोप के प्रति श्रद्धा भी कम होने लगी, और अब वे उसको धार्मिक अधिष्ठाता मानने को तैयार न रहे। प्रचलित ईसाई-धर्म में अन्य संशोधनों की भी आवश्यकता दिखाई पड़ने लगी, और अब यह स्पष्ट रूप से प्रतीत होने लगा कि चर्च के दोषों को सुधारने के लिये शीघ्र ही एक बहुत बड़ा धार्मिक आन्दोलन होगा।

मार्टिन लूथर का प्रचार

ईसाई-धर्म के संशोधन का आन्दोलन जर्मनी के विद्वान पादरी

मार्टिन लूथर

मार्टिन लूथर (Martin Luther) द्वारा आरम्भ हुआ। लूथर ने अ॰

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पोप के सर्वाधिकार का विरोध किया और प्रचलित धर्म की त्रुटियाँ लोगों के सामने रख दीं। लूथर का कहना था कि बाइबिल के अनुसार पोप को मसीह का प्रतिनिधि मानना सर्वदा निर्मूल है, और प्रत्येक व्यक्ति बाइबिल पढ़ने तथा उसका स्वतन्त्र अर्थ लगाने का पूर्ण अधिकार रखता है। उसने बड़ी बुद्धिमत्ता से समझाया कि लोगों को पोप और पादरियों के ढकोसलों में नहीं फँसना चाहिये। पोप ने अप्रसन्न होकर लूथर को ईसाई-धर्म से पतित कर दिया; और पोप की ही आज्ञा से जर्मनी के सम्राट् चार्ल्स पंचम ने उसे देश-निकाले की आज्ञा भी दे दी। लूथर ने देश छोड़ने के स्थान में अपने आपको एक वर्ष तक छिपाये रखा और इस बीच में उसने बाइबिल का अनुवाद जर्मन भाषा में कर लिया। धीरे-धीरे लूथर के पक्षपातियों की संख्या बढ़ने लगी, और इस प्रकार यूरोप में चर्च के संशोधन के लिये एक बहुत बड़ा आन्दोलन उठ खड़ा हुआ जो धर्म-सुधार (Reformation) के नाम से प्रसिद्ध है। अन्त में सम्राट् चार्ल्स ने भी लूथर के पक्षपातियों को अपने मत का जर्मनी में प्रचार करने की आज्ञा दे दी।

धर्म-सुधार की लहर--

धर्म-सुधार (Reformation) के आन्दोलन ने शीघ्र ही बहुत बड़ा रूप धारण कर लिया, और यह लहर धीरे-धीरे यूरोप के भिन्न-भिन्न भागों में फैलने लगी। धर्म-सुधार के समर्थक प्रोटेस्टेण्ट (Protestants) नाम से प्रसिद्ध हुए। अँग्रेज़ी भाषा में "प्रोटेस्ट" (Protest) शब्द का अर्थ है विरोध करना और नये सम्प्रदाय वालों का यह नाम इसलिये पड़ा कि वे प्रचलित धार्मिक विश्वासों तथा रीतियों का विरोध करते थे। इसके अतिरिक्त जो लोग अब भी रोम के पोप की अधीनता में बने रहे वे रोमन केथलिक (Roman Catholics) कहलाये। यूरोप में जर्मनी तथा अन्य उत्तरी देशों ने नये प्रोटेस्टेण्ट मत को ग्रहण किया; परन्तु इटली, फ्रांस तथा स्पेन रोमन केथलिक ही बने रहे।

यूरोप के इन दो धार्मिक सम्प्रदायों में बँट जाने के कारण महाद्वीप की प्राचीन धार्मिक एकता का अन्त हुआ। आगे चलकर इन दोनों सम्प्रदायों में धर्म के नाम पर बहुत झगड़े हुए और सैकड़ों वर्ष तक रक्त की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नदियाँ बहती रहीं। यूरोप के इन सब धार्मिक बखेड़ों का आरम्भ धर्म-सुधार के काल ही से समझना चाहिये।

धर्म-सुधार के अन्य प्रचारक--

जिस प्रकार लूथर ने जर्मनी में धर्म-सुधार का झण्डा उठाया था; उसी तरह इस काल में कई और प्रसिद्ध धर्म-सुधारक भी हुए, जिन्होंने अन्य देशों में धर्म-सुधार का प्रचार किया। इनमें सबसे मुख्य नाम जान कालविन (John Calvin) का है, जो स्विटज़रलैंड (Switzerland) के जेनेवा (Geneva) नामक नगर का निवासी था। उसने फ्रांस के कुछ भाग में धर्म-सुधार फैलाया। वहाँ ह्यूगिनाट्स (Huguenots) नामक एक शक्तिशाली दल बन गया, जिसने फ्रांस के राजाओं का विरोध होते हुए भी नये प्रोटेस्टेएट धर्म को अपनाया।

कालविन के एक शिष्य जान नाक्स (John Knox) ने स्काटलैंड में धर्म-सुधार का आन्दोलन आरम्भ किया। यहाँ भी फ्रांस की भाँति राजा तथा दरबारियों ने धर्म-सुधार का विरोध किया; परन्तु जनता ने नाक्स के प्रचार का स्वागत किया और नये धर्म को ग्रहण किया। नाक्स ही के अनुरोध से स्काटलैंड के प्रेसबीटिरियन चर्च (Presbyterian Church) की स्थापना हुई। आगे चलकर हम देखेंगे कि कुछ काल पश्चात् यही स्काटलैंड वालों का जातीय चर्च बना।

इंगलैंड में धर्म सुधार की तैयारियाँ--

महाद्वीप के निकट होने के कारण इंगलैंड धर्म-सुधार के आन्दोलन से वंचित नहीं रह सकता था। वास्तव में इंगलैंड में तो धर्म-सुधार की तैयारियाँ चौदहवीं शताब्दी से ही हो रही थीं। उस शताब्दी में जान विकलिफ ने इंगलैंड में प्रचलित धर्म तथा पोप और पादरियों के विरुद्ध एक आन्दोलन खड़ा किया था। वह आन्दोलन तो शीघ्र दमन कर दिया गया, परन्तु धर्म-सुधार के लिये भीतर ही भीतर आग सुलगती रही। प्रजा नहीं चाहती थी कि हमारा देश पोप की अधीनता में रहे और उसे वार्षिक कर भेजा जाय। चर्च के बड़े-बड़े पदों पर विदेशियों का नियुक्त होना भी उसकी आँखों में खटकता था। इसके रोमन चर्च के सिद्धान्तों में भी संदेह होने लगा, क्योंकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय के पादरीजन अपना जीवन आलस्य तथा विलासता में व्यतीत कर रहे थे।

कैथरीन के परित्याग का प्रश्न

इंगलैंड में धर्म-सुधार का प्रचार तथा पोप से झगड़ा एक विशेष प्रश्न से आरम्भ हुआ। इंगलैंड का राजा हेनरी अष्टम पहले तो पोप का पूरा पक्षपाती था और उसने लूथर के आन्दोलन के विरुद्ध एक पुस्तक प्रकाशित की थी जिससे पोप ने प्रसन्न होकर उसे "धर्म-रक्षक" (Defender of Faith) की उपाधि दी। परन्तु फिर अपनी स्त्री कैथरीन के परित्याग के प्रश्न

ऐनबोलीन

पर उसका पोप से झगड़ा प्रारम्भ हुआ। कैथरीन के कोई पुत्र न होने के कारण हेनरी बहुत दिनों से चिन्तित और दुखी था कि उसका राज-वंश किस प्रकार चलेगा। इसी बीच में वह अपने दरबार की ऐनबोलीन (Anne Boleyn) नामक एक सुन्दरी पर मोहित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो गया और उससे विवाह करने का इच्छुक हुआ। किन्तु कैथरीन के परित्याग के बिना उसकी यह अभिलाषा पूरी नहीं हो सकती थी, क्योंकि ईसाई-धर्म के अनुसार प्रत्येक पुरुष को एक समय में एक ही स्त्री रखने की आज्ञा है। हम ऊपर लिख आये हैं कि उसने कैथरीन के परित्याग के लिए पोप की आज्ञा माँगी थी और इस आज्ञा के न मिलने के संबंध में उसके परम मित्र वूल्ज़े का पतन हुआ।

पोप की प्रधानता का अन्त

वूल्ज़े के पतन के पश्चात् हेनरी ने सर टामस क्रामवैल (Sir Thomas Cromwell) को अपना एक मन्त्री बनाया और उसकी सलाह से पार्लियामेएट बुलाई जिसने कई ऐसे नियम बनाये कि जिनसे इंगलैंड में पोप का प्रभाव बिल्कुल नष्ट हो गया। इनमें से तीन नियम मुख्य हैं। पहला नियम (Act of Annates) था जिसके अनुसार पोप के लिए इंगलैंड से किसी प्रकार का धर्म-कर नहीं भेजा जा सकता था। दूसरा नियम (Act of Appeals) के नाम से बनाया गया जिसके द्वारा यह निश्चित हुआ कि इंगलैंड की कोई धार्मिक अपील देश से बाहर फ़ैसिल होने के लिए न भेजी जाय। इस नियम से लाभ उठा कर हेनरी ने पोप के स्थान पर इंगलैंड में ही केन्टरबरी के बड़े पादरी क्रेनमर (Cranmer) से कैथरीन के परित्याग के लिये व्यवस्था प्राप्त करली और तुरन्त ही ऐनबोलिन से विवाह कर डाला। इस पर पोप ने यह घोषणा की कि क्रेनमर को ऐसी व्यवस्था प्रदान करने का कोई अधिकार नहीं है। इसके जवाब में सन् १५३५ में हेनरी ने तीसरा नियम (Act of Supremacy) पास कराया जिसके अनुसार पोप को अँग्रेज़ी चर्च पर कोई अधिकार नहीं रहा, और स्वयं राजा अथवा रानी ही चर्च के मुख्य अधिष्ठाता होने लगे। राज्य के बड़े-बड़े कर्मचारियों को इस नियम के स्वीकार करने की शपथ लेनी पड़ी। जिन्होंने ऐसा नहीं किया उनको प्राण-दण्ड दिया गया; यहाँ तक कि उस समय का बड़ा भारी विद्वान् सर टामस मूर (Sir Thomas More) भी राजा की क्रोधाग्नि में पड़े बिना न रहा। धार्मिक न्यायालय भी तोड़ दिये गये और चर्च तथा पादरियों के झगड़ों का भी निर्णय राजकीय अदालतों में होने लगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हम ऊपर बतला आये हैं कि सर टामस मोर उस काल का सबसे प्रसिद्ध विद्वान तथा राजनीतिज्ञ था। उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक यूटोपिया (Utopia) लिखकर जनता का ध्यान इस ओर आकर्षित किया कि देश के हित के लिये आदर्श शासन-पद्धति का क्या रूप हो सकता है। सन् १५२६ में वूल्ज़े के पतन के पश्चात् वह कुछ

1535 मृत्यु
टामस मोर

काल के लिये राजा का प्रधान मन्त्री (Lord High Chancellor) बनाया गया। एक्ट-आफ़-सुप्रीमेसी पास होने पर उसने राजा हेनरी अष्टम को चर्च का मुख्य अधिष्ठाता स्वीकार न किया। केवल इसी अपराध पर उस पर राज-विद्रोह का अभियोग लगा कर राजा ने उसे सन् १५३५ में प्राण-दण्ड दिलवा दिया।

मठों का नाश—

चर्च का अधिष्ठाता होने पर हेनरी ने देश के मठों की जाँच कराना आरंभ किया। इन मठों का प्राचीन काल में बड़ा मान था, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनमें त्यागी स्त्री-पुरुष रहते थे। ये लोग अपना समस्त जीवन ईश्वर-आराधना और परोपकार में व्यतीत करते थे। इन मठों द्वारा शिक्षा-प्रचार होता था और दीन-दुखियों की सहायता भी की जाती थी। परन्तु समय बीतने पर मठों में कई प्रकार के दोष आ गये थे और वे व्यसन और व्यभिचार के अड्डे बन गये थे। हेनरी ने पहले तो छोटे मठों को नष्ट किया, फिर बड़े मठों पर हाथ साफ़ किया और उनकी सब भूमि तथा सम्पत्ति छीन कर बहुत-सी तो अपने मित्रों को बाँट दी और जो शेष रही वह बेच दी। इसके कारण लोगों में कुछ सनसनी फैली और इंगलैंड के उत्तर में "धर्मयात्रा" (Pilgrimage of Grace) नामक एक आन्दोलन भी हुआ, जो शीघ्र ही शान्त कर दिया गया। इस प्रकार जो धन वसूल हुआ, उसका अधिकांश भाग राजा ने अपने आमोद-प्रमोद में व्यय किया, परन्तु इस अभिप्राय से कि जनता में असन्तोष न फैले उसने थोड़ी बहुत रक़म सार्वजनिक कार्यों में भी लगा दी। थोड़े बहुत गिर्जाघर, अस्पताल और स्कूल स्थापित किये गये, और कुछ रक़म जंगी जहाज़ और क़िले बनवाने में खर्च की गई। किसी-किसी मठ के भिक्षुओं को पेंशन भी दी गई।

मठों के दमन के कई महत्त्वपूर्ण परिणाम निकले। वास्तव में राजा का तो केवल यही अभिप्राय था कि मठों की धन-सम्पत्ति छीनकर उससे राजकोष की उन्नति की जाय, परन्तु उसका एक परिणाम यह भी निकला कि इंगलैंड में पोप के अनुयायियों का संगठन नष्ट हो गया। जिन्होंने मठों की जायदादें खरीदी थीं वे सदैव के लिये नये धर्म-सुधार के पक्षपाती हो गये, क्योंकि वे इस बात को कदापि पसन्द न कर सकते थे कि देश में फिर से पोप की प्रधानता स्थापित हो और उनकी जायदादें ज़ब्त हो जावें।

हेनरी के धार्मिक विचार—

हेनरी ने अँग्रेज़ी चर्च में और भी कई सुधार किये। उनमें सबसे महत्त्वपूर्ण सुधार यह था कि बाइबिल का लैटिन भाषा से अँग्रेज़ी भाषा में अनुवाद कराया, और पादरियों को यह आज्ञा दी कि लोगों को ईसाई-धर्म के सिद्धान्त अँग्रेज़ी भाषा में समझायें। इससे हेनरी का यह आशय था कि जनता समझ जाय कि ईसाइयों की धर्म-पुस्तक में पोप के अधीन रहने का कहीं उल्लेख

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं है। परन्तु पोप से सम्बन्ध त्याग के अतिरिक्त हेनरी प्राचीन धर्म में और अधिक संशोधन करने के लिये तैयार न था, क्योंकि वह वास्तव में प्राचीन धर्म-सिद्धान्तों ही का अनुयायी था। सन् १५३९ में उसने छः सिद्धान्तों का नियम (Statute of 6 Articles) पार्लियामेण्ट से पास कराया, जिसके अनुसार यह निश्चित् किया गया कि मूल धार्मिक सिद्धान्त यथावत् बने रहें और उनमें लेशमात्र भी परिवर्त्तन न हो। राजा की धार्मिक नीति ने प्रोटेस्टेन्टों तथा कैथलिकों दोनों को असन्तुष्ट किया, क्योंकि नवीन धर्म के अनुयायी प्राचीन धर्म-सिद्धान्तों का पालन करने को तैयार नहीं थे, और कैथलिक मत वाले पोप के अतिरिक्त अन्य किसी को धर्म का अधिष्ठाता नहीं मान सकते थे।

हेनरी के राज्य-काल के अन्तिम दिन—

यहाँ हेनरी के राज्य-काल के अन्तिम दिनों की कुछ विशेष घटनाओं का उल्लेख कर देना आवश्यक जान पड़ता है। इंगलैंड का रोम से सम्बन्ध विच्छेद कर देने के कारण पोप ने हेनरी को धर्म-बहिष्कृत कर इंगलैंड के राजसिंहासन से भी पदच्युत कर देने की घोषणा की और इस कार्य के लिये सब कैथलिक शासकों से सहायता माँगी। पोप का इशारा पाकर स्काटलैंड तथा फ्रान्स के शासकों ने इंगलैंड पर आक्रमण किया। पहले इंगलैंड की उत्तरी सीमा पर स्काट लोगों ने विद्रोह कर दिया। यह देख कर हेनरी ने एक सेना भेजी जिसने सालवे मास (Solway Moss) नामक स्थान पर सन् १५४२ में स्काटिश सेना को खदेड़ दिया। इस युद्ध के परिणाम स्वरूप स्काटलैंड के राजा जेम्स पंचम के हृदय पर ऐसी चोट पहुँची कि वह थोड़े ही दिन बाद परलोक सिधारा। इधर फ्रान्स से भी आक्रमण की तैयारियां देख हेनरी ने अपनी जल-सेना को संगठित किया। उसने ७२ जहाज़ बनवाये जिनका कि कार्य केवल समुद्रों पर युद्ध करना तथा देश की रक्षा करना था। पहले की भाँति यह जहाज़ व्यापार के काम न लाये गये और इस प्रकार हेनरी ने इंगलैंड की जल-सेना की स्थापना की। फ्रान्सीसी सेना अधिक हानि न पहुँचा सकी और अन्त में फ्रान्स संधि करने पर बाध्य हुआ।

स्काटलैंड के राजा जेम्स पंचम की मृत्यु के पश्चात् उसकी बालिका पुत्री राजसिंहासन पर बैठी। हेनरी की इच्छा थी कि किसी प्रकार इंगलैंड और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्काटलैंड दोनों देश मिलकर एक राष्ट्र में परिणत हो जायँ। इस अभिप्राय से उसने स्काटिश सरदारों को लिख कर अपनी यह इच्छा प्रकट की कि रानी मेरी का विवाह उसके युवराज एडवर्ड से कर दिया जावे। जब स्काटलैंड वालों ने आनाकानी की तो इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये उसने एक बार एक सेना भी भेजी, परन्तु इस कार्य में उसे सफलता नहीं मिली।

हेनरी द्वितीय के बाद अब तक जितने राजा हुए वे आयरलैंड के लार्ड (Lord of Ireland) कहलाते थे। हेनरी अष्टम ने आइरिश पार्लियामेण्ट के एक नियम द्वारा सन् १५४० में आयरलैंड के राजा (King of Ireland) की पदवी ग्रहण की। इस प्रकार इंगलैंड के राजा आयरलैंड के भी राजा कहलाये। इसी प्रकार वेल्स को भी अँग्रेज़ी राज्य में सम्मिलित किया गया। एडवर्ड प्रथम ने वेल्स पर विजय प्राप्त की थी, परन्तु उसने वेल्स निवासियों के साथ कुछ ऐसा प्रबन्ध किया था कि इंगलैंड का युवराज वेल्स का शासक (Prince of Wales) कहलायगा और उस दिन से उसका शासन-प्रबन्ध भी पृथक चला आता था। हेनरी ने सन् १५३६ में वेल्स को पूर्णतया अँग्रेज़ी राज्य में सम्मिलित किया और वहाँ के प्रतिनिधि भी अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट में बैठने लगे।

हेनरी की पार्लियामेण्ट ने उसे अपने उत्तराधिकारी नियत करने की आज्ञा भी दे दी थी। हेनरी ने अपनी मृत्यु के बाद एडवर्ड और उसकी सन्तान को अपना उत्तराधिकारी बनाया, और यदि एडवर्ड सन्तानहीन हो तो उसके उत्तराधिकारी मेरी जो केथरीन की पुत्री थी, और उसके बाद एलिज़बेथ जो एनिबोलन की पुत्री थी, हों। सन् १५४७ में हेनरी परलोक सिधारा और उसकी व्यवस्था के अनुसार उसका पुत्र एडवर्ड राजसिंहासन पर बैठा।

हेनरी के शासन का राजनैतिक महत्व—

हेनरी एक निरंकुश शासक था। वह हर एक काम में अपनी मनमानी करता था। उसने अपनी कई रानियों तथा देश के अनेक प्रतिष्ठित लोगों की हत्या की, किन्तु पार्लियामेण्ट ने इसका कोई विरोध नहीं किया। इसका मुख्य कारण यह था कि उस समय की पार्लियामेण्ट पूर्णतया राजा की मुट्ठी में थी। गुलाबों के युद्ध के बाद बैरनों की शक्ति नष्ट होने के कारण पार्लियामेण्ट में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिकतर राजा ही के समर्थक भरे हुये थे। अब तक बहुत-से मठों के अधिष्ठाता पार्लियामेण्ट की लार्ड-सभा (House of Lords) के सदस्य होते थे। अब मठों के टूटने से उनके स्थान पर हेनरी ने नये ज़मींदारों को लार्ड-सभा का सदस्य बनाया जो राजा का ही समर्थन करते थे। इस प्रकार हेनरी अष्टम जो चाहता उसे वह पार्लियामेण्ट द्वारा सुगमतापूर्वक करा लेता था। उसने प्रजा से अनेक बार ऋण लिया और उसकी पार्लियामेण्ट ने अनेक बार उन ऋणों के चुकाने से उसे मुक्त कर दिया और प्रजा का दिया हुआ धन मारा गया। उसके सारे राज-नियम पार्लियामेण्ट ने ही पास किये और उसकी धार्मिक नीति तथा अन्य विषयों पर पार्लियामेण्ट की स्वीकृति की ही छाप रही, जिसके कारण इस समय राजा के अधिकतर निरंकुश होने पर भी पार्लियामेण्ट की उन्नति में किसी प्रकार की बाधा न हुई। बार-बार पार्लियामेण्ट बुलाने से देश में राष्ट्रीयता का भाव बढ़ने लगा और पार्लियामेण्ट भी धीरे-धीरे अपने अधिकारों को समझने लगी।

Exercises.

1. Describe the character of Henry VIII.
2. How did Henry VIII deal with the foreign powers?
3. Explain the term "Balance of Power." How far did it raise the status of England in European politics?
4. Sketch the career of Cardinal Wolsey, and describe his foreign policy.
5. What do you understand by "Reformation"? How did this movement begin in Europe?
6. Give a short account of the progress of Reformation in England during the reign of Henry VIII.
7. Why did Henry VIII dissolve the monasteries? What was the effect of this measure?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौदहवाँ परिच्छेद

एडवर्ड षष्ठ

सन् १५४७	एडवर्ड षष्ठ का राज्याभिषेक
,, १५४६	प्रथम प्रार्थना-पुस्तक
,, १५५०	सोमरसेट का पतन
,, १५५२	द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक
,, १५५३	एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु

एडवर्ड षष्ठ तथा संरक्षक सोमरसेट—

सन् १५४७ में हेनरी अष्टम की मृत्यु के पश्चात् उसका लड़का एडवर्ड षष्ठ के नाम से इंगलैंड का राजा हुआ। एडवर्ड षष्ठ की आयु केवल दस वर्ष की थी, इसीलिये राज्य के संचालन के लिए एक संरक्षक-सभा नियत की गई जिसका प्रधान उसका मामा ड्यूक आफ़ सोमरसेट (Duke of Somerset) बन बैठा। सोमरसेट ने एडवर्ड का विवाह स्काटलैंड की राजकुमारी मेरी से कराना चाहा। परन्तु स्काटलैंड वालों ने उस सम्बन्ध को पसन्द न किया। इस पर सोमरसेट ने स्काटलैंड पर आक्रमण करने के लिए एक सेना भेजी और इस सेना ने पिंकी (Pinkie) नामक स्थान पर विजय प्राप्त की। इससे स्काटलैंड वाले और भी चिढ़ गये, और उन्होंने तुरन्त ही मेरी को फ्रांस भेज कर वहाँ के राजकुमार फ्रांसिस से उसका विवाह कर दिया।

धर्म-सुधार की उन्नति—

सोमरसेट प्रोटेस्टेण्ट मत का समर्थक था और उसकी हार्दिक इच्छा थी कि अँग्रेज़ी चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेण्ट बनाया जाय। पोप से संबंध-त्याग तो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हेनरी अष्टम के समय में ही हो चुका था; अब सोमरसेट ने धार्मिक सिद्धान्तों में भी परिवर्त्तन कर डाला। अँग्रेज़ी भाषा में एक नवीन प्रार्थना-पुस्तक प्रकाशित की गई और सब गिर्जों में उसी का प्रयोग करने की आज्ञा दी गई। हेनरी अष्टम की ६ धाराओं का नियम भंग कर दिया गया, और पादरियों को विवाह करने की आज्ञा दे दी गई। लैटिन भाषा का प्रयोग सब गिर्जों से

एडवर्ड षष्ठ

उड़ गया, और कई केथलिक गिर्जे लूट भी लिए गये। गिर्जों की सब मूर्त्तियाँ तथा तस्वीरें हटा दी गईं। गिर्जों की दीवारों पर सफेदी करके चित्रकारी के बहुमूल्य काम को भी नष्ट कर दिया गया। सोमरसेट स्वार्थी और लोभी भी था। उसने कई गिर्जों को तुड़वा कर उनकी सम्पत्ति पर अधिकार किया और उससे लन्दन में एक विशाल भवन बनवा लिया जो अब तक मौजूद है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश में विद्रोह—

ईसाई-धर्म की प्राचीन प्रथा में सोमरसेट द्वारा एकदम इतने बड़े परिवर्त्तन होने से जनता में बड़ी सनसनी फैली। पोप से संबंध-विच्छेद करने के कारण तो प्रजा-जन इतने विरोधी न हुए थे, क्योंकि जातीयता की लहर के सम्मुख एक विदेशी पोप के अधीन रहना किसी को पसन्द न था, परन्तु धार्मिक सिद्धान्तों में संशोधन के कारण इंगलैंड की अधिकांश जनता घबड़ा उठी। इंगलैंड के कई भागों—विशेषतया डेवन और नारफ़ाक प्रान्तों- में विद्रोह की आग भभक उठी। इसी समय ऊन के व्यापार की ओर ज़मींदारों का विशेष ध्यान होने के कारण कृषि करने वाले बहुत-से मज़दूर बेकार हो गये थे। इन लोगों ने भी विद्रोह में भाग लिया और देश में भयंकर स्थिति उत्पन्न हो गई। मज़दूरों के अतिरिक्त देश में बहुत-से ऐसे ग़रीब जन तथा असहाय थे जिन्हें मठों में आश्रय मिलता था और जहाँ उनका पेट पलता था। वे बिचारे आश्रयहीन हो गये और देश में भिखारियों की संख्या बढ़ गई थी। मठों की भूमि जिन ज़मींदारों ने मोल ली थी, वे मज़दूरों तथा कृषकों के लिए बहुत दुखदायी साबित हुए। अधिकांश ज़मींदारों ने तो अपनी भूमि पर भेड़ें चराना आरम्भ किया और इस प्रकार बहुत-से लोग निराश्रित होकर मज़दूरी के लिए मारे-मारे फिरने लगे। कुछ नये ज़मींदारों ने खेतों का लगान खूब बढ़ा दिया और मज़दूरों से अधिक समय तक काम लेना आरम्भ किया। मध्यकाल से देश में व्यापारियों तथा शिल्पकारों ने अपने संघ (Gilds) स्थापित कर रखे थे। यह संघ अपने सहकारियों तथा अपने मज़दूरों की हर प्रकार से सहायता करते थे। उनकी धन-सम्पत्ति पर एडवर्ड तथा उसके मंत्रियों की नीयत बिगड़ी और एक राज-नियम द्वारा यह भी सब ज़ब्त कर ली गई। केवल एक लन्दन के गिल्डों का वे कुछ न बिगाड़ सके, क्योंकि वे बहुत शक्तिशाली थे। सरकार के इस कार्य ने भी देश में बहुत असंतोष फैलाया। इस प्रकार देश में असंतोष की अग्नि भड़क रही थी और इसके परिणाम स्वरूप विद्रोह ने एक विकट रूप धारण किया। संरक्षक सोमरसेट इस विद्रोह का कोई उचित प्रबन्ध न कर सका, जिसके कारण उसे शीघ्र ही अपने पद से हटना पड़ा। थोड़े दिनों बाद सोमरसेट के शत्रुओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने अवसर पाकर उस पर राजद्रोह का अपराध लगाया और उसे प्राण-दण्ड दिलवा दिया।

संरक्षक नारथम्बरलैंड—

सोमरसेट के पश्चात्-ड्यूक-आफ़-नार्थम्बरलैंड (Duke of Northumberland) संरक्षक नियुक्त हुआ। यह बड़ा ही षड्यन्त्री तथा स्वार्थी था। इसने यह सोच कर कि गिर्जों को लूटने से उसको तथा उसके मित्रों को पर्याप्त लाभ होगा, धर्म-सुधार के कार्य में खूब जोश दिखलाया। उसने केथलिक सम्प्रदाय के बिशपों को गिर्जों में से निकाल कर उनके स्थान पर विदेशी प्रोटेस्टेण्ट बिशपों की नियुक्ति की। उसने मुख्य-मुख्य केथलिक नेताओं को जेल में भिजवा दिया, और राजकुमारी मेरी को भी अपने निजी पूजा-गृह में पूजा करने की आज्ञा न दी। उसने भी कई गिर्जों तथा गिल्डों की भूमि पर अधिकार किया और उन्हें अपने प्रोटेस्टेण्ट मित्रों के हाथ थोड़े बहुत दामों में बेच दी। उसने एक दूसरी प्रार्थना-पुस्तक (Second Prayer Book) प्रकाशित की, जिसमें और भी अधिक प्रोटेस्टेण्ट विचार भरे हुए थे। यह प्रार्थना-पुस्तक पहले सामरसेट ने आर्च-बिशप क्रेनमर से लिखवाई थी, और दूसरी बार भी फिर क्रेनमर ने ही लिखी। यह प्रार्थना-पुस्तक थोड़े बहुत संशोधन के बाद अब तक अँग्रेज़ी गिर्जों में चालू है। उसने एक नया राजनियम (Statute of 42 Articles) भी जारी कराया जिसमें प्रोटेस्टेण्ट चर्च के प्रायः सभी सिद्धान्त सम्मिलित थे। इस प्रकार नार्थम्बरलैंड ने अँग्रेज़ी चर्च को पूर्णतया प्रोटेस्टेण्ट बना दिया। जो लोग नये धर्म-सुधार के सिद्धान्तों को नहीं मानते थे उन्हें कड़े-कड़े दण्ड दिये जाने लगे।

उत्तराधिकार का प्रश्न—

एडवर्ड षष्ठ सदा रोगग्रस्त रहता था, और सबको यह भय था कि उसकी शीघ्र ही मृत्यु हो जायगी। ऐसी स्थिति से नार्थम्बरलैंड ने अपने वंशजों का अधिकार स्थायी बनाने के लिये एक षड्यन्त्र रचा। एडवर्ड के नियमानुसार उत्तराधिकारिणी उसकी बड़ी बहन मेरी होनी चाहिये थी। नार्थम्बरलैंड ने एडवर्ड को बहकाया कि मेरी पक्की केथलिक है और उसके सिंहासनारूढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होते ही धर्म-सुधार का सारा कार्य व्यर्थ हो जायगा। इस बात से एडवर्ड षष्ठ ने एक वसीयत लिखी कि मेरे पश्चात् सिंहासन लेडी जेनग्रे को मिले। जेनग्रे हेनरी अष्टम की सबसे छोटी बहन की दौहित्री थी और नार्थम्बरलैंड ने उससे अपने पुत्र का विवाह कर दिया था।

परन्तु नार्थम्बरलैंड का यह षड्यन्त्र सफल न हुआ। सन् १५५३ में एडवर्ड षष्ठ की मृत्यु होने पर उसने जेनग्रे को रानी घोषित किया। यह दस ही दिन राज्य कर पाई थी कि वास्तविक उत्तराधिकारिणी मेरी के समर्थकों ने मेरी ही को रानी बनाया, और जेनग्रे तथा नार्थम्बरलैंड दोनों को पकड़ कर बन्दीगृह भिजवा दिया और एक वर्ष में ही उन दोनों का वध करवा दिया गया। सिंहासन पर बैठने के पश्चात् मेरी ने इन दोनों को प्राण-दण्ड दिया जिससे उसके निष्कंटक राज्य में बाधा न पड़ने पावे।

Exercises

1. Describe the religious changes brought about in England during the reign of Edward VI.
2. Compare the characters and policies of the two protectors of Edward VI ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पन्द्रहवाँ परिच्छेद

मेरी ट्यूडर

सन् १५५३	मेरी ट्यूडर का राज्याभिषेक
,, १५५५-८	प्रोटेस्टेएटों पर अत्याचार
,, १५५७	केले का छिन जाना
,, १५५८	मेरी की मृत्यु

रानी मेरी के धार्मिक विचार—

पहली रानी जिसने इंगलैंड के राजसिंहासन को सुशोभित किया वह मेरी ट्यूडर थी। राज-सिंहासन पर बैठने के समय मेरी की आयु ३७ वर्ष की थी। अपनी माता कैथरीन के परित्याग के पश्चात् उसका जीवन अधिकतर दुःख में ही कटा था। इन कष्टों के कारण उसके हृदय में धार्मिक श्रद्धा बढ़ गई थी और वह स्वभाव की जिद्दी तथा चिड़चिड़ी हो गई थी। वह केथलिक धर्म की कट्टर पक्षपातिन थी, और उसने देश को फिर से केथलिक बनाने का पूर्ण निश्चय कर लिया। मेरी ने यह भी भली भाँति जान लिया था कि प्रजा अधिकतर केथलिक धर्म की अनुयायिनी है। उसे भी यह विश्वास हो गया था कि वह केथलिक धर्म की सेवा करने ही के लिये रानी बनाई गई है। अतः उसने प्रोटेस्टेएट मत को इंगलैंड से समूल नष्ट करने का निश्चय किया।

केथलिक मत का पुनः प्रचार :—

सन् १५५३ में जब कि प्रथम बार पार्लियामेएट बुलाई गई, तब उसमें सबसे पहले यह निश्चय किया गया कि मेरी की माता कैथरीन का विवाह विधि-पूर्वक था। इस पार्लियामेएट ने मेरी के इच्छानुसार यह निश्चय किया कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐडवर्ड षष्ठ की प्रोटेस्टेण्ट रीतियाँ रद्द कर दी जायँ और फिर से केथलिक चर्च के रीत्यनुसार धर्म-कार्य होने लगे। एडवर्ड षष्ठ की प्रार्थना-पुस्तक हटा दी गई और हेनरी अष्टम के ६ धाराओं वाले नियम (Statute of 6 Articles) का पुनः प्रचार हुआ। क्रेनमर तथा अन्य कट्टर प्रोटेस्टेण्ट पादरियों को चर्च से निकाल दिया गया और जेल में भेज दिया गया। यहाँ

मेरी ट्यूडर

तक तो मेरी ने धर्म-व्यवस्था में जो परिवर्तन किये उनसे तो जनता प्रसन्न हुई, क्योंकि अधिकांश लोग प्राचीन मत के ही समर्थक थे; वे केवल पोप से सम्बन्ध-विच्छेद के पक्ष में थे। परन्तु देश को पूर्णतया केथलिक बनाने के लिये यह भी आवश्यक था कि पोप की प्रभुता पुनः स्थापित की जाय। अतः मेरी ने पोप से क्षमा माँगी और पोप के प्रतिनिधि (Papal Legate) कार्डीनल पोल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Cardinal Pole) को इंगलैंड में आने का निमन्त्रण भेजा। उस इंगलैंड आने पर पार्लियामेण्ट के सब सदस्यों ने उससे नम्रतापूर्वक सन् १५५ में क्षमा माँगी और हेनरी अष्टम का "प्रधानता का नियम" (Act of Supremacy) भंग कर दिया। इस प्रकार अँग्रेज़ी चर्च फिर से पोप अधीन हो गया। मेरी की यह भी इच्छा थी कि मठों की लूटी हुई सम्प लौटा दी जाय। परन्तु ज़मीदारों के विरोध के भय के कारण उसने इस विशेष प्रयत्न न किया, क्योंकि वे अपनी ज़मीन को लौटाने के लिये राज़ी न हो सकते थे।

प्रोटेस्टेण्टों का बलिदान—

देश में धार्मिक सुधार की लहर फैल चुकी थी. और बहुत-से लोग ऐ थे जो मेरी की इन आज्ञाओं को मानने को तैयार न थे। मेरी ने उन्हें अप मत छोड़ने के लिए बाध्य किया, और जिन्होंने मेरी की आज्ञा का उल्लंघ किया उन्हें उसने कड़े-कड़े दण्ड दिये। बहुत-से बन्दीगृह भेजे गये और बहुत को देश से निकाल दिया गया, और लगभग ३०० प्रोटेस्टेण्ट जीवित जलवा दिये गये। इन शहीदों में सब श्रेणियों के लोग सम्मिलित थे। इन वीरों जलती हुई अग्नि में भस्म होकर अपने आत्मबल का परिचय दिया। आर्च बिशप क्रेनमर, अँग्रेज़ी बाइबिल का लेखक राजर्स (Rogers) तथा लन्द का बिशप रिडले (Ridley) जैसे प्रतिष्ठित लोगों ने अपने प्राण बलिदा किये। इन अत्याचारों को देखकर जनता को मेरी तथा केथलिक मत के प्रति घृणा उत्पन्न हो गई, और इस अग्निकाण्ड ने लोगों के हृदयों में प्रोटेस्टे धर्म की ओर पूर्ण श्रद्धा उत्पन्न कर दी।

मेरी की परराष्ट्र नीति तथा विवाह—

केथलिक चर्च को उन्नति देने के अभिप्राय से मेरी ने स्पेन के केथलि सम्राट् चार्ल्स पंचम के पुत्र फ़िलिप (Phillip) से विवाह करने की इच्छा प्रकट की, परन्तु जनता ने इस सम्बन्ध का विरोध किया। इस सम्बन्ध में ए विद्रोह भी हुआ, क्योंकि लोगों का विचार था कि इस विवाह से उनका दे एक विदेशी राजा के अधीन हो जायगा। परन्तु वह शीघ्र ही दमन कर दि गया। मेरी अपने निश्चय पर दृढ़ रही और अन्त में पार्लियामेंट ने अप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इच्छा के विरुद्ध उसे फ़िलिप से विवाह करने की आज्ञा दे दी। परन्तु यह निश्चय करा लिया गया कि इंगलैंड किसी प्रकार स्पेन के अधीन न रहेगा, और न दोनों देश संम्मिलित ही हो सकेंगे। सन् १५५४ में विवाह हुआ, परन्तु उस विवाह से मेरी को कुछ भी सुख न मिल सका। फ़िलिप मेरी से स्नेह न कर सका, क्योंकि मेरी उससे उम्र में ग्यारह वर्ष बड़ी थी। फ़िलिप इंगलैंड में लोकप्रिय न हो सका, और मेरी से कोई पुत्र भी उत्पन्न न हुआ। वह सन् १५५५ में इंगलैंड से चला गया। वास्तव में फ़िलिप ने यह विवाह फ्रान्स के विरुद्ध इंगलैंड से सहायता लेने के लिये किया था। इस समय फ्रान्स और स्पेन में युद्ध चल रहा था, और सन् १५५७ में फ़िलिप इंगलैंड में फ्रान्स के विरुद्ध सहायता लेने के लिये आया। मेरी अपने पति को प्रसन्न करना चाहती थी, अतः उसने स्पेन का साथ देकर फ्रान्स में युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध में कैले (Calais) जो दो सौ वर्ष से अँग्रेज़ों के अधिकार में चला आ रहा था फ्रान्सीसियों ने छीन लिया, परन्तु फ़िलिप ने इसकी तनिक भी परवा न की। कैले के छिन जाने से देश को एक बड़ी भारी हानि पहुँची और मेरी के हृदय पर एक गहरी चोट लगी, जिससे शीघ्र ही सन् १५५८ में इस नैराश्यपूर्ण दशा में उसने शरीर त्याग दिया। इस प्रकार मेरी सब ओर से असफल रही और वह प्रोटेस्टेण्टों की हत्या के कारण खूनी मेरी (Bloody Mary) कहलाती है। प्रोटेस्टेण्ट धर्म को दमन करने के स्थान में इसने उसको और भी उत्तेजित किया।

Exercises

1. Why was the reign of Mary Tudor a failure?
2. What were the chief troubles in her reign?
3. What steps were taken by Mary Tudor to restore Catholicism? Why was she unsuccessful in this attempt?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सोलहवाँ परिच्छेद

एलिज़बेथ

सन् १५५८	एलिज़बेथ का राज्याभिषेक।
,, १५५६	Acts of Supremacy and Uniformity.
,, १५८०	ड्रेक की भूमण्डल-यात्रा।
,, १५८७	मेरी स्टुअर्ट का बध।
,, १५८८	आर्मेडा की पराजय।
,, १६००	ईस्ट इण्डिया कम्पनी की स्थापना।
,, १६०१	Poor Law.
,, १६०३	एलिज़बेथ की मृत्यु।

एलिज़बेथ का राज्याभिषेक—

मेरी ट्यूडर की मृत्यु के पश्चात् उसकी बहन एलिज़बेथ २५ वर्ष की आ में सन् १५५८ में इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठी। यह ऐनबोलीन की पु थी। उसे बाल्यावस्था में बहुत-से दुःख सहन करने पड़े थे। उसके पि हेनरी अष्टम का उसके साथ अच्छा व्यवहार न था और उसकी बहन मेरी भी उसे एक षड्यन्त्र का दोष लगा कर टावर में क़ैद कर दिया था। स १५५६ में मेरी ने पार्लियामेण्ट से एक नियम पास कराया था जिसके अनु यह घोषित किया कि एलिज़बेथ की माता का विवाह विधि-विहित न होने कारण वह उत्तराधिकारी के अयोग्य है। परन्तु बाद को स्पेन के राजा फ़िलि के आज्ञानुसार उसने एलिज़बेथ के साथ अच्छा व्यवहार आरम्भ किया औ उसे अपनी उत्तराधिकारिणी भी घोषित कर दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एलिज़बेथ का चरित्र—

एलिज़बेथ के स्वभाव में अपने माता-पिता के अनेक गुण कूट-कूट कर भरे हुए थे। अपनी माता ऐनबोलीन की भाँति उसे सजधज और मनोविनोद का बड़ा शौक़ था। वह अपने पिता की भाँति खुशामद पसन्द, हठी और घमंडी भी थी। उसने घमंड के कारण अपना विवाह नहीं किया जिससे उसे

एलिज़बेथ

अपने पति के अधीन न रहना पड़े। इन दोषों के होते हुए भी अपने पिता हेनरी अष्टम की भाँति एलिज़बेथ चतुर, धीर तथा परिश्रमी थी। वह दूसरों के साथ व्यवहार करने में अत्यन्त कुशल थी। अपने स्वभाव के ही कारण वह शीघ्र लोकप्रिय बन गई। वह विद्वानों का बड़ा आदर-सत्कार करती थी और स्वयं भी कई भाषाएँ जानती थी। अपने देश की भलाई वह हृदय से चाहती थी और प्रजा की इच्छा के विरुद्ध कोई कार्य नहीं करती थी। देश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के शासन में उसे बहुत कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, परन्तु उसने उन सब कठिनाइयों पर अपने धैर्य तथा राजनीतिज्ञता के कारण विजय प्राप्त की। उसमें एक विशेष गुण यह था कि शासन-कार्य के लिये वह योग्य व्यक्तियों को नियुक्त करती थी। भाग्यवश उसे विलियम सिसिल (William Cecil) जैसा व्यवहार-कुशल, दूरदर्शी तथा राजनीतिज्ञ मन्त्री भी मिल गया था। उसका सदैव यह ध्येय रहता था कि देश में शान्ति स्थापित रहे और धन-धान्य से परिपूर्ण हो। वह सच्चा राज-भक्त था और ४० वर्ष तक उसने एलिज़वेथ की सेवा की। वह एलिज़वेथ को अच्छी से अच्छी सलाह देता था और उसे कुशल शासक बनाने में उसने भरसक प्रयत्न किया।

धार्मिक प्रश्न—

एलिज़वेथ के सम्मुख सबसे कठिन प्रश्न धार्मिक समस्या का था। देश में अधिकतर जनता केथलिक धर्म को ही मानती थी, परन्तु प्रोटेस्टेण्टों की संख्या भी दिन-प्रति-दिन बढ़ती जाती थी। इन दोनों सम्प्रदायों के झगड़े का निर्णय करना कोई सरल कार्य न था, स्वयं एलिज़वेथ को धार्मिक विषयों में कोई रुचि न थी और उसको विश्वास था कि प्रत्येक को ईश्वर की उपासना करने की पूर्ण स्वतन्त्रता होनी चाहिये। परन्तु उसने जटिल समस्या को एक चतुर राजनीतिज्ञ की दृष्टि से सुलझाया। पोप की दृष्टि से एलिज़वेथ अनौरस सन्तान होने के कारण राजसिंहासन की वास्तविक उत्तराधिकारिणी नहीं हो सकती थी। उसके राज्याभिषेक के अवसर पर केवल एक केथलिक विशप उपस्थित हुआ था, इस कारण उसे प्रोटेस्टेण्टों का साथ देना अनिवार्य-सा हो गया। परन्तु वह यह भी न चाहती थी कि केथलिक उससे असन्तुष्ट रहें, अतः उसने धर्म सम्बन्धी प्रबन्ध में मध्यम मार्ग (Middle Course) का अवलम्बन किया। उसने ऐंग्लिकन चर्च स्थापित किया, जिसमें उसने ऐसी बातें रक्खीं कि सभी सम्प्रदायों के लोग उन्हें अपना सकें। वह यह भली भाँति समझती थी कि देश पोप की अधीनता में रहना पसन्द नहीं करेगा, अतः उसने सन् १५५६ में फिर से प्रधानता का राजनियम (Act of Supremacy) पार्लियामेण्ट से स्वीकृत कराया, जिसके अनुसार रानी चर्च की अधिष्ठाता मानी गई और पोप की सत्ता सदैव के लिए देश से उठ गई। केथलिक पोप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतिरिक्त किसी अन्य को अपना प्रधान मानने को उद्यत न थे, अतः चर्च का प्रधान (Head of the Church) वाक्य के स्थान पर "चर्च के शासक" (Governor of the Church) वाक्य रक्खा। इसके पश्चात् एक नियम (Act of Uniformity) पास किया गया, जिसके अनुसार देश में प्रोटेस्टेण्ट पूजा विधि प्रचलित की गई और एडवर्ड षष्ठ की द्वितीय प्रार्थना-पुस्तक के अनुसार गिर्जों में पूजा होने लगी। इस प्रार्थना-पुस्तक में से ऐसे शब्द हटा दिये गये जिससे कि केथलिकों के हृदय को दुःख होता था। एडवर्ड षष्ठ के ब्यालीस धारा वाले नियम का संशोधन करके उन्तालीस धारा वाला राज-नियम (Act of 39 Articles) बनाया गया, जिसके अनुसार प्रोटेस्टेण्ट चर्च की प्रथायें प्रचलित की गईं और उसमें कोई ऐसी बात न रही जिससे केथलिकों के हृदय को किसी प्रकार का कष्ट हो। पादरियों को विवाह करने की आज्ञा मिल गई। ऐंग्लिकन गिर्जों में लगातार न जाने वालों पर जुर्माना किया जाता था। एलिज़बेथ के इस प्रबन्ध ने स्थाई रूप ग्रहण किया और वर्त्तमान अँग्रेज़ी चर्च का प्रबन्ध उसी के आधार पर है।

धार्मिक नीति का प्रभाव--

एलिज़बेथ की धार्मिक नीति सफल हुई और उसके स्थापित किए हुए ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायियों की संख्या दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी। जहाँ तक सम्भव होता था वह धर्म के कारण किसी पर अत्याचार न करती थी और अन्य धर्मावलम्बियों के प्रति उसका व्यवहार बहुत अच्छा था। उन लोगों को अपने घरों पर पूजा इत्यादि करने में पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता थी। ऐंग्लिकन चर्च के विरोधी दो प्रकार के थे। एक तो कट्टर केथलिक, जो प्राचीन धर्म में कुछ भी संशोधन नहीं चाहते थे, और दूसरे वे जोशीले प्रोटेस्टेण्ट जो धर्म के इतने सुधार को यथेष्ट न समझते थे। ये जोशीले प्रोटेस्टेण्ट कुछ दिनों के पश्चात् प्यूरीटन (Puritans) कहलाने लगे, क्योंकि उनका कहना था कि हमारा उद्देश्य चर्च को पूर्ण प्रोटेस्टेण्ट बनाना है। वे चर्च में राजा की ओर से बिशपों की नियुक्ति पसन्द नहीं करते थे। वे बहुत ही सादा जीवन व्यतीत करते थे और ठाठ-बाट के वे कट्टर विरोधी थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एलिज़बेथ की धार्मिक नीति बहुत उदार थी। परन्तु जब उसने देखा कि अन्य मतावलम्बी उसके इतने उदार होने पर भी उपद्रव मचाने से नहीं चूकते तो उसने उनके दबाने के लिए एक विशेष अदालत खोली, जो कोर्ट आफ़ हाई कमीशन (Court of High Commission) के नाम से प्रसिद्ध थी। इनमें उन सब लोगों को दण्ड दिये जाते थे जो स्थापित ऐंग्लिकन चर्च के विरुद्ध किसी प्रकार का आन्दोलन करते थे या धर्म के नाम पर एलिज़बेथ के विरुद्ध किसी प्रकार के षड्यंत्र रचते थे।

इंगलैण्ड के विदेशी शत्रु—

एलिज़बेथ शान्ति-प्रिय थी, और उसकी इच्छा थी कि देश को यथा-सम्भव युद्ध से दूर रक्खे। उस समय इंगलैंड चारों ओर से शत्रुओं से घिरा हुआ था। स्पेन और फ्रान्स जैसे दो कट्टर केथलिक देश इंगलैंड के प्रोटेस्टेण्ट हो जाने के कारण एलिज़बेथ के शत्रु थे। स्पेन का राजा फ़िलिप मेरी ट्यूडर का पति होने के कारण अपने आपको इंगलैंड का स्वामी समझता था। फ्रान्स का राजा भी आशा लगाये हुए था कि स्काटलैंड की रानी मेरी जिसके साथ उसका विवाह हुआ था, एक दिन इंगलैंड की रानी हो जायगी। एलिज़बेथ की माता का विवाह विधि-विहित न होने के कारण पोप तथा केथलिक उसे राजसिंहासन का वास्तविक अधिकारी न मानते थे, और उसके स्थान पर मेरी को जो हेनरी सप्तम की पुत्री मार्ग्रेट की पौत्री थी, इंगलैंड का राज-सिंहासन दिलाना चाहते थे। इस प्रकार इंगलैंड को फ्रान्स, स्पेन और स्काटलैंड से पूरा-पूरा भय था।

एलिज़बेथ तथा स्काटलैण्ड—

इस समय इंगलैंड की भाँति स्काटलैंड में भी प्रोटेस्टेण्ट धर्म का प्रचार धीरे-धीरे बढ़ रहा था। जान नाक्स (John Knox) नामक एक स्काटिश प्रोटेस्टेण्ट के प्रभाव से राज-घर को छोड़कर लगभग सारी प्रजा ने नया धर्म स्वीकार कर लिया था। यहाँ के प्रोटेस्टेण्ट प्रेसबीटीरियन (Presbyterian) के नाम से प्रसिद्ध हुये, क्योंकि इनके चर्च में पोप तथा सरकार से चुने हुए पादरियों के स्थान पर जनता द्वारा चुने हुए प्रेसबीटर्स (Presbyters) धर्म-कार्य करते हैं। स्काटलैंड की रानी मेरी इस समय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फ्रान्स में थी और उसके स्थान पर उसकी माता संरक्षक के रूप में स्काटलैंड का शासन-कार्य करती थी। प्रोटेस्टेएटों के दमन के लिये उसने फ्रान्स से एक सेना बुलाई। ऐसी स्थिति में स्काटलैंड के प्रोटेस्टेएटों ने एलिज़बेथ से सहायता मांगी। परन्तु एलिज़बेथ स्काटलैंड के प्रोटेस्टेएटों की खुल्लमखुल्ला सहायता करके फ्रान्स से शत्रुता मोल लेना नहीं चाहती थी; क्योंकि पोप से सम्बन्ध विच्छेद करके और फ़िलिप से विवाह के लिये इन्कार करके वह स्पेन को पहले ही शत्रु बना चुकी थी। दूसरे, विद्रोहियों को अपने वास्तविक शासक के विरुद्ध सहायता देना उसे पसन्द नहीं था। परन्तु जब अँग्रेज़ी मंत्रियों ने बतलाया कि फ्रान्सीसियों का स्काटलैंड में जोर बढ़ता जाता है तो एलिज़बेथ ने स्काटिश प्रोटेस्टेएटों की सहायता के लिये एक अँग्रेज़ी जहाज़ी बेड़ा और एक सेना भेजी, और फ्रान्स से आई हुई सेना को १५६० में लीथ (Leith) के स्थान पर पराजित करके भगा दी गई। उसी समय रानी मेरी की माता परलोक सिधारी। स्काटलैंड की जनता एलिज़बेथ की इस सहायता से बहुत कृतज्ञ हुई, जिसका आगे चलकर यह परिणाम निकला कि जब स्काटलैंड की रानी मेरी ने इंगलैंड के राजसिंहासन के लिये एलिज़बेथ के विरुद्ध षड्यंत्र रचे तो इस कार्य में उसे स्काटलैंड से कोई विशेष सहायता न मिली। इस प्रकार इंगलैंड को स्काटलैंड की ओर से कोई भय न रहा।

स्काटलैंड की रानी मेरी—

इंगलैंड के ट्यूडर शासक सदैव इस बात के इच्छुक रहे कि स्काटलैंड से प्रेम-भाव बढ़ता रहे। वहाँ के राजा जेम्स पंचम की मृत्यु के पश्चात् उसकी पुत्री मेरी बाल्यावस्था में ही राजसिंहासन पर बैठी। हम बतला चुके हैं कि हेनरी अष्टम तथा सोमरसेट ने मेरी का विवाह एडवर्ड षष्ठ के साथ कराके दोनों देशों के मिलाने का प्रयत्न किया था। परन्तु उनको इस कार्य में सफलता न मिली। मेरी को फ्रान्स भेज दिया गया और उसका विवाह युवराज फ्रान्सिस से हो गया। सन् १५६१ में अपने पति की मृत्यु के पश्चात् मेरी को स्काटलैंड लौटना पड़ा। मेरी फ्रान्स में रहने के कारण केथलिक हो गई थी, और उधर स्काटलैंड की जनता प्रोटेस्टेएट हो गई थी और उसने प्रेसबीटीरियन चर्च स्थापित कर लिया था। अतः उसे अपनी प्रोटेस्टेएट प्रजा पर शासन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने में बड़ी कठिनाई हुई। अपनी स्थिति को दृढ़ करने के लिए उसने अपने चचेरे भाई लार्ड डार्नले (Lord Darnley) से विवाह किया; किन्तु थोड़े ही दिनों बाद दोनों में खटपट होने लगी। मेरी ने अर्ल आफ़ बाथवैल (Earl

स्काटलैंड की रानी मेरी

of Bothwell) से मित्रता आरम्भ की। कुछ ही दिनों बाद लार्ड डार्नले को बारूद से उड़ा दिया गया और मेरी ने बाथवैल से विवाह कर लिया।

ऐसी स्थिति में जनता को यही सन्देह हुआ कि मेरी ही ने डार्नले की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जान ली है। वास्तव में यह काम सब बाथवैल ही का था और रानी निर्दोषी थी। परन्तु जनता ने रानी को डार्नले की घातिका समझ कर उसके विरुद्ध एक विद्रोह खड़ा कर दिया। परिणाम यह हुआ कि मेरी को स्काटलैंड का सिंहासन त्यागना पड़ा। इसके पश्चात् मेरी का अबोध पुत्र जेम्स षष्ठ के नाम

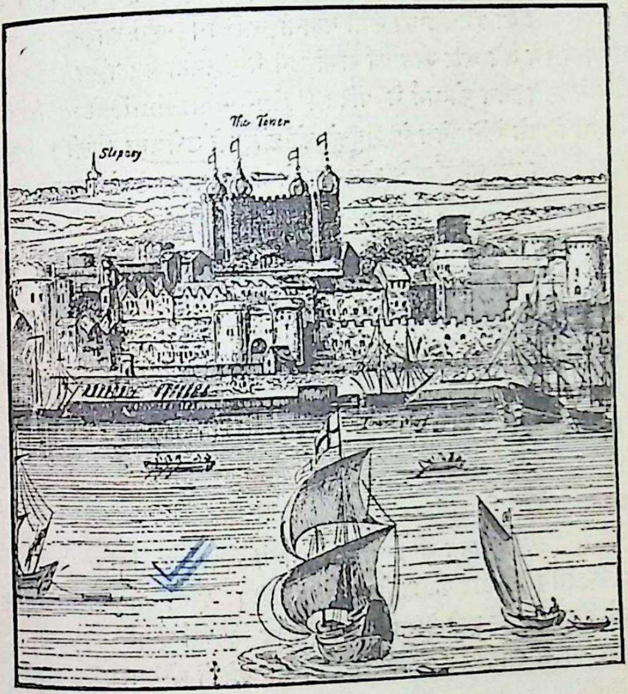

इंगलैंड का टावर

से सिंहासन पर बिठाया गया और मेरी को लक-लेविन (Loch Leven Castle) के क़िले में बन्द कर दिया गया। एक वर्ष के पश्चात् मेरी जेलर की सहायता से बन्दीगृह से भाग निकली। पहले तो उसने स्काटलैंड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Scotland) में राज्य स्थापित करने का प्रयत्न किया, परन्तु इसमें उसे सफलता न मिली और वह निराश होकर एलिज़बेथ की शरण में आगई तथा इंगलैंड के एक दुर्ग में १६ वर्ष तक सम्मानित क़ैदी के रूप में रहने लगी।

इंगलैंड में मेरी के आ जाने के कारण ऐलिज़बेथ को कई आपत्तियों ने घेर लिया। इंगलैंड के केथलिकों की यह इच्छा हुई कि एलिज़बेथ का बध करके मेरी को इंगलैंड की रानी बनाना चाहिये। इस आशय से बहुत से षड्यन्त्र रचे गये और स्पेन का राजा उनकी सहायता करता था। इस बीच में पोप ने एलिज़बेथ को धर्म से पतित (Ex-communicated) घोषित कर दिया जिससे ऐलिज़बेथ के शत्रुओं को और भी उत्तेजना मिली। एलिज़बेथ की स्थिति इस समय अति शोचनीय हो गई। परन्तु उसके गुप्तचर-विभाग की निपुणता के कारण कोई भी षड्यन्त्र सफल न हुआ। अन्त में बैबिंगटन के षड्यन्त्र का पता लगा, जिसमें स्वयं मेरी का भी थोड़ा बहुत हाथ बतलाया जाता है। यह अब तक निश्चय नहीं कि मेरी ने भी इस षड्यन्त्र में भाग लिया था, परन्तु यह निश्चय है कि स्पेन के राजा फ़िलिप के उत्तेजित करने पर ही यह षड्यन्त्र रचा गया था। इस कारण मेरी पर भी अभियोग चलाया गया, और सन् १८८७ में उसे प्राण-दण्ड दिया गया। मेरी की मृत्यु के साथ षड्यन्त्रों का भी अन्त हो गया और अब राजसिंहासन के लिये झगड़ा करने वाला कोई न रहा।

आयरलैंड पर अधिकार—

हेनरी सप्तम के समय में आयरलैंड की पार्लियामेण्ट नियम बनाने के कार्य में अँग्रेज़ी सरकार के अधीन हो चुकी थी। इससे आयरलैंड में बड़ा असन्तोष फैला, और इसी के साथ-साथ इंगलैंड में धर्म-सुधार का प्रचार हो जाने के कारण आयरलैंड की केथलिक जनता अँग्रेज़ों को घृणा की दृष्टि से देखने लगी। एलिज़बेथ के राज्य-काल में जिस समय रानी को पोप ने ईसाई-मत से पतित घोषित कर दिया था, आयरलैंड के केथलिकों ने एक भयंकर विद्रोह खड़ा कर दिया। ऐलिज़बेथ ने अपने एक प्रेम-पात्र अर्ल-आफ़-एसेक्स (Earl of Essex) को आयरलैंड के विद्रोह को दमन करने के लिए भेजा। परन्तु एसेक्स का प्रयत्न सफल न हुआ, और उसको निराश होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इंगलैंड लौटना पड़ा। रानी का कृपा-पात्र होने के भरोसे वह मार्ग के गन्दे वस्त्र पहने ही दरबार में पहुँच गया, परन्तु रानी इस अनुचित व्यवहार को सहन न कर सकी और इसका यह परिणाम हुआ कि एसेक्स को प्राण-दण्ड दिया गया।

इससे पश्चात् एलिज़बेथ ने लार्ड माउन्टजुआय (Mountjoy) को आयरलैंड भेजा, जिसने वहाँ जाकर विद्रोह को शान्त किया। इस प्रकार आयरलैंड अब पूर्णतया इंगलैंड के अधिकार में आ गया, परन्तु घृणा की नींव जम चुकी थी, जिसके कारण आयरलैंड में वास्तविक शान्ति स्थापित होना असंभव था। परिणाम यह हुआ कि आयरलैंड निवासियों की असन्तोष की अग्नि धीरे-धीरे बराबर सुलगती रही।

स्पेन तथा फ्रान्स की शत्रुता—

स्काटलैंड के अतिरिक्त यूरोपीय महाद्वीप में एलिज़बेथ को फ्रान्स तथा स्पेन जैसे शक्तिशाली देशों से निबटना था। यह दोनों कट्टर केथलिक (Catholic) थे, और इंगलैंड के प्रोटेस्टेण्ट हो जाने के कारण उससे बहुत डाह रखने लगे थे। यदि ये दोनों मिलकर आक्रमण कर देते तो इंगलैंड को भारी संकट का सामना करना पड़ता। भाग्यवश इन दोनों में शत्रुता थी, जिससे लाभ उठाकर एलिज़बेथ ने इन दोनों में से किसी की भी दाल नहीं गलने दी। इन दोनों देशों के राजा एलिज़बेथ से विवाह करने के इच्छुक थे। परन्तु एलिज़बेथ अपनी नीति-निपुणता से दोनों देशों के राजाओं को आशा दिलाती रही। अन्त में उसने दोनों से साफ़ इनकार कर दिया और दोनों टापते रह गए।

इस समय फ्रान्स तथा स्पेन दोनों देश अपने घरेलू झगड़ों में भी फँसे हुए थे। फ्रान्स में वहाँ के प्रोटेस्टेण्टों ने जो ह्यूजीनाटस (Huguenots) कहलाते थे विद्रोह खड़ा कर दिया था, और वहाँ की सरकार उनका दमन करने में लगी हुई थी। स्पेन के साम्राज्य में भी नीदरलैंड वाले प्रान्त के निवासी प्रोटेस्टेण्टों ने विद्रोह मचा रक्खा था और स्पेन की काफ़ी शक्ति उनके दमन करने मे लगी हुई थी। एलिज़बेथ ने प्रकट रूप से तो इन प्रोटेस्टेण्टों की कोई सहायता न की; परन्तु गुप्त रीति से इन दोनों देशों के विद्रोहियों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहायता के लिये धन तथा सेना भेजती रही, जिससे उसके दोनों शत्रुओं के घरेलू झगड़े बराबर चलते रहे और वे इंगलैंड को कोई हानि न पहुँचा सके। इस प्रकार एलिज़बेथ इच्छा न करते हुए भी उस समय धीरे-धीरे प्रोटेस्टेण्ट धर्म की संरक्षक प्रसिद्ध हो गई।

स्पेन से युद्ध की तैयारी—

अन्त में फ्रान्स से सन्धि हो गई। परन्तु स्पेन से शत्रुता दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी। धार्मिक मतभेद, नीदरलैंड के प्रोटेस्टेण्टों की सहायता तथा विवाह सम्बन्धी झाँसों के अतिरिक्त स्पेन के सम्राट् फ़िलिप को एलिज़बेथ के विरुद्ध और भी कई शिकायतें थीं। एलिज़बेथ ने फ़िलिप तथा उसके साम्राज्य को कई प्रकार से अपमानित किया था। स्काटलैंड की रानी का वध फ़िलिप को बहुत खटका था, क्योंकि उसकी मृत्यु से इंगलैंड में केथलिक राज्य होने की कोई आशा न रही। मेरी स्टूअर्ट ने मरने से पहले इंगलैंड के राज-सिंहासन के लिये फ़िलिप को अपना उत्तराधिकारी नियत किया था। इसी समय इंगलैंड के नाविकों ने स्पेन के व्यापारिक जहाज़ों को लूटना अपना धन्धा बना लिया था। फ़िलिप ने बार-बार अँग्रेज़ी नाविकों के विरुद्ध एलिज़बेथ को लिखा, परन्तु एलिज़बेथ तो स्पेनी जहाज़ों को लूटने के लिये अपने नाविकों को उत्तेजित करती थी। स्पेन का इस समय दक्षिणी अमेरिका में आधिपत्य जमा हुआ था, और वहाँ के उपनिवेशों से बहुत-से जहाज़ सोना-चाँदी भर कर आते रहते थे। अपने देश के व्यापार पर इस प्रकार का आघात देख कर फ़िलिप के क्रोध की सीमा न रही, और उसने इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये तैयारी आरम्भ कर दी।

आर्मेडा—

फ़िलिप ने इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये एक बड़ा भारी जहाज़ी बेड़ा तैयार किया। अभी तैयारी अधूरी ही थी कि एक अँग्रेज़ी नाविक ड्रेक (Sir Francis Drake) ने स्पेन के काडिज़ (Cadiz) बन्दरगाह पर पहुँच कर उनके कई जहाज़ों में आग लगा दी। परन्तु स्पेन वाले बड़े साहसी थे, और दूसरे वर्ष उन्होंने एक बड़ा भारी बेड़ा तैयार कर लिया। उनके बेड़े में १३० बड़े-बड़े जहाज़ थे और उनका विचार था कि इस पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी शत्रु
अजय आ
का आशीव
इंगलैंड पर
(Duke
सेना लिये
पहले नीद
पर आक्रम
आर्मेडा
फ़िलि
यह घोषण
करना है
लार्ड हाव
भार सौंपा
धार्मिक
ग़रीब, प्रो
का सामन
हाकिन्स
जहाज़ ले
स्पेनी जह
की स्थाई
की गई
की सेना
अतः ज
जावे ।
करते ही
प्रवेश क
अ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किसी शत्रु का विजय पाना असम्भव है। इसी कारण उन्होंने इसका नाम अजय आर्मेडा (Invincible Armada) रक्खा। सन् १५८८ में पोप का आशीर्वाद लेकर यह बेड़ा लिसबन (Lisbon) बन्दरगाह से रवाना होकर इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये बढ़ा। उधर नीदरलैंड में ड्यूक-आफ-पार्मा (Duke of Parma) नामक एक स्पेनी सेनापति अपनी एक बहुत बड़ी सेना लिये हुए तैयार बैठा था। फ़िलिप ने यह प्रबन्ध किया था कि आर्मेडा पहले नीदरलैंड पहुँच कर उस सेना को अपने साथ लेगा और फिर इंगलैंड पर आक्रमण करेगा।

आर्मेडा की पराजय—

फ़िलिप ने इंगलैंड के केथलिकों की सहानुभूति प्राप्त करने की आशा से यह घोषणा की थी कि हमारे आक्रमण का उद्देश्य केथलिक धर्म की रक्षा करना है। परन्तु एलिज़बेथ ने उसकी यह चाल न चलने दी, और उसने लार्ड हावर्ड (Howard) नामक केथलिक को इंगलैंड की तट-रक्षा का भार सौंपा, जिससे इंगलैंड की जनता पर यह प्रभाव पड़ा कि इस युद्ध ने धार्मिक से राष्ट्रीय रूप धारण किया, और इंगलैंड के सब लोग अमीर तथा ग़रीब, प्रोटेस्टेण्ट तथा केथलिक सब देश की स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये स्पेन का सामना करने के लिये तैयार हो गये। इंगलैंड के प्रसिद्ध नाविक ड्रेक, हाकिन्स तथा रेले ने हावर्ड के साथ सहर्ष सहयोग किया। वे सब अपने जहाज़ लेकर प्लाईमथ (Plymouth) के बन्दरगाह में एकत्र हो गये, और स्पेनी जहाज़ी बेड़े की प्रतीक्षा करने लगे। उधर लन्दन के समीप इंगलैंड की स्थाई सेना (Militia) जिसमें इस समय ७०,००० सैनिक थे, एकत्र की गई। इंगलैंड के राजनीतिज्ञ यह भली भाँति जानते थे कि यदि फ़िलिप की सेना इंगलैंड आ पहुँची तो एक कठिन समस्या का सामना करना पड़ेगा, अतः जहाँ तक हो सके समुद्र में ही स्पेनी जहाज़ी बेड़े को नष्ट कर दिया जावे। इंगलिश चैनैल (English Channel) में आर्मेडा के प्रवेश करते ही अँग्रेज़ी नाविकों ने भी उसका पीछा किया। इंगलिश चैनैल में प्रवेश करने के पश्चात् स्पेनी जहाज़ों ने केले के पास लंगर डाल दिये, ताकि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

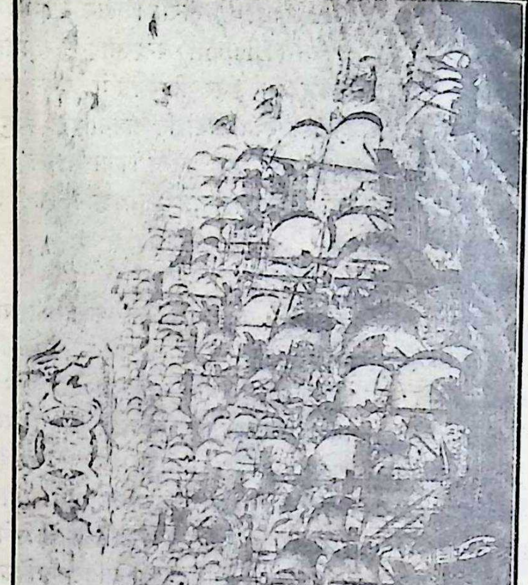

आर्मेडा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ड्यूक-आफ़-पार्मा तथा उसकी सेना को साथ ले लें। परन्तु ड्यूक-आफ़-पार्मा उस समय तैयार न था और स्पेनी जहाज़ों को वहाँ ठहरना पड़ा। दो ही दिन उन्हें वहाँ पड़े हुए थे कि रात्रि को अँग्रेज़ी जलसेना ने अपने पुराने आठ जहाज़ों में बारूद भर कर उनमें आग लगा कर स्पेनी जहाज़ों की तरफ़ छोड़ दिया और इस प्रकार उनके कई जहाज़ जला डाले। अब स्पेनी जहाज़

लार्ड हावर्ड

सँभले और खुले समुद्र की ओर आये। वहाँ घमासान युद्ध हुआ और कई स्पेनी जहाज़ नष्ट कर दिये गये। अँग्रेज़ों के पास लड़ाई का सामान कम हो चला था, परन्तु प्रकृति ने उनकी सहायता की। इसी समय सौभाग्यवश उत्तरी हवा बड़े वेग से चलने लगी, और स्पेन के जहाज़ों का इंगलिश चैनैल में ठहरना असंभव हो गया। उन्होंने ब्रिटिश टापुओं का चक्कर लगाकर भागना चाहा, परन्तु वहाँ भी वे तूफ़ान से न बच सके, और पथरीले समुद्री

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तट से टकरा कर उनके बहुत-से जहाज़ नष्ट हो गये। १३० जहाज़ों में केवल ५३ जहाज़ बचकर स्पेन पहुँचे, और फ़िलिप का इंगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न पूर्णतया विफल रहा।

आर्मेडा की पराजय के कारण तथा परिणाम--

स्पेन वाले यही समझते थे कि तूफ़ान के कारण उनकी विफलता हुई, परन्तु उनकी पराजय के कारण वास्तव में कई और भी थे। वह स्थल-युद्ध के लिये तैयार होकर आये थे और उनके जहाज़ों में नाविकों की अपेक्षा अधिकतर साधारण स्थल-सैनिक ही भरे हुए थे। उनके जहाज़ बड़े भी बहुत ज़्यादा थे, जिसके कारण वे बहुत तेज़ न चल सकते थे। उनके प्रधान को भी अधिकतर स्थल-युद्ध का ही अनुभव था, और इंगलैंड के ड्रेक इत्यादि दक्ष नाविकों के सम्मुख उसकी सफलता बहुत कठिन थी।

अब तक समुद्र-शक्ति में स्पेन ही की प्रधानता थी, परन्तु आर्मेडा की बड़ी पराजय के पश्चात् अँग्रेज़ों की जल-शक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी और उनका दूर देशों से व्यापार करने और स्पेन की भाँति नये उपनिवेश स्थापित करने का साहस बढ़ गया। इसके अतिरिक्त स्पेन जैसे शक्तिशाली केथलिक राज्य के इस प्रकार मान भंग होने के कारण प्रोटेस्टेण्ट धर्मावलम्बियों को अब कोई भय न रहा, और इससे यूरोप को धर्म-सुधार की उन्नति में बड़ी सहायता मिली। यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में अब स्पेन का मान न रहा, और उसके स्थान पर इंगलैंड की महत्ता की नींव पड़ी।

एलिज़बेथ की परराष्ट्र नीति की सफलता—

एलिज़बेथ के राज्यकाल के आरम्भ में इंगलैंड के जितने विदेशी शत्रु थे उन पर उसने अपनी नीति-निपुणता के कारण सफलता प्राप्त की। स्काटलैंड के प्रेसबीटरों की सहायता के कारण वे सदैव के लिये उसके कृतज्ञ हो गये। रही स्काटलैंड की रानी मेरी जो एलिज़बेथ के विरुद्ध अपना उत्तराधिकार जतलाती थी; उसके प्राणदण्ड के पश्चात् यह भी बखेड़ा समाप्त हुआ। फ्रान्स तथा स्पेन जैसे शक्तिशाली केथलिक देशों की भी उसने दाल न गलने दी और अन्त में स्पेन के आर्मेडा को पराजय करने के पश्चात् इंगलैंड की धाक समस्त यूरोप में जम गई। अब देश को किसी शत्रु का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भय न रहा। इस प्रकार एलिज़बेथ की विदेशी नीति पूर्णतया सफल रही।

एलिज़बेथ के राज-काल का गौरव—

एलिज़बेथ के राज-काल का इंगलैंड के इतिहास में बड़ा महत्त्व है। उस समय भिन्न-भिन्न प्रकार की उन्नति होने के कारण वह स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध है। इस काल की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का नीचे उल्लेख किया जाता है।

व्यापार तथा उपनिवेश—

ट्यूडर काल के प्रारम्भ से ही बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राएँ तथा नये देशों की खोज होने लगी थी। स्पेन के कोलम्बस ने अटलांटिक महा-

सर फ्रान्सिस ड्रेक

सागर को पार करके अमेरिका का पता लगाया था, और पुर्तगाल के वास्कोडिगामा ने उत्तमाशान्तरीप (Cape of Good Hope) होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतवर्ष का समुद्री मार्ग खोज निकाला। बहुत काल तक पुर्त्तगाल तथा स्पेन वालों का ही समुद्र पर सर्वाधिकार रहा, परन्तु धीरे-धीरे अँग्रेज़ी नाविकों ने भी इस क्षेत्र में प्रवेश किया। जान कैबट (John Cabot) ने हेनरी सप्तम ही के राजत्वकाल में लैब्रेडर तथा न्यूफ़ाउंडलैंड (Labrador and New Foundland) का पता लगा लिया था। एलिज़वेथ के राज्य-काल में इस क्षेत्र की उन्नति और भी आगे बढ़ी। जान हाकिन्स (John Hawkins) ने अफ्रीका के समुद्री किनारे पर तीन यात्राएँ कीं और वहाँ के हबशी पकड़ कर उन्हें अमरीका के द्वीपों में बेचने का धन्धा शुरू किया। इसी समय वाल्टर रेले ने अमरीका से आलू और तम्बाकू लाकर यूरोप में उनका प्रचार किया। यहीं से ये दोनों वस्तुएँ भूमण्डल के अन्य भागों में पहुँचीं। रेले ने ही अमरीका में पहला अँग्रेज़ी उपनिवेश स्थापित किया; और कुमारी रानी एलिज़वेथ के नाम पर उसका नाम वर्जीनिया (Virginia) रक्खा। इसके अतिरिक्त फ्रान्सिस ड्रेक (Sir Francis Drake) ने उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका के थल-डमरूमध्य पनामा को पैदल पार करके पैसिफ़िक महासागर के दर्शन किये; और वहीं होकर समस्त भूमण्डल का पहली बार चक्कर लगाया, जिससे प्रसन्न होकर रानी एलिज़वेथ ने उसे नाइट (Knight) बना दिया और वह सर फ्रान्सिस ड्रेक के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन्हीं अँग्रेज़ी नाविकों की बदौलत विशेषतया स्पेनी आर्मेडा की विजय के पश्चात् इंगलैंड की शक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी; और इंगलैंड का दूसरे देशों के साथ व्यापार का मार्ग खुल गया। इसी समय अँग्रेज़ों ने बहुत-सी व्यापारिक कम्पनियाँ बनाईं जिनमें सबसे मुख्य (East India Company) थी, जिसने व्यापार ही के द्वारा भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली।

साहित्यिक उन्नति—

एलिज़वेथ का शासन-काल अँग्रेज़ी साहित्य का स्वर्ण-युग कहलाता है। जितनी उन्नति साहित्य की इस काल में हुई उतनी कभी भी नहीं हुई। इंगलैंड के सर्वश्रेष्ठ नाटककार शेक्सपीयर (Shakespeare) ने इसी काल में अपने जगतप्रिय नाटकों की रचना की थी। सन् १५६४ में इङ्गलैण्ड के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तट से टकरा कर उनके बहुत-से जहाज़ नष्ट हो गये। १३० जहाज़ों में केवल ५३ जहाज़ बचकर स्पेन पहुँचे, और फ़िलिप का इंगलैंड पर आक्रमण करने का प्रयत्न पूर्णतया विफल रहा।

आर्मेडा की पराजय के कारण तथा परिणाम--

स्पेन वाले यही समझते थे कि तूफ़ान के कारण उनकी विफलता हुई परन्तु उनकी पराजय के कारण वास्तव में कई और भी थे। वह स्थल-युद्ध के लिये तैयार होकर आये थे और उनके जहाज़ों में नाविकों की अपेक्षा अधिकतर साधारण स्थल-सैनिक ही भरे हुए थे। उनके जहाज़ बड़े भी बहुत ज़्यादा थे, जिसके कारण वे बहुत तेज़ न चल सकते थे। उनके प्रधान को भी अधिकतर स्थल-युद्ध का ही अनुभव था, और इंगलैंड के ड्रेक इत्यादि दक्ष नाविकों के सम्मुख उसकी सफलता बहुत कठिन थी।

अब तक समुद्र-शक्ति में स्पेन ही की प्रधानता थी, परन्तु आर्मेडा की बड़ी पराजय के पश्चात् अँग्रेज़ों की जल-शक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी और उनका दूर देशों से व्यापार करने और स्पेन की भाँति नये उपनिवेश स्थापित करने का साहस बढ़ गया। इसके अतिरिक्त स्पेन जैसे शक्तिशाली केथलिक राष्ट्र के इस प्रकार मान भंग होने के कारण प्रोटेस्टेएट धर्मावलम्बियों को अब कोई भय न रहा, और इससे यूरोप को धर्म-सुधार की उन्नति में बड़ी सहायता मिली। यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में अब स्पेन का मान न रहा, और उसके स्थान पर इंगलैंड की महत्ता की नींव पड़ी।

एलिज़बेथ की परराष्ट्र नीति की सफलता—

एलिज़बेथ के राज्यकाल के आरम्भ में इंगलैंड के जितने विदेशी शत्रु थे उन पर उसने अपनी नीति-निपुणता के कारण सफलता प्राप्त की। स्काटलैंड के प्रेसबीटरों की सहायता के कारण वे सदैव के लिये उसके कृतज्ञ हो गये। रही स्काटलैंड की रानी मेरी जो एलिज़बेथ के विरुद्ध अपना उत्तराधिकार जतलाती थी; उसके प्राणदण्ड के पश्चात् यह भी बखेड़ा समाप्त हुआ। फ्रान्स तथा स्पेन जैसे शक्तिशाली केथलिक देशों की भी उसने दाल न गलने दी और अन्त में स्पेन के आर्मेडा को पराजय करने के पश्चात् इंगलैंड की धाक समस्त यूरोप में जम गई। अब देश को किसी शत्रु का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भय न रहा। इस प्रकार एलिज़बेथ की विदेशी नीति पूर्णतया सफल रही।

एलिज़बेथ के राज-काल का गौरव—

एलिज़बेथ के राज-काल का इंगलैंड के इतिहास में बड़ा महत्त्व है। उस समय भिन्न-भिन्न प्रकार की उन्नति होने के कारण वह स्वर्णयुग के नाम से प्रसिद्ध है। इस काल की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का नीचे उल्लेख किया जाता है।

व्यापार तथा उपनिवेश—

ट्यूडर काल के प्रारम्भ से ही बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राएँ तथा नये देशों की खोज होने लगी थी। स्पेन के कोलम्बस ने अटलांटिक महा-

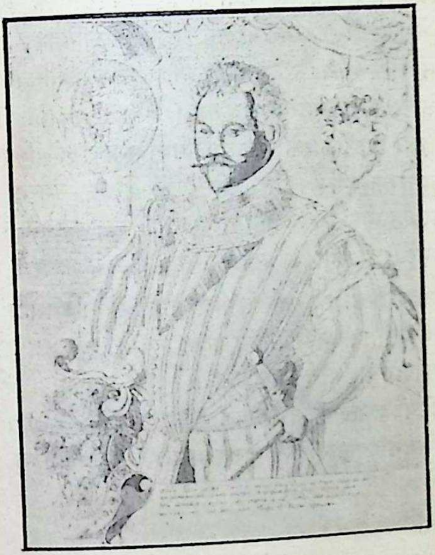

सर फ्रान्सिस ड्रेक

सागर को पार करके अमेरिका का पता लगाया था, और पुर्तगाल के वास्कोडिगामा ने उत्तमाशान्तरीप (Cape of Good Hope) होकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतवर्ष का समुद्री मार्ग खोज निकाला। बहुत काल तक पुर्त्तगाल तथा स्पेन वालों का ही समुद्र पर सर्वाधिकार रहा, परन्तु धीरे-धीरे अँग्रेज़ी नाविकों ने भी इस क्षेत्र में प्रवेश किया। जान कैबट (John Cabot) ने हेनरी सप्तम ही के राजत्वकाल में लैब्रेडर तथा न्यूफ़ाउंडलैंड (Labrador and New Foundland) का पता लगा लिया था। एलिज़बेथ के राज्य-काल में इस क्षेत्र की उन्नति और भी आगे बढ़ी। जान हाकिन्स (John Hawkins) ने अफ्रीका के समुद्री किनारे पर तीन यात्राएँ कीं और वहीं के हबशी पकड़ कर उन्हें अमरीका के द्वीपों में बेचने का धन्धा शुरू किया। इसी समय वाल्टर रेले ने अमरीका से आलू और तम्बाकू लाकर यूरोप में उनका प्रचार किया। यहीं से ये दोनों वस्तुएँ भूमण्डल के अन्य भागों में पहुँचीं। रेले ने ही अमरीका में पहला अँग्रेज़ी उपनिवेश स्थापित किया; और कुमारी रानी एलिज़बेथ के नाम पर उसका नाम वर्जीनिया (Virginia) रक्खा। इसके अतिरिक्त फ्रान्सिस ड्रेक (Sir Francis Drake) ने उत्तरी तथा दक्षिणी अमरीका के थल-डमरूमध्य पनामा को पैदल पार करके पैसिफ़िक महासागर के दर्शन किये; और वहीं होकर समस्त भूमण्डल का पहली बार चक्कर लगाया, जिससे प्रसन्न होकर रानी एलिज़बेथ ने उसे नाइट (Knight) बना दिया और वह सर फ्रान्सिस ड्रेक के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

इन्हीं अँग्रेज़ी नाविकों की बदौलत विशेषतया स्पेनी आर्मेडा की विजय के पश्चात् इंगलैंड की शक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगी; और इंगलैंड का दूसरे देशों के साथ व्यापार का मार्ग खुल गया। इसी समय अँग्रेज़ों ने बहुत-सी व्यापारिक कम्पनियाँ बनाईं जिनमें सबसे मुख्य (East India Company) थी, जिसने व्यापार ही के द्वारा भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य की नींव डाली।

साहित्यिक उन्नति—

एलिज़बेथ का शासन-काल अँग्रेज़ी साहित्य का स्वर्ण-युग कहलाता है। जितनी उन्नति साहित्य की इस काल में हुई उतनी कभी भी नहीं हुई। इंगलैंड के सर्वश्रेष्ठ नाटककार शेक्सपीयर (Shakespeare) ने इसी काल में अपने जगतप्रिय नाटकों की रचना की थी। सन् १५६४ में इङ्गलैण्ड के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मध्य भाग के स्ट्राटफ़र्ड (Stratford) नगर में शेक्सपीयर का जन्म हुआ था। कुछ कारणों वश १४ वर्ष की आयु में उसका शिक्षण बन्द कर दिया गया। २६ वर्ष की आयु में वह लन्दन गया और एक नाटकगृह में काम करने लगा। अपनी कई कविताएँ तथा नाटक लिखकर उसने शीघ्र ख्याति प्राप्त की, और ३५ वर्ष की आयु तक उसने बहुत कुछ धन सम्पत्ति भी एकत्र

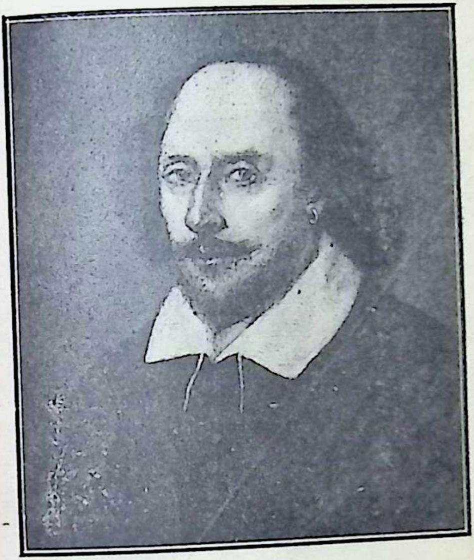

शेक्सपीयर

कर ली। ४५ वर्ष की आयु में वह स्ट्राटफर्ड वापिस लौट आया और वहाँ उसने एक बहुत बड़ा घर बनवाया। ५२ वर्ष की आयु में सन् १६१६ में वह परलोक सिधारा। उसने ३५ नाटक लिखे हैं और इनमें से हेम्लेट, ओथेलो, मेकबेथ, वेनिस का व्यापारी तथा टेम्पेस्ट अधिक प्रसिद्ध हैं। उसके नाटक एलिज़बेथ तथा जेम्स प्रथम के राज्य काल में लिखे गये थे, परन्तु हास्य, करुणा, श्रृंगार वीर आदि रसों के कारण उन नाटकों की अब तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समस्त शिक्षित संसार में प्रसिद्धि है। दूसरे प्रसिद्ध नाटककार मार्लो (Marlowe) और बैन जोन्सन (Ben Johnson) भी इसी काल में हुए और प्रसिद्ध कवि एडवर्ड स्पेन्सर भी इसी काल का एक अमूल्य रत्न था। दार्शनिक विद्वान् फ्रान्सिस बेकन (Francis Bacon) तथा धार्मिक विषयों के प्रसिद्ध लेखक रिचार्ड हूकर (Richard Hooker) भी इसी समय में हुए थे।

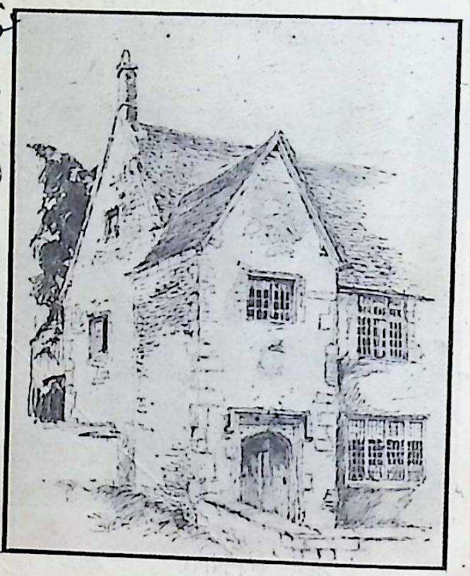

ट्यूडर काल के एक घर का नमूना

सामाजिक उन्नति—

व्यापारिक उन्नति के कारण देश के धन तथा रहन-सहन में भी बहुत अन्तर हो गया। समुद्र यात्रा, व्यापार, शिल्प तथा उद्योग की उन्नति के कारण मध्यम श्रेणी के लोग भी अग्रसर होने लगे। देश में बहुत बड़ी-बड़ी इमारतें बनाई गईं, और अँग्रेज़ लोग वस्त्र, भोजन तथा सजावट की वस्तुओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर अधिक खर्च करने लगे। नई नई वस्तुओं की खेती होने लगी। अमरीका से आलू और तम्बाकू लाया गया और उनकी भी खेती होने लगी। इंगलैंड में अब बड़े-बड़े जहाज़ बनने लगे और रानी एलिज़बेथ ने बहुत-से विदेशी जुलाहों की जो नीदरलैंड से फ़िलिप के अत्याचार के कारण भाग आये थे, सहायता करके इंगलैंड के लोगों को कपड़ा बुनना तथा रंगना सिखलवाया, और इस प्रकार व्यापार को बहुत उन्नति पहुँचाई। इसी समय यह विचार आरम्भ हुआ कि देश के दरिद्र-कंगालों का भी उचित प्रबन्ध किया जाय। ज़मींदारों के भेड़ें पालने पर और मठों के टूटने पर, हम जैसा कि ऊपर बतला आये हैं, देश में दरिद्रों की संख्या बहुत बढ़ गई थी। इसके कारण देश में बहुत अशान्ति फैली हुई थी। इस परिस्थिति को सुधारने के लिये और ग़रीब जनों की सहायता करने के लिये सन् १६०१ में दरिद्र-संरक्षण नियम (Poor Laws) जारी किये गये, जिनके अनुसार जो काम करने के अयोग्य थे उन्हें सहायता दी जाती थी और जिन्हें काम नहीं मिलता था, उन्हें किसी व्यवसाय में लगाने का प्रयत्न किया जाता था। बेकार फिरने पर हट्टे-कट्टे भिखारियों को दण्ड दिया जाता था और उन्हें काम करने के लिये बाध्य किया जाने लगा। इस प्रकार प्रत्येक नगर तथा ग्राम में बेकारों तथा दरिद्रों का प्रबन्ध किया गया, जिससे देश में सुख और शान्ति की वृद्धि हुई।

एलिज़बेथ की महत्ता—

इस विविध प्रकार की उन्नति के कारण एलिज़बेथ का इंगलैंड के इतिहास में बड़ा उच्च स्थान है। जिस समय वह रानी हुई थी देश की दशा बड़ी सोचनीय थी। धार्मिक झगड़ों के कारण देश में अशान्ति फैली हुई थी, परन्तु उसके चर्च के उचित प्रबन्ध के बाद ये झगड़े बहुत कुछ शान्त हो गये। इंगलैंड चारों ओर शत्रुओं से घिरा हुआ था, परन्तु धीरे-धीरे उसने सब शत्रुओं को नीचा दिखाया और उसकी विदेशी नीति की सफलता के कारण इंगलैंड को एक उच्च स्थान प्राप्त हुआ। व्यापारिक उन्नति के कारण देश धन-धान्य से परिपूर्ण होने लगा और इंगलैंड में एक नई ही प्रकार की जागृति तथा चहल-पहल दिखाई देने लगी। इसीलिए कहा है कि एलिज़बेथ के राज्य-काल में इंगलैंड एक दुर्बल तथा सोचनीय दशा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से निकल कर उच्च स्थान को प्राप्त हुआ और उसकी भावी उन्नति का मार्ग खुला।

Exercises

1. Describe the character of Queen Elizabeth.
2. What were the chief difficulties of Elizabeth on ascending the throne? How did she try to meet them?
3. How did Elizabeth settle the question of the Anglican Church? Compare her settlement with that of Henry VIII.
4. What do you know of Mary Queen of Scots? How is she connected with the History of England?
5. Give an account of Elizabeth's dealings with the two great Catholic powers–France and Spain.
6. What led to the invasion of the Armada? Discuss the effect of its defeat upon the position of England.
7. Why is Elizabeth considered to be one of the greatest sovereigns of England? Mention some of her great achievements.
8. Why is the reign of Elizabeth regarded as "The Golden age of English History"?
9. Give a short account of the chief exploration during the reign of Elizabeth.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

House of Tudor.

Henry VII

- Henry VIII
  - Mary I
  - Elizabeth
  - Edward VI
- Margaret, Married James IV of Scotland.
  - James V
    - Mary, Queen of Scots
      - James VI (becomes James I of England in 1603)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्रहवाँ परिच्छेद

ट्यूडर काल का सिंहावलोकन

(क) स्काटलैंड की समस्या

हेनरी सप्तम—

प्रकृति ने इंगलैंड तथा स्काटलैंड को पहाड़ियों द्वारा पृथक् किया है। इसी कारण दोनों देश बहुत काल तक पृथक् रहे। माध्यमिक काल में दोनों में परस्पर युद्ध भी खूब हुए और ट्यूडर काल तक दोनों देशों की जातियों में बराबर बैर भाव चलता रहा। इन दोनों देशों में प्रेम-भाव बढ़ाने के आशय से हेनरी सप्तम ने अपनी पुत्री मारग्रेट का विवाह स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ से किया। इस विवाह से तुरन्त ही तो कोई लाभ न निकला और पहले की भाँति स्काटलैंड बराबर फ्रान्स ही का साथ देता रहा; परन्तु जैसा कि आगे चलकर मालूम होगा, इसी विवाह के फल स्वरूप दोनों देश एक संयुक्त राज्य में सम्मिलित हुए।

हेनरी अष्टम—

जिस समय हेनरी अष्टम फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध कर रहा था, जेम्स चतुर्थ ने अवसर पाकर इंगलैंड पर आक्रमण कर दिया। सन् १५१३ में फ़्लाडिन फ़ील्ड (Flodden Field) के स्थान पर इंगलैंड और स्काटलैंड की सेना में घमासान युद्ध हुआ जिसमें जेम्स चतुर्थ स्वयं मारा गया और स्काटलैंड वाले पूर्णतया पराजित हुए। जेम्स चतुर्थ के पश्चात् उसका पुत्र जेम्स पंचम स्काटलैंड का राजा हुआ। उसने भी अपने पिता की भाँति फ्रान्स ही से मित्रता की और फ्रान्स की एक राजकुमारी से विवाह करके दोनों देशों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

घनिष्ठता को और भी बढ़ा दिया। सन् १५४२ में जेम्स पंचम ने भी एक बड़ी भारी सेना लेकर इङ्गलैंड पर धावा किया, परन्तु उसका भी मनोरथ सिद्ध न हुआ और वह सालवे मास (Solway Moss) के स्थान पर बुरी तरह परास्त हुआ। इस पराजय से जेम्स पंचम को इतना शोक हुआ कि वह थोड़े ही दिनों पश्चात् परलोक सिधारा।

विवाह का प्रस्ताव—

जेम्स पंचम की मृत्यु के पश्चात् उसकी बालिका पुत्री मेरी स्काटलैंड की रानी हुई और उसकी माता, जिसका नाम भी मेरी था, संरक्षक होकर राज्य का प्रबन्ध करने लगी। हेनरी अष्टम ने अपने पुत्र एडवर्ड षष्ठ से राजकुमारी मेरी का विवाह कराना चाहा, परन्तु उसकी माता ने इस प्रस्ताव को स्वीकार न किया। हेनरी की मृत्यु के पश्चात् एडवर्ड के संरक्षक सोमरसेट (Somerset) ने इस सम्बन्ध की फिर बातचीत छेड़ी, और स्काटलैंड वालों पर दबाव डालने के अभिप्राय से उसने सन् १५४७ में एक अँग्रेज़ी सेना स्काटलैंड को भेजी, जिसने पिन्की (Pinkie) के स्थान पर स्काटिश सेना को परास्त किया। परन्तु सोमरसेट के इस व्यवहार ने स्काटलैंड वालों को और भी चिढ़ा दिया और उन्होंने तुरन्त ही मेरी को फ्रांस भेज दिया, जहाँ कुछ वर्षों के बाद उसका विवाह युवराज फ्रान्सिस द्वितीय से हो गया।

स्काटलैंड तथा एलिज़बेथ—

एलिज़बेथ के राजसिंहासन पर बैठते ही स्काटलैंड की रानी मेरी ने फ्रान्सीसियों की सहायता के भरोसे अपने को इंगलैंड के राजसिंहासन की वास्तविक उत्तराधिकारिणी घोषित किया। परन्तु जैसा कि उपर लिखा जा चुका है एलिज़बेथ को इस समय स्काटलैंड वालों की सहानुभूति प्राप्त करने का एक सुन्दर अवसर मिल गया और उसने उनके नये प्रोटेस्टेण्ट चर्च को सहायता देकर वहाँ के शक्तिशाली दल को अपने पक्ष में कर लिया। इस प्रकार स्वयं स्काटिश जनता ने एलिज़बेथ के विरुद्ध रानी मेरी के उत्तराधिकार का समर्थन न किया, जिसके कारण एलिज़बेथ को स्काटलैंड की ओर से कोई खटका न रहा। इसके पश्चात् जब मेरी अपने घरेलू झगड़ों के कारण इंगलैंड में एलिज़बेथ की शरण आई तो उसने उसे क़ैद कर लिया और कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष पश्चात् एक षड्यन्त्र में भाग लेने के कारण उसे प्राण-दण्ड दिया। इस प्रकार स्काटलैंड से रहा-सहा भी भय जाता रहा।

सन् १६०३ में एलिज़बेथ के देहान्त होने पर ट्यूडर वंश में कोई उत्तराधिकारी न होने के कारण रानी मेरी का पुत्र, जो जेम्स षष्ठ के नाम से स्काटलैंड का राजा था, जेम्स प्रथम के नाम से इंगलैंड का भी राजा हुआ। इस प्रकार हेनरी सप्तम ने अपनी पुत्री मारग्रेट का स्काटलैंड के राजा जेम्स चतुर्थ से विवाह करके, जो दोनों देशों में पारस्परिक सम्बन्ध का बीज बोया था, वह सफल हुआ और दोनों देशों का एक ही शासक हो जाने के कारण अब इंगलैंड और स्काटलैंड के राजवंशीय झगड़े शान्त हुए।

(ख) आयरलैंड की समस्या

प्रकृति ने इंगलैंड तथा आयरलैंड को आइरिश सागर द्वारा पृथक किया है। परन्तु समीप होने के कारण इंगलैंड को आयरलैंड की ओर से सदैव किसी न किसी प्रकार का भय बना रहता था, क्योंकि इंगलैंड के शत्रु आयरिश जनता से मिलकर इंगलैंड के विरुद्ध उपद्रव खड़े कर देते थे। जातीय भेद होने के कारण भी इंगलैंड तथा आयरलैण्ड में सदैव शत्रुता बनी रहती थी। हेनरी द्वितीय ने आयरलैण्ड के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया था, जो इंगलिश प्रान्त (English Pale) के नाम से प्रसिद्ध था, परन्तु आयरिश जनता वहाँ से भी अँग्रेज़ों को निकाल देना चाहती थी। जब हेनरी सप्तम राजसिंहासन पर बैठा तो उसके विरुद्ध जितने दावेदार खड़े हुए उन्हें भी आयरलैंड-वासियों ने सहायता दी। अतः ट्यूडर शासकों के लिये आयरलैंड पर अधिकार करने का प्रयत्न करना अनिवार्य हो गया।

हेनरी सप्तम तथा हेनरी अष्टम—

प्रथम ट्यूडर राजा हेनरी सप्तम ने आयरलैंड पर अपना अधिकार दृढ़ करने के आशय से एडवर्ड पोइनिंग्स (Edward Poynings) को अपना प्रतिनिधि बनाकर भेजा। उसने दबाव डालकर आयरलैंड की पार्लियामेण्ट को दो राजनियम स्वीकृत करने पर बाध्य किया जिससे आयरलैंड की स्वतन्त्रता छिन गई। एक नियम के अनुसार यह निश्चय हुआ कि इंगलैंड के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार्लियामेण्ट केसमस्त नियम आयरलैण्ड में भी माने जायँगे। दूसरे नियम का जो बहुत दिनों तक पोइनिंग्स लॉ (Poyning's Law) के नाम से प्रसिद्ध रहा यह आशय था कि बिना इंगलैंड की पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के आयरिश पार्लियामेण्ट कोई राज-नियम पास न कर सकेगी।

हेनरी अष्टम के समय में जब इंगलैंड का चर्च पोप से पृथक् हो गया तो आयरलैंड की कट्टर केथलिक जनता अँग्रेज़ी शासन के और भी विरुद्ध होगई और कई आयरिश जागीरदारों ने विद्रोह भी खड़ा किया, परन्तु उनके किये कुछ न हो सका और आयरलैंड की पार्लियामेण्ट इस पर बाध्य हुई कि अब से अँग्रेज़ी शासक लार्ड आफ़ आयरलैण्ड (Lord of Ireland) के स्थान पर किंग आफ़ आयरलैंड (King of Ireland) कहलायँगे जिससे आयरलैंड की अधीनता और भी स्पष्ट हो गई। इसके अतिरिक्त हेनरी अष्टम ने एक दो नये प्रान्तों पर भी अपना अधिकार बढ़ा लिया।

एडवर्ड षष्ठ तथा मेरी ट्यूडर—

एडवर्ड षष्ठ के समय में इंगलैंड की भाँति आयरलैंड में भी प्रोटेस्टेण्ट धर्म फैलाने का प्रयत्न किया गया। परन्तु वहाँ की कट्टर केथलिक जनता नये धर्म को स्वीकार करने को प्रस्तुत न थी। इस समय से आयरलैंड के केथलिकों का दमन आरम्भ होता है और दोनों देशों की शत्रुता एक भयंकर रूप धारण करती है। बेचारी आयरिश जनता पर लगभग ४०० वर्ष तक अत्याचार होते रहे। अँग्रेज़ों ने आयरलैंड निवासियों की भूमि छीनना और वहाँ अँग्रेज़ी उपनिवेशन स्थापित करना आरम्भ किया। मेरी ट्यूडर ने केथलिक होने पर भी उनकी भूमि छीनने तथा वहाँ अँग्रेज़ों को बसाने में कोई कसर न रक्खी। इस प्रकार आयरलैंड निवासियों की घृणा तथा असंतोष और बढ़ते गये।

एलिज़बेथ—

एलिज़बेथ के राज्यकाल में, विशेषतया पोप द्वारा उसके ईसाई मत से पतित घोषित किये जाने के पश्चात्, आयरलैंड के केथलिकों में और भी जोश फैला और उन्होंने अँग्रेज़ों के विरुद्ध विद्रोह करना अपना धर्म समझा। देश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में कई जगह विद्रोह खड़े हुए, परन्तु एलिज़बेथ की भेजी हुई सेनाओं ने बड़ी निर्दयता के साथ यह विद्रोह शान्त किये, और आयरिश वासियों के प्रति अब और भी कठिन व्यवहार होने लगे। इस प्रकार अँग्रेज़ी शासक बलपूर्वक आयरलैंड को अपने अधीन करने में सफल तो हुए, परन्तु घृणा की नींव जम चुकी थी जिससे आयरलैंड में बराबर असन्तोष और अशान्ति बनी रही।

(ग) धर्म-सुधार

धर्म-सुधार की आवश्यकता—

ट्यूडर काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना 'धर्म-सुधार' (Reformation) है। सोलहवीं शताब्दी में विद्या की उन्नति के कारण लोगों के अन्धविश्वास का अन्त हुआ और यूरोप में धर्म-सुधार की लहर फैली। महाद्वीप के समीप होने के कारण इंगलैंड भी इस लहर से वंचित न रह सका। इंगलैंड पहले ही से धर्म-सुधार के लिए तैयार था, अर्थात् यहाँ मध्यकाल से ही पोप और पादरियों के विरुद्ध आन्दोलन चल रहा था। चौहदवीं शताब्दी के अन्त में जान विकलिफ (John Wycliffe) चर्च के दोषों को दिखाकर सुधार की आवश्यकता बता चुका था। अब सोलहवीं शताब्दी के आरम्भ में मार्टिन ल्यूथर (Martin Luther) ने जर्मनी में धर्म-सुधार का प्रचार किया तो उसके थोड़े ही दिनों बाद यह आग इंगलैंड में भी फुक गई।

हेनरी अष्टम—

दूसरे देशों में जनता के द्वारा धर्म-सुधार की लहर फैली थी, और यह एक सामाजिक आन्दोलन था, परन्तु इंगलैंड में यह कार्य राजा की ओर से आरंभ हुआ। इसीलिये इसने राजनीतिक रूप ग्रहण किया। हेनरी अष्टम का अपनी रानी कैथरीन के परित्याग के प्रश्न पर झगड़ा प्रारम्भ हुआ और उसने पार्लियामेण्ट की सहायता से इंगलैंड के चर्च को पोप की अधीनता से निकाल कर स्वयं अपने को चर्च का अधिष्ठाता बनाया। उसने बाइबिल का अँग्रेज़ी में अनुवाद कराया और मठों को तोड़कर पोप के अनुयायियों के अड्डों का अन्त किया। परन्तु हेनरी अष्टम ने मूल धार्मिक सिद्धान्तों में कोई परिवर्तन नहीं किया, किन्तु उनकी पुष्टि के लिये छः धाराओं का नियम (Act of

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Six Articles) बनाया जिसके कारण पोप से सम्बन्ध त्याग होने पर भी अँग्रेज़ी चर्च के सिद्धान्त ज्यों के त्यों बने रहे।

एडवर्ड षष्ठ—

एडवर्ड षष्ठ के शासन-काल में धार्मिक सिद्धान्तों में भी परिवर्त्तन किया गया और इंगलैंड का चर्च पूर्णतया प्रोटेस्टेण्ट हो गया। बहुत-से गिर्जे तथा प्राचीन मूर्त्तियाँ तोड़ दी गईं और सरकार की ओर से एक प्रार्थना-पुस्तक भी प्रचलित की गई। नवीन धर्म के समर्थन के लिये बयालिस धाराओं का एक नियम (Act of 42 Articles) बनाया गया। जनता ने पोप से सम्बन्ध त्याग को पसन्द किया था, परन्तु मूल धार्मिक सिद्धान्तों को छोड़ने के लिये लोग अभी तैयार न थे। इसी कारण एडवर्ड षष्ठ के राज्यकाल में एक-दो धार्मिक विद्रोह भी हुए।

मेरी ट्यूडर—

रानी मेरी ट्यूडर कट्टर केथलिक थी और उनसे नये प्रोटेस्टेण्ट धर्म को नष्ट करके पुनः केथलिक धर्म का प्रचार किया। पोप की प्रधानता फिर से स्वीकार करली गई और अँग्रेज़ी चर्च फिर से केथलिक हो गया। नये धर्म के मानने वालों को कड़े-कड़े दंड दिये गये और उसके राज्यकाल में बहुत-से प्रोटेस्टेण्ट जीवित तक जला दिये गये। परन्तु इसका उल्टा प्रभाव पड़ा और देश में प्रोटेस्टेण्टों की संख्या बढ़ती गई।

एलिज़बेथ—

इसके पश्चात् ऐलिज़बेथ जब राजसिंहासन पर आई तो उसने धार्मिक प्रश्न का बड़ी बुद्धिमानी से निपटारा कर दिया। उसने मध्यम मार्ग का अवलम्बन करके ऐंग्लिकन चर्च की स्थापना की। उसने निश्चित किया कि पोप के स्थान पर इंगलैंड के राजा या रानी ही चर्च के अधिष्ठाता हुआ करें। परन्तु धार्मिक सिद्धान्तों में आवश्यकतानुसार ही परिवर्त्तन किया गया और उसकी चलाई हुई नवीन प्रार्थना-पुस्तक प्रोटेस्टेण्ट धर्म के अनुसार होने पर भी उसमें कोई ऐसी बात न थी जो केथलिकों के हृदय को दुखाये। एलिज़बेथ का चर्च का प्रबन्ध स्थायी सिद्ध हुआ और वर्त्तमान अँग्रेज़ी चर्च का संचालन अधिकतर उसी के आधार पर है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(घ) ट्यूडर शासकों का पार्लियामेण्ट से सम्बन्ध

यूरोप के अन्य देशों की भाँति आधुनिक काल के आरंभिक ट्यूडर वंशीय शासक भी स्वेच्छाचारी थे। पार्लियामेण्ट का उन पर बहुत कम दबाव था और शासन की बागडोर प्रायः स्वयं उन्हीं के हाथ में थी। परन्तु वे स्पष्ट रूप से पार्लियामेण्ट के अधिकारों पर कोई आघात न करते थे। शासन के समस्त कार्यों में पार्लियामेण्ट की स्वीकृति होती थी और प्रत्येक ट्यूडर शासक ने अपने काल के सब राजनियमों में पार्लियामेण्ट की स्वीकृति की छाप लगवाई। पार्लियामेण्ट की दोनों सभाओं में उनके समर्थकों की संख्या अधिक थी और इसीलिये वे जो चाहते थे पार्लियामेण्ट से करा लेते थे। मठों के टूट जाने पर लार्ड-सभा में मठों के अध्यक्षों के स्थान पर हेनरी अष्टम ने उन ज़मींदारों को भर दिया जो राजा ही की कृपा से धनवान् हुए थे। इसके अतिरिक्त लोक-सभा के चुनाव में छोटे-छोटे ग्रामों को प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दे दिया गया। इन छोटे स्थानों के अनपढ़ प्रतिनिधि अधिकतर राजा ही की हाँ में हाँ मिलाते थे, जिसके कारण पार्लियामेण्ट की नीति पर राजाओं का पूर्ण प्रभाव होता था।

स्वेच्छाचारी शासन के कारण—

ट्यूडर शासकों को स्वेच्छाचारी बनने तथा पार्लियामेण्ट को अपनी मुट्ठी में दबाये रखने में बहुत-सी सुविधाएँ थीं। ज़नता अभी गुलाबों के युद्ध-काल की अशान्ति तथा अराजकता को न भूली थी, जिसके कारण देशवासी एक शक्तिशाली शासक को पूर्ण अधिकार देने को तैयार थे। इस काल में इंगलैंड को विदेशी शत्रु से भी भय था, और ऐसे समय में जनता का ध्यान राजनैतिक अधिकारों की ओर आकर्षित हो ही न सकता था। मध्यकाल में राजा पर अधिकतर बैरनों ही का प्रभाव होता था, और पार्लियामेण्ट में भी उन्हीं की तूती बोलती थी। परन्तु गुलाबों के युद्ध में बैरनों के बहुत-से कुटुम्ब नष्ट हो गये, जिसके कारण राजाओं के स्वेच्छाचार को रोकने का कोई साधन न रहा। बैरनों के अतिरिक्त जो थोड़ा बहुत ज़ोर चर्च के बड़े पादरियों का था, वह भी धर्म-सुधार की लहर के प्रभाव में समाप्त हुआ। मध्य काल में धन की स्वीकृति का अधिकार पार्लियामेण्ट ने प्राप्त कर लिया था, और इसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्यूडर काल के स्त्री-पुरुष श्रौर उनका पहनावा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिकार पर पार्लियामेण्ट की शक्ति निर्भर थी। परन्तु ट्यूडर शासकों ने कई प्रकार से धन एकत्रित करके अपने राजकोष को इतना बढ़ा लिया था कि उन्हें धन की स्वीकृति के लिए पार्लियामेण्ट के बुलाने की बहुत कम आवश्यकता पड़ती थी, जिसके कारण पार्लियामेण्ट के सदस्यों को परस्पर मिलने तथा अपनी शक्ति बढ़ाने का बहुत कम अवसर मिलता था।

स्वेच्छाचारी शासन का प्रभाव—

ट्यूडर काल के स्वेच्छाचारी शासन से देश को लाभ ही हुआ। देश में शान्ति स्थापित हुई और ट्यूडर शासकों की योग्यता के कारण विदेशी शत्रु भी इंगलैंड का कुछ बिगाड़ न सके। पार्लियामेण्ट को भी इन योग्य शासकों से बहुत कुछ सीखने का अवसर प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त राजा सच्चे देश-हितैषी थे, और स्वेच्छाचारी होने पर भी प्रत्येक कार्य करने से पहले प्रजा के विचारों की भलीभाँति परीक्षा कर लेते थे। इस कारण राजा, पार्लियामेण्ट तथा प्रजा में मत-भेद की बहुत कम सम्भावना होती थी, और शासन का समस्त कार्य सुगमता-पूर्वक चलता था।

पार्लियामेण्ट की उन्नति के लक्षण—

ट्यूडर काल में राजाओं के स्वेच्छाचारी होने पर भी पार्लियामेण्ट को धीरे-धीरे अपने अधिकारों का ज्ञान होता जाता था, और उसकी भावी शक्ति के साधन भी प्रस्तुत होते जा रहे थे। इसके लक्षण रानी एलिज़बेथ के शासन काल के अन्तिम दिनों में दिखाई पड़ने लगे थे। रानी ने कुछ व्यापारियों पर विशेष कृपा करने के लिये उन्हें कई वस्तुओं के व्यापार के पूरे ठेके (Monopolies) दे दिये थे। इसके कारण इन वस्तुओं का मूल्य बढ़ने लगा, जिसे देखकर पार्लियामेण्ट ने इसका विरोध किया। अन्त में रानी को यह सब ठेके हटाने पड़े, क्योंकि वह पार्लियामेण्ट से झगड़ा मोल लेना उचित न समझती थी। इस प्रकार पार्लियामेण्ट की शक्ति धीरे-धीरे बराबर बढ़ती जाती थी, और स्टुअर्ट काल में इसी शक्ति ने भयंकर रूप धारण किया।

(ङ) समुद्र यात्राएँ तथा अँग्रेजी नाविक

नये मार्गों की खोज

प्राचीन काल में रेशम, स्वर्ण, मसाले आदि बहुत-सी शौक़ की वस्तुएँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यूरोप के व्यापारी भारतवर्ष तथा चीन आदि पूर्वी देशों से मँगाते थे। रास्ते का खर्च अधिक बैठने के कारण यूरोप तक पहुँचने में उन वस्तुओं का मूल्य कई गुना हो जाता था। सन् १४५३ के पश्चात् जब कि तुर्कों ने कुस्तुनतुनिया पर अधिकार कर लिया यह मार्ग भी यूरोप वालों के लिये बन्द हो गये। अतः यूरोप वालों ने नये मार्गों को खोजना आरम्भ किया। कुतुबनुमा के आविष्कार के पश्चात् यूरोपीय नाविक निर्भय होकर समुद्रों में भ्रमण करने लगे और शीघ्र ही उन्होंने नये नये व्यापारिक मार्ग और नये-नये देश खोज निकाले। स्पेन से चलकर कोलम्बस ने अटलांटिक महासागर को पार किया और अमेरिका तथा वेस्ट इन्डीज़ का पता लगा लिया। इसी प्रकार पुर्तगाल से चलकर वास्को-डि-गामा ने अफ्रीका के महाद्वीप का चक्कर लगाया और भारतवर्ष पहुँचने का मार्ग खोज निकाला। इन प्रदेशों से व्यापार करके स्पेन तथा पुर्तगाल मालामाल हो गये और इनका व्यापार तथा साम्राज्य दिन-प्रति-दिन उन्नति करता रहा। पोप ने भी अपनी आज्ञा निकाली कि पूर्वी प्रदेशों तथा उन प्रदेशों को जाने वाले जल-मार्गों पर पुर्तगाल का अधिकार रहेगा, और पश्चिमी प्रदेशों तथा वहाँ के जल-मार्गों पर स्पेन वालों का अधिकार रहेगा। उसी समय मार्टिन फ्राबिशर (Martin Frobisher) आदि कुछ अँग्रेज़ों ने भी भारतवर्ष पहुँचने के लिये नये मार्गों को तलाश करने का प्रयत्न किया, परन्तु वे असफल रहे।

जान कैबट—

अँग्रेज़ी नाविक भारतवर्ष तो न पहुँच सके, परन्तु उन्होंने अन्य प्रदेशों में अपने पैर जमाने आरम्भ किये। हेनरी सप्तम ने जान कैबट (John Cabot) नामक एक इटेलियन नाविक को बहुत-सा धन देकर उत्तरी अमेरिका भेजा जहाँ उसने दो यात्रा करके न्यू-फाउंडलैंड तथा उत्तरी अमेरिका के कुछ भाग को तलाश करके वहाँ अँग्रेज़ी झण्डा गाड़ दिया। इसके पश्चात् इंगलैंड ने न तो इस नये प्रदेश को बसाने की चिन्ता की और न अन्य प्रदेशों की ओर अपना ध्यान दिया। परन्तु अँग्रेज़ी नाविकों तथा व्यापारियों की यह इच्छा अवश्य बनी रही कि विदेशों से किसी प्रकार धन लाया जाय, अतः वे इधर-उधर छोटी-छोटी यात्राएँ करते रहे। परन्तु एलिज़बेथ के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्य-काल में अँग्रेज़ों का ध्यान व्यापार तथा जल-शक्ति की ओर आकर्षित हुआ। स्पेन वालों के धन से लदे हुए जहाज़ अँग्रेज़ों की आँखों में खटकने लगे, अतः अँग्रेज़ी नाविकों ने स्पेनी जहाज़ों तथा अँग्रेज़ी उपनिवेशों को लूटना आरम्भ किया।

जान हाकिंस—

जान हाकिंस (John Hawkins) पहला अँग्रेज़ी नाविक था जिसने स्पेनी जहाज़ों को लूटना आरम्भ किया। प्रारम्भ में सन् १५६२ में उसने अफ्रीका से कुछ दास लिये और उन्हें वैस्ट इंडीज़ में बसने वाले स्पेनियों के हाथ बेच दिये। इस प्रकार दासों का यह घृणित व्यापार आरंभ हुआ। इस यात्रा में जो उसने धन कमाया था उससे उसने चमड़ा मोल लिया और स्पेन बेचने के लिये भेजा। स्पेन के राजा फिलिप द्वितीय ने हाकिंस के चमड़े को ज़ब्त कर लिया, क्योंकि उसके विचार में हाकिंस को स्पेन के समुद्री मार्गों पर भ्रमण करने का अधिकार ही नहीं था। हाकिंस चिढ़ गया और अब उसने बदला लेने की ठानी। वह दूसरी बार फिर अफ्रीका से दास ले जाकर अमेरिका बेच आया। इस बार उसने अपने जहाज़ों को तोपों से सुसज्जित किया था। इस बार एलिज़बेथ ने प्रसन्न होकर उसे दरबार में अपने साथ भोजन करने के लिये निमंत्रित किया। हाकिंस ने फिर अमेरिका की तीसरी यात्रा की और इस बार फ्रान्सिस ड्रेक को भी अपने साथ ले गया। इस बार धोखे से स्पेनी जहाज़ों ने हाकिंस के जहाज़ों को नष्ट कर दिया, और हाकिंस तथा ड्रेक जान बचाकर किसी न किसी प्रकार इंगलैंड वापिस आये।

सर फ्रान्सिस ड्रेक--

इस घटना से हाकिंस तथा ड्रेक को स्पेन के प्रति घृणा हो गई और अब उन्होंने स्पेन की सामुद्रिक सत्ता नष्ट करने का प्रण किया। ड्रेक स्वयं अमेरिका गया और सोने चाँदी से लदे हुए स्पेनी जहाज़ों पर आक्रमण करके उन्हें लूट लिया। इस समय उसने पनामा (Panama) के थल डमरू-मध्य को पैदल पार करके पैसिफिक महासागर के दर्शन किये। कुछ वर्ष पश्चात् वह अमेरिका के पश्चिमी किनारे पर पहुँचा और फिर उसने पैसिफिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

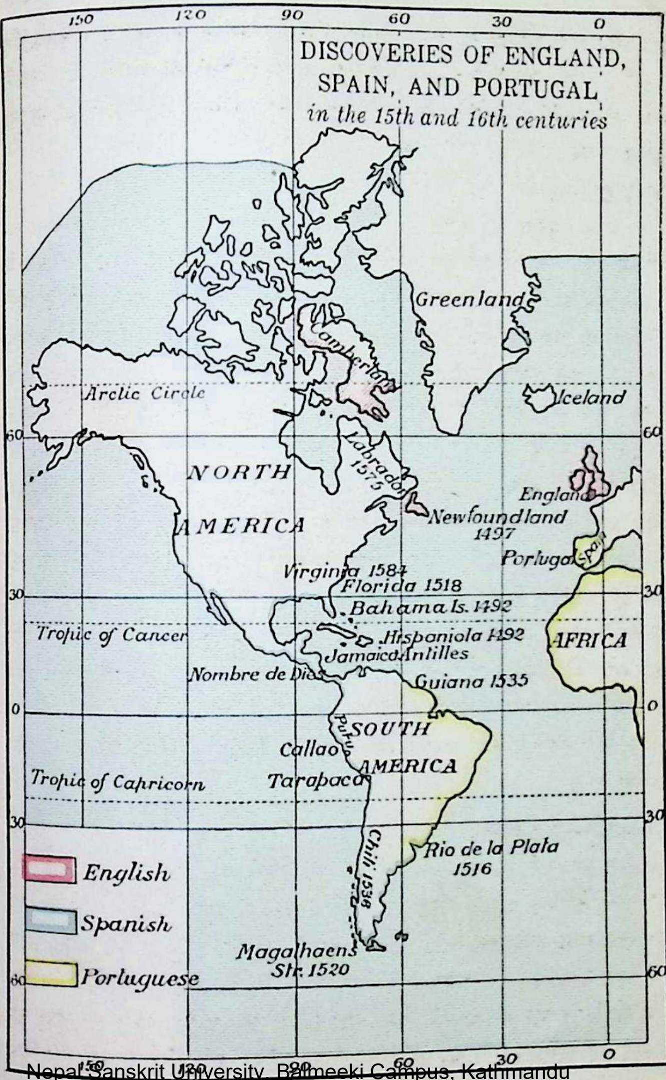

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महासागर को पार किया, और इस प्रकार पृथ्वी का चक्कर लगाकर तीन वर्ष में इंगलैंड पहुँचा। एलिज़बेथ ने प्रसन्न होकर उसे नाइट (Knight) बना दिया और वह अब सर फ्रान्सिस ड्रेक के नाम से प्रसिद्ध हुआ। एलिज़बेथ के उत्तेजित करने पर ड्रेक वेस्ट इन्डीज़ गया और वहाँ उसने कई स्पेनी जहाज़ तथा बन्दरगाहें नष्ट कीं। इसी प्रकार अन्य अँग्रेज़ी नाविक भी सामुद्रिक जीवन का अच्छा अनुभव प्राप्त कर रहे थे। स्पेनिश आर्मेडा को नष्ट करना हार्किंस, ड्रेक तथा अन्य इन अँग्रेज़ी नाविकों का ही काम था।

औपनिवेशिक तथा व्यापारिक उन्नति का उद्योग--

स्पेनिश आर्मेडा की पराजय के पश्चात् समुद्र पर स्पेन की सत्ता नष्ट हुई और इंगलैंड के लिये नये उपनिवेश तथा व्यापारिक उन्नति के द्वार खुल गये। सर वाल्टर रैले (Sir Walter Raleigh) ने इसके बाद कई बार स्पेनियों को समुद्र पर तंग किया। उसने रानी एलिज़बेथ से अमेरिका जाकर उपनिवेश बसाने की आज्ञा मांगी। उसने उत्तरी अमेरिका में पहला उपनिवेश बसाया और कुमारी रानी एलिज़बेथ के नाम पर उसका नाम वर्जीनिया (Virginia) रखा। रैले अमेरिका से तम्बाकू और आलू लाया और उनको यूरोप में प्रचलित किये। इस उपनिवेश के बसाने का प्रयत्न सफल न हुआ, क्योंकि वहाँ बसने वाले अँग्रेज़ों को एक तो खाने-पीने का कष्ट रहता था, दूसरे वहाँ की जंगली जातियों के आक्रमण का आये दिन भय लगा रहता था। अतः फ्रान्सिस ड्रेक गया और उन अँग्रेज़ों को वहाँ से लौटा लाया। फिर बीस वर्ष पश्चात् राजा जेम्स प्रथम के राज्य-काल में यह उपनिवेश बसाया गया। इस प्रकार अँग्रेज़ी नाविकों का उत्साह बढ़ता गया, और उन्हीं लोगों के उद्योग से विदेशों से व्यापार करने के लिये कई कम्पनियाँ स्थापित हुईं। सन् १६०० में भारतवर्ष से व्यापार करने के लिये ईस्ट इंडिया कम्पनी (East India Company) की भी स्थापना हुई।

Exercises.

1. Give an account of England's relations with Scotland during the Tudor Period.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. What was the Irish problem? How did the Tudors try to meet it?
3. Give an account of the progress of the Reformation during the Tudor Period.
4. Describe the various steps by which the power of the Pope was overthrown in England.
5. Give an account of the relations of the Tudor Sovereigns with their Parliaments.
6. Describe the maritime and commercial activities of England in the Tudor Period.
7. Write short notes on John Hawkins, and Sir Francis Drake.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ट्यूडर वंश के शासक

हेनरी सप्तम	१४८५—१५०९
हेनरी अष्टम	१५०९—१५४७
एडवर्ड षष्ठ	१५४७—१५५३
मेरी ट्यूडर	१५५३—१५५८
रानी एलिज़बेथ	१५५८—१६०३

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

U. P. HIGH SCHOOL PAPERS.

TUDOR PERIOD.

1925.

1. Why is Elizabeth considered to be one of the greatest sovereigns of England? Mention some of the principal events in her reign.

1926.

1. How did Henry VII establish a strong monarchy in England?
2. How did the Protestant reformation begin in England and how did Henry VIII effect a breach with the Pope of Rome?

1927.

1. What do you know of Mary, Queen of Scots? How is she connected with the history of England?
2. Give a short account of the progress of the Reformation in England during the reign of Henry VIII.

1928.

1. Describe the character of Queen Elizabeth and briefly mention the principal events of her reign.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1929.

1. Sketch the career of Cardinal Wolsey, and describe the cause of his fall.
2. Describe the relation between the monarch and the Parliaments during the period 1485-1603.

1930.

1. Give a short account of the measures by which the Reformation was completed in England.

1931.

1. Describe the relations of the Tudor sovereigns with their Parliaments.
2. Sketch the character of Queen Elizabeth and describe her religious policy.
3. Give an account of the relations of England with Spain during the period from 1550 to 1625.

1932.

1. Describe the maritime and commercial activities of England in the Tudor period. What advantages did the country gain by these activities ?
2. Why did Henry VIII break with the Pope of Rome ? How was the breach affected ? What were its results ?

1933.

1. Why is Queen Elizabeth's reign regarded as the golden age of English History ? Explain fully.

1934.

1. By what measures did the Tudor Monarchs seek to promote the prosperity of their people, and with what success ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Describe the religious settlement of Elizabeth and state the measures taken to maintain it. How far did it prove acceptable to the people ?

1935.

1. What dangers threatened England from Spain during the latter Tudor period, and how were they averted ?
2. Who were the dissenters ? What disabilities were imposed on them and how were they subsequently removed ?

1936

1. What do you understand by the Reformation ? Briefly describe the course of the Reformation in England upto 1547.
2. Give an account of the life of Mary, Queen of Scots. What influence did she exercise on the history of England during the reign of Queen Elizabeth ?

1937.

1. Give an account of the reign of Edward VI.
2. Describe Queen Elizabeth's character, and briefly mention the chief events of her reign.

1938

1. Who was Mary Tudor ? Give an account of her reign.
2. Fully discuss the causes of friction between England and Spain during the reign of Elizabeth, and point out the causes of the defeat of the Armada.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. Explain the reasons which led to the etablishment of a strong monarchy in England during the Tudor period.

1939.

1. What did Henry VII do for England ?
2. What do you understand by the Reformation ? What were the causes which led to its introduction in England.
3. Sketch the relations between England and scotland during the Tudor Period.

RAJPUTANA HIGH SCHOOL PAPERS.

1931

1. Describe the ways and methods adopted by Henry VII to break down the power of the nobles.
2. Describe, in short, the measure adopted by Elizabeth to bring about a religious settlement. To what extent did she succeed ?

1932.

1. What do you understand by the term Reformation ? Trace briefly the history of the movement in England in the sixteenth century.

1933.

1. How did the geographical discoveries of the 15th century affect England ? Give a brief account of the part taken by Englishmen in these discoveries.
2. Explain the difficulties that Queen Elizabeth

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

had to face at her accession. How did she overcome them?

1934

1. What led to the establishment of the strong monarchy in England in the Tudor period?
2. Describe the progress of the Reformation in England in the reign of Henry VIII.
3. Summarize the main events of the reign of Elizabeth.

1935.

1. Trace the course the Reformation took in England and give its main features.
2. Summarize the chief events of the reign of Henry VII showing what he did to weaken the power of the Barons.

1936.

1. How did the first two Tudor Kings strengthen their power?
2. Describe briefly the religious settlement of Elizabeth.

1937.

1. How did Henry VII establish a strong monarchy?
2. Describe the progress of the Reformation Movement in England.

1938.

1. Explain the importance of the reign of Elizabeth in English History.

1939.

1. Describe briefly the progress of the Reformation Movement in England.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

TIME CHART OF THE TUDOR PERIOD—1485 to 1603.

Period of Reign.	Kings.	Political.	Social.	Religious.	Foreign Relations	Overseas
1485 to 1509	Henry VII	Bosworth 1485 Marriage with the Yorkist Princess, Elizabeth. Simnel's Rebellion 1487. Warbeck's Rebellion 1492. Suppression of the Barons. Court of Star Chamber. Wealth amassed. Peace and order restored in England.	All laws of the country written in English. Woolen trade increased.		Henry's daughter Margaret married to James IV of Scotland. Prince Arthur married to Catherine, the princess of Spain. Commercial Treaty with Flanders. Treaty of Etaples between England and France.	Columbus discovered America 1492. Vasco-da-Gama reached India 1498. John Cabot reached New Foundland 1497.
1509 to 1547	Henry VIII	Henry's Marriage with Catherine. Henry's Chief Ministers :— 1. Wolsey. 2. Sir Thomas Moore.	New Learning spread in England. New schools and colleges opened.	Martin Luther preached against the Pope. Henry, 'Defender of the Faith. Henry wanted	Wars with France and Scotland. Battle of Spurs 1513. Flodden Field 1513.	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

Period of Reign.	Kings.	Political.	Social.	Religious.	Foreign Relations.	Overseas.
		3. Cromwell. Henry assumed the title of the "King of Ireland". English Laws introduced in Wales.	Sheep farms increased. Population nearly doubled. Prices rose. Beggary and unemployment increased.	to divorce Catherine 1527. Quarrel with the Pope. Catherine divorced and marriage with Anne. Boleyn. Act of Supremacy. Pilgrimage of Grace. Bible translated into English.	Balance of Power. Field of Cloth of Gold. Solway Moss 1542.	
1547 to 1553	Edward VI	Somerset ruled. Rebellion in Devonshire and Norfolk, and Somerset murdered. Northumberland regent.	Grammar schools opened. Peasants' miserable condition.	Government supports Protestant Religion. English Prayer Book. Act of 42 Articles.	Pinkie 1547.	
1553 to 1558	Mary Tudor.	Wyatts' Rebellion. Mary married	Social discontent.	Catholic Religion restored. Pope again	War with France and loss of Calais.	
		Philip of Spain.		Supreme Head of the Church.		

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1558		Mary married		gion restored. Pope again	France and loss of Calais.	
		Philip of Spain.		Supreme Head of the Church. Persecution of the Protestants.		
1558 to 1603	Elizabeth	Mary Queen of Scotland a state prisoner in England. Plots againt Elizabeth. Mary Q. of Scots executed 1587. Irish Rebellion and complete annexation of Ireland. Peace and order in the Country. Parliament now began to assert its strength. Monopolies opposed by Parliament.	Well-ventilated houses began to be constructed. Gay clothes in fashion. Farming improved. New vegetables and fruits grown. Tobacco and potato brought from America. New trades inroduced by the Protestants of France and Netherlands, who settled in England. Poor Laws. Shakespeare, Spenser, Marlow, and other great writers	Anglican Church established. Elizabeth 'Governor of the Church' 1559. Prayer-Book of Edward VI re-introduced. Act of 39 Articles. Puritans and Catholics harshly treated. Presbyterian Church in Scotland.	Leith 1560. Danger from Spain and France. Elizabeth took advantage of the rivalry between France and Spain, and helped their rebels. Treaty with France. Spanish ships attacked. Defeat of the Armada 1588.	Frobisher searched for North West Passage. Hawkins began Slave Trade. Voyages of Drake and Walter Raleigh. Attempts to found colonies. East India Company founded 1600.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

This book is belongs to
Mr. Ramji Prasad
Private candidate of cla
IX th Meston High school
Ram nagar Benares Sta
Date 3/7/46

स्टुअर्ट काल
(१६०३—१७१४)

अ०—१४

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अठारहवाँ परिच्छेद

स्टुअर्ट काल की विशेषताएँ

जिस प्रकार ट्यूडर काल का यह महत्त्व है कि उसके आरम्भ के समय से आधुनिक इंगलैंड आरम्भ होता है, उसी प्रकार स्टुअर्ट काल का सबसे बड़ा महत्त्व यह है कि इस काल में राजनैतिक प्रश्नों का निबटारा हुआ। ट्यूडर राजाओं को विशेषकर धर्म का रूप निर्णय करने की ओर ध्यान देना पड़ा था; उसी प्रकार स्टुअर्ट राजाओं को राजनैतिक समस्याओं को सुलझाने तथा जनता के अधिकारों को स्पष्ट रूप देने के प्रश्न का सामना करना पड़ा। इस काल की मुख्य-मुख्य विशेषताओं का नीचे उल्लेख किया जाता है—

राजा तथा प्रजा में मतभेद—

ट्यूडर काल में राजा तथा प्रजा में अधिकतर सहानुभूति रही, परन्तु स्टुअर्ट काल में दोनों में मतभेद रहने लगा। स्टुअर्ट राजा ट्यूडर राजाओं की भाँति निरंकुश शासन करना चाहते थे, परन्तु उन्होंने यह न सोचा कि देश की स्थिति में आकाश-पाताल का अन्तर हो गया है। ट्यूडर राजाओं ने गुलाबों के युद्ध की गड़बड़ी के पश्चात् देश में शान्ति स्थापित की थी, जिसके कारण प्रजा उनकी आभारी थी और उनकी निरंकुशता को भी सहन करने को तैयार थी। इसके अतिरिक्त ट्यूडर काल में विदेशी आक्रमणों का हर घड़ी भय लगा रहता था, जिससे लोगों का ध्यान राजनैतिक समस्याओं की ओर न जाता था। इसके विपरीत स्टुअर्ट काल में विदेशी शत्रुओं का कोई भय न था, और देशवासी अब राजनैतिक सुधारों के लिये आन्दोलन करने लगे थे। विद्या तथा व्यापार की उन्नति के कारण जनता की आँखें भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अब खुलने लगी थीं, ऐसी दशा में स्टुअर्ट राजाओं का यह आशा करना
था कि सत्रहवीं शताब्दी की जनता भी सोलहवीं शताब्दी की भाँति निरं
शासन को सहन किये जायगी। स्थिति अब ऐसी हो गयी थी कि यदि
समय हेनरी अष्टम तथा एलिज़बेथ भी होते तो उनको भी प्रजा के स
नवना पड़ता और अपनी निरंकुशता को त्यागना पड़ता।

पार्लियामेण्ट के अधिकारों का आन्दोलन --

स्टुअर्ट काल में आरम्भ ही से पार्लियामेण्ट के अधिकारों का आन्दो
उठ खड़ा हुआ, और धीरे-धीरे वह भयंकर रूप धारण करता गया।
समय बहुत से राजनैतिक प्रश्नों का निपटारा होना था। राज-कर लगाने
अधिकार, राज्य-कर्मचारियों की देख-भाल, देश की परराष्ट्र नीति निर्धा
करना, प्रजा की स्वतन्त्रता की रक्षा करना इत्यादि बहुत-से प्रश्न ऐसे
जिनका सुगमता पूर्वक कोई निश्चित निपटारा होना कठिन था। पार्लियामे
ने पहले राज-नियमों में संशोधन करके इन सब प्रश्नों का निपटारा क
चाहा। परन्तु स्टुअर्ट राजा दैवी अधिकार के पक्षपाती थे, अतएव के
नियमों में संशोधन करके उनकी निरंकुशता का अन्त कर देना असम्भव थ
इसी कारण गृह-युद्ध की नौबत आई और जनता के अधिकारों के नाम
चार्ल्स प्रथम को बलि चढ़ाया गया, तथा आगे चलकर जेम्स द्वितीय
देश-निकाला दिया गया। अन्त में पार्लियामेण्ट ही की विजय हुई और दे
में नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government)
स्थापना हुई। सत्रहवीं और सोलहवीं शताब्दी में कितना अन्तर था इस
यही प्रत्यक्ष एक महा प्रमाण है कि जो पार्लियामेण्ट ट्यूडर राजाओं के सम्मु
आँख उठाकर भी देखने का साहस न रखती थी, और ट्यूडर राजा जो चाह
उससे करा लेते थे, वही पार्लियामेण्ट अब इतनी शक्तिशाली हो गई कि उस
स्वयं लड़कर अपने अधिकार प्राप्त किये और राज्य की सारी बागडोर धी
धीरे अपने हाथ में ले ली। नियमानुमोदित शासन की स्थापना के लि
स्टुअर्ट काल इंगलैंड के राजनैतिक इतिहास में स्मरणीय रहेगा।

धार्मिक दलबन्दी—

ट्यूडर काल में "धर्म-सुधार" (Reformation) की लहर फैल चु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

थी, और उसके परिणाम-स्वरूप इंगलैंड के चर्च में भिन्न-भिन्न प्रकार के संशोधन हो चुके थे। इस कारण देश में अब कई धार्मिक सम्प्रदाय प्रचलित हो गये, और इन सम्प्रदायों ने स्टुअर्ट काल में अपना संगठन करना आरंभ किया। इस प्रकार धार्मिक दलबन्दी आरंभ हुई और राजनैतिक बखेड़ों के साथ धार्मिक झगड़े भी चलते रहे। कभी एक और कभी दूसरे दल की शक्ति प्रधान हुई। जिस दल की शक्ति प्रधान हो जाती थी वह अन्य धार्मिक सम्प्रदायों पर अत्याचार करने लगता था। इस काल में धार्मिक सहन-शीलता (Religious Toleration) का बिल्कुल अभाव था, और लोगों ने अभी यह पाठ नहीं सीखा था कि धार्मिक मतभेद रहते हुए भी परस्पर सहयोग होना संभव है। पूरी एक शताब्दी के पश्चात् सन् १६८९ में धार्मिक सहन-शीलता का नियम (Toleration Act) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार धार्मिक बखेड़ों का अन्त हुआ और केथलिकों के अतिरिक्त अन्य सब प्रकार के प्रोटेस्टेण्ट धर्मावलम्बियों को पूर्ण स्वतन्त्रता दे दी गई कि वे जिस प्रथा से चाहें ईश्वर की आराधना करें।

परराष्ट्र नीति—

ट्यूडर राजाओं की परराष्ट्र नीति का उद्देश्य सदा देश के हित पर निर्भर रहा, और उन्होंने अपनी नीति-निपुणता के कारण इंगलैंड का सम्मान देशान्तरों में बढ़ाया। परन्तु स्टुअर्ट राजाओं की परराष्ट्र नीति अधिकतर डाँवाडोल रही, और कई अवसरों पर वे इतने स्वार्थी हो गये कि उन्होंने विदेशी राजाओं से आर्थिक सहायता पाने के लालच से देश-हित की ओर तनक भी ध्यान न दिया। देशवासी फ्रान्स तथा स्पेन से घृणा करते थे, क्योंकि ये दोनों देश पक्के केथलिक थे; और इनके विषय में यह भी समाचार मिलते रहते थे कि वे प्रोटेस्टेण्टों के प्रति बहुत अत्याचार कर रहे हैं, परन्तु जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम ने प्रजा का विरोध रहते हुए भी स्पेन से मित्रता करने की चेष्टा की; और आगे चलकर इसी प्रकार चार्ल्स द्वितीय और जेम्स द्वितीय ने फ्रांस के राजा लुई चतुर्दश को अपना मित्र बनाया। इस मतभेद के कारण प्रजा की सहानुभूति स्टुअर्ट राजाओं की परराष्ट्र नीति के प्रति कभी न हो सकी। केवल स्टुअर्ट काल के अन्तिम वर्षों में जाकर विलियम तथा ऐन के राज्य-काल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में प्रजा तथा राजा परराष्ट्र नीति के विषय में एकमत हुए, जिसका बड़ा अ परिणाम निकला। इंगलैंड ने अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में अपने खोए हुए सम्मा को पुनः प्राप्त किया, जिससे देश को फिर वही गौरव मिला जो ऐलिज़ा के समय में स्थापित हो चुका था।

ब्रिटिश साम्राज्य का प्रारम्भ—

स्टुअर्ट काल की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि इसी काल वर्त्तमान अँग्रेज़ी साम्राज्य की नींव पड़ी। सत्रहवीं शताब्दी में अँग्रे ने व्यापार बढ़ाने तथा नए उपनिवेश स्थापित करने के कार्य में बड़ी उन्न की। इसी काल में अमेरिका के अंग्रेज़ी उपनिवेशों की स्थापना हुई, अफ्री में अँग्रेज़ी व्यापार बढ़ा, और भारतवर्ष में व्यापारिक कोठियाँ बनाई ग आगे चल कर हम देखेंगे कि इन्हीं सबके द्वारा अँग्रेज़ी साम्राज्य अमेरि अफ्रीका तथा भारतवर्ष में फैला, और व्यापार तथा उपनिवेशों ही के स ब्रिटिश साम्राज्य की उन्नति हुई। अँग्रेज़ी नाविकों ने बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्र करना ट्यूडर काल ही में आरंभ कर दिया था, परन्तु इसका स्पष्ट परिणा स्टुअर्ट काल में आकर विदित हुआ। अँग्रेज़ों का अब बहुत-से समुद्रों अधिकार जम गया, और उनकी जल-शक्ति दिन-प्रति-दिन बढ़ती गई। अपनी जल-शक्ति ही के कारण वर्त्तमान काल में अँग्रेज़ इतने बड़े साम्रा को सँभाले हुए हैं। स्टुअर्ट काल में इस साम्राज्य का आरंभ मात्र ही था परन्तु बहुत-से ऐसे लक्षण प्रस्तुत होने लगे थे जिनसे यह अनुमान होने लग था कि व्यापारिक तथा औपनिवेशिक प्रतिद्वन्द्विता में यूरोप की अन्य जाति की अपेक्षा अँग्रेज़ों ही की विजय होगी, और साम्राज्य की भाग-दौड़ में इंगलैं ही सबसे आगे रहेगा।

Exercises

1. Mention the chief characteristics for which the Stuart Period is famous.
2. Compare the position of England in the Stuart Period with that in the Tudor times.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जाने की अधिक संभावना थी। जेम्स के राजा होते ही प्यूरिटन सम्प्रदाय वालों ने एक प्रार्थना पत्र (Millenary Petition) जिस पर एक सहस्र हस्ताक्षर थे उसके सम्मुख पेश किया। इसमें उन्होंने यह प्रार्थना की कि ऐंग्लिकन चर्च की उपासना-विधि तथा प्रार्थना-पुस्तक में कुछ और संशोधन कर दिया जाय तो हम उसमें सम्मिलित होने के लिये तैयार हैं। इस प्रश्न पर विचार करने के लिये हेम्पटन कोर्ट (Hampton Court) में एक बहुत बड़ी धार्मिक सभा सन् १६०४ में बुलाई गई, जिसमें ऐंग्लिकन चर्च तथा प्यूरिटन सम्प्रदाय के मुख्य-मुख्य नेता सम्मिलित थे। इस सभा में बहुत कुछ वाद विवाद हुआ; परन्तु अन्त में कोई निश्चित समझौता नहीं हो सका, और जेम्स प्रथम ने प्यूरिटनों की इस माँग को कि चर्च के पदाधिकारी प्रजा के चुने हुए होने चाहिये स्वीकार करने से साफ़ इन्कार कर दिया। उसको भय था कि धार्मिक क्षेत्र में चुनाव की प्रथा प्रचलित हो जाने पर प्रजा राजनैतिक क्षेत्र में भी चुनाव का आन्दोलन करेगी जिससे राजा की स्थिति पर बड़ा प्रभाव पड़ेगा। उसका कहना था (No Bishop, no King) कि आज चर्च से बिशप हटे तो कल राजा को भी हटना होगा। ऐंग्लिकन चर्च के बिशपों ने भी राजा के इस विचार का समर्थन किया। इसी प्रश्न पर यह सभा विसर्जित हुई और प्यूरिटनों के ऐंग्लिकन चर्च से मिल जाने की आशा सदैव के लिये जाती रही। प्यूरिटन दल वालों के साथ कठोरता का व्यवहार किया गया और तंगआकर वे देश तक छोड़ कर चले जाने का विचार करने लगे। अन्त में कुछ तो हालैंड चले गये और सन् १६२० में १२० प्यूरिटन प्लाईमथ के बन्दरगाह से चल कर उत्तरी अमेरिका पहुँचे और उन्होंने न्यू-इंगलैंड नाम का उपनिवेश बसाया। ये लोग धार्मिक यात्रियों (Pilgrim Fathers) के नाम से प्रसिद्ध हुए और अपने नये देश में वे स्वतन्त्रता पूर्वक ईश्वर की पूजा-भक्ति करने लगे। इस सभा का केवल एक अच्छा परिणाम यह निकला कि बाइबिल का अँग्रेज़ी भाषा में एक प्रमाणित अनुवाद किया गया जो अब तक प्रचलित है। यह काम ४७ विद्वानों को सौंपा गया था और सात वर्ष में जाकर सन् १६११ में समाप्त हुआ।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बारूद का षड्यन्त्र--

धर्म-सुधार की उन्नति के कारण केथलिकों की स्थिति दिन-प्रति-दिन बिगड़ती जा रही थी। जेम्स प्रथम से उन्हें यह आशा थी कि अपनी माता के केथलिक होने के कारण वह उनके साथ सहानुभूति करेगा। परन्तु उनकी आशा पूर्ण न हुई। निराश होकर कुछ केथलिकों ने सन् १६०५ में एक भीषण षड्यन्त्र रचा जो बारूद के षड्यन्त्र (Gunpowder Plot) के नाम से प्रसिद्ध है; और पार्लियामेण्ट भवन के नीचे सुरंग खोद कर उसे बारूद से भर दिया और प्रबन्ध यह किया कि पार्लियामेण्ट की पहली बैठक के अवसर पर राजा, मन्त्री तथा पार्लियामेण्ट के सदस्य सबको बारूद में आग लगा कर उड़ा दिया जाय। शीघ्र ही इस षड्यन्त्र का सारा भेद खुल गया और गाई फाक्स (Guy Fawkes) नामक एक सैनिक जिसको पार्लियामेण्ट की सुरंग में आग लगाने का कार्य सौंपा गया था वहीं पकड़ा गया। इस प्रकार केथलिकों का प्रयत्न विफल हुआ। उनके बहुत-से नेताओं को प्राण-दण्ड मिला, और अब पार्लियामेण्ट ने उनके विरुद्ध और भी अधिक कठोर नियम बना दिये। अब वे लन्दन में नहीं रह सकते थे, और न वकील अथवा डाक्टर बन सकते थे। उस दिन से इस प्रकार के षड्यन्त्रों के भय को दूर करने के लिये पार्लियामेण्ट की बैठक से पहले पार्लियामेण्ट भवन को प्रत्येक बार अच्छी तरह तलाश कर लिया जाता है।

स्काटलैंड का धार्मिक प्रबन्ध--

इंगलैंड की भाँति जेम्स को स्काटलैंड में भी धार्मिक बखेड़ों का सामना करना पड़ा। वह स्काटलैंड के प्रेसबीटीरियन चर्च (Presbiterian Church) से पहले ही तंग आचुका था और किसी प्रकार वहाँ के चर्च को भी अपने अधिकार में करना चाहता था। इस सम्प्रदाय के नियमानुसार राजा की ओर से बिशप नहीं रक्खे जाते थे, परन्तु जनता स्वयं निर्वाचन द्वारा प्रत्येक गिर्जे में अपने पदाधिकारी (Presbyters) नियुक्त करती थी। इंगलैंड में आने के पश्चात् जेम्स ने ऐंग्लिकन चर्च की भाँति स्काटलैंड में भी बिशप नियुक्त किये। स्काटलैंड वालों ने बिशप नियुक्त करने के सिद्धांत का विरोध किया, परन्तु जेम्स ने उनकी तनक न सुनी और अपनी मनमानी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की। इस प्रकार जेम्स ने स्काटलैंड निवासियों को भी अप्रसन्न कर दिया। आगे चलकर हम देखेंगे कि जेम्स की इस नीति का कितना बुरा परिणाम निकला।

यूरोप का तीस वर्षीय युद्ध—

धर्म-सुधार के कारण इस समय समस्त यूरोप के देश प्रोटेस्टेएट तथा केथलिक दलों में विभक्त हो चुके थे। इन दोनों दलों में एक महायुद्ध आरम्भ हुआ। बोहेमिया (Bohemia) के निवासी प्रोटेस्टेएट थे; परन्तु वे जर्मन सम्राट् के अधीन थे, जो कट्टर केथलिक था और जिसका साम्राज्य "पवित्र रोमन साम्राज्य" (Holy Roman Empire) के नाम से प्रसिद्ध था। सन् १६१७ में बोहेमिया वालों ने एक विद्रोह खड़ा किया और पेलेटिनेट (Palatinate) के प्रोटेस्टेएट राजकुमार फ्रेड्रिक (Frederick) को अपना राजा चुन लिया। फ्रेड्रिक जेम्स प्रथम का दामाद था और इसलिये प्रोटेस्टेएट दल को यह आशा थी कि इस प्रकार उन्हें इंगलैंड की सहायता मिल जायगी। परन्तु जेम्स प्रथम चुपका बैठा रहा और केथलिक सेना ने बोहेमिया पर भी अधिकार कर लिया तथा फ्रेड्रिक को अपने देश पेलेटिनेट से भी निकाल बाहर किया, जिसके कारण वह बेचारा अब कहीं का न रहा।

जेम्स की विदेशी नीति—

जेम्स प्रथम शान्ति-प्रिय था और वह चाहता था कि यह धर्म-युद्ध किसी प्रकार रुक जाय। इसी उद्देश्य से उसने अपनी पुत्री एलिज़बेथ का विवाह फ्रेड्रिक से किया था, क्योंकि वह प्रोटेस्टेएट दल का नेता था। अब उसने केथलिक दल की सहानुभूति प्राप्त करने के आशय से स्पेन से सम्बन्ध करने का प्रयत्न किया, और चाहा कि अपने पुत्र चार्ल्स का विवाह स्पेन की राजकुमारी इनफैन्टा से कर दे। अभाग्यवश अँग्रेज़ी जनता राजा के अभिप्राय को न समझ सकी और इंगलैंड के पुराने शत्रु तथा केथलिक देश स्पेन से सन्धि अथवा विवाह-सम्बन्ध करना उसकी आँखों में खटकने लगा। इस प्रकार राजा तथा प्रजा में मतभेद होने के कारण जेम्स की विदेशी नीति की विफलता के लक्षण प्रस्तुत होने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर वाल्टर रेले—

सर वाल्टर रैले एलिज़बेथ के राज्यकाल का प्रसिद्ध नाविक, योद्धा, दरबारी तथा लेखक था। उसने फ्रान्स के ह्यूजीनोट्स (Huguenots) की सहायता करके और आयरिश विद्रोह के दमन में भाग लेकर ख्याति प्राप्त की थी। वह एलिज़बेथ की खुशामद में लगा रहता था, और एलिज़बेथ ने भी प्रसन्न होकर उसे नाइट की उपाधि दी और इंगलैंड तथा आयरलैंड में जागीरें दीं। वह अमेरिका से आलू तथा तम्बाकू लाया था, और वहाँ वरजीनिया (Virginia) नामक उपनिवेश के बसाने का उसने प्रयत्न किया था। उसने स्पेनी आर्मेडा को भी परास्त करने में भाग लिया था। जेम्स प्रथम के राजा होने पर यह बतलाया जाता है कि रैले ने सन् १६०३ में मेन प्लाट (Main Plot) नामक एक षड्यन्त्र में भाग लिया था, जिसका उद्देश्य जेम्स को सिंहासन से उतार कर उसकी चचेरी बहन अराबेला स्टुअर्ट (Arabella Stuart) को सिंहासन पर बैठाने का था। उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा दी गई, परन्तु एक योग्य व्यक्ति होने के कारण जेम्स ने उसे जीवन भर के लिये बन्दीगृह में डाल दिया। बन्दीगृह में उसने १३ वर्ष काटे और इस बीच में उसने "संसार का इतिहास" लिखा। सन् १६१६ में वह इस शर्त पर मुक्त कर दिया गया कि वह दक्षिणी अमेरिका जाकर गायना में सोने की खान का पता लगावेगा। परन्तु उस यात्रा में उसे सफलता प्राप्त न हुई। लौटते समय उसके नाविकों ने एक स्पेनिश उपनिवेश में आग लगा दी। जब वह लौट कर इंगलैंड आया तो जेम्स ने उसको पुरानी दण्ड-आज्ञा के अनुसार वध करा दिया। इस समय जेम्स की यह इच्छा थी कि किसी न किसी प्रकार युवराज चार्ल्स का विवाह स्पेन की राज्य-कन्या से हो जाय, और इसी खुशामद में स्पेन के राजा को प्रसन्न करने के लिये उसने इस महान् पुरुष के प्राण लिये।

युद्ध में इंगलैंड का भाग—

स्पेन से विवाह-संबंध के लिये जेम्स ने राजकुमार चार्ल्स को अपने मुख्य मन्त्री ड्यूक-आफ-बकिंघम (Duke of Buckingham) के साथ स्पेन भेजा। परन्तु स्पेन के राजा ने विवाह के प्रस्ताव को स्वीकार न किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और कुछ दिनों रहने के पश्चात् चार्ल्स तथा बकिंघम को अपना-सा मुँह लेकर वापिस लौटना पड़ा। ऐसी स्थिति में जेम्स स्पेन के विरुद्ध युद्ध करने के लिये विवश हुआ और फ्रेड्रिक की सहायता के लिये एक अँग्रेज़ी सेना यूरोप भेजी गई। परन्तु वह सेना बिल्कुल बेकार थी और इसी बीच में जेम्स की मृत्यु भी हो गई।

इसके पश्चात् उसके पुत्र चार्ल्स ने युद्ध को जारी रक्खा और स्पेन के बन्दरगाह काडिस (Cadis) पर बड़ी तैयारी से आक्रमण किया, परन्तु यह प्रयत्न भी विफल रहा और अन्त में हताश होकर वह इस यूरोपीय युद्ध से बिल्कुल अलग हो बैठा।

इंगलैंड की मान-हानि—

जेम्स तथा चार्ल्स की विदेशी नीति की विफलता के कारण इंगलैंड की प्रतिष्ठा यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में गिर गई। इंगलैंड ने एलिज़बेथ के राज्यकाल में आर्मेडा को परास्त करके बहुत यश प्राप्त कर लिया था, परन्तु इन दोनों राजाओं की अनिश्चित मनोवृत्ति के कारण इंगलैंड की बड़ी मान-हानि हुई और उसकी प्रतिष्ठा को बड़ा धक्का पहुँचा। इस विफलता का मुख्य कारण यह था कि देशवासी तथा पार्लियामेण्ट इन दोनों राजाओं तथा इनके मन्त्रियों पर विश्वास नहीं करते थे और इसलिये इंगलैंड में प्रोटेस्टेण्ट पक्ष के प्रति जोश होने पर भी पार्लियामेण्ट ने दिल खोल कर इस युद्ध के लिये धन तथा सेना की स्वीकृति न दी।

पार्लियामेण्ट से अनबन

दैवी अधिकार का सिद्धान्त—

पुस्तकीय ज्ञान के आधार पर जेम्स प्रथम ने यह धारणा बना ली थी कि राजा को शासन करने का अधिकार (Divine Right of Kings) ईश्वर की ओर से प्राप्त है और वह अपने कार्यों के लिये ईश्वर के अतिरिक्त और किसी के सम्मुख उत्तरदायी नहीं है। उसके विचारों के अनुसार राजा की सत्ता ईश्वर की दी हुई है, और इसी कारण उसे यह विशेषाधिकार प्राप्त है कि प्रजा के लिये वह जैसे चाहे राज-नियम बना सकता है और चाहे जिस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज-नियम को भंग कर सकता है। संक्षेप में राजा किसी भी नियम के बंधन में नहीं है। जब वह स्काटलैंड में था उसने राजा के दैवी अधिकार पर एक पुस्तक भी लिखी थी। जेम्स को यह ज्ञान नहीं था कि इंगलैंड एक वह देश है जहाँ सन् १२१५ में राजा जान मेगना कार्टा (Magna Charta) पर स्वीकृति देने के लिये बाध्य किया गया था, और उस दिन के पश्चात् प्रजा के प्रतिनिधियों की शक्ति इतनी अधिक होती गई कि राजा का साहस नहीं हो सकता था कि उनकी अनुमति बिना वह किसी प्रकार का नया कर लगा सके। जेम्स ने प्रजा के विचारों की तनक भी परवा नहीं की और वह यह न समझ सका कि देश की स्थिति दिन-प्रति-दिन बदलती जा रही है। विद्या के प्रचार तथा व्यापार की उन्नति के कारण देशवासियों की आँखें अब खुलने लगी थीं। इस समय देश में शान्ति थी और किसी विदेशी शत्रु का भी भय न होने के कारण प्रजा का ध्यान स्वाभाविक रूप से राजनैतिक विषयों की ओर आकर्षित हो चला था। ऐसी अवस्था में आरम्भ ही से राजा तथा पार्लियामेंएट में अनबन के लक्षण प्रस्तुत होने लगे।

अनुचित राज-कर तथा ठेके—

जेम्स प्रथम को धन की स्वीकृति के लिए पार्लियामेण्ट का आश्रय न भी लेना पड़ता, परन्तु उसके फ़िज़ूल खर्च होने के कारण उसे पार्लियामेण्ट को बार-बार बुलाना पड़ा। परन्तु जब कभी भी वह पार्लियामेण्ट को बुलाता था, तो वह उसकी शासन-नीति का विरोध करती थी और उसके मन्त्रियों के कार्यों की बड़ी समालोचना करती थी। यह देख कर जेम्स प्रथम ने अपने ही अधिकार से बाहर से आने-जाने वाली वस्तुओं पर साधारण से अधिक कर (Impositions) लगा दिये, और जब इससे भी काम न चला तो उसने धन के बदले बहुत-सी वस्तुओं का ठेका (Monopolies) व्यापारियों को दे दिया। इसके अतिरिक्त उसने धनवान लोगों को उपाधियाँ देकर रुपया वसूल करने का नया ढँग निकाला। पार्लियामेण्ट ने आय के इन सब उपायों का विरोध किया, परन्तु जेम्स ने उसकी एक न सुनी।

राज-मंत्रियों पर आक्षेप—

राज-करों के अतिरिक्त जेम्स और पार्लियामेण्ट में राज-मंत्रियों के अनुचित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कार्यों के प्रश्न पर भी वाद विवाद हुआ। राजा को इतनी समझ नहीं थी कि राज-पदों पर वह योग्य व्यक्तियों को नियुक्त कर सके। प्रारम्भ में एलिज़बेथ के योग्य प्रधान मंत्री लार्ड सेसिल का पुत्र राबर्ट सेसिल उसका प्रधान मंत्री था। वह बड़ा योग्य था और सब उस पर विश्वास करते थे। अभाग्यवश सन् १६१२ में उसकी मृत्यु हो गई। अब राजा किसी योग्य व्यक्ति को इस पद पर नियुक्त न कर सका और वह सदैव अपने कृपा-पात्रों का, जो उसकी खुशामद में लगे रहते थे, पूर्ण विश्वास करता था। पार्लियामेण्ट ऐसे अयोग्य मंत्रियों पर विश्वास नहीं कर सकती थी। परन्तु राजा का कहना था कि राज्य के कर्मचारियों पर पार्लियामेण्ट का कोई अधिकार नहीं है, परन्तु पार्लियामेण्ट उनके कार्यों की आलोचना करे बिना न रही और उसने उच्च पदाधिकारियों पर अभियोग (Impeachment) चलाने की प्राचीन प्रथा को फिर से जारी किया। इस सम्बन्ध में सबसे प्रसिद्ध अभियोग सर फ्रान्सिस बेकन (Sir-Francis Bacon) पर चलाया गया। वह राज्य का प्रधान न्यायाधीश (Lord Chancellor) था, और पार्लियामेण्ट ने उस पर घूस लेने का दोष लगाकर उसे अपने पद से हटा दिया। इस प्रकार पार्लियामेण्ट ने यह जतला दिया कि राज्य के बड़े से बड़े कर्मचारी अपने कार्यों के लिए देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी हैं।

परन्तु पार्लियामेण्ट राजा के मुख्य मंत्री ड्यूक आफ बकिंघम (Duke of Buckingham) का कुछ न बिगाड़ सकी। उस पर राजा की विशेष कृपा थी और वह युवराज चार्ल्स का भी परम मित्र था। उसका असली नाम जार्ज विलियर्स (George Villiers) था और जेम्स प्रथम ही ने उसे ड्यूक आफ बकिंघम की उपाधि दी थी। इतनी उन्नति का कारण केवल उसकी सुन्दर सुडौल आकृति थी जिससे मुग्ध होकर राजा ने उसे राज्य के बड़े से बड़े पद तक पहुँचा दिया। वह राजा के इतना मुँह लगा हुआ था कि देश का बड़े से बड़ा सामन्त अथवा राज्याधिकारी उससे भय खाता था। वह बड़ा घमंडी तथा खुशामदी था, जिसके कारण पार्लियामेण्ट तथा प्रजा सब उससे अप्रसन्न थे। उसका पक्ष लेकर जेम्स ने पार्लियामेण्ट से और भी अधिक बिगाड़ कर लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सर फ्रान्सिस बेकन—

सर फ्रान्सिस बेकन एलिज़बेथ और जेम्स प्रथम के शासन-काल का एक प्रसिद्ध विद्वान् और राजनीतिज्ञ हो चुका है। अपने तत्वज्ञान की रचनाओं के कारण उसका नाम अँग्रेज़ी साहित्य में अमर रहेगा। उसकी योग्यता से प्रसन्न होकर जेम्स प्रथम ने उसे लार्ड चांसलर के पद पर नियुक्त किया। इस पद पर नियुक्त होने के कारण वह न्याय-विभाग का प्रधान अधिकारी हुआ। सन् १६२१ में पार्लियामेण्ट ने उस पर घूस लेने का अभियोग चलाया और उसने भी अपना अपराध स्वीकार कर लिया। विद्वान् होने के कारण उसे केवल यह दण्ड मिला कि वह अपने पद से हटा दिया गया।

अधिकार का प्रश्न—

पार्लियामेण्ट और राजा का बखेड़ा जेम्स प्रथम की अन्तिम पार्लियामेण्ट की बैठक के काल में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया। पार्लियामेण्ट आरंभ ही से स्पेनके राजा से संबंध करने की नीति का विरोध करती आई थी। अतः उसने अब एक निश्चित रूप से प्रस्ताव पास किया कि राजकुमार चार्ल्स का विवाह केथलिक देश में होने के स्थान पर किसी प्रोटेस्टेण्ट राजकुमारी से होना चाहिये। इस प्रस्ताव को सुन कर जेम्स को बड़ा क्रोध आया, और उसने उसके उत्तर में साफ़ कह दिया कि पार्लियामेण्ट को इस प्रकार के गम्भीर प्रश्नों में किसी प्रकार का मत प्रकाशित करने का अधिकार नहीं। पार्लियामेण्ट के सदस्यों में इस उत्तर ने बड़ी सनसनी फैला दी, और उन्होंने अपने अधिकारों को जतलाने के लिये अब यह प्रस्ताव पास किया कि पार्लियामेण्ट को समस्त राजनैतिक तथा शासन संबंधी प्रश्नों पर विचार करने तथा उन पर मत प्रकाशित करने का पूर्ण अधिकार है। इस दूसरे प्रस्ताव का समाचार पाकर जेम्स का क्रोध और भी बढ़ गया, और उसने स्वयं अपने हाथ से पार्लियामेण्ट की विवरण की पुस्तक में से उन पृष्ठों को फाड़ डाला जिनमें यह प्रस्ताव लिखा हुआ था। राजा के इस प्रकार के कार्य इस बात की सूचना देते हैं कि वह अपनी नीति का किसी प्रकार का विरोध सहन नहीं कर सकता था, और वह जिस बात पर अड़ जाता था उसके विषय में किसी के परामर्श को सुनने को तैयार नहीं था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतभेद के अन्य कारण—

जेम्स तथा पार्लियामेण्ट में अनबन के और भी कई कारण थे। हेम्पटन कोर्ट की सभा में जेम्स ने प्यूरिटन दल को रुष्ट कर दिया था, और अभाग्यवश पार्लियामेण्ट में इसी दल का ज़ोर दिन-प्रति-दिन बढ़ता जाता था, और इस दल वाले बात बात में राजा का विरोध करते थे। पार्लियामेण्ट को राजा की विदेश-नीति भी पसन्द न थी, और वह स्पेन जैसे कट्टर केथलिक देश से सम्बन्ध जोड़ने के प्रस्ताव को कभी सहन न कर सकती थी। जेम्स के दरबार में जो स्काटलैंड-निवासी थे उनसे भी अँग्रेज़ ईर्ष्या रखते थे। इन्हीं सब कारणों से राजा तथा पार्लियामेण्ट में मेल रहना असंभव था। जेम्स प्रथम तो किसी प्रकार निभा ले गया; परन्तु उसने अपने पुत्र चार्ल्स प्रथम के लिए काँटे बो दिये, जिनका बुरा परिणाम पाठक अगले परिच्छेद में पढ़ेंगे।

Exercises

1. Briefly describe the religious policy of James I, and discuss his attitude towards :—
   (*a*) the Puritans. (*b*) the Anglicans, (*c*) and the Catholics.
2. What part did England play in the Thirty Years War, and what causes were responsible for the English failure ?
3. Explain the term "Divine Right of Kings", and analyse the causes of struggle between James I and his Parliament.
4. Write short notes on :—
   Hampton Court Conference, Gunpowder Plot, Impeachment of Bacon, Impositions and Monopolies.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीसवाँ परिच्छेद

चार्ल्स प्रथम

सन् १६२५	चार्ल्स प्रथम का राज्याभिषेक
,, १६२८	अधिकार-याचना-पत्र
,, १६४०	दीर्घ-कालिक पार्लियामेण्ट
,, १६४१	महा विरोध-पत्र
,, १६४२–१६४६	राजा तथा पार्लियामेण्ट का गृह-युद्ध
,, १६४६	चार्ल्स को प्राण-दण्ड

चरित्र—

सन् १६२५ में जेम्स प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र चार्ल्स प्रथम के नाम से राज-सिंहासन पर बैठा। वह डील-डौल का सुन्दर था और स्वभाव का भी गम्भीर तथा सहन-शील था। परन्तु वह स्वार्थी तथा हठी भी था, जिसके कारण उसको सफल शासक होने में कठिनाई हुई। उसका विवाह फ्रान्स की राजकुमारी हेनरिटा मेरिया से हुआ जो केथलिक थी, जिसके कारण वह तथा उसकी रानी प्रजा में अप्रिय हो गये। चार्ल्स बखेड़ों से बचने के लिए झूठे वचन दे दिया करता था, परन्तु प्रजा को शीघ्र ही पता चल गया कि उसकी बात का कोई भरोसा नहीं है। वह भी अपने पिता की भाँति दैवी अधिकार के सिद्धान्त का अनुयायी था, जिसके कारण आरम्भ ही से उसकी पार्लियामेण्ट से अनबन रहने लगी। यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि ड्यूक-आफ़-बकिंघम चार्ल्स का परम मित्र था। जेम्स प्रथम की मृत्यु के पश्चात् वास्तव में बकिंघम ही शासन करता रहा। चार्ल्स उसकी मुट्ठी में था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और वह राजा से जैसा चाहता था करवाता था। पार्लियामेण्ट तथा प्रजा दोनों बकिंघम से अप्रसन्न थे और चाहते थे कि राजा उसे उस पद से हटा दे।

विदेशी नीति--

चार्ल्स ने अपने पिता के राज्य-काल के तीस वर्षीय युद्ध को जारी रखने के लिए सेना भेजी। इस सेना का नेता सर एडवर्ड सेसिल (Sir Edward

चार्ल्स प्रथम

Cecil) था। उसने स्पेन के काडिस नामक बन्दरगाह पर आक्रमण किया, परन्तु विफल रहा। इसी बीच में फ्रान्स से भी युद्ध छिड़ गया, कारण यह हुआ कि चार्ल्स धीरे-धीरे फ्रान्स से असंतुष्ट हो गया। लूई तेरहवाँ यह चाहता था कि इंगलैंड में केथलिकों को धार्मिक स्वतंत्रता मिल जावे, परन्तु इसके बदले में चार्ल्स भी यह चाहता था कि फ्रान्स में प्रोटेस्टेण्ट्स अथवा ह्यूगीनाट्स को भी धार्मिक स्वतंत्रता मिल जावे। दूसरे, चार्ल्स को यह भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आशा थी कि स्पेन के विरुद्ध उसे फ्रान्स से सहायता मिल जायगी। परन्तु उसकी यह इच्छाएँ पूरी न हुईं। इस पर जब लूई ने सन् १६२७ ई० में ह्यूगीनाट्स पर आक्रमण कर दिया तो चार्ल्स ने इनको सहायता देने का पक्का इरादा कर लिया। उसने बकिंघम के नेतृत्व में एक जहाज़ी बेड़ा लारोशेल (La-Rochelle) की सहायता के लिए भेजा। इस स्थान पर फ्रेंच प्रोटेस्टेएट्स अथवा ह्योगोनाट्स को लूई ने घेर रक्खा था। अकस्मात् फ़ौज में महामारी फैल जाने के कारण बकिंघम को लौटना पड़ा। इस असफलता पर अँग्रेज़ लोग बहुत बिगड़े, और रह रह कर उनको बकिंघम पर रोष आता था। इधर बकिंघम दूसरा बेड़ा भेजने की तैयारी कर रहा था, परन्तु इसी बीच में फेल्टन नामक एक सैनिक ने जो उससे पहले ही जला बैठा था उसे पोर्टसमाउथ (Portsmouth) के स्थान पर मार डाला। थोड़े ही दिनों बाद धन की कमी होने के कारण चार्ल्स ने निराश होकर यूरोप के युद्धों से हाथ खींच लिया।

अनुचित राज-कर--

इन विदेशी युद्धों में इंगलैंड का बहुत-सा धन बेकार व्यय हो गया। धन बिना पार्लियामेएट की स्वीकृति के नहीं मिल सकता था; परन्तु पार्लियामेएट ने, राजा तथा उसके मंत्रियों पर अविश्वास होने के कारण राजा को जन्म भर के स्थान पर केवल एक ही वर्ष कर वसूल करने की स्वीकृति दी, जिससे चार्ल्स को बहुत कठिनाई हुई। यह कर टनेज और पाउंडेज (Tonnage & Poundage) कहलाते थे, और ये शराब पर प्रति टन और अन्य वस्तुओं पर उनके मूल्य पर प्रति पाउंड के हिसाब से लगाये जाते थे। पार्लियामेएट का यह कार्य अनुचित था, क्योंकि पिछले राजाओं को तो यह कर समस्त जीवन के लिये स्वीकृत किया जाता था। यह स्वाभाविक था कि चार्ल्स को क्रोध आये। राजा की विदेशी नीति और धार्मिक नीति का भी कटाक्ष किया गया। अन्त में क्रोधित होकर राजा ने इस पार्लियामेएट को विसर्जित किया। युद्धों के लिये धन की आवश्यकता थी, अतः दूसरे ही वर्ष सन् १६२६ में राजा को पार्लियामेएट निमंत्रित करने के लिये बाध्य होना पड़ा। इस बार उन्होंने निश्चय कर लिया था कि जब तक राजा दुष्ट बकिंघम को, जो राज्य तथा चर्च

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का शत्रु है, पदच्युत न कर देगा वे उसे धन की स्वीकृति न देंगे। अब उन्होंने उस पर कुशासन के अभियोग (Impeachment) का प्रस्ताव भी पार्लियामेण्ट में पेश किया। राजा ने अपने मित्र की रक्षा के हेतु पार्लियामेण्ट को फिर विसर्जित किया और धन उपार्जन के दूसरे ढंग निकाल लिये। धन की कमी को पूरा करने के लिये चार्ल्स ने बलात ऋण लेना प्रारंभ किया, जिससे असन्तोष और भी बढ़ गया। पार्लियामेण्ट की आज्ञा न होते हुए भी वह टनेज तथा पाउंडेज वसूल करता रहा। उसने युद्ध के लिए लोगों को बलपूर्वक सेना में भी भरती करना आरंभ किया, और सैनिकों के रहने का काफ़ी प्रवन्ध न होने के कारण उनको गृहस्थों के घरों में ठहरा दिया, जिससे प्रजा को बहुत कष्ट होने लगा। जो राजा की इन आज्ञाओं को न मानते थे, उन्हें बिना मुकदमा किये ही जेल में ठूँस दिया जाता था। पार्लियामेंट तथा प्रजा के सहन की अब सीमा न रही और वह राजा की निरंकुशता को रोकने का उपाय सोचने लगी।

अधिकार-याचना—

यह अवसर भी पार्लियामेण्ट को शीघ्र ही मिल गया। युद्धों के लिए धन की आवश्यकता बनी रहने के कारण चार्ल्स का बिना पार्लियामेण्ट के काम न चला। सन् १६२८ में पार्लियामेण्ट ने अपने अधिकारों की एक सूची तैयार की और चार्ल्स को उसे स्वीकार करने के लिए बाध्य होना पड़ा। इस पार्लियामेण्ट के मुख्य नेता सर टामस वेण्टवर्थ, सर जान इलियट, पिम और हेम्सडन थे। यह सूची अधिकार-याचना (Petition of Right) के नाम से प्रसिद्ध है और इसमें चार मुख्य धारायें थीं—

(१) पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना राजा किसी प्रकार का कर या ऋण वसूल न करे।

(२) बिना नियमानुसार अपराध साबित हुए किसी स्वतन्त्र व्यक्ति को जेल में न डाला जाय।

(३) गृहस्थों की इच्छा के विरुद्ध उनके यहाँ सैनिकों को न ठहराया जाय।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) शान्ति के समय फ़ौजी अदालतों द्वारा किसी का अपराध निर्णय न किया जाय।

अधिकार-याचना का महत्त्व—

अधिकार-याचना का इंगलैंड के राजनैतिक इतिहास में बड़ा महत्त्व है। इसके द्वारा भविष्य में प्रजा की शिकायतों को दूर करने तथा पार्लियामेण्ट के अधिकारों को निश्चित रूप देने का प्रबन्ध किया गया। राजा जान के "महा स्वतन्त्रता-पत्र" के पश्चात् प्रजा तथा पार्लियामेण्ट के अधिकारों की इसी नियम के द्वारा रक्षा हुई।

पार्लियामेण्ट से झगड़ा—

परन्तु चार्ल्स ने "अधिकार-याचना" की धाराओं का शीघ्र ही उल्लंघन करना आरंभ कर दिया जिसके कारण राजा तथा पार्लियामेण्ट का झगड़ा बराबर बना रहा। चार्ल्स का विचार था कि पार्लियामेण्ट में उसके विरोधी कोरे बकवादी हैं। उसे यह भास न हो सका कि पार्लियामेण्ट का यह बखेड़ा आगे चलकर कितना भयंकर रूप धारण कर लेगा।

चार्ल्स के सहायक-ग्यारह वर्षीय निरंकुश शासन—

पार्लियामेण्ट से तंग आकर चार्ल्स ने सन् १६२६ से ग्यारह वर्ष तक बिना पार्लियामेण्ट के शासन किया। इस काल में उसके दो मुख्य सहायक थे। एक तो टामस वेण्टवर्थ (Thomas Wentworth) जिसने बकिंघम की मृत्यु के पश्चात् राजनैतिक क्षेत्र का सारा कार्य संभाला, और दूसरा केण्टरबरी का प्रधान पादरी लाड (Archbishop Laud) जो धार्मिक क्षेत्र में राजा का मुख्य सलाहकार था।

टामस वेण्टवर्थ-अर्ल-आफ़-स्ट्रेफ़र्ड—

वेण्टवर्थ पहले पार्लियामेण्ट के अधिकारों का पक्षपाती था और उसने "अधिकार-याचना" के आन्दोलन में एक मुख्य भाग लिया था। परन्तु जब वह इस नये पद पर नियुक्त हुआ तो उसने राजा की तन मन से सेवा की। इंगलैंड के इतिहास में स्ट्रेफ़र्ड के समान कोई अन्य ऐसा सेवक नहीं हुआ जिसने अपने राजा की इतनी सेवा की हो, और चार्ल्स के समान कोई ऐसा राजा नहीं हुआ जिसने अपने सच्चे सेवक को इतना धोखा दिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हो। उसी ने राजा को सलाह दी थी कि वह पार्लियामेण्ट को विसर्जन करके बिना उसके ही निरंकुश राज्य करे। कुछ समय पश्चात् राजा ने प्रसन्न होकर उसे अर्ल-आफ-स्ट्रेफर्ड (Earl of Strafford) की उपाधि दी। वह "सम्पूर्ण नीति" (Thorough) का पक्षपाती था जिसका अर्थ यह था कि जो कुछ कार्य आरम्भ किया जाय उसे बिना भय के अन्त तक निभाया जाय।

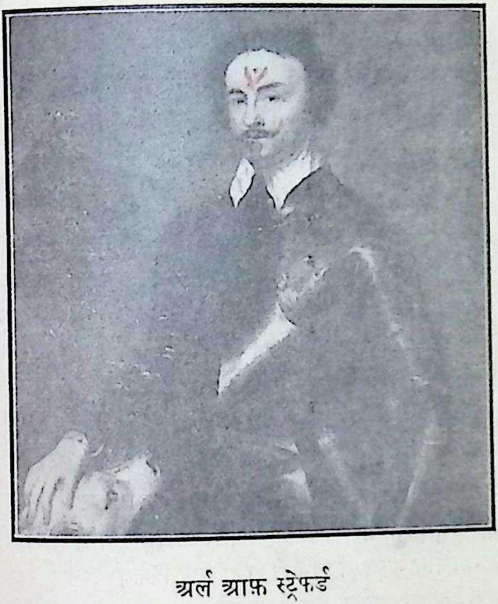

अर्ल आफ़ स्ट्रेफर्ड

उसने राजा को पूर्ण रूप से स्वेच्छाचारी बनाने का प्रयत्न किया। उसकी नीति का कोई विरोध नहीं कर सकता था, और यदि किसी ने साहस भी किया तो उसे भारी दण्ड दिया जाता था। इंगलैंड के उत्तरी भाग का वह सूबेदार बनाया गया और वहाँ उसने उत्तर प्रान्त के विशेष न्यायालय (Council of the North) की फिर से स्थापना की। प्रारम्भ में हेनरी अष्टम ने इस न्यायालय की स्थापना की थी और इसके अधिकार स्टार-चेम्बर-न्यायालय के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समान थे। वेएटवर्थ ने पुराने कर, जो ज़मींदारों ने बहुत दिनों से नहीं दि थे, सब वसूल किये और अब बड़े से बड़े ज़मींदार का साहस नहीं था कि देने से इन्कार करे। इस प्रान्त में शान्ति स्थापित करने के पश्चात् आयरलैंड भेजा गया। वहाँ प्रोटेस्टेएटों और केथलिकों के आपस के झग ने अशान्ति फैला रखी थी। उसने वहाँ एक सेना तैयार की और शास इतनी कठोरता से किया कि वहाँ भी शीघ्र शान्ति स्थापित हो गई।

धन उपार्जन के उपाय—

सबसे प्रथम स्ट्रैफ़र्ड ने चार्ल्स को सलाह दी कि खर्च बचाने के लि फ्रान्स तथा स्पेन से सन्धि की जाय। चार्ल्स ने तुरन्त ही इन देशों से सन्धि कर ली। परन्तु फिर भी धन की आवश्यकता बनी ही रही, और चार्ल्स को धन उपार्जन के कई नये रास्ते निकालने पड़े। उसने भी अपने पिता की भाँति कई व्यापारिक वस्तुओं के ठेके दे दिये, और उपाधियाँ बेचकर तथा अदालतों में जुर्मानों की भरमार करके धन एकत्र किया। प्राचीन काल के राज-नियम जिनके नाम भी लोगों की स्मृति से उतर गये थे और न जिनकी अब आवश्यकता ही थी, फिर से प्रचलित किये गये और उनके उल्लंघन करने वालों पर ख़ूब जुर्माने होने लगे। अदालतों में से ऐसे जजों को हटा दिया गया जो राजा के इच्छानुसार नहीं चल सकते थे।

जहाज़ी कर—

धन उपार्जन ही के आशय से चार्ल्स ने एक नया कर लगाया जो समुद्र तट की रक्षा के लिये था और जहाज़ी कर (Ship-money) के नाम से प्रसिद्ध है। प्राचीन काल में अँग्रेज़ी राजा एक विशेष प्रकार का कर वसूल किया करते थे जिसकी आय जहाज़ बनाने में व्यय की जाती थी। चार्ल्स ने भी इसी प्राचीन प्रथा के आधार पर यह नया कर लगाया था; परन्तु प्राचीन समय में यह कर केवल समुद्र-तट के स्थानों से वसूल किया जाता था, परन्तु चार्ल्स ने अब इसे समस्त देश पर लगा दिया। इसके अतिरिक्त इस समय किसी समुद्री आक्रमण का भी भय नहीं था, इसलिये जहाज़ी कर का लगाना और भी अनुचित था।

तीन वर्ष तक तो यह कर शान्ति-पूर्वक वसूल होता रहा, परन्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन् १६३० में जान हेम्पडन (John Hampden) ने जो पार्लियामेण्ट का सदस्य रह चुका था, इस कर के देने से इन्कार किया। उसका कहना था कि "अधिकार-याचना" के अनुसार राजा को विना पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के कोई नया कर लगाने का अधिकार नहीं है। मामला अदालत तक पहुँचा, परन्तु जजों ने राजा के पक्ष में फैसला दिया और यह बतलाया कि प्राचीन

आर्च बिशप लाड

प्रथा के अनुसार समुद्र-तट की रक्षा के लिए धन एकत्र करने का अधिकार प्राचीन समय से राजा को विशेष रूप से प्राप्त है। इस फैसले से देश में बहुत सनसनी फैली और प्रजा में राजा की नीति का विरोध और भी बढ़ गया।

लाड की धार्मिक नीति—

राजनैतिक असंतोष के अतिरिक्त धार्मिक क्षेत्र में भी प्रजा बड़ी असंतुष्ट

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुई। आर्च बिशप लाड (Archbishop Laud) की सलाह से चार्ल्स ने प्यूरिटन दल के विरुद्ध बहुत-से नियम बनाये और उनको ऐंग्लिकन चर्च की रीतियों का विरोध करने के अपराध में कड़े-कड़े दण्ड भी दिये। लाड का मत था कि स्थापित चर्च ही के रीति-रिवाज सब गिर्जों में माने जायँ और पूजा-विधि तथा उपासना इत्यादि में कोई मत-भेद न होने पावे। उसकी प्रचलित की हुई रीतियाँ जैसा कि पादरियों का चोग़ा पहनना और गिर्जों में गाना-बजाना जिनका उस समय बड़ा विरोध किया गया था, अब तक प्रयोग में लाई जाती हैं। वर्तमान ऐंग्लिकन चर्च की पूजा-विधि, उपासना इत्यादि अधिकतर लाड ही के समय की निर्धारित की हुई हैं और उसके बाद से उसमें कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं हुआ। परन्तु उस काल में प्यूरिटन दल वालों का ज़ोर बढ़ता जाता था, जो लाड की नीति के विरोधी थे और यह समझते थे कि उसकी प्रचलित की हुई रीतियों से देश के पुनः केथलिक होने का भय है। लाड के अत्याचारों के कारण बहुत-से प्यूरिटन इंगलैंड छोड़कर अमेरिका चले गये और वहाँ उन्होंने नये उपनिवेश बसा लिये।

स्काटलैंड में धार्मिक युद्ध--

स्काटलैंड के चर्च में "धर्म-सुधार" का रूप इंगलैंड से बिल्कुल भिन्न था। उनके चर्च के पदाधिकारी प्रजा के निर्वाचित किये हुए होते थे और उनके लिये कोई निश्चित प्रार्थना-पुस्तक भी आवश्यक न थी। यह सम्प्रदाय प्रेसबीटीरियन (Presbyterian) के नाम से प्रसिद्ध है और इसके धार्मिक सिद्धान्त बहुत कुछ इंगलैंड के प्यूरिटन दल से मिलते-जुलते थे। लाड की सलाह से चार्ल्स ने स्काटलैंड के चर्च को भी ऐंग्लिकन चर्च का रूप देना चाहा, और वहाँ के लिये अँग्रेज़ी प्रार्थना-पुस्तक के आधार पर एक निश्चित प्रार्थना-पुस्तक प्रयोग में लाने की आज्ञा निकाली। इस नई प्रार्थना-पुस्तक का समाचार पाकर स्काटलैंड की प्रजा का क्रोध उबल पड़ा, और सबने बड़े जोश से एक जातीय प्रण-पत्र (National Covenant) पर हस्ताक्षर किये कि देश के प्रेसबीटीरियन चर्च की रक्षा करने के लिए नई आज्ञाओं का विरोध करना सबका जातीय कर्तव्य है।

इस प्रकार राजा तथा स्काटलैंड की जनता में विरोध बढ़ता गया और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्त में उसने युद्ध का रूप धारण किया। दो वार युद्ध हुआ और ये युद्ध "विशप-युद्ध" (Bishop Wars) के नाम से प्रसिद्ध हैं, क्योंकि इनके परिणाम स्वरूप राजा के नियत किये हुए पादरी स्काटलैंड के चर्च से निकाल दिये गये। जातीय विरोध के सम्मुख चार्ल्स को झुकना पड़ा और वह स्काटलैंड के प्रेसबीटीरियन चर्च को स्वीकृति करने पर बाध्य हुआ। स्काटलैंड वाले युद्ध में सफल हुए और सन्धि में चार्ल्स को यह भी वचन देना पड़ा कि वह उनके युद्ध का समस्त खर्चा भरेगा।

क्षणिक तथा दीर्घ पार्लियामेण्ट १६४०--

स्काटलैंड के धार्मिक युद्धों के खर्च देने की समस्या ने चार्ल्स को ग्यारह वर्ष के बाद फिर पार्लियामेण्ट बुलाने के लिए बाध्य किया। पहली पार्लियामेण्ट ने यह शर्त लगाई कि बिना शिकायतों के दूर हुए धन की स्वीकृति न दी जायगी। इसलिये चार्ल्स ने उसे तीन ही सप्ताह में विसर्जित कर दिया, और इस कारण वह क्षणिक पार्लियामेण्ट (Short Parliament) के नाम से प्रसिद्ध हुई। परन्तु धन की आवश्यकता के कारण उसे तुरन्त ही पार्लियामेण्ट फिर बुलानी पड़ी। इस पार्लियामेण्ट ने सबसे पहले यह निश्चय किया कि बिना अपनी ही इच्छा के वह विसर्जित न हो सकेगी। यह पार्लियामेण्ट पूरे बीस वर्ष के बाद विसर्जित हुई और इस कारण वह इतिहास में दीर्घ कालिक पार्लियामेण्ट (Long Parliament) कहलाती है।

लाड तथा स्ट्रेफर्ड को प्राणदण्ड--

दीर्घ कालिक पार्लियामेण्ट ने सबसे पहले राज-मन्त्रियों पर अपना क्रोध उतारा। उसके सदस्यों में प्यूरिटन दल वालों की संख्या अधिक थी। उन्होंने तुरन्त ही प्रस्ताव पास करके लाड को लन्दन के टावर में बन्द कर दिया और चार वर्ष पश्चात् उसका बध करा डाला। स्ट्रेफर्ड पर पहले तो अभियोग चलाने का प्रयत्न किया गया, परन्तु यह देख कर कि उसका दोष साबित करना कठिन होगा पार्लियामेण्ट ने उसके विरुद्ध सन् १६४१ में एक विशेष प्रस्ताव (Act of Attainder) पास किया जिसके अनुसार बिना दोष-समीक्षा ही के उसको प्राण-दण्ड दिया गया; और राजा उसको न बचा सका। राजा ने स्ट्रेफर्ड को वचन दिया था कि उसका एक बाल भी बांका नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

किया जायगा। परन्तु इस समय राजा अपने वचनों को भूल गया। वध होती समय स्ट्रेफर्ड के शब्द थे कि राजाओं पर किसी को विश्वास नहीं करना चाहिये।

राजनैतिक सुधार—

इसके पश्चात् पार्लियामेण्ट ने शासन-पद्धति में कुछ स्थाई सुधार किये। स्टार-चेम्बर, हाई कमीशन-कोर्ट इत्यादि विशेष प्रकार की अदालतें, जिनके द्वारा राजा अपने विरोधियों को मनमाने दण्ड दिया करता था, सब हटा दी गईं। यह निश्चय किया गया कि प्रत्येक नागरिक का साधारण नियमों के अनुसार ही न्याय हुआ करेगा। इसी वर्ष एक नियम (Triennial Act) यह बनाया गया कि तीन वर्ष में कम से कम एक बार पार्लियामेण्ट का अधिवेशन होना आवश्यक है, जिससे भविष्य में राजा बहुत दिनों तक बिना पार्लियामेण्ट के कुछ न कर सके। राज-करों के प्रश्न का भी निपटारा किया गया और यह नियम बनाया गया कि बिना पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के राजा किसी भी प्रकार से धन वसूल नहीं कर सकता। इस नियम के अनुसार भविष्य के लिये जहाज़ी कर तथा बलात् ऋण इत्यादि असंभव हो गये। इस प्रकार पार्लियामेण्ट ने राजा को नियमानुसार शासन-विधान में बाँधने की चेष्टा की।

पार्लियामेण्ट में मतभेद—

राजनैतिक सुधारों के विषय में पार्लियामेण्ट के सब सदस्य सहमत रहे, परन्तु इसी बीच में एक धार्मिक प्रश्न खड़ा हो जाने के कारण उनमें मतभेद हो गया। प्यूरिटन मत वालों ने एक प्रस्ताव (Root and Branch Bill) पेश किया कि ऐंग्लिकन चर्च से बिशपों को बिलकुल हटा दिया जाय। परन्तु पार्लियामेण्ट में ऐंग्लिकन चर्च के भी काफ़ी समर्थक थे, अतः उन्होंने इसका घोर विरोध किया। इस मत-भेद के कारण पार्लियामेण्ट में दो दल हो गये, और जिस सहयोग के कारण उन्हें अब तक सफलता मिल रही थी उसका अन्त हुआ।

आयरलैंड का विद्रोह—

सन् १६४१ में आयरलैंड की केथलिक जनता ने एक भीषण विद्रोह किया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और अल्सटर (Ulster) प्रान्त के लगभग १०,००० प्रोटेस्टेएट निवासियों को मृत्यु के घाट उतारा; स्त्रियों और बालकों तक को नहीं छोड़ा गया था। यह विद्रोह उन लोगों ने किया था जिनकी भूमि को जब्त करके स्ट्रेफर्ड ने प्रोटेस्टेएटों को दे दी थी। इन समाचारों ने इंगलैंड में सनसनी फैला दी, और राजा के शत्रु प्यूरिटनों ने खुले शब्दों में कहना आरम्भ किया कि इस विद्रोह में राजा का हाथ है और वह केथलिकों का पक्ष लेता है।

महा विरोध-पत्र—

इसके पश्चात् पार्लियामेण्ट में एक महा विरोध-पत्र (Grand-Remonstrance) पेश हुआ जिसमें चार्ल्स के समस्त अत्याचारों का उल्लेख किया गया और उस पर देश के प्राचीन शासन भंग करने का दोष लगाया गया। धार्मिक प्रश्न पर बने हुए दलों में से प्यूरिटन दल वाले इसके समर्थक थे, परन्तु ऐंग्लिकन चर्च वालों ने इसका विरोध किया। केवल ग्यारह अधिक वोटों से यह प्रस्ताव स्वीकृत हुआ, परन्तु अब यह स्पष्ट हो गया कि पार्लियामेण्ट में सहयोग न रहने के कारण अब उसका काम सरलता-पूर्वक न चलेगा।

घरेलू युद्ध की तैयारी—

पार्लियामेण्ट में दो दल हो जाने से चार्ल्स का उत्साह बढ़ गया और उसने अपने विरोधी नेताओं को बलपूर्वक पकड़ने का प्रयत्न किया। वह स्वयं कुछ सैनिक लेकर पार्लियामेण्ट के अधिवेशन के समय जा पहुँचा और उसने पिम, हेम्पडन इत्यादि पाँच नेताओं को पकड़ना चाहा; परन्तु इन पाँचों को पहले ही इसकी सूचना मिल चुकी थी। इस कारण वे पार्लियामेण्ट के अधिवेशन में सम्मिलित ही न हुए थे। राजा का प्रयत्न विफल रहा, परन्तु उसके सैनिकों के पार्लियामेण्ट भवन में घुस आने से सदस्यों में बड़ी सनसनी फैली। अब यह स्पष्ट हो गया कि केवल शासन-विधान में संशोधन करने से चार्ल्स वश में नहीं आ सकता। इसलिये पार्लियामेण्ट ने अपने अधिकारों की रक्षा के लिये शस्त्र उठाये, और राजा तथा पार्लियामेण्ट के झगड़े ने भयंकर रूप धारण कर लिया।

गृह-युद्ध की दलबन्दी—

यदि पार्लियामेण्ट में धार्मिक प्रश्न पर मतभेद न होता तो संभव था कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा को थोड़े बहुत भी समर्थक न मिलते। परन्तु इस मतभेद के कारण केवल प्यूरिटन दल वालों ने पार्लियामेण्ट के अधिकारों के लिये युद्ध किया और ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायियों ने, जो अब हाई चर्च पार्टी (High Church Party) के नाम से प्रसिद्ध हुए, राजा का पक्ष लिया। देश के बड़े ज़मींदार भी राजा ही के पक्ष में रहे, परन्तु अन्य श्रेणियों ने पार्लियामेण्ट का समर्थन किया। भौगोलिक विचार से देश के पूर्वी तथा दक्षिणी प्रान्तों ने जहाँ व्यापारिक केन्द्रों के कारण जनता में जागृति थी, पार्लियामेण्ट का साथ दिया; और पश्चिमी तथा उत्तरी भागों के निवासी अधिकतर राजा के पक्ष में रहे। राजकीय पक्ष वाले केवेलियर्स (Cavaliers) कहलाने लगे, क्योंकि उनमें घुड़सवारों की संख्या अधिक थी; और पार्लियामेण्ट के पक्ष वाले राउंडहेडस् (Roundheads) के नाम से प्रसिद्ध हुए, क्योंकि प्यूरिटन लोग प्रायः अपने बाल कटवाये हुए रहते थे।

राज-पक्ष की विजय—

राजा ने नाटिंघम (Nottingham) के स्थान पर अपना झण्डा गाड़ा, और पार्लियामेण्ट ने थोड़ी बहुत सेना तैयार करके एज-हिल (Edge Hill) के स्थान पर अपने डेरे डाले। पार्लियामेण्ट की सेना अशिक्षित थी, इस कारण युद्ध के पूर्व भाग में राजा ही की विजय हुई। पार्लियामेण्ट के कई प्रसिद्ध नेता युद्ध में मारे गये, इसलिए उसका उत्साह कुछ ठंडा पड़ने लगा।

बाहर से सहायता—

अब दोनों पक्षों ने बाहर से सहायता प्राप्त करने का प्रयत्न किया। राजा ने आयरलैंड के केथलिकों को अपनी ओर मिला लिया और पार्लियामेण्ट ने स्काटलैंड निवासियों से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया। स्काटलैंड तथा पार्लियामेण्ट के नेताओं में एक समझौता हो गया, जिसके अनुसार स्काटलैंड वालों ने पार्लियामेण्ट के दल को इस शर्त पर सहायता देना स्वीकार किया कि इंगलैंड के चर्च को भी स्काटलैंड के चर्च की भाँति प्रेसबीटीरियन बना दिया जायगा।

राजा की पराजय—

इसी बीच में पार्लियामेण्ट के पक्ष के एक जोशीले नेता क्रामवेल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

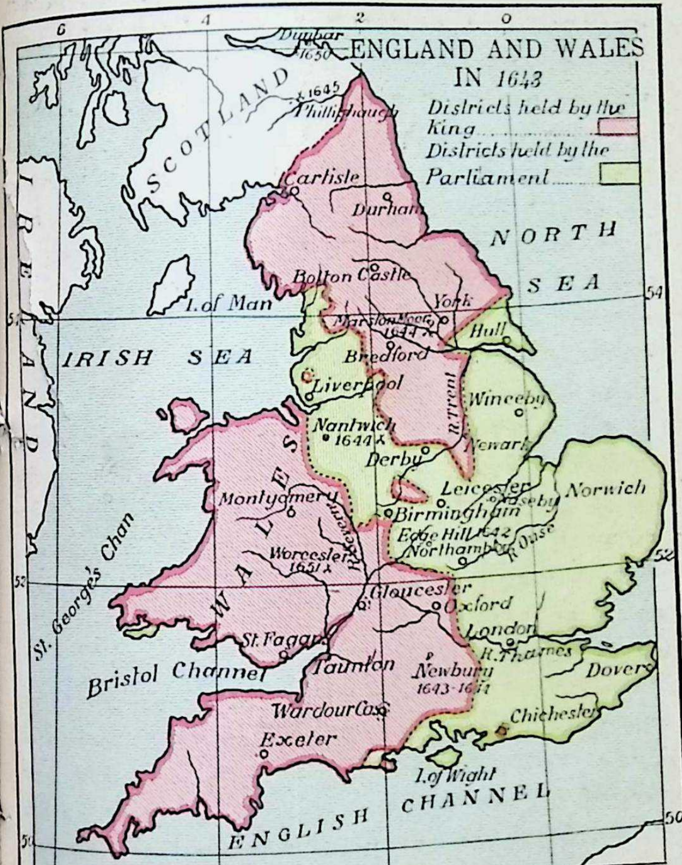

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Cromwell) ने एक सुसज्जित सेना तैयार की जो "नई आदर्श सेना" (New Model Army) के नाम से प्रसिद्ध हुई। क्रामवेल ही की सलाह से पार्लियामेण्ट ने एक प्रस्ताव (Self-denying Ordinance)

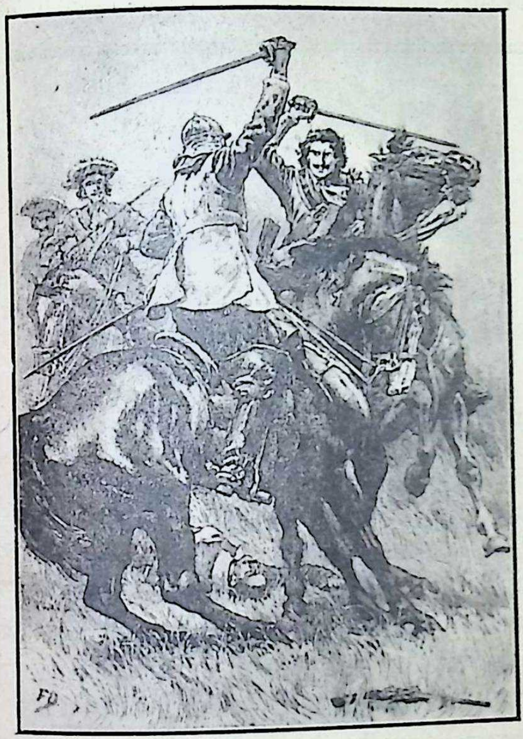

राउंडहेड्स और केवेलियर्स

पास किया कि उसके सब सदस्य सेना से अपना संबन्ध हटा लें, और केवल नये नियत किये हुए सैनिक अफ़सरों ही के हाथ में युद्ध का संचालन रहे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस सुधार का बड़ा अच्छा परिणाम निकला और पार्लियामेण्ट की नई सेना ने पहले मार्सटनमूर (Marston Moor) और फिर नेज़बी (Naseby) के स्थान पर चार्ल्स को बुरी तरह परास्त किया। अन्त में निराश होकर राजा को स्काटिश सेना का आश्रय लेना पड़ा। स्काटलैंड निवासियों ने उसके

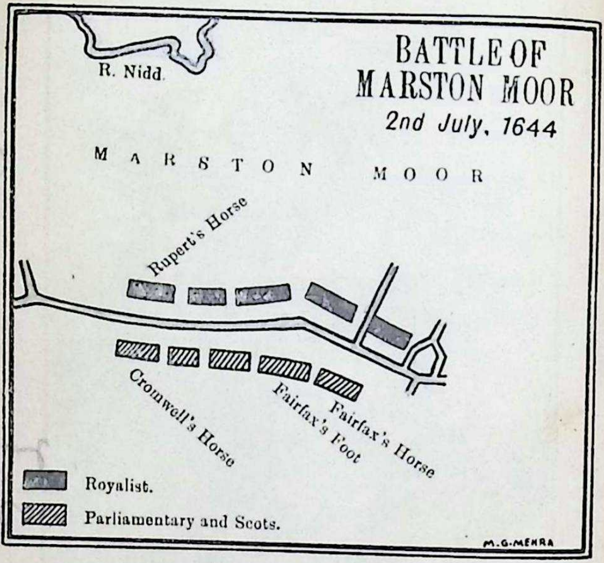

सामने प्रेसबीटीरियन धर्म स्वीकार करने का प्रस्ताव पेश किया, परन्तु इसे चार्ल्स ने न माना। इस पर उन्होंने राजा को इंगलैंड की पार्लियामेण्ट को सौंप दिया और अब वह अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट का क़ैदी हो गया।

पार्लियामेण्ट तथा सेना में मतभेद—

चार्ल्स के क़ैद हो जाने पर गृह-युद्ध समाप्त हुआ और अब सेना की कोई आवश्यकता न देखकर पार्लियामेण्ट ने उसे भंग होने की आज्ञा दे दी। परन्तु सेना का वेतन अभी पूरी तरह नहीं चुकाया गया था, इसलिए वह भंग होने को तैयार न हुई। इसी बीच में सेना और पार्लियामेण्ट में कुछ धार्मिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

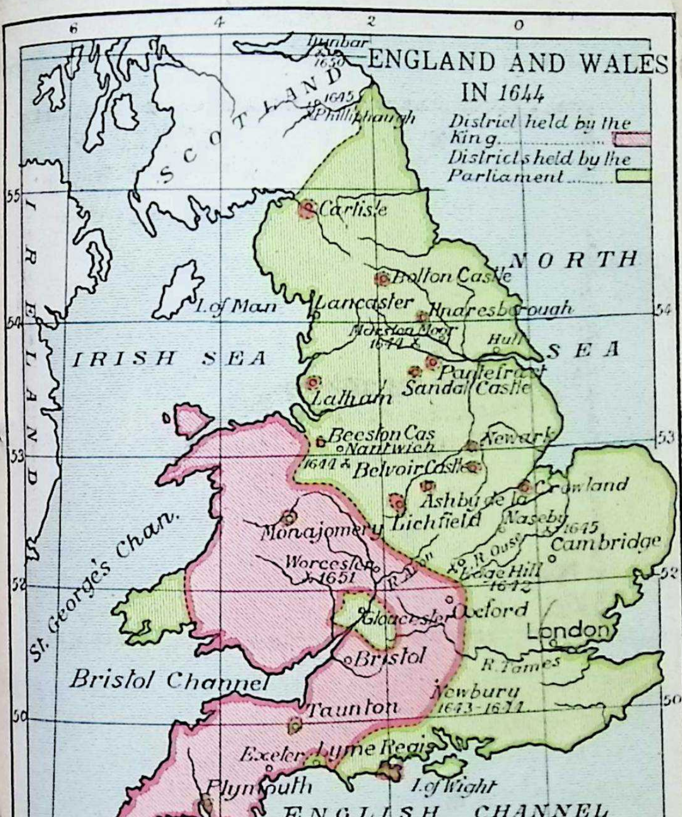

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतभेद होने के कारण झगड़ा और भी बढ़ गया। सैनिक लोग बहुधा स्वतन्त्र विचार (Independents) के होते हैं, और पार्लियामेण्ट के सदस्य इतने कट्टर थे कि वे प्रेसबीटीरियन (Presbyterian) के अतिरिक्त अन्य किसी भी धार्मिक संस्था से सहयोग करने को तैयार न थे। इसी बीच में चार्ल्स पार्लियामेण्ट के हाथ से भाग निकला, और उसने वाइट के टापू (Isle of Wight) में शरण लेकर स्काटलैंड वालों से पत्र-व्यवहार आरम्भ किया।

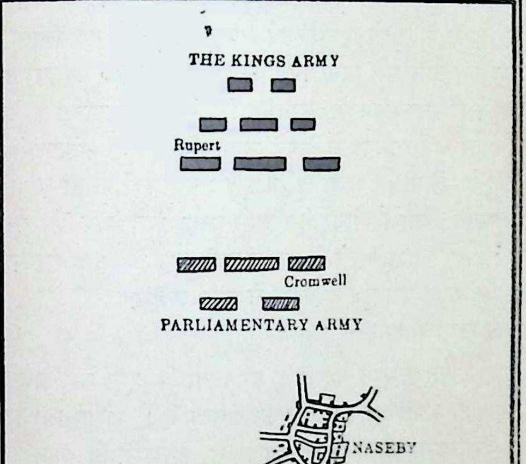

BATTLE OF NASBEY
14th June, 1645.

इस पर स्काटलैंट वालों ने अब पार्लियामेण्ट के स्थान पर राजा का पक्ष लेकर युद्ध आरम्भ किया और इस प्रकार गृह-युद्ध फिर चलने लगा। परन्तु क्रामवेल की नई सेना ने स्काटलैंड की सेना को परास्त किया और यह झगड़ा यहीं शान्त हो गया।

चार्ल्स को प्राण-दण्ड--

अब इंगलैंड की पार्लियामेण्ट की यह धारणा होने लगी कि जब तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार्ल्स जीवित रहेगा तब तक बखेड़े का कोई स्थाई अन्त न हो सकेगा। नई सेना चार्ल्स को क़ैद करके फिर इंगलैंड ले आई थी, और अब पार्लियामेण्ट ने उस पर देश-द्रोही होने का अपराध लगा कर अभियोग चलाना आरम्भ किया। पार्लियामेण्ट के जिन सदस्यों के विषय में यह शंका थी कि वे शायद राजा का पक्ष लें, उन्हें एक सैनिक अफ़सर कर्नल प्राइड (Pride) ने बलपूर्वक पार्लियामेण्ट में आने से रोक दिया। इस कार्य को (Pride's Purge) कहते हैं। इस प्रकार पार्लियामेण्ट के अधिवेशन में केवल वह सदस्य सम्मिलित हुए जो राजा को कठोर दण्ड देने के पक्ष में थे। अभियोग पर विचार करने के लिये एक विशेष अदालत बनाई गई, जिसने चार्ल्स को अपराधी ठहराया और उसे प्राण-दण्ड की आज्ञा दी। ३० जनवरी सन् १६४९ के दिन अपने ही राज-भवन के सामने वाले मैदान में चार्ल्स का बध हुआ, और इस प्रकार पार्लियामेण्ट ने अपने ऊपर किये हुए अत्याचारों का बदला राजा के रक्त से लिया। राजा ने भी उस समय बड़ी वीरता तथा धीरता से मृत्यु का सामना किया। लोग जो उससे घृणा करते थे वे भी उसकी प्रशंसा करने लगे। अन्य देश वालों ने जब उसकी मृत्यु के समाचार सुने तो वे भी अँग्रेज़ी जनता के इस दुष्ट व्यवहार से अप्रसन्न हुए।

गृह-युद्ध की समाचोलना —

गृह-युद्ध के परिणाम ने यह सिद्ध कर दिया कि प्रजा का असन्तोष सीमा से बढ़ने पर कैसा भयंकर रूप धारण कर सकता है। राजा तथा पार्लियामेण्ट का बखेड़ा जेम्स प्रथम ही के राज्य-काल से आरम्भ हो गया था। वह धीरे-धीरे बढ़ता गया और अन्त में उसी के परिणाम स्वरूप चार्ल्स प्रथम से युद्ध हुआ और फिर उसके प्राण गये।

पार्लियामेण्ट का पक्ष सिद्धान्त की दृष्टि से भी न्याय पर था और कई विशेष कारणों से उसकी गृह-युद्ध में विजय पक्की हो गई। पार्लियामेण्ट को स्काटलैंड से समय पर पूर्ण सहायता मिली और इंगलैंड का भी धनिक भाग उसी के पक्ष में होने के कारण उसको धन की कमी न पड़ी। इसके अतिरिक्त आगे चलकर क्रामवेल जैसे योग्य सैनिक नेता के मिल जाने के कारण पार्लियामेण्ट की सेना की कमी भी पूरी हो गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

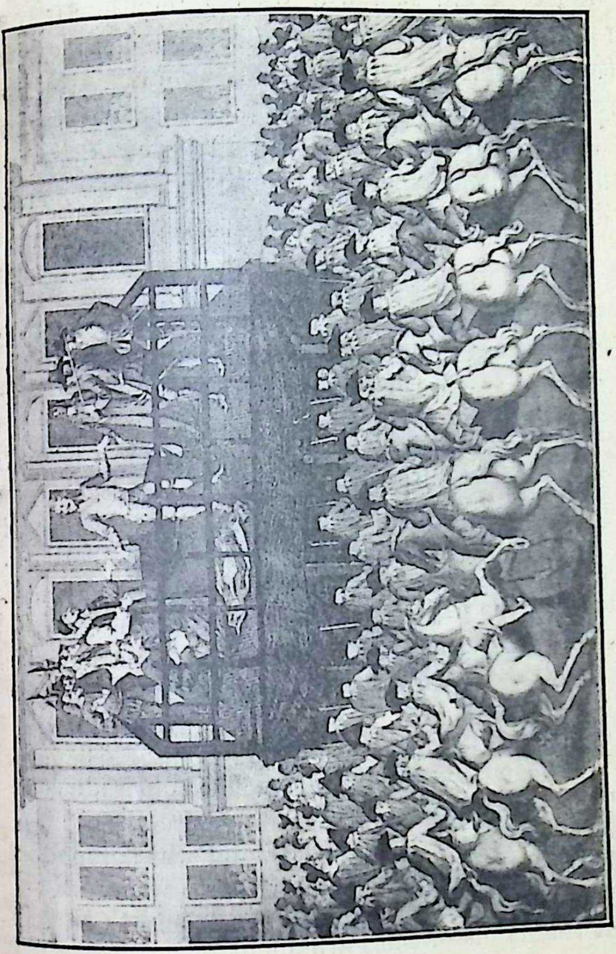

का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परन्तु गृह-युद्ध द्वारा समस्त जटिल राजनैतिक समस्याओं का निपटारा होना कठिन था। चार्ल्स के प्राण-दण्ड के पश्चात् राजनैतिक स्थिति और भी विकट हो गई, जिसका उल्लेख अगले परिच्छेद में किया जायगा। देश में प्रजा-तन्त्र राज्य स्थापित करने के स्थान में सैनिक शासन की स्थापना होती है, और जनता फिर से राजत्व स्थापित करती है। गृह-युद्ध ऐंग्लिकन चर्च का भी अन्त करने के लिये हुआ था, और जैसा कि हम आगे बतलायेंगे, देश में ऐंग्लिकन चर्च की ही प्रधानता स्थापित होती है।

Exercises

1. Explain why the Tudor Sovereigns of England were allowed to enjoy despotic authority, while James I and Charles I were opposed by their Parliaments.
2. Describe briefly the relations between Charles I and his first three Parliaments.
3. What were the main clauses of the Petition of Right? Discuss their constitutional importance.
4. Give a short account of the reign of Charles I during the period of eleven year's tyranny.
5. Briefly describe the Church policy of Archbishop Laud. Why did he become unpopular in the country?
6. Give a brief account of the Long Parliament. What Constitutional reforms did it introduce?
7. Trace the circumstances leading to the Civil War. What were its two parties, and what important battles were fought in this war?
8. How do you justify the execution of Charles I at the hands of the Parliament?
9. Account for the success of the Parliament in the Civil War.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इक्कीसवाँ परिच्छेद

क्रामवेल तथा प्रजा-तन्त्र राज्य

सन् १६४६	प्रजा-तन्त्र की स्थापना
,, १६५०	डनबर का युद्ध
,, १६५१	वारसेस्टर का युद्ध
,, १६५३	क्रामवेल का संरक्षक होना
,, १६५२—५४	हालैंड में युद्ध
,, १६५८	क्रामवेल की मृत्यु
,, १६६०	राजकीय शासन की पुनः स्थापना

प्रजा-तन्त्र की स्थापना—

चार्ल्स प्रथम के प्राण-दण्ड के पश्चात् देश का शासन-कार्य पार्लियामेण्ट के हाथ में आया। अब पार्लियामेण्ट में केवल ८० सदस्य रह गये थे, और यह बची-खुची पार्लियामेण्ट रम्प (Rump) के नाम से प्रसिद्ध है। शासन-संचालन के लिये पार्लियामेण्ट के अधिकार से एक ४१ सदस्यों की राष्ट्रसभा (Council of State) बनाई गई और राज-पद तथा लार्ड-सभा दोनों को हटा कर देश में प्रजा-तन्त्र राज्य (Commonwealth) की घोषणा की गई। इंगलैंड में बिना राजा के ग्यारह वर्ष तक शासन-कार्य चलता रहा। शासन पर पूर्ण अधिकार सेना का था, और तलवार के बल पर राज्य किया गया।

आयरलैंड का विद्रोह—

प्रजा-तन्त्र राज्य के अधिकार को आयरलैंड तथा स्काटलैंड वालों ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्वीकार न किया। आयरलैंड के केथलिक बराबर राज-पक्ष के समर्थक रहे और स्काटलैंड वालों ने भी स्टुअर्ट राज-वंश के प्रति सहानुभूति दिखाई। इन दोनों देशों में विद्रोह उठ खड़े हुए जिसको दमन करने के लिए प्रजा तन्त्र राज्य की ओर से क्रामवेल को नियुक्त किया गया। क्रामवेल ने पहले आयरलैंड जाकर वहाँ के विद्रोहियों को बुरी तरह परास्त किया और उनमें से बहुतों की सम्पत्ति तथा भूमि छीन कर वहाँ प्रोटेस्टेन्ट अँग्रेज़ों को बसा दिया। ड्रोगेडा (Drogheda) तथा वेक्सफोर्ड (Wexford) के नगरों में, जहाँ विद्रोहियों की संख्या अधिक थी, उसने हत्याकाण्ड मचाया। हज़ारों लोगों को बध कर दिया गया और बहुत-सों को दास बना कर वेस्ट इंडीज़ भेजा गया। विद्रोह को दमन करने के पश्चात् वहाँ का शासन क्रामवेल के दामाद जेनरल आयटन (General Ireton) के हाथों सौंपा गया। इस घटना के पश्चात् बहुत काल तक आयरलैंड की जनता क्रामवेल के नाम को घृणा से लेती रही।

स्काटलैंड का विद्रोह—

इसके पश्चात् वह स्काटलैंड पहुँचा जहाँ चार्ल्स प्रथम के पुत्र के आजाने के कारण स्थिति और भी विकट हो गई थी। चार्ल्स प्रथम का पुत्र चार्ल्स द्वितीय के नाम से राजा घोषित किया गया। स्काटलैंड के इस कार्य में अँग्रेज़ों को हस्तक्षेप करने का कोई अधिकार नहीं था। फिर भी क्रामवेल का यह विचार था कि इंगलैंड का शत्रु होने के कारण चार्ल्स का पड़ोसी देश स्काटलैंड में राज्य करना इंगलैंड के लिए सदैव भयकारक होगा। अतः क्रामवेल ने सन् १६५० में डनबर (Dunbar) के स्थान पर स्काटलैंड की सेना को परास्त किया। इसी बीच में चार्ल्स प्रथम के पुत्र ने इंगलैंड की ओर बढ़ना आरम्भ किया, परन्तु क्रामवेल ने उसका पीछा किया और उसे वोरसेस्टर (Worcester) के स्थान पर रोक कर पूर्णतया परास्त किया। वह प्राण बचा कर नार्मन्डी भाग गया और इसके बाद प्रजा-तन्त्र राज्य को किसी प्रकार का भय न रहा। स्काटलैंड के शासन-प्रबन्ध के लिये एक योग्य सैनिक जेनरल मांक (General Monk) को नियुक्त किया गया। उसकी अधीनता में देश में पूर्ण शान्ति स्थापित हो गई और देश के किसी भी भाग में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हालैंड से युद्ध--

अब प्रजा-तन्त्र राज्य ने अपने विदेशी व्यापार की उन्नति की ओर ध्यान दिया। आर्मेडा की पराजय के पश्चात् स्पेन की समुद्री शक्ति बहुत गिर गई थी और इस समय समुद्री व्यापार में हालैंड ही का बोलबाला था। उस समय उन्होंने पेसफ़िक सागर के मसाले के टापुओं (Spice Islands) के व्यापार पर पूर्ण अधिकार जमा रखा था, और उनकी चेष्टा थी कि अँग्रेज़ों को उन समुद्रों से निकाल बाहर करें। उन्होंने पूर्वी टापुओं में सौ अँग्रेज़ व्यापारियों का वध भी कर डाला था। उनके जहाज़ अन्य देशों का माल एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते थे। अँग्रेज़ी व्यापार को उन्नति देने के आशय से सन् १६५१ में पार्लियामेण्ट ने एक "जहाज़ी नियम" (Navigation Act) बनाया जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि जितने देशों का माल इंगलैंड तथा उसके उपनिवेशों में आवे, वह या तो उन्हीं देशों के जहाज़ों द्वारा या अँग्रेज़ी जहाज़ों द्वारा लाया जाय। इस नियम से हालैंड को बड़ी हानि हुई, क्योंकि उनके यहाँ का कोई व्यापारिक माल दूसरे देशों को नहीं भेजा जाता था, परन्तु अपने जहाज़ों द्वारा दूसरे देशों का माल ढोने में ही उनका लाभ था। अन्त में युद्ध की नौबत आई। कई जल-युद्ध हुए और अन्त में अँग्रेज़ी जहाज़ी अफ़सर ब्लेक (Admiral Blake) ने हालैंड वालों को परास्त किया। सन् १६५४ में हालैंड वालों को संधि करनी पड़ी और उन्हें अँग्रेज़ों के 'जहाज़ी नियम' स्वीकार करने पड़े। इस प्रकार समुद्री व्यापार में हालैंड का एकाधिकार समाप्त हुआ और अब समुद्र पर इंगलैंड तथा हालैंड की समान शक्ति हो गई।

रम्प पार्लियामेण्ट का विसर्जन—

चार वर्ष तक समस्त शक्ति रम्प पार्लियामेण्ट ही के हाथ में रही। उसके सदस्य इस शक्ति का दुरुपयोग करने लगे और उन्होंने अपने सम्बन्धियों ही को बड़े बड़े पदों पर नियुक्त किया। जब नये चुनाव का प्रश्न आया तो रम्प के सदस्यों ने यह चाहा कि उसके सब सदस्य फिर से चुन लिये जायें और अन्य सदस्यों का निर्वाचन भी उन्हीं की सलाह से हो। रम्प के इस प्रस्ताव से सेना के क्रोध की सीमा न रही और क्रामवेल ने अपने सैनिकों की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

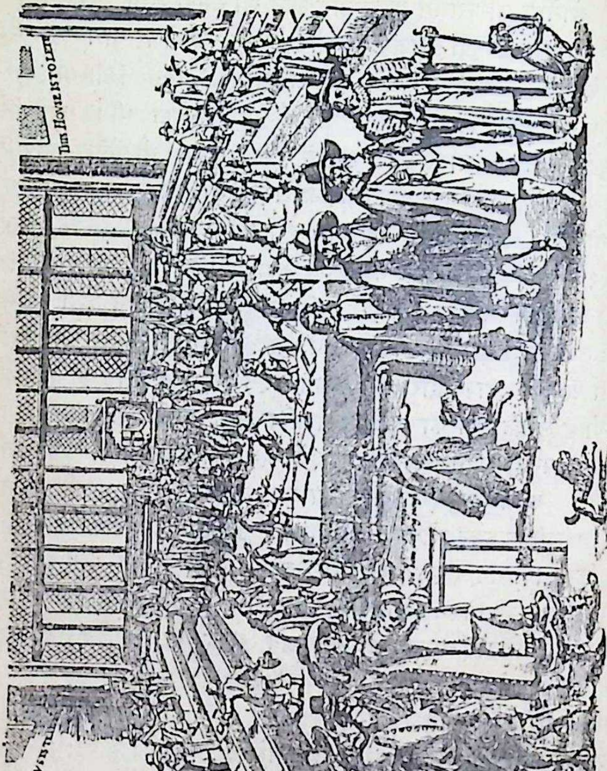

क्रामवेल द्वारा रम्प का विसर्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहायता से रम्प के सदस्यों को बलपूर्वक पार्लियामेण्ट-भवन से निकाल बाहर किया। इस प्रकार रम्प का विसर्जन हुआ और देशवासी यह समाचार पाकर बड़े प्रसन्न हुए।

बेयरबोन पार्लियामेण्ट—

अब क्रामवेल तथा उसके सैनिक अफ़सरों ने अपने मंत्रियों की सलाह से एक नई पार्लियामेण्ट बुलाई जिसके सदस्यों का अँग्रेज़ जाति ने चुनाव

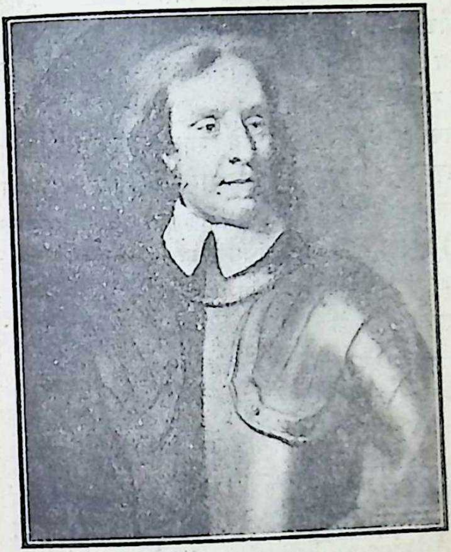

ऑलीवर क्रामवेल

किया। इसमें स्काटलैंड तथा आयरलैंड से भी छः छः प्रतिनिधि सम्मिलित हुए। यह सब सदस्य सेना के समर्थक थे, और इनकी सूची सेना की ही सलाह से तैयार की गई थी। अपने एक सदस्य 'प्रेज़े गाड बेयरबोन' (Praise-God-Barebones) के नाम पर पार्लियामेण्ट बेयरबोन पार्लियामेण्ट के नाम से प्रसिद्ध हुई। इस पार्लियामेण्ट के सदस्यों को

क्रामवेल द्वारा रम्प का विसर्जन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शासन का अनुभव न था, जिससे उन्होंने उल्टे-सीधे प्रस्ताव पेश करने आरम्भ किये। क्रामवेल ने यह देखकर इस पार्लियामेण्ट का थोड़े ही समय पश्चात् विसर्जन कर दिया।

क्रामवेल का महा संरक्षक बनना—

इसके पश्चात् एक नई शासन-पद्धति (Instrument of Government) के अनुसार क्रामवेल को महा संरक्षक (Lord Protector) की पदवी दी गई, और नई पार्लियामेण्ट में इंगलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड तीनों देशों से सदस्य बुलाये गये। परन्तु नये शासन की विफलता शीघ्र ही प्रकट होने लगी, और क्रामवेल तथा पार्लियामेण्ट के बीच कई प्रश्नों पर झगड़ा चलने लगा।

यह देखकर क्रामवेल ने इस नये शासन-विधान का भी अंत किया और इसके पश्चात् स्पष्ट रूप से सैनिक शासन आरम्भ कर दिया। क्रामवेल ने समस्त देश को ११ भागों में बाँटकर प्रत्येक में एक सैनिक शासक (Major General) नियुक्त किया। इन सैनिक शासकों को बड़े-बड़े अधिकार प्राप्त थे और वे प्रजा पर मनमाने अत्याचार करते थे। क्रामवेल ने अब अपने ही अधिकार से शासन-कार्य के लिये नियम (Ordinances) बनाये, और राज-पक्ष वालों की आय से दस प्रति सैकड़े के हिसाब से कोष के लिये कर वसूल किया। क्रामवेल के इस सैनिक शासन ने चार्ल्स के अत्याचारों को भुला दिया और जनता के हृदय में एक भारी असंतोष उत्पन्न कर दिया। इंगलैंड की प्रजा इस प्रकार के शासन को कदापि पसन्द नहीं कर सकती थी।

इसके बाद एक और नई शासन-पद्धति तैयार की गई, जो "Humble Advice and Petition" के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें उससे प्रार्थना की गई कि वह सैनिक शासकों को प्रान्तों से हटा दे, तथा पार्लियामेण्ट की एक और सभा (House of Lord) नियुक्त करे। उससे यह भी प्रार्थना की गई कि वह सम्राट् की उपाधि ग्रहण कर ले, तथा अपना उत्तराधिकारी भी नामज़द कर दे। परन्तु क्रामवेल ने सम्राट् की उपाधि स्वीकार करने से इन्कार कर दिया। इतना अवश्य हुआ कि उसने अपने पुत्र को अपना उत्तराधिकारी नियत कर दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रामवेल की धार्मिक नीति—

क्रामवेल प्रत्येक मतावलंबियों को धार्मिक स्वतन्त्रता देने के पक्ष में था। उसके शासन-काल में अधिकतर प्यूरिटन दल का ज़ोर था और उसके सिद्धान्तों के अनुसार नाच-गाने इत्यादि सब बन्द कर दिये गये थे। बड़े दिन (Xmas) तक के त्यौहार पर भी किसी प्रकार के खेल-तमाशे नहीं हो सकते थे। परन्तु अन्य धर्मावलम्बियों पर कोई और अत्याचार न होता था, और उनको पिछले राज्यकालों की अपेक्षा काफी स्वतन्त्रता थी। केवल ऐंग्लिकन चर्च वाले इस धार्मिक सहन-शीलता के लाभ से वंचित थे, क्योंकि वे राजपक्ष के कट्टर पक्षपाती माने जाते थे और उन पर क्रामवेल को भी किसी प्रकार का विश्वास न था। केथलिकों को धार्मिक स्वतन्त्रता देना उस समय असम्भव था, परन्तु उनके साथ पहले की अपेक्षा कम कठोरता का बर्ताव किया जाता था। क्रामवेल की उदारता का सबसे बड़ा सबूत यह है कि यहूदी लोग, जो एडवर्ड प्रथम के राज्य-काल से इंगलैंड में पैर नहीं रख सकते थे, उन्हें फिर से यहाँ बसने की आज्ञा मिल गई।

क्रामवेल की परराष्ट्र नीति—

क्रामवेल की परराष्ट्र नीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं के काल की खोई हुई प्रतिष्ठा को फिर से स्थापित किया जाय। हालैंड पर विजय प्राप्त करके हालैंड वालों को अँग्रेज़ी जहाज़ी नियम (Navigation Law) स्वीकार करने पर बाध्य किया और इस प्रकार उसने इंगलैंड की व्यापारिक स्थिति को बहुत उन्नति पर पहुँचाया, और अब अँग्रेज़ी व्यापारिक तथा सैनिक जहाज़ों की संख्या दिन पर दिन बढ़ने लगी। क्रामवेल ने फ्रान्स के राजा लूई चौदहवें (Louis XIV) को अपनी ओर मिला कर स्पेन के विरुद्ध भी युद्ध किया। इसमें वेस्ट इन्डीज़ (West Indies) का जमेका (Jamaica) नामक टापू—जो स्पेन के अधीन था—सन् १६५५ में छीन लिया गया, और अँग्रेज़ी जहाज़ी अफ़सर ब्लेक ने सेन्टा क्रूज़ (Santa Cruz) के स्थान पर स्पेनी बेड़े को सन् १६५७ में नष्ट कर दिया। फिर सन् १६५८ में क्रामवेल की सेना ने नीदरलैंड में जाकर स्पेनी सेना को परास्त किया और डनकर्क पर अधिकार करके समस्त यूरोप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में इंगलैंड की प्रबल शक्ति का परिचय दिया। सब विजयों के कारण अटलांटिक महासागर में इंगलैंड की जल-शक्ति प्रधान हो गई, और क्रामवेल की विदेशी नीति की सफलता के परिणाम-स्वरूप इंगलैंड की प्रतिष्ठा देशान्तरों में खूब फैल गई। अब अँग्रेज़ी साम्राज्य और व्यापार की दिन-प्रति-दिन उन्नति होने लगी।

क्रामवेल की जीवनी का सारांश--

प्रजा-तन्त्र राज्य का मुख्य संस्थापक क्रामवेल ही को समझना चाहिये, और उसी के द्वारा इस काल का समस्त शासन-कार्य चला। वह दीर्घ-कालिक पार्लियामेण्ट (Long Parliament) का एक मुख्य सदस्य रह चुका था और उसने इस पार्लियामेण्ट के राजनैतिक सुधारों में प्रमुख भाग लिया था। इसके पश्चात् जब राजा तथा पार्लियामेण्ट में गृह-युद्ध आरम्भ हुआ तब तो क्रामवेल को अपनी युद्ध-कला की निपुणता दिखाने का अवसर मिला। पहले वह पूर्वीय प्रान्त की एक छोटी-सी सेना का नायक था, परन्तु इसका संगठन उसने इतनी योग्यता से किया कि उसका यश बढ़ने लगा और उसके सैनिक "वीर सैनिक" (Iron Sides) के नाम से प्रसिद्ध हुए। आगे चलकर क्रामवेल ही के अनुरोध से नई आदर्श सेना (New Model Army) बनाई गई, जिसके बनते ही गृह-युद्ध ने पलटा खाया, और जहाँ पहले राज-पक्ष की विजय हो रही थी उसके स्थान पर पार्लियामेण्ट-दल की विजय होने लगी। गृह-युद्ध की विजय का श्रेय भी अधिकतर क्रामवेल ही को मिलना चाहिये, और इसी कारण उसको प्रजा-तन्त्र राज्य काल में इतना उच्च स्थान प्राप्त हुआ। प्रजा-तन्त्र के ग्यारह वर्ष के काल में समस्त अधिकार सेना ही के हाथ में था, और सेना का मुख्य नेता होने के कारण समस्त शासन-नीति क्रामवेल ही निर्धारित करता था। जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं क्रामवेल की पार्लियामेण्टों ने उसे "राजा" (King) की उपाधि देने का भी प्रस्ताव किया था, परन्तु क्रामवेल ने इस उपाधि को ग्रहण करना उचित न समझा। केवल राजा का नाम न था, परन्तु उसे राजा से भी अधिक अधिकार प्राप्त थे; उसने जो चाहा, बिना किसी रोक-टोक के कर डाला।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रामवेल यदि चाहता तो फ्रान्स के नैपोलियन की भाँति अपना राजवंश स्थापित कर सकता था, परन्तु उसने अपनी शक्ति का दुरुपयोग न किया और अपनी शक्ति के काल में जो कुछ किया उन सबमें देश के हित को ही अपना प्रधान लक्ष्य रखा।

क्रामवेल की मृत्यु तथा उसका चरित्र—

क्रामवेल का शासन वास्तव में सैनिक शासन था, जिसके कारण देशवासियों की स्वतन्त्रता इत्यादि के सिद्धान्त—जिनके लिये गृह-युद्ध हुआ था—सब लुप्त हो गये। परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि क्रामवेल ने देश का बहुत उपकार किया। वह वीर सैनिक तथा योग्य राजनीतिज्ञ था और यह उसी की योग्यता का फल था कि प्रजा-तन्त्र राज्य के काल में देश में सुख तथा शान्ति बनी रही। क्रामवेल ही पहला शासक था जिसने इंगलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड तीनों देशों को एक शासन के अधीन किया। उसकी पार्लियामेण्ट में तीनों देशों के सदस्य सम्मिलित होते थे और तीनों देशों में एक ही राजनियमों द्वारा शासन होता था। क्रामवेल में केवल दोष यह था कि वह अपनी नीति का विरोध सहन न कर सकता था। उसकी पार्लियामेण्टों में केवल वही सदस्य निर्वाचित हो सकते थे जो उसके पक्ष के समर्थक थे। उसके विरोधियों का शासन-विधान में कोई स्थान नहीं था। इस प्रकार देश की स्वतन्त्रता के विचार से तो प्रजा-तन्त्र राज्य विफल रहा, परन्तु इस काल में देश ने हर प्रकार की उन्नति की और अधिकतर देशवासियों का हित ही हुआ। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि क्रामवेल के ही उद्योग से इंगलैंड के इतिहास में फिर कभी ऐसा नहीं हुआ कि किसी अन्य राजा ने चार्ल्स के समान निरंकुश शासन करने की चेष्टा तक की हो। दूसरे, क्रामवेल की परराष्ट्र नीति का ही यह परिणाम था कि देशान्तरों में इंगलैंड की प्रतिष्ठा बढ़ गई।

सन् १६५८ में क्रामवेल की मृत्यु हुई और उसका पुत्र रिचार्ड क्रामवेल उसके स्थान पर संरक्षक नियत हुआ।

राजकीय शासन की पुनः स्थापना—

रिचार्ड की क्रामवेल की सेना से न बनी और उसने नौ ही मास बाद अपने पद को त्याग दिया। इसके पश्चात् एक वर्ष तक बड़ी गड़बड़ी रही।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय देश के सम्मुख यह प्रश्न था कि अब शासन-कार्य किस प्रकार चलाया जाय। जेनरल मांक (Monk) के अनुरोध से "दीर्घकालिक पार्लियामेण्ट" फिर बुलाई गई और उसने यह निश्चित किया कि अब नया चुनाव होना चाहिये। अतः नियमानुसार कन्वेनशन पार्लियामेण्ट (Convention Parliament) बुलाई गई, जिसको शासन-विधान के निर्णय का भार सौंपा गया। ऐसी पार्लियामेण्ट जो राजा की आज्ञा बिना बुलाई जाती है वह कन्वेनशन पार्लियामेण्ट कहलाती है। इसी समय चार्ल्स प्रथम के पुत्र ने हालैंड के ब्रेडा (Breda) नामक नगर से एक घोषणा प्रकाशित की, जिससे उसने अपराधियों को क्षमा करने, धार्मिक स्वतन्त्रता देने और सेना का वेतन चुकाने इत्यादि का वचन दिया। इस समाचार को पाते ही कन्वेनशन पार्लियामेण्ट ने यह निश्चित किया कि युवराज को राजा बनाने का निमन्त्रण भेजा जाय। इस निर्णय के अनुसार २९ मई सन् १६६० को युवराज ने बड़े समारोह के साथ लन्दन नगर में प्रवेश किया और अब वह चार्ल्स द्वितीय के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। इस प्रकार लगभग ग्यारह वर्ष के पश्चात् फिर से राजकीय शासन (Restoration) स्थापित हुआ।

प्रजातन्त्र-काल का सिंहावलोकन--

प्रजा-तन्त्र काल इंगलैंड के इतिहास में भिन्न-भिन्न प्रकार के शासन-विधानों के प्रयोग का समय माना जाता है। जनता के अधिकारों के समर्थकों ने जोश में आकर अपने राजा चार्ल्स प्रथम को तो स्वतन्त्रता का शत्रु समझ कर उसका बलिदान कर डाला, परन्तु उसकी मृत्यु के पश्चात् वे यह निश्चय न कर सके कि शासन-कार्य किस प्रकार चलाया जाय। पहले उन्होंने एक छोटी-सी राज-सभा (Council of State) बनाई और समस्त अधिकार उसी को सौंपा। इसके पश्चात् रम्प पार्लियामेण्ट (Rump Parliament) का विसर्जन होने पर बड़े परिश्रम से एक शासन-विधान (Instrument of Government) तैयार किया गया, जिसके अनुसार क्रामवेल को देश का संरक्षक (Lord Protector) नियत किया गया और सहायता के लिये पार्लियामेण्ट को भी शासन-विधान में स्थान दिया गया। परन्तु क्रामवेल और उसकी पार्लियामेण्टों में उसी तरह झगड़ा हुआ,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं और उनकी पार्लियामेण्टों में हुआ था। इस कारण नया शासन-विधान शीघ्र ही निष्फल सिद्ध हुआ और इसके पश्चात् देश में स्पष्ट रूप से सैनिक शासन स्थापित हो गया और भिन्न-भिन्न प्रान्तों में सैनिक अफ़सर (Major Generals) शासन-संचालन के लिये नियुक्त कर दिये गये। कुछ काल तक इसी प्रकार सैनिक शासन चला, और इसके पश्चात् एक और नये शासन-विधान (Humble Advice and Petition) के बनाने की आवश्यकता हुई। इस नई शासन-प्रणाली में "संरक्षक" (Lord Protector) के अधिकार और भी अधिक बढ़ा दिये गये, और उसको अपने उत्तराधिकारी चुनने तक का अधिकार दे दिया गया।

इस प्रकार ग्यारह वर्ष के काल में चार पाँच बार शासन-पद्धति बदली, परन्तु उनमें से कोई भी संतोष-जनक सिद्ध न हुई। भाग्यवश सेना का नेता क्रामवेल हृदय से देश-हितैषी था। यदि ऐसा न होता, तो इतनी बार शासन-प्रणालियों के बदलने के कारण देश में बड़ी भारी गड़बड़ फैल जाने की संभावना थी। देशवासियों को अब पता चला कि राजा को बलि चढ़ाना सुगम था, परन्तु शासन-कार्य का उचित प्रबन्ध करना बड़ा कठिन है। प्रजा-तन्त्र के काल में जनता को लेशमात्र भी स्वतन्त्रता न मिल सकी। स्वतन्त्रता की इच्छुक जनता को सैनिक शासन के दबाव में रहना पड़ा। कर भी प्रजा को चार्ल्स प्रथम के राज्य-काल की अपेक्षा कहीं अधिक देने पड़ते थे। प्यूरिटनों की धार्मिक नीति ने सर्वत्र उदासीनता फैला दी, जो अँग्रेज़ी प्रजा के स्वभाव के बिल्कुल प्रतिकूल पड़ती थी। इस प्रकार जिन राजनैतिक सिद्धान्तों के लिये गृह-युद्ध हुआ था, वे सब लुप्त हो गये। इन्हीं सब कारणों से देशवासियों की सहानुभूति प्रजा-तन्त्र राज्य के प्रति न रही और जब १६६० में पुनः राज-स्थापन (Restoration) हुआ, तो समस्त देश में प्रसन्नता दिखाई पड़ती थी, और लोगों ने हृदय से चार्ल्स द्वितीय का स्वागत किया। इसी प्रजा-तन्त्र काल की विफलता के कारण अँग्रेज़ों की मनोवृत्ति अब राज्य-क्रान्ति (Revolution) के विरुद्ध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है, और वे इसी निश्चय पर आरूढ़ हैं कि रक्तपात के स्थान पर नियमानुसार विधि से आन्दोलन करना जनता के अधिकारों की रक्षा का एकमात्र मार्ग है।

Exercises.

1. Sketch briefly the career of Oliver Cromwell.
2. Describe the various forms of Government that were tried in England during the period of Common Wealth and the Protectorate.
3. Discuss the foreign policy of Cromwell and describe his relations with the European powers.
4. Give an estimate of Cromwell as a soldier and statesman.
5. Why could not the rule of Cromwell be popular?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का पूर्ण अधिकार है उसका नाम "विग" (Whig) दल पड़ा, और दूसरा दल जो राज्याधिकार पर आघात का विरोधी था टोरी (Tory) दल के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वह राजनैतिक दलबन्दी इस काल के पश्चात् से बराबर बनी रही और आज तक ये दोनों दल इंगलैंड के राजनैतिक जीवन में विद्यमान हैं, यद्यपि इनके नामों में अब संशोधन हो गया है।

चार्ल्स के अन्तिम दिवस—

इस राजनैतिक दलबन्दी के बखेड़ों से बचने के लिये चार्ल्स ने अपने राज्य-काल के पिछले पाँच वर्षों में पार्लियामेण्ट का कोई अधिवेशन नहीं किया। इस बीच में विग-दल के नेताओं ने राजा और जेम्स के पकड़ने के लिए एक षड्यन्त्र (Rye House Plot) रचा। परन्तु इसका भेद बहुत जल्दी खुल गया और विग-दल के बहुत-से नेताओं को प्राण-दण्ड दिया गया। इस कारण विग-दल देश में बदनाम हो गया और उसके समर्थकों की संख्या घटने लगी। चार्ल्स की शक्ति को रोकने वाला अब कोई न रहा, और उसने पिछले पाँच वर्षों में मनमाना शासन किया। उसने कई नगरों के चार्टर वापस ले लिये और नागरिक सभाओं को तोड़ कर उनके स्थान पर राज-कर्मचारी नियुक्त कर दिये। सन् १६८५ में जब उसकी मृत्यु हुई उस समय उसकी शक्ति का पूर्ण रूप था और वह अपने सब विरोधियों का सफलता पूर्वक दमन कर चुका था। चार्ल्स की सफलता उसके व्यवहार-कुशल होने का परिचय देती है और यह बड़े गौरव की बात है कि देश में इतने धार्मिक तथा राजनैतिक बखेड़े होने पर भी उसकी शक्ति में कमी न आई और वह अपने उद्देश्य में सफल हुआ।

Exercises.

1. Describe the religious position in the reign of Charles II.
2. What various laws were made against the Puritans by the Cavalier Parliament ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. How did Charles II try to favour the Catholics? Why did he fail in this attempt?
4. Discuss the foreign policy of Charles II and describe his relations with Holland and France.
5. Briefly describe Charles II's relation with his Parliaments. How far was he successful in his attempt to make himself an absolute King?
6. Write short notes on :—

   Clarendon, Danby, Titus Oates Plot, Test Act, Habeas Corpus Act and Exclusion Bill.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाईसवाँ परिच्छेद

चार्ल्स द्वितीय

सन् १६६०	चार्ल्स द्वितीय का राज्याभिषेक
,, १६६५	भीषण प्लेग
,, १६६६	भयंकर अग्नि
,, १६७०	डोवर की गुप्त सन्धि
,, १६७३	टेस्ट एक्ट
,, १६७९	स्वतन्त्रता-रक्षण नियम
,, १६८५	चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु

चरित्र तथा धार्मिक विचार—

प्रजा-तन्त्र काल में सैनिकों तथा प्यूरिटनों के अत्याचारों से देशवासी इतने तंग आगये थे कि उन्होंने चार्ल्स द्वितीय का हृदय से स्वागत किया, और राजकीय शासन की पुनः स्थापना की खुशी मनाई। उस समय चार्ल्स की आयु ३० वर्ष की थी। इंगलैंड वापस आने पर उसने निश्चय किया कि भविष्य में वह देश छोड़ कर बाहर न जावेगा। चार्ल्स बड़ा व्यवहार-कुशल था जिससे वह शीघ्र ही प्रजा का प्रेम-पात्र हो गया। उसने कई बार प्रजा की इच्छा के विरुद्ध भी कार्य किये, परन्तु विरोध बढ़ता देखने पर वह सदा सावधान हो जाता था, और तुरन्त ही अपनी नीति में आवश्यक परिवर्तन कर देता था। अपने पूर्वजों के समान उसकी भी यही इच्छा थी कि पार्लियामेण्ट को अपने अधीन करके मनमाना शासन करे, परन्तु उसने पार्लियामेण्ट से खुल्लम-खुल्ला कोई झगड़ा मोल न लिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार्ल्स मक्कार तथा चरित्र-हीन था, और उसका दरबार थोड़े ही दिनों में दुराचारी लोगों का केन्द्र बन गया। फ्रान्स के विलासी जीवन का उसके हृदय पर बहुत प्रभाव पड़ा था, अतः राजा होने पर उसने यही चेष्टा की कि जीवन जितना आनन्द पूर्वक व्यतीत हो सके उतना ही अच्छा। परिश्रम करने से वह घबराता था। वह फ़िज़ूल-खर्च था और विलासी तथा चरित्रहीन लोग उसे हर समय घेरे रहते थे। उसके दुश्चरित्र ने देश के सदाचार पर

चार्ल्स द्वितीय

बहुत बुरा प्रभाव डाला। वह विश्वास-पात्र भी नहीं था। उसने ब्रेडा में घोषणा की थी कि उसके पिता के विरुद्ध जिन लोगों ने गृह-युद्ध में भाग लिया था उन्हें क्षमा कर दिया जावेगा। परन्तु कन्वेनशन पार्लियामेण्ट ने जब उन लोगों को, जिन्होंने न्यायाधीश बन कर चार्ल्स प्रथम को प्राण-दण्ड दिया था, दण्ड देने की आज्ञा दी तो राजा अपने वचनों को भूल गया। ऐसे १३ लोग जो जीवित थे वध कर दिये गये और क्रामवेल आदि जो मर चुके

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को ठुकरा कर विदेशों से गुप्त संधियां कर लिया करते थे। सन् १६७० में डोवर की गुप्त संधि केबाल के दो मंत्रियों द्वारा ही हुई थी। इन्हीं के काल में चार्ल्स ने धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की थी। परन्तु पार्लियामेण्ट के विरोध के कारण राजा को इसे वापस लेना पड़ा। इसके पश्चात् उसे टेस्ट एक्ट (Test Act) स्वीकार करना पड़ा, जिसके अनुसार ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त कोई और किसी राजपद को ग्रहण न कर सकता था। इसी के परिणाम स्वरूप केबाल के दो केथलिक मंत्रियों (Clifford and Arlington) को अपना मंत्रि-पद छोड़ना पड़ा, ऐशले (Ashley, Lord Shaftesbury.) ने त्याग-पत्र दे दिया और शेष दो को स्वयं राजा ने अलग कर दिया। इस प्रकार इस मंत्रि-मण्डल का अन्त हुआ।

डेनबी का मंत्रित्व—

इसके पश्चात् राजा ने डेनबी को—जो पार्लियामेण्ट का एक प्रमुख नेता था—अपना मुख्य मंत्री बनाया। वह ऐंग्लिकन चर्च का कट्टर अनुयायी और राज-शक्ति को दृढ़ करने का पक्षपाती था। वह हालैंड से मित्रता रखना चाहता था और उसी के अनुरोध से चार्ल्स की भतीजी मेरी का विवाह हालैंड के नेता विलियम के साथ हुआ था। परन्तु धन मिलने के लालच से वह लुई चतुर्दश से भी बिगाड़ करना नहीं चाहता था, और गुप्त रूप से फ्रांस से भी पत्र-व्यवहार रखता था।

इसी समय टाइटस ओट्स (Titus Oats) नामक एक व्यक्ति ने यह समाचार फैलाया कि फ्रान्स के राजा की सहायता से केथलिक दल एक बड़ा षड्यन्त्र रच रहा है, जिसका आशय चार्ल्स को बध करके उसके छोटे भाई जेम्स को राजा बनाने का है। इससे देश में बड़ी सनसनी फैली और डेनबी के फ्रान्स से पत्र-व्यवहार रखने के कारण पार्लियामेण्ट ने उस पर भी शंका की। डेनबी पर अभियोग चलाया गया और यहाँ तक नौबत आई कि जब चार्ल्स ने उसे क्षमा-पत्र दे दिया, तब भी पार्लियामेण्ट ने उसे स्वीकार न किया; और वह इस सिद्धान्त पर अड़ी रही कि राज के कर्मचारी पार्लियामेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी हैं और इसीलिए राजा का क्षमा-पत्र भी उन्हें अभियोग से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नहीं बचा सकता। अन्त में डेनबी को अपने पद से हटना पड़ा और वह टावर में बन्द कर दिया गया।

स्वतन्त्रता-रक्षण-नियम—

सन् १६७६ में १७ वर्ष के बाद चार्ल्स ने केवेलियर पार्लियामेंट को विसर्जित किया। उसके बाद जो नई पार्लियामेंट आई उसने एक बड़े महत्व का नियम (Habeas Corpus Act) पास किया। इसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि प्रत्येक अभियुक्त को पकड़े जाने के बाद जितना शीघ्र संभव हो अदालत के सामने नियमानुसार दोष-समीक्षा के लिये पेश किया जाय। इसका यह आशय था कि किसी भी नागरिक को दोष के निर्णय की प्रतीक्षा में कारागार में कष्ट न भोगना पड़े। इस नियम के पश्चात् बिना दोष के निश्चित रूप से सिद्ध हुए किसी को जेल भेजना असंभव हो गया।

उत्तराधिकार का प्रश्न—

चार्ल्स द्वितीय के कोई सन्तान न थी और उसका उत्तराधिकारी उसका छोटा भाई जेम्स ही होता था। जेम्स पक्का केथलिक था और इसी कारण उसने टेस्ट एक्ट के पास होने पर अपने प्रधान जल-सेनापति (Lord High-Admiral) के पद से त्याग-पत्र दे दिया था। इस समय केथलिक दल देश में बहुत बदनाम हो रहा था और इसलिये पर्लियामेंट ने जेम्स को राज-सिंहासन से वंचित रखने के लिये एक प्रस्ताव (Exclusion Bill) पेश किया। इस प्रस्ताव पर बड़ा वाद-विवाद हुआ और इसके फल-स्वरूप पार्लियामेंट तथा देश में दो दल बन गये। एक दल का कहना था कि पार्लियामेंट को उत्तराधिकार-निर्णय का पूर्ण अधिकार है, और दूसरा दल राजा के अधिकारों पर कोई हस्तक्षेप न देख सकता था। लोक-सभा में यह प्रस्ताव पास हो गया, परन्तु लार्डसभा ने उसे अस्वीकृत कर दिया और इस कारण वह राज-नियम न बन सका।

राजनैतिक दलबन्दी का प्रारम्भ—

उत्तराधिकार के प्रश्न पर बने हुए दोनों दल स्थायी हो गये, और शीघ्र ही उन्होंने निश्चित रूप से अपने राजनैतिक सिद्धान्त निर्धारित कर डाले। जिस दल का यह मत था कि पार्लियामेंट को राजसिंहासन के प्रश्न के निर्णय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Ramdas Prasad class

तेईसवाँ परिच्छेद

जेम्स द्वितीय

सन् १६८५	जेम्स द्वितीय का राज्याभिषेक
,, १६८५	सेजमूर का युद्ध
,, १६८८	सात पादरियों का मुक़द्दमा
,, १६८८	जेम्स द्वितीय का भागना तथा रक्तहीन राज्य-क्रान्ति

चरित्र—

चार्ल्स द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका छोटा भाई "जेम्स द्वितीय" के नाम से सन् १६८५ में राजा हुआ। उसके केथलिक होने के कारण पार्लियामेण्ट ने उसको राजसिंहासन से वंचित करने का प्रयत्न किया था। परन्तु इस समय तक यह आन्दोलन शान्त हो चुका था और प्रजा ने उसके राज्याभिषेक का कोई विरोध न किया। इस समय देश में सुख-शान्ति थी और पार्लियामेण्ट ने भी बड़ी प्रसन्नता से वार्षिक कर के रूप में उसे उन्नीस लाख पाउंड की स्वीकृति दी। इस प्रकार जेम्स द्वितीय के सफल शासक होने की काफ़ी सम्भावना थी। परन्तु उसने राज्याभिषेक के थोड़े ही दिन बाद अपने संकीर्ण विचारों के कारण पार्लियामेण्ट के अधिकारों को ठुकराना और केथलिक मत का प्रचार करना आरम्भ किया, जिससे प्रजा की सहानुभूति भी विरोध में बदल गई और उसको तथा उसकी सन्तान को इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मनमथ का विद्रोह तथा ख़ूनी न्यायालय--

पार्लियामेण्ट ने जेम्स के स्थान पर चार्ल्स द्वितीय के पुत्र मनमथ (Duke of Monmouth) को राजा बनाने का प्रस्ताव किया था, और विग-दल ने इसका समर्थन किया था। मनमथ का विचार था कि जेम्स रोमन केथलिक है, इसलिये इंगलैंड और स्काटलैंड की प्रोटेस्टेन्ट जनता उसके

जेम्स द्वितीय

विरुद्ध मेरा समर्थन करेगी। अतः जेम्स के राजा होने के कुछ ही काल बाद मनमथ ने देश के पश्चिमी भाग में विग-दल की सहायता से विद्रोह खड़ा कर दिया। जेम्स के विरुद्ध उसे पर्याप्त सहायता न मिल सकी; केवल कुछ किसानों और मज़दूरों ने इसका साथ दिया। यह विद्रोह शीघ्र ही शान्त कर दिया गया और मनमथ की सेना सेजमूर (Sedgemoor) के स्थान पर बुरी तरह परास्त की गई। मनमथ पकड़ा गया और उसे प्राण-दण्ड दिया गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार आर्गाइल (Duke of Argyle) ने स्काटलैंड में मनमथ का पक्ष लेकर विद्रोह किया था; और वह भी सरलता-पूर्वक दमन कर दिया गया और उसका भी वध कर दिया गया।

विद्रोहियों को दण्ड देने के लिये जेम्स ने जज जैफ्रेस (Geoffreys) को देश के पश्चिमी भाग में भेजा। उसने विद्रोहियों को इतने कड़े दण्ड दिये कि उसकी अदालत खूनी अदालत (Bloody Assizes) के नाम से प्रसिद्ध हो गई। ३०० विद्रोहियों को प्राण-दण्ड मिला, ८०० आदमियों को दास बना पश्चिमी टापुओं में भेज दिया गया, और बहुतों को देश निकाला दिया गया। इस कठोरता के कारण देश में बड़ी सनसनी फैली और जब लोगों को यह मालूम हुआ कि यह सब राजा की आज्ञा से हुआ है तो लोगों को जेम्स से घृणा होनी आरम्भ हो गई। इस प्रकार आरम्भ ही से उसके पतन के बीज बोये जाने लगे।

केथलिक धर्म तथा निरंकुशता का प्रयत्न—

इन अत्याचारों का कोई विशेष विरोध न होने के कारण जेम्स का उत्साह बढ़ गया, और अब उसने स्पष्ट रूप से पार्लियामेण्ट के अधिकारों को ठुकराना आरम्भ किया। उसका विचार था कि आवश्यकता पड़ने पर राजा को नियमों का उल्लंघन करने का अधिकार (Dispensing Power) है, और यह भी अधिकार है कि जिस नियम को चाहे रद्द (Suspending power) कर दे। अतः उसने टेस्ट एक्ट के विरुद्ध केथलिकों को सब विभागों में उच्च पद देना प्रारम्भ किया और धीरे-धीरे देश को केथलिक बनाने का प्रयत्न किया। उसने भी चार्ल्स द्वितीय की भाँति धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Indulgence) प्रकाशित की और केथलिकों तथा डिसेण्टरों को खुल्लम-खुल्ला प्रार्थना करने की सुगमता दे दी। जेम्स ने फिर से कोर्ट-आफ़-हाई-कमीशन की स्थापना की जिसके द्वारा विरोधी पादरियों को कड़े-कड़े दण्ड दिये गये। इससे प्रजा में बड़ी हलचल मची, परंतु जेम्स ने इसकी तनिक भी परवा न की। उसका अत्याचार बराबर बढ़ता गया, और विरोधियों को भय-भीत करने के लिए उसने अपनी सेना बढ़ा ली। अब ऐसा प्रतीत होने लगा कि देश के प्राचीन से प्राचीन नियम भी कोई अर्थ नहीं रखते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जेम्स तथा विश्वविद्यालय—

अब जेम्स ने देश के विश्वविद्यालयों को अपनी मुट्ठी में दबाने का प्रयत्न किया। उसने विश्वविद्यालयों में प्रोटेस्टेएटों के स्थान पर केथलिकों को भरना चाहा, जिससे वहाँ शिक्षा पाने वालों पर केथलिक धर्म ही का प्रभाव पड़े। अतः जब आक्सफोर्ड विश्वविद्यालय के मैडलीन कालेज (Magdalen College) में उसके अधिष्ठाता की जगह खाली हुई तब उसने पारकर (Parker) नामक एक केथलिक को उसके स्थान पर नियुक्त किया। विश्वविद्यालय के सदस्यों ने इसका विरोध किया, परन्तु जेम्स ने बलपूर्वक पारकर को अधिष्ठाता बनाया और जिन अध्यापकों ने उसकी नियुक्ति का विरोध किया था उन सबको निकाल बाहर किया। इससे शिक्षित समाज में भी जेम्स की बदनामी बढ़ने लगी।

सात पादरियों पर अभियोग—

सन् १६८८ में रोमन केथलिकों को पूर्ण स्वतन्त्रता देने के अभिप्राय से जेम्स ने दूसरी बार धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणा (Declaration of Indulgence) फिर प्रकाशित की, और इस बार यह आज्ञा दी कि प्रत्येक गिर्जाघर में पादरी लोग उसे पढ़कर प्रजा को सुनावें। केन्टरबरी के लाट पादरी तथा छः अन्य पादरी इस आज्ञा का विरोध करने के लिये राजा के सम्मुख उपस्थित हुए। जेम्स ने इन सातों को बन्दी कर लिया और उन पर राजद्रोह का अभियोग चलाया। जब यह मुक़दमा अदालत में पेश हुआ, तो जजों ने उन्हें मुक्त कर दिया, क्योंकि उनका कोई अपराध न था। उनके मुक्त होने का समाचार पाकर लन्दन में रोशनी की गई और प्रजा ने सर्वत्र खुशी मनाई।

विलियम को निमंत्रण—

इसी बीच में जेम्स के एक पुत्र का जन्म हुआ। अब तक प्रजा यह समझे हुए थी कि राजा बूढ़ा है और उसकी उत्तराधिकारिणी दोनों लड़कियाँ प्रोटेस्टेएट होने के कारण केथलिक मत का प्रचार स्थाई न हो सकेगा परन्तु पुत्र-जन्म से यह स्थिति बदल गई और अब प्रजा को यह भय हो लगा कि देश में कहीं केथलिक शासकों का सिलसिला जारी न हो जाय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह देखकर देश के सात मुख्य नेताओं ने विलियम-आफ़-आरेञ्ज को इंगलैंड में आकर राजसिंहासन ग्रहण करने के लिये निमन्त्रण-पत्र भेजा। विलियम प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय का कट्टर अनुयायी था और स्टुअर्ट परिवार से उसका सम्बन्ध था। यह चार्ल्स प्रथम का धेवता तथा जेम्स द्वितीय का दामाद था। विलियम इस समय लुई चतुर्दश के विरुद्ध युद्ध करने में लगा हुआ था, परन्तु यह सोच कर कि इस युद्ध में इंगलैंड की सहायता प्राप्त करने का यह सुन्दर अवसर है उसने निमन्त्रण को स्वीकार कर लिया। ५ नवम्बर सन् १६८८ के दिन टारबे (Torbay) के बन्दर पर विलियम कुछ सेना सहित आ पहुँचा।

रक्तहीन राज्य-क्रान्ति

विलियम के इंगलैंड आने पर वहाँ की बहुत कुछ जनता ने उसका साथ दिया, और जेम्स की बहुत कुछ सेना भी विलियम से जा मिली। उसकी पुत्री ऐन (Anne) और राज्य के बहुत-से कर्मचारी भी जेम्स के विरुद्ध हो गये। अब जेम्स बहुत घबराया और उसने वचन दिये कि पार्लियामेण्ट को बुलाऊँगा, और उसने केथलिक कर्मचारियों को पदों से हटा दिया और कोर्ट-आफ़-हाई-कमीशन तोड़ दिया। परन्तु अन्त में इससे विरोध शान्त न हुआ। निराश होकर जेम्स ने पहले तो अपनी रानी तथा बालकों को बाहर भेज दिया और फिर स्वयं इंगलैंड छोड़ कर २३ दिसम्बर सन् १६८८ के दिन फ्रान्स भाग गया।

यह घटना इतिहास में रक्त-हीन राज्य-क्रान्ति (Bloodless Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है। जेम्स इंगलैंड का सिंहासन छोड़ कर भागा और ख़ून की एक भी बूंद बहाये बिना विलियम उसके स्थान पर इंगलैंड का राजा हुआ। पार्लियामेण्ट ने एक प्रस्ताव पास करके जेम्स की पुत्री मेरी (Mary) का नाम विलियम के साथ-साथ संयुक्त शासक के रूप में केवल इसलिये सम्मिलित कर दिया कि जिससे जनता पर यह प्रभाव पड़े कि राज्य-क्रांति के पश्चात् नियमानुसार उत्तराधिकार का कोई विशेष उल्लंघन नहीं किया गया। संभव था कि केवल विलियम को सारी जनता राजा स्वीकार न करे; परन्तु विलियम तथा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मेरी दोनों के संयुक्त शासक होने से देश के समस्त राजनैतिक तथा धार्मिक दलों ने इस राज्य-क्रान्ति का समर्थन किया। केवल थोड़े से केथलिकों के अतिरिक्त किसी ने इस घटना का विरोध न किया और नये शासकों को प्रजा ने हृदय से स्वीकार किया।

जेम्स द्वितीय का भागना

रक्तहीन राज्य-क्रान्ति का गौरव

इस राज्य-क्रान्ति का केवल इंगलैंड में ही नहीं, परन्तु समस्त यूरोप के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजनैतिक इतिहास में बड़ा महत्व है, और इसी कारण यह गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति (Glorious Revolution) के नाम से भी प्रसिद्ध है। एक राजा को राज-सिंहासन से हटा कर उसके स्थान पर दूसरे का राज्याभिषेक साधारणतया कोई सुगम कार्य नहीं है; परन्तु इंगलैंड में इस अवसर पर यह कार्य इतना शान्तिपूर्वक हो गया कि देश में किसी प्रकार की हलचल तथा रक्तपात इत्यादि की बिल्कुल नौबत नहीं आई।

इस राज्य-क्रान्ति से यह सिद्ध हो गया कि प्रजा की इच्छा के विरुद्ध राजा राजसिंहासन पर नहीं रह सकता। इस घटना से यह भी सिद्ध हो गया कि देश का राजा वही हो सकता है जिसे पार्लियामेण्ट स्वीकृत करे। इससे पहले चार्ल्स प्रथम के विरुद्ध गृह-युद्ध करने तथा उसको बलिदान करने की आवश्यकता हुई थी, परन्तु जेम्स द्वितीय से देश को बिना रक्त बहाये ही छुटकारा मिल गया। इसी समय से स्टुअर्ट काल के राजा तथा पार्लियामेण्ट के परस्पर बखेड़े का अन्त समझना चाहिये। राजा अब पार्लियामेण्ट की बिना स्वीकृति किसी प्रकार का धन प्रजा से वसूल न कर सकेगा। स्टुअर्ट राजाओं का "दैवी अधिकार का सिद्धान्त" (Divine Right of Kings Theory) का पूर्णतया खंडन हो गया और उसके स्थान पर देश में नियमानुमोदित शासन (Constitutional Government) की स्थापना हुई। अब यह भी निश्चय हो गया कि भविष्य में केथलिक मतावलम्बी इगलैंड के राजसिंहासन पर न बैठ सकेंगे। इस घटना के पश्चात् भी राजनैतिक क्षेत्र में बहुत-से सुधारों की आवश्यकता हुई, परन्तु इसके द्वारा यह स्पष्ट रूप से निश्चित हो गया कि पार्लियामेण्ट देश के शासन का प्रधान अंग है। राजाओं की निरंकुशता का काल अब समाप्त हुआ और शासन-संचालन की बागडोर जनता के हाथ में आ गई।

Exercises.

1. Why did James II become so unpopular in England ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Trace the circumstances leading to the expulsion of James II from England.
3. Explain the term "Glorious Revolution". What causes were responsible for its success ?
4. Write short notes on :—

   Duke of Monmouth, Dispensing Power, Declaration of Indulgence and William of Orange.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौबोसवाँ परिच्छेद

विलियम तृतीय तथा मेरी द्वितीय

सन् १६८६	विलियम का राज्याभिषेक
,, १६८६	अधिकार-घोषणा
,, १६८६	क्लिक्रैंकी का युद्ध
,, १६९२	ग्लेंको का हत्या-कांड
,, १६९४	मेरी द्वितीय की मृत्यु
,, १६९७	रिज़विक की सन्धि
,, १७०१	उत्तराधिकार-निर्णय नियम
,, १७०२	विलियम तृतीय की मृत्यु

अधिकार-घोषणा--

जिस पार्लियामेएट ने विलियम तथा मेरी को इंगलैंड का राजसिंहासन प्रदान किया था उसने शासन-कार्य के लिये कुछ सिद्धान्त भी निश्चित करा लिये। यह बिल्कुल स्पष्ट करा दिया गया कि राजा को किसी नियम को भंग तथा स्थगित करने का अधिकार नहीं है। यह भी निश्चय हुआ कि पार्लियामेएट के निर्वाचन में राजा की ओर से किसी प्रकार का दवाव न डाला जाय और न उनको किसी विषय पर स्वतन्त्रता-पूर्वक मत प्रकाशित करने से रोका जाय। केथलिकों के प्रति यह निश्चित किया गया कि कोई केथलिक या जिसका विवाह केथलिक से हुआ हो इंगलैंड के राजसिंहासन पर नहीं बैठ सकता। कोर्ट-आफ-हाई कमीशन जैसी अदालतें फिर से स्थापित न की जायँ। विना पार्लियामेएट की अनुमति के कर न लगाने और विना नियमानुसार अपराध

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सिद्ध हुए किसी को वन्दीगृह न भेजने के सिद्धांत फिर दोहराये गये। अब यह भी निश्चय हुआ कि बिना पार्लियामेण्ट की आज्ञा के शान्ति के समय में राजा कोई स्थाई सेना नहीं रख सकता। प्रजा के अधिकारों की रक्षा के लिये यह भी निश्चय हुआ कि शासन-कार्य और जनता की शिकायत दूर करने के लिये राजा को पार्लियामेण्ट की बैंटक तुरन्त बुलानी पड़ेगी, पार्लिया-

विलियम आफ़ आरेञ्ज

मेण्ट के सदस्यों के भाषणों पर कोई रोक-टोक न होगी, और जनता को अधिकार होगा कि वह अपनी शिकायतें प्रार्थना-पत्र के रूप में राजा के पास भेज सके। इन सिद्धान्तों का संग्रह अधिकार-घोषणा (Bill of Rights) के नाम से प्रसिद्ध है, और इसके अनुसार राजा धन, सेना तथा राजनियम सबके लिये पार्लियामेण्ट के अधीन हो गया। पिछले राजाओं के समान भविष्य में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कोई राजा देश के नियमों का उल्लंघन न कर सकेगा। इस प्रकार पार्लियामेण्ट की प्रभुता और भी दृढ़ रूप से स्थापित हो गई।

विलियम की कठिनाइयाँ—

विलियम तथा मेरी को इंगलैंड की पार्लियामेण्ट ने राजा बनाया था; अतः स्काटलैंड तथा आयरलैंड वालों ने उसका विरोध आरम्भ किया। स्काटलैंड में लार्ड डण्डी (Viscount Dundee) ने पहाड़ी जातियों को एकत्र करके विद्रोह खड़ा कर दिया। विलियम ने क्लिकैंकी (Killie-crankie) के युद्ध में डण्डी के समर्थकों को परास्त किया और इस युद्ध में डण्डी स्वयं मारा गया। विलियम ने पहाड़ी जातियों को शान्त करने के लिये यह घोषणा की कि जितने सरदार नियत तिथि तक उसका राज्याधिकार स्वीकार कर लेंगे, उन सबको क्षमा कर दिया जायगा। इस पर सब सरदारों ने शीघ्र ही शपथ लेली, परन्तु ग्लेंको (Glencoe) के सरदार मेकडानेल्ड को इस शपथ के लेने में कुछ विलम्ब हुआ। यह अवसर पाकर मेकडानेल्ड के वैरियों ने विलियम को भड़का कर उससे मेकडानेल्ड के विनाश की आज्ञा प्राप्त करली। एक अँग्रेज़ी सेना स्काटलैंड भेजी गई और उसने बलपूर्वक मेकडानेल्ड तथा उसके समर्थकों के वंश के वंश नष्ट कर डाले। यह घटना ग्लेंको के हत्याकाण्ड (Massacre of Glencoe) के नाम से प्रसिद्ध है। इस भयंकर दण्ड के पश्चात् स्काटलैंड में किसी को सिर ऊँचा करने का साहस न हुआ।

इसी समय आयरलैंड में भी विद्रोह आरम्भ हुआ, और यहाँ केथलिकों से सहायता पाने की आशा से जेम्स द्वितीय स्वयं फ्रान्स से सेना तथा धन लेकर आ धमका। उसके पास लुई चतुर्दश की दी हुई थोड़ी बहुत सेना भी थी। विद्रोहियों ने प्रोटेस्टेण्टों से गढ़ के गढ़ खाली करा लिये। अन्त में प्रोटेस्टेण्टों ने अल्सटर (Ulster) प्रान्त के लन्दनडेरी (Londonderry) के गढ़ में आकर शरण ली। जेम्स ने आकर इस गढ़ को घेर लिया, यहाँ तक कि गढ़ वालों की दशा असह्य होगई। वे बेचारे भूखों मरने लगे और चूहों तथा कुत्तों तक को मार कर खा गये। परन्तु उन्होंने हिम्मत न हारी और वे शत्रु का मुक़ाबला करते रहे। विलियम ने बड़ी कठिनाई से गढ़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वालों के पास रसद भेज पाई, मगर इसके पहुँचते ही घेरे का अन्त हो गया। अब विलियम भी सेना लेकर आयरलैंड पहुँच गया, और उसने बायन (Boyne) नदी के निकट जेम्स की सेना तथा आयरलैंड के विद्रोहियों को बुरी तरह परास्त किया। जेम्स को फ्रान्स भागना पड़ा, और इस प्रकार आयरलैंड का विद्रोह भी शान्त हुआ।

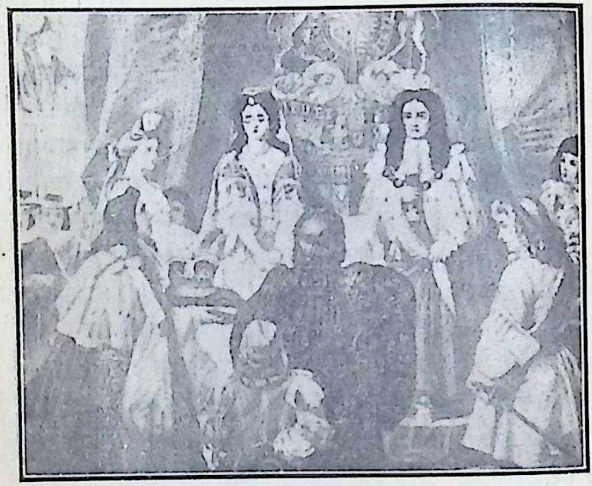

विलियम और मेरी का राज्याभिषेक

इंगलैंड में भी कुछ थोड़े से लोग जेम्स के पक्षपाती थे। उन्होंने विलियम को निकाल बाहर करने अथवा उसकी हत्या करने के लिये एक षड्यन्त्र रचा। परन्तु इसका शीघ्र ही भेद खुल गया और जो लोग इसमें सम्मिलित थे उन्हें कड़े दण्ड दिये गये। अब इंगलैंड, स्काटलैंड तथा आयरलैंड तीनों देशों में विलियम का राज्याधिकार निश्चित रूप से स्वीकृत कर लिया गया।

करों की वार्षिक स्वीकृति—

विलियम के राज्य-काल में पार्लियामेण्ट के अधिकारों की और भी वृद्धि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुई। पार्लियामेण्ट ने सन् १६८९ में एक नियम म्यूटिनी ऐक्ट (Mutiny Act) बनाया जिसके अन्तर्गत अफ़सरों को छः महीने के लिए यह अधिकार प्राप्त हुआ कि वह फ़ौजी न्यायालयों में सिपाहियों पर मुक़दमा चला सकें, तथा यह भी निश्चय किया गया कि स्थाई सेना के वेतन के लिये राजा को प्रतिवर्ष स्वीकृति लेनी पड़ेगी। इस नियम के बनने से देश की सेना पर भी पार्लियामेण्ट का बहुत कुछ अधिकार हो गया, और प्रति वर्ष पार्लियामेण्ट का बुलाना भी अनिवार्य होगया। अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति के कारण विलियम के राज्य-काल से स्थायी सेना का रखना अनिवार्य होगया है, परन्तु फिर भी इस सेना के लिये पार्लियामेण्ट से प्रतिवर्ष स्वीकृति लेनी पड़ती है।

इसी नियम द्वारा यह भी निश्चय हुआ कि किस विभाग में कितना धन खर्च किया जायगा, उसकी भी स्वीकृति पार्लियामेण्ट से लेनी पड़ेगी। इस नियम के अतिरिक्त यह भी निश्चय हुआ कि कर की स्वीकृति केवल एक ही वर्ष के लिये दी जायगी; और पार्लियामेण्ट को राज्य के हिसाब-किताब की जाँच करने का अधिकार होगा। इन दोनों नियमों का यह परिणाम हुआ कि पार्लियामेण्ट की बैठक का प्रतिवर्ष होना आवश्यक हो गया। सन् १६९४ में एक नियम (Triennial Act) द्वारा पार्लियामेण्ट की अवधि भी निश्चित कर दी गई और अब प्रत्येक तीन वर्ष के बाद पार्लियामेण्ट का नया निर्वाचन होने लगा। अब राजाओं के अधिकार में यह न रहा कि एक ही पार्लियामेण्ट से चाहे जितने वर्ष काम लेते रहें अथवा चाहे तो उसे वर्षों तक न बुलावें।

उत्तराधिकार-निर्णय-नियम—

विलियम तथा मेरी के कोई संतान न थी। उनके पश्चात् मेरी की छोटी बहन ऐन राजसिंहासन की उत्तराधिकारिणी थी, परन्तु उसके भी कोई संतान जीवित न थी। ऐसी अवस्था में पार्लियामेण्ट ने उत्तराधिकार-निर्णय-नियम (Act of Settlement) सन् १७०१ में बनाया जिसके अनुसार यह निश्चय किया कि ऐन के पश्चात् हनोवर की रानी सोफ़िया, जो जेम्स प्रथम की पुत्री एलिज़बेथ की बेटी थी, इंगलैंड के राजसिंहासन पर बैठेगी। इस समय स्टुअर्ट वंश में सोफ़िया के अतिरिक्त और कोई प्रोटेस्टेण्ट उत्तराधिकारी मौजूद भी न था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी नियम में शासन-सुधार सम्बन्धी कुछ धाराएँ भी रक्खी गईं, जिनमें से मुख्य ये हैं—

(१) भविष्य में ऐंग्लिकन चर्च के मानने वालों के अतिरिक्त अन्य मतावलम्बी राजा न हो सकेंगे।

(२) अन्य राष्ट्रों से युद्ध करने के लिए भी पार्लियामेण्ट की स्वीकृति आवश्यक होगी।

(३) राजा के मंत्री तथा राज्य के अन्य कर्मचारी सब अपने कार्यों के लिए पूर्णतया पार्लियामेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी होंगे।

(४) न्यायाधीश जीवन भर के लिए नियुक्त किये जायँगे, और वे तब तक पदच्युत न किये जा सकेंगे जब तक पार्लियामेण्ट राजा से इसके लिए प्रार्थना न करे। इस प्रकार न्यायाधीशों को स्वतन्त्रता प्राप्त हुई और उन्हें राजा की अप्रसन्नता का भय न रहा।

केबिनेट का प्रारम्भ— Cabinet Parliament

सन् १६८८ की राज्य-क्रान्ति के पश्चात् बिल-आफ-राइट्स तथा म्यूटिनी एक्ट आदि नियमों ने पार्लियामेण्ट का प्रभुत्व स्थापित कर दिया। अब यह भी सिद्ध हो गया कि इंगलैंड का राजसिंहासन वंश परम्परा के अधिकारों के आधार पर न रह कर पार्लियामेण्ट की स्वीकृति पर निर्भर हो गया। इन सुधारों के साथ साथ इंगलैंड की केबिनेट अथवा आधुनिक मंत्रि-मण्डल का विकास भी विलियम के राज्य-काल से ही समझना चाहिये। अब तक राजा जिसको चाहते थे मंत्री नियुक्त करते थे। जब से विग तथा टोरी दो राजनैतिक दल बने, तब से दोनों ही दलों में से मंत्री चुने जाते थे, जिससे दोनों दल सन्तुष्ट रहें। विलियम ने अनुभव किया कि इन दल वालों में परस्पर मतभेद इतना बढ़ा हुआ है कि दोनों का शासन-संचालन में सहयोग होना असम्भव है। इसलिये उसने अब एक ही राजनैतिक दल में से, जिसकी संख्या पार्लियामेण्ट में अधिक हो, मंत्री चुनना आरंभ किया। अनुभव से इसमें बड़ी सुगमता जान पड़ी और तब से यही प्रथा प्रचलित हो गई कि मंत्रि-मण्डल में सब एक ही राजनैतिक दल के व्यक्ति हों। मंत्रि-मण्डल की बैठक प्रारंभ में राजमहल के एक छोटे-से कमरे (Cabinet) में हुआ करती थी,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके कारण उसका नाम भी केबिनेट पड़ गया, और तब से वह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

धार्मिक शान्ति की स्थापना—

विलियम के शासन-काल से इंगलैंड में धार्मिक स्वतन्त्रता का युग आरम्भ होता है। सन् १६८९ में "धार्मिक सहन-शीलता" (Toleration Act) नामक एक नियम पास हुआ, जिसके अनुसार केथलिकों के अतिरिक्त अन्य सबको पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता दे दी गई, वे चाहे जिस ढँग से पूजा कर सकते थे। केथलिकों के प्रति घृणा अभी कम नहीं हुई थी और उनको इस नियम से कोई लाभ नहीं हुआ, परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि इस नियम द्वारा देश में धार्मिक सहन-शीलता का युग प्रारम्भ हुआ। परन्तु कार्पोरेशन तथा टेस्ट एक्ट के अनुसार सरकारी पद अभी तक ऐंग्लिकन चर्च वालों को ही मिल सकते थे।

प्रेस की स्वतन्त्रता—

अब तक बिना सरकारी आज्ञा के कोई भी पुस्तक नहीं छापी जा सकती थी और पार्लियामेण्ट ने इसके लिये एक नियम (Licensing Act) बना रक्खा था, जो प्रति दो-तीन वर्ष के बाद बराबर पास होता रहता था। परन्तु सन् १६९५ के बाद से यह नियम फिर से प्रचलित न किया। इसका यह परिणाम हुआ कि प्रेस को स्वतन्त्रता मिल गई, और अब पुस्तकों तथा समाचार-पत्रों के प्रकाशन में सरकार की ओर से किसी प्रकार का हस्तक्षेप न रहा। इस प्रकार लोगों को स्वतन्त्रतापूर्वक अपने विचार प्रकट करने तथा फैलाने का अवसर प्राप्त हुआ।

जातीय ऋण तथा बैंक आफ़ इंगलैंड—

विलियम के राज्य-काल में आर्थिक क्षेत्र में भी बड़े-बड़े सुधार हुए। सन् १६९३ में "जातीय ऋण" (National Debt) आरम्भ किया गया और सरकार ने अपना खर्चा चलाने के लिये जनता से ऋण के रूप में धन लेने की नींव डाली। ऋण देने वालों को सरकार की ओर से प्रमाणित सार्टीफिकेट दिये जाते थे, जिसमें सरकार यह प्रतिज्ञा करती थी कि इस ऋण को ब्याज सहित चुका दिया जायगा। इस प्रकार यह ऋण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माध्यमिक काल के उन ऋणों (Benevolence etc.) से बिल्कुल भिन्न था, जो राजा दबाव डाल कर धनिक लोगों से वसूल करते थे और जो कभी लौटाये नहीं जाते थे। थोड़े ही समय में यह "जातीय ऋण" सर्वप्रिय होने लगा, और जिन लोगों के पास बचा हुआ धन होता था वे बड़े प्रसन्नतापूर्वक सरकारी सार्टीफिकेटों के बदले सरकार के कोप के लिये ऋण दे देते थे। वर्त्तमान काल में प्रत्येक देश में इस प्रकार के जातीय ऋण प्रचलित हैं और देशवासी उन्हें मोल लेने में अपने धन को उतना ही सुरक्षित समझते हैं जितना व्यापार तथा व्यवसाय में लगाने में।

अगले वर्ष सन् १६९४ में बैंक आफ़ इंगलैंड (Bank of England) की स्थापना की गई, जिसको सरकार की ओर से कोप के प्रबन्ध का भार सौंपा गया। इसी बैंक को सरकार की ओर से नोट निकालने का भी अधिकार दे दिया गया, और इसके द्वारा देश के बड़े-बड़े व्यापारियों को भी लेन-देन करने की सुविधा होने लगी। इस काल का स्थापित किया हुआ बैंक आफ़ इंगलैंड अब इतना बढ़ गया है कि वह संसार के सबसे प्रमुख बैंकों में माना जाता है, और उसके चलाये हुए नोटों को केवल इंगलैंड ही में नहीं, प्रत्युत सारे भूमण्डल के लोग बड़ी प्रसन्नता से स्वीकार करते हैं।

विलियम की विदेशी नीति—

विलियम के राज्याभिषेक के समय से इंगलैंड की परराष्ट्र नीति में भी भारी परिवर्तन हुआ। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय फ्रान्स से मित्रता रखने के पक्ष में थे, और फ्रान्स का राजा लुई चतुर्दश (Louis XIV) उन दोनों को आर्थिक सहायता देकर अपनी मुट्ठी में किये रहता था। इसके विरुद्ध विलियम का समस्त जीवन लुई चतुर्दश के साथ युद्ध करने में व्यतीत हुआ और इंगलैंड का राजा होने पर भी उसने इसी नीति को जारी रक्खा। लुई ने इस समय स्पेनिश नीदरलैंड तथा हालैंड के दक्षिणी भाग पर अपना अधिकार जमा लिया। इन प्रान्तों पर अधिकार होने से इंगलैंड तथा हालैंड दोनों देशों को फ्रान्स के आक्रमण का भय बना रहता और यूरोप की "समान शक्ति" को बड़ा भारी धक्का पहुँचता। विलियम का विचार था कि लुई की बढ़ती हुई शक्ति को रोकना परम आवश्यक है और इसी आशय से उसने उस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विरुद्ध कई प्रोटेस्टेण्ट राज्यों का एक संघ बनाया था। विलियम के राज्याभिषेक के समय से इंगलैंड तथा फ्रान्स के पारस्परिक युद्ध का प्रारम्भ होता है, और थोड़े-बहुत अन्तर से यह युद्ध लगभग १५० वर्ष तक चलते रहे।

लुई चतुर्दश

अँग्रेजो उत्तराधिकार का युद्ध—

इस समय लुई चतुर्दश नीदरलैंड प्रदेश पर, जिसमें वर्त्तमान काल के लैंड तथा बेलजियम राज्य हैं, अधिकार जमाने का प्रयत्न कर रहा था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लुई का मनोरथ पूरा हो जाने से इंगलैंड तथा हालैंड दोनों के लिए भय था और इसलिए विलियम लुई की इस हरकत को कदापि सहन नहीं कर सकता था। इसी बीच में लुई ने जेम्स द्वितीय का पक्ष लेकर उसे फिर इंगलैंड का राजा बनाने का प्रयत्न प्रारम्भ कर दिया, क्योंकि विलियम के राजा होने से उसके मनोरथ की पूर्ति नहीं हो सकती थी। स्काटलैंड तथा आयरलैंड में विलियम के विरुद्ध जो विद्रोह हुए उनमें लुई ने सहायता भेजी थी। इन विद्रोहों का उल्लेख हम ऊपर कर आये हैं। इन सब कारणों से इंगलैंड का फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध करना अनिवार्य हो गया और दोनों देशों में लड़ाई छिड़ गई।

विलियम स्वयं नीदरलैंड गया और वहाँ कई बार उसकी फ्रान्सीसी सेना से मुठभेड़ हुई। पहले तो वह कई बार पराजित हुआ, परन्तु अन्त में नामूर (Namur) का प्रसिद्ध गढ़ उसके अधिकार में आ गया जिसके कारण फ्रान्सीसियों की आशाओं पर पानी पड़ गया और उन्हें नीदरलैंड छोड़ना पड़ा। इस प्रकार जल-युद्ध में भी पहले तो अँग्रेज़ी सेना बीचीहेड (Beachy head) के युद्ध में परास्त हुई, परन्तु फिर ला-हेग (La Hague) के युद्ध में उसने भारी विजय प्राप्त की। इस जल-युद्ध के पश्चात् इंगलैंड को फ्रान्स की ओर से कोई समुद्री आक्रमण का भय नहीं रहा।

अन्त में सन् १६९७ में रिसविक (Ryswick) की सन्धि के अनुसार इस युद्ध का अन्त हुआ। दोनों ओर से जीते हुए प्रदेश लौटा दिये गये और लुई चतुर्दश को अब स्पष्ट रूप से विलियम को इंगलैंड का नियमानुकूल राजा स्वीकृत करना पड़ा। इस प्रकार लुई की बढ़ती हुई शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और इंगलैंड की प्रतिष्ठा फिर से यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में बढ़ गई।

विलियम तथा मेरी का चरित्र—

विलियम योग्य राजनीतिज्ञ तथा साहसी वीर था, और उसकी परराष्ट्र नीति की सफलता ने इंगलैंड का मान समस्त यूरोपीय महाद्वीप में फैला दिया। उसने लुई चतुर्दश के खूब दाँत खट्टे किये और उसको जता दिया कि अब इंगलैंड में चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय का समय नहीं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहा है कि वह धन की सहायता का लालच देकर इंगलैंड के राजा से जो चाहे सो करा ले। परन्तु यह सब होने पर भी विलियम विदेशी होने के कारण इंगलैंड में पूरी तरह लोकप्रिय न हो सका। हालैंड का शासक होने के कारण उसने अपना अधिकांश समय वहीं व्यतीत किया। उसने तो लुई के विरुद्ध सहायता प्राप्त करने के ही अभिप्राय से इंगलैंड का राजसिंहासन स्वीकार किया था। इसके अतिरिक्त उसका स्वभाव भी रूखा था, और उसमें जनता को अपनी ओर आकर्षित करने का गुण न था। रानी मेरी की मृत्यु के पश्चात् विलियम की कठिनाइयाँ बढ़ गईं। जेम्स के पक्षपातियों तथा टोरी दल वालों ने विलियम के विरुद्ध षड्यन्त्र रचने आरम्भ किये, और इस कारण उसे विग दल वालों का सहारा लेना पड़ा। परन्तु जो कुछ कमी विलियम में थी रानी मेरी ने उसे पूरा कर दिया। वह हँसमुख तथा दयालु थी और अँग्रेज़ी जनता उससे बहुत प्रसन्न थी। राज्याभिषेक के समय यह निश्चित कर दिया गया था कि शासन का संचालन विलियम ही के हाथ में रहेगा; परन्तु रानी मेरी से उसे सामाजिक क्षेत्र में बड़ी सहायता मिली। ग्रीनिविच (Greenwich) का प्रसिद्ध (Poor House) रानी मेरी ही के अनुरोध से स्थापित हुआ। उसके अतिरिक्त मेरी ने और भी कई दयालुता के कार्य किये, जिनसे देशवासियों का बड़ा हित हुआ।

रानी मेरी की मृत्यु विलियम से आठ वर्ष पूर्व ही हो गई, और जैसा कि ऊपर बतलाया जा चुका है उसकी मृत्यु के पश्चात् विलियम को कई प्रकार की कठिनाइयों का भी सामना करना पड़ा। परन्तु इस समय तक इंगलैंड की जनता विलियम के राजनैतिक गुणों से परिचित हो चुकी थी, जिसके कारण उसके प्रति राज-भक्ति में कोई अन्तर न पड़ने पाया, और विलियम सफलता-पूर्वक शासन कर सका। विलियम के राज्य-काल का सबसे बड़ा गौरव यह है कि उसने घरेलू मामलों में पार्लियामेण्ट के कार्यों में अधिक हस्तक्षेप नहीं किया, और शासन-नीति बहुत कुछ मन्त्रियों ही के हाथ में छोड़ी।

Exercises.

1 What difficulties had William of Orange to face

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

after his coronation in England ? How did he meet them ?

2. What important administrative measures were passed by William's Parliament ? Discuss their constitutional importance.
3. Account for the change in England's foreign policy after the Glorious Revolution.
4. Write short notes on :—
Bill of Rights, Act of Settlement, Cabinet, Toleration Act, and Freedom of the Press.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पच्चीसवाँ परिच्छेद

रानी ऐन

सन् १७०२	रानी ऐन का राज्याभिषेक
" १७०४	ब्लेनहम का युद्ध
" १७०६	रैमील्स का युद्ध
" १७०७	स्काटलैंड तथा इंगलैंड का संयुक्तराज्य
" १७१३	यूट्रेक्ट की सन्धि
" १७१४	रानी ऐन की मृत्यु

रानी ऐन—

सन् १७०२ में विलियम की मृत्यु के पश्चात् जेम्स द्वितीय की दूसरी पुत्री ऐन (Queen Anne) इंगलैंड के सिंहासन पर बैठी। उसका विवाह डेन्मार्क के राजपुत्र जार्ज से हुआ था, परन्तु विलियम के समान उसे राजपद नहीं दिया गया। जार्ज भी स्वभाव का शान्त था, और राजकार्य में उसने तनिक भी भाग नहीं लिया। राजवंशीय होने के कारण वह केवल लार्ड-सभा का सदस्य था। रानी ऐन सीधे स्वभाव की थी, और उसे भी शासन-कार्य में विशेष रुचि न थी। उसने समस्त शासन मंत्रियों ही के हाथ में छोड़ा, जिससे मंत्रि-मंडल की शक्ति को और भी अधिक बढ़ने का अवसर मिला। रानी ऐन की वास्तविक सहानुभूति टोरी दल के प्रति थी, परन्तु टोरियों के युद्ध के विरोधी होने के कारण उसको बहुत दिनों तक विग दल ही के भरोसे रहना पड़ा। धार्मिक क्षेत्र में ऐन ऐंग्लिकन चर्च की अनुयायिनी थी जिसके कारण उसे अपने राज्य-काल में देश के इस शक्ति-शाली धार्मिक दल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से पूर्ण सहायता मिली। मार्लबरो की स्त्री की उससे बहुत मित्रता थी और उसके दरबार में इसी कारण मार्लबरो की भी बहुत दिनों तक प्रधानता बनी रही।

स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध—

रानी ऐन के राज्य-काल की सबसे प्रसिद्ध घटना स्पेन के उत्तराधिकार का युद्ध है, जिसके बादल विलियम के ही समय से घुमड़ने लगे थे। स्पेन

रानी ऐन

का राजा चार्ल्स द्वितीय सन्तानहीन था और उसका स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उसके अधिक काल तक जीवित रहने की आशा नहीं थी। उसके दो बहनें थीं और ये ही उसके राज्य की उत्तराधिकारिणी हो सकती थीं। एक का विवाह फ्रान्स के राजा लुई चतुर्दश के साथ हुआ था और दूसरी का आस्ट्रिया के सम्राट् ल्योपाल्ड (Leopold) से हुआ था। परन्तु इनमें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने किसी एक के हाथ में भी सम्पूर्ण स्पेन के साम्राज्य के आ जाने से उसकी शक्ति इतनी अधिक हो जाती कि यूरोप के अन्य राष्ट्रों के लिये भय का कारण हो जाता, और यूरोपीय समान-शक्ति (Balance of Power) डगमगा जाती। इसलिये विलियम ने अपने राज्य-काल में फ्रान्स तथा आस्ट्रिया से बातचीत करके दो बार बटवारे की सन्धि कराई थी, जिसके अनुसार स्पेन के साम्राज्य को दो भागों में बाँटना निश्चित हुआ था। इसके थोड़े ही दिनों बाद स्पेन के राजा की मृत्यु हो गई और उसने अपनी वसीयत में लुई चतुर्दश के पोते फिलिप (Phillip) को अपने सम्पूर्ण राज्य का उत्तराधिकारी बनाया। यह समाचार पाते ही लुई ने बटवारे की संधियों को ठुकरा दिया, और उसके पोते फिलिप ने जाकर स्पेन के राज-सिंहासन पर अधिकार भी जमा लिया, और नीदरलैंड तथा आस्ट्रिया की ओर सेनायें भेज दीं।

युद्ध का प्रारम्भ—

लुई चतुर्दश के इस प्रकार अपने वचन भंग करने से समस्त यूरोप में बड़ी सनसनी फैली। इसी समय लुई ने जेम्स द्वितीय के लड़के को अपने पिता का राजसिंहासन पुनः प्राप्त करने के लिए सहायता देना आरंभ किया, यद्यपि स्वयं लुई रिसविक की सन्धि में विलियम के राज्याधिकार को स्वीकृत कर चुका था। इस कारण इंगलैंड वाले और भी चिढ़ गये और देश में फ्रान्स के विरुद्ध भयंकर अग्नि भड़क उठी। इंगलैंड ने अब यूरोपीय "समान-शक्ति" का सिद्धान्त लेकर लुई के पोते के राज्याभिषेक का विरोध आरंभ किया, और उसके विरुद्ध इंगलैंड, हालैंड, आस्ट्रिया आदि कई राज्यों का संघ बनाया जिसका यह उद्देश्य था कि स्पेन के साम्राज्य में कुछ बटवारा कराके आस्ट्रिया के राजकुमार चार्ल्स (Archduke Charles) को स्पेन का राजसिंहासन दिलाया जाय। उधर बवेरिया तथा स्पेन ने फ्रान्स का साथ दिया। इस प्रकार एक भीषण युद्ध प्रारम्भ हुआ, जो "स्पेनी उत्तराधिकार का युद्ध" के नाम से प्रसिद्ध है।

युद्ध में इंगलैंड का भाग—

अपनी मृत्यु-शैया पर विलियम अपनी उत्तराधिकारिणी ऐन के लिए यह वसीयत छोड़ गया था कि इस समय इंगलैंड में सबसे योग्य सेनापति जान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चर्चिल, ड्यूक-आफ़-मार्लबरो (John Churchill, Duke of Marlborough) ही है। इसीलिए रानी ऐन ने मार्लबरो ही को इस युद्ध के सञ्चालन का विशेष भार सौंपा। उसने बहुत बड़ी सेना लेकर नीदरलैंड में फ्रान्सीसी सेना का सामना किया और उसे कई लड़ाइयों में परास्त किया। इसी बीच में आस्ट्रिया की राजधानी वीयना (Vienna) पर फ्रान्सीसियों तथा बवेरिया की सेनाओं ने चढ़ाई करदी। यह समाचार पाते ही मार्लबरो नीदरलैंड से वीयना की ओर बढ़ा, और आस्ट्रिया में ब्लेनहम (Blenheim)

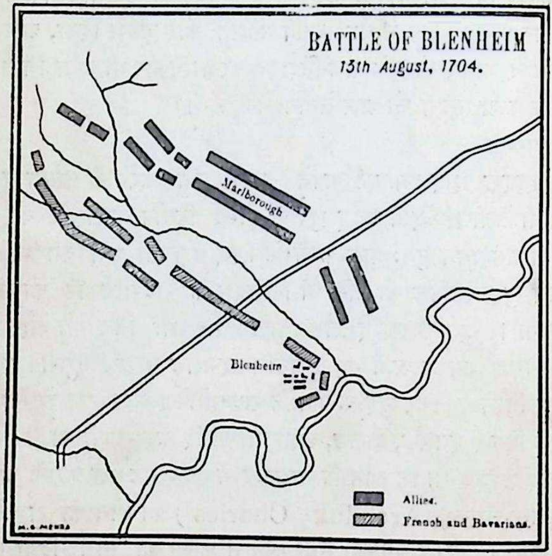

के स्थान पर सन् १७०४ में उसने आस्ट्रिया की सेना के सहयोग से फ्रान्सीसियों को बुरी तरह परास्त किया। इस प्रकार मार्लबरो ने आस्ट्रिया को घोर सङ्कट से बचा लिया, और उसकी इस विजय के कारण लुई की बढ़ी-चढ़ी शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा। इसके पश्चात् लुई को सब लड़ाइयाँ अपनी रक्षा के हेतु लड़नी पड़ीं। अगले वर्ष मार्लबरो फिर नीदरलैंड जा कूदा और उसने रेमीलस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

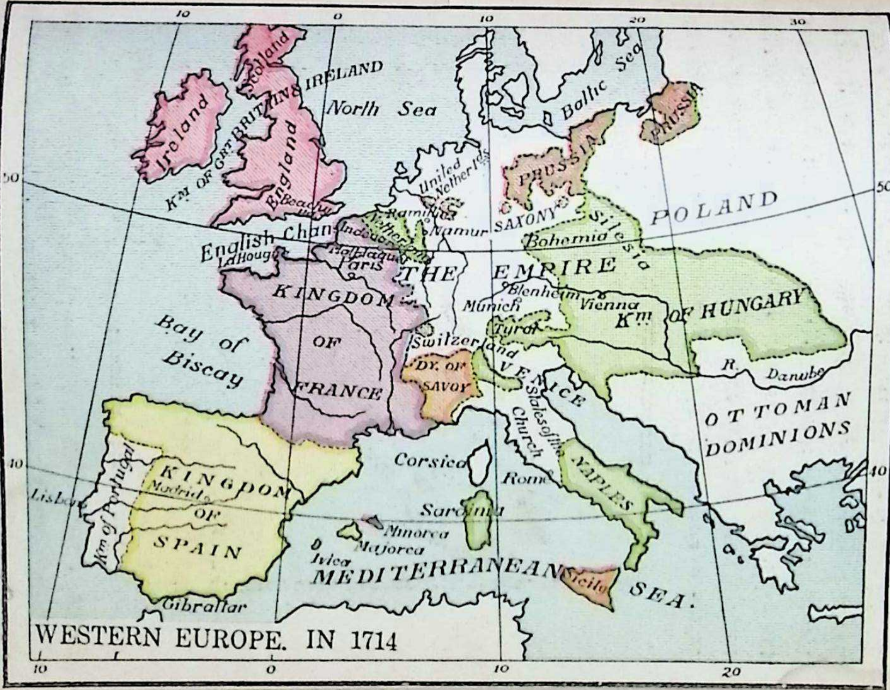

WESTERN EUROPE. IN 1714

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

This book belongs to
Mr. Ram [illegible] Prasad
Private candidate of class 10th
[illegible] High school Ram nagar
Benares State
Date 21/3/47

Ram [illegible] Prasad

Ram

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Ramillies) के युद्ध में लुई को फिर परास्त किया। इस युद्ध के पश्चात् ओडेनार्ड (Oudenarde) तथा मालप्लाके (Malplaquet) के युद्धों ने लुई के दांत खट्टे कर दिये और नीदरलैंड पर मार्लबरो का अधिकार हो गया। परिणाम यह हुआ कि फ्रान्सीसियों को नीदरलैंड खाली कर देना पड़ा और उनकी शक्ति अब बराबर घटती चली गई।

इसी समय एक दूसरे अँगरेज़ी सेनापति पीटरबरो (Peterborough) ने स्पेन पर आक्रमण किया, और फ़िलिप को राजसिंहासन से हटाने का प्रयत्न किया। कई युद्धों में मित्र सेनाओं की विजय हुई और एक बार तो उन्होंने स्पेन की राजधानी मेड्रिड नगर पर अधिकार भी कर लिया, परन्तु अलामांज़ा (Alamanza) के युद्ध में वे पराजित हुए। इस प्रकार मित्र सेनाओं को विशेष सफलता न मिली, क्योंकि स्पेन वालों ने अपने राजा की वसीयत के अनुसार फ़िलिप को अपना नियमानुसार राजा स्वीकार कर लिया था, और वे उसकी सहायता के लिए हर तरह से तैयार थे।

इसी बीच में कई जल-युद्ध भी हुए और अँग्रेज़ी जल-सेना ने जाकर जिबरालटर (Gibralter) पर अपना अधिकार जमा लिया, जिसके कारण रूम-सागर पर भी अँग्रेज़ों का प्रभाव बढ़ गया और स्पेन की रही सही जल-शक्ति का अन्त हुआ।

यूट्रेक्ट की संधि—

इस समय पार्लियामेण्ट में टोरी दल का बहुमत हो गया, और रानी ऐन ने अपना मंत्रिमण्डल विग दल के स्थान में टोरी दल का बनाया। टोरी दल वाले तथा रानी ऐन स्वयं युद्ध बन्द करने के पक्ष में थे। उधर मार्लबरो पर घूँस लेने का अभियोग लगाकर मंत्रियों ने उसे सेनापति के पद से हटा दिया। यूरोप में भी आस्ट्रिया का बूढ़ा राजा परलोक सिधारा और उसका पुत्र चार्ल्स राजसिंहासन पर बैठा। उसने स्पेन का राज्य प्राप्त करने में कोई लाभ न देखा। लुई भी लड़ते-लड़ते तंग आ गया था। इस प्रकार उस समय सब लोग संधि के इच्छुक थे और सन् १७१३ में यूट्रेक्ट (Utrecht) की संधि के अनुसार इस युद्ध का अन्त हुआ। इस संधि में इस प्रकार निपटारा हुआः—(१) फ़िलिप को स्पेन तथा स्पेन के अमेरिकन उपनिवेशों का स्वामी मान लिया गया, परन्तु यह स्पष्ट कर दिया गया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि फ़िलिप फ्रान्स का राजा न हो सकेगा, जिससे फ्रान्स तथा स्पेन के संयुक्त हो जाने से अधिक शक्तिशाली साम्राज्य होने की सम्भावना न रही। (२) इटली में स्पेन के भाग तथा नीदरलैंड दोनों आस्ट्रिया को मिले। (३) इंगलैंड की पार्लियामेण्ट का यह निर्णय कि रानी ऐन के पश्चात् इंगलैंड का राजसिंहासन हनोवर (Hanover) वंश को मिलेगा सब देशों ने स्वीकार कर लिया। इंगलैंड को भूमध्यसागर में जिबरालटर तथा माइनोर्का और अमेरिका में नोवास्कोटिया तथा न्यूफाउंडलैंड के उपनिवेश मिले, और उनको दक्षिणी अमेरिका से व्यापार करने की आज्ञा मिल गई।

इस संधि से इंगलैंड की यूरोपीय राजनैतिक क्षेत्र में भी प्रधानता बढ़ गई और उसकी जल-शक्ति तथा व्यापार में भी वृद्धि हुई। इसी के द्वारा अँग्रेज़ों के उत्तरी अमेरिका में पैर जमे और उनके उपनिवेशों की संख्या बढ़नी आरम्भ हुई। इधर यूरोप में जिबरालटर के मिल जाने से रूम सागर का प्रसिद्ध फाटक उनके अधीन हो गया। इस युद्ध ने फ्रान्स के सैनिक प्रभुत्व को नष्ट कर दिया, परन्तु फ्रान्स तथा इंगलैंड की पारस्परिक शत्रुता ने आगे चल कर एक भयंकर रूप धारण कर लिया।

मार्लबरो का प्रारम्भिक जीवन—

स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध का प्रसिद्ध योद्धा ड्यूक आफ़ मार्लबरो (Duke of Marlborough) इंगलैंड के प्रसिद्ध सैनिक अफसरों में माना जाता है। उसका जन्म सन् १६५० में हुआ, और अपनी योग्यता के कारण उसका शीघ्र ही राज़-दरबार में सम्मान बढ़ने लगा। चार्ल्स द्वितीय के राज्य-काल में उसकी गणना प्रसिद्ध दरबारियों में होने लगी थी, और जिस समय युवराज जेम्स को राजसिंहासन से वंचित रखने के प्रस्ताव (Exclusion Bill) पर विचार हो रहा था, उस समय उसने इस प्रस्ताव का घोर विरोध किया था। परन्तु जब जेम्स 'जेम्स द्वितीय' (James II) के नाम से राजा हुआ, तब दोनों में अनबन रहने लगी, जिसके कारण उसने विलियम तृतीय के निमन्त्रित करने तथा जेम्स द्वितीय को राजसिंहासन से हटाने के कार्य में प्रमुख भाग लिया। रक्तहीन राज्य-क्रान्ति (Bloodless Revolution) के पश्चात् जब विलियम तथा मेरी का राज्याभिषेक हुआ,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय उसको ड्यूक ग्राफ़ मार्लबरो की उपाधि प्रदान की गई थी, और इस समय से उसका राज-दरबार में और भी अधिक गौरव बढ़ने लगा।

चरित्र के अवगुण—

परन्तु जिस प्रकार उसकी जेम्स द्वितीय से नहीं बनी थी उसी प्रकार उसका विलियम से भी शीघ्र ही बिगाड़ हो गया, जिसके परिणामस्वरूप उसने

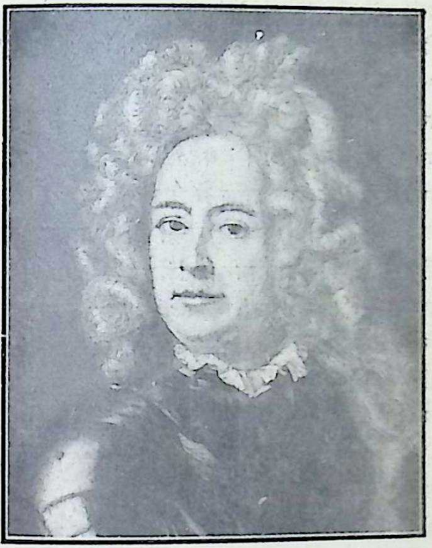

ड्यूक ग्राफ़ मार्लबरो

गुप्त रीति से विलियम के विरुद्ध एक षड्यन्त्र रचा और पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय से फिर पत्र-व्यवहार आरंभ किया। इन सब घटनाओं से यह भली भाँति विदित हो गया कि वह विश्वासघाती था और इस पर किसी भी राजा को भरोसा रखना व्यर्थ था। इसके षड्यन्त्र का पता चलने पर विलियम ने इसे दरबार से निकाल दिया, और टावर में बन्द कर दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युद्ध-कला की नीति-निपुणता—

परन्तु स्पेनी उत्तराधिकार के युद्ध के आरंभ होते ही विलियम को मार्लबरो की फिर आवश्यकता पड़ने लगी। विलियम जानता था कि उसकी मनोवृत्ति बड़ी अनिश्चित है, परन्तु साथ ही साथ वह यह भी समझता था कि इस समय इसके अतिरिक्त युद्ध के संचालन का भार सँभालने योग्य कोई अन्य योद्धा इंगलैंड में नहीं है। यही सब सोचकर अपनी मृत्यु-शैया पर विलियम ने अपनी उत्तराधिकारिणी रानी ऐन (Anne) को यह परामर्श दिया कि स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध के लिये मार्लबरो ही को प्रधान सेनापति बनाया जाय, जैसा कि हम ऊपर बता चुके हैं। उस समय सेना का उचित प्रबन्ध करना मार्लबरो ही का काम था। उसने रंगरूटों को सैनिक-शिक्षा देकर योग्य सैनिक बना दिया। बहुत-से सैनिक तो जेलों में से भरती किये गये थे और बहुत-से बलात् बेगार में पकड़े गये थे। दूसरे, खाने, पहिनने तथा दवा-दारू का उचित प्रबन्ध न होने के कारण बहुत-से सैनिक भाग गये। सैनिकों को महीनों वेतन भी नहीं मिलता था। ऐसी कठिन स्थिति में मार्लबरो ने जो सैनिक प्रबन्ध किया वह प्रशंसनीय है। युद्ध-काल में भी मार्लबरो ने बड़ी योग्यता दिखाई, और उसकी ब्लेनहम (Blenheim) तथा रेमील्स (Ramillies) की विजयों ने शत्रुओं के दाँत खट्टे कर दिये। यह उसी की योग्यता का परिणाम था कि इस युद्ध में इंगलैंड का सम्मान बढ़ा, और लुई चतुर्दश जैसे शत्रुओं का मनोरथ सिद्ध न हो सका।

पतन तथा मृत्यु—

मार्लबरो की इच्छा थी कि युद्ध को जारी रक्खा जाय, और लुई को पूर्णतया नीचा दिखाया जाय। परन्तु एक राजनैतिक परिवर्तन के कारण मार्लबरो की शक्ति कम होने लगी। सन् १७१० में इंगलैंड में विग दल (Whig Party) के स्थान पर टोरी दल (Tory Party) का मंत्रि-मण्डल स्थापित हो गया। टोरी पहले ही से यूरोपीय युद्धों में सम्मिलित होने की नीति के विरोधी थे। अतः उन्होंने युद्ध बन्द करना चाहा। इसी समय मार्लबरो की पत्नी का, जो अब तक रानी ऐन की घनिष्ठ मित्र थी, रानी से झगड़ा हो गया। इन सब कारणों का यह परिणाम हुआ कि मार्लबरो

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रधान सेनापति के पद से हटाया गया, और अँग्रेज़ी सेना को भी यूरोपीय क्षेत्रों से वापस बुला कर युद्ध का अन्त कर दिया गया । मार्लबरो पर अब सरकारी धन खाने का अपराध लगाया गया, जिसके कारण उसे देश छोड़ना पड़ा। इन सब अपमानों से उसके हृदय पर बड़ी चोट लगी। यद्यपि आगे चलकर रानी ऐन की मृत्यु के पश्चात् उसे वापस बुला लिया गया, फिर भी उसका स्वास्थ्य दिन प्रति दिन बिगड़ता ही गया, और सन् १७२२ में वह परलोक सिधारा।

इंगलैंड और स्काटलैंड का संयुक्त-राज्य

घरेलू घटनाओं में रानी ऐन के राज्य-काल की सबसे महत्त्वपूर्ण घटना इंगलैंड और स्काटलैंड का एक संयुक्त राज्य में सम्मिलित होना है। यद्यपि जेम्स प्रथम के समय से दोनों देशों का एक ही राजा होता था: परन्तु उनकी पार्लियामेण्ट, राजनियम, चर्च इत्यादि सब अलग-अलग थे। सत्रहवीं शताब्दी में इंगलैंड के व्यापार तथा औपनिवेशिक साम्राज्य में उन्नति हुई, परन्तु स्काटलैंड वालों को इससे कोई लाभ न हुआ। इस कारण स्काटलैंड वालों में असन्तोष फैलने लगा, और स्काटलैंड की पार्लियामेण्ट ने यह निश्चित किया कि रानी ऐन की मृत्यु के पश्चात् स्काटलैंड के सिंहासन को इंगलैंड से पृथक् कर दिया जाय। इससे इंगलैंड में बड़ी खलबली मची, क्योंकि स्काटलैंड के अलग हो जाने से प्राचीन समय की भाँति इंगलैंड तथा स्काटलैंड में फिर झगड़े होने लगते और इंगलैंड को उत्तर की ओर से सदा भय बना रहता। ऐसी अवस्था में इंगलैंड की पार्लियामेण्ट ने दोनों देशों को एक संयुक्त-राज्य में मिलाने का प्रस्ताव पेश किया और कुछ वाद-विवाद के पश्चात् स्काटलैंड की पार्लियामेण्ट ने इसे स्वीकृत कर लिया। सन् १७०७ में दोनों देशों में समझौता हो गया और यह निश्चित हुआ कि दोनों देश के राज्य-सिंहासनों की तरह अब दोनों की पार्लियामेण्टें भी संयुक्त कर दी जायँगी। स्काटलैंड को १६ पतिनिधि लार्डसभा में और ४५ प्रतिनिधि लोक-सभा में भेजने का अधिकार मिला। परन्तु दोनों देशों के चर्च तथा न्याय-पद्धति अब भी एक दूसरे से पृथक् रक्खे गये, क्योंकि इस विषय में दोनों में बहुत कुछ अन्तर था। यह समझौता स्थाई सिद्ध हुआ, क्योंकि दोनों देशों के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

निवासियों की शिकायतें दूर हो गईं। स्काटलैंड वालों को इंगलैंड के बढ़े-चढ़े व्यापार में भाग लेने का अवसर मिल गया और इंगलैंड को उत्तर की ओर से आक्रमणों का कोई भय न रहा।

राजनैतिक दलबन्दी—

रानी ऐन के समय में राजनैतिक दलबन्दी की प्रथा ने भी स्थाई रूप धारण कर लिया, और विग तथा टोरी दोनों ने अपने दलों का भली भाँति संगठन कर लिया तथा दोनों के राजनैतिक सिद्धान्त भी स्पष्ट रूप से निर्धारित हो गये। विग दल वाले पार्लियामेण्ट के अधिकारों के पक्षपाती थे और वे धार्मिक स्वतन्त्रता भी स्थापित करना चाहते थे। इसके विरुद्ध टोरी दल वाले अभी तक राज-पक्ष के समर्थक थे और वे धार्मिक क्षेत्र में भी ऐंग्लिकन चर्च के अनुयायियों के अतिरिक्त अन्य धर्मावलम्बियों को किसी प्रकार की सुविधा देने को तैयार न थे। इस काल में पहले विग दल की प्रधानता रही और इस कारण मन्त्रि-मण्डल भी इसी दल वालों के हाथ में रहा। परन्तु टोरियों का प्रभाव ग्रामों में अधिक था और सन् १७१० के निर्वाचन में उनकी संख्या पार्लियामेण्ट में बढ़ गई। ऐसी स्थिति में विग दल के मन्त्रि-मण्डल का अन्त हुआ और उसके स्थान पर टोरी दल के नेता हार्ले (Harley) तथा बोलिंगब्रोक (Bolingbroke) का मन्त्रि-मण्डल पर अधिकार होगया। इसी नये मन्त्रि-मण्डल ने मार्लबरो को पदच्युत करके यूट्रेक्ट की संधि द्वारा स्पेन के उत्तराधिकार के युद्ध का अन्त किया।

उत्तराधिकार के लिये षड्यन्त्र—

टोरी नेता बोलिंगब्रोक यह चाहता था कि स्टुअर्ट वंश फिर से, इंगलैंड में राज्य करे। अतः उसने जेम्स द्वितीय के पुत्र से जो इतिहास में ओल्ड प्रीटेन्डर (Old Pretender) के नाम से प्रसिद्ध है पत्र-व्यवहार आरम्भ किया और उसे राजा बनाने का प्रयत्न किया। रानी ऐन भी इससे सहमत थी, क्योंकि उसका भाई राजा बनता था। परन्तु बोलिंगब्रोक का षड्यन्त्र सफल होने से पूर्व ही रानी ऐन की अकस्मात् मृत्यु हो गई और "उत्तराधिकार निर्णय" के अनुसार हनोवर की रानी सोफ़िया का पुत्र जार्ज प्रथम के नाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ते इंगलैंड का राजा बना दिया गया। अपने प्रयत्न की विफलता देख कर बेचारा बोलिंगब्रोक निराश होकर देश से भाग गया।

Exercises.

1. What was England's interest in the War of the Spanish succession? Give a brief account of the important battles during this war.
2. What were the terms of the Treaty of Utrecht and how did they affect the position of England as a maritime power?
3. How did the Whig and the Tory parties come into existence? What was the position of these Parties duriug the reign of Queen Anne?
4. What was the Act of Settlement? What attempt was made to upset it towards the end of Queen Anne's reign?
5. Give a brief sketch of the life and career of Duke of Marlborough.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छब्बीसवाँ परिच्छेद

स्टुअर्ट काल का सिंहावलोकन

सन् १६०५	हेम्पटन कोर्ट की धार्मिक सभा
,, १६२०	धार्मिक यात्रियों का अमेरिका के लिए प्रस्थान
,, १६४१	आयरलैंड में विद्रोह
,, १६५५	जमेका टापू पर अधिकार
,, १६६२	रायल सोसाइटी की स्थापना
,, १६६५	भयंकर प्लेग
,, १६६६	भयंकर अग्नि
,, १६७०	न्यूयार्क पर अधिकार
,, १६८६	धार्मिक सहन-शीलता-नियम
,, १६६४	बैंक आफ़ इंगलैंड की स्थापना
,, १७०७	स्काटलैंड तथा इंगलैंड का संयुक्त शासन
,, १७१४	स्टुअर्ट काल का अन्त

इंगलैंड तथा स्काटलैंड

राजसिंहासनों का संयोग—

सन् १६०३ में जेम्स प्रथम इंगलैंड तथा स्काटलैंड दोनों देशों का राजा हुआ और उसके राज्याभिषेक के समय से दोनों देशों के राजसिंहासन सम्मिलित हो गये। दोनों देशों के झण्डे भी मिला दिये गये और सम्मिलित झण्डा यूनियन जेक (Union Jack) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। परन्तु 'दोनों देशों की पार्लियामेण्टें, चर्च, न्याय-पद्धति इत्यादि एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दूसरे से पृथक् ही रहे, और दोनों देशों का शासन-प्रबन्ध भी पृथक् रूप ही से होता रहा। जेम्स तो दोनों देशों को पूर्णतया सम्मिलित करके एक संयुक्त-राज्य स्थापित करना चाहता था, परन्तु दोनों देशों के विरोध के कारण वह असफल रहा। इंगलैंड का राजा होने से जेम्स की शक्ति बहुत बढ़ गई और उसने स्काटलैंड के उपद्रवी सरदारों को शक्तिहीन करके वहाँ निरंकुश शासन स्थापित किया। स्काटिश पार्लियामेण्ट में भी जेम्स ने अपने पक्ष के सदस्यों को भर कर उसे अपने अधिकार में कर लिया था। देश का शासन राजा की नियुक्त की हुई प्रिवी काउंसिल द्वारा होता था। इस प्रबन्ध से स्काटलैंड की वर्षों की पुरानी अराजकता दूर हुई और उसके स्थान में शान्ति स्थापित हुई।

प्रेसबीटीरियन चर्च –

स्काटलैंड के चर्च में धर्म-सुधार इंगलैंड के चर्च से भिन्न रूप से हुआ था और वहाँ प्रेसबीटीरियन चर्च (Presbyterian Church) की स्थापना हुई। स्काटलैंड के पादरियों को न तो पोप नियत करता था और न राजा। वे प्रजा द्वारा निर्वाचित किये जाते थे और वे कोई विशेष प्रकार के वस्त्र भी न पहनते थे। उनके यहाँ कोई निश्चित प्रार्थना-पुस्तक भी न थी, और पूजा-विधि इत्यादि में भी सबको पूर्ण स्वतन्त्रता थी। जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम ने स्काटलैंड के चर्च को भी इंगलैंड की भाँति बनाना चाहा, परन्तु इसमें उन्हें सफलता न हुई। जेम्स ने इंगलैंड की भाँति वहाँ बिशप नियुक्त किये और पूजा-विधि में भी कुछ संशोधन किया। स्काटिश जनता बिगड़ी तो बहुत, परन्तु जेम्स के संगठित प्रबन्ध के कारण वह शान्त रही। परन्तु चार्ल्स प्रथम ने जब लाड की सलाह से स्काटलैंड के चर्च में भी अपनी ओर से एक निश्चित प्रार्थना-पुस्तक का प्रयोग कराना चाहा, तो स्काटलैंड के निवासियों ने अपने प्रेसबीटीरियन चर्च की रक्षा के लिए शस्त्र उठाये और चार्ल्स को उनके विरोध के सम्मुख झुकना पड़ा। अब स्काटलैंड में न तो राजा के नियुक्त किये हुए बिशप रहे और न प्रार्थना-पुस्तक। संक्षेप में वहाँ पूर्ण धार्मिक स्वतन्त्रता स्थापित हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गृह-युद्ध में भाग—

गृह-युद्ध काल में पहले स्काटलैंड निवासियों ने पार्लियामेण्ट के पक्ष का समर्थन किया और बड़े जोश से राजा के विरुद्ध युद्ध में भाग लिया, क्योंकि अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट ने इंगलैंड में प्रेसबीटीरियन धर्म स्थापित करने का वचन दिया था। उनकी सहायता से पार्लियामेण्ट की सेना ने चार्ल्स की सेना को पराजित किया; और अन्त में जब राजा ने उनकी शरण ली तो उन्होंने उसे अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट के हाथों सौंप दिया। परन्तु कुछ काल के बाद स्काटलैंड वाले चार्ल्स प्रथम के कहने में आ गये और उसके यह वचन देने पर कि वह इंगलैंड में भी स्काटलैंड की भाँति प्रेसबीटीरियन चर्च स्थापित करेगा, उन्होंने पार्लियामेण्ट का साथ छोड़ दिया और द्वितीय गृहयुद्ध में उन्होंने राज-पक्ष का समर्थन किया और इंगलैंड पर आक्रमण किया, परन्तु क्रामवेल ने उन्हें शीघ्र परास्त कर दिया और वे राजा को न बचा सके।

प्रजा-तन्त्र राज्य का काल—

राज-पक्ष के समर्थक हो जाने के कारण स्काटलैंड वालों ने इंगलैंड में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित हो जाने पर विद्रोह खड़ा किया; और चार्ल्स द्वितीय को अपना राजा घोषित कर दिया; परन्तु क्रामवेल की सेनाओं ने उन्हें परास्त करके शीघ्र इस विद्रोह को शान्त कर दिया और राजकुमार को फ्रान्स भाग जाना पड़ा। अब स्काटलैंड वालों को भी इंगलैंड ही का शासन-प्रबन्ध स्वीकृत कर लेना पड़ा। प्रजातन्त्र काल की पार्लियामेण्टों में पहली बार स्काटलैंड के प्रतिनिधि बुलाये गये, परन्तु राजकीय-शासन के पुनः स्थापित होने पर फिर वही पहले की सी दशा हो गई और वहाँ जेम्स प्रथम का निरंकुश शासन फिर स्थापित हुआ। स्काटिश चर्च में फिर से बिशप नियुक्त किये गये और प्रेसबीटीरियन चर्च के बहुत-से नेताओं पर बड़े-बड़े अत्याचार किये गये।

पुनर्राज्य-स्थापन तथा रक्त-हीन राज्य-क्रान्ति—

चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के समय में स्काटलैंड में प्रायः शान्ति रही। परन्तु सन् १६८८ की रक्त-हीन राज्यक्रान्ति के पश्चात् जब विलियम, इंगलैण्ड के राजसिंहासन पर बैठा तो स्काटलैंड के कुछ निवासियों ने फिर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्रोह खड़ा किया। परन्तु यह विद्रोह भी सफल न हो सका और विलियम की सेनाओं ने पहाड़ी जातियों को शीघ्र ही छिन्न-भिन्न कर दिया। फिर भी पहाड़ी जातियाँ बहुत काल तक स्टुअर्ट वंश का पक्ष करती रहीं। परन्तु विलियम के राज्य-काल में स्काटिश पार्लियामेण्ट स्टुअर्ट काल में पहले-पहल स्वाधीन हुई। इंगलैंड की भाँति उसने भी अधिकार-पत्र (A Claim of Rights) तैयार कर विलियम से स्वीकृत कराया। प्रेसबीटीरियन चर्च फिर से स्काटलैंड का जातीय चर्च बन गया।

संयुक्त शासन की स्थापना—

इसके बाद जब इंगलैंड की पार्लियामेण्ट ने "उत्तराधिकार-निर्णय" के अनुसार यह निश्चित किया कि रानी ऐन के पश्चात् हनोवर वंश को राज्य दिया जायगा, उस समय पहले तो स्काटलैंड वालों ने इस निर्णय को मान लिया; परन्तु शीघ्र ही उन्होंने अपनी व्यापारिक शिकायतों का प्रश्न लेकर यह चाहा कि रानी ऐन की मृत्यु पर स्काटलैण्ड तथा इंगलैण्ड का सम्बन्ध बिल्कुल विच्छेद कर दिया जाय। इस पर बहुत वाद-विवाद चला, परन्तु अन्त में सन् १७०७ में दोनों देशों में समझौता हो गया, जिसके अनुसार दोनों देशों की पार्लियामेण्टें मिला दी गईं और दोनों देशों में संयुक्त शासन की स्थापना हुई, परन्तु दोनों के चर्च तथा न्याय-पद्धति फिर भी अलग ही रक्खे गये और अब भी वह एक दूसरे से पृथक् ही हैं। इस प्रकार स्काटलैंड की समस्या का अन्त हुआ। तब से दोनों देशों में शान्ति तथा सहयोग बना हुआ है।

इंगलैंड तथा आयरलैंड

जेम्स प्रथम—

एलिज़बेथ के राज्य-काल में आयरलैंड पर इंगलैंड का पूर्ण अधिकार हो गया। धार्मिक तथा आर्थिक अत्याचारों के कारण आयरलैंड में बराबर असंतोष बना रहा और सरकार भी दमन नीति से काम लेती रही। जेम्स प्रथम के राज्याभिषेक से आयरलैंड वालों को यह आशा थी कि उनके साथ दया का बर्ताव किया जायगा, परन्तु जेम्स ने भी एलिज़बेथ की भाँति आयर-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लैंड के प्रति दमन-नीति का प्रयोग किया। उसने भी केथलिकों को निकाल कर वहाँ प्रोटेस्टेएट बसाये। अल्स्टर (Ulster) का प्रान्त तो केथलिकों से बिलकुल ही खाली करा लिया गया, और उनके स्थान पर अँग्रेज़ तथा स्काच बसा दिये गये। वहाँ की आर्थिक दशा भयानक होती गई और विद्रोह की अग्नि भड़कने लगी।

चार्ल्स प्रथम—

चार्ल्स प्रथम के समय में स्ट्रैफर्ड आयरलैंड का शासक नियत किया गया। उसने भी आयरलैंड में बड़े अत्याचार किये और बहुत-से प्रान्तों के ज़मींदारों की भूमि छीन लीं। परन्तु उसने साधारण जनता को नहीं सताया। उसके शासन-काल में व्यापार की भी वृद्धि हुई। परन्तु स्ट्रैफर्ड के चले आने पर फिर कठिनाइयाँ आरंभ हो गईं; और सन् १६४१ में आयरलैंड निवासियों ने तंग आकर एक भयङ्कर विद्रोह किया, जिसमें सहस्रों नये बसे हुए प्रोटेस्टेएट मार डाले गये। इस विद्रोह का आयरलैंड की स्थिति पर और भी बुरा प्रभाव पड़ा और उनका शासन अब पहले से भी अधिक कठोरता से होने लगा।

प्रजा-तन्त्र-राज्य काल—

गृह-युद्ध में आयरलैंड वालों ने राज-पक्ष का समर्थन किया, और चार्ल्स के बध के पश्चात् उन्होंने इंगलैंड के प्रजा-तन्त्र-राज्य की अधीनता स्वीकार न करके चार्ल्स के पुत्र को राजा घोषित किया और वे उसके पक्ष में युद्ध पर उतारू हो गए। परन्तु क्रामवेल की वीर सेना के सम्मुख उनका मनोरथ सिद्ध होना कठिन था। आयरलैंड निवासी कई युद्धों में परास्त हुए और उन पर बड़े-बड़े अत्याचार किये गये, और अन्त में उन्हें प्रजा-तन्त्र-राज्य की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी। विद्रोही केथलिको की भूमि ज़ब्त कर ली गई। बहुतसों को देश निकाला देकर वेस्ट इएडीज़ के टापुओं में दास बना कर बेच दिया गया, और बहुत-से स्वयं तंग आकर देश छोड़ कर अन्य देशों में जा बसे। क्रामवेल ने भी अपनी पार्लियामेएटों में स्काटलैंड की भाँति आयरलैंड के प्रतिनिधियों को स्थान दिया। परन्तु पुनर्राज्य-स्थापन के समय से फिर वही पुरानी स्थिति हो गई।

पुनर्राज्य-स्थापन का प्रभाव—

चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय के समय में आयरलैंड निवासियों को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कुछ सुख से रहने का अवसर मिला, क्योंकि ये दोनों राजा केथलिकों से सहानुभूति रखते थे। उनके समय में आयरलैंड के केथलिकों को थोड़ी बहुत सुविधाएँ भी मिल गईं, परन्तु उनकी इस सुख-शान्ति का समय अधिक काल तक स्थाई न रह सका।

रक्तहीन राज्य-क्रान्ति के पश्चात् की दशा—

रक्तहीन राज्य-क्रान्ति के समय जब जेम्स द्वितीय के भागने पर विलियम राजा हुआ, तो आयरलैंड निवासियों ने जेम्स द्वितीय के पक्ष में विद्रोह खड़ा किया। विलियम ने इस विद्रोह को शीघ्र शान्त कर दिया और आयरलैंड निवासी उसका राज्याधिकार स्वीकृत करने पर बाध्य हुए। परन्तु आयरलैंड में पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय तथा उसकी सन्तान के प्रति सहानुभूति बराबर बनी रही, क्योंकि वे सब केथलिक थे। आगे चल कर हम बतलायेंगे कि ओल्ड प्रिटेण्डर ने जब हनोवर वंश के विरुद्ध विद्रोह खड़े किये तो इस प्रयत्न में आयरलैंड के केथलिकों ने भी उन्हें काफ़ी सहायता पहुँचाई।

विलियम के विरुद्ध जिन लोगों ने शस्त्र उठाये थे उनकी भूमि ज़ब्त कर ली गई और इंगलैंड तथा स्काटलैंड के प्रोटेस्टेण्टों को दे दी गई। इस प्रकार इस समय देश की अधिकांश भूमि पर प्रोटेस्टेण्टों का अधिकार हुआ। देश की अधिकांश जनता केथलिक धर्म की अनुयायी थी, परन्तु वे अब साधारण किसान अथवा मज़दूर आदि का काम करने लगे। पार्लियामेण्ट में स्थान केवल प्रोटेस्टेण्ट सम्प्रदाय वालों को मिलता था। रोमन केथलिक वकालत नहीं कर सकते थे और चर्च के अथवा सरकारी पदों पर उनकी नियुक्ति नहीं हो सकती थी। वे न तो भूमि मोल ले सकते थे और न वसीयत द्वारा उन्हें भूमि लेने का अधिकार था। इस प्रकार आयरिश जनता बहुत दुखी थी और असंतोष बराबर बढ़ता जा रहा था।

धार्मिक स्थिति

धार्मिक सहनशीलता का अभाव—

सत्रहवीं शताब्दी में केवल इंगलैंड ही में नहीं, समस्त यूरोप में धार्मिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मतभेद के कारण बड़ी अशान्ति फैली हुई थी। इस काल में धार्मिक सहनशीलता का सर्वथा अभाव था और प्रत्येक धर्म वाले अन्य मतावलम्बियों पर अत्याचार करने में कदापि न चूकते थे। धर्म-सुधार के पश्चात् उसके विरोधियों तथा समर्थकों के अनेक धार्मिक सम्प्रदाय बन गए थे, और इनमें से प्रत्येक अपने ही धर्म-प्रबन्ध को उचित समझता तथा बलपूर्वक अपने ही धार्मिक सिद्धान्तों का प्रचार करने का प्रयत्न करता था।

ऐंग्लिकन चर्च की प्रधानता—

पहले दोनों स्टुअर्ट राजाओं के काल में इंगलैंड में ऐंग्लिकन चर्च ही की प्रधानता रही। जेम्स प्रथम के समय में प्यूरिटनों को ऐंग्लिकन चर्च में सम्मिलित करने का प्रयत्न किया गया, और इस विषय पर विचार करने के लिये एक बहुत बड़ी धर्म-सभा (Hampton Court Conference) भी बुलाई गई थी। परन्तु यह प्रयत्न विफल रहा, और इसके बाद से प्यूरिटन दल वाले सदा के लिये ऐंग्लिकन चर्च से पृथक् हो बैठे। अब प्यूरिटनों की धार्मिक स्वतन्त्रता छिन गई और उन पर अनेक अत्याचार होने लगे। चार्ल्स प्रथम के राज्यकाल में आर्चबिशप लाड के अनुरोध से प्यूरिटनों पर और भी अधिक अत्याचार किये गये, और स्थापित चर्च को न मानने के अपराध में उनको हाई कमीशन कोर्ट के द्वारा कड़े-कड़े दण्ड दिलाये गये। फल यह हुआ कि बहुत से प्यूरिटन देश छोड़ कर भाग गये और अमेरिका में जा बसे।

प्यूरिटन दल की प्रधानता—

प्यूरिटन दल वालों को सुख-शान्ति से रहने का अवसर केवल प्रजा-तन्त्र-राज्य काल में मिला। गृह-युद्ध में प्यूरिटन दल वालों ही ने राजा के विरुद्ध युद्ध में विशेष भाग लिया था और इस कारण प्रजा-तन्त्र राज्य में इन्हीं की प्रधानता रही। उन्होंने बदला लेने के लिये ऐंग्लिकन चर्च का दमन किया, और देश के खेल, तमाशे, नाटक, नाच-रंग इत्यादि सभी बन्द करा दिये। फल यह हुआ कि देश के सामाजिक जीवन में उदासीनता छा गई, और देशवासी प्यूरिटनों को आनन्द एवं सुख का शत्रु समझने लगे। ऐंग्लिकन चर्च वालों के अतिरिक्त सब प्रकार के प्रोटेस्टेण्टों को धार्मिक स्वतन्त्रता थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐंग्लिकन चर्च वालों को अपनी आय का दसवाँ भाग कर के रूप में देना पड़ता था।

प्यूरिटनों पर अत्याचार —

पुनर्राज्य-स्थापन के होते ही प्यूरिटनों की अल्प कालिक प्रधानता का अन्त हुआ; और ऐंग्लिकन चर्च-पार्टी ने फिर ज़ोर पकड़ा। इस समय पार्लियामेण्ट में अधिकांश ऐंग्लिकन चर्च ही के समर्थक थे और अब उन्होंने प्यूरिटनों से बदला लेने के लिये उनके विरुद्ध कड़े-कड़े नियम बनाये जो क्लेरंडन कोड के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस काल में बहुत-से प्यूरिटन इन नियमों को भंग करने के अपराध में जेलखानों में ठूँस दिये गये और इस काल के पश्चात् वह चर्च के विरोधी (Dissenters or Non-Conformists) कहलाने लगे। अब फिर बहुत-से प्यूरिटन देश छोड़ कर अमेरिका जा बसे।

केथलिक धर्म के पुनः प्रचार की चेष्टा—

चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय हृदय से केथलिक धर्म के समर्थक थे, परन्तु प्रजा के विरोध के भय के कारण वे अपने धार्मिक विश्वासों को अधिकतर गुप्त ही रखते थे। उन्होंने केथलिकों को सुविधा देने के लिये कई बार प्रयत्न भी किया और धार्मिक स्वतन्त्रता की घोषणायें (Declarations of Indulgence) प्रकाशित कीं। परन्तु उनका प्रयत्न निष्फल ही रहा, और इस प्रकार की घोषणायें उन्हें वापस लेनी पड़ीं और जेम्स द्वितीय को तो देश छोड़ कर भाग जाना पड़ा। देशवासी केथलिकों के नाम से चिढ़ते थे और पार्लियामेण्ट ने एक नियम (Test Act) द्वारा उनको सब सरकारी पदों से वंचित कर दिया, और ये पद केवल ऐंग्लिकन चर्च वालों ही को मिलते थे। रक्त-हीन राज्य-क्रान्ति के पश्चात् केथलिकों ने जेम्स द्वितीय तथा उसकी संतान का साथ दिया जिसके कारण देशवासियों की उनके प्रति घृणा और भी बढ़ गई।

सहन-शीलता का प्रारंभ—

सन् १६८८ में धार्मिक सम्प्रदायों के परस्पर अत्याचारों का बहुत कुछ अन्त हो गया, और एक नियम (Toleration Act) के अनुसार केथलिकों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को छोड़ कर अन्य सब मतावलम्बियों को धार्मिक स्वतन्त्रता मिल गई। इस नियम के समय से इंगलैंड में धार्मिक सहन-शीलता का आरंभ माना जाता है। परन्तु ऐंग्लिकन चर्च के विरोधी दो नियमों (Corporation and Test Act) के अनुसार अब भी सरकारी पदों से वंचित रहे और यह स्थिति लगभग एक शताब्दी तक इसी प्रकार रही।

राजा तथा पार्लियामेण्ट

राजा तथा पार्लियामेण्ट में मतभेद—

ट्यूडर शासकों तथा पार्लियामेण्ट में अधिकतर सहयोग था। परन्तु स्टुअर्ट राजाओं का प्रारम्भ ही से पार्लियामेण्ट से मतभेद रहने लगा। जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम दोनों "दैवी अधिकार" (Divine Right of Kings) के सिद्धान्त पर दृढ़ थे, और उन्होंने कई प्रकार से पार्लियामेण्ट को दबाकर निरंकुश शासन स्थापित करने की चेष्टा की। उनको यह ज्ञान नहीं था कि अँग्रेज़ जाति सदैव से स्वतन्त्रता की प्रेमी रही है, और ट्यूडर काल में वे पार्लियामेण्ट के कार्य-क्रम से परिचित होकर अपनी शक्ति का काफ़ी संगठन कर चुके थे। इस समय व्यापारी, ज़मींदार, वकील आदि मध्यम श्रेणी के लोग पार्लियामेण्ट के मुख्य नेता थे और वे राजाओं के निरंकुश शासन को अन्त करने पर तुले हुए थे। उधर स्टुअर्ट राजा अपने "दैवी अधिकार" के सिद्धान्त के कारण पार्लियामेण्ट के कटाक्ष को तनिक भी सहन नहीं कर सकते थे, और प्रजा के प्रतिनिधियों के विचारों को ठुकरा कर मनमाने कर लगाते थे और जो उनकी आज्ञाओं का पालन नहीं करते थे। उन्हें जेल में ठूँस देते थे। इस कारण पार्लियामेण्ट में बड़ी अशान्ति फैली और उसके सदस्य भी अब अपने अधिकारों की रक्षा के लिए तत्पर हो गये। इस समय व्यापार की वृद्धि तथा विद्या-प्रचार के प्रभाव से देश में जागृति हो गई थी और जनता अपने अधिकारों को समझने लगी थी। इस समय किसी विदेशी शत्रु का भी अधिक भय न था। इसलिये देशवासी निश्चिन्त होकर राजनैतिक सुधारों की ओर ध्यान दे सके। ऐसी स्थिति में पार्लियामेण्ट को दबा कर रखना कोई खेल न था; और स्टुअर्ट शासकों की नीति की विफलता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लक्षण आरम्भ ही से प्रस्तुत होने लगे। स्टुअर्ट राजाओं तथा उनकी पार्लियामेण्टों में विदेशी नीति के सम्बन्ध में भी प्रायः मतभेद रहता था, जिसके कारण भी दोनों का सहयोग असंभव-सा हो गया। जेम्स प्रथम ने इंगलैंड के पुराने शत्रु प्रोटेस्टेण्ट देश स्पेन से मित्रता करने का प्रयत्न किया, और चार्ल्स प्रथम ने अपनी अस्थिर विदेशी नीति के कारण इंगलैंड को विदेशों में नीचा दिखलाया। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय ने फ्रान्स के राजा लुई चतुर्दश के पेन्शनर होकर अपने देश को रोमन केथलिक बनाना चाहा। इस प्रकार इन राजाओं ने यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में इङ्गलैंड की प्रतिष्ठा घटाई और अपनी पार्लियामेण्टों को अप्रसन्न किया।

जैसा कि हम ऊपर बतला आये हैं, झगड़े का तीसरा मुख्य कारण धार्मिक-मतभेद था। उस समय देश में प्यूरिटनों की संख्या बढ़ती जाती थी और पार्लियामेण्ट में भी उनका काफी प्रभाव था। जेम्स प्रथम तथा चार्ल्स प्रथम ने ऐंग्लिकन चर्च का समर्थन कर प्यूरिटनों पर अत्याचार किये। अन्त में इस विरोध ने गृह-युद्ध का रूप धारण किया और ऐंग्लिकन चर्च के हेतु चार्ल्स प्रथम ने अपने प्राण का बलिदान किया। चार्ल्स द्वितीय तथा जेम्स द्वितीय रोमन केथलिक थे। चार्ल्स द्वितीय ने तो रोमन केथलिकों को कुछ सुविधाएँ देने का प्रयत्न किया, परन्तु जेम्स द्वितीय ने तो खुल्लम-खुल्ला देश को केथलिक बनाने की चेष्टा की। प्रजा के विरोध के कारण जेम्स देश छोड़ कर भाग जाने पर बाध्य हुआ।

मतभेद के विषय—

इस प्रकार राजा तथा पार्लियामेण्ट में विशेषतया निम्न लिखित प्रश्नों पर झगड़ा चला—

(१) कर लगाने का अधिकार सर्वथा पार्लियामेण्ट ही का है, या राजा भी विशेष स्थिति में केवल अपनी ही आज्ञा से कर लगा सकता है?

(२) राज-मन्त्रियों पर केवल राजा ही का अधिकार है, या वे अपनी नीति के लिए पार्लियामेण्ट के सम्मुख भी उत्तरदायी हैं?

(३) नियमानुसार अपराध सिद्ध हुए बिना भी राजा किसी स्वतन्त्र नागरिक को बन्दीगृह भेज सकता है या नहीं?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(४) धार्मिक प्रश्न तथा विदेशी नीति इत्यादि निर्धारित करना पार्लियामेण्ट पर निर्भर है या राजा पर ?

इन जटिल राजनैतिक समस्याओं का सुगमता से निपटारा होना कठिन था। इनके कारण राजा तथा पार्लियामेण्ट में खूब झगड़ा चला, और अन्त में इस बखेड़े ने भयंकर रूप धारण कर लिया।

पार्लियामेण्ट की विजय—

इसी राजनैतिक झगड़े के परिणाम स्वरूप चार्ल्स प्रथम की जान गई और जेम्स द्वितीय देश से निकाला गया। परन्तु अन्त में पार्लियामेण्ट ही की विजय हुई और यह स्पष्ट हो गया कि पार्लियामेण्ट के अधिकारों के विरोधी राजा का राजसिंहासन पर रहना असंभव है। पार्लियामेण्ट ने ग्यारह वर्ष तक बिना राजा के शासन चलाया, और इसके बाद यद्यपि "पुनर्राज्य स्थापना" से प्राचीन शासन-प्रणाली फिर स्थापित हो गई, परन्तु अब पार्लियामेण्ट की प्रधानता में कोई शंका न रही। यह प्रधानता "रक्तहीन राज्य-क्रान्ति" के पश्चात् और भी दृढ़ हो गई, और विलियम तथा मेरी के राज्य-काल में पार्लियामेण्ट ने कई नियमों द्वारा शासन-विधान के सिद्धान्तों का निर्णय किया। राज-कर, राज-मंत्री, सेना इत्यादि सब पर पार्लियामेण्ट का निश्चित रूप से अधिकार स्थापित हो गया, और अँग्रेज़ जाति की स्वतन्त्रता अब स्पष्ट रूप से विदित होने लगी।

उपनिवेश तथा व्यापार

समुद्री यात्राएँ—

आर्मेडा की पराजय के पश्चात् अँग्रेज़ी नाविकों का साहस बढ़ गया। उन्होंने बड़ी-बड़ी समुद्र-यात्राएँ करना तथा नये देशों की खोज करना आरम्भ कर दिया। एलिज़बेथ के राज्य-काल में विदेशों से व्यापार करने के लिये कई व्यापारिक कम्पनियाँ स्थापित हुई थीं। सत्रहवीं शताब्दी में इन कम्पनियों ने बड़ी भारी उन्नति की और व्यापार ही के सहारे कितने ही नये उपनिवेश भी बसाये। ट्यूडर काल में केवल अँग्रेज़ी नाविकों ने नये समुद्रों में घूम कर नये व्यापारिक मार्गों की खोज की थी। स्टुअर्ट काल में व्यापार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को उन्नति देने तथा नये उपनिवेश बसाने की ओर सरकार ने भी पूर्ण रूप से ध्यान दिया और इस काम के लिए एक नया विभाग भी खोला गया। स्टुअर्ट काल में धार्मिक तथा राजनैतिक अत्याचार बहुत बढ़े हुए थे। इनसे बचने के लिये बहुत-से लोगों ने देश छोड़ कर विदेशी उपनिवेशों में शरण ली और वे वहीं बस गये।

सर वालटर रेले

अमेरिका के उपनिवेश—

एलिज़बेथ के राज्य-काल में वालटर रेले ने उत्तरी अमेरिका में रानी के सम्मान में वरजीनिया (Virginia) नाम का उपनिवेश स्थापित करना आरंभ किया था। वहाँ जेम्स प्रथम के समय में सन् १६०६ में पहला नगर बसाया गया जो जेम्स टाउन (James Town) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। सन् १६३० से बहुत-से अँग्रेज़ी प्यूरिटन, जो धार्मिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यात्री (Pilgrim Fathers) कहलाते हैं, धार्मिक अत्याचारों के कारण इंगलैंड छोड़ने पर वाध्य हुए और अमेरिका जाकर बसने लगे। इनके बसाए हुए उपनिवेशों का समूह न्यू इंगलैंड (New England) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मेसेचूसेट्स (Massachusettes) का उपनिवेश इसी समूह में सम्मिलित है। धार्मिक अत्याचारों ही के कारण बहुत-से केथलिकों ने भी उत्तरी अमेरिका में जाकर शरण ली और उन्होंने मेरीलैंड (Maryland) नामक उपनिवेश बसाया। इन उपनिवेशों की उन्नति देखकर अन्य अँग्रेज़ भी व्यापार अथवा विदेशों की सैर के अभिप्राय से अमेरिका के पूर्वी तट पर जाकर बसने लगे। सत्रहवीं शताब्दी के मध्य तक फ्लोरिडा (Florida) से लेकर नोवा-स्कोटिया (Nova Scotia) तक समस्त पूर्वी तट पर अँग्रेज़ी उपनिवेश बस चुके। सन् १६७० में ब्रेडा की सन्धि के अनुसार हालैंड वालों का बसाया हुआ न्यूऐम्सटरडम (New Amsterdom) नामक उपनिवेश अँग्रेज़ों के अधीन हो गया और उन्होंने उसका नाम बदल कर न्यूयार्क (New York) रक्खा। सन् १६८१ में पेनसिलवेनिया (Pennsylvania) उपनिवेश बसाया गया, और इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी के अन्त तक उत्तरी अमेरिका में अँग्रेज़ों की औपनिवेशिक शक्ति काफ़ी स्थापित हो चुकी थी।

अमेरिका ही के निकट वेस्ट इन्डीज़ (West Indies) के टापुओं को अधिकार में लाने के लिए इंगलैंड, फ्रान्स, हालैंड तथा स्पेन में सत्रहवीं शताब्दी भर प्रतिद्वन्द्विता चलती रही। बहामास (Bahamas) का टापू बराबर अँग्रेज़ों के अधिकार में रहा, और सन् १६५५ में क्रामवेल ने जैमेका के टापू को स्पेन से छीन लिया।

इंगलैंड ने अपने उपनिवेशों को एक व्यापार को छोड़ कर अन्य सब बातों में पूर्ण स्वतन्त्रता दे रक्खी थी। इसी कारण धार्मिक तथा राजनैतिक मतभेद होने पर भी अँग्रेज़ी उपनिवेशों के संगठन में कोई बाधा न पड़ी। अमेरिका के उपनिवेशों तथा वेस्ट इंडीज़ के टापुओं में तम्बाकू, शक्कर तथा कपास आदि की बहुत अच्छी खेती होती थी। खेती का काम करने के लिए अफ्रीका के ग्रामों से दास पकड़ कर लाये जाते थे। इसके अतिरिक्त राजाओं ने इंगलैंड तथा आयरलैंड से बहुत-से लोगों को देश निकाला देकर इन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

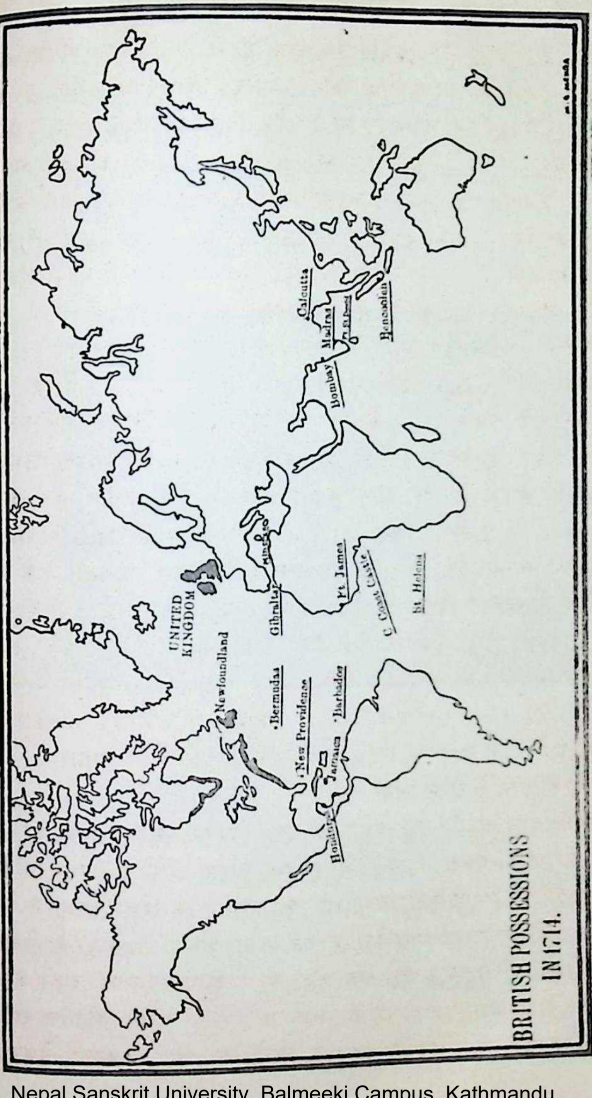

BRITISH POSSESSIONS IN 1714.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपनिवेशों में भिजवा दिया था, और वहाँ उनके साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। जहाज़ी नियमों (Navigation Laws) के बनने से इन उपनिवेशों के व्यापार से अधिकांश लाभ इंगलैंड को ही होता था। उपनिवेश अपना कच्चा माल इंगलैंड के अतिरिक्त और कहीं नहीं भेज सकते थे और न अन्य देशों से कोई माल मँगा सकते थे; और न बहुत-सी वस्तुएँ अपने यहाँ बना सकते थे। इसका आगे चलकर बहुत बुरा परिणाम निकला।

पिलग्रिम फ़ादर

[भारतव]र्ष में व्यापारिक कोठियाँ—

स्टुअर्ट काल में अँग्रेज़ों ने भारतवर्ष में भी कुछ अपनी व्यापारिक कोठियाँ [ब]ना लीं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी का जन्म एलिज़बेथ ही के राज्य-काल में [हो] चुका था। अब अँग्रेज़ों ने धीरे-धीरे सूरत, मदरास, बम्बई तथा कलकत्ते में बड़ी-बड़ी व्यापारिक कोठियाँ बनाईं, और मुग़ल सम्राटों के दरबार में पहुँच कर उनसे कई प्रकार की व्यापारिक सुविधाओं के आज्ञापत्र प्राप्त किये। आगे चल कर इन्हीं व्यापारिक कोठियों के द्वारा भारतवर्ष में इतने बड़े अँग्रेज़ी साम्राज्य की स्थापना हुई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अफ्रीका में व्यापार--

सत्रहवीं शताब्दी ही में अँग्रेज़ों ने अफ्रीका में भी व्यापार आरम्भ किया। वे यहाँ से हाथी दाँत, सोना और काली मिर्च ले जाया करते थे, परन्तु मुख्य व्यापार दासों का था, जिन्हें यहाँ से पकड़ कर दक्षिणी अमेरिका तथा अँग्रेज़ी उपनिवेशों में बेच दिया जाता था, क्योंकि वहाँ मज़दूरों की बहुत कमी थी। अँग्रेज़ों ने अफ्रीका में गेम्बिया (Gambia) और उत्तमाशान्तरीप (Cape of Good Hope) के आस-पास कुछ व्यापारिक कोठियाँ बनाईं; परन्तु इस समय जल-वायु अनुकूल न होने के कारण उन्होंने वहाँ कोई उपनिवेश न बसाये। उसी समय सन् १६५१ में सेन्ट हेलीना (St. Helena) नामक टापू पर अँग्रेज़ों ने अधिकार किया। इस प्रकार इस काल में अफ्रीका के उपनिवेशों की भी नींव पड़ी।

इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी में अमेरिका, भारतवर्ष, अफ्रीका इत्यादि देशों में अँग्रेज़ जाति के पैर जमे और आगे चल कर इसी के द्वारा इतना बड़ा ब्रिटिश साम्राज्य बना जिससे अन्य यूरोपीय देश बड़े चकित हुए। यूट्रेक्ट की संधि के पश्चात् जिब्राल्टर तथा माइनार्का के मिलने से रूम सागर पर भी अँग्रेज़ों का अधिकार बढ़ने लगा। इस प्रकार उनके व्यापार तथा साम्राज्य की इस काल में बराबर उन्नति होती रही।

सामाजिक उन्नति

मध्य श्रेणी—

सत्रहवीं शताब्दी में व्यापारिक उन्नति के कारण सामाजिक जीवन में मध्य श्रेणी का विकास हुआ। ट्यूडर काल में बैरनों की शक्ति नष्ट हो चुकी थी, और अब उनके स्थान पर मध्य श्रेणी ही की प्रधानता का प्रारम्भ हुआ। ग्रामों में छोटे ज़मींदार, धर्माधिकारी, व्यापारी, वकील और सरकारी पदाधिकारी मध्यम श्रेणी में सम्मिलित थे। व्यापार और व्यवसाय की उन्नति के कारण मध्यम श्रेणी के लोग धनी होते जाते थे और समाज में उनका महत्त्व बढ़ता जाता था। स्टुअर्ट काल में पार्लियामेण्ट के अधिकारों की रक्षा इत्यादि का भार इसी श्रेणी ने अपने ऊपर लिया, क्योंकि इन्हीं में विद्या तथा धन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

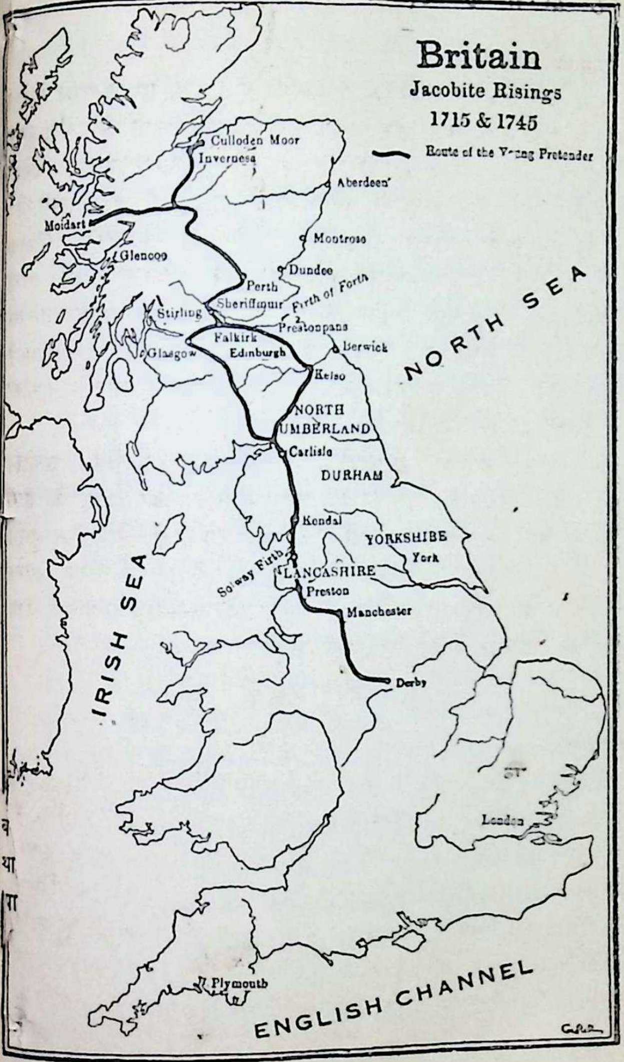

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण विशेष रूप से जागृति हुई थी। आगे जाकर जब राजनैतिक दल बने तब भी इसी श्रेणी वालों ने राजनैतिक क्षेत्र में मुख्य भाग लिया, और राजनैतिक दलों के नेता इन्हीं में से बने।

नागरिक जीवन—

स्टुअर्ट काल में इंगलैंड की जन-संख्या लगभग ६० लाख बतलाई जाती है, और इनमें से केवल १५ लाख नगरों के निवासी थे। देश का मुख्य उद्यम खेती था, परन्तु इस काल में व्यापार की वृद्धि के कारण ग्रामों की अपेक्षा नगरों की महत्ता अधिक होने लगी, और सत्रहवीं शताब्दी में कई बड़े-बड़े नगरों की नींव पड़ी। फिर भी आजकल की अपेक्षा नगरों की संख्या बहुत कम थी। लन्दन नगर सबसे बड़ा था। व्यापार तथा व्यवसाय और राजधानी होने के कारण लन्दन नगर की जन-संख्या बढ़ती जाती थी और उसका महत्त्व भी बहुत अधिक हो गया था। परन्तु फिर भी उसकी जन-संख्या केवल पांच लाख थी। अन्य नगरों की जनसंख्या लगभग ३०,००० थी। इसी काल में नगरों ने अपना स्वतन्त्रता पूर्वक शासन करने के लिये राजाओं से आज्ञापत्र (Charters) प्राप्त किये। नगरों की बनावट अभी वर्तमान बड़े नगरों की सी नहीं थी। सड़कें बड़ी खराब तथा गंदी थीं और तंग होने के कारण आने-जाने में बड़ी कठिनाई होती थी। नगरों में स्वच्छता का कोई विशेष प्रबन्ध न होने के कारण अनेक रोग होते थे; और इसी के कारण सन् १६६५ में लन्दन में इतनी बड़ी महामारी हुई। रात्रि के समय सड़कों पर रोशनी का कोई प्रबन्ध नहीं था। हर समय चोर डाकुओं का भय लगा रहता था, और यात्री लोग लूट लिये जाते थे। बड़े घरों के बदमाश लड़कों को ग़रीब तथा भले आदमियों को तंग करने में आनन्द आता था, और यदि चौकीदार हस्तक्षेप करता तो उसकी भी आफ़त आ जाती थी। आजकल के समान पुलिस का प्रबन्ध नहीं था। चौकीदार प्रायः बूढ़े और कमज़ोर होते थे, और जब कभी कोई झगड़ा होता तो वे आँख बचाकर खिसक जाते थे। सन् १६६६ में भयंकर अग्नि के कारण लन्दन नगर का पुराना तथा गन्दा भाग बहुत कुछ नष्ट हो गया और इसके बाद लन्दन बिल्कुल नये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्टुअर्ट काल के स्त्री-पुरुष और उनका पहनावा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ढंग से बनाया गया। अब वहाँ चौड़ी-चौड़ी सड़कें दिखलाई पड़ने लगीं और मकानों में भी हवा-रोशनी का उचित प्रबन्ध था।

मनोरंजन तथा पोशाक--

प्रजा-तन्त्र-काल में नाच, तमाशे, नाटक और अनेक प्रकार के खेल-कूद आदि मनोविनोद के सब साधन तथा स्थान बन्द कर दिये गये थे, परन्तु पुनः राज्य-स्थापन के पश्चात् बहुत-से नाच-घर तथा नाटक-घर बनाये गये जिनसे नगरों के सामाजिक जीवन में बहुत उन्नति हुई। नाटकों में पहले स्त्रियों का काम पुरुष करते थे, परन्तु अब स्टुअर्ट काल से स्त्रियों का पार्ट स्त्रियाँ ही करने लगीं। अनेक प्रकार के खेल-तमाशे फिर आरम्भ हुए। मुर्गों की लड़ाई में जन-साधारण बहुत आनन्द लेते थे। लड़ाई के समय मुर्गों पर लोहे के पर बांध दिये जाते थे और उनको छोड़ते समय लोग बाज़ी लगाते थे। लड़ते लड़ते एक मुर्ग़ दूसरे मुर्ग़ को मार डालता था अथवा बुरी तरह घायल कर देता था। कुत्तों और रीछ की लड़ाई में भी लोग बहुत आनन्द लेते थे। एक रीछ जंजीरों से बांध दिया जाता था और उस पर कुत्ते छोड़ दिये जाते थे। ताशों तथा फाँसों से जुआ खेलने का प्रचार बहुत अधिक था। स्थान स्थान पर शराब-खाने तथा काफी-घर (Coffee Houses) बने हुये थे। काफी-घरों में बड़े-बड़े विद्वान्, व्यापारी तथा उच्च कोटि के लोग एकत्र होते थे, अखबार पढ़ते थे, और कभी कभी गंभीर प्रश्नों पर विचार करते थे। उस समय फुटबाल, टेनिस इत्यादि खेल भी खेले जाते थे।

इस काल में स्त्री-पुरुष दोनों की पोशाकों में भी बहुत अन्तर पड़ा। लोग चटकीले-भड़कीले तथा अनेक प्रकार के सज-धज के कपड़े पहनने लगे। स्त्रियाँ घुंघर वाले बाल रखने लगीं और सिर पर लेसदार टोप लगाने लगीं। वे अपने बालों को बनावटी फूलों तथा फलों से सजाती थीं। सादे कपड़ों के स्थान में वे बढ़िया कढ़ाई के काम के लम्बे वस्त्रों का प्रयोग करती थीं। आजकल के समान उस समय भी पुरुष लम्बे कोट तथा जाकट पहनने लगे थे, परन्तु कपड़े चटकीले रंगों के होते थे। पुरुष अब सिर पर छोटे छोटे बाल रखते थे। घरों में बालों की टोपियां पहनते थे और बाहर तिकोने ऊनी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

फेल्ट टोपों का फेशन था। हुलास की डिबिया रखना भी फेशन में सम्मिलित था।

व्यापार तथा व्यवसाय—

हम ऊपर बतला चुके हैं कि स्टुअर्ट काल में भी अधिकांश लोगों का मुख्य धन्धा खेती था। सड़कों की दशा खराब होने के कारण इंगलैंड के ग्रामों से बहुत कम माल विदेशों को भेजा जाता था, अतः प्रत्येक ग्राम में उतना ही माल पैदा होता जितने की कि आवश्यकता हो। किसानों की स्थिति अच्छी न थी। उनके रहने के मकान गन्दे थे और बड़ी कठिनाई से अपनी गुज़रान चलाते थे। फिर भी उस काल के किसान सन्तोषी तथा सुखी थे। खेती से जब उन्हें फ़ुरसत मिलती थी वे अपना समय सूत कातने तथा कपड़ा बुनने में लगाते थे। उस समय अधिकतर ऊनी कपड़ा तैयार किया जाता था, परन्तु अब सन् १६८५ के पश्चात् जब कि फ्रान्स के ह्यूगिनाट्स को इंगलैंड में आकर बसने की आज्ञा मिल गई तो उन्होंने लोगों को रेशमी तथा सूती कपड़ा बनाना सिखलाया। इस प्रकार इंगलैंड में रेशमी कपड़े का व्यवसाय भी आरम्भ हुआ। इसके अतिरिक्त इस समय भाँति-भाँति की टोपियाँ, काँच का सामान, बर्तन, बालकों के खिलोने आदि बहुत-सी वस्तुएँ इंगलैंड में तैयार होने लगीं।

इस प्रकार सत्रहवीं शताब्दी में देश के व्ययसाय में भी बहुत उन्नति हुई और घरेलू व्यापार भी दिन-प्रति-दिन बढ़ने लगा। सन् १६६४ में लन्दन में बैंक आफ़ इंगलैंड की स्थापना हुई, और इसके अतिरिक्त और भी छोटे-छोटे बैंक देश के अन्य स्थानों में खुले जिससे व्यापारियों को बड़ी सुविधा होने लगी। अब तक बढ़िया कपड़े तथा विलास की सामग्री अधिकतर फ्रान्स से आती थी, परन्तु अब इस प्रकार की बहुत-सी वस्तुएँ इंगलैंड ही में बनाई जाने लगीं। मशीनों का युग अभी नहीं आया था और कारीगर सब काम हाथ ही से करते थे। व्यवसाय तथा व्यापार के बढ़ने से देश की जन-संख्या में उन्नति हुई, और चारों ओर चहल-पहल के लक्षण दिखाई पड़ने लगे।

साहित्य तथा विज्ञान—

स्टुअर्ट काल में विद्या का भी प्रचार बढ़ा और साहित्य तथा विज्ञान की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भी खूब उन्नति हुई। फिर भी देश की अधिकांश जनता निरक्षर थी। धनिक ज़मींदारों के लड़कों तक की पढ़ाई का उचित प्रवन्ध नहीं था। उनके शिक्षक अधिकतर सईस तथा शिकार खिलाने वाले होते थे। यदि वे कालेजों में शिक्षा प्राप्त करने के लिये जाते तो भी वीस वर्ष की आयु से पहले संसार का अनुभव प्राप्त किये विना ही लौट आते थे। कुछ लोग फ्रान्स, इटली आदि विदेशों में भी शिक्षा प्राप्त करने जाते थे। फिर भी इस काल में बड़े-बड़े प्रसिद्ध विद्वान् हुए हैं। इस काल का सबसे बड़ा कवि मिल्टन (Milton) माना जाता है, और उसके अतिरिक्त गद्य-लेखकों में जान बनियान (John Bunyan), एडिसन (Addison), स्विफ्ट (Swift), डीफो (Defoe) इत्यादि ने अँग्रेज़ी साहित्य में उच्च स्थान प्राप्त किया है। इसी काल में समाचार-पत्रों का जन्म हुआ, और राजनैतिक दलों के बन जाने से इन्हीं के द्वारा प्रत्येक पक्ष ने अपने सिद्धान्तों का प्रचार किया।

जान मिल्टन का जन्म सन् १६०८ में लन्दन नगर में हुआ था और उसके पिता ने उसकी शिक्षा के लिये बहुत अच्छा प्रवन्ध किया था। चौवीस वर्ष की आयु में उसने बी० ए० की डिग्री प्राप्त की। मिल्टन प्यूरिटन सिद्धान्तों का कट्टर अनुयायी था, इसलिये अपने पिता की इच्छा होते हुए भी ऐंग्लिकन चर्च में उसने नौकरी नहीं की। गृह-युद्ध काल में उसने राजनैतिक विषयों की ओर अपना ध्यान दिया। धार्मिक, राजनैतिक तथा सामाजिक स्वतन्त्रता पर उसने कुछ निवन्ध भी लिखे। चार्ल्स प्रथम के वध के समर्थन पर भी उसने एक लेख लिखा। इस प्रकार उसने अपने लेखों द्वारा क्रामवेल तथा प्रजा-तन्त्र सरकार का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया और उसे एक उच्च पद भी प्रदान किया गया। वह प्यूरिटन पक्ष लेकर अपने लेखों द्वारा क्रामवेल की नीति का समर्थन करता रहा। अधिक लिखने-पढ़ने के कारण उसकी आँखें वेकार हो गईं। चार्ल्स द्वितीय के राजा होने पर वह एकान्त जीवन व्यतीत करने लगा। अब उसने अपनी प्रसिद्ध कविताओं (Paradise Lost and Paradise Regained) की रचना की जिसके कारण अँग्रेज़ी साहित्य में उसका नाम अमर हो गया। सन् १६७४ में यह प्रसिद्ध कवि परलोक सिधारा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस काल में विज्ञान में भी विशेष उन्नति हुई। विज्ञान के क्षेत्र में सबसे प्रसिद्ध नाम आइज़क न्यूटन (Sir Isaac Newton) का है, जिसने पृथ्वी के आकर्षण-शक्ति के सिद्धान्त (Law of Gravitation) को सिद्ध किया। विज्ञान की उन्नति के लिए सन् १६६२ में एक संस्था स्थापित हुई, जो रायल सोसाइटी आफ़ लन्दन (Royal Society of

जान मिल्टन

London) के नाम से प्रसिद्ध है और जिसका आज-कल भी संसार के वैज्ञानिक-क्षेत्र में बड़ा उच्च स्थान है।

स्टुअर्ट काल में कई समाचार-पत्र भी निकलने लगे। सबसे पहला समाचार-पत्र चार्ल्स प्रथम के राज्य-काल में निकला था। चार्ल्स द्वितीय के राज्य-काल में समाचार-पत्रों पर कई रुकावटें लगा दी गईं, परन्तु उसके राज्य-काल में सरकारी तथा अन्य महत्त्व-पूर्ण समाचार प्रकाशित करने के लिये

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरकार की ओर से "लन्दन गज़ट" नाम का पत्र निकलना आरम्भ हुआ। विलियम के राज्य-काल से कई साप्ताहिक पत्र भी निकाले गये, और उनमें सबसे प्रसिद्ध "स्पेक्टेटर" (Spectator) नाम का पत्र एडीसन (Addison) तथा स्टील (Steele) नामक दो विद्वानों के सम्पादन में निकला था। उस पत्र में उस समय के रीति-रिवाज तथा अनेक प्रचलित विषयों पर नोंक-झोंक तथा टिप्पणी की जाती थी। सन् १६६५ में "पोस्टबोय" (Postboy) नामक दैनिक समाचार-पत्र का जन्म हुआ।

Exercises.

1. How was Scotland connected with English History during the Stuart Period ?
2. Trace the circumstances leading to the union of England and Scotland.
3. Give an account of England's relations with Ireland during the Stuart Period
4. What various religious parties existed in England during the Stuart Period ? Give a brief account of their rise and fall.
5. Describe briefly the causes of struggle between the King and the Parliament during the Stuart Period. What were the points at issue in this struggle ?
6. Describe briefly the development of British Colonies and trade in the seventeenth century.
7. Briefly narrate the general progress of life in the country during the Stuart Period.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

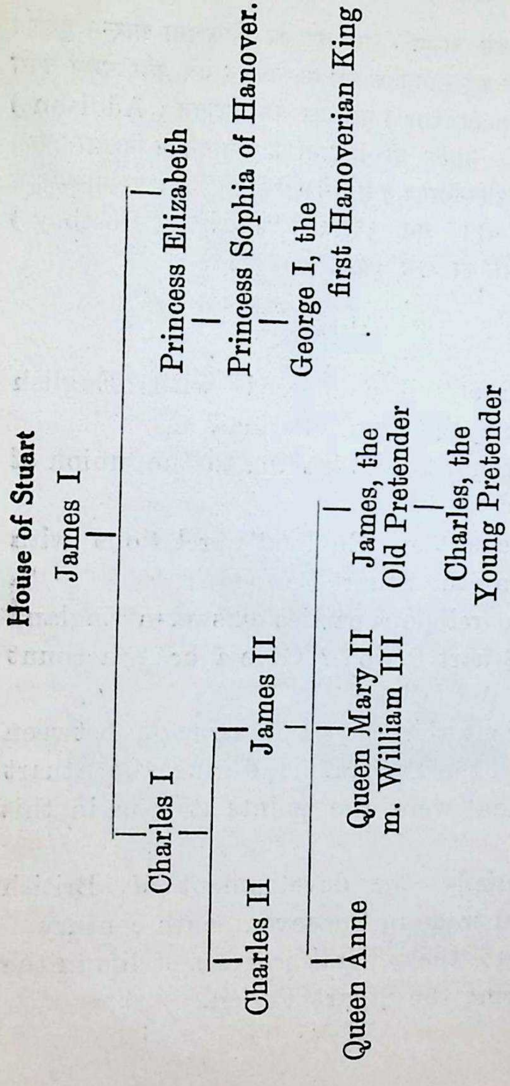

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्टुअर्ट वंश के शासक

सन् १६०३—१६२५	जेम्स प्रथम
,, १६२५—१६४६	चार्ल्स प्रथम
,, १६४६—१६६०	प्रजा-तन्त्र-काल
,, १६६०—१६८५	चार्ल्स द्वितीय
,, १६८५—१६८८	जेम्स द्वितीय
,, १६८८—१७०२	विलियम तृतीय
,, १७०२—१७१४	रानी ऐन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

U. P. HIGH SCHOOL PAPERS.

STUART PERIOD.

1925.

1. Sketch the career of Oliver Cromwell.
2. Relate the causes that led to the Glorious Revolution of 1688.

1926.

1. Explain the causes of the struggle between Charles I and Parliament.
2. How did Charles II gain the throne of England and what measures were taken in his reign to restore the supremacy of the Church of England?

1927.

1. State what you know of Oliver Cromwell and of his work as Lord Protector of England.
2. What did England gain by the treaty of Utrecht (1713)?

1928.

1. What were the causes of quarrel between King Charles I and his Parliament? How do you account for the success of Parliament in the Civil War?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Explain the circumstances which led to the expulsion of James II (Stuart) from England.

1929.

1. Sketch the career of Oliver Cromwell and describe the system of government during his Protectorate.
2. Who were the prominent leaders of the Parliamentary opposition to the Stuarts ? What were their demands ? How do you account for the failure of King's party.

1930.

1. Give a brief account of the Long Parliament. Why did it fail to settle the quarrel between Charles I and the people ?
2. Sketch the career of the Duke of Marlborough. Why is he called one of the greatest military men that England has produced ?
3. Briefly describe Cromwell's relations with the European Powers.

1931.

1. Give an account of the career and achievements of Oliver Cromwell.
2. What were the circumstances which led to the Glorious Revolution of 1688, and what were its effects on the English constitution ?
3. What did England gain by the Treaty of Utrecht (1713) ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1932.

1. Explain why the Tudor sovereigns of England were allowed to enjoy despotic authority, while James I and Charles I were opposed by their Parliaments.
2. Why is Cromwell considered a great ruler? Describe the system of government during his Protectorate.

1933.

1. Give a brief account of the growth of British commerce and colonies in the 17th century.
2. What do you understand by the 'Glorious Revolution' of 1688? Why did it take place? What constitutional changes did it bring about?
3. Explain the causes of hostility between England and France between 1688 and 1713. What advantages did England gain by the Peace of Utrecht?

1934.

1. Give a brief account of the reasons which led to the quarrel between Parliament and the first two Stuart Kings.
2. Describe the opposition offered to the succession of William III and Mary to the throne of England and show how it was overcome.

1935.

1. Write a brief account of the life of Oliver Cromwell.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Describe the relations of England with Holland and France during the reign of Charles II.
3. Who were the 'Dissenters? What disabilities were imposed on them and how were they subsequently removed?

1936.

1. What do you understand by the Restoration? In what way did it affect the power and influence of the King?
2. Describe how William and Mary became joint sovereigns of England. Give a brief description of their reign and clearly describe William's foreign policy.

1937.

1. Describe the career and character of Oliver Cromwell.
2. Explain the circumstances which led to the expulsion of James II from England.

1938.

1. Give an account of the reign of James I, laying special stress upon his relations with his Parliaments.

1939.

1. What were the causes which led to the Civil War in England?
2. Give an account of the character of Oliver Cromwell, and discuss his foreign policy.
3. What were the results of the Glorious Revolution

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

of 1688 on (a) the position of the monarch, and (b) the powers of Parliament ?

RAJPUTANA HIGH SCHOOL PAPERS.

1931.

1. Sketch the career of Oliver Cromwell.
2. Describe the causes of the Great Civil War.
3. Describe what you know of the Glorious Revolution of 1688. What were the results achieved by the Revolution ?

1932.

1. Describe briefly the relations between England and France during the 17th century.
2. What were the main reasons for the struggle between the Stuart Kings and their Parliaments.

1933.

1. Sketch briefly the career of Oliver Cromwell. Give your own estimate of his character and achievements.
2. What is the importance of the Glorious Revolution of 1688 ?

1934.

1. Give a brief account of the Great Civil War. Draw a map of England to illustrate your answer.
2. Account for the importance of the reign of William III in English history.

1935.

1. Explain why the Tudor Kings were allowed to have things much in their own way, whereas

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

James I and Charles I were opposed by their Parliaments.

2. Why was Oliver Cromwell considered to be a great ruler ? Describe the system of Government under him.

1936.

1. Explain the causes and results of the quarrel between Charles I and the Parliament.
2. Give a short account of the reign of Charles II.
3. Why is the revolution of 1688 called 'Glorious' ? What was its effect upon European politics ?

1937.

1. Give an account of the events that led to the restoration of Charles II.

1938.

1. Give your estimate of the character and policy of Charles I.
2. Why did England enter into the Spanish Succession War ? What were her gains ?

1939.

1. Sketch the career of Oliver Cromwell.
2. Explain the causes of the Glorious Revolution.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

TIME CHART OF THE STUART PERIOD—1603 to 1714.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

TIME CHART OF THE STUART PERIOD—1603 to 1714.

Period of Reign	Kings	Political	Social	Religious	Foreign Relations	Overseas
1603 to 1625	James I	Quarrel between the King and the Parliament. Divine Right of Kings. Unauthorised taxes and monopolies. Impeachment of Bacon.	Shakespeare's death 1616. Smoking became common.	Hampton Court Conference 1604. Puritans get troublesome. Authorised Version of the Bible 1611. Gunpowder Plot 1605.	James' daughter Elizabeth married to Frederic of Palatine. Spanish marriage plan. Thirty Years War. War with Spain. Bishops appointed in Scotland.	Jamestown in Virginia founded. Surat factory. Pilgrim Fathers go to America. Amboyna massacre.
1625 to 1649	Charles I	Tunnage and Poundage for one year only. Quarrel between the King and the Parliament. Unauthorised taxes. Forced loan.		Puritans getting stronger. Fear of Roman Catholicism. Archbishop Lauds religious policy criticised.	War with Spain and France. Sea Battles lost at Cadiz and La Rochelle. Peace with Spain and France. End of 30 Years War 1648.	Trading Stations in West Africa. Progress of East India Company. Madras factory

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Period of Reign.	Kings.	Political.	Social.	Religious.	Foreign Relations.	Overseas.
		Petition of Right 1628. Eleven Years absolute rule. Ship Money. John Hampden refused to pay Ship Money. Long Parliament meets 1640. Execution of Strafford. Irish Rebellion 1641. Unauthorised taxes, Ship Money etc. declared illegal. Star Chamber & Court of High Commission abolished. Grand Remonstrance. Attempt to arrest five members.		Prayer Book forced on Scotland. Bishops' Wars. Laud executed 1645.		

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

		trance. Attempt to arrest five members.				
		Great Civil War 1642-1649. Execution of Charles I 1649.				
1649 to 1660	Common Wealth and Cromwell.	House of Lords and King's office abolished. Drogheda and Wexford rebellions 1649. Scots defeated at Dunbar 1650. Prince Charles defeated at Worcester 1651. Rump dissolved 1653. Cromwell, Lord Protector. Military rule. Cromwell died 1658. Restoration 1660.	Amusements stopped. Jews allowed in England. Milton's writings.	Puritan worship throughout the Country. Anglicans in trouble. Religious liberty to all Protestants except the Anglicans. No music or decorations in churches.	Navigation Act 1651. War with Holland. England and France fight Spain. Dunkirk taken 1658.	St. Helena occupied 1651. Jamaica taken 1655.
1660 to 1685	Charles II	Tunnage & Poundage for life. Cavalier Parliament. Chief ministers—	Great Plague 1665. Great Fire 1666. Milton's writings.	Supremacy of the Anglican. Harsh laws against Dissenters.	Dunkirk sold to the French 1662. War with the Dutch.	New Amsterdom (New York) taken 1664.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Period of Reign.	Kings.	Political.	Social.	Religious.	Foreign Relations.	Overseas.
		Clarendon, Cabal, Danby. Titus Oates Plot. Habeas Corpus Act 1679. Exclusion Bill. Whigs in trouble. Rye House Plot. Many towns' charters modified. King nearly absolute.	John Bunyan wrote Pilgrim's Progress. Royal Society founded. Newton's Scientific researches. Luxurious life in the country.	Declaration of Indulgence. Test Act 1673. Catholics kindly treated. King died Catholic.	Secret Treaty of Dover. Charles II pensioner of Louis XIV.	Bombay in English hands 1660. Carolina settled. Pennsylvania founded 1682.
1685 to 1689	James II	Argyll's Rebellion 1685. Monmouth's Rebellion 1686. "Bloody Assize" of Justice Jeffreys in the West Country. William III invited. James II fled to France 1688.	Newspapers developed.	Catholics appointed on high posts. Declaration of Indulgence. Trial of Seven Bishops.	James II pensioner of Louis XIV.	

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Period of Reign.	Kings.	Political.	Social.	Religious.	Foreign Relations.	Overseas.
1689 to 1702	William III and Mary.	Power of Parliament increased. Bill of Rights 1689. Scottish Rebellion :— Killiecrankie, 1689. Glencoe, 1692. Londonderry, 1689. Boyne, 1690. Triennial Parliaments, 1694. Cabinet Govt. began. Act of Settlement —Freedom to Judges.	National Debt began. Bank of England founded 1694. Freedom to Press.	Toleration Act 1689.	War of English Succession. La Hogue 1692. Namur 1697. Treaty of Ryswick 1697. Grand Alliance against France.	Calcutta factory 1690. English and French quarrel in America
1702 to 1714	Queen Anne.	Act of Union 1707. Political Parties organized. Death of Queen Anne and end of Stuart Period.	Writings of Addison, Pope and Defoe.		War of Spanish Succession. Marlborough's bravery. Blenheim 1707. Ramillies. Oudenarde, Malplaquet 1709.	Gibralter and Minorca taken in the Mediterranean Sea 1713. Newfoundland and Nova scotia taken in America 1713.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हनोवर काल

सन् १७१४ से वर्तमान काल तक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सत्ताईसवाँ परिच्छेद

हनोवर काल की विशेषताएँ

जिस प्रकार ट्यूडर काल की मुख्य विशेषता देश में शान्ति स्थापन तथा धर्म-सुधार है, और स्टुअर्ट काल की मुख्य विशेषता राजा तथा पार्लियामेण्ट का संघर्ष और राजनैतिक आन्दोलन है; उसी प्रकार हनोवर काल की मुख्य विशेषता यह है कि इसमें ब्रिटिश साम्राज्य ने वर्त्तमान रूप धारण किया और कैबिनट (Cabinet) द्वारा शासन-संचालन की उन्नति हुई। हनोवर काल की मुख्य विशेषताओं का नीचे उल्लेख किया जाता है।

मन्त्रियों का काल—

ट्यूडर तथा स्टुअर्ट काल में राजनैतिक क्षेत्र का मुख्य व्यक्ति राजा होता था; परन्तु हनोवर काल में यह स्थान प्रधान मन्त्री (Prime Minister) को प्राप्त हुआ। जैसे अब तक राजा शासन-प्रबन्ध करता था, और मन्त्री उसको परामर्श देते थे, उसी प्रकार अब शासन-प्रबन्ध प्रधान मन्त्री के हाथ में आ गया, और राजा का कार्य केवल परामर्श देने का रह गया। हनोवर काल में भी जार्ज तृतीय ने एक बार खोई हुई राजकीय शक्ति को पुनः प्राप्त करने का प्रयत्न किया, परन्तु थोड़े-से काल के अतिरिक्त उसका प्रयत्न सफल न हो सका, और स्वयं उसको भी फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति आरम्भ होते ही मन्त्रि-मण्डल का आश्रय लेना पड़ा। मन्त्रि-मण्डल की मुख्य-मुख्य विशेषताएँ तथा उनका वर्त्तमान रूप हनोवर काल ही में निर्धारित हुआ। अब राजा के स्थान पर प्रधान-मन्त्री ही पर देश की समस्त राजनीति निर्भर है, और इसीलिये हनोवर काल मन्त्रियों का काल कहलाता है।

• Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रजा के अधिकार—

स्टुअर्ट-काल के अन्त तक यह निश्चय हो चुका था कि पार्लियामेण्ट शासन-विधान का एक प्रधान अंग है, और जिन राजाओं ने उसके अधिकारों में हस्तक्षेप किया था वे उसका पूरा परिणाम भोग चुके थे। परन्तु पार्लियामेण्ट अभी जनता की वास्तविक प्रतिनिधि-सभा न थी, क्योंकि केवल थोड़े से ही लोगों को वोट देने का अधिकार प्राप्त था। बड़े-बड़े ज़मींदार तथा लार्ड अपने प्रभाव तथा धन के बल पर पार्लियामेण्ट में पूर्ण अधिकार रखते थे, और मध्य श्रेणी तथा ग़रीबों के अधिकारों की वे तनिक भी परवा न करते थे। प्रजा के इन अधिकारों के लिये अठारहवीं शताब्दी में बड़े-बड़े आन्दोलन होते हैं, जिसके परिणामस्वरूप उन्नीसवीं सदी में लोक-सभा की निर्वाचन-पद्धति के दोष दूर करने के लिये कई सुधार-नियम (Reform Bills) बनाये जाते हैं। फिर सन् १९११ में लार्ड-सभा भी लोक-सभा के अधीन हो जाती है। इस प्रकार इंगलैंड की लोक-सभा पूर्ण रूप से जनता की प्रतिनिधि-सभा हो जाती है, और शासन पर उसी के चुने हुए मन्त्रियों का पूर्ण अधिकार होने से देश में प्रजा-तन्त्र-राज्य वास्तविक रूप में स्थापित होता है।

व्यावसायिक तथा व्यापारिक उन्नति—

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में इंगलैंड की आर्थिक स्थिति में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ। पुराने ढंग से खेती करने का काल समाप्त हुआ, और वैज्ञानिक उपायों का प्रयोग प्रारंभ हुआ। इसी काल में कपड़े के व्यवसाय में बड़ी भारी उन्नति हुई, और ग्रामों में जो चर्खों तथा करघों द्वारा कपड़ा तैयार होता था उसका भी काल समाप्त हुआ। अब नई-नई मशीनों का आविष्कार हुआ, जिसके परिणाम-स्वरूप देश में कपड़ा बनाने के बड़े-बड़े कारखाने स्थापित हुए। इसके अतिरिक्त लोहे की वस्तुओं तथा चीनी के बर्तन इत्यादि बहुत-सी वस्तुएँ भी कारखानों में ही तैयार होने लगीं। देश में नई-नई पक्की सड़कें, लोहे के पुल तथा नहरें भी बनाई गईं। अब इंगलैंड को भारतवर्ष से कपड़ा मँगाने की आवश्यकता न रही, और कपड़ा इत्यादि बहुत-सी वस्तुएँ स्वयं इंगलैंड दूसरे देशों को भेजने लगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

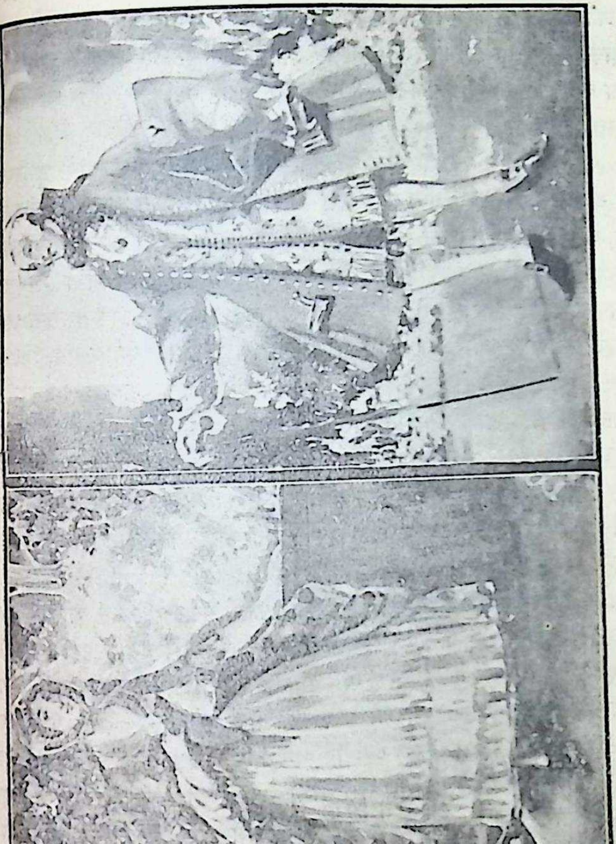

अठारहवीं शताब्दी के स्त्री और पुरुष और उनका पहनावा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस उन्नति का फल यह हुआ कि इंगलैंड एक शक्तिशाली देश हो गया और उसकी धन-सम्पत्ति बढ़ गई। उन्नीसवीं शताब्दी में रेल, भाप से चलने वाले जहाज़, बिजली, मोटर और वायुयान के आविष्कारों ने तो इंगलैंड के व्यापार तथा व्यवसाय को आश्चर्यजनक सीमा पर पहुँचा दिया।

सामाजिक उन्नति—

परन्तु इन नये-नये परिवर्तनों ने बहुत-सी सामाजिक समस्यायें उपस्थित कर दीं। व्यावसायिक क्रान्ति के कारण मज़दूरों की दशा बड़ी शोचनीय हो गई, और ऐसा प्रतीत होता था कि इंगलैंड की अधिकांश जन-संख्या निर्बल हो जायगी और उनके हृदय से आत्मबल जाता रहेगा। अन्त में कुछ दयावान् व्यक्तियों के अनुरोध से धीरे-धीरे पार्लियामेण्ट का ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ और मज़दूरों की रक्षा के लिये कई नियम बनाये गये, जिसके परिणाम-स्वरूप मज़दूरों को भी अँग्रेज़ी समाज में एक अच्छा स्थान प्राप्त हुआ। इसी काल में लोगों की शिक्षा की ओर भी राजनीतिज्ञों का ध्यान आकर्षित हुआ। उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल तक देश की अधिकांश जनता शिक्षा का कोई उचित प्रबन्ध न होने के कारण अन्धकार में पड़ी हुई थी, और इसी कारण उसे अपने अधिकारों का ज्ञान भी नहीं था। देश के अहोभाग्य से सन् १८७० में ग्लेडस्टन (Gladstone) के मंत्रित्व काल में शिक्षा का प्रचार आरंभ हुआ, और केवल पचास वर्ष के भीतर विद्या की इतनी उन्नति हुई कि देश का बच्चा-बच्चा शिक्षित दिखाई पड़ने लगा। ऊपर कहे हुए सुधारों के अतिरिक्त और भी कई सामाजिक सुधार हुए। इसी काल में कुछ लोगों पर से जो धर्म के कारण थोड़े बहुत राजनैतिक बंधन थे वे भी हटा दिये गये। दास-व्यापार बन्द कर दिया गया और दासों को पूर्ण स्वतन्त्रता मिल गई, और बेकारों तथा दरिद्रों की रक्षा के हेतु भी कुछ नियम बनाये गये। संक्षेप में इस काल में हर प्रकार की सामाजिक उन्नति हुई।

परराष्ट्र नीति—

इस काल में इंगलैंड ने यूरोप के राजनैतिक क्षेत्र में भी एक उच्च स्थान प्राप्त किया। स्टुअर्ट-काल के अन्तिम भाग में यह बतलाया जा चुका

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

है कि विलियम तृतीय तथा मार्लबरो ने फ्रान्स के राजा लुई चौदहवें का मान घटाकर विदेशों में इंगलैंड की खोई हुई स्थिति को फिर से प्राप्त किया। हनोवर काल में हम देखेंगे कि अपनी जल-शक्ति की बदौलत इंगलैंड फ्रान्सिसियों तथा नेपोलियन के दाँत खट्टे कर देता है, और पिछले यूरोपीय महान् युद्ध में इसी जल-शक्ति की बदौलत जर्मनी को भी नीचा देखना पड़ा। यूरोपीय घटनाओं के सम्बन्ध में इंगलैंड ने विशेषतया "समान शक्ति" की नीति (Balance of Power) का ही आश्रय लिया है। उसकी सदा

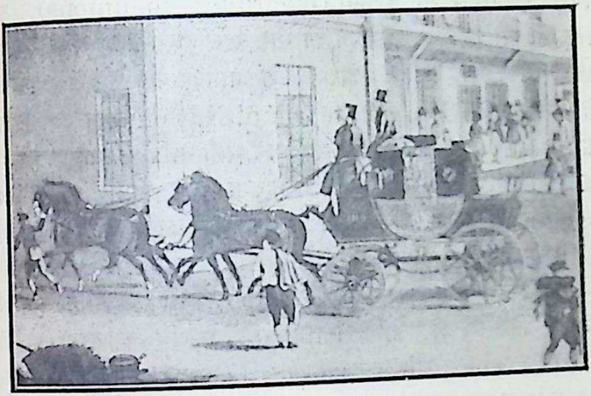

अठारहवीं शताब्दी की यात्रा करने की गाड़ी

यही नीति रहती है कि यूरोप में कोई देश इतना शक्तिशाली न हो जिससे वहाँ की "समान शक्ति" डांवाडोल हो जाय। इसी उद्देश्य से इंगलैंड ने रूस देश के राजा ज़ार (Czar) को अपनी शक्ति बढ़ाने से रोक दिया, और टर्की को नष्ट होने से बचाया।

साम्राज्य की उन्नति—

हनोवर काल में ब्रिटिश साम्राज्य की दिन-प्रति-दिन उन्नति होती गई। इस साम्राज्य की नींव सोलहवीं शताब्दी की व्यापारिक यात्रायें तथा सत्रहवीं शताब्दी के उपनिवेशों द्वारा पड़ चुकी थी। हनोवर काल के प्रारम्भिक भाग में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अमेरिका के अँग्रेज़ी उपनिवेश स्वतन्त्र हो गये, परन्तु उन्नीसवीं शताब्दी में यह हानि कई प्रकार से पूरी हो गई। नेपोलियन के युद्धों के पश्चात् अपनी जल-शक्ति के भरोसे अँग्रेज़ों ने भूमण्डल के भिन्न-भिन्न भागों में बड़े-बड़े उपनिवेश बसाये और पहले स्थापित किये हुए उपनिवेशों को उन्नति दी। दक्षिण अफ्रीका, आस्ट्रेलिया, न्यूज़ीलैंड, कनाडा, न्यू फाउंडलैंड इत्यादि उपनिवेश उन्नति पाकर अब पृथक् प्रदेश बन गये, और ब्रिटेन की सरकार ने इनको अपना शासन-प्रबन्ध स्वतन्त्रता पूर्वक करने की भी आज्ञा दे दी। आजकल यह उपनिवेश "स्वतन्त्र प्रदेशों" (Self Governing Dominions) के नाम से प्रसिद्ध हैं, और ब्रिटिश साम्राज्य का भाग रहते हुए भी वह अपना शासन-सञ्चालन स्वयं करते हैं। इस प्रकार ब्रिटिश साम्राज्य का रूप अब "स्वतन्त्र प्रदेशों का समूह" (Commonwealth of Nations) हो गया है और ब्रिटिश-छत्र की रक्षा में उसके भिन्न-भिन्न भाग भली भाँति उन्नति कर रहे हैं।

इसी काल में अँग्रेज़ों ने भारतवर्ष में इतना बड़ा साम्राज्य फैलाया कि वह जन-संख्या के विचार से ब्रिटिश साम्राज्य का सबसे प्रधान अंग माना जाता है। भारतवर्ष में भी अँग्रेज़ पहले-पहल केवल व्यापार करने के लिए पहुँचे थे। परन्तु व्यापार ही के साथ साथ इस काल में अवसर पाकर उन्होंने देश के राजनैतिक बखेड़ों में भाग लेना प्रारंभ किया, जिसके द्वारा धीरे-धीरे उनकी शक्ति बढ़ती गई, और उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य काल तक उन्होंने नीति-निपुणता से समस्त देश पर अपना अधिकार जमा लिया।

स्वतन्त्र प्रदेशों तथा भारतवर्ष के अतिरिक्त ब्रिटिश साम्राज्य में आजकल और भी बहुत-से छोटे छोटे उपनिवेश सम्मिलित हैं, जिनके कारण अँग्रेज़ जाति का राज्य चारों ओर फैला हुआ है, और ब्रिटिश साम्राज्य में आजकल समस्त भूमण्डल का चौथाई भाग सम्मिलित है।

Exercises

1. Enumerate the chief characteristics of the Hanoverian Period.
2. State in what ways the Hanoverian Period marks the highest water level of the growth of the English Nation.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अट्ठाईसवाँ परिच्छेद

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय

सन् १७१४	जार्ज प्रथम का राज्याभिषेक
,, १७१५	प्रथम जेकोबाइट विद्रोह
,, १७२१	वालपोल के मंत्रित्व का प्रारंभ
,, १७२७	जार्ज द्वितीय का राज्याभिषेक
,, १७४२	वालपोल का पतन
,, १७४०—४८	आस्ट्रिया के उत्तराधिकार का युद्ध
,, १७४५	अन्तिम जेकोबाइट विद्रोह
,, १७५६—६३	सप्तवर्षीय युद्ध
,, १७५७—६१	विलियम पिट युद्ध-मंत्री
,, १७६०	जार्ज द्वितीय की मृत्यु

जार्ज प्रथम—

सन् १७१४ में "उत्तराधिकार-निर्णय" के अनुसार हनोवर की रानी सोफ़िया का पुत्र "जार्ज प्रथम" के नाम से ५४ वर्ष की आयु में इंगलैंड का राजा हुआ; और इस प्रकार इंगलैंड में हनोवर वंश की स्थापना हुई। जार्ज प्रकृति का क्रोधी था; उसने अपनी रानी को ताले में बन्द कर दिया था और अपने पुत्र जार्ज द्वितीय से वह बोलता तक नहीं था। उसके शरीर की आकृति ऐसी नहीं थी कि दूसरों को वह अपनी ओर आकर्षित भी कर सकता। इस कारण वह देश में लोक-प्रिय नहीं हो सका। जर्मन होने के कारण वह अँग्रेज़ी भाषा तथा अँग्रेज़ी राजनियमों से परिचित न था और स्वाभाविक रूप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

से उसे अँग्रेज़ी शासन-संचालन में भी विशेष रुचि न थी। अतः उसने शासन का भार मंत्रियों ही पर छोड़ दिया, जिसके कारण देश में नियमानुमोदित शासन की नींव दृढ़ होने की और भी प्रबल संभावना हो गई। टोरी-दल के विषय में वह जानता था कि वह पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंशजों के समर्थक हैं, इस कारण उसने विग-दल वालों ही को अपना विश्वासपात्र बनाया, और उसके राज्यकाल के समय से विग-दल की मंत्रि-मण्डल में

जार्ज प्रथम

प्रधानता और भी प्रबल हो गई। बोलिंगब्रुक, जो स्टुअर्ट वंश का पक्षपाती था, अभियोग के भय से फ्रान्स भाग गया। जार्ज का विशेष ध्यान हनोवर ही की ओर रहता था और अँग्रेज़ी राजनीति पर उसका कोई व्यक्तिगत प्रभाव न पड़ सका।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जार्ज द्वितीय—

सन् १७२७ में जार्ज प्रथम की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र "जार्ज द्वितीय" के नाम से ४५ वर्ष की आयु में राजसिंहासन पर बैठा। जार्ज

जार्ज द्वितीय

द्वितीय को थोड़ा बहुत अँग्रेज़ी भाषा और देश के राजकार्य का थोड़ा बहुत ज्ञान हो गया था, और वीर योद्धा होने के कारण कई अवसरों पर उसने स्वयं इंगलैंड के युद्धों में भाग लिया था। परन्तु अन्य विषयों में वह अपने पिता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की भाँति अपने विग मंत्रियों ही के भरोसे रहता था। उसको भी शासन-कार्य बहुत कुछ उन्हीं की सलाह पर छोड़ना पड़ा। अपने पिता की भाँति उसका ध्यान भी हनोवर की ओर लगा रहता था।

प्रथम जेकोबाइट विद्रोह १७१५—

जार्ज प्रथम के राजा होने के अगले ही वर्ष नए राजवंश के विरुद्ध एक भयंकर विद्रोह आरम्भ हुआ। वह विद्रोह पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय के वंशजों के समर्थकों ने खड़ा किया था, जो इतिहास में जेकोबाइट दल (Jacobites) के नाम से प्रसिद्ध है, क्योंकि लैटिन भाषा में "जेम्स" शब्द के स्थान पर "जेकोबस" शब्द का प्रयोग होता है। जेकोबाइट विद्रोहियों ने जेम्स द्वितीय के पुत्र "जेम्स एडवर्ड" को, जो इतिहास में "ओल्ड प्रीटेण्डर" के नाम से प्रसिद्ध है राजा बनाना चाहा, और उसको विशेष सहायता स्काटलैंड तथा फ्रान्स से मिली। टोरी-दल के मुख्य नेता बोलिंगब्रुक ने, जो इस समय फ्रान्स में था, जेम्स एडवर्ड का पक्ष लेकर एक षड्यन्त्र रचा। स्काटलैंड वाले तो स्टुअर्ट वंश को अपना प्राचीन राजवंश मानते थे, और फ्रान्स ने राजा लुई चतुर्दश के वहाँ का राजा होने के कारण इस दल का साथ दिया। इंगलैंड के उत्तरी प्रान्तों में टोरी-दल के दो नेताओं ने नये वंश के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, अन्त में लंकेशायर प्रान्त के प्रेसटन (Preston) नामक स्थान पर सरकारी सेना ने परास्त किया और जेकोबाइट दल का प्रयत्न इगलैंड में इस प्रकार निष्फल हुआ। स्काटलैंड में अर्ल-आफ़-मार (Earl of Mar) ने लगभग १०,००० पहाड़ियों की सेना तैयार कर रक्खी थी, परन्तु सरकारी सेना ने शेरिफमूर (Sheriffmuir) की लड़ाई में उसे भी खदेड़ दिया। कुछ दिन पश्चात् जेम्स एडवर्ड स्वयं स्काटलैंड आया और कुछ पहाड़ी विद्रोही उसके साथ हो लिये। परन्तु विद्रोहियों का प्रयत्न सफल न हो सका और पहाड़ी सेना शीघ्र ही तितर-बितर कर दी गई। इसी बीच में लुई चतुर्दश की—जिसकी सहायता का जेकोबाइट दल को विशेष भरोसा था—मृत्यु हो गई। एडवर्ड डीलडौल का सुन्दर नहीं था और न उसमें अपनी सेना को प्रोत्साहित करने का गुण ही था। दूसरे वह केथलिक-मत को त्यागने के लिये तैयार नहीं था; अतः उसे यहाँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहायता न मिल सकी, और एक ही मास के भीतर उसे फ्रान्स वापिस भाग जाना पड़ा। उसके जाने के बाद विद्रोह शीघ्र ही शान्त हो गया। विग मंत्रियों ने विद्रोहियों के नेताओं को कड़े-कड़े दण्ड दिये और कइयों का वध किया गया।

इस विद्रोह से टोरी-दल वालों की बहुत कुछ सहानुभूति थी, जिसके कारण वे देश में और भी अधिक बदनाम हो गये। जब तक जेकोबाइट विद्रोह का भय रहा, विग-दल का पार्लियामेण्ट में जोर रहा और टोरी-दल वाले अपनी शक्ति न बढ़ा सके। विग-दल ने अपनी शक्ति दृढ़ करने के लिए सन् १७१६ में एक नियम (Septennial Act) बनाया, जिसका यह आशय था कि लोक-सभा का निर्वाचन अब से तीन वर्ष के स्थान पर सात वर्ष में हुआ करे। इस नियम से यह भय न रहा कि कहीं टोरी-दल पार्लियामेण्ट के आगामी चुनाव में, जो इसी वर्ष होने वाला था, बलवान हो जाय। अब आगामी सात वर्ष में विग-दल ने अपनी शक्ति को खूब दृढ़ कर लिया। लगभग २०० वर्ष तक इस नियम में कोई परिवर्तन नहीं हुआ और फिर सन् १९११ में पार्लियामेण्ट की अवधि सात वर्ष के स्थान में पाँच वर्ष रह गई।

अन्तिम जेकोबाइट विद्रोह—

इसके पश्चात् जेकोबाइट दल ने कई छोटे-छोटे विद्रोह किये, परन्तु विग-मन्त्रियों के दृढ़ प्रबन्ध के कारण वे सब विफल रहे। सन् १७४५ में इस दल का अन्तिम विद्रोह हुआ जिसने शीघ्र ही भयंकर रूप धारण कर लिया। ओल्ड प्रीटेण्डर की मृत्यु हो चुकी थी और इस बार जेकोबाइट दल ने उसके पुत्र चार्ल्स एडवर्ड को—जो इतिहास में "यंग प्रीटेण्डर" के नाम से प्रसिद्ध है—राजा बनाना चाहा। चार्ल्स सुन्दर तथा प्रसन्न-चित्त युवक था, और स्काटलैंड की पहाड़ी जातियों में वह इतना सर्वप्रिय था कि उन्होंने बड़े जोश से उसके पक्ष का समर्थन किया। अँग्रेज़ी सेना इस समय आस्ट्रिया के उत्तराधिकार के युद्ध में फँसी हुई थी। उधर फ्रान्स से भी उसे सहायता मिलने की आशा थी। अच्छा अवसर समझ कर वह स्काटलैंड के तट पर आ उतरा। शीघ्र ही उसे सहायता मिल गई और उसने एडिनबरा पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिकार किया। वह एडिनबरा (Edinburgh) आया और वहाँ से चल कर उसने एक अँग्रेज़ी सेना को प्रिसटनपेंस (Prestonpans) के स्थान पर परास्त किया। फिर वहाँ से चल कर वह इंगलैंड की ओर बढ़ा और उसकी सेना डरबी (Derby) नगर तक पहुँच गई जो लन्दन से कुल १२५ मील है। उसे आशा थी कि इंगलैंड में उसे काफी सहायता मिलेगी, परन्तु निराश होकर उसे स्काटलैंड लौटना पड़ा। जार्ज द्वितीय ने अपने पुत्र ड्यूक-आफ़-कंबरलैंड (Duke of Cumberland) को उसका सामना करने के लिये भेजा जिसने स्काटलैंड जाकर चार्ल्स को आ घेरा। पहले तो कंबरलैंड फालकर्क (Falkirk) के स्थान पर परास्त हुआ, परन्तु शीघ्र ही उसने क्लोडन (Culloden) के युद्ध में विद्रोहियों के विरुद्ध भारी विजय प्राप्त की। ऐसी अवस्था में यंग प्रीटेण्डर को कुछ दिनों स्काटलैंड भ्रमण करके फ्रान्स लौट जाना पड़ा, और उसके समर्थकों को इस बार और भी अधिक कड़े दण्ड दिये गये। अब कंबरलैंड ने पहाड़ी जातियों के प्रति बड़ी कठोरता का व्यवहार किया, और इस कारण वह वहाँ "कसाई कंबरलैंड" के नाम से बदनाम हुआ। लड़ाई के पश्चात् कुछ पहाड़ी सैनिक एक लकड़ी के खलियान में जा छिपे थे। कंबरलैंड ने सबको घेर कर वहाँ आग लगवा दी और सब जल कर भस्म हो गये। स्काटलैंड की पहाड़ी जातियों (High Landers) के हथियार छीन लिये गये और अँग्रेज़ों को फ्रान्स से पत्र-व्यवहार करने की रोक-टोक कर दी गई। इसके पश्चात् जेकोबाइट दल को फिर कोई विद्रोह करने का साहस न हो सका, और थोड़े समय में वह दल छिन्न-भिन्न हो गया। पहाड़ी जातियाँ भी धीरे-धीरे शान्तिपूर्वक रहने लगीं, और थोड़े समय के पश्चात् वह ब्रिटिश सेना में भरती होकर अपनी वीरता तथा साहस का परिचय देने लगीं।

जेकोबाइट दल की विफलता--

जेकोबाइट दल के तीन मुख्य विद्रोह हुए। विलियम तृतीय के राज्य-काल में उन्होंने पदच्युत राजा जेम्स द्वितीय को फिर से राजा बनाना चाहा; जार्ज प्रथम के राज्य-काल में उन्होंने जेम्स द्वितीय के पुत्र ओल्ड-प्रीटेण्टर को राजा बनाने की चेष्टा की; और अन्तिम बार जार्ज द्वितीय के राजत्व काल में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनका यह लक्ष्य था कि जेम्स द्वितीय के पोते यंग-प्रीटेण्डर को राज-सिंहासन पर बैठाया जाय। परन्तु ये सब प्रयत्न निष्फल रहे और जेकोबाइट दल का मनोरथ पूरा न हो सका। इस दल के समर्थक अधिकतर केथलिक थे जो

राजकुमार चार्ली

इंगलैंड में इस समय इतने बदनाम हो चुके थे कि उनके प्रति बहुत ही कम लोगों की सहानुभूति थी। इस दल वालों ने एक भूल यह की कि फ्रान्स के राजा लुई चतुर्दश को अपना मित्र तथा सहायक बनाया। इसका परिणाम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यह हुआ कि इंगलैंड-निवासियों की रही-सही सहानुभूति भी जाती रही। वे इंगलैंड के शत्रु की सहायता लेने वाले इस दल से घृणा करने लगे। अन्त में लुई चतुर्दश की मृत्यु के पश्चात् उनको फ्रान्स से भी सहायता प्राप्ति का सहारा न रहा। जो कुछ सहायता उनको आयरलैंड से मिलती थी, वह भी इस कारण कम होने लगी कि वहाँ के निवासी स्वयं अपने आन्तरिक बखेड़ों में फँसे हुए थे। केवल स्काटलैंड से जेकोबाइट दल को हार्दिक सहायता मिली, क्योंकि स्टुअर्ट वंश स्काटलैंड का राजवंश था और वहाँ की पहाड़ी जातियों में उनके प्रति अब तक राज-भक्ति बनी हुई थी। हनोवर राजाओं के विग मंत्रियों ने इन पहाड़ी जातियों के हथियार छीन कर उनकी शक्ति को इतना क्षीण कर दिया कि स्काटलैंड से भी सहायता के लाले पड़ गये। परिणाम यह हुआ कि जेकोबाइट दल के समर्थकों की संख्या दिन-प्रति-दिन घटती गई, और कुछ दिनों पश्चात् निराश होकर उन्होंने फिर कोई उपद्रव करने का साहस न किया।

विग-दल की प्रधानता तथा वालपोल

विग-दल का शक्ति-काल—

पहले दोनों हनोवर राजाओं के काल में विग-दल की देश में पूर्णतया प्रधानता रही। उनके राजनैतिक विरोधी अर्थात् टोरी-दल वाले जेकोबाइट पक्ष के समर्थक होने के कारण देश में इतने बदनाम हो गये थे कि न तो जनता ही उन पर विश्वास करती थी और न वे राजा ही के विश्वास-पात्र हो सकते थे। पार्लियामेण्ट के चुनावों में लगभग ५० वर्ष तक विग-दल वालों ही की तूती बोलती रही और मंत्रि-मण्डल भी उन्हीं के हाथ में रहा। इससे देश को लाभ ही हुआ, क्योंकि विग-दल वाले नियमानुमोदित शासन के समर्थक थे और उनके नेतृत्व में इस शासन की नींव दृढ़ होने का अच्छा अवसर मिला। इस काल में राजा की शक्ति पूर्णतया क्षीण हो गई, और अब से देश का शासन-कार्य पूर्णतया मंत्रियों द्वारा चलता रहा। पार्लियामेण्ट की लोक-सभा भी इसी काल में ब्रिटिश-शासन-प्रणाली का प्रधान अंग बन गई। लोक-सभा का इतना महत्त्व बढ़ गया कि मंत्रि-मण्डल उसकी सहायता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के बिना एक दिन भी कार्य नहीं कर सकता। विग नेताओं ने ५० वर्ष के शान्ति-काल में व्यापार-व्यवसाय को उन्नति देकर देश को इतना समर्थ बना दिया कि जब आगे चलकर उसे फ्रान्स के युद्धों में फंसना पड़ा तो वह उनका भार सफलता पूर्वक झेल सका।

दक्षिण सागर का बुलबुला—

युट्रेक्ट की संधि के अनुसार ब्रिटेन को दक्षिण अमेरिका से व्यापार करने के लिये प्रति वर्ष एक जहाज़ ले जाने का अधिकार मिल गया था। इस अधिकार का प्रयोग करने के लिए एक बड़ी भारी कम्पनी (South Sea Company) खोली गई, जिसको मंत्रियों ने वहाँ के व्यापार का सर्वाधिकार दे दिया। इस कम्पनी में देशवासियों ने बड़े उत्साह से हिस्से मोल लिये, क्योंकि उनको विश्वास था कि उसको व्यापार में बहुत बड़ा लाभ होगा। साउथ-सी-कम्पनी की देखा देखी और भी अन्य कम्पनियाँ खुल गईं जो दक्षिणी सागर के अन्य प्रदेशों से व्यापार करेंगी। लोगों ने उनके भी हिस्से मोल लिये। कुछ कम्पनियाँ तो केवल लोगों को फँसाने के लिये खोली गईं थीं। कुछ दिनों तक तो अवश्य लाभ ही लाभ रहा और हिस्सों का मूल्य अन्धा धुन्ध बढ़ता चला गया, तुरन्त ही लोगों को अपनी भूल प्रतीत होने लगी और उन्होंने अपने हिस्सों को शीघ्र बेचने का प्रयत्न किया। हिस्सों का मूल्य बहुत गिर गया और सहस्रों लोग बरबाद हो गये। थोड़े ही समय पश्चात् सब कम्पनियों का दिवाला निकल गया और इस प्रकार सन् १७२० में "दक्षिण सागर का बुलबुला" (South Sea Bubble) फूट गया, जिससे देश को बड़ी आर्थिक विपत्ति का सामना करना पड़ा। लोगों ने मंत्रियों को दोषी ठहराया, क्योंकि साउथ-सी-कम्पनी को उन्होंने ही सर्वाधिकार दिया था। पार्लियामेण्ट ने मंत्रियों पर अभियोग चलाया। इस पर एक मंत्री ने आत्म-हत्या करली और एक के हृदय पर इतनी चोट बैठी कि वह मर गया।

वालपोल का मंत्रित्व—

दक्षिणी सागर की कम्पनियों का दिवाला निकलने पर जार्ज प्रथम ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वालपोल (Walpole) को अपना मुख्य मंत्री बनाया जो अपनी अर्थ-शास्त्र की निपुणता के लिये प्रसिद्ध था। उसने तुरन्त ही बैंक-आफ़-इंगलैंड की सहायता से जातीय-ऋण का कुछ भाग चुका कर प्रजा की अशांति को दूर किया। इस कारण उसका प्रभाव दिन-प्रति-दिन बढ़ता गया, और पूरे २१ वर्ष तक शासन की बागडोर उसी के हाथ में रही। जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय दोनों ने उसे ही अपना विश्वास-पात्र बनाया; और विग नेताओं में सबसे अधिक मान उसी ने प्राप्त किया था।

वालपोल की गृह-नीति—

वालपोल की शासन-नीति का मुख्य उद्देश्य देश में शान्ति स्थापित रखना था। व्यापार-व्यवसाय को उन्नति देकर वह देश को धन-धान्य से परिपूर्ण करना चाहता था। वह बड़ा चतुर और कर्त्तव्यशील था। शासन के प्रत्येक विभाग में खर्च की कमी करके उसने शासन का खर्च बहुत कम कर दिया था। उसके मंत्रित्व काल में न तो कोई महत्व-पूर्ण राज-नियम बनाये गये और न देश ने यूरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में कोई मान प्राप्त किया। वालपोल आन्दोलन से बहुत घबराता था और उसका सिद्धान्त था कि "सोते हुए कुत्तों को मत छेड़ो" (Let sleeping dogs lie)। वालपोल सुधारवादी तो था, परन्तु अपने सुधारों के लिए विरोध की अग्नि भड़काना उचित न समझता था, और इसीलिये वह बहुत सोच विचार कर कार्य करता था। अपनी आर्थिक नीति में वालपोल स्वतन्त्र व्यापार (Free Trade) का समर्थक था, और उसने धीरे-धीरे बहुत-सी व्यापारिक वस्तुओं पर कर कम कर दिया। विदेशों से आने वाले माल पर कर की चोरी रोकने के लिये उसने एक प्रस्ताव (Excise Bill) पार्लियामेण्ट में पेश किया, जिसका यह आशय था कि कर बन्दरगाह पर न लेकर दुकानों पर वसूल किया जाय जहाँ जाकर माल बिकता था। इस नियम का बड़ा विरोध हुआ, क्योंकि व्यापारियों को भय था कि राज-कर्मचारी गृहस्थों को तंग करेंगे, कारण कि उस समय बहुधा दुकानें घरों में ही थीं। विरोध को बढ़ते देख कर वालपोल ने अपनी शान्ति-प्रिय नीति के अनुसार इस प्रस्ताव को तुरन्त ही वापस ले लिया।

वालपोल का उपनिवेशों के व्यापार के प्रति बड़ा कठोर व्यवहार था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसने यह नियम बना दिया कि कच्चा माल उपनिवेशों से इंगलैंड के अतिरिक्त कहीं और न भेजा जा सके, और साथ ही साथ यह भी नियम कर दिया कि उपनिवेश वाले बहुत-सी बनी हुई वस्तुएँ केवल इंगलैंड ही से मँगावें। उस समय तो इसका कोई विशेष विरोध न हुआ, परन्तु आगे चलकर इस प्रकार के नियमों का बड़ा बुरा परिणाम निकला। परन्तु व्यापार के अतिरिक्त

राबर्ट वालपोल

वालपोल ने उपनिवेशों को लगभग सब बातों में स्वतन्त्रता दे रखी थी। जजों तथा गवर्नरों के वेतन के सम्बन्ध में आये दिन उपनिवेशों की जातीय-सभाओं से उनका झगड़ा होता रहता था। वालपोल ने इस झगड़े का निपटारा करने के स्थान में गवर्नरों और जजों को लिख भेजा कि वे जो कुछ उपनिवेशों से ले सकें लेलें और उनसे झगड़ा मोल न लें। इस कायरता के कारण उपनिवेश स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अपनी पुत्री मेरिया थेरिसा (Maria Theresa) को अपने समस्त रा की उत्तराधिकारिणी बना दिया था ; और इसके लिये उसने यूरोप के राष्ट्रों की अनुमति प्राप्त कर ली थी। परन्तु मेरिया के राज-सिंहासन पर बै ही आस-पास के राज्यों ने आस्ट्रिया का कुछ भाग दबा लेने का अ अवसर समझा। जर्मनी के प्रशा (Prussia) राज्य के प्रसिद्ध शास फ्रेड्रिक महान (Frederick, the Great) ने आस्ट्रिया के सिलेसि प्रान्त पर अधिकार जमा लिया और फ्रान्स ने भी आस्ट्रिया पर चढ़ाई की उधर बवेरिया के शासक ने, जो अपने आपको आस्ट्रिया का वास्तवि उत्तराधिकारी समझता था, आस्ट्रिया पर आक्रमण किया। इंगलैंड मेरिया थेरिसा के प्रति वैसे ही पूर्ण सहानुभूति थी, और फ्रान्स के इंगलैंड पुराना शत्रु होने के कारण तो अँग्रेज़ों का जोश और भी बढ़ गया। जा द्वितीय स्वयं सेना लेकर जर्मनी पहुँचा और उसने डेटिंजन (Dettingen) के स्थान पर फ्रान्स तथा प्रशा की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया। यह अन्तिम युद्ध था जिसमें एक अँग्रेज़ी राजा ने स्वयं देश से बाहर जाकर भाग लिया था। परन्तु फोन्टीनोय (Fontenoy) के युद्ध में अँग्रेज़ों की हार हुई। इसी बीच में भारतवर्ष तथा उत्तरी-अमेरिका के उपनिवेशों में भी जहाँ फ्रान्सीसी और अँग्रेज़ दोनों बसे हुए थे दोनों में युद्ध होने लगा। भारतवर्ष में डुपले ने मदरास पर अधिकार जमा लिया और उत्तरी-अमेरिका में अँग्रेज़ों ने लुईबर्ग (Louisburg) को फ्रान्सीसियों से छीन लिया। अन्त में सन् १७४८ में ऐलाशैपेल (Aix-la-Chapelle) के स्थान पर सन्धि हो गई, जिसके अनुसार मेरिया थेरिसा का उत्तराधिकार स्वीकृत कर लिया और जिसने युद्ध में जो कुछ जीता था वह सब लौटा दिया; परन्तु सलेसिया (Silesia) का प्रान्त फ्रेड्रिक के ही हाथ में रहा। यह युद्ध फ्रान्स और इंगलैंड के बीच में बढ़ते हुए औपनिवेशिक झगड़ों का केवल आरम्भ मात्र था।

सप्तवर्षीय युद्ध का आरम्भ—

थोड़े ही वर्षों पश्चात् यूरोप में एक भयंकर युद्ध और छिड़ गया जो, सप्तवर्षीय युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है। इस युद्ध का मुख्य कारण अँग्रेज़ों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा फ्रान्सीसियों का उपनिवेश तथा व्यापार के सम्बन्ध में पारस्परिक द्वेष था। उत्तरी अमेरिका में अँग्रेज़ों और फ्रान्सीसियों के उपनिवेश एक दूसरे से मिले हुए थे। फ्रान्सीसियों ने उत्तर में कनाडा और दक्षिण में लूसीनिया (Louisiana) के उपनिवेश स्थापित किये थे; और अब उन्होंने इनको मिलाने के आशय से अलेघनी (Alleghany) पर्वतमाला के दूसरी ओर एक दुर्ग-श्रेणी बनानी आरम्भ की। अँग्रेज़ उसको कभी सहन न कर सकते थे, क्योंकि उनके उपनिवेश अलेघनी-पर्वत तथा पूर्वी समुद्र-तट के बीच में बसे हुए थे। अँग्रेज़ों ने फ्रान्सीसियों के ड्युकेन (Duequesne) नामक प्रसिद्ध गढ़ पर अधिकार जमाने के लिये जेनरल ब्रेडक (Braddock) के साथ एक सेना भेजी, परन्तु उसको सफलता प्राप्त न हुई और ब्रेडक स्वयं मारा गया। इसके बाद फ्रान्सीसियों ने रूम सागर में माइनोरका (Minorca) के टापू पर—जो उस समय अँग्रेज़ों के अधीन था—आक्रमण किया। अँग्रेज़ों ने जहाज़ी अफ़सर बिंग (Admiral Byng) को इस टापू की रक्षा के लिये भेजा, परन्तु वह डर कर भाग आया; और अँग्रेज़ी सरकार ने कायरता के कारण उसे प्राण-दण्ड दिया। उधर भारतवर्ष में फ्रान्सीसी गवर्नर डुपले वहाँ के देशी-शासकों को अपने पक्ष में लेकर अँग्रेज़ों को करनाटिक से निकाल देना चाहता था। डुपले की नीति का अनुकरण करके अँग्रेज़ों ने भी देशी शासकों से मित्रता की। इस प्रकार अँग्रेज़ तथा फ्रान्सीसी पाँच वर्ष सन् १७४९ से सन् १७५४ तक आपस में लड़ते रहे।

इन घटनाओं के कारण फ्रान्स तथा इंगलैंड में अब स्पष्ट रूप से युद्ध की पूरी तैयारी थी और युद्ध भी छिड़ने का उन्हें एक बहाना मिल गया। प्रशा का राजा फ्रेड्रिक बड़ा महत्वाकांक्षी था और अपने राज्य को अधिक शक्तिशाली बना देना चाहता था। उधर मेरिया थेरिसा सलेसिया प्रान्त को वापिस लेने का प्रयत्न कर रही थी और इस उद्देश्य से उसने फ्रान्स तथा रूस से सन्धि कर ली। प्रशा के राजा फ्रेड्रिक ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लालच से इस बार इंगलैंड से मित्रता करने का यत्न किया। इंगलैंड ने भी यह सोच कर कि कहीं फ्रान्स हनोवर पर आक्रमण न कर दे फ्रेड्रिक से मित्रता कर ली। अब फ्रेड्रिक एक छोटे-से राज्य सेक्सनी (Saxony) पर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारण समुद्र पर इंगलैंड का प्रभुत्व स्थापित हुआ और फ्रान्स के आक्रमण का भी भय नहीं रहा। उधर वेस्ट-इन्डीज में भी फ्रान्स के कई द्वीपों पर अँग्रेज़ों ने अधिकार किया। अँग्रेज़ी जहाज़ी वेड़े ने फ्रान्सीसियों को समुद्र पर कई बार परास्त किया और उनको यूरोप ही में इतना तंग किया कि उनको अमेरिका के उपनिवेशों की रक्षा के लिए काफ़ी सेना भेजने का अवकाश न मिल सका।

इसी प्रकार यूरोप के रणक्षेत्र में भी फ्रान्स को नीचा देखना पड़ा। पिट ने फ्रेड्रिक को धन तथा सेना की सहायता देकर यूरोप के रणक्षेत्र का सारा भार उसी के हाथ में छोड़ा, और उसने इंगलैंड से सहायता पाकर फ्रान्स को रोज़वेक (Rossback) तथा मिंडन (Minden) के युद्धों में बुरी तरह परास्त किया। मिंडन की पराजय के कारण फ्रान्स को जर्मनी से पीछे हटना पड़ा।

भारतवर्ष में भी अँग्रेज़ों ने कई भारी विजय प्राप्त कीं। प्लासी के युद्ध के बाद बंगाल पर अँग्रेज़ों का अधिकार हो गया; और दक्षिणी भारत में अँग्रेज़ों ने वाण्डवाश (Wandewash) के युद्ध में फ्रान्सीसियों को बुरी तरह परास्त किया। इस प्रकार भारतवर्ष में भी फ्रान्सीसी शक्ति नष्ट हुई और अब वहाँ अँग्रेज़ों के पैर जम गये।

युद्ध का अन्त तथा पेरिस की सन्धि—

सन् १७६१ में स्पेन भी फ्रान्स की सहायता के लिये आ कूदा, परन्तु इंगलैंड ने उसे भी बुरी तरह परास्त किया। अन्त में सन् १७६३ में पेरिस की सन्धि के अनुसार सप्त-वर्षीय युद्ध का अन्त हुआ। इस सन्धि से इंगलैंड को बहुत लाभ हुआ। उत्तरी अमेरिका में कनाडा तथा फ्लोरिडा अँग्रेज़ों के अधीन हो गये; और भारतवर्ष में फ्रान्सीसियों को जो कोठियाँ वापस की गईं उनके विषय में यह ठहरा लिया गया कि अब से केवल व्यापार के काम में लाई जायँगी। इस प्रकार फ्रान्सीसियों की शक्ति भारतवर्ष तथा अमेरिका दोनों देशों में नष्ट हो गई और अँग्रेज़ों की शक्ति दोनों क्षेत्रों में पूर्णतया जम गई। यूरोप में भी इस युद्ध के पश्चात् इंगलैंड की गणना बड़े शक्तिशाली राज्यों में होने लगी, और इस समय से यह बिल्कुल स्पष्ट हो गया कि उपनिवेश

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

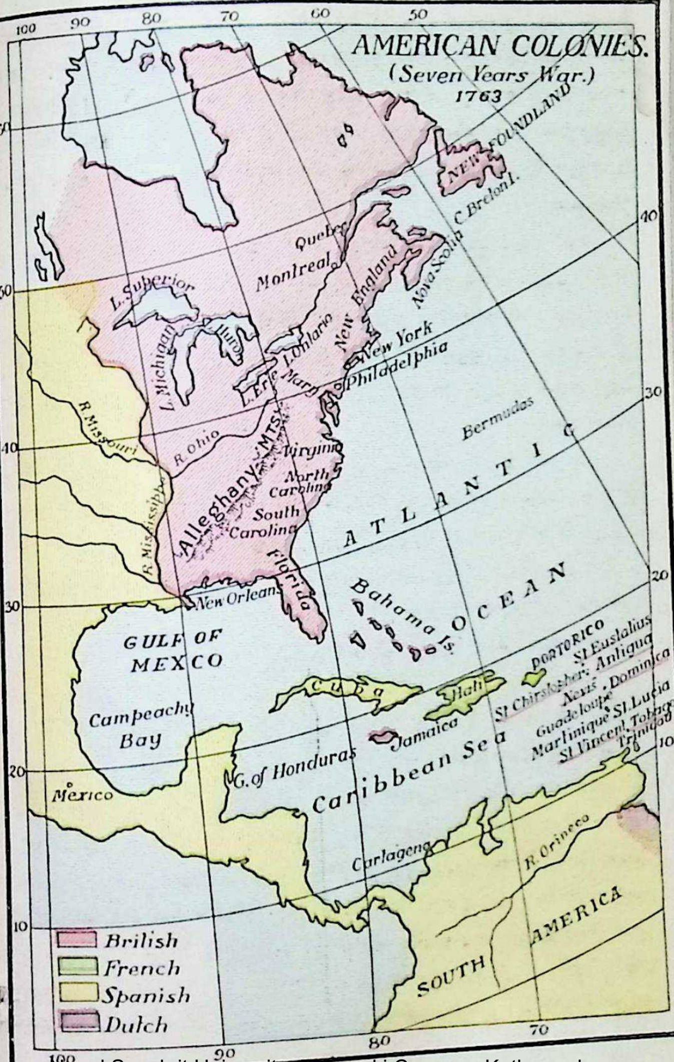

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थापित करने तथा व्यापारिक कोठियाँ बनाने में यूरोप का कोई अन्य देश इंगलैंड की बराबरी न कर सकेगा। इस युद्ध की विजय के पश्चात् इंगलैंड के सामने एक नई समस्या प्रस्तुत हो गई। फ्रान्सीसियों का भय हटते ही अँग्रेज़ी उपनिवेश स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे।

बड़ा पिट

विलियम पिट—

सप्त-वर्षीय युद्ध की सफलता का मुख्य श्रेय विलियम पिट ही को मिलना चाहिये। उसका राजनैतिक जीवन वालपोल के मंत्रित्व-काल में आरम्भ हुआ था। उसने कुछ नवयुवकों का एक दल बनाकर वालपोल की शान्ति-नीति का घोर विरोध किया। पिट का यश धीरे-धीरे बढ़ता गया और वह शीघ्र ही जनता का प्रेम-पात्र "ग्रेट कामनर" (Great Commoner) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। वालपोल के पतन के पश्चात् पिट इंगलैंड का सर्वश्रेष्ठ राजनीतिज्ञ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माना जाने लगा और सप्त-वर्षीय युद्ध के आरम्भ होते ही जार्ज द्वितीय ने उसको मंत्रि-मण्डल में एक स्थान दिया और युद्ध-संचालन का सब भार उसे सौंपा गया। प्रधान-मंत्री उस समय न्यूकासिल था; उसका मुख्य काम लोक-सभा में अपने समर्थकों की संख्या बढ़ाते रहना था; और शासन-कार्य का सम्पूर्ण भार अधिकतर पिट ही के हाथ में था और शासन के प्रत्येक विभाग में उसी की चलती थी और अन्य मंत्री उसकी आज्ञा का पालन करते थे।

पिट की युद्ध-नीति—

हम बतला चुके हैं कि पिट ही के युद्ध-मंत्री होने के काल से सप्तवर्षीय युद्ध का रूप बदला और अँग्रेज़ों को पराजय के स्थान पर विजय प्राप्त होनी आरम्भ हुई। पिट का यह अभिप्राय था कि फ्रान्स को यूरोप ही के युद्ध में इतना फँसा दिया जाय कि उसको अमेरिका तथा भारतवर्ष में अपनी शक्ति का पूर्ण उपयोग करने का अवकाश ही न मिल सके। इसलिये उसने प्रशा के राजा फ्रेड्रिक को धन तथा सेना से खूब सहायता दी, जिसके भरोसे उसने फ्रान्स को यूरोपीय युद्धों में बुरी तरह छकाया। यह पिट ही की योग्यता का परिणाम है कि अँग्रेज़ों ने सप्तवर्षीय युद्ध के प्रत्येक क्षेत्र में विजय प्राप्त की और अन्त में फ्रान्सीसियों को सब स्थानों में नीचा दिखाया। अब अमेरिका तथा भारतवर्ष में फ्रान्सीसियों का कोई अधिकार नहीं रहा, और ब्रिटिश-साम्राज्य ने बहुत उन्नति की।

पिट का पतन—

पिट को यह समाचार मिल चुका था कि स्पेन फ्रान्स की सहायता के लिए तैयार हो रहा है, अतः उसने चाहा कि स्पेन से भी युद्ध छेड़ दिया जाय। इसी समय जार्ज द्वितीय के मरने पर सन् १७६० में उसका पौत्र जार्ज तृतीय राजा हुआ। जार्ज तृतीय की यह इच्छा थी कि विग-दल वालों को मंत्रि-मण्डल से हटा कर टोरियों को मंत्री बनाया जाय, जिससे राज-पक्ष की फिर से शक्ति बढ़ सके। ऐसी स्थिति में पिट ने अपने पद से त्याग-पत्र दे दिया, और शीघ्र ही उसका सहकारी न्यूकासिल भी इसी प्रकार अलग हो बैठा। जब पेरिस की संधि द्वारा सप्तवर्षीय युद्ध समाप्त हुआ, उस समय पिट ने यह सम्मति प्रकाशित की कि फ्रान्स की शक्ति अभी पूर्णतया चूर्ण नहीं हुई, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इंगलैंड ने उसे कई प्रकार की व्यापारिक सुविधाएँ देकर भूल की है। पिट की इस भविष्य-वाणी की सत्यता अगले युद्धों में जाकर सिद्ध हुई।

पिट अमेरिका के उपनिवेशों पर कर लगाने के विरोध में था और उसी के विरोध करने पर स्टाम्प ऐक्ट जिसका उल्लेख हम आगे चलकर करेंगे रद्द कर दिया गया। सन् १७६६ में जार्ज तृतीय ने पिट को अर्ल आफ़ चेटम (Earl of Chatham) की उपाधि दी और उसे प्रधान-मंत्री बनाया। परन्तु इस समय उसका स्वास्थ्य ठीक न था। इस कारण उसे शीघ्र ही सन् १७६८ में त्याग-पत्र देना पड़ा। अपने इस दूसरे मंत्रित्व-काल में उसने अमेरिका के उपनिवेशों से मित्रता रखने पर ज़ोर दिया था। सन् १७७७ में जब एक अँग्रेज़ी सेना अमेरिका में परास्त हुई और फ्रान्स जो इंगलैंड का शत्रु था अमेरिका की सहायता के लिये रणक्षेत्र में आ कूदा, तो पिट ने कमज़ोर होते हुए भी पार्लियामेण्ट में आकर अमेरिका वालों से मित्रता रखने के पक्ष में एक प्रभावशाली भाषण दिया और बतलाया कि उस समय अमेरिका से संधि करके फ्रान्स से तुरन्त युद्ध छेड़ देना चाहिये। परन्तु उसकी चेतावनी का कोई प्रभाव न पड़ा, जिसका बुरा परिणाम अगले परिच्छेद में बतलाया जायगा। इसी विषय पर एक बार फिर पिट ने पार्लियामेण्ट भवन में इतने जोश में आकर भाषण दिया कि वह वहाँ बेहोश होकर गिर गया; और फिर उसकी स्थिति गिरती चली गई और एक ही मास में वह परलोक सिधारा। इस प्रकार सन् १७७८ में ७० वर्ष की आयु में इस योग्य राजनीतिज्ञ का जीवन समाप्त हुआ।

Exercises.

1. What various attempts were made to restore the Stuarts on the throne of England? Account for the failure of these attempts.
2. Give a brief account of Walpole's political career and discuss his foreign policy.
3. What is the Constitutional importance of Wal-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

pole's Ministry ? What special features of modern constitution were evolved during this time ?

4. Give a brief account of the War of Austrian Succession.
5. How did the Seven Years' War break out? What were its chief events and what was the ultimate effect of this War on the position of England ?
6. Sketch the career of Pitt the Elder, and give an estimate of the services rendered by him to England.
7. Discuss Pitt's policy in the Seven Years' War and point out its effects.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्तीसवाँ परिच्छेद

जार्ज तृतीय तथा अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध

सन् १७६०	जार्ज तृतीय का राज्याभिषेक
,, १७६५	स्टाम्प ऐक्ट
,, १७७०—१७८२	लार्ड नार्थ का मंत्रित्व
,, १७७५—१७८३	अमेरिकन स्वतन्त्रता का युद्ध
,, १७७६	अमेरिका की स्वतन्त्रता-घोषणा
,, १७८३	वरसेल्स की सन्धि

अमेरिका के उपनिवेशों में असन्तोष—

जार्ज तृतीय के राज्य-काल की एक प्रसिद्ध घटना अमेरिका के उपनिवेश का स्वतन्त्र होना है। इस समय उत्तरी अमेरिका में पूर्वी तट पर १३ अँग्रेज़ उपनिवेश बसे हुए थे। इन उपनिवेशों को अधिकतर ऐसे लोगों ने बसाया था जो अपने राजाओं के धार्मिक तथा राजनीतिक अत्याचारों से दुखी होकर यहाँ चले आये थे। उन उपनिवेशों में प्यूरिटन, रोमन केथलिक, डिसेन्टर आदि विभिन्न सम्प्रदायों के अनुयायी थे। कुछ ऐसे लोग थे जिन्हें देश निकाला देकर यहाँ भेज दिया गया था। वास्तव में इन उपनिवेशों के बसाने वाले प्रारम्भ से ही इंगलैंड के शत्रु थे। इंगलैंड की सरकार ने इनके स्वतन्त्र व्यापार में कई प्रकार की रुकावटें डाल रक्खी थीं। वे तम्बाकू, शक्कर, कपास इत्यादि अपना कच्चा माल इंगलैंड के अतिरिक्त और कहीं न भेज सकते थे, और उनको बना हुआ माल भी अधिकतर इंगलैंड ही से मँगाना पड़ता था। कपड़ा, काग़ज, साबुन आदि अनेक आवश्यक वस्तुएँ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वे अपने यहाँ बना नहीं सकते थे और इंगलैंड के अतिरिक्त किसी अन्य देश से मँगा भी नहीं सकते थे। उपनिवेशों ने इन व्यापारिक बन्धनों को अनुचित समझा, और इस कारण वहाँ के निवासियों में असन्तोष फैलने लगा। धीरे-धीरे उनका यह विचार हो गया कि इंगलैंड वाले उपनिवेशों को केवल धन कमाने का उपाय समझते हैं; और इसीलिए उनकी स्वतन्त्र उन्नति में कई प्रकार की बाधाएँ डालते हैं।

इंगलैंड के राजाओं ने समय-समय पर इन उपनिवेशो को अपनी-अपनी व्यवस्था करने के लिये अधिकार-पत्र (Charters) प्रदान किये थे; और प्रत्येक के शासन-संचालन के लिये इंगलैंड के राजा की ओर से गवर्नर तथा ज़ज नियुक्त किये जाते थे। समय बीतने पर उपनिवेशों को यह भी पसन्द न आया कि उसके गवर्नर तथा जज इंगलैंड की सरकार नियुक्त करके भेजे। उनकी यह इच्छा थी कि उनके घरेलू मामलों में इंगलैंड का तनक भी हस्तक्षेप न हो, और उनको इंगलैंड की भाँति अपने शासन-सम्बन्ध में पूर्ण स्वतन्त्रता रहे। उधर इंगलैंड के विग मन्त्रियों की ढील के कारण उपनिवेशों का साहस और भी अधिक हुआ और वे शीघ्र स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे।

सप्त वर्षीय युद्ध का प्रभाव—

पहले तो अँग्रेज़ी उपनिवेशों को उत्तर तथा दक्षिण दोनों ओर से फ्रान्सीसियों के आक्रमण का भय लगा रहता था, और इसलिये उनको व्यापारिक तथा राजनैतिक असन्तोष होने पर भी इंगलैंड का विरोध करने का साहस न हुआ। वे यह अच्छी तरह समझते थे कि फ्रान्सीसी आक्रमण के समय इंगलैंड के अतिरिक्त उनकी और कोई सहायता नहीं कर सकता था, और इंगलैंड भी अपना कर्त्तव्य समझ कर अथवा व्यापार के लोभ के कारण उनकी सहायता करने के लिये सदैव तैयार रहता था। सप्त-वर्षीय युद्ध के पश्चात् कनाडा इत्यादि फ्रान्सीसी उपनिवेशों पर इंगलैंड का अधिकार हो जाने के कारण अब अमेरिका के अँग्रेज़ी उपनिवेशों को किसी प्रकार का भय न रहा। ऐसी अवस्था में उनका इंगलैंड के अनुचित व्यवहारों को सहन करते रहना अब असम्भव हो गया, और वे स्वतन्त्र होने की चेष्टा करने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

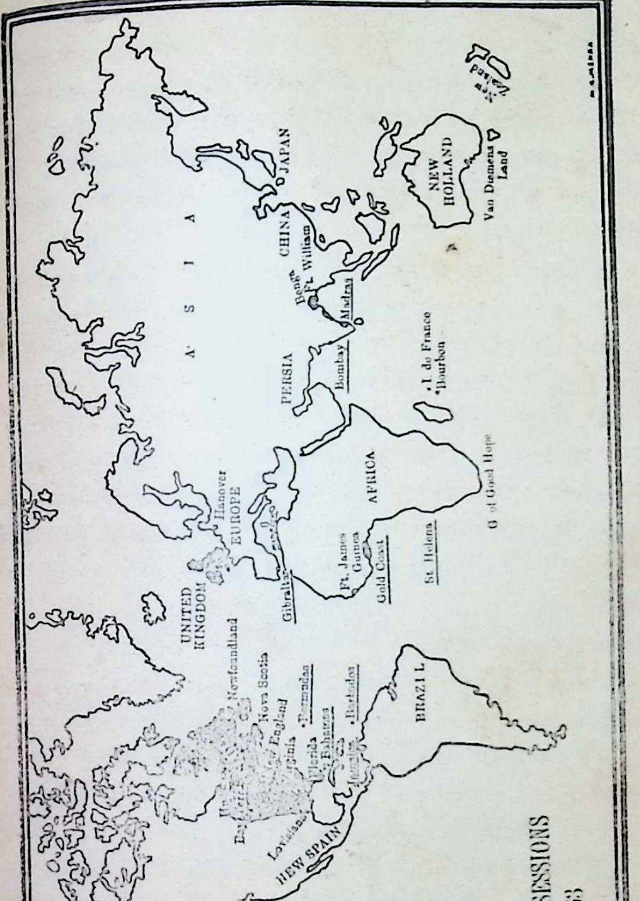

BRITISH POSSESSIONS IN 1763

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अनुचित कर—

अमेरिकन उपनिवेशों की रक्षा के हेतु अँग्रेज़ी सरकार ने सप्त-वर्षीय युद्ध में बहुत धन व्यय किया था, और उपनिवेशों ने इसमें तनिक भी सहायता न की थी। दूसरी समस्या और उपस्थित थी। उपनिवेशों को अमेरिका की जंगली जातियों के आक्रमण का सदैव भय लगा रहता था। अतः उनसे रक्षा करने के लिये एक स्थायी-सेना का रखना आवश्यक था। सप्त-वर्षीय युद्ध के समाप्त होते ही इंगलैंड ने अमेरिकन उपनिवेशों पर स्टाम्प-ऐक्ट (Stamp Act) द्वारा सन् १७६५ में एक विशेष प्रकार का कर लगाया, जिससे उपनिवेशों की रक्षा के लिए जो सेना रक्खी जाती थी उसका व्यय पूरा हो सके। इस नियम के द्वारा बयनामे, इक़रारनामे तथा अन्य अदालती कागज़ों पर सरकारी टिकट लगाना आवश्यक हो गया। उन टिकटों की बिक्री से जो आय होती उससे सेना का कुछ खर्च निकल आता। उपनिवेशों को अपनी रक्षा का भार उठाना कोई अनुचित बात न थी, परन्तु उन्होंने इस नये कर का इस सिद्धान्त पर विरोध किया कि इंगलैंड की पार्लियामेण्ट को, जिसमें उनका कोई प्रतिनिधि नहीं बुलाया जाता (No Taxation without Representation), उन पर नये कर लगाने का कोई अधिकार नहीं है। उपनिवेशों का यह विरोध धीरे-धीरे इतना बढ़ गया कि पार्लियामेण्ट को सन् १७६६ में ही स्टाम्प-ऐक्ट वापस लेना पड़ा, परन्तु साथ ही साथ उन्होंने एक दूसरे नियम द्वारा (Declaratory Act) यह घोषणा की कि इंगलैंड की पार्लियामेण्ट को उपनिवेशों के लिये नियम बनाने तथा कर लगाने का पूर्ण अधिकार है।

कुछ दिनों पश्चात् इंगलैंड की पार्लियामेण्ट ने अमेरिका को जाने वाली चाय, चीनी इत्यादि वस्तुओं पर कर लगा दिया। इसके कारण उपनिवेशों का विरोध फिर भड़क उठा और अब उसने एक भयंकर आन्दोलन का रूप धारण कर लिया। यह देख कर पार्लियामेण्ट ने अन्य सब वस्तुओं पर से तो कर हटा लिया, परन्तु अपना कर लगाने का अधिकार बनाये रहने के आशय से चाय पर महसूल फिर भी रहने दिया। परन्तु उपनिवेश वाले इससे सन्तुष्ट न हुए, क्योंकि वे अब दृढ़ प्रतिज्ञा कर चुके थे कि कर लगाने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के सिद्धान्त को पूर्णतया हटा कर दम लेंगे। इंगलैंड ने चाय के सस्ते … का भी प्रबन्ध किया, परन्तु उपनिवेश वालों का विरोध बराबर बना … जब ईस्ट इण्डिया कम्पनी के जहाज़ बोस्टन के बन्दरगाह में … लेकर पहुँचे तो कुछ जोशीले नागरिक वेष बदल कर उन पर चढ़ … और उन्होंने सब चाय समुद्र में फेंक कर जहाज़ों में आग लगा … यह घटना "बोस्टन की चाय पार्टी" (Boston Tea Party) के … से प्रसिद्ध है।

युद्ध का आरम्भ—

दुर्भाग्यवश इंगलैंड में इस समय ऐसा कोई योग्य राजनीतिज्ञ न था … उपनिवेशों के आन्दोलन का उचित प्रबन्ध कर सकता। इस समय … तृतीय और उसका प्रधान-मन्त्री लार्ड नार्थ (North) दोनों बराबर … हठ पर बने रहे, और यह न समझ सके कि उपनिवेशों का विरोध किस … तक पहुँच चुका है। उन्होंने आन्दोलन को दमन-नीति से दबाना चा… परन्तु इसका और भी उलटा प्रभाव पड़ा। उन्होंने बोस्टन के बन्दरगाह … व्यापार बन्द कर दिया और मेसेच्यूसेट्स उपनिवेश का अधिकार-पत्र रद … दिया और वहाँ के गवर्नर की सहायता के लिये एक सेना भेजी। अँग्रे… सरकार की इस आज्ञा से अमेरिका वालों के क्रोध की सीमा न र… सन् १७७४ में अमेरिका के समस्त अँग्रेज़ों ने मिल कर फ़िलेडलफि… (Philadelphia) के स्थान पर एक बहुत बड़ी प्रतिनिधि सभा बु… जिसने यह निश्चय किया कि इंगलैंड के अत्याचारों का सशस्त्र सामना कि… जाय। अपने इस निश्चय के अनुसार उन्होंने जार्ज वाशिंगटन (Geor… Washington) के नेतृत्व में एक सेना तैयार होने का भी प्रबन्ध आर… कर दिया। उस समय न तो अमेरिका के पास सुव्यवस्थित सेना थी … न धन का प्रबन्ध था। जार्ज वाशिंगटन ने, जो बड़ा वीर, साहसी तथा … प्रतिज्ञ था, शीघ्र ही सेना भी तैयार कर ली। अगले वर्ष सन् १७७५ में इंग… तथा उपनिवेशों में स्पष्ट रूप से युद्ध ठन गया जो "अमेरिका की स्वतन्… के युद्ध" (American War of Independence) के नाम … प्रसिद्ध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

युद्ध की प्रसिद्ध घटनाएँ—

पहले पहल बोस्टन बन्दरगाह ही के निकट बंकर पहाड़ी (Bunker Hill) पर लड़ाई हुई, जिसमें अमेरिका वाले हारे तो सही, परन्तु उन्होंने अपनी वीरता का पूर्ण परिचय दिया। अगले वर्ष उपनिवेशों ने फिर एक काँग्रेस निमन्त्रित की जिसने ४ जुलाई सन् १७७६ के दिन अमेरिका की

जार्ज वाशिंगटन

स्वतन्त्रता (Declaration of Independence) की घोषणा कर दी जिसका यह आशय था कि अब से अमेरिकन पूर्णतया स्वतन्त्र हैं और इंगलैंड के अधीन नहीं।

स्वतन्त्रता-घोषणा के पश्चात् अब यह केवल विद्रोह न रहा, बल्कि इसका रूप दो स्वतन्त्र देशों के युद्ध का हो गया। इसी के बाद फ्रान्स तथा स्पेन अमेरिका का पक्ष लेकर युद्ध में सम्मिलित हुए जिसके कारण इंगलैंड को अब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

 CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

एक घोर आपत्ति का सामना करना पड़ गया। सन् १७७७ में अँग्रेज़ जेनरल बरगाएन (General Burgoyne) को साराटोगा (Saratoga) के स्थान पर हार मान कर हथियार रख देने पड़े, और सन् १७८१ में लार्ड कार्नवालिस यार्क टाऊन (York Town) के युद्ध में इस बुरी तरह पराजित हुआ कि इसके बाद इंगलैंड को सफलता की कोई आशा न रही।

समुद्र पर युद्ध—

अँग्रेज़ी जल-सेना को भी इधर उधर कई युद्ध लड़ने पड़े। रूम सागर में माइनोर्का के टापू को स्पेनिशों ने अपने अधिकार में किया। वेस्ट इंडीज़ के भी कई टापू अँग्रेज़ों के हाथ से निकल गये। रूम सागर का फाटक जिब्राल्टर भी अँग्रेज़ों के अधिकार से निकलते-निकलते रह गया। भाग्यवश ऐडमिरल रोडनी (Rodney) ने फ्रान्सीसियों को वेस्ट इंडीज के द्वीपों में कई बार परास्त किया और अँग्रेज़ी जल-शक्ति को नष्ट होने से बचा लिया।

वर्सेल्स की सन्धि—

सन् १७८३ में फ्रान्स के वर्सेल्स (Versailles) नगर में संधि हुई जिसके अनुसार इस युद्ध का अन्त हुआ। इंगलैंड को अमेरिका के उपनिवेशों की स्वतन्त्रता स्वीकृत कर लेनी पड़ी, जिसके परिणाम स्वरूप "संयुक्त-अमेरिकन-राज्य" (United States of America) नामक प्रजा-तन्त्र-राज्य की स्थापना हुई। अब अमेरिका में केवल कनाडा, न्यूफाउंडलैंड और नोवा स्कोटिया इंगलैंड के अधीन रह गये; और संयुक्त-अमेरिकन-राज्य में युद्ध-काल का नेता जार्ज वाशिंगटन प्रथम प्रधान (President) नियुक्त हुआ।

इस युद्ध से अँग्रेज़ी समुद्री शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा और ब्रिटिश साम्राज्य के इतिहास में यह इंगलैंड की सबसे बड़ी हानि मानी जाती है। इस स्वतंत्रता के युद्ध का यूरोप के इतिहास पर भी बहुत प्रभाव पड़ा, और आगे चल कर फ्रान्स तथा आयरलैंड ने भी अमेरिका ही के उपनिवेशों से स्वतन्त्रता का पाठ सीखा।

अँग्रेज़ों की विफलता के कारण—

अँग्रेज़ी साम्राज्य के विकास के इतिहास में उत्तरी अमेरिका के उपनिवेशों का हाथ से निकल जाना सबसे बड़ी हानि मानी जाती है। अँग्रेज़ों की इस

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विफलता का मुख्य कारण यह था कि इस समय इंगलैंड में कोई ऐसा योग्य राजनीतिज्ञ नहीं था जो अमेरिका के उपनिवेशों की समस्या का संतोषजनक निपटारा कर सकता। इस काल का टोरी मंत्रि-मण्डल बिल्कुल राजा की मुट्ठी में था, और जार्ज तृतीय हठी होने के कारण उपनिवेशों के लिये किसी प्रकार की सुविधा करने को तैयार न था। इसके अतिरिक्त अँग्रेज़ी सरकार अमेरिका के आन्दोलन को भली भाँति न समझ सकी, और वह बहुत दिनों तक इसी भूल में रही कि यह आन्दोलन थोड़े दिनों में स्वयं शान्त हो जायगा। वह यह न सोच सकी कि आन्दोलन के बढ़ने का क्या परिणाम होगा, और उसके भयंकर रूप धारण कर लेने से इंगलैंड को कितनी बड़ी आपत्ति का सामना करना पड़ेगा। अन्त में जब युद्ध छिड़ गया, तब भी अँग्रेज़ उसका महत्त्व न समझ सके, और आरंभ में केवल छोटी-छोटी सेनायें उपनिवेश निवासियों को दबाने के लिये भेजी गईं। अमेरिका में अँग्रेज़ी सेनाओं को कई प्रकार के कष्ट भोगने पड़े। अँग्रेज़ों को वहाँ के जंगलों और पहाड़ियों के रास्ते मालूम न थे, और देश बड़ा होने के कारण वहाँ छोटी-सी सेना से काम चलना भी असंभव था। स्वतंत्रता-घोषणा के पश्चात् अमेरिका को फ्रान्स तथा स्पेन जैसे शक्तिशाली देशों की सहायता मिल गई जिसके कारण अब साधारण औपनिवेशिक-विद्रोह के स्थान पर स्पष्ट रूप से एक जातीय-युद्ध हो गया। उधर अमेरिका के निवासियों में स्वतन्त्रता की अग्नि फुक चुकी थी, और वे उसकी रक्षा के लिये तन, मन, धन सब न्यौछावर करने को तैयार थे। इन सब कारणों से अँग्रेज़ों को अमेरिका के उपनिवेशों से सदा के लिये हाथ धोना पड़ा, और वे उनकी स्वतन्त्रता स्वीकार करने पर बाध्य हुए।

Exercises.

1. Narrate the circumstances leading to the outbreak of the war of American Independence.
2. How did the American Colonies become independent of England?
3. Write short notes on :—
   Stamp Act, Boston Tea Party, Declaration of Independence and George Washington.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीसवाँ परिच्छेद

जार्ज तृतीय तथा छोटा पिट

सन् १७६०	जार्ज तृतीय का राज्याभिषेक
,, १७७०-८२	लार्ड नार्थ का मंत्रित्व
,, १७८३	छोटे पिट के मंत्रित्व का आरंभ
,, १७८४	पिट इण्डिया ऐक्ट
,, १७८९	फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का आरंभ
,, १८०१	इंगलैंड तथा आयरलैंड का संयोग
,, १८०६	पिट की मृत्यु

जार्ज तृतीय का चरित्र तथा नीति—

जार्ज तृतीय का जन्म तथा पालन-पोषण इंगलैंड में हुआ, और इसलिये वह पहले दोनों जार्जों की भाँति अँग्रेज़ी भाषा तथा अँग्रेज़ी राजनीति से अनभिज्ञ न था। उसकी माता ने उसे सचमुच राजा होने की शिक्षा दी थी, जिसका अभिप्राय यह था कि जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के समान वह मंत्रियों के हाथ में कठपुतली की भाँति न नाचे। माता के इस उपदेश का उस पर बहुत प्रभाव पड़ा और उसने खोई हुई राजकीय-शक्ति को फिर से प्राप्त करने का प्रयत्न किया और शासन की बागडोर को फिर से अपने हाथ में लेने की चेष्टा की। वह सच्चा देश-भक्त था और अँग्रेज़ होने का उसे गौरव भी था। वह पूर्णतया अँग्रेज़ होने के कारण शीघ्र ही प्रजा का प्रेम-पात्र बन गया और परिश्रमी तथा साहसी होने के कारण पार्लियामेण्ट में भी उसने समर्थक बना लिए। उसका अपने शासन-काल की राजनीति पर बहुत कुछ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यक्तिगत प्रभाव पड़ा और उसने मंत्रियों को अपनी मुट्ठी में दबाकर उनसे जो चाहा सो कराया। परन्तु उसका यह उद्देश्य कदापि नहीं था कि नियमानुमोदित शासन को ठुकरा कर निरंकुश शासन स्थापित करे। स्टुअर्ट राजाओं की भाँति वह पार्लियामेण्ट से झगड़ा मोल लेना नहीं चाहता था।

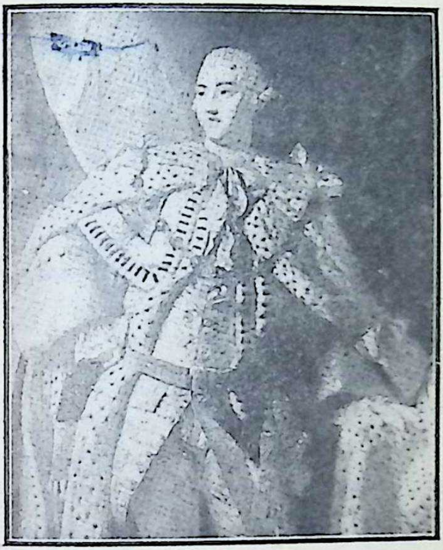

जार्ज तृतीय

उसकी तो यह चेष्टा थी कि पार्लियामेण्ट में अपने समर्थकों की संख्या बढ़ा कर अपनी इच्छा के अनुसार राज्य करे।

टोरी-दल का पुनः शक्तिशाली होना --

जार्ज तृतीय का विग-दल वालों से निभना असंभव था, क्योंकि विग-दल वाले पार्लियामेण्ट के अधिकारों के समर्थक थे, और राजा उनसे अपने स्वेच्छाचार में किसी प्रकार की आशा नहीं रख सकता था। अतः उसने टोरी-दल वालों ही को अपना विश्वास-पात्र बनाया और उन्हीं को मंत्रि-मण्डल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में स्थान दिया। इस समय जेकोबाइट दल नष्ट हो चुका था, इसलिये जार्ज तृतीय को टोरियों से किसी प्रकार का भय न था। पार्लियामेण्ट में टोरियों की संख्या बढ़ाने में कुछ समय लगा, परन्तु सन् १७७० से लोक-सभा तथा लार्ड-सभा दोनों में टोरियों की संख्या इतनी बढ़ गई कि जार्ज तृतीय को मंत्रि-मण्डल स्थापित करने में कोई कठिनाई न हुई। टोरी-दल को मिलाने के अतिरिक्त उसने विग-दल वालों की भाँति घूँस देना तथा निर्वाचन के समय धन ख़र्च भी करना आरंभ किया। सदस्यों के सम्बन्धियों को पद तथा उपाधियाँ देकर भी उसने लोक-सभा में अपनी संख्या बढ़ाई। विग-दल में आपस में फूट होने के कारण उनमें से कुछ राजा के समर्थक हो गये। इस प्रकार पार्लियामेण्ट में राजा की नीति का समर्थन करने वाला एक दल तैयार हो गया जिसके सदस्य "राजा के मित्र" (The King's friends) के नाम से प्रसिद्ध हुए। इस समय से विग-दल का प्रभुत्व नष्ट हुआ और पूरे पचास वर्ष तक देश का शासन-कार्य टोरियों ही के हाथों में रहा।

लार्ड नार्थ का मंत्रित्व—

जार्ज प्रथम तथा जार्ज द्वितीय के राज्य-काल में शासन का संचालन मंत्रियों द्वारा होता था और राजा उसमें अधिक हस्तक्षेप नहीं करते थे। अब जब जार्ज तृतीय ने यह प्रयत्न किया कि मंत्री उसकी आज्ञा में रहें और उसकी नीति का अनुकरण करें तो कठिन स्थिति उपस्थित हो गई। राजा ने सन् १७६३ से १७७० तक एक दूसरे के बाद पाँच मंत्रिमण्डल बनाये और किसी की उससे न पटी। अन्त में उसने लार्ड नार्थ (Lord North) को अपना प्रधान-मंत्री नियुक्त किया। लार्ड नार्थ जार्ज तृतीय का मुख्य टोरी प्रधान-मंत्री था और वह सन् १७७० से सन् १७८२ तक अपने पद पर आरूढ़ रहा। नार्थ चापलूस था और उससे जार्ज तृतीय जो चाहता था सुगमता पूर्वक करा लेता था। अमेरिका की स्वतन्त्रता का युद्ध, जिसका पहले परिच्छेद में वर्णन किया जा चुका है, इसी काल में हुआ। जार्ज तृतीय की हठ तथा लार्ड नार्थ की राजनैतिक अयोग्यता ही के कारण इंगलैंड को उत्तरी अमेरिका के उपनिवेशों से हाथ धोना पड़ा, और इतनी मान-हानि उठानी पड़ी। इसके अतिरिक्त नार्थ के मंत्रित्व-काल में रेगुलेटिंग ऐक्ट (Regulating

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Act) पास हुआ जिसके अनुसार भारतवर्ष की ईस्ट इण्डिया कम्पनी पर अँग्रेज़ी सरकार का बहुत कुछ अधिकार हो गया, और पार्लियामेण्ट ने उसकी शासन-पद्धति की देख-भाल आरम्भ की।

विल्क्स तथा जूनियस की आलोचनायें —

विग-दल वालों ने जार्ज तृतीय की शासन-नीति का प्रारम्भ से ही कटाक्ष करना आरम्भ कर दिया। विग नेताओं के विचार के अनुसार पेरिस की संधि से इंगलैंड को कोई लाभ नहीं हुआ था। जान विल्क्स (John Wilkes) नामक पार्लियामेण्ट के एक सदस्य ने अपने साप्ताहिक-पत्र "नार्थ ब्रिटन" (North Briton) में राजा तथा मंत्रियों के कार्य की कड़ी आलोचना की और राजा के लिये यहाँ तक कह डाला कि उसने अपने एक भाषण में झूँठ बोला है। इसके आक्षेपों ने राजा को क्रोधित कर दिया और इसके परिणाम स्वरूप विल्क्स तथा उसके सहायकों को जेल भिजवा दिया गया। विल्क्स के विरुद्ध बिना नाम का वारण्ट (General Warrant) जारी किया गया था। जजों ने उसे पार्लियामेण्ट का सदस्य होने के कारण मुक्त कर दिया और बिना नाम के वारण्ट को भी गैर क़ानूनी ठहराया। परन्तु फिर भी राजा की मान-हानि करने के अपराध में वह लोक-सभा से निकाल दिया और जजों ने भी उसे अपराधी स्वीकार कर लिया। इस पर क़ैद के भय से वह फ्रान्स भाग गया। इसके पश्चात् प्रधान-मंत्री ग्रेनविल ने आज्ञा निकाली कि पत्रों के सम्पादक पार्लियामेण्ट के भाषणों की कड़ी आलोचना न करें। इस पर लोगों ने समझा कि इस प्रकार की आज्ञाओं से जनता के अधिकारों पर आघात होता है। अब विल्क्स "जनता के अधिकारों का रक्षक" प्रसिद्ध हुआ और उसकी ख्याति बढ़ती चली गई। उसकी लोक-प्रियता इतनी अधिक हो गई कि सन् १७६६ में वह एक निर्वाचन-क्षेत्र से पार्लियामेण्ट के लिये सदस्य भी निर्वाचित हुआ, परन्तु राजा की आज्ञा से वह पार्लियामेण्ट में बैठने तक न पाया। वह तीन बार फिर निर्वाचित हुआ और प्रत्येक बार उसके साथ वही व्यवहार हुआ। इस बात से जनता में बड़ा असंतोष फैला, और "जूनियस के पत्रों" (Letters of Junius) में मंत्रि-मण्डल के इस कार्य पर बड़ा कटाक्ष किया गया और विशेषतया इस बात पर ज़ोर दिया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

गया कि प्रजा को अपनी इच्छानुसार प्रतिनिधि चुनने का पूर्ण अधिकार है। ये पत्र सन् १७६६ से सन् १७७२ तक प्रकाशित होते रहे, परन्तु यह पता न चल सका कि इन पत्रों का लेखक कौन था। विल्क्स की लोक-प्रियता इतनी बढ़ती गई कि वह लन्दन नगर तक का मेयर (Lord Mayor) निर्वाचित हुआ। अन्त में कई वर्ष के झगड़ों के बाद सन् १७७४ के पार्लियामेण्ट के निर्वाचन में विल्क्स फिर प्रतिनिधि चुन लिया गया, और इस बार उसे पार्लियामेण्ट में बैठने की आज्ञा भी मिल गई। इस प्रकार विल्क्स के प्रकरण के द्वारा निर्वाचनों की स्वतन्त्रता तथा समाचार-पत्रों की स्वाधीनता की रक्षा हुई। शासन की समालोचना करने तथा लोकमत के प्रकाशित करने के अपराध में अब कोई जेल नहीं जा सकता।

जान वेज़ली तथा मेथोडिस्ट दल—

अठारहवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में इंगलैंड के धार्मिक जीवन में बड़ी शिथिलता आ गई थी। उच्च वर्ग के लोगों की धर्म में कोई रुचि ही न रही, और वे अपना समय आमोद-प्रमोद में व्यतीत करते थे। बड़े पादरी भी धार्मिक विषयों की ओर कोई ध्यान नहीं देते थे, और छोटे पादरियों को तो अपना गुज़ारा करने के लिये अन्य धन्धे भी करने पड़ते थे। इस समय इंगलैंड में एक नया धार्मिक आन्दोलन चला जो "मेथोडिस्ट आन्दोलन" (Methodist Movement) के नाम से प्रसिद्ध है। इस आन्दोलन के नेता दो भाई जान वेज़ली तथा चार्ल्स वेज़ली (John Wesley and Charles Wesley) थे जिन्होंने लोगों को फिर से धार्मिक विषयों में रुचि दिलाई और अठारहवीं शताब्दी की गिरी हुई धार्मिक अवस्था का फिर से उद्धार किया। ये दोनों भाई आक्सफोर्ड विश्व-विद्यालय के विद्यार्थी थे और उनका जीवन आरम्भ ही से नियम-संयम के अनुसार व्यतीत होता था। उनके साथी इसी कारण इनको संयमी (Methodist) कह कर पुकारने लगे, और अन्त में उनकी स्थापित की हुई धार्मिक संस्था भी इसी नाम से प्रसिद्ध हुई।

इस संस्था के अनुयायी खुले मैदानों, सड़कों, जेलों, पहाड़ियों, कोयले की खानों तथा ग्रामों में जाकर व्याख्यान देते थे और उनका विशेष ध्यान रोगियों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तथा दरिद्रों की सहायता करने की ओर था। वे पहले ऐंग्लिकन चर्च में सम्मिलित थे, परन्तु अन्त में कुछ मतभेद होने के कारण वे उससे अलग हो बैठे, और उन्होंने अपनी एक पृथक् संस्था स्थापित की। उनके आन्दोलन का देश पर बड़ा प्रभाव पड़ा और उनका मनुष्य-मात्र की सेवा का आदर्श शीघ्र ही सर्वप्रिय होने लगा। उन्हीं के प्रभाव के कारण नये अस्पताल खोले गये,

जान वेज़ली

जेलों में क़ैदियों के प्रति अच्छा व्यवहार होने लगा, मज़दूरों की शिक्षा के लिये रविवार की पाठशालाएँ (Sunday Schools) स्थापित की गईं और दास-व्यापार को रोकने तथा दास-प्रथा को हटाने का भी प्रयत्न किया गया।

पिट के मंत्रित्व का आरंभ—

कुछ दिनों तक तो जार्ज तृतीय का टोरियों की सहायता से काम चलता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रहा, परन्तु अमेरिका के उपनिवेशों के स्वतन्त्र होने के समय से टोरियों की फिर बदनामी होने लगी। ऐसी अवस्था में जार्ज तृतीय को भी अपनी नीति बदलने पर बाध्य होना पड़ा, और सन १७८३ में उसने टोरियों को हटा कर प्रसिद्ध लार्ड चैथम के पुत्र विलियम पिट को, जिसकी आयु कुल २४ वर्ष की थी, प्रधान मंत्री बनाया। वह नये टोरी-दल का नेता था। नया टोरी-दल थोड़े बहुत सुधारों का पक्षपाती था। पिट केवल २१ वर्ष की आयु में पार्लियामेएट का सदस्य हुआ था। पिता और पुत्र के नामों में भेद करने के लिये पिता को बड़ा पिट (Pitt, The Elder) और पुत्र को छोटा पिट (Pitt, The Younger) कहते हैं।

उस समय लोक-सभा में एक बहुत बड़ी संख्या उसके विरुद्ध थी। विरोधी-दल में उस समय के प्रसिद्ध वादक (Debators) फ़ाक्स तथा वर्क भी सम्मिलित थे। फ़ाक्स एक अति श्रेष्ठ वक्ता था और प्रायः वह अन्याय-पीड़ितों का पक्ष लिया करता था। उसने अमेरिकन उपनिवेशों, आयरलैंड, तथा अफ्रीकन दासों के सम्बन्ध में जो इंगलैंड की नीति थी उसका ज़ोरदार शब्दों में कटाक्ष किया था। वर्क ने भी जान विल्कस के प्रति किये गये अत्याचार की और अमेरिकन युद्ध तथा वारन हेस्टिंग्ज की हिन्दुस्तानी नीति की कड़े शब्दों में आलोचना की थी। इन प्रसिद्ध वक्ताओं के वक्तव्य अब तक बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। वारन हेस्टिंग्ज पर अभियोग भी इन्हीं लोगों ने चलाया था। पिट को ऐसे ज़ोरदार विपक्षियों का सामना करना था। पिट जानता था कि प्रजा उसके साथ है; अतः उसने राजा की सहायता से दूसरा निर्वाचन सन् १७८४ में कराया। इस निर्वाचन में उसके समर्थकों की संख्या बढ़ गई। इस प्रकार छोटे पिट को पार्लियामेएट में अपनी स्थिति पुष्ट करने में कुछ समय लगा, परन्तु शीघ्र ही उसके समर्थकों की संख्या बढ़ने लगी और वह सन् १८०१ तक राजा तथा जनता दोनों का विश्वासपात्र बना रहा। फिर सन् १८०४ से १८०६ तक वह प्रधान-मंत्री बनाया गया। पिट के मंत्रित्व काल के आरंभ से जार्ज तृतीय के स्वेच्छाचारी-राज्य का भी अन्त हुआ। योग्य समझ कर राजा ने शासन का सब भार उसके हाथ में छोड़ दिया। घूंस तथा पद आदि देकर वह लोक-सभा में अपने समर्थकों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

की संख्या नहीं बढ़ाता था। लोक-सभा केवल उसकी योग्यता के कारण उसके साथ थी।

पिट का शासन-सुधार—

पिट की शासन-नीति बड़ी उदार थी, और उसने प्रधान-मंत्री होते ही कई सुधार के प्रस्ताव उपस्थित किये। उसका सिद्धान्त था कि स्वतन्त्र

Ram Jee Prasad IX

छोटा पिट

व्यापार (Free Trade) देश के लिये सदैव हितकर है, और उसने बहुत सी व्यापारिक वस्तुओं पर से कर हटा दिया; और ये वस्तुएँ बिना रोक-टोक देश तथा विदेशों से आने-जाने लगीं। उसने जातीय-ऋण (National Debt) को भी कम करने का उपाय किया जिससे सरकार की आर्थिक स्थिति पर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ा। सरकारी खर्च अधिक होने के कारण जातीय-ऋण बढ़ते बढ़ते २४ करोड़ हो गया था। उसने बहुत-से व्यर्थ

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सरकारी पदों को तोड़ दिया और इस प्रकार खर्च में बहुत कुछ बचत हुई। साथ ही उसने रेशमी कपड़ा तथा अन्य विलास की वस्तुओं पर कर बढ़ा दिया। अनेक खेल, तमाशों, घोड़ों की दौड़ तथा दुकान पर भी कर बढ़ा कर राज्य की आय की वृद्धि की। उसने लोक-सभा के निर्वाचन के नियमों में भी सुधार करना चाहा, और इस उद्देश्य से उसने लगभग पचास ऊजड़ गाँवों (Rotten Boroughs) से प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीनने के लिये प्रस्ताव पेश किया। परन्तु पार्लियामेण्ट ने इस प्रस्ताव का विरोध किया, जिसके कारण पिट को इसे वापस लेना पड़ा और यह आवश्यक सुधार संभव न हो सका। पिट ने दास-व्यापार को हटाने का भी प्रयत्न किया और उस संबंध में जाँच करने के लिये एक कमेटी नियुक्त की, परन्तु ज़मींदारों के विरोध के कारण उसे इसमें भी सफलता प्राप्त न हुई। पिट ही के मंत्रित्व-काल में ईस्ट इण्डिया कम्पनी के शासन-कार्य की देख-भाल करने के लिये सन् १७८४ में एक नियम (Pitts' India Act) बनाया गया, जिसके द्वारा छः सदस्यों की एक समिति (Board of Control) स्थापित की गई और कम्पनी के कार्यों के निरीक्षण का भार इसी को सौंपा गया।

पिट तथा आयरलैंड—

पिट ने आयरलैंड में भी शान्ति स्थापित करने की चेष्टा की। इस समय आयरलैंड में बड़ा असंतोष फैला हुआ था, और अमेरिका के उपनिवेशों की देखा-देखी आयरलैंड में भी स्वतन्त्रता का जोश बढ़ता जाता था। आयरलैंड के केथलिकों को बहुत सी असुविधाएँ थीं और इंगलैंड वालों ने उनका दमन करने के लिये बहुत-से अनुचित नियम बना रक्खे थे। केथलिक भूमि मोल नहीं ले सकते थे और उनको पार्लियामेण्ट तथा सरकारी पदों पर भी स्थान नहीं मिल सकता था। इस असंतोष को शान्त करने के लिये पिट ने यह प्रस्ताव पेश किया कि केथलिकों की असुविधाएँ दूर की जायँ और आयरलैंड को भी इंगलैंड तथा स्काटलैंड के संयुक्त-राज्य में मिला लिया जाय। पिट का आयरलैंड के संयुक्त-राज्य का प्रस्ताव (Act of Irish Union) तो सन् १८०१ में स्वीकृत हो गया, और आयरलैंड की पार्लियामेण्ट इंगलैंड तथा स्काटलैंड की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार्लियामेण्ट के साथ मिला ली गई, परन्तु उसके केथलिकों को सुविधा देने के प्रस्ताव का राजा तथा अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट दोनों ने विरोध किया, और इसी प्रश्न पर पिट को त्याग-पत्र देना पड़ा। इस प्रकार आयरलैंड को सन्तुष्ट करने का प्रयत्न अधूरा रह गया और वहाँ बराबर अशान्ति बनी रही।

पिट तथा फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति

पिट ही के मंत्रित्व-काल में फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति (French Revolution) नामक एक प्रसिद्ध घटना हुई, जिसने समस्त यूरोप को हिला दिया। इंगलैंड में भी क्रान्तिकारियों का प्रभाव बढ़ने के भय से पिट को अपनी सुधार-नीति त्यागनी पड़ी, और उसके स्थान पर दमन-नीति का आश्रय लेना पड़ा। "स्वतन्त्रता-रक्षण नियम" (Habeas Corpus Act) कुछ काल के लिए स्थगित कर देना पड़ा, और जिन नागरिकों के विषय में क्रान्तिकारियों से सहानुभूति रखने का कुछ भी सन्देह था उनको जेल में डाल दिया गया। इसी सम्बन्ध में इंगलैंड को एक भयंकर युद्ध में सम्मिलित होना पड़ा, जिसके संचालन का भार पिट ही पर पड़ा। पिट ने फ्रान्स के विरुद्ध तीन बार मित्र-संघ (Coalitions) बनाए और यह उसी की योग्यता का परिणाम था कि ऐसे भीषण संकट के समय में इंगलैंड पर कोई आपत्ति न आई, और इतने बड़े युद्ध में अधिकतर इंगलैंड ही की विजय रही। फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति तथा फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध का विस्तृत वर्णन अगले परिच्छेद में किया जायगा।

छोटे तथा बड़े पिट की तुलना—

इंगलैंड के प्रधान-मन्त्रियों में छोटे तथा बड़े पिट दोनों ही का बड़ा उच्च स्थान है। दोनों बड़े योग्य राजनीतिज्ञ थे, और उन्होंने अपने मन्त्रित्व-काल में देश की बहुत कुछ सेवा की। बड़े पिट ने सप्तवर्षीय युद्ध के काल में फ्रान्सीसियों को पराजित करके कनाडा पर अधिकार किया, और छोटे पिट ने फ्रान्स के राज्य-क्रान्ति के युद्ध में इंगलैंड को संकट से बचाया। परन्तु युद्ध-संचालन के कार्य में बड़ा पिट छोटे पिट की अपेक्षा अधिक सफल सिद्ध हुआ। सप्तवर्षीय युद्ध में बड़े पिट की युद्ध-नीति पूर्णतया सफल रही, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसने जर्मनी इत्यादि देशों को आर्थिक सहायता देकर फ्रान्स को यूरोप ही के युद्धों में इतना फँसा दिया कि वह अमेरिका तथा भारतवर्ष में अपनी पूर्ण शक्ति का उपयोग न कर सका। इसके विपरीत छोटे पिट की युद्ध-नीति फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति से युद्ध-काल में इतनी सफल न हो सकी। उसके फ्रान्स के विरुद्ध बनाए हुए मित्र-संघ (Coalitions) शीघ्र ही छिन्न-भिन्न हो जाते थे और फ्रान्स का सामना करने के लिए इंगलैंड अकेला रह जाता था। इन संघों की विफलता का मुख्य कारण यह था कि छोटा पिट तत्कालीन यूरोपीय क्षेत्रों की स्थिति को भलीभाँति न समझ सका। परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि यह पिट ही की योग्यता का परिणाम था कि ऐसे विकट समय में भी, जब यूरोप के अन्य राज्य फ्रान्स की शक्ति के सम्मुख डगमगा रहे थे, इंगलैंड का फ्रान्स कुछ भी न बिगाड़ सका।

छोटा पिट सुधारवादी था और उसने अपने मन्त्रित्व के आरम्भ काल में कई प्रकार के सुधार किये; परन्तु दुर्भाग्यवश, फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का उपद्रव उठ खड़ा होने के कारण पिट को अपनी सुधार-नीति त्यागनी पड़ी, और उसके स्थान पर वह ऐसे बहुत से कार्य करने पर बाध्य हुआ, जिनको सुधारवादी होने के कारण वह कदापि पसन्द न कर सकता था। छोटा पिट यदि शान्ति के समय प्रधान-मन्त्री हुआ होता, तो संभव था कि उसका यश सुधारों के कारण इंगलैंड के इतिहास में बहुत बढ़ा-चढ़ा होता।

फ्रांन्स के विरुद्ध युद्ध ही के काल में (सन् १८०६ में) जब नैपोलियन की बढ़ती शक्ति के कारण इंगलैंड की स्थिति विकट हो रही थी, विलियम पिट की मृत्यु हुई और इंगलैंड का यह योग्य राजनीतिज्ञ, सच्चा देश-प्रेमी परलोक सिधारा।

Exercises.

1. Give an account of George III's attempt to restore the Royal Power.
2. Who were the Methodists, and what was the effect of their movement on the condition of the country?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. Sketch the career of Pitt, the Younger. How far was he successful and in which directions did he fail ?
4. What led to the Irish Union and why could it not satisfy the Irish people ?
5. Write short notes on :—
Lord North, Pitts' India Act, Irish Union, John Wesley and the Revival of the Tories.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इकत्तीसवाँ परिच्छेद

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति तथा नैपोलियन

सन् १७८६	फ्रान्सीसी राज्य-क्रान्ति का प्रारम्भ
,, १७६३	फ्रान्स तथा इंगलैंड के युद्ध का प्रारम्भ
,, १७६८	नेलसन की नील नदी की विजय
,, १८०१	नेलसन की कोपन-हेगन की विजय
,, १८०२	आर्मीस की सन्धि
,, १८०३	नैपोलियन के विरुद्ध युद्ध का आरम्भ
,, १८०५	ट्रेफालगर की विजय तथा नेलसन की मृत्यु
,, १८०८—१४	प्रायद्वीप का युद्ध
,, १८१३	लिपज़िग का युद्ध
,, १८१४	वाटरलू का युद्ध
,, १८२२	नैपोलियन की मृत्यु

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति—

अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में स्वतंत्रता की स्थापना के नाम पर फ्रान्स में एक बड़ा भयंकर राज-विप्लव हुआ, जो "फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति" (French Revolution) के नाम से प्रसिद्ध है। फ्रान्स का शासन सर्वथा स्वेच्छाचारी राजाओं तथा उनके स्वार्थी मंत्रियों के हाथ में था, और देशवासियों को शासन-विधान में किसी प्रकार का भाग लेने का अधिकार न था। एक नाममात्र की प्रतिनिधि सभा (States General) बनी हुई थी, परन्तु उसका लगभग दो सौ वर्ष से कोई अधिवेशन नहीं हुआ था। कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लगाने की प्रथा भी बड़ी अनुचित थी, और उसका अधिकतर भार बेचारे भूखे किसानों ही पर पड़ता था, क्योंकि बड़े भूमिपति (Nobles) तथा बड़े पादरी बहुत काल से करों से मुक्त थे। बड़े भूमिपतियों तथा पादरियों का देश की एक तिहाई भूमि पर अधिकार था और उनकी इस भूमि से किसी प्रकार का कर सरकार वसूल नहीं कर सकती थी। उच्च वर्ग वाले तथा पादरी लोग विलासी जीवन व्यतीत करते थे और अपना अधिकांश समय पेरिस तथा राजा के दरबार में ही बिताते थे। उधर किसानों की दशा बहुत ही शोचनीय थी। बात बात में सरकार तथा अपने भूमिपति को उसे धन देना पड़ता था और समय समय पर उनसे मुफ्त बेगार ली जाती थी। अपनी आय का लगभग $\frac{4}{5}$ भाग किसान से छिन जाता था और बेचारे को पेट भर भोजन भी नहीं मिलता था। इन कारणों से किसानों में बहुत असंतोष फैला हुआ था। इसी समय अमेरिका के स्वतन्त्र-युद्ध ने फ्रान्स में स्वतन्त्र-शासन की इच्छा को और भी भड़का दिया। अमेरिकन उपनिवेशों को स्वतन्त्र होने में फ्रान्सीसी सेनाओं ने भी बहुत कुछ सहायता दी थी। युद्ध से लौटने पर सैनिकों ने बतलाया कि अमेरिकन उपनिवेश किस प्रकार स्वतन्त्र हुए। अब फ्रान्सीसियों की भी यह प्रबल इच्छा हुई कि जब हमने अमेरिका वालों को स्वतन्त्रता दिलवाई, तो क्या हम अपने निरंकुश शासन का भी अन्त नहीं कर सकते। इसी के साथ-साथ रूसो (Rousseau) तथा वालटेअर (Voltair) जैसे शक्तिशाली लेखकों ने अपने लेखों द्वारा इस अग्नि को और भी प्रचण्ड कर दिया। रूसो ने बतलाया कि राजनीतिक तथा सामाजिक बन्धनों ने मनुष्य को जकड़ रक्खा है और वे उसकी स्वतन्त्रता के पूरे बाधक हैं। शासन के सम्बन्ध में उसका यह विचार था कि देश के शासन में सबको समान अधिकार मिलने चाहिये तथा बहुमत से शासन होना चाहिये। राजा के अत्याचारों तथा सामन्तों तथा जागीरदारों के स्वार्थ की उसने कड़ी आलोचना की है। वालटेअर ने पादरी संस्था पर आक्रमण किया और उसके दोष स्पष्ट शब्दों में लिखकर जनता में प्रकाशित किये। उस समय फ्रान्स के मध्यम श्रेणी के लोग पढ़े-लिखे थे; उन्होंने बड़े चाव से इन विद्वानों की पुस्तकों को पढ़ा और इस निश्चय पर पहुँचे कि देश में शान्ति स्थापित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने के लिये राजनीतिक तथा धार्मिक क्षेत्रों में क्रान्ति का होना परम आवश्यक है। पड़ोसी देश इंगलैंड का भी प्रभाव फ्रान्स पर हुए बिना नहीं रह सकता था। फ्रान्स से इंगलैंड लोग आते-जाते थे और वे वहाँ के स्वतन्त्र जीवन का अनुभव करते थे। धीरे-धीरे फ्रान्स वालों की भी यह इच्छा होने लगी कि इंगलैंड की भाँति उनके देश में भी नियमानुमोदित शासन स्थापित होना चाहिये। इस प्रकार मध्यम श्रेणी के लोग क्रान्ति के लिये तैयार हो रहे थे और हम देखेंगे कि फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति के अधिकतर नेता इसी श्रेणी के थे।

लूई चौदहवें के समय से युद्धों के कारण फ्रान्स का धन बहुत बुरी तरह से व्यय हो रहा था और अठारहवीं शताब्दी के युद्धों ने तो देश की आर्थिक दशा को बहुत शोचनीय बना दिया। दूसरी ओर राज-दरबार का खर्च बहुत बढ़ा हुआ था और आय की अपेक्षा खर्च अधिक होने के कारण जातीय-ऋण बढ़ता जाता था। कई मंत्रियों ने आर्थिक स्थिति को सुधारने का प्रयत्न भी किया, परन्तु वे असफल रहे, क्योंकि ज़मींदार जो देश का धनी वर्ग था, राज्य-करों का कुछ भी भाग देने के लिये तैयार नहीं थे। सन् १७८६ में फ्रान्स का राजा लूई सोलहवाँ धन की कमी के कारण प्राचीन प्रतिनिधि-सभा को बुलाने पर बाध्य हुआ। इस समय देश में इतनी अशान्ति तथा उत्तेजना फैली हुई थी कि प्रतिनिधि सभा ने बैठते ही शासन-सुधार का बीड़ा उठा लिया। परन्तु राजा अथवा मंत्री किसी को अनुभव न था कि किस प्रकार प्रतिनिधि-सभा के कार्य-क्रम का प्रबन्ध किया जाय। जागीरदारों तथा पादरियों ने अपनी स्वार्थ-सिद्धि का उद्योग किया, परन्तु उनकी एक न चली और अन्त में प्रजा के प्रतिनिधियों ने राष्ट्रीय-सभा (National Assembly) बनाकर कार्य आरम्भ किया। शासन का अनुभव न होने के कारण उन्होंने रूसो तथा वालटेअर के सिद्धान्तों को अपने सम्मुख रक्खा और सबसे पहला काम जो उन्होंने किया वह यह था कि पादरियों तथा जागीरदारों के विशेष अधिकारों को, जिनका वे उतने काल से उपभोग करते आये थे, रद्द कर दिया। चर्च तथा जागीरदारों की बहुत-सी भूमि छिन गई। सामन्तों तथा मंत्रियों के कहने पर राजा ने जब राष्ट्रीय-सभा के सदस्यों को भयभीत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने के लिये सेना भेजी तो पेरिस में हज़ारों लोगों ने, जो उस समय दूर दूर से आकर वहाँ तमाशा देखने के लिये एकत्र हो गये थे, विद्रोह किया, और इस विद्रोह की अग्नि समस्त देश में भभक उठी। सबसे पहले विद्रोहियों ने बैस्टील (Bastille) जेल पर, जहाँ राज-द्रोही लोग क़ैद थे, आक्रमण कर सब कैदियों को मुक्त किया। देश में स्थान-स्थान पर ज़मींदारों तथा सामन्तों की हत्याएँ होने लगीं और उनके घर जलाये गये। बहुत-से जागीरदार देश छोड़ कर भाग गये और तंग आकर राजा तथा रानी भी निकल भागे, परन्तु फ्रान्स की सीमा पर से पकड़ कर वे पेरिस वापिस लाए गये। जब आस्ट्रिया तथा प्रशा के राजाओं ने ये समाचार सुने तो उन्होंने लुई का पक्ष लेकर फ्रान्स के विरुद्ध युद्ध की घोषणा कर दी और अपनी अपनी सेनाएँ लेकर फ्रान्स की सीमा पर आ धमके। इस बात पर क्रान्तिकारी बहुत क्रुद्ध हुए और सन् १७९२ में उन्होंने राज-पक्षपातियों की एक बहुत बड़ी संख्या को मृत्यु के घाट उतारा। अन्त में यह देखकर कि राजा तथा उनके मंत्री सुधार में रुकावट डालते हैं, उन्होंने अगले वर्ष राजा, रानी तथा उनके बहुत-से सहायकों का वध किया और देश में प्रजा-तन्त्र-राज्य की घोषणा करदी। नये शासन के संचालन में बहुत रक्तपात हुआ और बहुत-सी निर्दोष जानें स्वतन्त्रता देवी के नाम पर बलि चढ़ाई गईं।

राज्य-क्रान्ति का इंगलैंड पर प्रभाव—

पहले इंगलैंड के निवासियों तथा राज-नीतिज्ञों ने यह सोचकर फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का स्वागत किया कि फ्रान्स वाले भी इंगलैंड की भांति अपने देश में नियमानुमोदित शासन स्थापित करने की चेष्टा कर रहे हैं। परन्तु स्वतन्त्रता के नाम पर रक्तपात तथा भीषण हत्याकाण्डों का समाचार पाकर इंगलैंड वालों के विचार बदलने लगे। प्रसिद्ध लेखक बर्क ने क्रान्तिकारियों की नीति का विरोध करने के लिये एक पुस्तक लिखी, जिससे देश-निवासियों को क्रान्ति के प्रति सहानुभूति के स्थान पर घृणा होने लगी। जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, छोटा पिट इस समय इंगलैंड का प्रधान-मंत्री था और उसने इस भय से कि कहीं इंगलैंड में फ्रान्स जैसी गड़बड़ न फैल जाय, अपनी सुधार-नीति को त्याग कर दमन-नीति का पूर्ण प्रबन्ध किया। सभाओं

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को गैर क़ानूनी ठहराया गया और समाचार-पत्रों पर कई रोक लगा दी गईं। स्वतन्त्रता-नियम (Habeas Corpus Act) स्थगित कर दिया गया और बहुत-से लोगों को बिना सबूत के जेल में डलवा दिया गया। मज़दूरों के विरुद्ध भी नियम बनाये गये ताकि वे किसी प्रकार का संगठन न कर सकें। जब तक फ्रान्स के युद्ध चलते रहे इसी दमन नीति से काम लिया गया।

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का युद्ध—

क्रान्तिकारियों ने शीघ्र उधर फ्रान्स में अपनी सेना तैयार कर ली और बड़े उत्साह से उन्होंने शत्रुओं की सेनाओं का सामना किया और फ्रान्स की सीमा से मार भगाया। फिर सन् १७६२ में फ्रान्स के क्रान्तिकारियों ने यह घोषित किया कि जो देश अपने राजाओं के निरंकुश शासन को अन्त करके अपने यहाँ स्वतन्त्र राज्य स्थापित करना चाहें, फ्रान्स उनकी सहायता करेगा। इतना घोषित करके फ्रान्स के नये प्रजा-तन्त्र-राज्य ने अपनी शक्ति बढ़ाने तथा अपने सिद्धान्तों का प्रचार करने के आशय से आस-पास के देशों पर आक्रमण किया। फ्रान्सीसी सेनाओं ने बेलजियम पर अधिकार जमा लिया और शेल्ड (Scheldt) नदी के व्यापार को सब देशों के लिये खोल दिया; यद्यपि पूर्व की एक सन्धि में यह निश्चित हो चुका था कि शेल्ड नदी के द्वारा व्यापार करने का अधिकार केवल इंगलैंड, हालैंड और बेलजियम ही को रहेगा। परन्तु यह सब होने पर भी पिट अपनी शान्ति-प्रिय नीति पर दृढ़ रहा और उसकी यही अभिलाषा रही कि यथासम्भव इंगलैंड को युद्ध न करना पड़े। इसी बीच में सन् १७६३ में फ्रान्स ने स्वयं इंगलैंड के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी, और इस प्रकार एक भयंकर युद्ध आरम्भ हुआ जो कुछ काल को छोड़कर लगभग २२ वर्ष तक चलता रहा।

प्रथम मित्र-संघ—

युद्ध छिड़ जाने पर पिट ने फ्रान्स के विरुद्ध एक बहुत बड़ा मित्र-संघ बनाया जिसमें आस्ट्रिया, प्रशा, हालैंड, स्पेन तथा इंगलैंड सम्मिलित थे। परन्तु थोड़े ही वर्षों बाद संघ के राज्यों का आपस में मिलकर कार्य करना कठिन मालूम पड़ने लगा और धीरे-धीरे यह संघ टूटने लगा। इसी बीच में फ्रान्सीसियों ने कई स्थानों पर भारी विजय प्राप्त की, जिसके कारण मित्र संघ वालों

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का साहस और भी डावाँडोल होने लगा। अन्त में फ्रान्स का मुक़ाबला करने के लिये इंगलैंड बिलकुल अकेला रह गया और अन्य राज्य संघ से अलग हो बैठे तथा उन्होंने फ्रान्स से सन्धि करली। आस्ट्रिया तथा प्रशा तो परास्त हुए और स्पेन फ्रान्स के साथ सन्धि करने पर बाध्य हुआ।

अँग्रेज़ों की जल-विजय—

ऐसे संकट के समय अँग्रेज़ों की जल-शक्ति ने उनकी रक्षा की। अँग्रेज़ी जल-सेना ने सन् १७६४ में फ्रान्स के पश्चिमी किनारे पर ब्रेस्ट (Brest) के निकट फ्रान्सीसियों को परास्त किया, और सन् १७६७ में अँग्रेज़ों ने सेण्ट विंसेण्ट (St. Vincent) और केम्परडाऊन (Camperdown) के जल-युद्धों में भारी विजय प्राप्त की। इन्हीं जल-विजयों के कारण इंगलैंड ऐसे आपत्तिकाल में भी शत्रुओं के आक्रमण से सुरक्षित रहा। उधर वेस्ट-इंडीज़ के उपनिवेश फ्रान्सीसियों के हाथ से निकल गये। इंगलैंड ने डचों के उपनिवेश उत्तमाशान्तरीप (Cape of Good Hope) पर अधिकार किया।

मिस्र में युद्ध तथा नील नदी की विजय—

इसके पश्चात् फ्रान्स ने इंगलैंड को नीचा दिखलाने का कार्य एक योग्य सैनिक नैपोलियन बोनापार्ट (Napoleon Bonaparte) को सौंपा। नैपोलियन एक भारी सेना लेकर फ्रान्स से पूर्व की ओर चल पड़ा, और उसने रूम सागर में माल्टा द्वीप (Malta Island) पर अधिकार जमाकर बड़े समारोह से मिश्र देश में प्रवेश किया। वहाँ से नैपोलियन का विचार भारत की ओर बढ़ने का था जिससे इंगलैंड को अपने पूर्वी-साम्राज्य की रक्षा की चिन्ता होने लगी। अँग्रेज़ी सरकार ने नेलसन (Nelson) को नैपोलियन का पीछा करने के लिये भेजा और नेलसन ने मिस्र पहुँच कर नील नदी के मुहाने पर अबुकर की खाड़ी में सन् १७६८ में फ्रान्सीसी सेनाओं को आ घेरा। नील नदी के युद्ध में नेलसन की पूर्ण विजय हुई और इसी विजय के कारण नैपोलियन की पूर्वी देशों पर अधिकार जमाने की अभिलाषा पूरी न हो सकी। इंगलैंड की स्थिति और भी सुरक्षित हो गई, और कुछ समय पश्चात् नैपोलियन को आगे बढ़ने का विचार छोड़ फ्रान्स लौट आना पड़ा। फ्रान्स आकर उसने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उस समय की सरकार डाइरेक्टरी का अन्त किया, और सम्पूर्ण सैनिक अधिकारों के साथ साथ वह प्रथम कौंसल (First Consul) भी बनाया गया। इस प्रकार शासन की समस्त सत्ता उसके हाथ में आ गई।

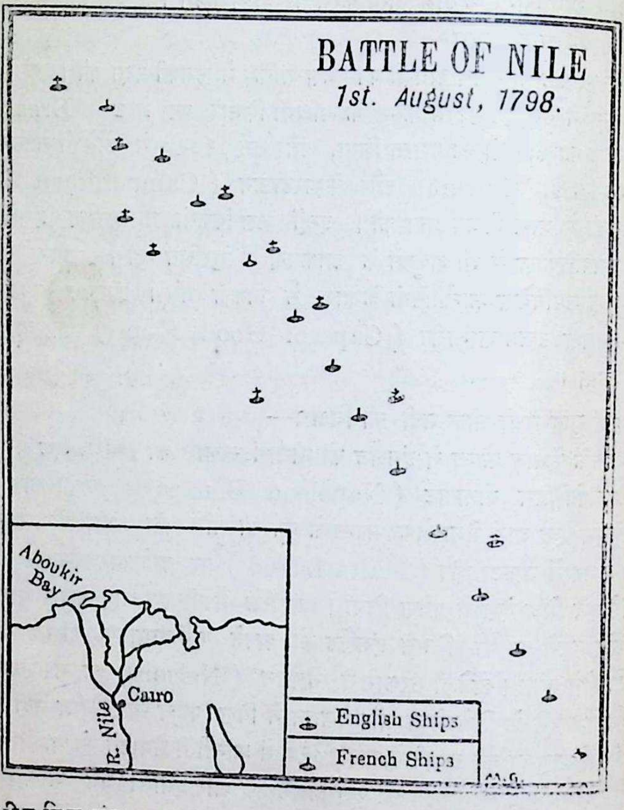

द्वितीय मित्र-संघ—

जिस समय नैपोलियन मिस्र में था, फ्रान्स की आन्तरिक दशा बिगड़ गई, और इस अवकाश से लाभ उठा इंगलैंड ने फ्रान्स के विरुद्ध दूसरी बार कई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्यों का संघ बनाया, जिसमें इंगलैंड, आस्ट्रिया तथा रूस सम्मिलित हुए। इस दूसरे मित्र-संघ ने फ्रान्सीसी सेनाओं को पीछे हटाया, परन्तु कुछ काल पश्चात् नैपोलियन के लौटने पर यह संघ भी प्रथम संघ की भाँति छिन्न-भिन्न होने लगा और इंगलैंड फिर अकेला रह गया। उसी समय नैपोलियन ने रूस, डेनमार्क तथा स्वेडन से इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये एक और जहाज़ी बेड़ा तैयार कराया, परन्तु नेलसन ने कापेनहेगन (Copenhagen) के युद्ध में इसको भी नष्ट कर दिया, और इस प्रकार इंगलैंड की जल-शक्ति ने सबके दाँत खट्टे किये।

आमींस की सन्धि—

इंगलैंड तथा फ्रान्स दोनों लड़ते-लड़ते तंग आ गये थे। नैपोलियन फ्रान्स में अपनी शक्ति को संगठित करने के लिये अवकाश चाहता था, उधर इंगलैंड में युद्ध के कारण एक भीषण आर्थिक समस्या उपस्थित हो गई थी। अतः सन् १८०२ में दोनों ने आमींस (Amiens) के स्थान पर सन्धि कर ली। इस सन्धि के अनुसार दोनों देशों ने अपने जीते हुए प्रदेश लौटा दिये, परन्तु इसके अतिरिक्त और कोई स्थायी बात निश्चित न हो सकी। इस सन्धि का केवल यह परिणाम हुआ कि दोनों को थोड़ा-सा अवकाश मिल गया, जिससे वे दूसरे युद्ध की तैयारी कर सके।

नैपोलियन तथा इंगलैंड

युद्ध का पुनरारम्भ—

आमींस की सन्धि का केवल यह उद्देश्य था कि नैपोलियन को फ्रान्स में संगठन करने का अवकाश मिल जाय। वह अपनी शक्ति बढ़ाता गया जिससे इंगलैंड का भय उसी तरह बना रहा। दूसरी ओर अँग्रेज़ों ने भी माल्टा द्वीप पर से अपना अधिकार न हटाया और इस प्रकार उन्होंने आमींस की सन्धि का पालन न किया। अब इंगलैंड तथा नैपोलियन दोनों युद्ध पर उतारू थे और एक ही वर्ष में युद्ध फिर छिड़ गया। सन् १८०४ में प्रधान मन्त्री पिट ने फिर आस्ट्रिया, रूस, स्वेडन तथा नेपिल्स इंगलैंड के पक्ष में करके एक तीसरा मित्र-संघ फ्रान्स के विरुद्ध तैयार कर लिया। इस बार नैपोलियन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने इंगलैंड पर आक्रमण करने के लिये एक बहुत बड़ा जहाज़ी बेड़ा तैयार किया, और अँग्रेज़ों को धोखा देने के आशय से उसके कुछ भाग को पश्चिम की ओर भेजा जिससे अँग्रेज़ उसका पीछा करने के लिये इंगलिश चैनेल को खाली छोड़ कर रवाना हो जायँ। परन्तु अँग्रेज़ों को शीघ्र ही नैपोलियन की चालाकी का पता चल गया और यह प्रयत्न सफल न हो सका। इस बीच में सन् १८०४ में फ्रान्सीसी प्रजा ने नैपोलियन को अपना सम्राट् (Emperor) बना लिया।

ट्रेफालगर का युद्ध—

अगले वर्ष अँग्रेज़ों ने भी अपने जहाज़ी बेड़े को उन्नति दी और पूर्ण तैयारी के साथ अँग्रेज़ी जल-सेनापति नेलसन ने स्पेन तथा फ्रान्स के संयुक्त बेड़े को

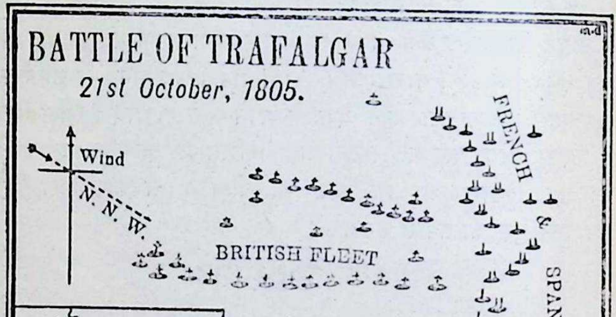

स्पेन के तट पर ट्रेफालगर (Trafalgar) अंतरीप के निकट आ घेरा। २१ अक्टूबर सन् १८०५ के दिन दोनों बेड़ों में घमासान जल-युद्ध हुआ। इस युद्ध में नेलसन मारा गया, परन्तु मरने से पहले उसे यह समाचार मिल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चुका था कि अँग्रेज़ों की पूर्ण विजय हुई है और शत्रुओं का बेड़ा नष्ट किया जा चुका है। इस जल-युद्ध की पराजय से नैपोलियन बड़ा निराश हुआ और इसके पश्चात् उसने इंगलैंड की जल-सेना का सामना करने का साहस न किया।

नैपोलियन की विजय—

अब नैपोलियन ने अपना अधिकतर ध्यान थल-युद्ध की ओर दिया। इस समय फ्रान्स में उसकी शक्ति सीमा पर पहुँच चुकी थी। फ्रान्स के प्रजा-तन्त्र

नेलसन

का "संरक्षक" (First Consul) पहले ही बन चुका था और इसके पश्चात् अवसर पाकर वह फ्रान्स का सम्राट् (Emperor of the French) बन बैठा था। इंगलैंड ने फ्रान्स के विरुद्ध मित्र-राष्ट्रों का तीसरा संघ बनाया था, परन्तु नैपोलियन ने इन सबको बारी बारी से पूर्णतया परास्त किया। ट्रेफाल-गर के युद्ध के कुछ सप्ताह बाद पहले उसने आस्टरलिट्ज़ (Austerlitz)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के स्थान पर सन् १८०५ में ही आस्ट्रिया तथा रूस दोनों की सेनाओं को बुरी तरह परास्त किया और आस्ट्रिया सन्धि कर लेने पर बाध्य हुई। आस्टरलिट्ज़ की पराजय से पिट के हृदय पर एक गहरी चोट पहुँची और इसके परिणाम स्वरूप वह जनवरी सन् १८०६ में परलोक सिधारा। अगले वर्ष सन् १८०६ में जेना (Jena) के युद्ध में नैपोलियन ने प्रशा की सेना को पराजित किया; और इसके पश्चात् फ्रेडलैंड (Fredland) के निकट रूस को फिर नीचा दिखाया, जिसके कारण रूस का सम्राट् भी सन्धि करने पर विवश हुआ। इस प्रकार समस्त यूरोप नैपोलियन का लोहा मानने लगा, और अब केवल इंगलैंड ही ऐसा बच रहा जो उसकी आँखों में खटकता था।

आर्थिक युद्ध तथा उसकी विफलता—

अब नैपोलियन ने इंगलैंड को नीचा दिखाने के अभिप्राय से उसके व्यापार को नष्ट करने का एक उपाय सोचा। उसने इंगलैंड की व्यापारिक वस्तुओं का समस्त यूरोप से बहिष्कार कराना चाहा; और बर्लिन (Berlin) तथा मिलान (Milan) से यह आज्ञा प्रकाशित की कि जितने देश फ्रान्स के अधीन हैं या उससे सहयोग रखना चाहते हैं वे सब इंगलैंड से व्यापारिक सम्बन्ध त्याग दें और इंगलैंड के जहाज़ उनके बन्दरगाहों पर न आने पावें। यह नीति "व्यापार बहिष्कार" (Continental System) के नाम से प्रसिद्ध है। इसके जवाब में इंगलैंड ने भी यह आज्ञा निकाल दी कि जो देश उससे व्यापार न करेंगे और जो जहाज़ बिना किसी अँग्रेज़ी बन्दरगाह पर ठहरे समुद्र में दिखाई पड़ेंगे वे सब नष्ट कर दिये जायँगे। इस प्रकार का व्यापारिक युद्ध कई वर्षों तक चलता रहा; अन्त में नैपोलियन ही को हार माननी पड़ी और उसका "व्यापार बहिष्कार" का प्रयत्न निष्फल रहा। इसका यह कारण था कि चाय, रुई, चीनी इत्यादि कई वस्तुएँ ऐसी थीं जो इंगलैंड तथा उसके उपनिवेशों के अतिरिक्त कहीं दूसरी जगह से प्राप्त न हो सकती थीं। इन वस्तुओं का मूल्य बढ़ता गया और स्वयं नैपोलियन के मित्रों को चोरी-चोरी इंगलैंड से व्यापारिक सम्बन्ध बनाये रखना पड़ा।

प्रायद्वीप का युद्ध—

नैपोलियन की व्यापारिक आज्ञाओं का सबसे पहले पुर्तगाल तथा स्पेन ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

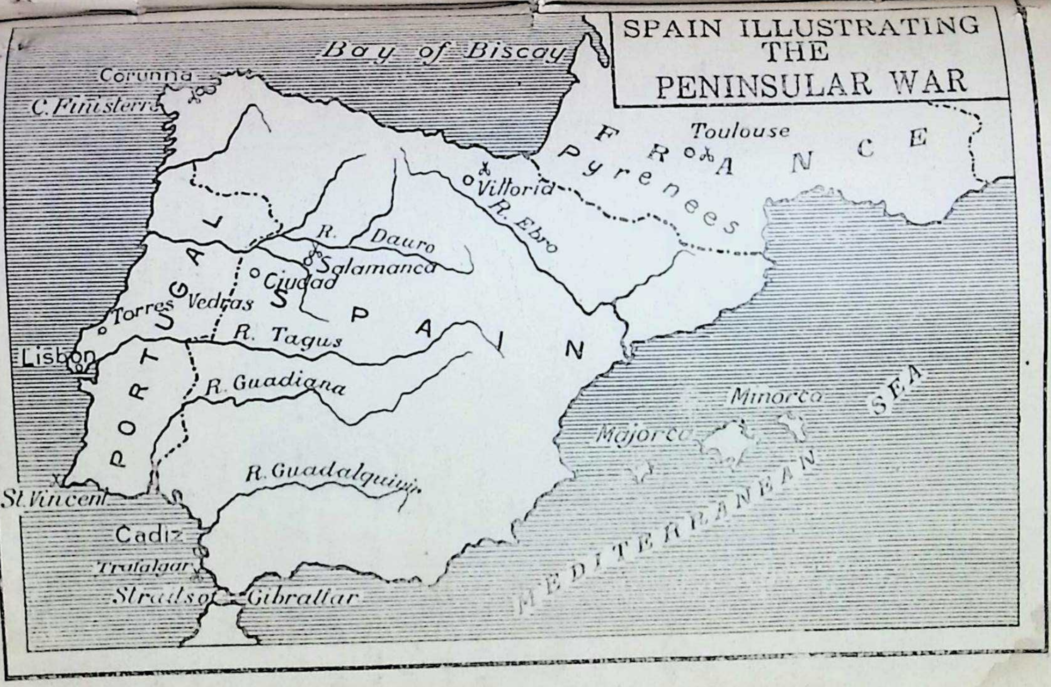

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उल्लंघन किया। यह देखकर नैपोलियन ने पुर्तगाल को परास्त किया, और अवसर पाकर स्पेन के राजा को भी राज-सिंहासन से हटाकर उसके स्थान पर अपने भाई जोज़फ (Joseph) को राजा बनाया। नैपोलियन की इस हरकत से स्पेन वालों का जातीय जोश उबल पड़ा और उन्होंने इंगलैंड की सहायता से एक बड़ा विद्रोह खड़ा कर दिया। इंगलैंड ने आर्थर वेले-

नैपोलियन

ज़ली (Arthur Wellesley) के नेतृत्व में एक बहुत बड़ी सेना आइबेरियन प्रायद्वीप (Iberian Peninsula) को भेजी और इस सेना ने फ्रान्सीसियों को पुर्तगाल तथा स्पेन से भगाना आरम्भ किया। नैपोलियन इस समय यूरोप के अन्य युद्ध-क्षेत्रों में फँस गया था और उसको स्पेन के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विद्रोह के शान्त करने का भार अपने सेनापतियों ही पर छोड़ना पड़ा। यह युद्ध पाँच वर्ष से भी अधिक चलता रहा और अन्त में आर्थर वेलेज़ली ने सेलेमेनका (Salamanca) तथा विटोरिया (Victoria) के युद्धों में भारी विजय प्राप्त की; और फ्रान्सीसी सेनाएँ स्पेन छोड़ने पर बाध्य हुईं।

नैपोलियन का पतन—

स्पेन की विजयों के कारण वेलेज़ली ड्यूक-आफ़-वेलिंगटन (Duke of Wellington) बना दिया गया और अब वह स्वयं नैपोलियन के विरुद्ध युद्ध करने के लिए आगे बढ़ा। इसी बीच में रूस ने भी नैपोलियन की व्यापारिक नीति का विरोध आरम्भ कर दिया। नैपोलियन ने रूस को दबाने के लिए उसकी राजधानी मास्को (Moscow) पर चढ़ाई की; परन्तु कड़े जाड़े तथा भूख के कारण उसको बड़ी कठिनाइयाँ सहन करके लौटना पड़ा और उसकी सैनिक-शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा। इस कारण नैपोलियन के शत्रुओं का साहस बढ़ गया और वेलिंगटन ने आस्ट्रिया, प्रशा तथा रूस की सहायता से नैपोलियन को लीपज़िग (Leipzig) के स्थान पर बुरी तरह परास्त किया। अन्त में यहाँ तक नौबत आई कि नैपोलियन को अपना फ्रान्स का राज-सिंहासन त्यागना पड़ा, और उसने ऐलबा (Elba) के द्वीप में जाकर शरण ली।

वाटरलू का युद्ध—

परन्तु थोड़े ही समय पश्चात् नैपोलियन अवसर पाकर ऐलबा से भाग निकला और फिर फ्रान्स में आ धमका। उसके सेनापतियों ने उसका स्वागत किया और अब वह फिर फ्रान्स का सम्राट् हो गया। ऐसी भीषण स्थिति में इंगलैंड तथा यूरोप के अन्य राज्यों ने यही उचित समझा कि नैपोलियन को फिर अपनी शक्ति एकत्रित करने का अवकाश न मिलना चाहिये। प्रशा ने ब्लूचर (Blucher) को और इंगलैंड ने वेलिंगटन को तुरन्त नैपोलियन पर आक्रमण करने के लिये भेज दिया, और १८ जून सन् १८१५ को दोनों ओर की सेनाओं की वाटरलू (Waterloo) के युद्ध-क्षेत्र में मुठभेड़ हुई। अन्त में नैपोलियन परास्त हुआ और उसकी सेना बुरी तरह नष्ट हुई। अब फ्रान्सीसी प्रजा ने भी उसको न अपनाया और उसे एक अँग्रेज़ी जहाज़ की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शरण लेनी पड़ी। अँग्रेज़ों ने उसे क़ैद करके सेंट हेलेना (St. Helena) भेज दिया और इसी ऊजड़ द्वीप में नैपोलियन आजन्म क़ैद रहा।

नैपोलियन के पतन के कारण—

नैपोलियन इतिहास के उन प्रसिद्ध व्यक्तियों में से है जो केवल अपनी योग्यता के बल से उच्च स्थान प्राप्त करते हैं। वह पहले फ्रान्स के प्रजा-तन्त्र-

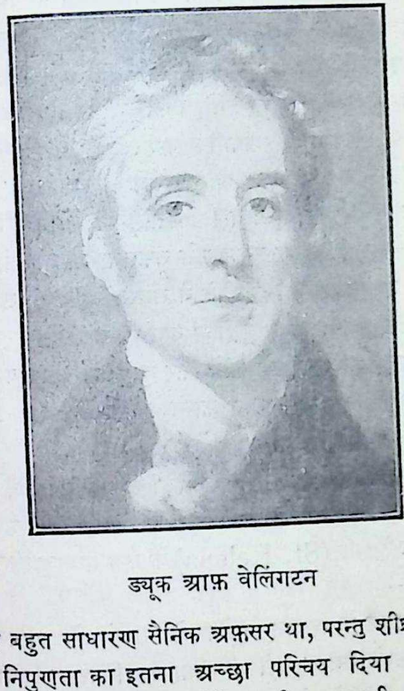

ड्यूक आफ़ वेलिंगटन

राज्य का एक बहुत साधारण सैनिक अफ़सर था, परन्तु शीघ्र ही उसने अपनी युद्ध-कला की निपुणता का इतना अच्छा परिचय दिया कि उसकी गणना फ्रान्स के सर्वश्रेष्ठ सेना-नायकों में होने लगी। उसकी विजयों के कारण फ्रान्स के निवासी उसे देवता की भाँति पूजने लगे, और वह शीघ्र ही प्रजा-तन्त्र-राज्य का संरक्षक (First Consul) बना दिया गया। धीरे-धीरे अवसर पाकर वह फ्रान्स का सम्राट् (Emperor of France) बन बैठा,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और इसके पश्चात् वह विश्व-विजय के मन्सूबे बाँधने लगा। उसको सफलता भी बहुत मिली, और कुछ काल तक समस्त यूरोप उसके नाम से थर्राने लगा। परन्तु शीघ्र ही नैपोलियन का पतन प्रारम्भ हुआ, और उसका गौरव नष्ट होने लगा। इसका मुख्य कारण यह था कि नैपोलियन ने यूरोप में एक ऐसी अग्नि दहका दी थी कि कुछ काल के पश्चात् वही अग्नि उसके विनाश का कारण बनी। जिन यूरोपीय जातियों को उसने पराजित किया था, उनमें राष्ट्रीयता का भाव जाग्रत हुआ, और अन्त में सबने मिलकर इंगलैंड की सहायता से उसे परास्त किया। इंगलैंड को नीचा दिखाने का नैपोलियन कई बार प्रयत्न कर चुका था, परन्तु अँग्रेज़ों की जल-शक्ति के कारण उसका यह मनोरथ सिद्ध न हो सका। अपनी जल-शक्ति ही के भरोसे इंगलैंड नैपोलियन के सम्मुख बराबर डटा रहा, और उसके विरुद्ध युद्ध करने का भार अधिकतर इंगलैंड ही को उठाना पड़ा। नैपोलियन ने अँग्रेज़ों के व्यापार को भी नष्ट करने की चेष्टा की, परन्तु इसमें उसे सफलता न हुई और उलटी उसी की हानि हुई। उसकी व्यापारिक नीति ने समस्त यूरोप को उसका शत्रु बना दिया, और प्रायद्वीप तथा रूस के युद्धों में वहाँ की जातियों ने इतना जी तोड़ कर उसका सामना किया कि उसके किये फिर कुछ न बन पड़ा। वाटरलू के युद्ध में परास्त होने के पश्चात् स्वयं फ्रान्स के निवासी उसके विरुद्ध हो गये, और उसे अपना सिंहासन त्यागना पड़ा।

नैपोलियन को अपने अन्तिम दिवस अँग्रेज़ों का बन्दी बन कर काटने पड़े, और जो वीर सम्राट् विश्व-विजय के स्वप्न देख रहा था, उसकी फ्रान्स से सैकड़ों मील दूर सेंट हेलेना (St. Helena) के एक उजाड़ द्वीप में मृत्यु हुई।

पैरिस की सन्धि—

नैपोलियन के पतन के पश्चात् यूरोप के राज्यों के प्रतिनिधियों ने एक बहुत बड़ी काँग्रेस करके समस्त राष्ट्रों की सीमा का निपटारा किया, और फ्रान्स के इन भयंकर युद्धों से पहले जो प्रत्येक राज्य की सीमा थी अधिकतर वही फिर रक्खी गई। नैपोलियन के स्थान पर फ्रान्स का भूतपूर्व राजवंश फिर राज्य करने लगा और समस्त यूरोप में एक बार फिर सन् १७८९ की सी स्थिति विराजने लगी। इंगलैंड को इस सन्धि के अनुसार माल्टा, मारिशश, सीलोन,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

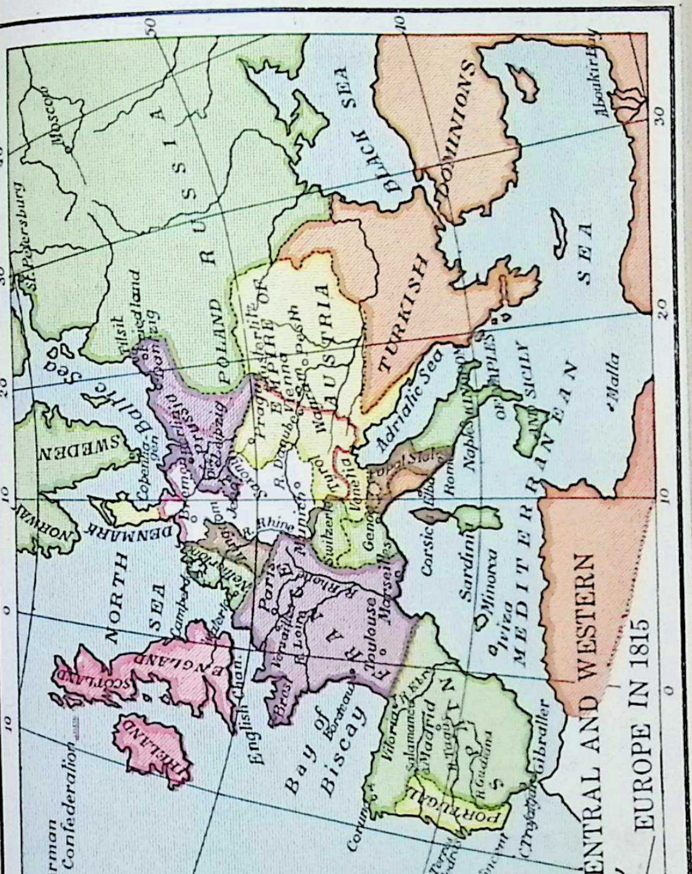

CENTRAL AND WESTERN EUROPE IN 1815

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के पकालोनी इत्यादि स्थान मिले जिनसे ब्रिटिश-साम्राज्य की वृद्धि में बहुत सहायता मिली।

इंगलैंड पर युद्ध का प्रभाव

युद्ध से लाभ—

देखने से यह प्रतीत होता था कि इन युद्धों से इंगलैंड को बड़ा लाभ हुआ है। कई अच्छे टापू इंगलैंड के अधिकार में आगये और अँग्रेज़ी जल-शक्ति अब पहले से भी कहीं अधिक बढ़ गई। युद्धों के कारण विदेशी व्यापार पर भी अधिकतर इंगलैंड ही का अधिकार होगया, और समस्त भूमण्डल में उपनिवेश तथा व्यापार के क्षेत्र में अब अँग्रेज़ों की बराबरी करने वाला कोई न रहा। ज़मींदार तथा पूंजीपति बराबर लाभ उठा रहे थे।

आर्थिक हानियाँ—

परन्तु युद्ध से इंगलैंड को हानियाँ भी बहुत-सी हुईं; देश की आर्थिक दशा पर बहुत बुरा प्रभाव पड़ा, और युद्धों में व्यय अधिक हो जाने के कारण जातीय ऋण बहुत बढ़ गया जिससे प्रजा पर कई प्रकार के नये कर लगाने की आवश्यकता हुई। बहुत-सी वस्तुओं का मूल्य बढ़ गया, और इसी समय खेती से पैदावार कम होने के कारण ग़रीबों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ हो गया। विदेशों से अनाज आकर जब यहाँ सस्ता बिकने लगा, तो ज़मींदारों को बड़ी हानि हुई। परन्तु पार्लियामेण्ट में ज़मींदारों ही की सत्ता थी; अतः उनके प्रभाव से कार्न ला (Corn Law) सन् १८१५ में ही बनाया जिससे बाहर के अनाज पर इतनी चुंगी बढ़ा दी गई कि बाहर से अनाज आना ही बन्द हो गया। अब ग़रीबों की स्थिति बहुत कष्ट मय हो गई। देश में बेकारी भी बहुत बढ़ गई जिसके कारण मज़दूर-दल में असन्तोष फैलने लगा। युद्ध होते हुए भी देश की जन-संख्या एक तिहाई से भी अधिक और बढ़ गई। युद्ध समाप्त होने पर सैनिक तथा नाविक जब लौट कर इंगलैंड वापस आये तो बेकारों की संख्या और भी अधिक हो गई। बेचारे मज़दूर कुछ सरकारी नियमों (Combination Acts) के कारण संगठित रूप से अपनी माँग भी पेश नहीं कर सकते थे। युद्ध के कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समस्त यूरोप की आर्थिक दशा इतनी गिर गई थी कि इंगलैंड के कारखानों के माल की कहीं खपत न होती थी और बहुत से अँग्रेज़ी व्यापारियों के दिवाले निकलने लगे, और मज़दूरों की स्थिति और भी शोचनीय हो गई। स्थान-स्थान पर उपद्रव हुए, परन्तु वे सब दमन कर दिये गये।

राजनैतिक तथा सामाजिक प्रभाव—

इन युद्धों का राजनैतिक क्षेत्रों में बड़ा प्रभाव पड़ा। फ्रान्स के स्वतन्त्रतावादियों के सिद्धान्तों ने इंगलैंड वालों में उत्तेजना फैला दी और वे राजनैतिक

नैपोलियन-युद्ध-काल के सैनिक

सुधारों तथा जन-साधारण के अधिकारों के लिये बड़े जोश से आन्दोलन करने लगे। सरकार को भी इनकी माँग पूरी करने के लिये उन्नीसवीं शताब्दी में पार्लियामेण्ट के निर्वाचन तथा अन्य राजनैतिक क्षेत्रों में कई प्रकार के सुधार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करने पड़े। सामाजिक स्थिति पर भी स्वतन्त्रता की अभिलाषा का बड़ा गहरा प्रभाव पड़ा, और लोग सामाजिक बन्धनों से मुक्त होने की चेष्टा करने लगे। इस काल के राजनैतिक तथा सामाजिक सुधारों का अगले परिच्छेदों में वर्णन किया जायगा।

Exercises.

1. What were the causes of the French Revolution?
2. What was the attitude of England towards the French Revolution? Compare it with the English Revolutions of 1649 and 1688.
3. How did the French Revolutionary War break out? Mention the chief naval battles in this war.
4. What part did England play in the overthrow of Napoleon?
5. How did the British navy save the position of England during the French Revolutionary and Napoleonic Wars?
6. What was Napoleon's 'Continental System' and how did it fail?
7. Describe the effects of the Napoleonic Wars on England.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बत्तीसवाँ परिच्छेद

व्यावसायिक क्रान्ति, नये आविष्कार तथा सामाजिक उन्नति

सन् १७६४	"स्पिनिंग जेनी"
,, १७७५	कार्टराइट का म्यूल
,, १७८५	भाप के ऐञ्जिन का आविष्कार
,, १८३०	स्टेफनसन का राकेट
,, १८४०	डाक के प्रबन्ध का सुधार
,, १८४४	इंगलैंड में तार की पहली लाइन
,, १८७६	टेलीफून का आविष्कार

अठारहवीं शताब्दी का अन्तिम भाग

कृषि-क्रान्ति—

अठारहवीं शताब्दी के मध्य भाग तक इंगलैंड निवासियों का मुख्य उद्यम खेती करना था। देश में इतना अनाज पैदा होता था कि वह देश वासियों के लिये काफी होकर इंगलैंड के उपनिवेशों तथा यूरोप के प्रदेशों में भी बिकने के लिये भेज दिया जाता था। अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में खेती नये ढंगों से होने लगी और ज़र्मींदारों को खेती में बड़ा लाभ होने लगा। ग्रामों में बहुत कुछ भूमि सार्वजनिक (Common Land) होती थी और उस पर अमीर ग़रीब सबका समान अधिकार होता था। ज़र्मींदारों ने ग्रामों की ऐसी अधिकांश भूमि पर सरकार से आज्ञा प्राप्त करके अपना अधिकार कर लिया और उसे अपने खेतों के साथ मिला कर उनके चारों तरफ बाड़ें (Enclosures) लगा दीं। अब खेतों के चारों तरफ बाड़ों का लगाना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आवश्यक हो गया। बाड़ों के लग जाने से खेती में हर प्रकार की उन्नति की संभावना हो सकती थी। परन्तु इस नयी रीति से ग़रीब किसानों को बहुत हानि हुई। वे पहले सार्वजनिक भूमि पर अपने पशुओं को चराते थे, कुछ ईंधन बीन लेते थे, और खाली समय में कताई तथा बुनाई करके अपना निर्वाह करते थे। वे खेतों में बाड़ें लगाने का खर्च भी नहीं उठा सकते थे। इन सब बातों का परिणाम यह निकला कि वे अपने खेत बेचने पर बाध्य हुए और मज़दूरी करके अपना निर्वाह करने लगे।

साथ ही साथ नयी-नयी युक्तियाँ निकाली गईं जिसके परिणाम-स्वरूप भूमि का कोई भी भाग किसी भी वर्ष बंजर पड़ा नहीं रह सकता और बोया हुआ बीज भी नष्ट नहीं हो सकता था। फ्रान्सीसी प्रोटेस्टेण्टों ने जो चौदहवें लुई के राज्य-काल से इंगलैंड में आकर बसने लगे थे, यहाँ के लोगों को खेतों में शलजम आदि गाँठ वाले शाक लगाना सिखाया। इस युक्ति से खेतों की भूमि खूब उपजाऊ हो गई और इसी कारण किसी खेत को बंजर छोड़ देने की आवश्यकता न रही। अब भेड़ आदि जानवरों का पालना भी सुगम हो गया, क्योंकि फसलों के कारण जानवरों को प्रत्येक ऋतु में खाना मिल सकता था; इसी लिये लोगों को मांस भी हर समय ताज़ा मिलने लगा। जानवर भी खूब मोटे ताज़े हो गये, और दूध भी अच्छा और अधिक मात्रा में मिलने लगा। जानवरों का पालना अधिक लाभदायक साबित हुआ, अतः ज़मींदारों ने अनाज बोना कम कर दिया, यहाँ तक कि अब अनाज विदेशों से मँगाया जाता है।

व्यावसायिक-क्रान्ति का अर्थ—

अठारहवीं शताब्दी के दूसरे अर्ध भाग में व्यवसाय तथा व्यापार के क्षेत्र में भी इतने बड़े परिवर्तन हुए कि देश की काया पलट गई। अब तक अधिकतर देशवासियों का मुख्य उद्यम खेती करना ही था, परन्तु इस काल में कपड़ा बनाने तथा अन्य बहुत-सी वस्तुएँ तैयार करने के लिये जो नई-नई मशीनें तैयार की गईं उनके कारण देश के कारबार में बड़ा भारी परिवर्तन हो गया, जिसका देश के सामाजिक जीवन पर भी बहुत प्रभाव पड़ा। इंगलैंड अब कृषि-प्रधान देश के स्थान पर व्यवसाय-प्रधान देश हो गया और यहाँ के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारख़ानों से बहुत-सा माल तैयार करके विदेशों को भेजा जाने लगा। इसी बड़े परिवर्तन को "व्यावसायिक क्रान्ति" (Industrial Revolution) कहते हैं।

कपड़े की नई मशीनों का आविष्कार—

अब तक कपड़ा बनाने के लिये चर्खे या करघे ही से काम लिया जाता था, जिसमें बहुत समय लगता था, और कपड़ा भी मोटा-झोटा ही बनता था। सन् १७३३ में जान के (John Kay) नामक एक व्यक्ति ने तेज़ चलने

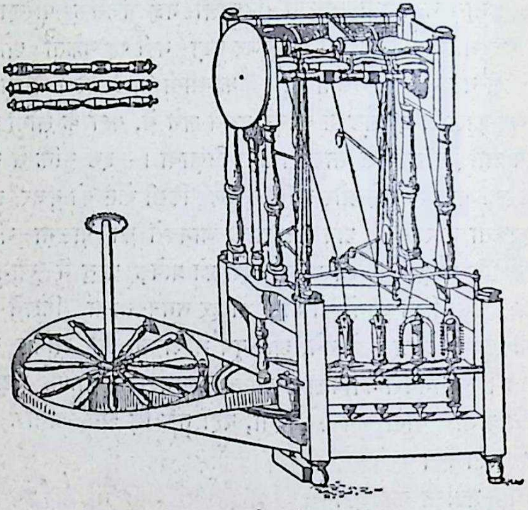

सूत कातने की कल

वाली ढरकी (Flying Shuttle) का आविष्कार किया जिसके द्वारा पहले की अपेक्षा शीघ्र और दूनी चौड़ाई का कपड़ा बुना जाने लगा। पहले कपड़ा केवल २७ इञ्च चौड़ा बुना जाता था, परन्तु इस आविष्कार ने जुलाहों का काम बहुत सरल कर दिया और बड़ी शीघ्रता से वे कपड़ा बुनने लगे। अब सूत कातने वाले काफ़ी मात्रा में जुलाहों को सूत नहीं दे सकते थे। फिर सन् १७६४ में हारग्रीव्स (Hargreaves) नामक लंकेशायर के एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जुलाहे ने एक नये ढँग का कई तकलों का चर्खा तैयार किया, जिसका नाम उसने "स्पिनिंग जेनी" (Spinning Jenny) रक्खा। इससे साधारण चर्खे की अपेक्षा कई गुना सूत कत सकता था, और समय तथा परिश्रम दोनों की बचत होती थी। छोटे बालक तक इस चर्खे को चला सकते थे, और

सूती कपड़े की मिल

जुलाहों को अब खूब सूत मिलने लगा। परन्तु हारग्रीव्स की मशीन से जो सूत निकलता था केवल ताने में काम आता था, और बाने में ऊन अथवा हाथ का बटा हुआ सूत लगाना पड़ता था। पाँच वर्ष पश्चात् सन् १७६९ में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पड़ने लगी। इंगलैंड के उत्तरी-पश्चिमी भागों में पत्थर के कोयले की बहुत-सी खानें थीं, परन्तु अब तक ये बेकार ही पड़ी रहती थीं। अब नई कलों को चलाने के लिये पत्थर के कोयले की आवश्यकता हुई और इंगलैंड के इस भाग का प्रारब्ध जाग उठा। कोयले की खानें अब देश की सम्पत्ति मानी जानें लगीं, और इस भाग के आस-पास कई बड़े-बड़े नगर बसने लगे। यार्कशायर, लैंकाशायर, दक्षिणी वेल्स और क्लाइड की घाटी में कई स्थानों पर कारखाने खोले गये और वहाँ नये नगर बस गये। कोयले के साथ साथ मशीनें बनाने के लिये लोहे की आवश्यकता हुई, जिसके कारण लोहे के व्यवसाय में भी खूब उन्नति हुई, और लोहा निकालने तथा साफ़ करने की नई-नई रीतियाँ निकाली जाने लगीं और स्थान-स्थान पर कई कारखानों में लोहे की अनेक प्रकार की वस्तुएँ बनाई जाने लगीं।

सड़कें तथा नहरें—

व्यवसाय की उन्नति के साथ व्यापार की भी उन्नति हुई, जिसके लिये अच्छी सड़कों की आवश्यकता जान पड़ी। अब तक इंगलैंड की सड़कें बहुत खराब थीं और एक स्थान से दूसरे स्थान पर माल ले जाने में बड़ी कठिनाई होती थी। अब देश में बहुत-सी नई पक्की सड़कें बनाई गईं और इस काम में स्काटलैंड के एक इञ्जीनियर (Macadem) ने बहुत सहायता दी। सड़कों पर रोशनी का प्रबन्ध किया गया और पुरानी तेल की लालटेनों के स्थानों पर अब मुख्य मुख्य सड़कों पर गेस के हंडे लगाये गये, जिनसे लोगों के आने-जाने तथा व्यापार दोनों में सुविधा होने लगी।

सड़कों के साथ-साथ नहरें भी बनने लगीं, जिनके द्वारा नावों पर लाद कर माल ले जाना बहुत सस्ता था। इंगलैंड की सबसे पहली नहर सन् १७६७ में ड्यूक आफ़ ब्रिजवाटर (Duke of Bridgwater) ने जेम्स ब्रिंडले इञ्जीनियर की सहायता से मैनचेस्टर और लिवरपूल में कोयला ढोने के लिये बनवाई थी।

व्यावसायिक-क्रान्ति का प्रभाव—

कलों के आविष्कार तथा कारखानों के खुलने के कारण देश के जीवन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

का ढँग बिल्कुल ही बदल गया, कृषि की ओर बहुत कम ध्यान र गया, और अधिक लाभ होने के कारण अब लोगों का ध्यान व्यवसाय की ओर आकर्षित होने लगा। अपने इन आविष्कारों के कारण इंगलैंड सर्व-प्रथम व्यावसायिक-राष्ट्र बन गया। व्यवसाय के द्वारा इंगलैंड में धन की बड़ी वृद्धि हुई, और उसकी जन-संख्या भी अब पहले की अपेक्षा बहुत काफ़ी बढ़ गई। सन् १७५० में ग्रेट ब्रिटेन की जन-संख्या ६० लाख थी। व्यावसायिक-उन्नति के कारण सन् १८०१ में यह जन-संख्या ६ गुनी हो गई। व्यावसायिक-उन्नति ही के भरोसे इंगलैंड फ्रान्स तथा नैपोलियन के युद्धों का भार सह सका। युद्ध-काल में इस उन्नति में कुछ बाधा पड़ी; परन्तु युद्ध-काल के पश्चात् व्यवसाय तथा व्यापार की उन्नति के कारण इंगलैंड की आर्थिक दशा सुधर सकी।

इस क्रान्ति के पहले देश की अधिकांश जनता दक्षिणी और पूर्वी प्रान्तों में बसी हुई थी। परन्तु इस नई उन्नति के कारण बहुत से लोग उत्तरी तथा पश्चिमी प्रान्तों में, जहाँ कोयले तथा लोहे के नये कारखाने खुल गये थे, जा बसे। इन प्रान्तों के अतिरिक्त अन्य स्थानों में भी जहाँ कारखाने खुले लोग जा बसे। इन कारखानों के निकट के स्थान उन्नति करते करते बड़े-बड़े नगर बन गये। आजकल देश की तीन-चौथाई से भी अधिक जन-संख्या नगरों में रहती है। इन नगरों के आबाद होने के कारण पार्लियामेण्ट की निर्वाचन-पद्धति में भी परिवर्तन करना आवश्यक हो गया। ऊजड़ गाँवों में से दो-दो प्रतिनिधि भेजे जाते थे, परन्तु इन नये नगरों से कोई भी प्रतिनिधि न आते थे। नगरों से प्रतिनिधि भेजने का ज़मींदारों ने बड़ा विरोध किया। कहीं सन् १८३२ में जाकर यह दोष दूर किया गया और नगरों से प्रतिनिधि आने लगे।

हाथ से काम करने वाले कारीगरों ने नई मशीनों को पहले अपना शत्रु समझा, क्योंकि उनको भय था कि इससे उनकी जीविका कमाने में बाधा पड़ेगी। परन्तु मज़दूरों का यह भय निर्मूल निकला और बड़े-बड़े कारखाने खुल जाने पर उनमें बहुत-से मज़दूरों की आवश्यकता पड़ने लगी। फिर भी इतना अवश्य हुआ कि प्रारम्भ में कुछ काल तक मज़दूरों की स्थिति बड़ी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

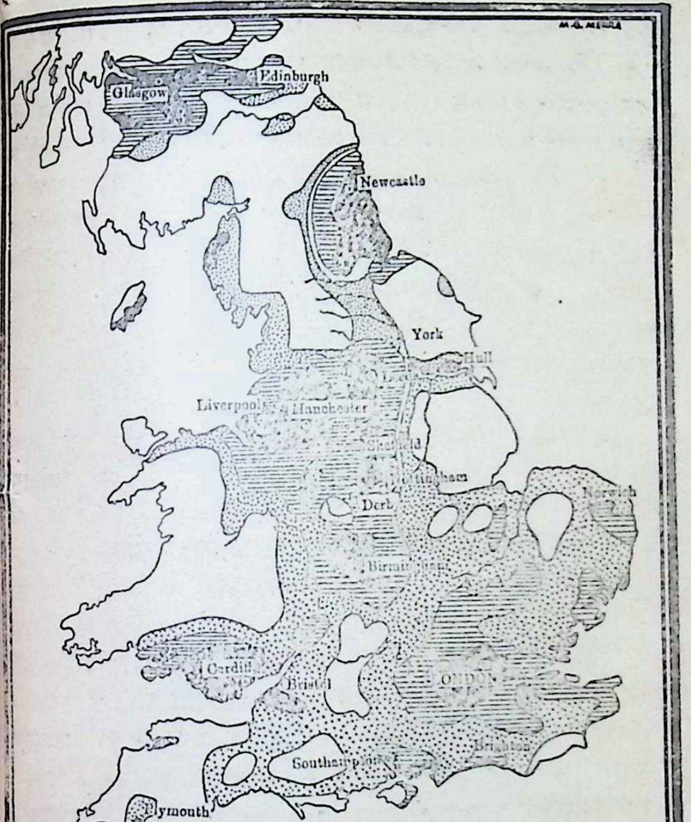

INDUSTRIAL REVOLUTION.

अ०—२८

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डावाँडोल रही, क्योंकि कारखानों के मालिक अपने स्वार्थ के कारण मज़दूरों के प्रति अच्छा व्यवहार न करते थे। आगे चलकर हम बतलावेंगे कि इन दोषों को दूर करने तथा कारखानों द्वारा पैदा हुई नई सामाजिक समस्याओं का निपटारा करने के लिये बहुत-से राज-नियम बनाने की आवश्यकता पड़ी।

उन्नीसवीं तथा बीसवीं शताब्दी

रेलगाड़ी—

उन्नीसवीं शताब्दी के आविष्कार अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम काल के आविष्कारों से कहीं बढ़ कर रहे। सन् १८१४ में जार्ज स्टेफनसन (George Stephenson) ने कोयले की एक खान के लिये कोयला ढोने वाली छोटी गाड़ियाँ खींचने के लिये एक ऐञ्जिन तैयार किया। जेम्स वाट का भाप का ऐञ्जिन पहले ही बन चुका था, परन्तु अब तक उसका केवल मशीनों के चलाने में ही उपयोग हो सकता था। जार्ज स्टेफनसन के आविष्कार द्वारा रेलगाड़ी का बनाना संभव हुआ और अब भाप के ऐञ्जिन से माल ढोने के साथ-साथ

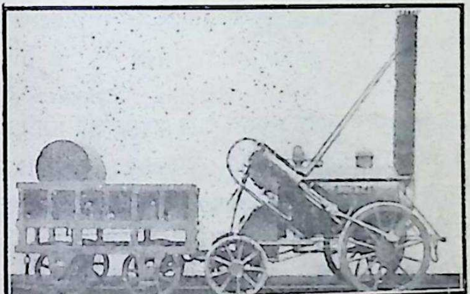

स्टेफनसन का राकेट

सवारी का काम भी लिया जाने लगा। जार्ज स्टेफनसन का प्रसिद्ध ऐञ्जिन राकेट (Rocket) सन् १८३० में मैनचेस्टर तथा लिवरपूल के बीच में रेल-गाड़ी के खींचने के काम में लाया गया। सन् १८३८ में ग्रेट वेस्टर्न रेलवे खोली गई और सन् १८५० तक देश की लगभग सब रेलवे खुल गई। रेल-यात्रा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पहले बहुत मँहगी थी, परन्तु सरकारी नियमों द्वारा इसका किराया कम किया गया, और थोड़े ही वर्षों में सब श्रेणी के लोगों को रेलगाड़ी से लाभ उठाने का अवसर मिलने लगा। प्रारम्भ में तीसरे दर्जे के मुसाफिर जानवरों की भाँति खुले डिब्बों में भर दिये जाते थे। धीरे-धीरे तीसरे दर्जे के यात्रियों की सुविधा का उचित प्रबन्ध किया गया और उन्हें बहुत काफ़ी आराम मिलता है। रेलों के कारण पत्थर के कोयले की मांग बढ़ी और छोटे स्थान उन्नति करके

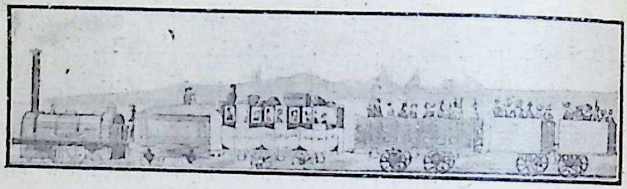

सबसे पहली रेल

नगर बन गये जिनमें मैंचेस्टर, शेफील्ड, लीड्स और बर्मिंघम बहुत प्रसिद्ध हैं। रेलों के कारण देश भर के आने-जाने के मार्ग खुल गये और व्यापार की भी बड़ी उन्नति हुई।

भाप के जहाज़—

रेलगाड़ी के साथ-साथ भाप से चलने वाले जहाज़ भी बनाये गये, जिनके प्रचार से डाँडों तथा पाल से चलने वाले जहाज़ों का युग समाप्त हुआ। प्रारम्भ में ब्रिटेन की नदियों पर चलने वाले छोटे-छोटे भाप के जहाज़ बनाये। फिर उन्नति करते करते एक दिन वह आया कि सन् १७३८ में ग्रेट वेस्टर्न (Great Western) नामक पहले भाप के जहाज़ ने अटलांटिक महासागर को पार किया और चौदह दिन की यात्रा करके वह अमेरिका पहुँचा। इसके पश्चात् और अच्छे अच्छे जहाज़ बनने लगे; और आजकल इतने तेज़ जहाज़ तथा रेलें मौजूद हैं जिनके द्वारा अब महीनों की यात्रा दिनों में समाप्त होती है। पहले जहाज़ लकड़ी के बनाये जाते थे, परन्तु भाप के प्रयोग के कारण अब वे लोहे के बनाये जाने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

डाक का प्रबन्ध—

रेल तथा जहाज़ों के आविष्कारों ने यात्रा तथा व्यापार में सुविधा करने के साथ-साथ डाक के प्रबन्ध में भी बड़ी सहायता दी। अब तक चिट्ठियाँ भेजने का प्रबन्ध संतोषजनक न था, और उसका महसूल इतना अधिक होता था कि साधारण श्रेणी के लोग बहुत कम चिट्ठियाँ भेज सकते थे। सन् १८४० में रोलैंड हिल (Rowland Hill) नामक एक व्यक्ति ने डाक के सुधार का आन्दोलन आरम्भ किया और उसके अनुरोध से महसूल कम, साथ ही, देश के सब भागों के लिये समान कर दिया गया। अब एक पेनी में साधारण पत्र इंगलैंड के किसी भी भाग को भेजा जाने लगा। धीरे-धीरे पत्रों की संख्या आशा से अधिक बढ़ गई और इसलिये थोड़ा महसूल होने पर भी सरकार के डाक-विभाग को हानि के स्थान पर लाभ ही हुआ।

बिजली, तार तथा टेलीफून—

उन्नीसवीं शताब्दी का सबसे बड़ा आविष्कार बिजली का प्रयोग माना जाता है, जिसके सम्बन्ध में सबसे प्रसिद्ध नाम माइकेल फेरेडे (Michael Faraday) का है। बिजली ही के आविष्कार के कारण तार (Telegraph), केबिल (Cable) और टेलीफून (Telephone) आदि का आविष्कार हो सका। सन् १८४४ में इंगलैंड में पहली तार की लाइन बनी और फिर धीरे-धीरे समस्त देश में तार का प्रबन्ध फैल गया। सन् १८५१ में समुद्र पार तार भेजने के लिये अटलांटिक महासागर में पहला केबिल लगाया गया, और आपस में बातचीत करने वाले टेलीफून का सबसे पहले सन् १८७६ में प्रयोग हुआ।

मोटर, हवाई जहाज़ तथा रेडियो—

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम वर्षों में पेटरोल (Petrol) की खोज हुई, जिसके द्वारा मोटर गाड़ियाँ बनने लगीं। इसके पश्चात् हवा में उड़ने वाले वायुयानों (Aeroplanes) का नम्बर आया, और पिछले यूरोपीय युद्ध के समय में पानी के अन्दर चलने वाले जहाज़ (Submarines) भी बना लिये गये। इस प्रकार के आविष्कार बराबर बढ़ते जा रहे हैं और अब बेतार के तार (Wireless Telegraphy), रेडियो (Radio)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इत्यादि द्वारा भूमण्डल के भिन्न-भिन्न भागों में बैठे हुए लोग एक दूसरे से सरलता पूर्वक बातचीत कर सकते हैं।

नये आविष्कारों का प्रभाव--

इन नये आविष्कारों के कारण संसार के आधुनिक जीवन में एक नई जाग्रति उत्पन्न हो गई है। व्यापार का क्षेत्र, जो प्राचीन तथा माध्यमिक काल में बहुत ही संकुचित था, अब इतना बढ़ गया है कि प्रत्येक देश की आर्थिक स्थिति पर संसार भर का प्रभाव पड़ता है। देश-विदेशों के समाचार भी अब बड़ी सुगमता-पूर्वक मिल सकते हैं और समाचार-पत्रों में अब इतनी उन्नति हो गई है कि वे सामाजिक तथा राजनैतिक जीवन का एक मुख्य अंग बन गये हैं। परन्तु इन लाभों के साथ-साथ आविष्कारों से बहुत-सी हानियाँ भी हो रही हैं। सामाजिक जीवन की समस्या दिन प्रति दिन कठिन होती जा रही है, और दरिद्रता, बेकारी, रोग, युद्ध इत्यादि आपत्तियों ने संसार को घेर रक्खा है।

अठारहवीं शताब्दी में सामाजिक स्थिति

व्यावसायिक तथा व्यापारिक उन्नति का देश की सामाजिक स्थिति पर एक गहरा प्रभाव पड़ रहा था। हम ऊपर बतला चुके हैं कि व्यावसायिक क्रान्ति ने स्वतन्त्र कृषकों को मज़दूरी करने पर बाध्य कर दिया और वे अपना ग्रामीण जीवन त्याग कर नगरों में आकर बस गये। इसी उन्नति के कारण देश में बहुत-सी सड़कें तथा नहरें बनाई गईं और नये-नये नगर बसाये गये। फिर भी हमें यह याद रखना चाहिये कि यह काल छोटे नगरों तथा घोड़ा-गाड़ियों का था।

पोशाक—

इस काल में लोगों की पोशाक में एक भारी परिवर्तन हुआ। चटकीले-भड़कीले रंगों की पोशाक के स्थान में अब सादा पोशाकों का व्यवहार होने लगा। बिरजिस (Breeches) के स्थान में पुरुष अब पतलून पहनने लगे। रेशमी मोज़ों और पम्प जूतों का भी व्यवहार होने लगा। लम्बे-लम्बे कोटों के स्थान में छोटे कोट तथा वासकट चालू हुए। पहले लोग कमर में तलवार बाँधते थे, परन्तु अब तलवार के स्थान में लोग छड़ी तथा छाते

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लेकर चलने लगे। बालकों के कपड़ों में भी फेर-फार हुआ। लड़के पाजामे, सफेद वासकट, हरे रङ्ग के कोट, झालरदार खुले गले की कमीज़ें, सफेद मोजे तथा पम्प जूते पहनते थे। लड़कियाँ नीचे गले और छोटी बाहों की फ्राकें, सफेद मोज़े और चप्पल पहनती थीं, और अपने बालों को पीछे की ओर बहाये रखती थीं। स्त्रियाँ अब लम्बी बाहों के हलके कपड़े और छोटे टोप पहनने लगी थीं। जूतों में अब बक्सुए के स्थान में फीते बाँधे जाने लगे।

नागरिक जीवन—

नगरों की सड़कें अभी तंग थीं। सड़कों पर गिट्टी कुटी होती थी जिसके कारण उन पर चलना कष्ट-दायक होता था और लोगों की गाड़ियाँ शीघ्र टूटती थीं। नगरों की सड़कों पर रोशनी का उचित प्रबन्ध नहीं था। रात्रि के समय अब भी यात्रियों को चोर, डाकू तथा गुन्डों का भय रहता था। शांति रखने का काम बूढ़े और कमज़ोर चौकीदारों पर छोड़ा हुआ था। चोर-लुटेरे उनसे भय नहीं खाते थे; केवल उनके डंडों की आवाज़ सुन कर वे इधर उधर हो जाते थे। फिर भी इस समय नगरों की उन्नति की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित हो चला था; और देश का बहुत कुछ धन नगरों को सुन्दर बनाने में लगाया जाने लगा था। लोगों के घर भी पहले की अपेक्षा अधिक सुन्दर तथा हवा और रोशनीदार बनने लगे थे। नगरों के समीप कहीं-कहीं पर बाग़-बगीचे भी थे जहाँ लोग सैर करने को जाते थे।

उच्च श्रेणी के लोगों के रहन-सहन में भी बहुत परिवर्तन हो गया था। उनको अब मोटी-झोटी और सादा खुराक पसन्द न थी। फ्रान्सीसी युद्धों में फ्रान्सीसियों के सम्पर्क के कारण बढ़िया और स्वादिष्ट पदार्थों के खाने का शौक़ हो चला था। भोजन करते समय स्वच्छता तथा नम्रता का बहुत ध्यान रक्खा जाता था। नाटक देखने की ओर लोगों की रुचि बढ़ रही थी और नाटक-घरों में स्त्रियों का पार्ट स्त्रियाँ ही करने लगी थीं। नाच तथा संगीत में भी बहुत उन्नति हो रही थी। बच्चे फुटबाल, आँख मिचोली, गोली आदि आजकल के बहुत-से खेल तब भी खेलते थे। खिलौने बाज़ारों में बहुत कम मिलते थे; परन्तु घरों में अनेक प्रकार की गुड़ियाएँ बनाई जाती थीं। उस काल में सरकस के भी खेल प्रारम्भ हो गये थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आजकल की भाँति दुकानें नहीं थीं; खाने-पीने के पदार्थ अधिकतर खोमचों और ठेलों पर बेचे जाते थे। खोमचे वाले सुरीली आवाज़ें लगाकर अपनी चीज़ें बेचते थे। पुराने काफी-घरों के स्थानों में लोगों ने अपनी क्लब (Clubs) बना ली थीं जहाँ बैठकर वे जुआ खेलते थे। इस जुए के व्यसन में सैकड़ों लोग बरबाद हो गये।

जेलख़ाने तथा फ़ौजदारी क़ानून--

अठारहवीं शताब्दी के जेलखानों की दशा बड़ी शोचनीय थी। जेलखानों में अन्धेरा होता था और गंदगी से भरे होते थे। वहाँ कई प्रकार के रोग फैलते थे जिनके कारण कितने ही कैदी मर जाते थे। जेलों के कर्मचारी निर्दयी होते थे, और यदि बाहर से भोजन का प्रबन्ध न किया जाता तो कई कैदी तो भूखों मर जाते। संक्षेप में पशुओं का जीवन उस समय के कैदियों के जीवन की अपेक्षा कहीं अच्छा था। दण्ड बड़े कठोर दिये जाते थे और लगभग १२० अपराधों के बदले प्राण-दण्ड मिलता था। प्राण-दण्ड अब भी सड़कों के किनारे अथवा खुले मैदानों में दिया जाता था।

शिक्षा तथा साहित्य--

अठारहवीं शताब्दी में भी जन-साधारण की पढ़ाई का कोई उचित प्रबन्ध न था। अधिकांश जनता घोर अन्धकार में थी। किसी-किसी स्थान पर बूढ़ी स्त्रियाँ अपने स्कूल चलाती थीं। परन्तु अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम काल में कुछ लोगों के ध्यान में यह बात आई कि जन-साधारण के शिक्षण का कुछ न कुछ प्रबन्ध होना चाहिये। अतः ग़रीब लोगों को शिक्षा देने के अभिप्राय से इधर-उधर कुछ थोड़े से स्कूल खोले गये। इन स्कूलों में यह ध्यान नहीं रखा जाता था कि शिक्षक योग्य और पढ़े-लिखे हों। चाहे जिस व्यक्ति को, जिसे स्कूलों के प्रबन्धक चाहते, अध्यापक नियुक्त कर देते थे। स्कूलों में शिक्षा अधिकतर कंठस्थ दी जाती थी और पढ़ने की पुस्तक प्रायः बाईबिल होती थी। बालकों को सुन्दर लिखाई का अभ्यास कराया जाता था, और लड़कियों को सीना, काढ़ना और गूथना सिखलाया जाता था। कई स्कूलों में तो लाभदायक कार्य होता था। विद्यार्थियों को सप्ताह के सातों दिन स्कूल जाना पड़ता था, और रविवार को उन्हे गिर्जे जाना पड़ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था। विश्वविद्यालयों की दशा बड़ी लज्जाजनक थी। बिना किसी योग्यता के तथा बिना परीक्षा के उपाधियाँ प्रदान कर दी जाती थीं। शिक्षा देने का कार्य अब भी पादरियों के हाथ में था। पाठ याद न करने पर लड़कों को कठोर दण्ड दिया जाता था।

इस काल में साहित्य ने भी बहुत उन्नति की। इस समय के प्रसिद्ध लेखक जोनाथन स्विफ्ट (Jonathan Swift) ने अपनी विख्यात रचना "गुलिवर की यात्रा" (Gulliver's Travels) लिखकर लोगों को अठारहवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल की राजनीतिक स्थिति के दोष दिखलाये। डाक्टर जानसन ने अँग्रेज़ी भाषा का कोष लिखकर साहित्य की बड़ी सेवा की। गोल्डस्मिथ ने अपनी प्रसिद्ध रचनाओं (Vicar of Wakefield, The Deserted Village, The Village School Master etc.) द्वारा उस काल के सामाजिक जीवन तथा ग़रीबों की स्थिति पर एक अच्छी खासी टिप्पणी की। गिबन (Gibbon) ने भी उसी समय अपनी विख्यात रचना "रोमन साम्राज्य का पतन एवं अन्त" लिखकर समाप्त की। प्रसिद्ध उपन्यास लेखक सर वाल्टर स्काट (Sir Walter Scott) भी उसी काल का एक अनुपम रत्न है। उस काल में और भी अन्य प्रसिद्ध लेखक तथा कवि हुए हैं जिनका उल्लेख करना हम आवश्यक नहीं समझते।

Exercises.

1. What do you understand by the term "Industrial Revolution"? How did it affect the position of England?
2. What were the chief inventions of the eighteenth century? Discuss their good and evil effects.
3. Describe some of the important scientific discoveries and mechanical inventions of the nineteenth century.
4. Give a brief of the social life in the nineteenth Century.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तेतीसवाँ परिच्छेद

जार्ज चतुर्थ तथा विलियम चतुर्थ

सन् १८२०—३०	जार्ज चतुर्थ
,, १८२२	केटो स्ट्रीट का षड्यन्त्र
,, १८२८	यूनान की स्वतन्त्रता
,, १८२९	केथलिकों का उद्धार
,, १८३०—३७	विलियम चतुर्थ
,, १८३२	पहला सुधार-नियम
,, १८३३	दासों का उद्धार

जार्ज चतुर्थ का चरित्र—

वाटरलू के युद्ध के पाँच वर्ष पश्चात् सन् १८२० में जार्ज तृतीय की मृत्यु हुई और उसका पुत्र "जार्ज चतुर्थ" के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। जार्ज चतुर्थ निकम्मा तथा व्यभिचारी था और उसने शासन-कार्य की ओर तनक भी ध्यान न दिया। उसने अपनी रानी केरोलीन (Caroline) के साथ भी बहुत बुरा व्यवहार किया। जार्ज चतुर्थ उसका परित्याग करना चाहता था; परन्तु वह ऐसा करने में सफल न हो सका। राज्याभिषेक-संस्कार के समय उसने रानी को वेस्टमिंस्टर एवे में घुसने तक की आज्ञा न दी, और इस अपमान से पीड़ित होकर वेचारी केरोलीन दूसरे ही मास में परलोक सिधारी। अपनी विलासिता तथा आलस्य के कारण उसको सारा कार्य मन्त्रियों के हाथों में छोड़ देना पड़ा और उस काल की राजनीति पर उसका कोई भी व्यक्तिगत प्रभाव न पड़ा। इस समय नैपोलियन के युद्धों के पश्चात्

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इंगलैंड की आर्थिक तथा व्यापारिक दशा बहुत सोचनीय हो रही थी। इसी कारण देश में कई स्थानों पर विद्रोह तथा षड्यन्त्र भी हुए जिनमें सबसे मुख्य केटो स्ट्रीट का षड्यन्त्र (Cato Street Conspiracy) है, जिसमें थिसिलवुड के नेतृत्व में २५ आदमियों ने सारे मंत्रियों के प्राण लेने का प्रयत्न किया। अकस्मात् उनका भंडा फूट गया। इस पर सब पकड़ लिये गये, कुछ को प्राण-दण्ड मिला, और कुछ को देश-निकाला।

यूनान की स्वतन्त्रता का युद्ध—

सन् १८२१ में यूनान की ईसाई जनता ने मुसलमान तुर्कों के शासन के विरुद्ध विद्रोह खड़ा कर दिया। समस्त ईसाई देशों की यूनान के प्रति सहानुभूति थी, क्योंकि वे एक ईसाई प्रान्त को मुसलमानी साम्राज्य का भाग रहते देखना सहन नहीं कर सकते थे। इस समय जार्ज केनिंग (George-Canning) इंगलैंड का प्रधान-मंत्री था। उसके अनुरोध से बहुत-से अँग्रेज़ स्वयं-सेवक बनकर यूनान की सहायता के लिये पहुँचे। इसी प्रकार फ्रान्स तथा रूस ने भी यूनानियों की स्वतन्त्रता के युद्ध में सहायता की। सन् १८२७ में नेवेरिनो (Navarino) के स्थान पर तुर्कों की पराजय हुई और सन् १८२९ में टर्की के सुलतान को यूनान की स्वतन्त्रता स्वीकृत करने पर बाध्य होना पड़ा। आगे चलकर हम देखेंगे कि टर्किश साम्राज्य के अन्य ईसाई प्रान्तों ने भी इसी प्रकार विद्रोह किया, परन्तु इंगलैंड ने इनकी कोई सहायता न की, क्योंकि इसके पश्चात् अँग्रेज़ी विदेशी नीति बिल्कुल बदल गई।

केथलिकों का उद्धार—

केनिंग के अतिरिक्त जार्ज चतुर्थ के शासन-काल का दूसरा प्रसिद्ध प्रधान-मंत्री ड्यूक आफ़ वेलिंगटन हुआ है, जिसकी वीरता के विषय में नैपोलियन के युद्ध के सम्बन्ध में काफ़ी वर्णन हो चुका है। उसके मंत्रित्वकाल में केथलिकों के उद्धार के आन्दोलन ने बड़ा ज़ोर पकड़ा। यह प्रश्न आयरलैंड के संयोग के समय से बराबर चल रहा था और धीरे-धीरे लोगों का विचार होता जाता था कि धर्म के नाम पर केथलिकों के साथ अत्याचार करना उचित नहीं है। इस समय आयरलैंड के केथलिकों का नेता डेनियल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओकोनल (Daniel O, Connel) नामक एक वैरिस्टर था जिसने प्रजा में जाग्रति पैदा करने के अभिप्राय से एक संस्था (Catholic Association) बनाई जिसके द्वारा केथलिकों के उद्धार के समर्थन में बहुत से जोशीले व्याख्यान दिये गये। धीरे-धीरे यह आन्दोलन बढ़ता गया और सन् १८२६ में पार्लियामेण्ट को "केथलिकों के उद्धार" (Catholic Emancipation Act) का नियम पास करना पड़ा। इस नियम के अनुसार केथलिकों को समस्त सामाजिक तथा राजनैतिक अधिकार प्राप्त हो गये, और इसी के साथ साथ पुराने परीक्षा-नियम (Test Act) के हटा देने के कारण केथलिकों को सरकारी नौकरी तथा पार्लियामेण्ट के सदस्य होने का अधिकार भी मिल गया।

फ़ौजदारी क़ानून का सुधार—

इस समय राबर्ट पील (Robert Peel) आन्तरिक विभाग का मंत्री (Home Secretary) था। उस समय फ़ौजदारी क़ानून बहुत कठोर था। कर्ज़ लेने वालों को साधारण अपराधियों के समान जेल में डाल दिया जाता था। लगभग दो सौ अपराधों पर प्राणदण्ड दिया जाता था। जेलों में कैदियों के प्रति बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था। कैदियों के मित्र तथा सम्बन्धी उन्हें जेलों में भोजन की वस्तुएँ भेजते थे; अन्यथा उन्हें भूखा मरना पड़ता था। प्राणदण्ड सार्वजनिक स्थानों पर दिया जाता था, और प्रत्येक दिन १७ लोगों का बध अकेले लन्दन नगर में किया जाता था। पील के अनुरोध से फ़ौजदारी क़ानून (Criminal Code) का संशोधन किया गया, और एक नियम बनाया गया जिसके अनुसार सौ से अधिक छोटे-छोटे अपराधों पर, जिन पर अब तक प्राण-दण्ड दिया जाता था, दण्ड कम किया गया; क्योंकि इस समय यह विचार फैल रहा था कि जहाँ तक हो सके अपराधियों के प्रति भी मनुष्यता का व्यवहार किया जाय। इसी के साथ-साथ पुलिस के प्रबन्ध में भी सुधार किया गया और पुराने अयोग्य तथा अशिक्षित चौकीदारों के स्थान पर बाक़ायदा पुलिस का प्रबन्ध किया गया, जिससे देश में शान्ति-स्थापन कार्य में बड़ी सहायता मिली और वर्त्तमान पुलिस की नींव पड़ी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Rublic Domain. Digitization by eGangotri

विलियम चतुर्थ तथा सुधार-युग—

सन् १८३० में जार्ज चतुर्थ परलोक सिधारा और उसका भाई "विलियम चतुर्थ" के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। वह बहुत दिन तक जल-सेना में एक उच्च पदाधिकारी रह चुका था, और राजा होने पर उसने शासन-कार्य में भी काफ़ी योग्यता का परिचय दिया। जार्ज चतुर्थ के चरित्रहीन होने के कारण जनता की राज-भक्ति में बहुत कमी आ गई थी; परन्तु विलियम चतुर्थ ने राजा होने पर अपने गुणों द्वारा फिर प्रजा के मन को मोह लिया।

विलियम चतुर्थ के राज्य-काल से इंगलैंड के इतिहास में सुधारों का युग प्रारम्भ होता है। इस समय विग-दल फिर शक्तिशाली हो गया, और इस काल के विग नेताओं ने सुधारों के बड़े-बड़े महत्त्वपूर्ण प्रस्ताव उपस्थित किये। केथलिकों का उद्धार तथा फ़ौजदारी क़ानून का सुधार जार्ज चतुर्थ ही के समय में हो चुका था; अतः विग नेताओं ने अब अन्य राजनैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में सुधारों की ओर ध्यान दिया, और इस समय का प्रारम्भ किया हुआ सुधारों का सिलसिला अब तक बराबर चलता आ रहा है।

पार्लियामेण्ट के सुधार का प्रश्न--

इस समय सबसे बड़े सुधार की आवश्यकता पार्लियामेण्ट की निर्वाचन-पद्धति में थी। लोकसभा के चुनाव में बहुत-से ऊजड़ स्थानों (Rotten Boroughs) को, जिनकी जन-संख्या अब बहुत कम रह गई थी, प्रतिनिधि भेजने का अधिकार बराबर चला आता था; और इसके विपरीत बहुत-से ऐसे स्थानों से जो अब व्यवसायी-क्रान्ति के कारण बड़े नगर हो गये थे कोई प्रतिनिधि न बुलाया जाता था। ऊजड़ स्थानों के प्रतिनिधि प्रायः अशिक्षित होते थे। बड़े ज़मींदारों ने अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये ऐसे बहुत-से स्थानों को मोल ले लिया था, तथा वे अपने ही किसी खुशामदी को इन स्थानों से निर्वाचित करके लोक-सभा में भेज देते थे। इसके पहले भी कई बार पार्लियामेण्ट के सुधार का प्रश्न उठा, और जैसा हम पहले बतला चुके हैं छोटे पिट ने इस सम्बन्ध में एक प्रस्ताव भी उपस्थित किया था, परन्तु ज़मींदारों के विरोध तथा फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति के भय के कारण यह प्रयत्न निष्फल रहा। अब लार्ड रसल (Russel) ने पार्लियामेण्ट के सुधार का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बीड़ा उठाया, और उसके अनुरोध से सन् १८३२ में बड़े वाद-विवाद के पश्चात् पार्लियामेण्ट का पहला सुधार-नियम (First Reform Act) स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार पार्लियामेण्ट में, जिसमें अब तक ज़मींदार तथा धनिक लोग ही भरे हुए थे, मध्यम श्रेणी के लोगों का भी प्रवेश हो गया। पार्लियामेण्ट के सुधार का विस्तृत वर्णन अगले परिच्छेद में किया जायगा।

दासों का उद्धार--

स्यूडरकाल में जान हाकिंस ने दास-व्यापार की प्रथा चलाई थी। अफ्रीका के हब्शियों को पकड़ कर उपनिवेशों में काम करने के लिये भेज दिया जाता था। दासों के प्रति उनके स्वामी बड़ी कठोरता का व्यवहार करते थे, और उनसे इतना कड़ा काम लेते थे कि वे बेचारे दास रह कर जीवन व्यतीत करने की अपेक्षा मर जाना कहीं अच्छा समझते थे। स्वामियों का अपने दासों पर पूर्ण अधिकार होता था और वे उनको अपने पशुओं तथा अन्य वस्तुओं की भाँति बेच भी सकते थे। क्लार्कसन (Clarkson) तथा विलबरफोर्स (Wilberforce) नामक दो दयावान सज्जनों ने दासों के उद्धार का आन्दोलन आरम्भ किया, और पहले वर्षों में मेथोडिस्ट संस्था के दया-प्रचार के कारण इस आन्दोलन में अब सहयोग देने वाले भी बहुत से मिल गये। परिणाम यह हुआ कि सन् १८३३ में दासों की स्वतन्त्रता का प्रस्ताव (Abolition of Slavery Act) स्वीकृत हुआ, जिसके द्वारा इस घृणाजनक प्रथा का अन्त हुआ। इस प्रकार सारे दास स्वतन्त्र कर दिये गये और भविष्य के लिये दास बनाना या बेचना अपराध ठहराया गया।

Exercises.

1. Give a brief account of the reign of George IV and describe his character.
2. What important reforms were introduced during the time of William IV ? Estimate the importance of his reign.
3. Write short notes on :—
   Cato Street Conspiracy, Catholic Emancipation, Abolition of Slavery and Greek War of Independence.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चौंतीसवाँ परिच्छेद

सुधारों का युग

सन् १८३२	पार्लियामेण्ट का पहला सुधार-नियम
„ १८३३	कारखानों के सुधार का पहला नियम
„ १८३४	दरिद्र-संरक्षण-नियम का सुधार
„ १८३५	स्थानीय स्वराज्य का सुधार
„ १८६७	पार्लियामेण्ट का दूसरा सुधार-नियम
„ १८७०	स्वतन्त्र व्यापार
„ १८७२	बैलेट ऐक्ट
„ १८८४	पार्लियामेण्ट का तीसरा सुधार-नियम
„ १९११	पार्लियामेण्ट ऐक्ट
„ १९१८	शिक्षा-सम्बन्धी सुधार
„ १९१८ व १९२८	स्त्रियों का पार्लियामेण्ट में प्रवेश

(क) पार्लियामेण्ट के सुधार का आन्दोलन

पार्लियामेण्ट के निर्वाचन में दोष—

अठारहवीं शताब्दी में अन्त तक पार्लियामेण्ट ने अपने अधिकार लगभग सब प्राप्त कर लिये थे ; परन्तु उसकी निर्वाचन-शैली में आकर बहुत से दोष थे, जिनमें सुधार करने की आवश्यकता थी। जिन स्थानों से प्रतिनिधि बुलाये जाते थे, उनमें परिवर्तन करना अब अत्यन्त आवश्यक हो गया था। प्राचीन स्थानों में से, जिनको प्रतिनिधि भेजने का अधिकार प्राप्त

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

था, अब बहुत से केवल ऊजड़ गाँव (Rotten Boroughs) रह गये थे और उनकी जन-संख्या इतनी कम रह गई थी कि वहाँ से प्रतिनिधि बुलाना बिल्कुल बेकार था। कई ऐसे स्थानों में ५ या ६ से अधिक निर्वाचक न थे। इसके विपरीत व्यवसायी-क्रान्ति के कारण बर्मिंघम, मांचेस्टर, लीड्स तथा

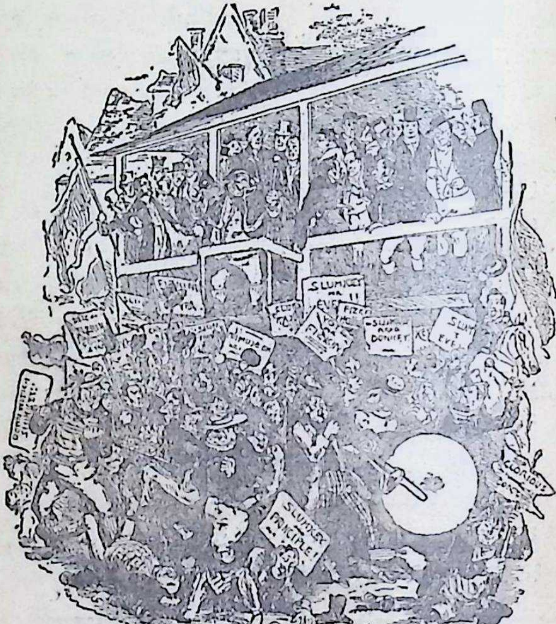

प्राचीन चुनाव का दृश्य

शेफील्ड आदि बहुत-से स्थान जो पहले छोटे थे, अब उन्नति पाकर बड़े नगर हो गये थे, और वहाँ से कोई, प्रतिनिधि लोक-सभा में नहीं भेजा जाता था। इसलिये यह उचित जान पड़ा कि उनको प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया जाय। इसके अतिरिक्त पार्लियामेण्ट के निर्वाचन में वोट देने का अधिकार केवल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़े ज़मींदारों तथा धनिक लोगों को प्राप्त था। और वह जिसे चाहते थे नामज़द कर देते थे। इस कारण मध्यम तथा साधारण जनता राजनैतिक अधिकारों से बिल्कुल वंचित थी। निर्वाचन के सुधार का प्रश्न बहुत दिनों से चल रहा था, परन्तु ज़मींदारों के विरोध के कारण यह आवश्यकीय सुधार बहुत काल तक रुका पड़ा रहा। अब धीरे-धीरे व्यापार तथा शिक्षा की उन्नति के कारण जनता में जागृति फैलती जाती थी और इसलिए इस सुधार के आन्दोलन ने अब इतना बड़ा रूप धारण किया कि उसमें अधिक टाल-मटोल करना असंभव हो गया।

पहला सुधार-नियम—

जैसा ऊपर लिखा जा चुका है पार्लियामेण्ट के सुधार का पहला नियम लार्ड रसल के अनुरोध से विलियम चतुर्थ के राज्य-काल में बड़े वाद-विवाद के पश्चात् सन् १८३२ में स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार जिन स्थानों की जन-संख्या २००० से कम थी उसका लोक-सभा के लिये प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन लिया। जिन स्थानों की संख्या २००० और ४००० के बीच में थी उनको दो प्रतिनिधि भेजने का अधिकार दिया गया। इस नये सुधार से ५८ ऊजड़ स्थानों का प्रतिनिधि भेजने का अधिकार छीन लिया गया, और ३० छोटे स्थानों को केवल एक प्रतिनिधि भेजने का अधिकार रह गया। इस प्रकार जो जगह खाली हुई वे बड़े-बड़े नगरों तथा ज़िलों में बाँट दी गई। इसके अतिरिक्त वोट देने के नियमों में भी संशोधन किया गया। नगरों में उन लोगों को जो दस पाउंड वार्षिक किराये के घर में रहते थे और गावों में उनको जो पचास पाउंड वार्षिक लगान देते थे, वोट देने का अधिकार दे दिया गया। इस प्रकार मतदाताओं की संख्या बहुत अधिक हो गई और मध्यम श्रेणी की जनता का पार्लियामेण्ट में प्रवेश हुआ और ज़मीदारों तथा धनिक लोगों की जमी हुई प्रभुता का अन्त हुआ। इस सुधार-नियम के पश्चात् मध्यम श्रेणी तथा मज़दूर वर्ग के हित के लिये कई महत्व-पूर्ण सामाजिक सुधार किये गये। समाचार पत्रों में भी पार्लियामेण्ट की बैठकों की रिपोर्ट भी छपने लगी और उस पर टीका टिप्पणी भी होने लगी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चार्टिस्ट आन्दोलन—

साधारण जनता को अब भी कोई राजनैतिक अधिकार न मिला। अतः पहले सुधार-नियम के परिवर्तनों को साधारण देश-वासियों ने अधूरा समझा और वे उससे सन्तुष्ट न हो सके। इसी समय देश में अनाज बहुत मँहगा हो रहा था और सहस्रों मनुष्य भूखों मरते थे। ऐसी स्थिति में किसानों तथा मज़दूरों ने एक भयंकर आन्दोलन खड़ा किया; और फियरगस ओकानर (Feargus O'Connor) के नेतृत्व में एक बहुत बड़ा प्रार्थना-पत्र सन् १८३७ में तैयार किया गया, जिसका नाम "जनता का अधिकार पत्र" (People's Charter) रक्खा गया। इसी कारण इस आन्दोलन के समर्थक चार्टिस्ट कहलाये और उन्होने देश में विराट् सभाएँ करके अपने आन्दोलन को एक बड़ा भारी रूप दिया। चार्टिस्ट दल की यह मुख्य माँगें थीं। (१) २१ वर्ष से अधिक अवस्था के सब लोगों को बिना किसी आय के वोट देने का अधिकार दे दिया जाय, (२) पार्लियामेण्ट के सदस्यों को वेतन मिला करे, जिससे ग़रीब लोग भी सदस्य हो सकें। (३) लोग अपनी वोट गुप्त रूप (Ballot) से दें ताकि वोट देने वाले पर अनुचित दबाव न पड़े, (४) पार्लियामेण्ट का निर्वाचन प्रत्येक वर्ष हुआ करे (५) सदस्यों की संख्या निर्वाचन क्षेत्र के वोटरों की संख्या के अनुसार हो और (६) पार्लियामेण्ट का सदस्य होने के लिये सम्पत्ति का होना आवश्यक न हो। इस आन्दोलन के समर्थन में स्थान-स्थान पर सभायें की गईं और उत्तेजनापूर्ण भाषण दिये गये। चार्टिस्ट दल वाले झगड़े-फ़िसाद पर भी उतारू थे। सन् १८३९ में कई स्थानों में उपद्रव हुए और दक्षिणी वेल्स (South Wales) के न्यू पोर्ट (New Port) नामक नगर में तो सेना चार्टिस्टों के जलूस पर गोली चलाने के लिये बाध्य हुई। उनकी माँगें किसी तरह से अनुचित न थीं और आगे चलकर स्वयं पार्लियामेण्ट ने लगभग इन सब को मान लिया; परन्तु इस समय सरकार ने चार्टिस्ट आन्दोलन को दबाना ही उचित समझा और बड़े-बड़े नेताओं को पकड़ कर बन्दीगृह भेज दिया। सन् १८४८ में यूरोप के कई देशों में क्रान्ति-कारियों ने आन्दोलन किया जिसके फलस्वरूप चार्टिस्टों ने फिर अपना आन्दोलन जारी किया और यह निश्चय किया कि वे सब एक जलूस निकाल कर लोक-सभा में जायँ और अपना

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रार्थना-पत्र पेश करें। परन्तु सरकार ने पुलिस तथा सेना की सहायता से जलूस को रोक दिया और चार्टिस्ट दल वाले तितर बितर हो गये। इस प्रकार यह आन्दोलन सन् १८३७ में आरंभ हुआ था, और धीरे-धीरे सन् १८४८ तक पूरी तरह शान्त हो गया।

चार्टिस्ट दल की विफलता का मुख्य कारण यह था कि देश में रेलों के खुलने से बहुत कुछ बेकारी दूर हो गई थी। दूसरे कार्न-ला के रद्द होने से अनाज सस्ता हो गया था। तीसरे मज़दूरों के हित के लिये पार्लियामेण्ट ने भी बहुत से नियम बना दिये थे। इन कारणों से देश की पाँच प्रति सैकड़ा जनता की भी सहानभूति चार्टिस्ट सुधारवादियों के प्रति न थी। फिर भी यह कहना पड़ेगा कि उस समय तो चार्टिस्टों की बातों पर लोगों ने विचार न किया, परन्तु धीरे धीरे पार्लियामेण्ट ने आगे चलकर एक वार्षिक-पार्लियामेण्ट को छोड़ कर उनकी सब माँगें पूरी कर दीं।

दूसरा सुधार-नियम—

सन् १८६७ में लार्ड डिज़रायले (Disraeli) के मंत्रित्वकाल में पार्लियामेण्ट के सुधार का दूसरा नियम (Second Reform Act) स्वीकृत हुआ। इसके अनुसार नगरों में उन सब लोगों को, जिनका अपना घर का मकान हो अथवा जो कम से कम १० पाउंड प्रतिवर्ष किराया देते हों, वोट देने का अधिकार दे दिया गया, और ग्रामों में ५० पाउंड वार्षिक लगान के स्थान पर अब केवल १२ पाउंड वार्षिक लगान वालों को वोटर बना दिया गया। इस प्रकार वोटरों की संख्या पहले की अपेक्षा बहुत अधिक हो गई। अब मध्यम श्रेणी के अतिरिक्त नगरों के साधारण लोगों के प्रतिनिधियों का भी पार्लियामेण्ट में प्रवेश हुआ।

गुप्त वोटों का प्रबन्ध—

निर्वाचन-पद्धति में एक दोष यह भी था कि खुली सभा में हाथ उठा कर वोट दी जाती थी। इससे सब को पता लग जाता था कि किसने किसको वोट दी है। इसलिये जिस निर्वाचन में कोई प्रभावशाली ज़मींदार खड़ा होता था उसमें उसके दबाव में रहने वाले लोग स्वतन्त्रतापूर्वक अपनी सम्मति नहीं देते थे। सन् १८७२ में ग्लेडस्टन (Gladstone) ने एक नियम पास कराया

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो गुप्त वोट नियम (Ballot Act) कहलाता है, और जिसके अनुसार छिपाकर वोट देने का प्रबन्ध किया गया। वोटर एक काग़ज़ पर जिसके लिये वोट देना चाहें उसके नाम के सामने एक निशान लगा कर इस काग़ज़ को स्वयं एक सन्दूक में डाल देता है और अन्त में यह सब काग़ज़ गिन लिये जाते हैं। इससे पता नहीं लगने पाता कि किसने किसके लिये वोट दी है और इस प्रकार निर्वाचन की प्रथा में दवाव का बहुत कम अवसर रह जाता है।

तीसरा सुधार-नियम—

सन् १८८४ में ग्लेडस्टन ही के मंत्रित्व-काल में पार्लियामेण्ट के सुधार का तीसरा नियम (Third Reform Act) पास हुआ, जिसके अनुसार नगरों तथा ग्रामों दोनों के लिये यह नियम कर दिया गया कि प्रत्येक मकान-दार तथा किरायेदार पार्लियामेण्ट की लोक-सभा के चुनाव में वोट दे सकता है। इस प्रकार वोटरों की संख्या अब और भी अधिक बढ़ गई और मज़दूर लोग तक वोट देने लगे। लोक-सभा में अब प्रत्येक श्रेणी के मनुष्य स्थान पाने लगे और इनके द्वारा उसका रूप वास्तविक जातीय-सभा का हो गया।

सन् १९११ का पार्लियामेण्ट ऐक्ट—

सन् १९११ में पार्लियामेण्ट के दो भागों, अर्थात् लोक-सभा तथा लार्ड-सभा के परस्पर सम्बन्ध का भी निश्चय रूप से निपटारा कर दिया गया। पार्लियामेण्ट की लोक-सभा ही वास्तव में देश की प्रतिनिधि-सभा है, क्योंकि इसी के सदस्यों का जन-साधारण द्वारा निर्वाचन होता है। इसलिये सन् १९११ के नियम में लोक-सभा ही को प्रधान स्थान दिया गया और यह निश्चित कर दिया गया कि धन सम्बन्धी प्रस्तावों पर वाद-विवाद करने का केवल लोक-सभा ही को अधिकार है। अन्य प्रस्तावों के विषय में भी यह निश्चित किया गया कि यदि किसी प्रस्ताव को लोक-सभा तीन बार बराबर पास किये जायँ, तो ऐसी स्थिति में लार्ड-सभा का विरोध होने पर भी वह प्रस्ताव राजा के हस्ताक्षर के पश्चात् राज-नियम बन जायगा। इसी नियम के अनुसार लोक-सभा की अवधि सात वर्ष से घटा कर पाँच वर्ष कर दी गई, और उनके सदस्यों के लिये ४०० पाउंड वार्षिक बेतन भी नियत कर दिया गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन् १६१८ तथा १६२८ के सुधार—

पार्लियामेण्ट के पहले तीन सुधार-नियमों के अनुसार देश के अधिकांश पुरुष वोटर होने लगे थे; परन्तु स्त्रियाँ अभी तक राजनैतिक अधिकार से वंचित थीं। यूरोपीय महायुद्ध के पश्चात् स्त्रियों ने भी संगठन करके राजनैतिक अधिकारों के लिये आन्दोलन आरंभ किया। इसका परिणाम यह हुआ कि सन् १६१८ में यह नियम (Representation of People Act) बना दिया गया कि २१ वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक पुरुष को और ३० वर्ष से अधिक आयु की प्रत्येक स्त्री को पार्लियामेण्ट के चुनाव में वोट देने का अधिकार है। परन्तु स्त्रियाँ इन अवस्था के भेद के कारण सन्तुष्ट न हुईं, और आन्दोलन बराबर जारी रहा। सन १६२८ में यह भेद भी हटा दिया गया और स्त्री तथा पुरुष दोनों को २१ वर्ष की अवस्था प्राप्त करने पर वोट देने का अधिकार मिलने लगा। इस प्रकार स्त्री तथा पुरुषों के राजनैतिक अधिकार समान कर दिये गये, और स्त्रियाँ भी प्रत्येक सभा की सदस्य होने लगीं। आजकल पार्लियामेण्ट में कई स्त्रियाँ सदस्य हैं और उनको मंत्रि-मण्डल तक में स्थान मिलने लगा है। इस प्रकार लोक-सभा आज पूर्ण रूप से जाति की प्रतिनिधि-सभा हो गई है, और लोक-सभा ही के हाथों में शासन की बागडोर होने के कारण ब्रिटेन का शासन अब वास्तविक रूप से "जातीय शासन" कहा जा सकता है।

(ख) सामाजिक तथा आर्थिक सुधार के नियम

उन्नीसवीं शताब्दी इंगलैंड के इतिहास में सुधारों का युग मानी जाती है। इस काल में राजनैतिक क्षेत्र के अतिरिक्त सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्र में भी बहुत से सुधार हुए। इनमें से केथलिकों का उद्धार, दास-प्रथा का निवारण, फ़ौजदारी क़ानून का संशोधन इत्यादि का पीछे वर्णन किया जा चुका है। इनके अतिरिक्त सामाजिक तथा राजनैतिक क्षेत्र में जो अन्य सुधार हुए उनमें से मुख्य-मुख्य का नीचे उल्लेख किया जाता है। फ्रान्स के राज्य-क्रान्ति के पश्चात् ब्रिटेन के राजनीतिज्ञों को किसी प्रकार की हलचल का भय न रहा, और इस कारण अब वे निश्शंक होकर देश के सुधार की ओर ध्यान देने लगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कारख़ानों के सुधार के नियम —

व्यवसाई-क्रान्ति के कारण मज़दूरों की समस्या की ओर सरकार का विशेषरूप से ध्यान आकर्षित हुआ। ग्राम वासियों को अपने घर छोड़ कर नगरों में जा बसने के लिये बाध्य होना पड़ा और वहाँ कारख़ानों में मज़दूरी करने लगे। कारख़ानों के मालिक अपने स्वार्थ तथा लोभ के कारण मज़दूरों के प्रति बड़ा बुरा व्यवहार करते थे और मज़दूरों के हित की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देते थे। कभी-कभी उनसे दिन-रात काम लिया जाता था और उनको वेतन इतना कम दिया जाता था कि उससे उनका निर्वाह होना कठिन था। स्त्रियों तथा छोटे-छोटे बालकों को भी कारख़ानों में दस बारह घण्टे काम करना पड़ता था, और पुरुषों की अपेक्षा उनसे अधिक काम लिया जाता था क्योंकि उनको और भी कम वेतन देना पड़ता था। कोयले की खानों में स्त्रियों तथा पाँच पाँच छः छः वर्ष के छोटे बालकों से कहीं कहीं पर १२ से १६ घण्टे प्रति-दिन काम लिया जाता था। दरिद्रालयों के कर्मचारी छोटे बालकों को कारखानों में काम करने के लिये भेज देते थे। वहाँ यह भी कोई देखने वाला न था कि बेचारे बालक कितने घंटे काम करते हैं, क्या खाते हैं, और कहाँ सोते हैं। काम अधिक करने के कारण वे इतने थक जाते थे कि खेल-कूद की ओर उनका ध्यान ही नहीं जाता था। कारखाने के मालिकों को यह तनिक भी ध्यान न था कि इससे देश तथा जाति के स्वास्थ्य पर कितना आघात होता है। मज़दूरों की यह शोचनीय दशा देखकर एक दयावान व्यक्ति लार्ड शेफ्टसबरी (Shaftesbury) के अनुरोध से सरकार ने बहुत से नियम पास कराये जो कारख़ानों के सुधार (Factory Acts) के नाम से प्रसिद्ध हैं।

इन नियमों के अनुसार १४ वर्ष से कम आयु वाले बालकों का कारख़ानों में मज़दूरी करना बिलकुल बन्द कर दिया गया। अन्य मज़दूरों के लिये भी काम करने के ८ घण्टे प्रतिदिन नियत कर दिये गये, जिससे अधिक काम के कारण उनका स्वास्थ्य न बिगड़ने पावे। कारखानों में रोशनी, वायु इत्यादि का भी उचित प्रबन्ध किया गया और मशीनों इत्यादि से मज़दूरों के चोट लगने तथा उनकी जान जाने की रक्षा का भार कारखानों के मालिकों पर रक्खा गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

खानों में ज़मीन के नीचे स्त्रियों तथा छोटे लड़कों से काम नहीं लिया जा सकता, और अन्य कारखानों में भी उनके लिये कई प्रकार की सुविधाएँ कर दी गईं। मज़दूरों को बुढ़ापे में पेंशन देने और उनके बीमार पड़ने पर दवा इत्यादि के करने का भी प्रबन्ध किया गया, जिससे मज़दूरों की स्थिति में बहुत कुछ सुधार हो गया। परन्तु यह सब सुधार होते हुए भी मज़दूरों की समस्या का अभी तक पूर्णरूप से निपटारा नहीं हुआ है और उनका आन्दोलन अब जारी है।

मज़दूरों का संगठन—

इसी समय मज़दूरों ने अपना संगठन करके "व्यावसायिक-संघ" (Trade Unions) स्थापित किये। इन संघों द्वारा उन्होंने अपने हित का आन्दोलन बड़े जोश से किया और कारखानों के स्वामियों पर दबाव डालने के लिये हड़ताल (Strikes) करने का ढंग निकाला। पहले तो सरकार ने इस प्रकार के प्रयत्नों का विरोध किया और व्यावसायिक संघों के विरुद्ध राज-नियम (Combination Acts) बनाये गये; परन्तु अन्त में सरकार इन नियमों को हटाने पर बाध्य हुई और सन् १८७१ में व्यावसायिक-संघ स्थापित करने की नियमानुसार आज्ञा मिल गई। इन संघों से मज़दूरों को बड़ा लाभ होता है, और इसी संगठन के द्वारा उन्होंने कारखानों के स्वामियों को वेतन बढ़ाने तथा काम करने के घण्टे कम करने के लिये बाध्य किया। मज़दूरों का संगठन जितना अच्छा ब्रिटेन में है उतना किसी अन्य देश में नहीं है, और इसी कारण सरकार को भी उनकी बात माननी पड़ती है, तथा उनका राजनैतिक-जीवन में भी एक विशेष स्थान होने लगा है और पार्लियामेण्ट में भी मज़दूर-दल (Labour Party) एक प्रभावशाली पार्टी है।

दरिद्र-संरक्षण-नियम—

एलिज़बेथ के समय में दरिद्रों तथा अपाहिज़ों को उचित सहायता देने का प्रबन्ध किया गया था, और उस समय से सरकार इनकी रक्षा की ओर सदैव ध्यान देती आई है। फ्रान्स की राज्य-क्रांति तथा नैपोलियन के युद्धों के पश्चात् दरिद्रों की संख्या बढ़ जाने के कारण सरकार ने यह नियम बना दिया कि

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दरिद्रालयों (Poor Houses) में बुलाने के स्थान पर दरिद्रों को उनके घर पर ही आवश्यकतानुसार सहायता पहुँचा दी जाय। परन्तु इसका उल्टा प्रभाव पड़ा और बहुत से स्वस्थ मनुष्य भी मज़दूरी से मुँह चुराकर सरकारी-दान-सहायता पर निर्वाह करने लगे। इसके रोकने के लिये सन् १८३४ में एक नया दरिद्र-संरक्षण-नियम (Poor Law) बनाया गया, जिसके अनुसार यह निश्चित हुआ कि बूढ़ों तथा अपाहिजों के अतिरिक्त किसी को घर बैठे सहायता नहीं दी जायगी ; और इसके अतिरिक्त जो लोग सहायता चाहेंगे उन्हें दरिद्रालयों (Work Houses) में जाकर बहुत कठिन परिश्रम करने के बाद केवल पेट भर अन्न दिया जायगा। इस नियम का यह आशय था था कि बिना वास्तविक आवश्यकता के कोई सरकारी-दान (Dole) का आश्रय न ले। इसी नियम के अनुसार दरिद्र-कर (Poor Rate) बढ़ा दिया गया, जिससे दरिद्रालयों की आय बढ़ गई, और इसी के साथ-साथ उनका प्रबन्ध भी अब जनता की निर्वाचित समितियों (Poor Law Unions) के हाथों में छोड़ दिया गया।

स्थानीय-स्वराज्य—

स्टुअर्ट-काल में बहुत से नगरों ने स्वतन्त्रता के चार्टर प्राप्त कर लिये थे, जिसके अनुसार वे अपनी सफ़ाई, सड़कों, रोशनी इत्यादि का स्वयं प्रबन्ध करने लगे थे, परन्तु यह प्रबन्ध संतोष-जनक न था, और इसलिये सन् १८३५ में सरकार ने नागरिक-शासन (Municipal Government) के सुधार के लिये एक नियम बनाया। इस नियम के अनुसार नगर-मंडलियों का उचित प्रबन्ध किया गया, और उनके चुनाव में वोट देने का अधिकार उन सब व्यक्तियों को दे दिया गया, जो नगर का कर देते हों। नगर-मण्डली के सदस्य तथा उनका प्रधान अब जन सम्मति से निर्वाचित होने लगे, और इन मंडलियों के अधिकार भी बढ़ा दिये गये। नागरिक-शासन की स्वतन्त्रता को स्थानीय-स्वराज्य (Local Self-Government) कहते हैं, और देश के राजनैतिक-जीवन का यह भी प्रधान अंग माना जाता है।

स्वतन्त्र-व्यापार—

पहले यह विचार था कि देश के व्यापार की रक्षा करने के लिये यह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अत्यन्त आवश्यक है कि बाहर से आने वाले माल पर भारी कर लगाया जाय, जिससे वह देश के माल की विक्री को किसी प्रकार की हानि न पहुँचा सके। अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम भाग में एडम स्मिथ (Adam Smith) नामक एक अर्थशास्त्र के विशेषज्ञ ने इन विचारों का विरोध किया और स्वतन्त्र-व्यापार करने की शिक्षा दी, परन्तु स्मिथ के नये विचारों के फैलने में बहुत देर लगी, और देश के राजनीतिज्ञ व्यापारिक करों को कम करने में बराबर हिचकते रहे। अन्त में स्वतन्त्र-व्यापार (Free Trade) के समर्थकों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ने लगी, और सरकार ने भी इस नये सिद्धान्त को अपनाना आरम्भ किया। परिणाम यह हुआ कि बहुत सी व्यापारिक वस्तुओं पर से महसूल हटा दिया गया, जिससे बाहर से माल आने-जाने में बड़ी सुविधा हो गई। इस नये परिवर्त्तन से इंगलैंड के व्यापार को हानि के स्थान पर लाभ ही हुआ, और इसीलिये आजकल अँग्रेज़ अन्य जातियों की अपेक्षा स्वतन्त्र व्यापार के सिद्धान्त के कट्टर पक्षपाती हैं।

शिक्षा सम्बन्धी सुधार—

उन्नीसवीं शताब्दी में देश के शिक्षा-विभाग में भी बहुत कुछ सुधार हुआ। अब तक देश में शिक्षा का कोई उचित प्रबन्ध न था, और विशेषकर सरकार ने इस ओर बहुत ही कम ध्यान दिया था। शिक्षा का जो थोड़ा बहुत प्रबन्ध था वह अमीरों के लड़कों के लिये था। माध्यमिक-काल में विनचेस्टर (Winchester) तथा ईटन (Eton) आदि स्थानों में ग्रामर-स्कूलों (Grammar Schools) की स्थापना हुई थी। सोलहवीं शताब्दी में, विशेषतया एडवर्ड षष्ट के राज्य-काल में बहुत से और ग्रामर-स्कूल स्थापित किये गये। इन स्कूलों में व्याकरण, तर्कशास्त्र, वाक्-पटुता, सङ्गीत, अङ्कगणित, रेखा-गणित तथा ज्योतिष आदि सात विषय पढ़ाये जाते थे। विद्यार्थियों को सब प्रकार के विषयों पर भाषण करना तथा वाद-विवाद करना सिखाया जाता था। तीरन्दाज़ी तथा शिकार खेलना भी सिखाया जाता था। परन्तु ग़रीबों के लड़कों की पढ़ाई के लिये कोई सुविधा न थी। कहीं तो बूढ़ी स्त्रियों ने अपने घरों के बरामदों में स्कूल खोल रक्खे थे, और कहीं कुछ संस्थायें चन्दा लेकर स्कूल चलाती थीं; चन्दे पर चलने वाले स्कूल (Charity Schools)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अठारहवीं शताब्दी में स्थापित हुए थे। इसी समय देश में रविवार के दिन पढ़ाने के लिये (Sunday Schools) स्थापित हुए, और देश के अधिकांश बालक केवल इन्हीं स्कूलों में शिक्षा प्राप्त करते थे। सन् १८३७ में इन दोनों प्रकार के स्कूलों को सरकार की ओर से सहायता मिलने लगी। फिर आगे चलकर १८७० में इंगलैंड की शिक्षा के इतिहास में एक नया युग आरम्भ होता है; और फोर्सटर (Forster) के अनुरोध से पार्लियामेंट ने प्रारंभिक-शिक्षा-नियम (Elementary Education Act) पास किया। इसके अनुसार नगरों तथा ज़िलों में प्रजा द्वारा निर्वाचित शिक्षा समितियाँ (School Boards) स्थापित की गईं, और उनको देश के प्राइमरी स्कूलों की देख-भाल का कार्य सौंपा गया। सन् १८७६ में ६ से १२ वर्ष तक की अवस्था के बालकों के लिये शिक्षा अनिवार्य (Compulsory Education) कर दी गई; और सन् १८९१ में प्रारंभिक शिक्षा निःशुल्क (Free) दी जाने लगी। इसके पश्चात् सन् १९१८ में शिक्षा-विभाग के अध्यक्ष फिशर (Fisher) के अनुरोध से "शिक्षा नियम" (Education Act of 1918) नामक एक बड़ा महत्त्व पूर्ण राज-नियम पास हुआ, जिसने देश की शिक्षा-प्रणाली में कई प्रकार के सुधार किये; अनिवार्य-शिक्षा की आयु को ६ से १२ वर्ष के स्थान पर ५ से १४ वर्ष कर दिया। इसी नियम के अनुसार विद्यार्थियों के स्वास्थ्य की ओर ध्यान दिया जाने लगा, और प्रत्येक स्कूल में डाक्टरी निरीक्षण का प्रबन्ध किया गया। इन नियमों के कारण इंगलैंड में शिक्षा का प्रचार दिन प्रतिदिन बढ़ता जा रहा है।

(ग) उन्नीसवीं शताब्दी की सामाजिक उन्नति

नये आविष्कारों का प्रभाव—

हम ऊपर बतला आये हैं कि व्यावसायिक-क्रान्ति तथा अन्य नये आविष्कारों के कारण इंगलैंड के सामाजिक जीवन में एक भारी परिवर्तन हो गया था। देश की जन संख्या बढ़ती जाती थी और बहुत के छोटे छोटे स्थान उन्नति करते करते बड़े नगर बन गये थे। देश में नई नई सड़कें दिखाई पड़ती थीं और नहरें भी खोदी गई थीं। रेलों के चलने से व्यापार में और भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अधिक उन्नति हुई। भाप से चलने वाले जहाज़ों के कारण ब्रिटेन का बना हुआ माल विदेशों में काफी परिमाण में भेजा जाने लगा। व्यवसाय की उन्नति के कारण देश की ८० प्रति सैकड़ा जन संख्या नगरों में रहने लगी। नगरों में रहने के कारण लोगों के रहन-सहन के ढंग भी बदल गये। प्रारम्भ में मज़दूरों की बड़ी दुर्दशा हुई, परन्तु आगे चलकर, जैसा कि हम देख आये हैं, उनको अनेक प्रकार की सुविधाएँ प्राप्त हुईं और उनकी मज़दूरी तक नियत करने के लिये बोर्ड (Wage Boards) बनाये गये।

नगरों की सफ़ाई—

व्यावसायिक उन्नति के कारण उन्नीसवीं शताब्दी में जो नगर बने थे वे गन्दे तथा देखने में भद्दे थे। मकान भी सस्ते तथा शीघ्रता से बनाये गये थे और रोशनी तथा हवा की ओर कोई ध्यान नहीं दिया गया था। गन्दे पानी के निकास का कोई प्रबन्ध नहीं था और नालियों में दुर्गन्ध आती थी। नगरों में पानी तथा रोशनी का भी उचित प्रबन्ध न था; न कोई खुले मैदान अथवा बाग़ बगीचे नगर निवासियों के लिये घूमने-फिरने को थे। संक्षेप में यह कोई देख-भाल करने वाला नहीं था कि किस प्रकार मकान बनाये जाते हैं और गलियाँ किधर जा रही हैं। एसी अवस्था में हैज़ा आदि अनेक बीमारियों का आघात नगरों में आये दिन होता रहता था और काफी संख्या में लोग मृत्यु के ग्रास होते थे। अन्त में नगरों की सफ़ाई की ओर सरकार ने ध्यान दिया और सन् १८७१ में इस कार्य के लिये एक अलग विभाग खोला गया। नगरों में सफ़ाई के लिये इंस्पैक्टर तथा डाक्टर नियुक्त किये गये। इसके परिणाम-स्वरूप कई नगर तुड़वाकर फिर से बनवाये गये और अन्य नगरों की गन्दगी दूर कर दी गई। लोगों के स्वास्थ्य में भी उन्नति हुई और मृत्यु संख्या भी कम होने लगी। सन् १८६८ के पश्चात् सरकार ने बहुत से गन्दे मकानों को भी तुड़वा कर उन्हें फिर से बनवा दिया। लोगों का भी ध्यान स्वच्छता की ओर आकर्षित हुआ, और इसके परिणाम स्वरूप ब्रिटेन को स्वच्छता के विचार से सर्व प्रथम देशों में एक स्थान दिया गया है।

चिकित्सा-विज्ञान की उन्नति—

इसी काल में नगरों की स्वच्छता के साथ साथ चिकित्सा-विज्ञान में भी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बड़ी उन्नति हो रही थी। बहुत से डाक्टर तथा वैज्ञानिक रोगों को नष्ट करने के लिये अनेक उपायों की खोज कर रहे थे। चीरा-फाड़ी (Surgery) के काम में विशेष प्रकार की उन्नति हुई। डाक्टर सिम्पसन (Sir James Young Simpson) ने क्लोरोफोर्म (Chloroform) की खोज की जिसके सुंघाने से चीड़ा-फाड़ी के समय रोगी को कष्ट नहीं जान पड़ता। इसी समय एक फ्रान्सीसी डाक्टर लूई पासचर (Louis Pasteur) ने यह खोज निकाला कि अनेक रोगों के कारण छोटे-छोटे कीटाणू हैं जो मनुष्य के शरीर में प्रवेश कर जाते हैं। उनको नष्ट करने के लिये उसने कई प्रकार के इन्जेक्शन निकाले। लूई पासचर विशेषतया पागल कुत्ते के काटने का इलाज निकालने के लिये प्रख्यात है। इंगलैंड के एक डाक्टर लार्ड लिस्टर (Lord Lister) ने यह बतलाया कि विषैले कीटाणूं जो हवा में उड़ते रहते हैं कारबोलिक एसिड जैसी तेज़ औषधियों द्वारा नष्ट किये जा सकते हैं- और यह भी बतलाया कि चीर-फाड़ मल्लम पट्टी करने से पहले डाक्टरों को अपने हाथ तथा औज़ारों को निःसंक्रामक पदार्थों से धोकर साफ कर लेने चाहियें, ताकि विषैले कीटाणू घाव में प्रवेश कर उसे सड़ा न दें। उस दिन से हस्पतालों में सफ़ाई का पूरा प्रबन्ध रक्खा जाता है। सन् १८९५ में रोंजन (Rontgen) नामक एक वैज्ञानिक ने रोंजन किरणों (X-rays) के यंत्र को निकाला जिसके द्वारा शरीर के कुछ अंगों के भीतरी भाग का फोटो लिया जा सकता है। इस फोटो द्वारा यह पता चल सकता है कि हड्डी कहाँ से टूटी है अथवा गोली, सूई आदि कोई बाहर की वस्तु कहाँ जाकर अड़ गई हैं।

रोगियों की सेवा—

पहले डाक्टरों की पढ़ाई का कोई उचित प्रबन्ध न था। कोई भी व्यक्ति किसी भी डाक्टर की अधीनता में कुछ वर्ष तक काम सीखने के पश्चात् डाक्टर बन सकता था। परन्तु अब मेडिकल कालेजों की स्थापना हुई और प्रत्येक पुरुष को डाक्टर बनने से पहले वहाँ कुछ वर्षों का कोर्स पूरा करना पड़ता है। इसी काल में हस्पतालों में रोगियों की सेवा सुश्रुसा का उचित प्रबन्ध हुआ। उससे पहले दाइयाँ बड़ी दुष्ट तथा नीच प्रकृति की होती थीं। फ़्लोरेन्स नाईटिंगेल (Miss Florence Nightingale) नामक एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उच्च घराने की एक कुमारी ने क्रीमिया के युद्ध में स्वयं जाकर सैनिक-हस्पताल में घायल सिपाहियों की सेवा करके एक बड़ा प्रशंसनीय कार्य किया और हस्पतालों की वर्तमान परिचर्या के लिये मार्ग दिखाया।

जेलों के सुधार—

अठारहवीं शताब्दी तथा उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में कैदियों के साथ बहुत बुरा व्यवहार किया जाता था और बहुत से कैदियों को तो देश निकाला देकर आस्ट्रेलिया भेज दिया जाता था। परन्तु अब देश-निकाले का दण्ड बिल्कुल बन्द कर दिया गया; और जेलों में कैदियों के रहने के लिये अलग-अलग कोठरियाँ बना दी गईं। दिन में वे निकाल लिये जाते हैं और रात्रि में उन्हें फिर बन्द कर दिया जाता है। कैदियों को जो अब दण्ड दिया जाता है बदला लेने के आशय से नहीं, परन्तु उनके नैतिक जीवन को सुधारने के आशय से, ताकि छूटने के पश्चात् वे उदर पोषण के लिये कोई धन्धा कर सकें। शिक्षा के प्रचार तथा नशे की वस्तुओं के त्याग की ओर रुचि होने के कारण पिछले ५० वर्षों से जेलों में कैदियों की संख्या बराबर गिर रही है।

पोशाक—

समय के परिवर्तन के कारण लोगों के पहनावे में भी थोड़ा बहुत अन्तर हो गया है। उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम काल में लोगों के कपड़ों में बहुत सादगी आ गई। वे अब तंग पतलून तथा छोटे कोट पहनने लगे। गले रूमालों के स्थान में कोलर, बो तथा नेकटाइयों का प्रयोग आरम्भ हुआ, ऊँचे-ऊँचे टोपों के स्थान में रेशमी तथा हलके टोप प्रचलित हुए। इस काल के अधिकाँश लोग डाढ़ी तथा मूंछों को बिल्कुल साफ करा देते थे। केवल सैनिक अफसर मूंछें रखते थे और क्रीमिया के युद्ध के पश्चात् डाढ़ी भी फेशन में आई। स्त्रियों ने भी लम्बे तथा भारी कपड़ों को त्याग दिया और उनके स्थान में हलके, सादे तथा सस्ते कपड़ों को अपनाया।

स्त्रियों की स्वतन्त्रता—

इस काल की एक विशेषता यह भी है कि स्त्रियों को पहले की अपेक्षा कहीं अधिक स्वतन्त्रता प्राप्त हुई। पहले यह रिवाज था कि कोई अच्छे घराने की स्त्री अपनी गुज़र के लिये किसी प्रकार का धन्धा नहीं कर सकती थी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह होने से पहले घर के थोड़े से काम-काज के अतिरिक्त स्त्री को कोई काम करना ही नहीं पड़ता था; और अभाग्यवश वह अविवाहित रह जाय तो उसे अपना समस्त जीवन आलस्य में ही काटना पड़ता था। परन्तु अब लड़के लड़कियों को समान शिक्षा दी जाती है और वे विश्व-विद्यालयों में भी शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं। उन्हें यह पूर्ण स्वतन्त्रता प्राप्त है कि वे चाहे जिस प्रकार का धन्धा करें। धर्म-प्रचार, वकालत, पत्रों का सम्पादन, चिकित्सा, शिक्षण आदि सब पेशों के द्वार उनके लिये खुले हुए हैं, और कई स्त्रियाँ लोक-सभा तक की सदस्य हैं। इस प्रकार स्त्रियाँ भी समाज-सेवा में पुरुषों की भाँति अपना समय दे सकती हैं।

इस काल में क्या ग़रीब क्या अमीर सब का रहन-सहन पहले की अपेक्षा मेहगा तथा ऊँचे दर्ज़े का हो गया है। आजकल का मज़दूर सौ वर्ष पहले के मज़दूर की अपेक्षा कहीं अधिक आनन्द में है। वह पहले की अपेक्षा कहीं अच्छा खाता है, कहीं अच्छा पहनता है, और कहीं अच्छे मकान में रहता है; और सामाजिक उन्नति का यही सब से बड़ा चिह्न है।

रीति-रिवाज तथा खेल-तमाशे—

गत सौ वर्षों में इंगलैंड के लोग कहीं अधिक सुशील तथा स्वभाव के भी अच्छे हो गये। द्वन्द-युद्ध बिल्कुल बन्द हो गये। झूंठे वचन देना तथा दारू पान करना भी लोगों ने धीरे-धीरे कम कर दिया। पार्लियामेण्ट ने भी कुछ नियमों द्वारा देश के बहुत-से शराबखाने बन्द कर दिये। उच्च श्रेणी के लोग अपनी साधारण बोल-चाल में कटु वचनों का प्रयोग किया करते थे, परन्तु अब मधुर वाक्यों का प्रयोग करना उच्च श्रेणी के लोगों का एक मुख्य गुण है। पुराने काल के बहुत-से निर्दयी तथा नीच खेल तमाशे भी बन्द हो गये। बैलों की, रीछों की तथा मुर्गों की लड़ाइयाँ बन्द हो गईं। फ़ुटबाल तथा गैंद-बल्ले के खेल आजकल के समान खेले जाने लगे। रगबी-फ़ूटबाल (Rugby Football) क्लब उसी समय स्थापित हुई और गैंद बल्ले की जगत प्रसिद्ध क्लब एम-सी-सी (Marylebone Cricket Club) सन् १७८७ में बनाई गई थी। गोल्फ तथा टेनिस के खेल भी इस शताब्दी में लोकप्रिय हो गये। सत्रहवीं शताब्दी से लोगों को घोड़ों की दौड़ का भी शौक़

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चला आता है। सन् १७८० से एम्पसन (Empson) के स्थान पर प्रति वर्ष डरबी की घुड़दौड़ (Derby Stakes) होती है जिसमें लाखों रुपये के लाटरी के टिकट बिक जाते हैं।

Exercises.

1. What defects were there in the system of Parliamentary election in the beginning of the nineteenth century ? How far were these defects remedied by the First Reform Act ?
2. What changes were effected by the Second and Third Reform Acts ?
3. What was the Parliament Act of 1911, and how did it settle the relation between the two Houses of Parliament ?
4. How did women enter the Parliament ? Mention the important acts in this connection.
5. Give an account of the important social and economic reforms in the nineteenth century.
6. Describe briefly the various measures for the reform of the condition of the labourers in England.
7. Give a brief account of the life and culture in the nineteenth century.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पैंतीसवाँ परिच्छेद

महारानी विक्टोरिया तथा उसके मुख्य प्रधान ंत्री

सन् १८३७	महारानी विक्टोरिया का राज्याभिषेक
,, १८३०–१८५५	पामर्स्टन पर-राष्ट्र विभाग का मंत्री
,, १८४०	महारानी विक्टोरिया का विवाह
,, १८४१–१८४६	राबर्ट पील का मंत्रित्व
,, १८४६	कार्न ला का अन्त
,, १८५४–१८५६	क्रीमिया का युद्ध
,, १८५५–१८६५	पामर्स्टन का मंत्रित्व
,, १८५७	भारतवर्ष का ग़दर
,, १८६१	महारानी के पति की मृत्यु
,, १८६७	दूसरा सुधार-नियम
,, १८६८–१८७४	ग्लेड्सटन का पहला मंत्रित्व
,, १८७०	शिक्षा-नियम
,, १८७४–१८८०	डिज़रायले का मंत्रित्व
,, १८७७	विक्टोरिया का "भारतवर्ष की साम्राज्ञी" की उपाधि धारण करना
,, १८८०–१८८५	ग्लेड्सटन का दूसरा मंत्रित्व
,, १८८१	मिस्र पर इंगलैंड का आधिपत्य
,, १८८५	जेनरल गार्डन की मृत्यु
,, १८८५–१८८६	ग्लेड्सटन का तीसरा मंत्रित्व

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन् १८६२–१८६३ ग्लेड्सटन का चौथा मंत्रित्व
" १६०१ महारानी विक्टोरिया की मृत्यु

महारानी विक्टोरिया को राज्याभिषेक का संदेश

महारानी विक्टोरिया

विक्टोरिया का चरित्र—

विलियम चतुर्थ के कोई सन्तान न थी, अतः सन् १८३७ में उसकी मृत्यु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के पश्चात् उसके छोटे भाई की पुत्री विक्टोरिया केवल अठारह वर्ष की आयु में राजसिंहासन पर बैठी। अब तक ब्रिटेन के राजा जर्मनी के हनोवर प्रान्त के भी शासक होते थे; परन्तु विक्टोरिया के समय से हनोवर का ब्रिटेन से कोई सम्बन्ध न रहा, क्योंकि वहाँ के राज-नियमों के अनुसार स्त्रियाँ वहाँ के राजसिंहासन पर नहीं बैठ सकती थीं। विक्टोरिया का पालन-पोषण बड़ी सादगी से हुआ था, परन्तु वह योग्य तथा बुद्धि की तीव्र थी। अपने अच्छे स्वभाव के कारण प्रजा की भक्ति तथा श्रद्धा शीघ्र ही उसकी ओर आकर्षित हो गई। उसका राज-दरबार सादगी तथा सदाचार के लिये प्रसिद्ध था, जिसके कारण जनता जार्ज चतुर्थ जैसे चरित्र-हीन राजाओं के काल को भूल गई। पिछले राजाओं के शासन-काल में राजत्व की शक्ति नष्ट हो चुकी थी, परन्तु विक्टोरिया के उच्च चरित्र के प्रभाव के कारण जनता में फिर से राजत्व का आदर होने लगा। परराष्ट्र सम्बन्धी मामलों में मंत्रियों को रानी से सलाह लेनी पड़ती थी, क्योंकि यूरोप के कई शासक उसके सम्बन्धी थे। रानी ने अपना समस्त जीवन प्रजा के हित में व्यतीत किया, और उसका अपने समय की राजनीति पर भी व्यक्तिगत रूप से बहुत प्रभाव पड़ा। सन् १८४० में उसका जर्मनी की एक रियासत कोबर्ग (Coburg) के राजकुमार अलबर्ट (Albert) से विवाह हुआ। अपने पति से भी महारानी को शासन-कार्य में बहुत सहायता मिली। विवाह के २१ वर्ष पश्चात् सन् १८६१ में उसकी मृत्यु हो गई जिसके कारण सब को बड़ा दुख हुआ।

शान्ति तथा सुधार का युग—

इंगलैंड के इतिहास में विक्टोरिया का शासन-काल सुख, शान्ति तथा सुधार का युग माना जाता है। इस काल में व्यावसायिक, राजनैतिक तथा सामाजिक प्रत्येक क्षेत्र में बड़े महत्त्व-पूर्ण सुधार हुए, जिनका ऊपर उल्लेख किया जा चुका है। इसी काल में ब्रिटिश साम्राज्य ने भी बड़ी उन्नति की। अँग्रेज़ों के उपनिवेश पहले की अपेक्षा इस काल में और भी अधिक बढ़ गये, जिससे अमेरिका के उपनिवेशों की हानि पूरी हो गई और ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न-भिन्न अंग एक सूत्र में बँध गये। इसी समय भारतवर्ष में उन्होंने एक महत्त्वशाली साम्राज्य की दृढ़ स्थापना की और सन् १८७७ में विक्टोरिया ने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

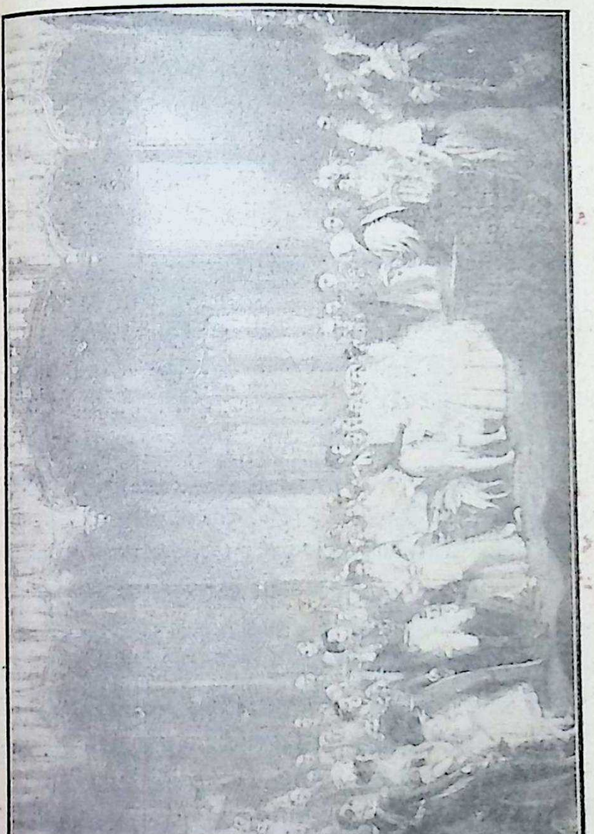

महारानी विक्टोरिया का विवाह

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतवर्ष की साम्राज्ञी (Empress of India) की उपाधि ग्रहण की। इस काल में व्यापार, धन तथा शिक्षा की भी उन्नति हुई, और टेनीसन (Tennyson), मकाले (Macaulay), डिकिंस (Dickens), स्टेवनसन (Stevenson) इत्यादि प्रसिद्ध लेखकों ने अपनी रचनाओं द्वारा अँग्रेज़ी साहित्य को सुशोभित किया। समस्त देश में विद्या की उन्नति हो रही थी और उच्च शिक्षा के लिये कई विश्वविद्यालयों की भी स्थापना हुई। ६३ वर्ष के सुखमय राज्य-काल के पश्चात् जब सन् १९०१ में विक्टोरिया परलोक सिधारी; उस समय देश धन-धान्य से परिपूर्ण था, और वहाँ सब प्रकार की उन्नति हो रही थी।

लार्ड मेलवोर्न

विक्टोरिया जिस समय राजसिंहासन पर बैठी मेलवोर्न (Melbourne) प्रधान-मंत्री था। वह बड़ा योग्य और सच्चा राज-भक्त था। वह विग-दल का नेता था और सन् १८३४ से १८४१ तक प्रधान-मंत्री के पद पर कार्य करता रहा। उसने विक्टोरिया को शासन सम्बन्धी ज्ञान कराया और नियमानुमोदित शासन करने की बहुत अच्छी शिक्षा दी। रानी भी उस पर पूर्ण विश्वास करती थी और बिना उसकी सलाह के कोई कार्य नहीं करती थी। उसके मंत्रित्व काल में कोई महत्व पूर्ण राज-नियम न बने, फिर भी एक दो कार्य बड़े लाभदायक हुए। शिक्षा-प्रचार के लिये सरकारी सहायता बढ़ा दी गई और उसकी देख-रेख के लिये प्रिवी काउंसिल के ६ सदस्यों की एक कमेटी नियत की गई। स्कूलों का काम देखने के लिये इन्सपेक्टर भी नियुक्त किये गये और इस प्रकार वर्तमान शिक्षा बोर्ड (Board of Education) की नींव पड़ी। दूसरा महत्व पूर्ण कार्य डाक का महसूल कम करना था। सन् १८३९ तक महसूल फासले के हिसाब से लिया जाता था। पत्रों को ले जाने का महसूल कम से कम २ पेंस और दूर के स्थानों तक तो १ शि० ६ पें० हो जाता था। सन् १८४० में रोलेंड हिल के उद्योग से यह प्रबन्ध हुआ कि आधे औंस तक का भारी पत्र केवल एक पेनी में देश के किसी भी भाग में भेजा जा सकता था। डाक की यह योजना बहुत सफल साबित

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुई। जनता को भी बहुत सुविधा हुई और राज्य की आय में भी वृद्धि हुई। महारानी विक्टोरिया का विवाह भी मेलबोर्न के मंत्रित्व-काल में सन् १८४० में हुआ था। उसने चार्टिस्ट आन्दोलन तथा आयरलैंड के आन्दोलन को दमन करने के लिये कठोरता का व्यवहार किया। सन् १८४१ के निर्वाचन में कनसरवेटिव-दल की विजय हुई और मेलबोर्न को पद त्यागना पड़ा और सर राबर्ट पील प्रधान-मंत्री हुआ।

सर राबर्ट पील

प्रारंभिक जीवन--

विक्टोरिया के राज्यकाल के आरंभिक भाग का सबसे प्रसिद्ध प्रधान-मंत्री सर राबर्ट पील (Sir Robert Peel) माना जाता है। केवल २१ वर्ष की आयु में वह टोरी-दल की ओर से सन् १८०९ में लोक-सभा का सदस्य हुआ। शीघ्र ही अपनी योग्यता के कारण वह दिन-प्रति-दिन उन्नति करता गया। सन् १८१२ से सन् १८१८ तक वह आयरलैंड का मुख्य सचिव (Chief Secretary) रहा, और इस काल में उसने वहाँ पुलिस-विभाग में बहुत से सुधार किये। इसके पश्चात् सन् १८२२ से सन् १८२८ तक वह इंगलैंड के देशीय-विभाग के मंत्री (Home Secretary) के पद पर नियुक्त रहा। उसी के अनुरोध से फ़ौजदारी क़ानून का संशोधन किया गया था, जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है। उसी के उद्योग से पुराने चौकीदारों को हटा कर वर्तमान पुलिस-प्रबन्ध की नींव डाली गई। लन्दन की वर्तमान पुलिस का, जो अपनी योग्यता के कारण समस्त भूमण्डल में प्रसिद्ध है, उसी के समय से आरम्भ होता है।

राजनैतिक विचार—

पील के विषय में प्रसिद्ध है कि वास्तव में वह दलबन्दी के बखेड़े को पसन्द न करता था, परन्तु लोक-सभा में अपनी शक्ति बढ़ाने के लिये बिना दल बनाये काम चलना असंभव था। पील टोरी दल का सदस्य था, परन्तु उसने इस दल के राजनैतिक सिद्धान्तों बहुत कुछ संशोधन किया। टोरी नाम अब तक राज-पक्ष के समर्थकों तथा पार्लियामेण्ट के अधिकारों के विरोधियों का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

माना जाता था, इस कारण इस नाम को बदल कर पील के नेतृत्व में टोरी दल वालों ने अपने को कन्ज़रवेटिव (Conservatives) के नाम से पुकारना आरम्भ किया। इस नये नाम का यह अर्थ है कि इस दल वाले प्रचलित शासन-प्रणाली का समर्थन करेंगे और उसमें सुधार बहुत सोच समझ कर आवश्यकतानुसार ही करेंगे। इसी समय विग-दल वालों ने भी अपना नाम बदल दिया और वे अपने को लिबरल (Liberal) अर्थात्

सर राबर्ट पील

सुधारवादी के नाम से पुकारने लगे। पील का कन्ज़रवेटिव-दल में इतना प्रभाव था कि वह जो चाहता था सो करा लेता था। यह उसी के अनुरोध का परिणाम था कि टोरी अपने राजनैतिक विचारों में इतने उदार हो सके और उन्होंने अपने प्राचीन काल के राज-पक्ष के समर्थन को त्याग दिया; और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार्लियामेण्ट की उन्नति में बड़े उत्साह से भाग लिया। महारानी विक्टोरिया नियमानुमोदित रूप से शासन करती रही और किसी दल का विशेष पक्ष न करके सब दलों के प्रति एकसा व्यवहार करती रही।

आयरलैंड की नीति—

सन् १८४१ में पील प्रधान-मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ। वह शासन के प्रत्येक विभाग के कार्य-क्रम का ज्ञान रखता था और विशेष कर आयरलैंड की समस्या को भलीभाँति समझता था, क्योंकि कई वर्षों तक वह आयरलैंड का मुख्य सचिव रह चुका था। आयरलैंड निवासियों की अशान्ति इस समय इतनी बढ़ी हुई थी कि उन्होंने ब्रिटेन से सम्बन्ध तोड़ कर देश में स्वराज्य स्थापित करने के लिये आन्दोलन खड़ा कर रक्खा था। पील ने पहले तो दमन-नीति से काम लेना चाहा, परन्तु वह शीघ्र ही समझ गया कि इस प्रकार आयरलैंड को शान्त करना असंभव है। अतः उसने आयरलैंड के प्रश्न की जाँच करने के लिये एक कमीशन बैठाया जिसने मुख्य सिफारिश यह की कि देश के किसानों में बहुत दरिद्रता फैली हुई है, और यही समस्त अशान्ति का कारण है। इसके अतिरिक्त अशान्ति का दूसरा कारण यह था कि आयरलैंड निवासी अधिकतर केथलिक थे और उनको यह शिकायत थी कि ब्रिटेन की सरकार हमारे हित के लिये कुछ नहीं करती। इस शिकायत को दूर करने के लिये पील ने केथलिक पादरियों के शिक्षालय (Maynooth Seminary) को सरकार की ओर से सहायता देनी आरम्भ की। इसके अतिरिक्त उसने केथलिकों की शिक्षा के लिये तीन और नये कालेज स्थापित किये, परन्तु फिर भी आयरलैंड निवासियों को इन अधूरे सुधारों से सन्तोष न हुआ और उनके राजनैतिक-आन्दोलन में कोई कमी न आई, क्योंकि उनके सम्मुख तो उदर पोषण की समस्या थी।

आर्थिक-सुधार—

पील पहले स्वतन्त्र-व्यापार (Free Trade) के सिद्धान्त का विरोधी और संरक्षित व्यापार (Protection) का पक्षपाती था। परन्तु देश की व्यापारिक स्थिति देख कर उसे अपने विचार बदलने पड़े, और स्वतन्त्र-व्यापार के सिद्धान्त को मानना पड़ा। अब वह भली भाँति समझने लगा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि संरक्षित-व्यापार से केवल ज़मींदारों और कारखानों के मालिकों को लाभ होता है, और देश के ग़रीब लोगों को अनाज, चाय, शक्कर आदि आवश्यक वस्तुएँ भी बहुत महंगी मिलती हैं। अतः उसने लगभग ७५० व्यापारिक वस्तुओं पर से चुंगी हटा दी, और इससे जो आय में कमी आई उसको पूरा करने के लिये लोगों की आय पर कर (Income-tax) वसूल करने की प्रथा डाली। इस कर का आय के अनुसार होने के कारण सब पर बराबर भार पड़ता था, और आजकल समस्त सभ्य देशों में यह कर जारी है। पील ने बैंकों (Banks) में भी कुछ सुधार किया। सन् १८४४ में उनके सुधार के लिये एक नियम (Bank's Charter Act) बनाया, जिसके अनुसार बैंक उतने ही नोट निकाल सकते हैं जितना नक़द सोना उनके पास हो। इसका यह आशय था कि कोई बैंक अपनी आर्थिक स्थिति से अधिक नोट निकाल कर देश के व्यापार को हानि न पहुँचा सके। इसी समय रेलवे कम्पनियाँ भी सरकार की अधीनता में लाई गईं और रेलों का किराया आदि भी सरकार नियत करने लगी।

मज़दूर संरक्षण नियम—

पील ने कारखानों की स्थिति के सुधारने का प्रयत्न किया, और कई नियम ऐसे बनाये जिनके अनुसार कारखानों में बच्चे तथा स्त्रियों से कठिन काम लेने की मनाई कर दी गई। सन् १८४२ में एक नियम के अनुसार स्त्रियाँ तथा दस वर्ष से कम आयु के लड़के खानों में काम नहीं कर सकते थे। सन् १८४४ के एक और नियम के अनुसार नौ वर्ष से कम के बालकों से कारखानों में काम नहीं लिया जा सकता था, और ९ से १३ वर्ष तक के बालक केवल ६॥ घण्टे प्रति घण्टे काम कर सकते थे, और १३ से १८ तक की आयु वालों के लिये १२ घण्टे नियत किये गये। मशीनों की रक्षा का भी प्रबन्ध किया गया ताकि उनके फटने आदि से किसी को हानि न पहुँचे।

अनाज-रक्षण-नियम—

नैपोलियन के युद्धों के पश्चात् इंगलैंड में कृषि की बड़ी असंतोष-जनक दशा थी। ज़मींदारों को लाभ पहुँचाने के अभिप्राय से पार्लियामेण्ट ने सन् १८१५ में अनाज-रक्षण-नियम (Corn Law) बनाया था, जिसके कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बाहर से अनाज आना बन्द हो गया। ज़मींदारों को तो इससे लाभ हुआ, परन्तु ग़रीबों की दशा बहुत बिगड़ती गई। इस नियम के विरुद्ध प्रारंभ से ही आन्दोलन उठ खड़ा हुआ, और सन् १८३८ में तो एक संगठित आन्दोलन आरम्भ हुआ। इसी समय १८४५ में आयरलैंड में आलू की फ़सल सड़ने के कारण एक अकाल पड़ा जिसके कारण अधिकांश जनता भूखों मरने लगी और बहुत से तो देश छोड़-छोड़ कर अमेरिका चले गये। पहले तो पील अनाज-रक्षण-नियम का समर्थक रहा, परन्तु इस अकाल से उसके हृदय पर गहरी चोट लगी, जिसके परिणाम-स्वरूप सन् १८४६ में उसने घृणित अनाज-रक्षण-नियम का अन्त किया। इस नियम का अन्त करके पील ने ज़मींदारों को अपना शत्रु बना लिया, और अब लोक-सभा में उसके समर्थकों की संख्या कम होने लगी। प्रधान-मंत्री अपने पद पर तभी तक आरूढ़ रह सकता है जब तक लोक-सभा में उसके समर्थकों की संख्या अधिक हो। परिणाम यह हुआ कि सन् १८४६ में पील को अपने पद से त्याग-पत्र देना पड़ा, और इसके ४ ही वर्ष बाद घोड़े से गिर कर सन् १८५० में उसकी मृत्यु हो गई।

लार्ड पामर्सटन

प्रारंभिक जीवन—

पील के पश्चात् विक्टोरिया के राज्य-काल का दूसरा प्रसिद्ध प्रधान-मंत्री लार्ड पामर्सन (Lord Palmerston) हुआ। वह सन् १८३० और १८६५ के बीच के समय का सबसे बड़ा राजनीतिज्ञ समझा जाता है। पहले वह टोरी था और अपने विचारों में परिवर्तन होने के कारण वह विग-दल का सदस्य होगया। वह भाषण देने में बड़ा कुशल था, और अपनी मृत्यु पर्यन्त वह लोक-सभा की बैठकों में भाग लेता रहा। उसका पार्लियामेण्ट में प्रवेश सन् १८०७ में हुआ था, और इसके दो ही वर्ष पश्चात् केवल २३ वर्ष की आयु में वह अपनी योग्यता के कारण युद्ध-सचिव (War Secretary) के पद पर नियुक्त हुआ। इस समय से उसका यश बराबर बढ़ता गया, और वह कितने ही वर्षों तक परराष्ट्र-विभाग का मंत्री (Foreign Secretary) तथा देशीय-विभाग का मंत्री (Home Secretary) रहा। सन् १८५५ में ७०

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वर्ष की आयु में वह प्रधान मंत्री बना और केवल थोड़ा-सा काल छोड़कर पूरे १० वर्ष तक इस पद पर आरूढ़ रहा।

गृह-नीत—

अपनी गृह-नीति में पामर्संटन कन्ज़रवेटिव सिद्धान्तों का अनुयायी था। उसके मंत्रित्व-काल में सुधार-वादियों का कोई प्रयत्न सफल न हो सका, और

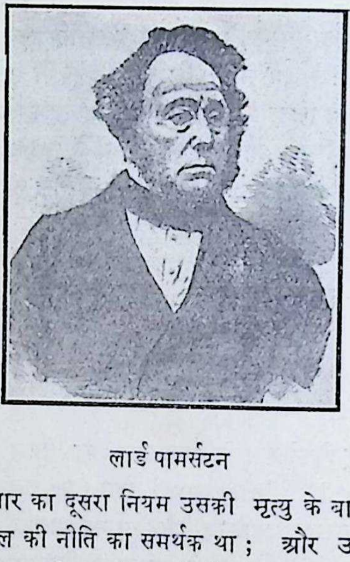

लार्ड पामर्संटन

पार्लियामेण्ट के सुधार का दूसरा नियम उसकी मृत्यु के बाद जाकर स्वीकृत हो सका। वह पील की नीति का समर्थक था; और उसका यह मत था कि जनता को जो कुछ अधिकार मिल चुके हैं, उनसे आगे बढ़ना व्यर्थ है। एक दो बात अवश्य लाभदायक हुईं। सन् १८६० में फ्रान्स के साथ एक व्यापारिक सन्धि हुई जिसके अनुसार फ्रान्स में जाने वाले लोहे और कोयले पर चुंगी बहुत कम कर दी गई, और फ्रान्स से आने वाली शराब तथा अन्य बनी हुई वस्तुओं पर इंगलैंड ने भी चुंगी घटा दी। दूसरे, सन् १८६१ में काग़ज़ पर से कर हटा दिया जिसके परिणाम-स्वरूप अखबार तथा अच्छी पुस्तकें सस्ती बिकने लगीं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परराष्ट्र-नीति—

देश में कन्ज़रवेटिव होने पर भी पामर्सटन ने अन्य देशों के उदार आन्दोलनों में बहुत कुछ सहायता दी। वह उन यूरोपीय जातियों को, जो अपने देशों में नियमानुमोदित-शासन (Constitutional Government) स्थापित करना चाहती थीं, सदा सहायता देने को तैयार रहा। उसने इटेली को संगठित होने में पूर्ण सहायता दी और वहाँ अन्य देशों के हस्तक्षेप को रोका। मध्य काल से इटेली छोटे-छोटे राज्यों में बटा हुआ था और वहाँ के कई प्रान्तों पर आस्ट्रिया आदि विदेशियों का अधिकार था। परन्तु अब इटेली-निवासियों में राष्ट्रीयता की लहर फैलने के कारण इन सब छोटे राज्यों ने मिलकर सारडीनिया (Sardinia) के राजा की अधीनता में समस्त देश में केन्द्रीय दृढ़ शासन की स्थापना की। इटेली को स्वतन्त्र कराने में गैरीबाल्डी (Garibaldi) नामक एक इटेलियन देश-भक्त सैनिक का बहुत बड़ा हाथ था। इसी प्रकार पामर्सटन ने बेलजियम वालों को हालैंड का आधिपत्य हटा कर अपना स्वतन्त्र राज्य स्थापित करने में सहायता दी।

पूर्वीय समस्या में भाग—

इसके अतिरिक्त पामर्सटन ने यूरोप की पूर्वीय समस्या में भी प्रमुख भाग लिया। इस समय टर्की के साम्राज्य के भिन्न-भिन्न ईसाई प्रान्त मुसलमान तुर्कों के राज्य से पृथक् होने के लिये आन्दोलन कर रहे थे। धार्मिक दृष्टि से इंगलैंड को इन प्रान्तों की सहायता करनी चाहिये थी, परन्तु पामर्सटन ने यह सोचा कि टर्की का साम्राज्य छिन्न-भिन्न हो जाने से रूस वालों को पश्चिमी एशिया की ओर बढ़ने के लिये खुला मार्ग मिल जायगा, जो एशिया में अँग्रेज़ी-साम्राज्य के लिये भय का कारण हो जायगा। इस आशय से धार्मिक सहानुभूति को त्याग कर पामर्सटन के अनुरोध से अँग्रेज़ों ने क्रीमिया के युद्ध (Crimean War) में भाग लिया। इंगलैंड और फ्रान्स वाले टर्की का पक्ष लेकर रूस के विरुद्ध लड़े, और रूसियों को बालक्लावा (Balaclava) तथा इंकरमैन (Inkerman) के स्थानों पर परास्त किया, और इनके प्रसिद्ध गढ़ सेवेस्टापोल (Sebastapol) पर अधिकार किया। अन्त में सन्धि हुई और इस प्रकार युद्ध में रूस परास्त हुआ और टर्की का साम्राज्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उसके हाथों में पड़ने तथा नष्ट होने से बच गया। आगे चलकर हम देखेंगे कि पामर्सटन की इस निर्धारित की हुई पूर्वीय-नीति का इंगलैंड ने अगले युद्धों में भी अवलम्बन किया, और बहुत दिनों तक अँग्रेज़ रूस को अपना शत्रु समझते और टर्की की सहायता करते रहे।

चीन तथा भारतवर्ष—

पामर्सटन के मंत्रित्व-काल में अँग्रेज़ों को एशिया में भी कई प्रकार की कठिनाइयाँ हुईं। चीन के तट पर हांगकांग (Hong Kong) का टापू अँग्रेज़ों ने अपने अधीन कर लिया था, परन्तु चीन वाले अपने तट पर इस हस्तक्षेप को सहन न कर सकते थे। अतएव अँग्रेज़ों को चीन से युद्ध करना पड़ा, जिसमें चीनी बुरी तरह परास्त हुए, और वे अपने देश के व्यापार के द्वार यूरोपीय जातियों के लिये खोलने पर बाध्य हुए। चीन से युद्ध चल ही रहा था कि भारतवर्ष में सन् १८५७ का ग़दर (Sepoy Mutiny) आरम्भ हुआ, जिसने कुछ काल के लिये अँग्रेज़ी राज्य को बड़े संकट में डाल दिया। इस ग़दर को शान्त करने के लिये पामर्सटन ने बहुत बड़ी-बड़ी अँग्रेज़ी सेनायें भारतवर्ष को भेजीं, और ब्रिटिश साम्राज्य के इस बहुमूल्य अंग को अँग्रेज़ों के हाथ से निकल जाने से बचा लिया। ग़दर के पश्चात् ईस्ट इंडिया कम्पनी का अन्त हुआ, और भारतवर्ष के शासन-प्रबन्ध को अँग्रेज़ी-सरकार ने स्वयं अपने हाथ में ले लिया।

अमेरिकन गृह युद्ध—

"अमेरिका के संयुक्त-राज्य" के स्थापित होने के ही दिन से राजनीतिज्ञों ने दासों को मुक्त करने की ओर ध्यान दिया। दक्षिणी रियासतें दासों को मुक्त करने के विरुद्ध थीं, क्योंकि उनके खेतों में तम्बाकू तथा कपास की अधिक फसल होने के कारण उन्हें दासों की बहुत आवश्यकता थी। दक्षिणी रियासतें अपना शासन-विधान अलग बनाने के लिये तैयार थीं। अमेरिका का प्रसिद्ध व्यक्ति अब्रेहम लिंकन (Abraham Lincoln) जब प्रधान हुआ तो उसने दासों को मुक्त कराने का बीड़ा उठाया और अन्त में गृह युद्ध की नौबत आई। इस युद्ध में उत्तरी रियासतों की विजय हुई और उसके परिणाम-स्वरूप दास मुक्त कर दिये गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पामर्सटन तथा इंगलैंड की सहानुभूति दक्षिणी रियासतों के प्रति थी, क्योंकि वहाँ से कपड़े के कारखानों के लिये रुई आती थी। पर इंगलैंड की सरकार बिलकुल तटस्थ रही और उनके युद्ध में कोई हस्तक्षेप न किया। फिर भी अँग्रेज़ों ने एलबामा (Albama) नाम का एक जहाज़ इंगलैंड से रवाना कर दिया, जिसने वहाँ जाकर उत्तरी रियासतों के कई व्यापारिक जहाज़ों को भारी हानि पहुँचाई। इस हानि के बदले इंगलैंड को ३० लाख पाउंड देने पड़े, यद्यपि यह धन पामर्सटन की मृत्यु के पश्चात् दिया गया था।

जर्मनी का दृढ़ राज्य—

जर्मनी के वर्तमान दृढ़-राज्य की स्थापना उसी काल में पड़ चुकी थी। प्रशा राज्य के प्रधान-मंत्री प्रिंस बिसमार्क (Prince Bismarck) का मत था कि तलवार के ज़ोर से सब कुछ हो सकता है। सन् १८६६ में प्रशा ने आस्ट्रिया की सेना को केवल सात सप्ताह में खदेड़ दिया। प्रशा को शक्तिशाली होते देखकर फ्रान्स को डाह होने लगा और शीघ्र ही दोनों राष्ट्रों में युद्ध होने लगा। इस समय जर्मनी के अन्य राज्यों ने भी प्रशा का साथ दिया। जर्मन सैनिक पैरिस तक आ धमके। फ्रान्स ने सन् १८७२ में आलसेस तथा लारेन (Alsace and Lorraine) नामक दो प्रान्त देकर अपना पीछा छुड़ाया। अब जर्मनी के सब राज्यों ने मिलकर प्रशा के राजा की अधीनता में एक दृढ़-राज्य स्थापित किया। इस बीच में प्रशा ने डेनमार्क पर आक्रमण किया और उसे बुरी तरह परास्त किया, परन्तु पामर्सटन ने मित्र होते हुए भी उसकी कोई सहायता न की, उसका कारण यह था कि प्रशा की बढ़ती हुई शक्ति को पामर्सटन अब रोक नहीं सकता था।

पामर्सटन की मृत्यु—

सन् १८६५ में ८१ वर्ष की आयु में पामर्सटन परलोक सिधारा। उसने गृह-नीति में सुधार के आन्दोलन को अवश्य रोका, परन्तु अन्तर्राष्ट्रीय-क्षेत्र में उसकी नीति सदा उदार रही। इसका यह परिणाम हुआ कि इंगलैंड का मान अन्य देशों की दृष्टि में बहुत बढ़ गया, और अँग्रेज़ स्वतन्त्रता तथा राष्ट्रीयता के समर्थक समझे जाने लगे। पामर्सटन एक ज़ोरदार प्रधान-मंत्री हुआ और उसने परराष्ट्र-नीति के सम्बन्ध में जो चाहा बिना किसी रोक-टोक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के किया। वह अपने सहकारी मन्त्रियों से अनुमति लेने की परवा न करता था, और कभी-कभी बहुत-से कार्य ऐसे भी कर डालता, जिनकी स्वयं रानी विक्टोरिया तक को भी सूचना न होती थी। सन् १८५१ में जब फ्रान्स के प्रधान लूई नेपोलियन ने वहाँ के प्रजातन्त्र-राज्य को नष्ट करके अपने आपको सर्वाधिकारी बना लिया, तो पामर्सटन ने अन्य मन्त्रियों अथवा रानी से पूछे बिना ही फ्रान्स की नई सरकार को स्वीकार कर लिया। रानी ने इस बार बिगड़ कर उसे अपने पद से हटा दिया था; परन्तु उसका ऐसे योग्य राजनीतिज्ञ बिना काम न चला, और वह शीघ्र ही अपने पद पर फिर नियुक्त कर दिया गया। इस प्रकार पूरे १० वर्ष तक देश के शासन में उसी की तूती बोलती रही।

लार्ड डिज़रायले

आरंभिक-जीवन—

पामर्सटन की मृत्यु के पश्चात् इंगलैंड के राजनैतिक-क्षेत्र में एक नया युग आरम्भ हुआ, जिसमें पार्लियामेण्ट ने शासन-सुधार की ओर ध्यान दिया। इस युग में डिज़रायले (Disraeli) तथा ग्लेड्सटन (Gladstone) दो मुख्य नेता हुए हैं, जिनमें प्रधान-मंत्री के पद के लिये बराबर मुक़ाबला होता रहा, और कभी एक और कभी दूसरे की विजय हुई।

डिज़रायले यहूदी था और उसने राजनैतिक विषयों पर कई उपन्यास लिखकर शीघ्र ही देश में बड़ा यश प्राप्त कर लिया। सन् १८३७ में उसका पार्लियामेण्ट में प्रवेश हुआ; और वह थोड़े ही वर्षों के पश्चात् कन्ज़रवेटिव दल का नेता हो गया। उसके नेतृत्व में इस दल ने भी अपनी नीति में बहुत कुछ परिवर्तन कर दिया, और सुधार-पक्ष को अपनाना आरम्भ किया, जिसके कारण कन्ज़रवेटिव-दल भी लोकप्रिय हो गया। डिज़रायले खूब समझता था कि किसी दल का बिना मज़दूरों की सहायता के शक्तिशाली होना असम्भव है। इसी उद्देश्य से उसने सन् १८६७ में पार्लियामेण्ट के सुधार का दूसरा नियम (Second Reform Act) स्वीकृत कराया; जिससे देश में उसकी सर्वप्रियता बढ़ गई और जनता पर अन्य किसी कन्ज़रवेटिव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नेता का इतना प्रभाव कभी भी नहीं हुआ। उसको लार्ड-बेकंस-फील्ड (Lord Beaconsfield) की उपाधि मिली और उसकी शक्ति तथा यश दिन प्रति-दिन बढ़ते चले गये। उन्नीसवीं शताब्दी में अन्य किसी राजनीतिज्ञ ने जनता के हृदय पर उसके समान सिक्का भी नहीं जमाया!

लार्ड डिज़रायले

सामाजिक सुधार—

डिज़रायले सन् १८६७ में प्रथम वार प्रधान मंत्री बनाया गया, परन्तु अगले वर्ष के निर्वाचन में उसके दल की पराजय हुई और शीघ्र ही उसे पद त्यागना पड़ा। फिर सन् १८७४ में वह दूसरी वार ७० वर्ष की आयु में प्रधान मंत्री के पद पर नियुक्त हुआ, और इस पद पर सन् १८८० तक रहा। वह महारानी विक्टोरिया का बहुत आदर करता था, जिसके कारण रानी उसको ग्लेडस्टन की अपेक्षा अधिक पसन्द करती थी! प्रधान मंत्री होने पर उसने

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कई सामाजिक सुधार किये। मज़दूरों की दशा सुधारने के लिये उसने कई नियम बनाये, और यह उसके ही अनुरोध का परिणाम था कि मज़दूरों को अपने "व्यवसायिक संघ" (Trade Unions) स्वतन्त्रता-पूर्वक स्थापित करने की आज्ञा मिली और शान्ति पूर्वक धरना देना (Picketing) भी नियम विरुद्ध न रहा। एक नियम द्वारा सन् १८७६ में व्यापारिक बोर्ड (Board of Trade) को अधिकार दिया गया कि वह टूटे फूटे जहाज़ों को बन्दरगाह से जाने न दें और अमुक परिणाम से अधिक किसी जहाज़ को लदने न दे। उसने किसानों के लिये भी कई प्रकार की सुविधाएँ कीं, और ग़रीबों के लिये सरकार की ओर से कई स्थान (Common Enclosures) इस लिये संरक्षित कर दिये जिनमें वे अपने पशु चरा सकते थे। सन् १८७५ में नगर मंडलियों (Corporations) के सुधार का भी प्रयत्न किया गया, और बहुत से नगरों में गन्दे मकान तुड़वा कर नये मकान बनवाने के लिये उन्हें अधिकार दे दिया और उन्हें सरकार की ओर से सहायता भी दी गई।

परराष्ट्र नीति—

डिज़रायले की परराष्ट्र नीति का मुख्य उद्देश्य यूरोपीय राजनीतिक क्षेत्र में इंगलैंड की धाक जमाना था। पामर्सटन की भाँति उसका भी यही विचार था कि टर्की के साम्राज्य को रूस के हाथों से बचाया जाय। अतः वह भी बालकन प्रायद्वीप के युद्ध (Balkan War) में रूस के विरुद्ध था, और अपने जहाज़ी बेड़े के द्वारा उसकी सेना को टर्की की राजधानी कुस्तुनतुनिया (Constantinople) पर अधिकार ज़माने से रोका। टर्की ने पराजय स्वीकार की, परन्तु युद्ध के पश्चात् सन् १८७८ में डिज़रायले ने बर्लिन की कांग्रेस में समस्त यूरोपीय राज्यों के प्रतिनिधियों द्वारा पूर्वीय समस्या का निपटारा कराया। इस निबटारे के अनुसार टर्की के साम्राज्य के कई प्रान्त अवश्य स्वतन्त्र होगये, परन्तु रूस वाले इससे कोई लाभ न उठा सके। इसके अतिरिक्त अँग्रेज़ों को टर्की ने साईप्रस (Cyprus) का द्वीप दिया, जिससे अँग्रेज़ों की पूर्वीय भाग में शक्ति दृढ़ हुई। इस निबटारे ने समस्त यूरोप में ब्रिटेन का गौरव बढ़ा दिया, और उसके यश को देशान्तरों में फैला दिया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

साम्राज्य नीति—

डिज़रायले बड़ा साम्राज्यवादी था और उसने साम्राज्य की उन्नति की ओर भी ध्यान दिया। उसका यह उद्देश्य था कि ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को भले प्रकार संगठित करके एक सूत्र में बाँधा जाय। इसी उद्देश्य को सामने रखकर, उसने मिश्र के इसमाईल पाशा से स्वेज़ नहर के हिस्से मोल ले लिये, जिससे इस नहर के प्रबन्ध में अँग्रेज़ों को भाग मिल जाने के कारण उनको भारतवर्ष तथा एशिया के अन्य भागों में आने-जाने के लिये बड़ी सुविधा हो गई। आगे चलकर इन्हीं हिस्सों के द्वारा मिश्र देश पर ब्रिटिश आधिपत्य (British Protectorate over Egypt) की नींव पड़ी, और अँग्रेज़ों ने डिज़रायले की दूर-दर्शिता का लाभ उठाया। रूस के प्रति शत्रुता के भावों के कारण उसने सन् १८७८ में अफ़ग़ानिस्तान से युद्ध छेड़ दिया और विजय प्राप्त की।

डिज़रायले ही के परामर्श से सन् १८७७ में महारानी विक्टोरिया ने भारतवर्ष की साम्राज्ञी (Empress of India) की उपाधि ग्रहण की, और अपने युवराज एडवर्ड को भारतवर्ष में भ्रमण करने के लिये भेजा। इसका भारतवर्ष की जनता पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा, और उनमें ब्रिटिश शासकों के प्रति राज-भक्ति बढ़ने लगी।

इसके अतिरिक्त डिज़रायले ने पैसिफ़िक सागर में फ़ीजी (Fiji Island) के द्वीप पर अपना अधिकार जमाया, और दक्षिण अफ्रीका में ट्रान्सवाल (Transval) के उपनिवेश को बोअरों (Boers) से छीन कर अँग्रेज़ी राज्य में मिलाया। इस प्रकार डिज़रायले के मंत्रित्व-काल में मिस्र, भारतवर्ष दक्षिण अफ्रीका, एशिया इत्यादि भू-मण्डल के भिन्न-भिन्न भागों में ब्रिटिश साम्राज्य को उन्नति देने का प्रयत्न किया गया।

डिज़रायले की मृत्यु—

सन् १८८० के निर्वाचन में कन्ज़रवेटिव दल की हार हुई, जिसके कारण डिज़रायले को अपना प्रधान-मंत्री का पद त्यागना पड़ा। इसके एक ही वर्ष बाद डिज़रायले की मृत्यु हुई, और इंगलैंड का यह साम्राज्यवादी (Imperialist) राजनीतिज्ञ परलोक सिधारा।

अब
Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्लेड्सटन

प्रारम्भिक जीवन—

उन्नीसवीं शताब्दी का सब से प्रसिद्ध प्रधान-मंत्री ग्लेड्सटन (Gladstone) माना जाता है। वह केवल २३ वर्ष की आयु में सन् १८३२ में पार्लियामेण्ट की लोक-सभा का सदस्य हुआ। उसकी भाषण-शक्ति की योग्यता इतनी बढ़ी चढ़ी थी कि वह बड़ी सुगमता से श्रोताओं को अपनी ओर आकर्षित कर लेता था। उसका ध्यान सदैव लोकहित की ओर रहता था, और राजनीतिक विषयों को वह खेल अथवा ख्याति के साधन नहीं समझता था। पहले वह कन्ज़रवेटिव दल में सम्मिलित हुआ, परन्तु धीरे-धीरे उसके विचार बदलने लगे और वह पक्का लिबरल हो गया। सन् १८५२ में वह अर्थ-सचिव (Chancellor of the Exchequer) के पद पर नियुक्त हुआ, और स्वतन्त्र-व्यापार का अनुयायी होने के कारण उसने बहुत-सी व्यापारिक वस्तुओं पर से चुंगी हटा दी। सन् १८६८ में वह पहली बार प्रधान-मंत्री बनाया गया, और इसके बाद तीन बार फिर वह इसी पद पर नियुक्त हुआ। चार बार प्रधान-मंत्री नियुक्त होने का सौभाग्य ग्लेड्सटन के अतिरिक्त और किसी राजनीतिज्ञ को अभी तक प्राप्त नहीं हुआ है।

गृह-नीति तथा सुधार—

ग्लेड्सटन की शासन-नीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि जहाँ तक हो सके इंगलैंड को विदेशी झगड़ों से दूर रख कर देश में आर्थिक तथा सामाजिक उन्नति की जाय। सन् १८७० में उसने एक शिक्षा-सम्बन्धी नियम (Education Act) बनाया जिसके अनुसार देश के बालकों को प्रारंभिक शिक्षा (Primary Education) देने का उचित प्रबन्ध किया गया, ताकि राजनीतिक विषयों को समझने की योग्यता प्रत्येक पुरुष में हो जाय। बहुत से नये स्कूल खोले गये, और बहुत-से ग़ैर सरकारी स्कूलों को आर्थिक सहायता दी गई। प्रारम्भिक शिक्षा देने के विचार से देश कई प्रान्तों में बाँट दिया गया। जिस प्रान्त में पहले ही से ग़ैर-सरकारी-स्कूल काफ़ी संख्या में सथपित थे वहाँ के लिये कोई परिवर्तन न हुआ। अन्य प्रान्तों को स्कूल बोर्ड (School Boards) बनाने का अधिकार मिल गया। बोर्ड के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सदस्यों की नियुक्ति निर्वाचन द्वारा होती थी। इन बोर्डों का कर्तव्य ५ वर्ष से १२ वर्ष तक के बालकों की शिक्षा के लिये प्रबन्ध करना था। इन स्कूलों का खर्च कुछ तो सरकार देती थी, कुछ कर के रूप में प्रत्येक प्रान्त से वसूल किया जाता था, और कुछ लड़कों से फीस के द्वारा लिया जाता था। ओक्सफोर्ड तथा केम्ब्रिज के विश्व-विद्यालयों में सन् १८७१ के एक नियम द्वारा धार्मिक

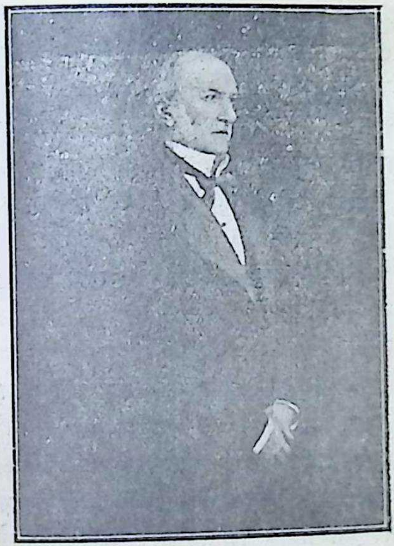

ग्लेड्सटन

भेदभाव हटा दिया गया। धार्मिक मतभेद होते हुए भी वहाँ अब प्रत्येक व्यक्ति धार्मिक-शिक्षा पा सकता है। पहले वहाँ धार्मिक-शिक्षा दी जाती थी और डिसेंटर्स तथा रोमन केथलिकों के लिये वहाँ कोई स्थान नहीं था। उसने सेना का भी सुधार किया, और यह नियम बनाया कि सेना में ६ वर्ष नौकरी करके सैनिक घर लौट सकते हैं और अपना निजी कार्य आरम्भ कर सकते हैं, परन्तु आव

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यकता पड़ने पर सरकार को अधिकार है कि चाहे जब उन्हें देश-रक्षा के कार्य के लिये फिर बुला ले। ग्लेड्सटन के अनुरोध से रानी ने सन् १८७१ में यह आज्ञा निकाली कि सेना के उच्च पद धन के द्वारा प्राप्त न किये जायँ। अब सैनिक-पद केवल वास्तविक योग्यता रखने वालों ही को मिला करेंगे। सन् १८७१ में मज़दूरों के हित के लिये यह नियम बना कि व्यापारिक संघ (Trade Unions) नियमानुकूल मान लिये जायँ। अब मज़दूर वर्ग को अपना संगठन करने का अच्छा अवसर प्राप्त हुआ। सन् १८७२ के बेलट एक्ट (Ballot Act) द्वारा यह निश्चय हुआ कि वोट गुप्त रीति से दिये जायँ, ताकि वोटर पर किसी प्रकार का दबाव न पड़ सके। ग्लेड्सटन ही के अनुरोध से सिविल सरविस (Civil Service) की परीक्षा होने लगी, जिसमें अमीर-ग़रीब सब सम्मिलित हो सकते थे, और जिनकी योग्यता सब से अधिक पाई जाती थी उन्हीं को बड़े सरकारी पदों पर नियुक्त किया जाता था।

ग्लेड्सटन के दूसरे मंत्रित्व-काल में भी कुछ लाभदायक सुधार किये गये। सन् १८८० के एक नियम द्वारा कारखानों के मालिक उन हानियों द्वारा उत्तरदाता बने जो मशीनों के फटने आदि से उनकी भूल के कारण मज़दूरों को काम करते समय पहुँचे। इसके अतिरिक्त ग्लेड्सटन ही के नेतृत्व में पार्लियामेण्ट के सुधार का तीसरा नियम स्वीकृत हुआ, जिसके अनुसार साधारण किसानों तथा मज़दूरों को पार्लियामेण्ट के निर्वाचन में वोट देने का अधिकार मिल गया। इस प्रकार ग्लेड्सटन के मंत्रित्व-काल में सुधारों की खूब धूम रही और सुधारवादी (Liberal) पक्ष की पार्लियामेण्ट में तूती बोलती रही।

परराष्ट्र-नीति—

ग्लेड्सटन का मत था कि पर राष्ट्रीय झगड़ों का जहाँ तक हो सके युद्ध के स्थान पर आपस में समझौता करके ही निपटारा करा दिया जाय। इसी कारण वह इंगलैंड के प्रसिद्ध शान्ति-प्रिय प्रधान-मंत्रियों में माना जाता है। उसके मंत्रित्व-काल में युद्ध के कई अवसर आये, परन्तु उसने प्रत्येक अवसर पर शान्ति-प्रिय नीति ही से काम निकालने की चेष्टा की। इस समय फ्रान्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और जर्मनी में बहुत बड़ा युद्ध हुआ, परन्तु ग्लेड्सटन के अनुरोध से इंगलैंड ने इस युद्ध में किसी पक्ष की भी सहायता न की। इसी प्रकार जब संयुक्त-अमेरिकन-राज्य की उत्तरी तथा दक्षिणी रियासतों में गृह-युद्ध (American Civil War) छिड़ा, उस समय वह अपनी शान्ति-प्रिय-नीति पर दृढ़ रहा और उसने किसी पक्ष का भी साथ न दिया। परन्तु इंगलैंड में सरकारी निषेध होते हुए भी एलबामा (Albama) नामक एक जहाज़ रियासतों की सहायता के लिये बनवाया गया जिसने अमेरिका पहुँच कर उत्तरी रियासतों को बहुत हानि पहुँचाई। इसका समाचार पाकर ग्लेड्सटन ने शीघ्र ही संयुक्त-अमेरिकन-राज्य से समझौता कर लिया; और एल-बामा जहाज़ के कारण जिन रियासतों की हानि हुई थी, उन्हें धन देकर शान्त कर दिया।

इसी प्रकार दक्षिणी अफ्रीका में जब बोअरों (Boers) ने अँग्रेज़ी उपनिवेशों के विरुद्ध युद्ध खड़ा किया, उस समय भी ग्लेड्सटन ने युद्ध को अधिक काल तक न चलने दिया, और संधि करके बोअरों की ट्रान्सवाल (Transval) नामक उपनिवेश की स्वतन्त्रता को स्वीकृत कर लिया। मिश्र में भी इस समय अँग्रेज़ों के विरुद्ध एक बड़ा भीषण आन्दोलन चल रहा था; और मिस्र के निकट ही सूडान (Sudan) प्रान्त में मेहदी (Mehdi) नामक एक मुसलमान नेता ने भयंकर विद्रोह खड़ा कर रक्खा था। मिस्र का आन्दोलन तो शान्त हो गया और उस पर इंगलैंड का आधिपत्य (Protectorate) भी स्थापित हो गया, परन्तु ग्लेड्सटन सूडान के विद्रोह को दबाने में असफल रहा, और अँग्रेज़ी सेना का अफ़सर जनरल गोर्डन (General Gordon) स्वयं विद्रोहियों के हाथों मारा गया।

ग्लेड्सटन की शान्ति-प्रिय-नीति से अन्तर्राष्ट्रीय-क्षेत्र में ब्रिटेन की बहुत कुछ मान-हानि हुई, और उसके प्रत्येक प्रश्न पर समझौता करने के लिये तैयार हो जाने के कारण अन्य देश यह समझने लगे कि अँग्रेज़ों को अपनी शक्ति पर भरोसा नहीं रहा। इसी परराष्ट्र-नीति के कारण ग्लेड्सटन की देश में भी बदनामी होने लगी, और देशवासी उस पर यह दोष लगाने लगे कि वह अपनी अयोग्यता के कारण युद्ध करने से झिझकता है। परन्तु

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ग्लेड्सटन ने इसकी कुछ परवा न की और वह बराबर अपनी शान्ति-प्रिय नीति ही पर अटल रहा।

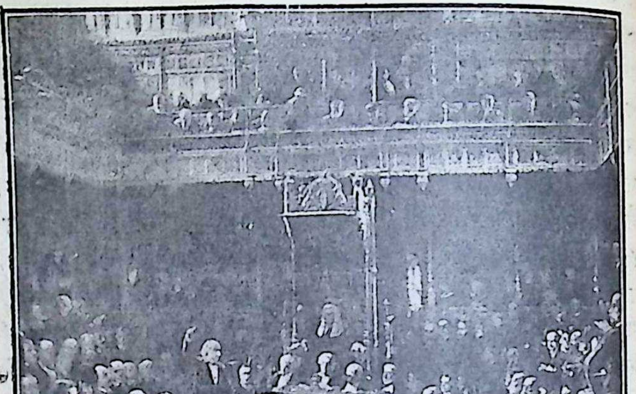

ग्लेड्सटन का "आयरिश होम रूल बिल" का प्रस्ताव

आयरलैंड की समस्या—

ग्लेड्सटन को आयरलैंड की विकट समस्या को भी सुलझाना था। वहाँ के निवासी केथलिकों का आन्दोलन दिन प्रति-दिन बढ़ता जाता था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

और अब वहाँ क्रान्तिकारियों का ज़ोर बढ़ने लगा था। आयरलैंड में फ़ीनीयन (Finian) समाज नामक एक नया दल बन गया था जिसने स्पष्टरूप से यह घोषित कर दिया था कि आयरलैंड तथा ब्रिटेन के संयोग को तोड़ कर अपने देश को पूर्णतया स्वतन्त्र करके ही दम लेंगे। केथलिकों को संतुष्ट करने के लिये ग्लेड्सटन ने आयरलैंड के सरकारी प्रोटेस्टेन्ट चर्च को सहायता देना बन्द (Disestablishment of the Irish Church) कर दिया, क्योंकि इससे केवल थोड़े प्रोटेस्टेण्टों ही को लाभ होता था, और इसके व्यय के लिये समस्त जनता को धर्म-कर (Tithe) देना पड़ता था। इसके अतिरिक्त ग्लेड्सटन ने किसानों के लिये भी सुविधा करने का प्रयत्न किया और उनसे जो कर वसूल किये जाते थे उनमें भी थोड़ी बहुत कमी की गई। उसी के अनुरोध से सन् १८७० में यह नियम (Irish Land Act) बनाया गया कि जब तक किसान लगान देता रहे, तब तक ज़मींदार या सरकार उसे भूमि से अलग नहीं कर सकते। परन्तु इन सब प्रयत्नों का कोई विशेष प्रभाव न पड़ा और आयरलैंड में स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन बराबर चलता रहा।

अन्त में स्वयं ग्लेड्सटन ने यह स्वीकार किया कि आयरलैंड की समस्या का निपटारा करने के लिये उसे स्वराज्य (Home Rule) दे देना अत्यन्त आवश्यक है। इसी आशय से उसने दो बार आयरलैंड के स्वराज्य का प्रस्ताव (Irish Home Rule Bill) पार्लियामेण्ट के सम्मुख उपस्थित किया, परन्तु वह स्वीकृत न हो सका, क्योंकि कन्ज़रवेटिव दल वाले इसके विरोधी थे। ऐसी स्थिति में ग्लेड्सटन ने अपने पद से सन् १८९४ में त्याग-पत्र दे दिया, परन्तु अपने अन्तिम भाषण में उसने पार्लियामेण्ट को यह चेतावनी भी दी थी कि बिना स्वराज्य दिये आयरलैंड में शान्ति स्थापित करना असंभव है।

ग्लेड्सटन की मृत्यु—

पद त्यागने के पश्चात् ग्लेड्सटन ने कुछ काल तक राजनीति से हाथ खींच कर शान्तिमय जीवन व्यतीत किया; परन्तु वह अधिक काल तक जीवित न रहा। पद त्यागने के एक ही वर्ष प्रश्चात् ८६ वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हो गई। वह विक्टोरिया के राज्य-काल के दूसरे अर्धभाग का सब से

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रमुख राजनीतिज्ञ हुआ है, और यद्यपि उसकी शान्ति-प्रिय परराष्ट्र-नीति के कारण कुछ काल के लिए उसकी सर्वप्रियता कम हो गई थी। फिर भी जनता पर उसका काफ़ी प्रभाव था। उसने सुधार-पक्ष की उन्नति के लिए बहुत कुछ किया, और सामाजिक तथा आर्थिक क्षेत्रों में कई उत्तम नियम स्वीकृत कराये। उसने आयरलैंड की समस्या का भी बहुत ही उचित निपटारा सोचा था। आगे चल कर हम देखेंगे कि इस योग्य राजनीतिज्ञ की भविष्यवाणी पूरी हुई और आयरलैंड में स्वराज्य मिलने के समय तक बराबर अशान्ति बनी रही। उसकी मृत्यु होने पर लिबरल दल शक्तिहीन होने लगा और विक्टोरिया के राज्य-काल के शेष भाग में देश का शासन फिर कन्ज़रवेटिव दल के हाथों में आ गया।

Exercises

1. Descibe the character of Queen Victoria, and point out the importance of her reign.
2. Sketch the career of Sir Robert Peel, and explain why he has been called "the most Liberal of the Conservatives and the most Conservative of the Libeals.
3. Why is the ministry of Lord Palmerston famous? How far is it correct to say that he was "a Conservative at home and a Revolutionary abroad ?"
4. Give an account of the political views and career of Lord Disraeli. Why is he regarded as "a great Imperialist Statesman ?"
5. Describe the career and policy of Gladstone.
6. What part did Gladstone play in the solution of Irish Problem ?
7. Discuss the foreign policy of Gladstone and estimate its effect on the position of England ?
8. What was the "Eastern Question ?" What part was played in it by Palmerston and Disraeli ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

छत्तीसवाँ परिच्छेद

ब्रिटेन तथा यूरोप

सन् १८२६	यूनान की स्वतन्त्रता
,, १८५४—१८५६	क्रीमिया का युद्ध
,, १८६६	स्वेज़ नहर का खुदना
,, १८७१	इटेली तथा जर्मनी में संगठित राज्य
,, १८७७—१८७८	बालकन युद्ध (रूस तथा टर्की का युद्ध)
,, १८८२	मिश्र पर ब्रिटेन का आधिपत्य

(क) पूर्वी समस्या

टर्की तथा रूस—

यूरोप के पूर्वी भाग में टर्की का साम्राज्य बहुत दूर तक फैला हुआ था। इस साम्राज्य में बहुत से ईसाई प्रान्त थे; परन्तु सम्राट् उनका मुसलमान था, जिसके कारण ईसाई प्रान्तों में बराबर असन्तोष बना रहता था। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में ईसाईयों ने मुसलमान तुर्कों के शासन से स्वतन्त्र होने के लिये आन्दोलन आरम्भ किया, क्योंकि मुसलमान शासक, धर्म तथा सभ्यता भिन्न होने के कारण ईसाई प्रजा पर बड़े-बड़े अत्याचार करते थे। टर्की के समीप ही रूस का बड़ा साम्राज्य है, और रूसियों ने इस अवसर से लाभ उठा कर टर्की को छिन्न-भिन्न करके अपनी शक्ति को बढ़ाना चाहा। रूस को यह आशा थी कि यूरोप की अन्य जातियाँ भी इस प्रश्न पर उसके साथ सहानुभूति दिखावेंगी, और ईसाईयों के स्वतन्त्र कराने में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सहयोग देंगी। टर्की का शासन इस समय बड़ी शोचनीय अवस्था में था, और सब यही समझते थे कि तुर्कों के साम्राज्य का अन्त समीप है। इस साम्राज्य के टूटने पर उसके प्रान्तों का निपटारा किस प्रकार होगा, यह एक बड़ी जटिल समस्या थी जिसको समस्त यूरोप के राजनीतिज्ञों को सुलझाना था। इतिहास में यह प्रश्न पूर्वीय-समस्या (Eastern Question) के नाम से प्रसिद्ध है।

इंगलैंड की पूर्वीय-नीति—

जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है इंगलैंड की पूर्वीय-नीति को लार्ड पामर्सटन ने निर्धारित किया, और इसी नीति का आगे चल कर लार्ड डिज़रायले ने अवलम्बन किया। इंगलैंड ने इस प्रश्न को धार्मिक दृष्टि से न देखकर राजनैतिक दृष्टि से देखा। पामर्सटन का यह विचार था कि टर्की के साम्राज्य के टूट जाने से रूस को एशिया की ओर बढ़ने के लिये खुला मैदान मिल जायगा। यदि टर्की के कुछ भागों पर रूस ने अधिकार जमा लिया तो इससे रूसियों की शक्ति कृष्ण सागर (Black Sea) पर पूर्णतया स्थापित हो जायगी। इसके अतिरिक्त रूम सागर के पूर्वीय तट पर भी रूसियों ही की प्रधानता रहेगी, जिससे एशिया से व्यापार करने के लिये अन्य यूरोपीय जातियों का रास्ता बन्द हो जायगा। एशिया के व्यापार में सबसे बड़ा भाग ब्रिटेन ही का था; इसलिये इस पूर्वीय समस्या में अधिकतर इंगलैंड ही को विशेष भाग लेना पड़ा। ब्रिटेन का एशिया में व्यापार के अतिरिक्त बहुत बड़ा साम्राज्य भी था, और उसे यह भय था कि रूस वाले अपनी शक्ति बढ़ाकर कहीं भारतवर्ष पर उत्तर-पश्चिम की ओर से आक्रमण न कर दें। अतः इंगलैंड के लिये यह आवश्यक हो गया कि रूस को शक्ति बढ़ाने से रोका जाय; और इस कारण धार्मिक विचार को छोड़ कर टर्की तथा रूस के संघर्ष में ब्रिटेन को टर्की ही की रक्षा का भार लेना पड़ा, जिससे रूस वाले टर्की की कमज़ोरी से कोई अनुचित लाभ न उठा सके।

क्रीमिया का युद्ध—

सन् १८५० में रूस के सम्राट् निकोलस प्रथम (Czar Nicholas I) ने ईसाइयों का पक्ष लेकर टर्की से यह प्रस्ताव किया कि उसके साम्राज्य में

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जो जरुसलम इत्यादि ईसाइयों के पवित्र स्थान हैं उन सब को स्वतन्त्र कर दिया जाय। टर्की के इस प्रस्ताव को अस्वीकृत करने पर रूस ज़ार ने उस पर आक्रमण कर दिया, और अन्य यूरोपीय राज्यों को भी इसमें सहायता देने के लिए सम्मिलित करना चाहा। परन्तु इंगलैंड ने रूस का यह मनोरथ सफल न होने दिया, और उसने तुरन्त ही टर्की का पक्ष लेकर रूस के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करदी। इंगलैंड ने अपनी ओर फ्रान्स को भी मिला लिया, क्योंकि इस समय फ्रान्स में नैपोलियन का भतीजा नैपोलिन तृतीय शासन कर रहा था, जो युद्ध-क्षेत्रों में यश प्राप्त करने का बहुत इच्छुक था। फ्रान्स तथा इंगलैंड में बहुत दिनों से शत्रुता चली आती थी, परन्तु इस अवसर पर एशिया के व्यापार तथा साम्राज्य की रक्षा के लिये दोनों ने सहयोग करना ही उचित समझा। यह युद्ध अधिकतर रूस के दक्षिण में क्रीमिया (Crimea) प्रान्त में हुआ, और इसी कारण क्रीमिया के युद्ध के नाम से प्रसिद्ध है।

अँग्रेज़ों तथा फ्रान्सीसियों ने मिलकर पहले तो सन् १८५४ में ऐलमा (Alma) नदी के किनारे रूसी सेना को परास्त किया और फिर क्रीमिया के प्रसिद्ध रूसी दुर्ग सेबेस्टापोल (Sebestapole) पर घेरा डाला, परन्तु कड़ा जाड़ा आरम्भ हो जाने के कारण उनको बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। बहुत से सैनिक भूख तथा जाड़े के कारण मरने लगे। अस्पतालों का कोई उचित प्रबन्ध न होने के कारण भी उनके कष्ट दिन-प्रति दिन बढ़ते गये। इस दुर्दशा का समाचार इंगलैंड पहुँचने पर वहाँ के प्रधान मन्त्री पामर्सटन ने मिस फ़्लोरेन्स नाइटिंगेल (Miss Florence Nightingale) नामक एक दयालु महिला को क्रीमिया भेजा, जिसने वहाँ पहुँच कर फ़ौजी अस्पतालों के प्रबन्ध का भार अपने ऊपर लिया। अस्पतालों में इस उदारचित्त महिला ने कष्ट-पीड़ित सैनिकों की ऐसी अच्छी सेवा की कि उसके कारण समस्त इंगलैंड में उसका यश हो गया। इसके कुछ महीनों पश्चात् क्रीमिया का जाड़ा भी कम होने लगा, जिससे लाभ उठाकर अँग्रेज़ों तथा फ्रान्सीसियों ने बालक्लावा (Balaclava) तथा इंकरमैन (Inkerman) के स्थान पर रूसियों को बुरी तरह परास्त किया, और अन्त में सेबेस्टपोल के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

दुर्ग पर अपना अधिकार जमा लिया। यह देखकर सन् १८५६ में रूस के ज़ार को पैरिस की सन्धि (Peace of Paris) करनी पड़ी, जिसके अनुसार यह निश्चित कर दिया गया कि टर्की के साम्राज्य पर कोई हस्तक्षेप न किया जायगा। इसके अतिरिक्त रूसियों को अपना जहाज़ी बेड़ा कृष्णा सागर से हटाना पड़ा, जिसके कारण उसकी जल-शक्ति को बड़ा धक्का पहुँचा। दूसरे टर्की के सुलतान ने वचन दिया कि वह ईसाइयों के प्रति अच्छा व्यवहार करेगा।

बालकन प्रायद्वीप का युद्ध—

कुछ समय पश्चात् रूसियों ने ग्लेड्सटन की कमज़ोर परराष्ट्र-नीति से लाभ उठाकर कृष्ण सागर पर फिर अपना अधिकार जमा लिया, और टर्की के साम्राज्य के ईसाई प्रान्तों को फिर विद्रोह करने के लिये भड़काना आरम्भ किया। परिणाम यह हुआ कि सन् १८७५ में बलगेरिया (Bulgaria), सर्विया (Servia) इत्यादि ईसाई प्रान्तों ने भयंकर विद्रोह खड़ा कर दिया। इधर रूसियों ने उनका साथ देने का बहाना लेकर टर्की पर आक्रमण कर दिया, और वह उसकी राजधानी कुस्तुनतुनिया (Constantinople) तक आ धमका।

यह समाचार पाकर समस्त यूरोप में फिर खलबली मच गई। इंगलैंड के प्रधान-मंत्री डिज़रायले ने तुरन्त ही टर्की को सहायता देने के लिये एक बहुत बड़ी सेना बालकन प्रायद्वीप की ओर भेजी। इसका रूसियों पर इतना प्रभाव पड़ा कि उन्होंने तुरन्त ही युद्ध बन्द कर दिया, और टर्की से सन्धि कर ली। परन्तु डिज़रायले इससे सन्तुष्ट न हुआ, और उसने यह प्रस्ताव किया कि समस्त यूरोपीय देशों के प्रतिनिधि सम्मिलित होकर इस पूर्वीय समस्या का सदा के लिये निपटारा कर दें। अतः सन् १८७८ में यूरोप के बड़े-बड़े राष्ट्रों के प्रतिनिधियों की बर्लिन (Berlin) नगर में एक काँग्रेस हुई, जिसका सभापति जर्मनी का प्रसिद्ध प्रधान-मंत्री प्रिंस बिसमार्क (Prince Bismarck) था। इस कांग्रेस ने यह निश्चित किया कि रूमानिया, सर्विया तथा मोएटीनीगरो के ईसाई प्रान्त-स्वतन्त्र राज्य बना दिये जायँ। इसके बाद बलगेरिया को थोड़ी-सी स्वतन्त्रता दे दी गई, और दो ईसाई प्रान्तों का शासन आस्ट्रिया को सौंपा गया। साईप्रस (Cyprus) का द्वीप इंगलैंड

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को दे दिया गया, परन्त यह ठहरा लिया गया कि अँग्रेज़ी बेड़े को भविष्य में टर्की के एशियाई भाग की रक्षा करनी होगी। सन् १९१४ तक ब्रिटेन इस संधि के अनुसार कार्य करता रहा। उस वर्ष जर्मनी का पक्ष लेकर टर्की ने ब्रिटेन के विरूद्ध युद्ध छेड़ दिया। अब ब्रिटेन ने साइप्रस के टापू को ब्रिटिश-साम्राज्य में सम्मिलित किया, और टर्की के एशियाई भाग का भार भी उसके सर न रहा। इस समझौते से टर्की की शक्ति तो अवश्य कम हो गई, परन्तु रूस वाले इससे कोई अनुचित लाभ न उठा सके। इगलैंड की पूर्वीय नीति का केवल यही लक्ष्य था कि टर्की का कोई भाग रूस को न मिलने पावे। उसका यह मनोरथ पूर्णतया सिद्ध हो गया।

बर्लिन के निर्णय का प्रभाव—

टर्की का पक्ष लेने के कारण रूस इंगलैंड का शत्रु हो गया। रूस मध्य-एशिया से बराबर अपनी शक्ति बढ़ाता चला जाता था, और अफ़गानिस्तान की सीमा पर पंजदेह नामक एक गाँव उसके अधिकार में भी आ गया। रूस के आक्रमण के भय के कारण भारतीय सरकार ने सन् १८७२ में अफ़ग़ानिस्तान से युद्ध किया। उधर टर्की पर भी रूस का दाँत लगा हुआ था। इस प्रकार उन्नीसवीं शताब्दी भर इंगलैंड तथा रूस के मध्य तनातनी रही। फिर कहीं १९०७ में जर्मनी की शक्ति को बढ़ते देख कर इंगलैंड तथा रूस ने संधि की जिसके द्वारा यह निश्चय हुआ कि फारस, अफ़ग़ानिस्तान तथा तिब्बत में ये दोनों महाशक्तियाँ किसी प्रकार का राजनीतिक प्रभाव डालने की चेष्टा न करेंगे। अब इंगलैंड तथा रूस मित्र हो गये और पिछले जर्मन-युद्ध में भी रूस ने इंगलैंड ही का साथ दिया था। परन्तु एक दूसरे में अविश्वास के कारण जब जर्मनी सन् १८३९ में युद्ध के लिये उतारू हुआ तो रूस ने इंगलैंड तथा फ्रान्स से संधि न कर जर्मनी से संधि करली। उधर बर्लिन के निर्णय के पश्चात् टर्की तथा बालकन प्रायद्वीप में नई-नई समस्या उपस्थित हो गई जिनके कारण सन् १९१४ के होने वाले यूरोपीय महायुद्ध के बीज बोये गये। इन घटनाओं का उल्लेख हम अगले एक अध्याय में करेंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) मिश्र तथा सूडान

स्वेज़ नहर का खुलना—

कई शताब्दियों से मिश्र टर्की के साम्राज्य का एक अंग था, परन्तु तुर्क-सम्राट् के शक्ति-हीन होने के कारण सन् १८३८ में मिश्र के सूबेदार मुहम्मदअली (Mehemet Ali) ने अपने आपको स्वतन्त्र बना लिया, और उसने सीरिया (Syria) पर चढ़ाई कर दी। ऐसी स्थिति में इंगलैंड तथा अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने टर्की की रक्षा का भार अपने ऊपर लिया। उन्होंने मुहम्मदअली को आगे बढ़ने से रोका, और उसे सीरिया से मिश्र लौट जाने पर बाध्य किया, परन्तु मिश्र में मुहम्मदअली की स्वतन्त्रता बराबर बनी रही।

मुहम्मदअली एक योग्य शासक था, और उसने एक दृढ़ शासन स्थापित किया। उसके पुत्र इस्माइल पाशा (Ismail Pasha) ने सन् १८६३ में "खदीव" (Khedive) की उपाधि ग्रहण की, क्योंकि मिश्र के प्राचीन राजे इसी नाम से पुकारे जाते थे। इस्माइल पाशा ने अपने देश में यूरोपीय आविष्कारों को प्रचलित करने की मूर्खता की। इसमें उसका इतना व्यय बढ़ गया कि उसे फ्रान्स और ब्रिटेन से ऋण लेना पड़ा। उसने एक फ्रान्सीसी कम्पनी को स्वेज नहर बनाने का अधिकार दिया और स्वयं कम्पनी के बहुत से हिस्से मोल लिये। १८६६ में स्वेज़ नहर (Suez Canal) भी खुल गई, परन्तु खदीव को इससे कोई लाभ न हुआ। इस्माइल के कुप्रबन्ध के कारण मिश्र सरकार की आर्थिक दशा बिगड़ती ही चली गई, जिससे वह फ्रान्स और ब्रिटेन का ऋण चुकाने में असमर्थ रहा। ऋण चुकाने के अभिप्राय से उसने सन् १८७५ में अँग्रेज़ी सरकार के हाथ अपने स्वेज़ नहर के हिस्से भी बेच दिये, परन्तु ऋण फिर भी न चुकाया जा सका। अन्त में सन् १८७६ में उसे यह स्वीकार करना पड़ा कि अपना ऋण वसूल करने के लिये फ्रान्स तथा ब्रिटेन मिश्र के आर्थिक-विभाग पर अपना संयुक्त-अधिकार स्थापित करें। इस निश्चय के पश्चात् इस्माइल पाशा पद-च्युत किया गया, और उसका पुत्र तौफ़ीक़ खदीव बनाया गया।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रिटेन का आधिपत्य—

मिश्र की जनता विदेशियों के इस हस्तक्षेप को सहन न कर सकी, और वहाँ राष्ट्रीयता की लहर फैली। अरबी पाशा (Arabi Pasha) नामक एक सैनिक अफ़सर के नेतृत्व में एक भयंकर विद्रोह हुआ। इस विद्रोह को शान्त करने का पूर्ण भार इंगलैंड पर ही पड़ा, क्योंकि घरेलू झगड़ों के कारण फ्रान्सीसी सरकार इस ओर अपना ध्यान न दे सकी। विद्रोह शान्त होने के पश्चात् मिश्र की सरकार को ब्रिटेन का आधिपत्य (British Protectorate) स्वीकृत करना पड़ा। इसका यह परिणाम निकला कि

जेनरल गार्डन

खदीव नाम-मात्र का राजा रह गया और देश का शासन-संचालन ब्रिटिश कौंसिल जेनरल (Consul General) द्वारा होने लगा। इस घटना के पश्चात् मिश्र देश में फ्रान्सीसियों का किसी प्रकार का अधिकार न रहा।

सूडान का विद्रोह—

मिश्र के दक्षिण में सूडान (Sudan) देश है, और वहाँ दास-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यापार बहुत ज़ोरों से होता था। दास-व्यापार को रोकने के बहाने से, ब्रिटिश आधिपत्य से कुछ ही दिनों पहले मिश्र के खदीव ने इस देश पर अधिकार कर लिया था। यहाँ पर भी सन् १८८३ में एक भयंकर विद्रोह हुआ। यह विद्रोह एक जोशीले मुसलमान के नेतृत्व में—जो अपने आपको नये नबी मेहदी (Mehdi) के नाम से पुकारता था—हुआ। मिश्र से जो अँग्रेज़ी सेना उसे शान्त करने के लिये भेजी गई वह शीघ्र ही नष्ट कर दी गई, और उसका जेनरल गार्डन (Gordon) स्वयं युद्ध में मारा गया। इस घटना के पश्चात् सूडान देश स्वतन्त्र छोड़ दिया गया, परन्तु इस अपमान को अँग्रेज़ बहुत दिनों तक न भूले। उधर सूडान वाले भी कई भागों पर छापा मार-मार कर भाग जाते थे। अन्त में सन् १८९८ में जेनरल किचनर (Kitchner) ने सूडान पर आक्रमण किया और वहाँ की सेना को आमडरमेन (Omdurman) के युद्ध में बिल्कुल नष्ट कर दिया। इसके पश्चात् सूडान में ब्रिटेन तथा मिश्र का संयुक्त-शासन स्थापित हो गया।

वर्तमान स्थिति—

ब्रिटिश आधिपत्य के पश्चात् मिश्र देश बराबर हर प्रकार की उन्नति करता रहा। देश से दरिद्रता दूर हो गई और मिश्र सरकार की आर्थिक स्थिति भी सुधर गई। पिछले यूरोपीय महायुद्ध के प्रारम्भ होने पर मिश्र के खदीव ने ब्रिटेन के शत्रु टर्की का साथ दिया। इस पर उसे पदच्युत किया गया और उसके स्थान पर उसका चचा "खदीव" बनाया गया। नये खदीव के अधिकार भी बहुत कम कर दिये गये, और युद्ध-काल में शासन-प्रबन्ध वास्तव में अँग्रेज़ों के ही हाथ में रहा। युद्ध समाप्त होने पर मिश्र में पूर्ण स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन चला, और अन्त में सन् १९२२ में वह पूर्णतया स्वतन्त्र बना दिया गया। परन्तु अँग्रेज़ी सरकार ने मिश्र से यह ठहरा लिया कि आवश्यकता पड़ने पर इंगलैंड वहाँ की विदेशी नीति में हस्तक्षेप कर सकता है।

(ग) अन्य यूरोपीय राज्य

यूनान तथा बेलजियम की स्वतन्त्रता—

टर्की के ईसाई-प्रान्तों में से सबसे पहले यूनान स्वतन्त्र हुआ। जैसा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऊपर लिखा जा चुका है यूनान वालों ने मुसलमान तुर्कों के शासन के विरुद्ध विद्रोह किया, जिसके परिणाम स्वरूप सन् १८२६ में यूनान का स्वतन्त्र-राज्य स्थापित हो गया। यूनान की स्वतन्त्रता के युद्ध में ब्रिटेन ने टर्की का साथ नहीं दिया था, क्योंकि उस समय तक ब्रिटिश राजनीतिज्ञों ने यह नहीं समझा था कि टर्की के साम्राज्य के टूटने से उनको रूस की ओर से किसी प्रकार का भय हो जायगा।

इसी प्रकार ब्रिटेन ने बेलजियम को भी स्वतन्त्र होने में सहायता दी। अब तक बेलजियम तथा हालैंड एक राज्य में सम्मिलित थे, और डच लोग इस राज्य के शासक थे। बेलजियम वाले केथलिक होने के कारण डच प्रोटेस्टेण्टों के शासन से सदैव असन्तुष्ट रहते थे। उनका स्वतन्त्र-राज्य स्थापित हो जाने पर अन्य यूरोपीय राज्यों ने एक बड़ी महत्त्वपूर्ण संधि पर हस्ताक्षर किये जिसका यह आशय था कि यूरोपीय युद्धों में बेलजियम की सीमा पर कोई भी किसी प्रकार का हस्तक्षेप न करेगा। आगे चलकर हम देखेंगे कि यूरोपीय महायुद्ध के समय में जर्मनी ने इस संधि का उल्लंघन किया, जिसके कारण ब्रिटेन को उसके विरुद्ध युद्ध करना पड़ा।

ब्रिटेन तथा फ्रान्स—

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति तथा नैपोलियन के युद्धों के पश्चात् वहाँ प्राचीन राजवंश को फिर सिंहासन मिल गया था। परन्तु कुछ काल पश्चात् फ्रान्स में दूसरी राज्य-क्रान्ति हुई, जिसके परिणाम स्वरूप नैपोलियन के भतीजे ने अवसर पाकर अपने को नैपोलियन तृतीय के नाम से सम्राट् घोषित कर दिया। नैपोलियन तृतीय ने अपना यश बढ़ाने के लिये कई यूरोपीय युद्धों में भाग लिया, और उसने अपने चचा के विपरीत ब्रिटेन से युद्ध करने के स्थान पर अधिकतर ब्रिटेन के साथ मित्रता ही रक्खी। उसी समय से फ्रान्स तथा इंगलैंड की पुरानी शत्रुता का अन्त माना जाता है; और दोनों जातियों ने अब यह समझ लिया कि परस्पर सहयोग करने से दोनों ही को लाभ होगा। इसके कुछ काल पश्चात् फ्रान्स में तीसरी राज्य-क्रान्ति हुई, जिसके परिणाम स्वरूप प्रजातन्त्र-राज्य (The French Republic) की स्थापना हुई, जो अब तक उसी तरह चला आता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रिटेन तथा इटेली—

उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य तक इटेली का कुछ भाग आस्ट्रिया के अधीन था, और शेष भाग छोटे-छोटे राज्यों में बटा हुआ था। परन्तु इसके पश्चात् इटेली में जातीयता की लहर आरम्भ हुई। यहाँ के निवासियों ने अपने देश में संगठित-राज्य स्थापित करने के लिये आन्दोलन खड़ा किया। सन् १८७६ तक इटेली वालों का यह मनोरथ पूर्ण हो गया। उनको आस्ट्रिया के आधिपत्य से भी छुटकारा मिल गया, और उनके देश में एक संगठित-राज्य (United Italy) भी स्थापित हो गया।

महायुद्ध में इटेली ने मित्र-राष्ट्र (Allies) का साथ दिया, परन्तु लड़ाई के अन्त होने के पश्चात् जो संधि द्वारा उसको भूमि मिली उससे वहाँ के लोगों को तृप्ति न हुई। अतः वहाँ मसोलीनी के नेतृत्व में (Fascism) नाम का भयंकर आन्दोलन चला जिसने देश में एक नई स्फूर्ति पैदा कर दी। राजनीति के क्षेत्र में मसोलिनी ने यह पद्धति निर्धारित की कि वह रूम साम्राज्य को पुनर्जन्म देगा। इसी आशय से उसने अफ्रीका में ज़रा सी बात पर अबीसीनियाँ के सम्राट् नीगुस से झगड़ा कर लिया। नीगुस तथा इंगलैंड के राजनीतिज्ञों ने समझौते द्वारा झगड़े का निपटारा करने का बहुत प्रयत्न किया। परन्तु मसोलिनी अपनी ज़िद्द पर अड़ा रहा और अबीसीनियाँ की स्वतन्त्रता को हड़प लिया। इंगलैंड तथा फ्रान्स के राजनीतिज्ञ (League of Nations) में वादविवाद और प्रस्ताव ही करते रह गए।

जर्मन साम्राज्य—

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्ध ही में जर्मन-साम्राज्य की नींव पड़ी। जर्मनी का बहुत-सा भाग अब तक आस्ट्रिया के अधीन था, और शेष भाग इटेली की भाँति छोटे-छोटे राज्यों में बँटा हुआ था। जर्मनी में जातीयता की लहर फैलनी आरम्भ हुई और वहाँ के प्रशा (Prussia) नामक एक राज्य ने धीरे-धीरे इतनी उन्नति की कि अपने नेतृत्व में उसने समस्त जर्मन राज्यों को मिलाकर एक संगठित राज्य बना लिया, जिसके द्वारा जर्मन साम्राज्य का आरम्भ हुआ, जो यूरोपीय महायुद्ध के समय विद्यमान था।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इस कार्य में सबसे बड़ा भाग प्रिंस बिस्मार्क (Prince Bismarck) ने लिया था।

महायुद्ध के पश्चात् जर्मनी बहुत दिन तक अपनी स्थिति न सँभाल सका। परन्तु पिछले पाँच छः वर्ष में उसने प्रत्येक क्षेत्र में आश्चर्यजनक उन्नति की। हर हिटलर के नेतृत्व में जर्मनी ने अपना संगठन किया और रक्त की एक बूंद

प्रिन्स बिस्मार्क

भी बहाये बिना उसने आस्ट्रिया तथा ज़ेकेस्लोवेकिया को अपने राज्य में सम्मिलित किया। हिटलर की आकांक्षा बढ़ती चली गई और पूर्व में उसने राज्य की सीमा को दृढ़ करने के अभिप्राय से पोलैंड को हथियाना चाहा। पोलैंड ने अन्य देशों से सहायता के लिये अपील की। इंगलैंड, फ्रान्स, अमेरिका आदि देशों ने जर्मनी का पोलैंड से समझौता कराने की इच्छा की। परन्तु हिटलर तो युद्ध पर तुला हुआ था, अतः १ सितम्बर १९३९ के दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जर्मनी ने पोलैंड पर चढ़ाई कर दी। इस बार इंगलैंड तथा फ्रान्स ने जर्मनी की बढ़ती शक्ति देख चुप रहना उचित न समझा और पोलैंड का पक्ष लेकर वे रण-क्षेत्र में आ कूदे। रूस की भी नियत बिगड़ी और उसने जर्मनी से समझौता किया। एक ही मास के भीतर पोलैंड का राज्य नष्ट हो गया और जर्मनी तथा रूस ने पोलैंड के दो भाग करके उन्हें अपने-अपने राज्य में सम्मिलित किया। फिर भी युद्ध जारी है। अब देखना है कि यह युद्ध क्या क्या रंग बदलता है और इंगलैंड तथा फ्रान्स पोलैंड की क्या सहायता करते हैं। परन्तु युद्ध में हानि के अतिरिक्त और कुछ दिखाई नहीं पड़ता।

जापान तथा चीन--

उन्नीसवीं शताब्दी के अन्तिम काल में जापान में जागृति हुई, और सन् १८७० के लगभग उसने यूरोपियन ढँग पर अपना संगठन आरम्भ किया। वहां पर यूरोपियन सभ्यता का पूर्णतया प्रचार किया गया। देश में रेल, तार तथा नये व्यवसाय जारी किये गये। शिक्षा अनिवार्य हो गई और सेना तथा जल-सेना का भी संगठन किया गया। सन् १८९५ में जापान ने चीन से युद्ध छेड़ दिया और पोर्ट आर्थर (Port Arthur) के बन्दरगाह पर अधिकार कर लिया। ब्रिटेन, फ्रान्स तथा रूस, जापान के प्रति डाह रखने लगे। उन्होंने बीच में पड़कर जापान को अपने जीते हुए स्थान वापस करने पर बाध्य किया। कुछ काल पश्चात् रूस ने पोर्ट आर्थर पर अधिकार किया। इस पर जापान वाले बिगड़े और उनके क्रोध की सीमा न रही। सन् १९०४ में युद्ध हुआ और जापानियों ने इस समय अपनी शक्ति का पूर्ण परिचय दिया। पोर्ट आर्थर पर जापानियों ने अधिकार किया और प्रत्येक स्थान पर रूसियों को बुरी तरह परास्त किया। इस युद्ध के पश्चात् यूरोप निवासी भी जापान का लोहा मानने लगे, और पूर्वीय जातियाँ यूरोपियनों को घृणा की दृष्टि से देखने लगीं।

इस युद्ध के पश्चात् सन् १९०० में चीन में भी एक भयंकर विद्रोह हुआ और कहीं जाकर सन् १९१२ में वहाँ प्रजातन्त्र-राज्य स्थापित हुआ। परन्तु शीघ्र ही प्रजातन्त्र-राज्य नष्ट हो गया, और देश के भिन्न-भिन्न भागों में सैनिक नेताओं का अधिकार हुआ। इन सैनिक नेताओं के परस्पर युद्ध के कारण

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देश की स्थिति बहुत नाज़ुक हो गई। चीन के समुद्री तट पर कुछ यूरोपियन लोगों की कोठियाँ हैं जिसके कारण विदेशों का व्यापार अधिकांश उन्हीं के हाथ में था। इन यूरोपियनों के व्यापार पर जापान ने अधिकार करने की इच्छा की। चीन की दुर्बल स्थिति से लाभ उठा कर जापान ने पहले तो चीन के मंचूरिया प्रान्त पर अधिकार किया, और फिर सन् १९३७ से समस्त चीन पर अधिकार करने के अभिप्राय से उसने एक युद्ध छेड़ दिया और चीन के बहुत कुछ भाग पर अधिकार कर लिया है। अभी यह युद्ध जारी है और चीनी भी अब संगठित होकर शत्रुओं का सामना कर रहे हैं। जापान से भय खाकर ब्रिटेन ने अपने पूर्वी साम्राज्य की रक्षा के हेतु सिंगापुर पर जल-शक्ति का एक प्रबल केन्द्र बनाया है और वायुयानों का भी पर्याप्त प्रबन्ध किया है।

Exercises.

1. What was the Eastern Question? What was England's attitude towards it?
2. Give a brief account of the Crimean War. What were its causes and results?
3. What led to the Balkan War (Russo-Turkish War)? Describe the settlement made by the Congress of Berlin.
4. Describe England's interest in the Egyptian affairs? What steps have the British taken to protect it at various times?
5. What new states were formed in Europe in the latter half of the nineteenth century and with what results?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सैंतीसवाँ अध्याय

ब्रिटेन का साम्राज्य

सन् १७६३	कनाडा पर अँग्रेज़ों का अधिकार
,, १७७०	न्यूज़ीलैंड तथा आस्ट्रेलिया का पता लगना
,, १८१५	केप कोलोनी पर अँग्रेज़ों का अधिकार
,, १८४०	कनाडा को स्वराज्य
,, १८५१	आस्ट्रेलिया में सोने की खानों का पता लगना
,, १८६७	कनाडा के संयुक्त-राज्य की स्थापना
,, १८७७—१८८१	प्रथम बोअर युद्ध
,, १८६६—१६०२	द्वितीय बोअर युद्ध
,, १६००	आस्ट्रेलिया के संयुक्त-राज्य की स्थापना
,, १६०६	दक्षिण अफ्रीका के संयुक्त-राज्य की स्थापना
,, १६१६	भारतीय-शासन में सुधार
,, १६३५	भारत का नया शासन विधान

सन् १८१५ की औपनिवेशिक स्थिति—

वाटरलू के युद्ध के समय तक ब्रिटेन ने अपने उपनिवेशों को काफ़ी फैला लिया था। सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात् उत्तरी अमेरिका में फ्रान्सीसियों की शक्ति का अन्त हुआ, और कनाडा तथा न्यूफाऊण्डलैंड ब्रिटेन के अधीन हो गये। कुछ काल पश्चात् उत्तरी अमेरिका के मध्य भाग वाले अँग्रेज़ी उपनिवेशों में स्वतन्त्रता के लिये युद्ध हुआ, जिसके परिणामस्वरूप यह उपनिवेश अँग्रेज़ों के हाथ से निकल गये। इस पराजय ने ब्रिटेन की औपनिवेशिक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्नति को कुछ काल के लिये धक्का पहुँचाया। परन्तु थोड़े ही समय पश्चात् भू-मण्डल के अन्य भागों में ब्रिटिश उपनिवेश स्थापित हो जाने से यह कमी पूर्ण हो गई। फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति तथा नैपोलियन के युद्धों के समय में ब्रिटेन ने इधर-उधर के बहुत से छोटे-छोटे टापुओं पर अधिकार जमा लिया। सन् १८१५ में वाटरलू के युद्ध के पश्चात् अँग्रेज़ों को दक्षिण अफ्रीका में केप कॉलोनी (Cape Colony, भारतवर्ष के दक्षिण का लंका द्वीप (Ceylon, तथा मारीशस (Mauritious), गाइना (Guiana) इत्यादि बहुत-से स्थान प्राप्त हुए, और इसके पश्चात् से ब्रिटेन की औपनिवेशिक उन्नति बराबर बढ़ती गई। इसके अतिरिक्त अँग्रेज़ों ने भारतवर्ष में अपने साम्राज्य को बढ़ाया, जो दिन-प्रति-दिन उन्नति करता गया। इस परिच्छेद में ब्रिटिश-साम्राज्य के स्वतन्त्र राष्ट्रों तथा उन मुख्य भागों का वर्णन किया जायगा, जो ब्रिटेन को उन्नीसवीं शताब्दी में प्राप्त हुए।

कनाडा तथा न्यू फाऊण्डलैंड

कनाडा की उन्नति—

कनाडा में पहले फ्रान्सीसी उपनिवेश थे, परन्तु सन् १७६३ में सप्तवर्षीय युद्ध के पश्चात् ये सब उपनिवेश अँग्रेज़ों के अधिकार में आ गये। इस समय से यहाँ अँग्रेज़ों की जन-संख्या बढ़ने लगी, और कुछ ही काल में उन्होंने कनाडा के अन्य भागों तथा आस-पास के टापुओं पर भी अधिकार कर लिया। परन्तु धार्मिक मतभेद होने के कारण फ्रान्सीसियों तथा अँग्रेज़ों की एक दूसरे से न पट सकी, और दोनों में दिन-प्रति-दिन नये झगड़े खड़े होने लगे। इन झगड़ों का निपटारा करने के लिये छोटे पिट ने कनाडा को दो प्रान्तों में विभक्त कर दिया। पूर्वीय कनाडा (Lower Canada) में अधिकतर केथलिक फ्रान्सीसी बसे हुए थे, और पश्चिमी कनाडा(Upper Canada) के निवासी अधिकतर प्रोटेस्टेण्ट अँग्रेज़ थे। दोनों प्रान्तों के शासन के लिये ब्रिटिश सरकार गवर्नर नियुक्त करके भेजती थी और उनकी सहायता के लिये एक-एक प्रतिनिधि-सभा भी बना दी गई।

कुछ काल पश्चात् कनाडा के दोनों प्रान्तों के निवासियों ने यह आन्दोलन खड़ा किया कि हमको अपने शासन में स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये। सन् १८३७

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में फ्रान्सीसी कनाडा ने एक विद्रोह भी कर डाला, और अँग्रेज़ी कनाडा में भी विद्रोह के चिह्न दिखाई पड़ने लगे। ऐसी स्थिति में ब्रिटिश सरकार ने लार्ड डरहम (Lord Durham) को कनाडा की स्थिति पर रिपोर्ट करने के लिये भेजा। सन् १८३९ में डरहम ने एक बड़ी महत्वपूर्ण रिपोर्ट पेश की, जिसका यह आशय था कि कनाडा को शान्त करने का एक मात्र उपाय यही है कि वहाँ स्वतन्त्र तथा उत्तर-दायित्व पूर्ण शासन (Responsible Government) स्थापित किया जाय। इस रिपोर्ट के अनुसार कनाडा के दोनों प्रान्त मिला दिये गये, और उनके शासन के लिये एक स्वतन्त्र पार्लियामेण्ट बना दी गई, जिसके अधिकार ब्रिटिश पार्लियामेण्ट के समान कर दिये गये। अँग्रेज़ों की औपनिवेशिक नीति में यह एक बड़ी महत्वपूर्ण घटना है, और आगे चलकर अन्य उपनिवेशों के प्रति भी इसी नीति का अवलम्बन किया गया।

सयुक्त-राज्य की स्थापना—

कनाडा की भाँति आस-पास के उपनिवेशों ने भी कुछ समय पश्चात् स्वतन्त्रता के लिये आन्दोलन आरम्भ किया। ऐसी स्थिति में सन् १८६७ में उत्तरी अमेरिका के समस्त ब्रिटिश उपनिवेश कनाडा के साथ मिला दिये गये, और इस प्रकार कनाडा के वर्त्तमान संयुक्त-राज्य (Federal Dominion of Canada) की स्थापना हुई। उपनिवेशों को पृथक् रूप से भी स्वतन्त्रता दे दी गई; और समस्त उपनिवेशों का सम्मिलित शासन एक केन्द्रीय पार्लियामेण्ट के अधीन कर दिया गया। इस केन्द्रीय पार्लियामेण्ट की बैठक कनाडा के संयुक्त-राज्य की राजधानी ओटावा (Ottawa) में होती है, और ब्रिटिश पार्लियामेण्ट की भाँति उसके भी दो भाग हैं। प्रथम प्रतिनिधि सभा (House of Commons) जिसके सदस्यों का निर्वाचन जनता के द्वारा होता है, दूसरा, सीनेट (Senate) जिसके सदस्यों की नियुक्ति गवर्नर जेनरल के द्वारा होती है। भिन्न-भिन्न उपनिवेशों के गृह-प्रबन्ध के लिये उनकी अपनी अलग प्रतिनिधि सभाएँ भी बनी हुई हैं। संयुक्त-राज्य का गवर्नर जेनरल तथा अलग अलग उपनिवेशों के गवर्नर ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त किये जाते हैं।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

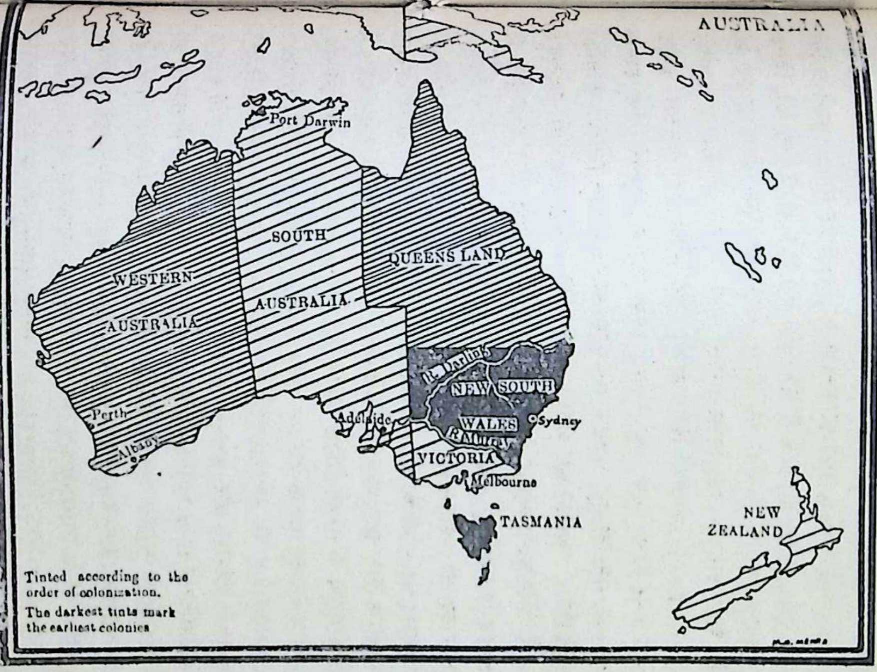

Tinted according to the order of colonization.
The darkest tints mark the earliest colonies

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

न्यू फाउण्डलैंड—

कनाडा के समीप ही न्यू फ़ाऊण्डलैंड का द्वीप है। यह कनाडा के संयुक्त-राज्य में सम्मिलित नहीं है, परन्तु उसको भी स्वतन्त्र-शासन का अधिकार प्राप्त है, और उसकी भी गणना स्वतन्त्र-प्रदेशों (Self Governing Dominions) में होती है।

आस्ट्रेलिया तथा न्यूज़ीलैंड

आस्ट्रेलिया की उन्नति—

आस्ट्रेलिया का पता सन् १८७३ में कप्तान कुक (Captain Cook) ने लगाया था, और उसी ने अँग्रेज़ी उपनिवेश बसाने का विचार किया था। इसी समय के आस-पास उत्तरी अमेरिका के मध्य उपनिवेशों में संयुक्त-अमेरिकन-राज्य (United States of America) स्थापित हो जाने के कारण ब्रिटिश सरकार को नई भूमि की आवश्यकता भी थी। अतः उन्होंने ब्रिटेन के आजन्म क़ैदियों को आस्ट्रेलिया में भेजना आरम्भ किया और उसके दक्षिण-पूर्वी भाग में एक उपनिवेश स्थापित किया जिसका नाम न्यूसाउथवेल्स रक्खा गया। इस प्रदेश में भेड़ें चराने के लिये विशेष सुविधा होने के कारण थोड़े ही दिनों में यहाँ ऊन का व्यापार बढ़ने लगा और सन् १८२१ में यहाँ क़ैदियों के अतिरिक्त अन्य अँग्रेज़ों को भी बसने की आज्ञा दे दी गई। सन् १८४० में यहाँ क़ैदियों का भेजना बिल्कुल बन्द कर दिया गया, और अधिक संख्या में अँग्रेज़ों के आने के कारण यहाँ उपनिवेशों की संख्या बढ़ने लगी। आस्ट्रेलिया के शेष भाग में भी अँग्रेज़ बस गये, और उन्होंने जंगलों को साफ़ करके अब यहाँ कई उपनिवेश बना लिये। कुछ समय पश्चात् यहाँ सोने की खानों का पता लगा, जिसके कारण यहाँ के निवासियों की संख्या दिन-प्रति-दिन और भी अधिक बढ़ती गई।

स्वतन्त्र-शासन की स्थापना—

कनाडा की निर्धारित की हुई नई औपनिवेशिक नीति के अनुसार ब्रिटिश सरकार ने आस्ट्रेलिया के उपनिवेशों को भी धीरे-धीरे स्वतन्त्र-शासन का अधिकार दे दिया। उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य-काल में यहाँ का कोई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ही के भरोसे चलता था, और इसलिये दासों के निषेध से असन्तुष्ट होकर उनमें से बहुतों ने दक्षिण-अफ्रीका के उत्तर की ओर प्रस्थान किया, और वहाँ जाकर ट्रांसवाल (Transval) तथा आरेञ्ज-फ्री-स्टेट (Orange Free State) नामक अपने दो अलग स्वतन्त्र उपनिवेश स्थापित कर लिये।

बोअर युद्ध—

कुछ समय पश्चात् बोअर लोगों के नये उपनिवेश ट्रांसवाल में सोने की खानों का पता लगा, जिसके लालच में अन्य जातियों के बहुत-से लोग भी वहाँ जाकर बसने लगे। बोअरों ने इन विदेशियो के साथ बड़ा बुरा व्यवहार किया और उनको सोने की खानें खोदने की आज्ञा न दी। इस अवसर से लाभ उठाकर अँग्रेज़ों ने विदेशियों का पक्ष लेकर बोअरों के विरुद्ध युद्ध किया, और सन् १८७७ में ट्रांसवाल को अपने आधीन कर लिया, परन्तु शीघ्र ही बोअरों ने विद्रोह खड़ा कर दिया, और अँग्रेज़ी की भेजी हुई सेना को मजूबा पहाड़ी (Majuba Hill) के युद्ध में बुरी तरह परास्त किया। परिणाम यह निकला कि अँग्रेज़ों को ट्रांसवाल खाली कर देना पड़ा और बोअरों का यह उपनिवेश फिर स्वतन्त्र हो गया।

परन्तु सोने की खानों के कारण अँग्रेज़ों की दृष्टि ट्रांसवाल पर बराबर लगी रही; और सन् १८९९ में बोअरों से दूसरी बार युद्ध छिड़ गया। अँग्रेज़ी सरकार ने जेमसन (Jameson) को ट्रांसवाल के मुख्य नगर जांसवर्ग (Johannsburgh) पर आक्रमण करने के लिये भेजा, परन्तु उसका प्रयत्न सफल न हो सका; और उसको बन्दीगृह में डाल दिया। इस घटना का समाचार इंगलैंड पहुँचने पर वहाँ बड़ी सनसनी फैली और अँग्रेज़ी सरकार ने लार्ड राबर्टस (Lord Roberts) को एक बहुत बड़ी सेना लेकर दक्षिण अफ्रीका भेजा। राबर्टस ने बोअरों से अच्छी तरह बदला लिया, और उनके ट्रांसवाल तथा ओरेञ्ज-फ्री-स्टेट दोनों उपनिवेशों पर अधिकार जमा लिया। इसके पश्चात् लार्ड किचनर दक्षिण अफ्रीका की अँग्रेज़ी सेना का सेनापति नियुक्त हुआ, और उसने बोअरों को परास्त करने का कार्य जारी रक्खा। परिणाम यह हुआ कि सन् १९०२ में बोअरों को अँग्रेज़ों की अधीनता स्वीकार करनी पड़ी, और उनके दोनों उपनिवेश पूर्णतया ब्रिटिश-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्य में सम्मिलित किये गये। इस प्रकार दक्षिण अफ्रीका के समस्त उपनिवेश अब ब्रिटिश-राज्य के अंग हो गये।

दक्षिण अफ्रीका का संयुक्त-शासन—

कनाडा तथा आस्ट्रेलिया की भाँति दक्षिण अफ्रीका के उपनिवेशों को भी सन् १९०६ में स्वतन्त्र-शासन का अधिकार दे दिया गया। इसके पश्चात् सन् १९०९ में दक्षिण अफ्रीका के समस्त उपनिवेशों को भी संयुक्त-राज्य (Union of South Africa) में मिला दिया गया; और उनके संयुक्त-शासन के लिये एक केन्द्रीय-पार्लियामेण्ट बना दी गई। दक्षिण अफ्रीका में भी उपनिवेशों को पृथक् रूप से स्वराज्य मिला हुआ है, और उनका सम्मिलित शासन संयुक्त-पार्लियामेण्ट के अधीन है। यहाँ भी पृथक् उपनिवेशों के गवर्नर तथा संयुक्त-राज्य का गवर्नर जेनरल कनाडा तथा आस्ट्रेलिया की भाँति ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त करके भेजे जाते हैं।

नये संयुक्त-शासन से अब बोअर लोग भी सन्तुष्ट हो गये हैं, जिसका स्पष्ट प्रमाण यह है कि बोअर युद्धों के नेता जेनरल बोथा (General Botha) ने संयुक्त-दक्षिण-अफ्रीका के राजकीय प्रधान-मंत्री का पद सबसे पहले ग्रहण किया।

दक्षिण अफ्रीका में बहुत-से भारतवासी जाकर बस गये हैं, और उन्होंने वहाँ व्यापार तथा कारोबार आरम्भ कर दिया है, परन्तु वहाँ के निवासी यूरोपियनों का इन भारतवासियों के प्रति अच्छा व्यवहार नहीं है, जिसके कारण हमारे देश में बराबर यह प्रयत्न किया जा रहा है कि दक्षिण अफ्रीका की सरकार पर दबाब डाल कर उसे भारतवासियों के लिए यूरोपियन निवासियों के समान अधिकार देने पर बाध्य किया जाय।

ब्रिटिश-साम्राज्य का संगठन

ब्रिटिश राष्ट्र-संघ—

ब्रिटिश-साम्राज्य आजकल पृथ्वी के लगभग एक चौथाई भाग में फैला हुआ है, और जन-संख्या के विचार से संसार के एक तिहाई निवासी ब्रिटिश छत्र के अधीन हैं। राजनैतिक दृष्टि से ब्रिटिश-साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भाग

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

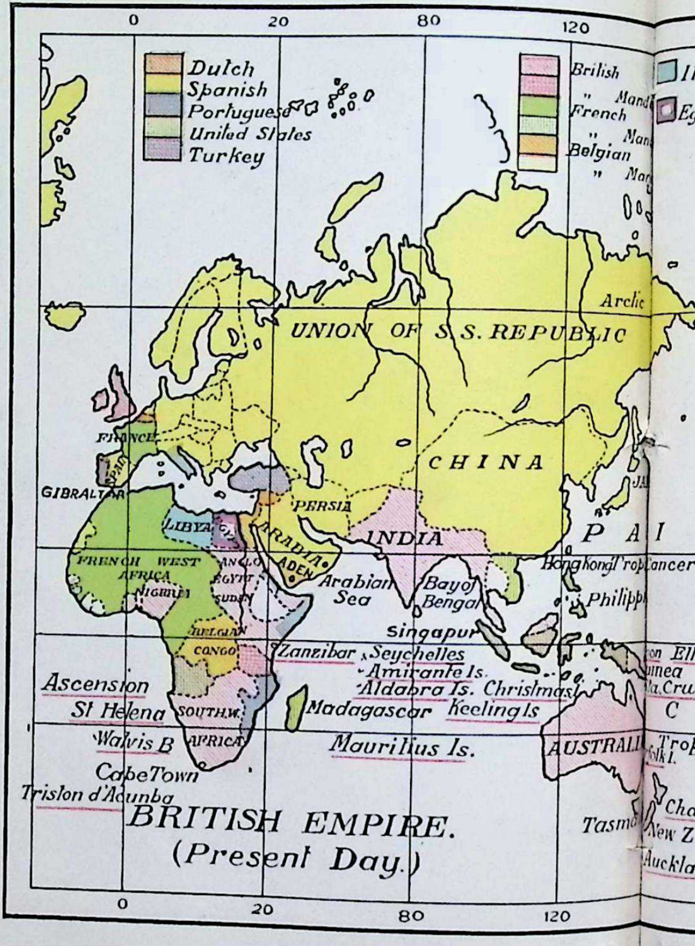

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तीन विशेष अंगों में बाँटे जा सकते हैं; जिनमें भिन्न-भिन्न प्रकार से शासन होता है; और जिनकी प्रजा को भिन्न-भिन्न श्रेणी की स्वतन्त्रता प्राप्त है। उत्तरी अमेरिका के अँग्रेज़ी उपनिवेशों की हानि के पश्चात् ब्रिटिश सरकार को अपनी औपनिवेशिक नीति बदलनी पड़ी; और उसको यह मान लेना पड़ा कि साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों को जब तक थोड़ी बहुत स्वतन्त्रता न दी जायगी तब तक शान्तिपूर्वक शासन होना असंभव है। ब्रिटिश-साम्राज्य का रूप अब धीरे-धीरे "स्वतन्त्र-राष्ट्र-संघ" (British Common Wealth of Nations) का सा होता जाता है और उनके पारस्परिक संगठन का यही मुख्य चिन्ह है कि साम्राज्य के प्रत्येक भाग के निवासी ब्रिटेन के राजा को अपना सम्राट् मानते हैं, और उनकी शासन-पद्धति ब्रिटिश पार्लियामेण्ट द्वारा निर्धारित की हुई है।

प्रथम अंग, स्वतन्त्र प्रदेश—

ब्रिटिश-साम्राज्य का मुख्य अंग स्वतन्त्र प्रदेशों (Self Governing Dominions) को समझना चाहिये। इस श्रेणी में कनाडा, आस्ट्रेलिया तथा दक्षिणी अफ्रीका मुख्य है। इन प्रदेशों के उपनिवेशों को पृथक् रूप से भी स्वराज्य मिला हुआ है; और समस्त उपनिवेशों के सम्मिलित प्रबन्ध के लिये एक केन्द्रीय-शासन भी है। गृह-प्रबन्ध पृथक् रूप से होता है और केन्द्रीय शासन केवल उन विभागों में हस्तक्षेप करता है जो समस्त उपनिवेशों के उपयोगी हों। इस प्रकार के शासन-प्रबन्ध को फैडरल-शासन (Federal Government) कहते हैं।

न्यू फाऊण्डलैंड तथा न्यूज़ीलैंड भी स्वतन्त्र प्रदेश हैं, परन्तु इन प्रदेशों में पृथक् तथा सम्मिलित शासन का प्रश्न नहीं है। एक ही केन्द्रीय-शासन (Unitary Government) से समस्त उपनिवेश का प्रबन्ध चलता है, क्योंकि इनकी सीमा तथा जन-संख्या अधिक नहीं है। इसी श्रेणी में सन् १६२२ से आयरलैंड का दक्षिणी भाग (Irish Free State) भी आ गया है, और उसमें भी स्वतन्त्र-शासन की स्थापना हो गई है।

स्वतन्त्र प्रदेशों की स्थिति अधिकतर स्वतन्त्र राष्ट्रों की भाँति है, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उनकी पार्लियामेण्टों को ब्रिटिश पार्लियामेण्ट की तरह सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हैं। उनके ब्रिटिश-साम्राज्य के अंग होने का मुख्य लक्षण यही है कि उनके गवर्नर तथा गवर्नर जेनरल ब्रिटिश-साम्राज्य की ओर से नियुक्त किये जाते हैं, परन्तु वे शासन-कार्य में अधिक हस्तक्षेप नहीं कर सकते। शासन-कार्य का संचालन मंत्रियों द्वारा होता है, जो ब्रिटेन के मंत्रियों की भाँति देश के प्रतिनिधियों के सम्मुख उत्तरदायी होते हैं। पिछले महायुद्ध के पश्चात् से स्वतन्त्र प्रदेशों की स्थिति में और भी उन्नति हो गई है। अब वे अपनी पर-राष्ट्र-नीति में भी पूर्णतया स्वतन्त्र हो गये हैं और स्वतन्त्र राष्ट्रों की भाँति अन्य राष्ट्रों से संधि इत्यादि कर सकते हैं। उनका ब्रिटिश-साम्राज्य में सम्मिलित रहना भी अब केवल उनकी इच्छा ही पर निर्भर है, और यदि वे चाहें तो उससे सम्बन्ध-विच्छेद भी कर सकते हैं। अभी कुछ दिन हुए दक्षिण अफ्रीका में जेनरल स्मट्स (Smuts) और आयरलैंड में डी-वेलेरा (De Velera) ने सम्बन्ध-विच्छेद की धमकी दी थी, परन्तु ब्रिटेन के राज्य-नीतिज्ञों ने समझा बुझा कर उन्हें शान्त कर दिया।

समस्त स्वतन्त्र उपनिवेशों का संगठन ठीक रखने के लिये उनके प्रतिनिधि कभी-कभी ब्रिटेन के मंत्रि-मण्डल के प्रधान कर्मचारियों के साथ सम्मिलित हो कर साम्राज्य सम्बन्धी विषयों पर विचार करते हैं। ये सम्मेलन इम्पीरियल कान्फ्रेन्सेस (Imperial Conferences) के नाम से प्रसिद्ध हैं, और इन्हीं के द्वारा समस्त साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भाग एक ही सूत्र में बँधे हुए हैं।

द्वितीय अंग, अधीन उपनिवेश—

ब्रिटिश-साम्राज्य के बड़े-बड़े उपनिवेश स्वतन्त्र हैं, परन्तु उनके अतिरिक्त बहुत-से अन्य उपनिवेश जो पृथ्वी के चारों ओर फैले हुए हैं इस श्रेणी में नहीं आते। उनकी एक अलग ही श्रेणी है, और वे "अधीन उपनिवेशों" (Crown Colonies) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस श्रेणी में सीलोन, सिंघापुर, हांगकांग, फ़ीजी, ब्रिटिश गाइना इत्यादि माने जाते हैं। उनके गवर्नर तथा लेफ़्टिनेन्ट गवर्नर ब्रिटिश सरकार की ओर से नियुक्त किये जाते हैं, परन्तु स्वतन्त्र प्रदेशों के विपरीत उनको देश के शासन में प्रत्येक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार का हस्तक्षेप करने का अधिकार है। इन उपनिवेशों में भी छोटी छोटी कौंसिलें हैं, परन्तु उनको स्वतन्त्रता पूर्वक नियम बनाने का अधिकार प्राप्त नहीं है। ब्रिटिश-केबिनट में उनके शासन की देखभाल के लिये एक मंत्री होता है जो उपनिवेश-सचिव (Secretary of State for Colonies) कहलाता है।

तृतीय अंग, अधीन प्रदेश—

उपनिवेशों के अतिरिक्त बहुत-से अन्य स्थान भी ब्रिटिश-साम्राज्य में सम्मिलित हैं। इन स्थानों की एक तृतीय श्रेणी मानी जाती है और वे "अधीन प्रदेश" (Dependencies) के नाम से प्रसिद्ध हैं। इस श्रेणी में अदन, माल्टा द्वीप, जिबराल्टर इत्यादि स्थान माने जाते हैं। उनकी मुख्य विशेषता यह है कि सैनिक दृष्टि से इन स्थानों का बहुत बड़ा महत्त्व है जिसके कारण ब्रिटिश सरकार उनके शासन में तनक भी ढील नहीं डालना चाहती। अधिकतर सैनिक अफसर ही इन स्थानों के शासक नियुक्त किये जाते हैं, और वे सैनिक दृष्टि ही से शासन-संचालन करते हैं। इस श्रेणी की प्रजा को शासन-कार्य में बहुत कम अधिकार प्राप्त हैं, और उनके सैनिक-शासक वहाँ निरंकुश शासन करते हैं।

भारतवर्ष—

भारतवर्ष की स्थिति ऊपर लिखी हुई तीनों श्रेणियों से भिन्न है। यह ब्रिटिश-साम्राज्य का एक मुख्य भाग है, और इसके विषय में कहा जाता है कि ब्रिटेन की शक्ति का इसी पर आधार है। इसकी एक मुख्य विशेषता यह है कि यहाँ की सभ्यता बड़ी प्राचीन है, और अँग्रेज़ी-राज्य के स्थापित होने से पहले भी यहाँ बहुत बड़े-बड़े प्रबल-राज्य स्थापित रह चुके हैं। भूमण्डल के अन्य भागों में अँग्रेज़ों ने ऊजड़ देशों को जाकर बसाया, परन्तु भारतवर्ष में उन्हें एक ऐसी सभ्यता का सामना करना पड़ा, जिसका इतिहास बड़ा उज्ज्वल तथा गौरवपूर्ण है। सन् १८५८ तक तो यहाँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी ही का राज्य रहा, और ब्रिटिश पार्लियामेण्ट की एक उपसमिति (Board of Control) इसके शासन की देख-भाल करती रही। परन्तु सन् १८५८ से ईस्ट इण्डिया कम्पनी के हाथ से राज्य निकल कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ब्रिटिश सरकार के अधीन हो गया, और यहाँ के गवर्नर जेनरल को ब्रिटिश सम्राट् के प्रतिनिधि (Viceroy) की उपाधि भी दे दी गई। ब्रिटिश मंत्रि-मण्डल में यहाँ के शासन की देख-भाल के लिये एक भारत-सचिव (Secretary of State for India) का पद आरम्भ हुआ, और उसको पार्लियामेण्ट के सम्मुख यहाँ के शासन के लिये उत्तरदायी ठहराया गया।

भारतवर्ष में भी धीरे-धीरे जनता के प्रतिनिधियों को देश के शासन-कार्य में भाग देने की नीति आरम्भ हुई। यहाँ भी नियम बनाने के लिये काउंसिलें बनाई गईं, और उनके अधिकार धीरे-धीरे बढ़ते गये। सन् १९१९ के सुधार के अनुसार प्रान्तीय-शासन के कुछ विभागों को जनता द्वारा निर्वाचित मंत्रियों के अधीन कर दिया, और अब १९३५ के नये सुधारों के अनुसार केन्द्रीय-शासन के विभागों में भी जनता द्वारा निर्वाचित-मंत्रियों को स्थान देने का निश्चय कर लिया गया। इस नई पद्धति के अनुसार देश के भिन्न-भिन्न सूबे तथा देशी रियासतें मिल कर एक-राष्ट्र (Federation) बन जावेंगे। सूबों में (Responsible Government) का आरम्भ पहली अप्रेल १९३७ से हुआ है। यदि ब्रिटिश सरकार इस देश की राजनैतिक गुत्थी को सुलझा कर देश वासियों को संतुष्ट कर सकी तो उसकी राजनीतिज्ञता की बड़ी सफलता समझी जायगी।

Exercises.

1. Trace the circumstances leading to the establishment of Responsible Government in the Dominion of Canada.
2. What is the importance of Australia ? How was the Common Wealth established there ?
3. Give an account of the Colonisation of South Africa, and point out the economic importance of these colonies.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

4. What led to the Boer Wars? What was their effect?
5. Give an account of the establishment of the Union of South Africa.
6. Explain the term "Self Governing Dominion." What are its relations with the mother country?
7. Trace the various stages in the development of the British Colonial policy in the nineteenth century.
8. Into what different categories have the various parts of the British Empire been divided according to their Constitutional importance?
9. Point out the difference between a Crown Colony and a Dependency, giving some examples of both types.
10. Write short notes on :—
Durham's Report, Captain Cook, Louis Botha, Imperial Conference, and the Indian Reforms of 1919 and 1935.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अड़तीसवाँ परिच्छेद

हनोवरकाल में आयरलैंड

सन् १८०१	आयरलैंड का संयोग
,, १८२६	केथलिकों का उद्धार
,, १८६६	सरकारी चर्च की सहायता का बन्द होना।
,, १८८६—१८६४	आइरिश होम रूल बिल की अस्वीकृति
,, १६२०	गवर्नमेण्ट आफ़ आयरलैंड ऐक्ट
,, १६२२	आइरिश फ्री स्टेट की स्थापना

अठारहवीं शताब्दी में आयरलैंड—

इंगलैंड तथा आयरलैंड को प्रकृति ने आइरिश सागर द्वारा पृथक् किया है। बहुत काल तक ये देश एक दूसरे से अलग रहे, परन्तु ट्यूडर-शासन काल में अँग्रेज़ी राजाओं ने इस पर अधिकार जमा लिया। धर्म-सुधार के पश्चात् से दोनों देशों में धार्मिक-मतभेद हो जाने के कारण आयरलैंड निवासी केथलिकों ने इंगलैंड की प्रोटेस्टेएट सरकार के अधीन रहना कदापि पसन्द न किया। जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, स्टुअर्ट-काल में आयरलैंड वालों ने अपने असन्तोष को कई रूप से प्रकट किया। इंगलैंड में जितने विद्रोह होते थे, उन सबके लिये आयरलैंड से सदा सहायता मिलती रहती थी।

हनोवर शासन के स्थापित होने पर जितनी बार जेकोवाइट दल ने विद्रोह किये; उन सब में उन्हें आयरलैंड के केथलिकों से पूर्ण सहयोग मिला। इस सहयोग के कारण इंगलैंड की सरकार आयरलैंड से और भी अधिक चिढ़ गई, और उन्होंने बहुत से नियम ऐसे बनाये जिनके कारण आइरिश प्रजा की

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

स्थिति बहुत शोचनीय हो गई। अँग्रेज़ों के इन अत्याचारों के कारण आयरलैंड निवासियों का असन्तोष दिन-प्रति-दिन बढ़ता गया, और वे अपनी स्थिति को सुधारने का प्रयत्न सोचने लगे।

फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का प्रभाव—

अठारहवीं शताब्दी के अन्तिम काल में यूरोप में फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति का उपद्रव आरम्भ हुआ। इनके कुछ वर्षों पूर्व उत्तरी अमेरिका के अँग्रेज़ी उपनिवेश युद्ध करके अपनी स्वतन्त्रता प्राप्त कर चुके थे। अब फ्रान्स की राज्य-क्रान्ति ने स्वतन्त्रता के विचारों का और भी अधिक प्रचार कर दिया, और आयरलैंड निवासी भी सोचने लगे कि हमको भी अँग्रेज़ी सरकार के अत्याचारों से बचने का कोई उपाय करना चाहिये। आयरलैंड में असन्तोष तो पहले ही फैला हुआ था, और अब नये राजनैतिक विचारों के फैलने के कारण देश वासियों का उत्साह और भी अधिक बढ़ गया।

आयरलैंड का संयोग—

छोटे पिट के मंत्रित्व-काल में आयरलैंड निवासियों ने कई बार विद्रोह खड़ा किया, और देश में वूल्फटन (Wolfetone) के नेतृत्व में प्रोटेस्टेन्ट तथा केथलिक दोनों धार्मिक दलों ने मिलकर यूनाइटेड आइरिश मेन (United Irish Men) नामक एक संस्था स्थापित की। इस संस्था ने राजनैतिक आन्दोलन के कार्य को बड़े जोश से आरम्भ किया, और अन्त में छोटे पिट ने समझ लिया कि आयरलैंड के प्रश्न का कोई निश्चित निपटारा किये बिना काम न चलेगा। उसने आयरलैंड के संयोग (Irish Union) का प्रस्ताव उपस्थित किया, जिसके अनुसार सन् १८०१ में आयरलैंड को भी इंगलैंड तथा स्काटलैंड के संयुक्त-राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। आयरलैंड से चार बड़े पादरी तथा २८ सदस्य लार्ड-सभा के लिये, और १०० प्रतिनिधि लोक-सभा के लिये बुलाये जाने लगे।

संयोग के पश्चात् की दशा—

आयरलैंड ब्रिटेन के संयुक्त-राज्य में सम्मिलित तो हो गया, परन्तु वहाँ के निवासियों की वास्तविक शिकायतें अभी दूर न हो सकीं। देश के प्रचलित नियमों के अनुसार केथलिक जनता राजनैतिक अधिकारों से वंचित थी, और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इनमें से कोई पार्लियामेण्ट का सदस्य भी न हो सकता था। इस कारण आयरलैंड को संयुक्त-पार्लियामेण्ट में स्थान मिल जाने से देश के केथलिकों को तनक भी लाभ न हुआ। इसके अतिरिक्त यहाँ के निवासियों की आर्थिक दशा बहुत शोचनीय थी। उनके व्यापार तथा व्यवसाय में बहुत-सी बाधायें थीं, और वास्तव में यहाँ के व्यापार से जो कुछ भी लाभ होता था, वह सब अँग्रेज़ी व्यापारी ही हड़प कर जाते थे। यहाँ के ज़मींदार भी अधिकतर अँग्रेज़ ही थे, जो अपने आसामियों पर भाँति-भाँति के अत्याचार करते थे। बेचारे किसानों को पेट भर अन्न मिलना भी दुर्लभ था, और दरिद्रता तथा रोग ने देश को बुरी तरह जकड़ रक्खा था। ऐसी स्थिति में सरकारी करों का भार जनता के लिये बहुत ही दुखदायी हो रहा था। इन सब कारणों से संयोग के पश्चात् भी आयरलैंड निवासियों का असन्तोष उसी तरह बना रहा।

केथलिकों के उद्धार का प्रश्न—

उन्नीसवीं शताब्दी के प्रारम्भिक भाग में डेनियल-ओ कोनेल (Daniel O'-Connell) नामक एक बैरिस्टर ने केथलिकों को राजनैतिक अधिकार दिलाने का आन्दोलन प्रारम्भ किया। अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये उसने केथलिक समाज (Catholic Association) नामक एक शक्तिशाली संस्था स्थापित की, और इसके द्वारा केथलिकों का आन्दोलन दिन-प्रति-दिन ज़ोर पकड़ता गया। इसी आन्दोलन से वाध्य होकर सन् १८२९ में ड्यूक आफ़-वेलिंगटन के मंत्रित्व-काल में अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट ने केथलिकों के उद्धार का नियम (Catholic Emancipation Act) स्वीकृत किया, जिसके अनुसार केथलिकों को पार्लियामेण्ट के सदस्य तथा राज्य के प्रधान कर्मचारी होने की आज्ञा मिल गई। इस प्रकार केथलिकों की बड़ी पुरानी शिकायत दूर हुई।

सरकारी चर्च की सहायता का बन्द होना—

केथलिक-समाज ने केथलिकों के उद्धार के पश्चात् सरकारी चर्च के विरुद्ध आन्दोलन खड़ा किया। यह चर्च प्रोटेस्टेण्ट था, परन्तु इसके संचालन का भार समस्त प्रजा पर पड़ता था, जिनमें से अधिकाँश केथलिक थे। चर्च के व्यय के लिये सब को एक धर्म-कर (Tithe) देना पड़ता था; परन्तु उससे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

केवल थोड़े से गिने चुने प्रोटेस्टेएट ही लाभ उठाते थे। इस सरकारी चर्च के विरुद्ध भी आन्दोलन इतना बढ़ गया कि सन् १८६६ में इसको सहायता देना बन्द कर देना पड़ा (Dis-establishment), और इस प्रकार आयरलैंड की कैथलिक जनता पर जो धर्म-कर का अनुचित भार पड़ता था, वह अब उतर गया।

संयोग-विच्छेद का आन्दोलन—

इन सफलताओं से उत्साहित होकर आयरलैंड निवासियों ने अब इंगलैंड से संयोग-विच्छेद करके अपना स्वतन्त्र-शासन स्थापित करने के लिये आन्दोलन आरम्भ किया। पिछले आन्दोलनों के नेता ओकोनेल की इस समय मृत्यु हो चुकी थी, और अब उसके स्थान पर पारनेल (Parnell) आइरिश जनता का नेता था। पारनेल के राजनैतिक विचार ओकोनेल से कहीं आगे बढ़े हुए थे, और उसका यह मत था कि केवल नियमानुसार आन्दोलन करने से संतोष-जनक राजनैतिक अधिकारों का मिलना असम्भव है। इसी समय आयरलैंड में "नवयुवक आयरलैंड-दल" (Young Ireland Party) का संगठन हुआ, जो अपने लक्ष्य की पूर्ति के लिये रक्त-प्रवाह तक से न हिचकता था। परिणाम यह हुआ कि देश में भिन्न-भिन्न स्थानों पर विद्रोह होने लगे, और आयरलैंड के राजनैतिक आन्दोलन ने एक भयंकर रूप धारण कर लिया।

ग्लेड्सटन तथा आयरलैंड—

ऐसी अवस्था में इंगलैंड के प्रधान-मन्त्री ग्लेड्सटन ने आयरलैंड को शान्त करने के लिये अँग्रेज़ी पार्लियामेएट के सम्मुख आयरलैंड के स्वराज्य का प्रस्ताव (Irish Home Rule Bill) उपस्थित किया। ग्लेड्सटन ने यह साफ कह दिया कि अधूरे सुधारों से आयरलैंड निवासियों को सन्तुष्ट करना असम्भव है; और जब तक उनको स्वराज्य न दे दिया जायगा, उस समय तक देश में शान्ति की स्थापना की आशा करना व्यर्थ है। उसने अपना प्रस्ताव दो बार उपस्थित किया, परन्तु अँग्रेज़ी पार्लियामेएट ने उसे दोनों बार अस्वीकृत कर दिया। इंगलैंड निवासी अभी आइरिश आन्दोलन के महत्त्व को

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ठीक-ठीक न समझ सके थे। इसी प्रस्ताव के अस्वीकृत होने के कारण ग्लेड्सटन को अपने पद से त्याग-पत्र देना पड़ा था।

क्रान्तिकारी समाज की उन्नति—

आयरलैंड के स्वराज्य के प्रस्ताव के अस्वीकृत हो जाने के पश्चात् वहाँ के निवासियों का असन्तोष और भी अधिक बढ़ गया। नवयुवक-दल धीरे-धीरे ज़ोर पकड़ता गया, और उसने अब आयरलैंड में स्पष्ट रूप से क्रान्तिकारी रीतियों का अवलम्बन आरम्भ किया। देश में अब यह खुल्लमखुल्ला प्रचार होने लगा कि नियमानुसार आन्दोलन का समय गया। अब प्रजा को दृढ़ विश्वास हो गया कि बिना रक्त-पात हुए स्वतन्त्रता नहीं मिल सकती। क्रान्तिकारियों ने फ़ीनियन समाज (Fenian Society) नामक एक संस्था स्थापित की, जिसके नेतृत्व में देश के कई भागों में सरकार के प्रधान कर्मचारियों की हत्या तथा इसी प्रकार के उपद्रव होने लगे। क्रान्तिकारियों ने बहुत से बम, बारूद इत्यादि बनाने के कारखाने खोल दिये; और अब इनके आन्दोलन का लक्ष्य केवल संयोग-विच्छेद ही न रहा, बल्कि उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता (Complete Independence) को अपना लक्ष्य बनाया, और यह घोषित कर दिया कि अब हम इंगलैंड से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध रखने को तैयार नहीं हैं।

महायुद्ध का प्रभाव—

इस क्रान्तिकारी आन्दोलन से घबरा कर अँग्रेज़ी सरकार को अपनी नीति बदलने पर बाध्य होना पड़ा, और इंगलैंड के राजनीतिज्ञों ने समझ लिया कि आयरलैंड को स्वराज्य दिये बिना छुटकारा न मिलेगा। इस आशय से सन् १९१४ में आयरलैंड के स्वराज्य का प्रस्ताव फिर उपस्थित किया गया, परन्तु इसी समय यूरोपीय महायुद्ध छिड़ जाने के कारण पार्लियामेण्ट ने यह निश्चय किया कि इस प्रश्न का निपटारा युद्ध समाप्त होने पर किया जायगा, अतः सन् १९२० में युद्ध के पश्चात् गवर्नमेण्ट-आफ़-आयरलैंड-ऐक्ट (Government of Ireland Act) स्वीकृत हुआ। इस समय एक विशेष कठिनाई यह आगई कि अल्सटर (Ulster) नामक आयरलैंड के उत्तरी प्रान्त ने—जिसमें अधिकतर प्रोटेस्टेण्ट बसे हुए हैं, केथलिक प्रान्तों के स्व-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्य में सम्मिलित होना स्वीकार न किया। इस कारण यह निर्णय किया गया कि उत्तरी तथा दक्षिणी प्रान्तों को अलग-अलग स्वराज्य दिया जाय। आयरलैंड को ब्रिटिश-संयुक्त-राज्य (United Kingdom) से पृथक् न किया गया, परन्तु उसके उत्तरी तथा दक्षिणी प्रान्तों में गृह-शासन की देखभाल के लिये अलग-अलग पार्लियामेण्टें बना दी गईं।

वर्तमान आइरिश फ्री स्टेट—

आयरलैंड निवासी इस अधूरे स्वराज्य से सन्तुष्ट न हुए, और उन्होंने पूर्ण स्वतन्त्रता का आन्दोलन बराबर जारी रक्खा। अब डी-वेलेरा (De Velera) नामक एक जोशीला राजनैतिक आयरलैंड का नेता हुआ, और उसके नेतृत्व में दक्षिण आयरलैंड वालों ने अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट की स्वीकृति के बिना ही अपना एक स्वतन्त्र-शासन स्थापित कर लिया, जो "डेल-आयरैन (Dail-Eireann) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। इंगलैंड की सरकार ऐसी स्थिति में बहुत चकराई और अन्त में सन् १६२२ मे उसको दक्षिणी आयरलैंड की स्वतन्त्रता स्वीकार करनी पड़ी। अल्सटर का उत्तरी प्रान्त ब्रिटिश-संयुक्त-राज्य में सम्मिलित रहा, परन्तु दक्षिणी भाग को इससे पृथक् करके वहाँ "आइरिश फ्री स्टेट" (Irish Free State) नामक एक स्वतन्त्र राज्य स्थापित कर दिया गया। आइरिश फ्रीस्टेट को आजकल वही अधिकार प्राप्त हैं, जो ब्रिटिश-साम्राज्य के अन्य स्वतन्त्र प्रदेशों (Self Governing Dominions) को मिले हुए हैं। इस प्रकार कई शताब्दियों के आन्दोलन के पश्चात् आयरलैंड की समस्या का निपटारा हुआ, और वहाँ के निवासियों ने स्वतन्त्र होने के उद्देश्य में सफलता प्राप्त की।

परन्तु अब भी आयरलैंड में राजनैतिक आन्दोलन चला जा रहा है, और डी-वेलेरा की पार्टी इस बात की इच्छुक है कि वहाँ ब्रिटेन का जो कुछ थोड़ा-बहुत नाम मात्र आधिपत्य रह गया है उसको भी हटाया जाय और ब्रिटिश-साम्राज्य से बिल्कुल पृथक् होकर देश में प्रजा-तन्त्र-राज्य की स्थापना की जाय।

Exercises.

1. Briefly narrate the circumstances leading to the Irish Union of 1801.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Why could not the Irish Union satisfy the Irish people? Describe their principal grievances.
3. Give an account of the agitation in Ireland for the repeal of the Union.
4. Discuss Gladstone's policy towards Ireland with special reference to his Irish Home Rule Bill
5. Trace the circumstances leading to the establishment of the Irish Free State.
6. Write short notes on :—

   Wolfetone, O'Connel, Parnell, De Velera, Fenian Society, Catholic Association, and the Young Ireland Party.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन्तालीसवाँ परिच्छेद

एडवर्ड सप्तम तथा शान्ति-काल

सन् १६०१	एडवर्ड सप्तम का राज्याभिषेक
,, १६०२–१६०६	बालफ़ोर का मंत्रित्व
,, १६०३	फ्रान्स तथा ब्रिटेन का समझौता
,, १६०६–१६०८	केम्पबेल बेनेरमैन का मंत्रित्त्व
,, १६०७	ब्रिटेन तथा रूस की सन्धि
,, १६०८–१६१६	ऐसक्विथ का मंत्रित्त्व
,, १६१०	एडवर्ड सप्तम की मृत्यु
,, १६११	पार्लियामेएट ऐक्ट

अन्तर्राष्ट्रीय अनुभव—

सन् १६०१ में महारानी विक्टोरिया की मृत्यु के पश्चात् उसका ज्येष्ठ पुत्र "एडवर्ड सप्तम" (Edward VII) के नाम से राजसिंहासन पर बैठा। महारानी विक्टोरिया के राज्य-काल ही में वह संसार के बहुत-से भागों में भ्रमण कर चुका था; विशेषतया यूरोप के भिन्न-भिन्न देशों में उसने कई बार यात्रा की थी। महारानी विक्टोरिया का विचार था कि इस प्रकार यात्राओं से अन्तर्राष्ट्रीय-क्षेत्र में भी बहुत लाभ होता है, और इसी अभिप्राय से उसने युवराज एडवर्ड को इन यात्राओं के लिये भेजा था। राज्याभिषेक के समय एडवर्ड की आयु ६० वर्ष की थी, और इस कारण उसको सांसारिक-व्यवहार का बहुत कुछ अनुभव था। उसकी पत्नी ऐलेक्ज़ेण्ड्रा (Queen Alexandra) का यूरोप के बहुत से राजवंशों से सम्बन्ध था,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिसके कारण यूरोपीय राज्यों के शासक इंगलैंड आते-जाते रहते थे। इस प्रकार एडवर्ड को यूरोपीय राजनीतिज्ञों से व्यक्तिगत मित्रता बढ़ाने के लिये बहुत अवसर मिला. और इसी मित्रता के कारण उसे ब्रिटेन की अन्तर्राष्ट्रीय-

एडवर्ड सप्तम तथा रानी एलेक्ज़ेण्ड्रा

समस्याएँ सुलझाने में बहुत कुछ सहायता मिली। उसका राज्य-काल सुख तथा शान्ति का समय था; और उसने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से यूरोप को कई बार युद्ध में फँसने से बचा लिया। इन्हीं सब कारणों से एडवर्ड इतिहास में "शान्ति-स्थापक" (Peace Maker) के नाम से प्रसिद्ध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अन्तर्राष्ट्रीय नीति में परिवर्तन—

बहुत काल से ब्रिटेन का फ्रान्स तथा रूस से कई अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों पर बखेड़ा चल रहा था। एडवर्ड की इच्छा थी कि इन देशों से शत्रुता का अन्त करके उनसे मित्रता की जाय। फ्रान्स वालों को ब्रिटेन से सबसे बड़ी शिकायत इस समय यह थी कि मिश्र में फ्रान्स तथा ब्रिटेन दोनों का सम्बन्ध एक साथ आरम्भ होने पर भी ब्रिटेन ने अवसर पाकर मिश्र पर अपना अकेला आधिपत्य जमा लिया था। सन् १९०३ में एडवर्ड स्वयं फ्रान्स गया, और उसने वहाँ के राजनीतिज्ञों से बात-चीत करके फ्रान्स वालों की शिकायत को दूर करने का प्रयत्न किया। मिश्र के बदले में ब्रिटेन ने फ्रान्स को अफ्रीका के उत्तरी-पश्चिमी कोने में मराको (Morocco) देश में स्वतन्त्रता दे दी। इस प्रकार ब्रिटेन तथा फ्रान्स का द्वेष समाप्त हुआ, और दोनों देशों में एक समझौता (Entente Cordiale) हुआ, जिसके अनुसार दोनों ने एक दूसरे के साथ मित्रता रखने तथा एक दूसरे को सहायता करने का वचन दिया।

इसी प्रकार एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से रूस से भी समझौता कराया। हम ऊपर बतला चुके हैं कि "पूर्वी समस्या" के सम्बन्ध में ब्रिटेन ने टर्की को रूस के विरुद्ध सहायता दी थी। इसके अतिरिक्त रूसियों तथा अँग्रेज़ों ने भारतवर्ष की उत्तरी-पश्चिमी सीमा पर भी झगड़ा चल रहा था। दोनों ही अफ़ग़ानिस्तान तथा फ़ारिस को अपने दबाव में लाना चाहते थे, और दोनों के राज-दूत इन देशों में पहुँच कर अपनी-अपनी सरकार की ओर से प्रयत्न करने में लगे हुए थे। रूस तथा जापान के युद्ध में अँग्रेज़ों ने जापान की सहायता करके रूस की शत्रुता को और अधिक बढ़ा दिया। इस समय स्थिति ऐसी विकट हो गई जिससे आशा की जाती थी कि ब्रिटेन तथा रूस में युद्ध छिड़ जायगा। परन्तु एडवर्ड सप्तम के उद्योग से सन् १९०७ में दोनों देशों में संधि (Anglo Russion Agreement) हो गई, जिसके अनुसार दोनों के परस्पर बखेड़ों का शान्ति-पूर्वक निपटारा कर दिया गया। इंगलैंड ने टर्की के विरुद्ध सहायता करने की नीति को त्याग देने का वचन दे दिया, और एशिया के सम्बन्ध में यह निर्णय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हुआ कि फ़ारस के उत्तरी भाग पर रूस का और दक्षिणी भाग पर ब्रिटेन का प्रभाव रहेगा।

इस प्रकार एडवर्ड ने फ्रान्स तथा रूस जैसे पुराने शत्रुओं से मित्रता करके ब्रिटेन की अन्तर्राष्ट्रीय नीति का बिल्कुल ढंग बदल दिया।

लिबर दल की उन्नति—

ग्लेड्सटन के त्याग-पत्र देने के समय से अँग्रेज़ी पार्लियामेण्ट में लिबरल-दल की शक्ति का अन्त हो गया, और महारानी विक्टोरिया के शासन के अन्तिम काल तथा एडवर्ड सप्तम के राज्य के प्रारम्भिक भाग में कन्ज़रवेटिव (Conservative Party) ही की शक्ति प्रधान रही। इस काल में इस दल वाले यूनियनिस्ट (Unionist) के नाम से प्रसिद्ध थे, क्योंकि उनकी राजनीति का मुख्य उद्देश्य यह था कि आयरलैंड से संयोग न तोड़ा जाय। यूनियनिस्ट दल के प्रसिद्ध नेता लार्ड सैलिशबरी (Lord Salisbury) तथा बालफ़ोर (Balfour) थे, और जब तक इनकी शक्ति प्रधान रही उन्होंने सुधार-पक्ष की एक न चलने दी।

परन्तु सन् १९०६ में बालफ़ोर को अपना प्रधान मंत्री का पद त्यागना पड़ा। इस समय से लिबरल दल (Liberal Party) की शक्ति फिर बढ़ने लगी। सबसे पहले लिबरल दल के नेता केम्पबेल बेनरमैन (Campbell Bannerman) प्रधान मन्त्री नियुक्त हुआ। परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण उसने शीघ्र ही त्याग-पत्र दे दिया और उसके स्थान पर दूसरे लिबरल नेता एसक्विथ (Asquith) को प्रधान-मन्त्री का पद मिला। एसक्विथ लगभग दस वर्ष तक प्रधान-मन्त्री रहा, और अपने मंत्रित्व-काल में उसने बहुत से सुधार के प्रस्ताव स्वीकृत कराये।

मज़दूर दल का संगठन—

राजनैतिक-इतिहास में एडवर्ड सप्तम के शासन-काल की एक मुख्य विशेषता यह भी है कि इस काल में एक नये राजनैतिक-दल का संगठन हुआ जो मज़दूर-दल (Labour Party) के नाम से प्रसिद्ध है। व्यवसायिक तथा व्यापारिक उन्नति के कारण मज़दूरों का जोश देश में बढ़ता

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जा रहा था। सन् १६०६ की पार्लियामेण्ट से मज़दूर-दल का प्रारम्भ हुआ, और उन्होंने देश की आर्थिक दशा को सुधारने के लिये बड़े जोश से आन्दोलन आरम्भ किया। परन्तु इस दल का अभी प्रारम्भ मात्र ही था और कहीं बीस वर्ष के पश्चात् उसको अपनी शक्ति बढ़ा कर शासन-कार्य के संचालन का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इस समय तक लिबरल तथा कन्ज़र-वेटिव दो दलों ही के बीच में देश का शासन लौटता फिरता रहा।

व्यापारिक-सुधार—

एडवर्ड सप्तम के राज्यकाल में कई प्रकार के व्यापारिक सुधार भी हुए। स्वतन्त्र-व्यापार (Free Trade) के सिद्धान्त की उन्नति हुई, और व्यापार की बहुत-सी वस्तुओं पर से महसूल बिल्कुल हटा दिया गया। इसके अति-रिक्त यह निश्चित किया गया कि ब्रिटिश उपनिवेशों के माल पर अन्य देशों की अपेक्षा कम महसूल (Colonial Preference) लगाया जाय, जिससे ब्रिटिश-साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों का पारस्परिक व्यापार अच्छी तरह उन्नति कर सके। इसी काल में व्यापारिक संघों (Trade Unions) को भी बहुत-सी सुविधाएँ दी गईं। राज-नियमों में इस प्रकार के संघों को बहुत दिनों पहले ही नियमानुसार ठहरा दिया गया था, परन्तु अब इनके अधिकारों में और भी अधिक वृद्धि कर दी गई, और पार्लियामेण्ट ने यह स्वीकार कर लिया कि उनकी पूंजी सदा सुरक्षित रहेगी। इसके अतिरिक्त बूढ़े मज़दूरों को पेन्शन देने का भी प्रबन्ध किया गया, जिससे वे बेकार होने पर शान्ति-पूर्वक जीवन निर्वाह कर सकें।

पार्लियामेण्ट के दोनों भागों का सम्बन्ध—

सन् १६०६ में पार्लियामेण्ट के दोनों भागों, अर्थात् लोक-सभा तथा लार्ड-सभा, में आर्थिक प्रश्न पर एक बड़ा झगड़ा आरम्भ हुआ। लोक-सभा का कहना था कि हम ही पार्लियामेण्ट का मुख्य भाग हैं, क्योंकि हमारे सदस्य जन-सम्मति से निर्वाचित होने के कारण देश तथा जाति के वास्तविक प्रति-निधि हैं। यह झगड़ा लगभग दो वर्ष तक चलता रहा, और इसी के निपटारे के लिये एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के कुछ ही मास पश्चात् सन् १६११ का

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पार्लियामेण्ट एक्ट (Parliament Act) बनाया गया, जिसने लोक-सभा तथा लार्ड-सभा के पारस्परिक सम्बन्ध को निश्चित किया। यह निर्णय हुआ कि धन सम्बन्धी प्रस्तावों (Money Bills) पर केवल लोक-सभा ही में वाद-विवाद हो सकता है, और अन्य प्रस्तावों के विषय में यह निश्चित हुआ कि जिन प्रस्तावों को लोक-सभा तीन बार स्वीकृत कर देवे वे लार्ड-सभा की अनुमति न होने पर भी राजा के हस्ताक्षरों के पश्चात् राज-नियम बन सकते हैं।

Exercises.

1. Describe the part played by Edward VII in foreign politics.
2. How far are we justified in calling Edward VII a great Peace-Maker ?
3. Write short notes on :—
   Unionists, Labour Party, Asquith, and Parliament Act of 1911.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चालीसवाँ परिच्छेद

जार्ज पंचम

सन् १९१०	जार्ज पंचम का राज्याभिषेक
,, १९०८—१९१६	एसक्विथ का मंत्रित्व
,, १९१४—१९१८	यूरोपीय महायुद्ध
,, १९१६—१९२२	लायड जार्ज का मंत्रित्व
,, १९२२—१९२३	बोनर ला का मंत्रित्व
,, १९२४ ,, १९२९—१९३५	रैमज़ेमैकडोनेल्ड का मंत्रित्व
,, १९२३—१९२४ ,, १९२५—१९२९ ,, १९३५ से १९३७	बाल्डविन का मंत्रित्व
,, १९३५	जार्ज पंचम की सिलवर जुबिली
,, १९३६	जार्ज पंचम की मृत्यु
,, १९३६—३७	एडवर्ड अष्टम तथा जार्ज षष्ट

सम्राट् जार्ज पंचम—

सन् १९१० में एडवर्ड सप्तम की मृत्यु के पश्चात् सम्राट् जार्ज पंचम सिंहासनारूढ़ हुए। यह एडवर्ड सप्तम के दूसरे पुत्र थे। इनके बड़े भाई एलबर्ट का विक्टोरिया ही के शासन-काल में देहान्त हो चुका था। राज्याभिषेक के समय जार्ज पंचम की अवस्था ४५ वर्ष की थी। राज्याभिषेक के अगले वर्ष सम्राट् जार्ज पंचम महारानी मेरी सहित भारतवर्ष आये और

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

देहली में बड़े समारोह से राजदर्बार हुआ। यह पहला अवसर था कि अँग्रेज़ी सम्राट् का राज्याभिषेक भारतवर्ष में भी हुआ। इस घटना का भारतवासियों के हृदय पर बड़ा उत्तम प्रभाव पड़ा और उन्होंने सम्राट् के प्रति बड़ी राज-भक्ति दिखाई।

Ramjee Prasad. IX

जार्ज पंचम

सिलवर जुबिली

सन् १९३५ में जार्ज पंचम के राज्य-काल के २५ वर्ष समाप्त हुए, जिसके उपलक्ष में ब्रिटिश-साम्राज्य के भिन्न-भिन्न भागों में सिलवर जुबिली (Silver Jubilee) मनाई गई। व्यक्तिगत रूप से जार्ज पंचम के शासन के प्रत्येक विभाग में उत्तम प्रभाव पड़ा, और उनके अनुभवी होने के कारण देश के प्रसिद्ध राजनीतिज्ञों ने बड़ी-बड़ी जटिल समस्याओं में उनसे परामर्श किया। महा-युद्ध-काल में उन्होंने सन् १९१७ में अपनी सब विदेशी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उपाधियाँ त्याग दीं, और यह घोषणा की कि अबसे उनका राज्य-वंश विंडसर वंश (House of Windsor) के नाम से पुकारा जायगा। सं० १९३६ में जार्ज पंचम परलोक सिधारे।

एडवर्ड अष्टम—

जार्ज पंचम की मृत्यु के बाद उनके ज्येष्ठ पुत्र एडवर्ड अष्टम सिंहासनारूढ़ हुए। यह भी अपने पूर्वज एडवर्ड सप्तम की तरह साम्राज्य का भ्रमण कर

एडवर्ड अष्टम

चुके थे। इस कारण इनको राजनैतिक, आर्थिक तथा व्यापारिक समस्याओं का खूब अनुभव था। इंगलैंड की समस्त प्रजा में इनका बहुत सम्मान था। अपने दयालु तथा उदार व्यवहार के कारण यह प्रजा के प्रेम पात्र बन गए थे। परन्तु दुर्भाग्यवश कुछ ही दिनों बाद सन् १९३७ में इनको अपना पद त्याग देना पड़ा। नए सम्राट ने इनको ड्यूक आफ़ विंडसर की उपाधि दी है, और अब यह इसी नाम से प्रसिद्ध है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सम्राट जार्ज षष्ठ—

अब एडवर्ड अष्टम के छोटे भाई ड्यूक आफ़ यार्क ने जार्ज षष्ठ की उपाधि लेकर सम्राट् का पद ग्रहण किया है। आशा है कि यह अपने पिता तथा पितामह की तरह प्रभावशाली होंगे।

यूरोपीय महायुद्ध

युद्ध की तैयारी—

जार्ज पंचम के शासन-काल की सब से प्रसिद्ध घटना यूरोपीय महायुद्ध (The Great War) है, जिसने समस्त भू-मण्डल को हिला दिया। इस युद्ध में यूरोप के सब राष्ट्र और संसार के अन्य छोटे देशों ने भाग लिया था। प्रतिदिन इस युद्ध में लगभग दो करोड़ सैनिक लड़ते थे और तीस करोड़ रुपये से अधिक व्यय होता था, और इस युद्ध से हानि इतनी हुई कि यूरोप तथा अन्य देश सन् १९३० तक पनप न पाये। इस युद्ध की तैयारियाँ कितने ही वर्षों पहले से आरम्भ हो गई थीं। इसमें विशेष भाग जर्मनी का रहा, और इसी कारण वह कभी-कभी जर्मन युद्ध (The German War) के नाम से पुकारा जाता है।

बालकन-प्रायद्वीप के ईसाई राज्य—

सन् १८७८ के बर्लिन के निर्णय ने टर्की में शान्ति के स्थान में नये-नये झगड़े खड़े कर दिये। मान्टीनिग्रो, सर्बिया तथा रूमानिया स्वतन्त्र हो चुके थे। बलगेरिया को टर्की की अधीनता में स्व-शासन का अधिकार दिया गया था, परन्तु कुछ दिन पश्चात वह बिलकुल स्वतन्त्र हो गया और उसने अपने राज्य की सीमा दुगनी करली। बोसनिया तभा हर्ज़ीगोविना नामक दो ईसाई प्रान्तों का शासन आस्ट्रिया को सौंपा गया था, परन्तु सन् १९०८ में आस्ट्रिया ने इन दोनों प्रान्तों को पूर्णतया अपने राज्य में सम्मिलित कर लिया। इस प्रकार टर्किश सरकार की निर्बलता से लाभ उठा कर ये प्रान्त अपने राज्यों की सीमाओं को बढ़ा रहे थे तथा अपनी शक्ति का संगठन कर रहे थे। मेसिडोनिया में भी इन ईसाई राज्यों ने उपद्रव खड़ा कर दिया। झगड़ा बढ़ता चला गया और अन्त में सन् १९१२ में बालकन प्रायद्वीप के ईसाई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राज्यों ने टर्की से युद्ध छेड़ दिया। इस युद्ध के फल-स्वरूप टर्की को अपना यूरोप वाला कुछ भाग इन ईसाई राज्यों को देना पड़ा। अब नई समस्या उपस्थित हो गई। ये राज्य नई भूमि के बटवारे के लिये आपस में लड़ने लगे। बलगेरिया को अपने राज्य का कुछ भाग सर्विया तथा रूमानिया को देना पड़ा। बलगेरिया बहुत निराश था और अपने राज्य के खोये हुए भाग पर फिर से अधिकार करना चाहता था। इसी आशा से बलगेरिया ने यूरोपीय महायुद्ध में जर्मनी तथा आस्ट्रिया का पक्ष लेकर प्रवेश किया।

इन ईसाई प्रान्तों के आपस के द्वेष के कारण टर्की ने अपनी शक्ति का संगठन किया और अपने खोये हुए प्रान्तों को वापस लेने की आशा से उसने भी महा-युद्ध में जर्मनी का साथ दिया। दूसरे रूस तथा इंगलैंड के मध्य मित्रता हो जाने के कारण टर्की की झुकाव जर्मनी की ओर हुआ, और जर्मनी का प्रभाव जैसा कि हम अभी बतावेंगे, टर्की पर बढ़ता जाता था। टर्की ने दो जर्मन जहाज़ों को जो रूम सागर में से अँग्रेज़ों तथा फ्रान्सीसियों से बचकर भागे थे कृष्ण सागर में शरण दी। इस पर इंगलैंड, फ्रान्स तथा रूस ने टर्की के विरुद्ध युद्ध की घोषणा की।

जर्मनी की उन्नति—

जर्मनी की उन्नति उसके प्रधान-मंत्री प्रिंस बिसमार्क (Prince Bismarck) के समय से आरम्भ हुई, और सन् १८७१ में प्रशा के राजा ने आस-पास की रियासतों को अपने अधीन करके जर्मन सम्राट् कैसर (The German Kaiser) की उपाधि ग्रहण की। सन् १८८२ में जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली में एक बड़ी महत्त्व-पूर्ण सन्धि हुई, और इससे उत्साहित होकर जर्मनी ने अन्य यूरोपीय राष्ट्रों का सामना करने की तैयारी आरम्भ कर दी।

इंगलैंड तथा जर्मनी—

महारानी विक्टोरिया के राज्य-काल में इंगलैंड ने प्रायः जर्मनी के प्रति मित्रता का व्यवहार रक्खा। सन् १८८० के लगभग जब जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली ने मिलकर कर मित्र संघ स्थापित किया, तो इंगलैंड को यह प्रसन्नता हुई कि ये तीनों देश एक तो आपस में युद्ध न करेंगे और दूसरे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यूरोप में भी शान्ति रहेगी। जब सन् १८७१ के पश्चात् जर्मनी ने उपनिवेश बसाने आरम्भ किये तो इंगलैंड ने डास के स्थान में अपनी सहानुभूति प्रकट की।

परन्तु सन् १८९० के पश्चात् जर्मनी में ऐसी घटनाएँ हुईं जिससे इंगलैंड चौकन्ना हुआ। सन् १८८८ में सम्राट विलियम द्वितीय जर्मनी के राजसिंहासन पर बैठा। उसकी अध्यक्षता में जर्मनी ने संसार के व्यापारिक तथा राजनीतिक क्षेत्र में उच्च स्थान प्राप्त किया। जर्मनी ने अपनी सेना तथा जल-शक्ति कों उन्नति देना आरम्भ किया। इंगलैंड को भय हुआ कि कहीं जर्मनी इंगलैंड पर आक्रमण न कर दे। टर्की में भी जर्मनी ने अपना प्रभाव बढ़ाना आरम्भ कर दिया और वहाँ उसने बहुत-सी व्यापारिक सुविधाएँ भी प्राप्त कर लीं। सन् १८९९ में जर्मनी ने बर्लिन से बग़दाद होती हुई अफ़गानिस्तान तक रैल बनाने की आज्ञा प्राप्त करली, और काम भी आरम्भ कर दिया, परन्तु यह रैल सन् १९१४ तक पूरी न हो पाई। इस रेल के कारण इंगलैंड का भय और भी अधिक हुआ और उसे अपनी स्थिति संभालने की चिन्ता हुई।

इसके पश्चात् जर्मनी ने फ्रान्स से खुल्लमखुल्ला छेड़ लड़ाई लेना आरम्भ कर दी। फ्रान्सीसी मारक्को पर अधिकार करने की चेष्टा कर रहे थे। जर्मन सम्राट् की भी उस पर दृष्टि लगी हुई थी और वहाँ कुछ जर्मन व्यापारियों की कोठियाँ भी थीं। सन् १९११ में फ्रान्स वालों ने मारक्को को अपनी संरक्षता में ले ही लिया। उस समय जर्मन व्यापारियों की रक्षा के बहाने जर्मनी ने दो जहाज़ भी भेज दिये। उस समय युद्ध छिड़ भी जाता, परन्तु इंगलैंड ने स्पष्ट रूप से फ्रान्स का पक्ष लिया। जर्मनी उस समय तो भयभीत होकर चुप लगा गया, परन्तु उस दिन से उसने अपनी सेना तथा जहाज़ी बेड़े को उन्नति देना आरम्भ किया।

फ्रान्स तथा इंगलैंड दो संधियों द्वारा सन् १९०४ से घनिष्ट मित्र हो चुके थे। अब इंगलैंड ने मित्रता का हाथ अपने पुराने शत्रु रूस की ओर बढ़ाया। सन् १९०७ में इंगलैंड तथा रूस के मध्य संधि हुई जिसके अनुसार यह निश्चय हुआ कि दोनों देश अफ़ग़ानिस्तान, फ़ारस तथा तिब्बत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

में अपना राजनीतिक प्रभाव डालने का प्रयत्न न करेंगे। फ्रान्स तथा रूस के मध्य तो सन् १८९६ में ही संधि हो चुकी थी। इस प्रकार इंगलैंड, फ्रान्स तथा रूस तीनों देशों ने एक मित्र-संघ बना लिया और हर समय एक दूसरे की सहायता के लिये तैयार थे। इन संधियों का यही अभिप्राय था कि यदि जर्मनी, आस्ट्रिया तथा इटली कोई युद्ध छेड़ेंगे तो उनका सामना करने के लिये इंगलैंड, फ्रान्स तथा रूस आपस में सहयोग करेंगे। इस प्रकार युद्ध छिड़ने से कई वर्षों पहले ही युद्ध की दलबन्दी निश्चित हो चुकी थी।

युद्ध का आरंभ—

यूरोपीय अन्तर्राष्ट्रीय स्थिति दिन-प्रति-दिन विकट रूप धारण करती गई, और अन्त में युद्ध छेड़ने के लिये केवल एक बहाने की आवश्यकता रह गई। २८ जून सन् १९१४ के दिन जब आस्ट्रिया का युवराज फरडिनेण्ड (Arch Duke Ferdinand) बोसनिया की राजधानी सेराजीवो (Serajevo) में भ्रमण कर रहा था, उस समय किसी ने उसका वध कर डाला। बोसनिया थोड़े दिनों पहले ही सरविया की सहायता से स्वतन्त्र हुआ था। इस कारण युवराज के वध का समाचार पाते ही आस्ट्रिया की सरकार को यही संदेह हुआ कि सरविया ही के इशारे से बोसनिया में यह हत्या की गई है। अतः आस्ट्रिया ने तुरन्त ही सरविया को युद्ध की चेतावनी दे दी; और इस प्रकार यूरोपीय अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र की बारूद में चिंगारी लग गई।

युद्ध में भाग लेने वाले देश—

इस युद्ध की दलबन्दी अधिकतर उसी प्रकार रही जिस प्रकार कई वर्षों पहले की संधियों में निश्चित हो चुका था। सर्विया तथा आस्ट्रिया का युद्ध छिड़ते ही रूस और फ्रान्स सरविया की ओर और जर्मनी आस्ट्रिया की ओर जा मिले। परन्तु ब्रिटेन अभी युद्ध में सम्मिलित न हुआ। जर्मनी ने युद्ध छिड़ते ही बेलजियम पर आक्रमण किया, यद्यपि समस्त यूरोपीय राष्ट्र पिछली कई संधियों में यह निश्चित कर चुके थे कि बेलजियम में किसी प्रकार का हस्तक्षेप न किया जायगा। बेलजियम इंगलैंड से इतना निकट था कि वहाँ किसी शत्रु का अधिकार हो जाना अँग्रेज़ कभी सहन नहीं कर सकते थे। पिछले कई युद्धों में बेलजियम ही की रक्षा के हेतु इंगलैंड को शस्त्र उठाने पड़े थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इसी प्रकार इस बार भी जर्मनी की सेना बेलजियम में पहुँचते ही ४ अगस्त सन् १९१४ को ब्रिटेन को भी जर्मनी के विरुद्ध युद्ध में सम्मिलित होना पड़ा। पिछली संधियों के अनुसार इटली को जर्मनी तथा आस्ट्रिया का साथ देना चाहिये था, परन्तु इस समय इटली ने यही उचित समझा कि ब्रिटेन, फ्रान्स रूस तथा सरविया ही की ओर से रणक्षेत्र में प्रवेश किया जाय।

पाठकों की सुविधा के लिये सरविया, रूस, फ्रान्स, ब्रिटेन तथा इटली वाले पक्ष को मित्र राष्ट्र (Allies) और आस्ट्रिया तथा जर्मनी वाले पक्ष को शत्रु (Enemies) के नाम से पुकारेंगे। कुछ समय पश्चात् टर्की भी शत्रुओं की ओर हो गया। बहुत दिनों पहले ही से जर्मनी ने तुर्कों के प्रति मित्रता दिखाना आरम्भ कर दिया था, और पूर्वीय देशों पर अधिकार जमाने के आशय से बग़दाद रेलवे द्वारा भारतवर्ष के लिये सीधा स्थल-मार्ग निकालने का प्रयत्न किया था। जिस प्रकार शत्रुओं की ओर टर्की सम्मिलित हुआ, उसी प्रकार कुछ समय पश्चात् सन् १९१७ में मित्र राष्ट्रों ने कह सुन कर अमेरिका को अपनी ओर मिलाया। अमेरिका वाले इस युद्ध से अलग रहना चाहते थे, परन्तु जर्मनी के अत्याचारों का समाचार पाकर संयुक्त-अमेरिकन-राज्य के प्रेसिडेण्ट विलसन (President Wilson) को जर्मनी के विरुद्ध युद्ध की घोषणा करनी ही पड़ी, और इस प्रकार मित्र राष्ट्रों को एक शक्ति-शाली सहायक और मिल गया।

युद्ध का पश्चिमी क्षेत्र—

युद्ध काल में अपनी सेनाओं का संगठन ठीक रखने के लिये मित्र राष्ट्रों ने यह निश्चित किया कि उन सब की सेना का प्रधान सेनापति एक ही होना चाहिये, जिससे युद्ध के भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में सुगमता-पूर्वक कार्य चल सके। इस आशय से फ्रान्स के सेनापति मार्शल फाश (Marshall Foch) को समस्त मित्र राष्ट्रों की फ़ौजों का प्रधान सेनापति बनाया गया। अँग्रेज़ी सेनापति जेनरल हेग (Haig) तथा अन्य राष्ट्रों के सेनापतियों ने पूर्ण उत्साह से नये प्रधान सेनापति के आज्ञानुसार कार्य करना स्वीकार किया, जिससे सब रणक्षेत्रों में एक ही नीति के अनुसार युद्ध का संचालन होने लगा।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बेलजियम को कुचल कर जर्मनी की सेनाएँ फ्रान्स की ओर बढ़ीं, और मार्न (Marne) नदी के किनारे कितने ही दिनों तक घोर युद्ध होता रहा। परन्तु अन्त में जर्मनी की सेना को इस स्थान से पीछे हटना पड़ा, और इस प्रकार जर्मनी का फ्रान्स पर अधिकार करने का मनोरथ सिद्ध न हो सका। इसके पश्चात् दोनों ओर से खाइयों का युद्ध (Trench Warfare) आरम्भ हुआ, और कितने ही वर्षों तक दोनों सेनाएँ एक दूसरे के सम्मुख खाइयों में पड़ी रहती थीं और दूर से गोला बारी होती रहती थी।

युद्ध का पूर्वीय क्षेत्र —

युद्ध के पूर्वीय क्षेत्र में अधिकतर रूस को हानि उठानी पड़ी। रूसियों की सेना कई बार शत्रुओं के हाथों परास्त हुई, और सन् १९१७ में किसानों तथा मज़दूरों के एक भयंकर राज्य-क्रान्ति खड़ी कर देने के कारण रूस की स्थिति और भी विकट हो गई। परिणाम यह हुआ कि रूस के ज़ार का उसके कुटुम्ब सहित क्रान्तिकारियों ने वध किया, और उन्होंने अपने देशों में एक प्रजा-तन्त्र-राज्य (Soviet Republic) स्थापित कर लिया। मार्च सन् १९१८ में रूस ने शत्रुओं से एक संधि कर ली, और इसके पश्चात् रूस वाले रणक्षेत्र से अलग हो गये।

यूनान ने भी कुछ काल के लिये शत्रुओं का साथ दिया, परन्तु वहाँ भी एक भयंकर राज्य-क्रान्ति खड़ी हो जाने के कारण वहाँ के राजा को सिंहासन छोड़ कर भागना पड़ा, और समस्त अधिकार उसके प्रधान के हाथों में आ गए। इसी समय मित्र राष्ट्रों के जहाज़ी बेड़े ने यूनानियों के बन्दरगाह सैलोनिका (Salonica) पर अपना अधिकार जमा लिया, जिसके कारण यूनान की ओर से अब कोई भय न रहा।

एशियायी क्षेत्र—

युद्ध का तीसरा मुख्य क्षेत्र एशिया में था। टर्की का जर्मनी के पक्ष में रहने के कारण अँग्रेज़ों ने उसके एशियायी साम्राज्य पर आक्रमण किया। ब्रिटिश सेनाओं ने, जिनमें अधिकतर भारतवासी सम्मिलित थे, मैसोपोटेमिया, पैलस्टाइन तथा सीरिया आदि कई प्रान्तों में टर्किश सेनाओं को परास्त कर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

उन पर अधिकार जमाया। उधर टर्की ने भी दो बार स्वेज़ नहर पर अधिकार जमाने का प्रयत्न किया, परन्तु अँग्रेज़ी सेनाओं के सम्मुख उसकी एक न चल सकी।

युद्ध से पहले अफ्रीका में जर्मनी ने भी कुछ उपनिवेश बसाये थे। युद्ध छिड़ जाने पर फ्रान्सीसी तथा अँग्रेज़ी सेनाओं ने उन पर भी अधिकार कर लिया। चीन के समुद्री तट पर भी जर्मनी की कुछ व्यापारिक कोठियाँ और टापू थे। अच्छा अवसर समझ कर जापान ने उन पर अपना अधिकार जमाया।

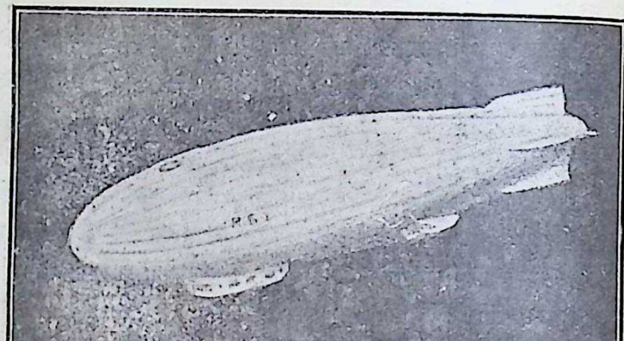

जेपलिन

जल युद्ध—

युद्ध के लिये जर्मनी ने एक जहाज़ी बेड़ा भी तैयार किया था। जर्मनी का विचार था कि वह अपने जहाज़ो द्वारा अँग्रेज़ी व्यापार को नष्ट कर देंगे, और बाहर से भोजन सामग्री इत्यादि को आना रोक देंगे। परन्तु अँग्रेज़ी जल-शक्ति के सम्मुख जर्मन जहाज़ी बेड़ा इंगलैंड का कुछ न बिगाड़ सका, बल्कि वह अधिकतर बेकार-सा पड़ा रहा। जर्मनी के एक एमडन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(Emden) नामक जहाज़ ने पूर्वी समुद्रों में प्रवेश कर, कई अँग्रेज़ी जहाज़ों को हानि पहुँचाई, और उसने मद्रास पर भी गोले बरसाये, अन्त में आस्ट्रेलिया के निकट यह जहाज़ पकड़ा गया। जर्मनी ने अँग्रेज़ों को और कई प्रकार से तंग किया। उन्होंने पनडुब्बी नावें (Submarines) तैयार कीं, जिनके द्वारा उन्होंने अँग्रेज़ी व्यापारों को नष्ट करना आरम्भ किया। समस्त जातियाँ युद्ध-काल में भी व्यापारी तथा साधारण यात्रियों के जहाज़ों को किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचाती हैं, परन्तु जर्मनों ने स्पष्ट कह दिया कि युद्ध-काल में सब प्रकार की नीति उचित है। जर्मनी ने इस युद्ध में हवाई जहाज़ों (Zeppelin) से भी काम लिया, और बहुधा रात्रि में अँग्रेज़ी सेनाओं तथा नगरों पर गोले बरसाये।

जल-युद्धों में सबसे प्रसिद्ध लड़ाई जटलैंड (Jutland) की मानी जाती है। इस लड़ाई में एक जल-सेना के सेनापति बीटी (Admiral Beatty) ने जर्मनों के जहाज़ी बेड़े को इस बुरी तरह से हानि पहुँचाई कि इसके पश्चात् जर्मनों ने खुल्लमखुल्ला अँग्रेज़ों के विरुद्ध जल-युद्ध करने का साहस न किया।

युद्ध का अन्त—

शत्रुओं की ओर से पहले टर्की रण-क्षेत्र से पीछे हटा। मैसोपोटामिया, पैलेस्टाइन तथा सीरिया में टर्की को इतनी हानि पहुँच चुकी थी कि इसके पश्चात् उसका युद्ध जारी रखना असंभव हो गया। इसी समय इटली के आस्ट्रिया पर चढ़ाई कर देने के कारण आस्ट्रिया को भी युद्ध बन्द कर देना पड़ा। सन् १९१८ के अन्तिम भाग में जर्मनी बिल्कुल अकेला रह गया। अकेला रह जाने पर जर्मनों को भाँति-भाँति की कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। दूसरी ओर जर्मन जनता भी युद्ध से तंग आ चुकी थी। ऐसी अवस्था में जर्मन सेनापति हिंडनबर्ग (Hinden-Burg) ने जर्मन क़ैसर को यह सलाह दी कि वह अपने राजपद से त्यागपत्र दे दे, क्योंकि प्रजा अब उसकी नीति की विरोधी होने लगी है। क़ैसर की मनोवृत्ति अभी डांवाडोल ही थी कि जर्मनी में भी एक भयङ्कर राज्य क्रान्ति खड़ी हो गई। परिणाम यह हुआ कि क़ैसर को अपने परिवार सहित हालैंड भाग जाना पड़ा, और क्रान्तिकारियों की स्थापित की हुई नई जर्मन सरकार ने सन्धि की बातचीत आरम्भ कर दी।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

११ नवम्बर सन् १६३८ को समस्त रण-क्षेत्रों में युद्ध बन्द होने (Armistice) की घोषणा कर दी गई और इस प्रकार यूरोपीय महायुद्ध का अन्त हुआ।

वरसेल्स की सन्धि—

युद्ध के पश्चात् सन्धि की धारायें निर्धारित करने के लिये पेरिस नगर के निकट वरसेल्स में एक बहुत बड़ी कान्फ्रेन्स हुई, जिसमें युद्ध में सम्मिलित होने

Ramjee Prasad IX

क़ैसर विलियम

वाले समस्त राष्ट्रों के प्रतिनिधि बुलाये गये। इस कान्फ्रेन्स में मुख्य भाग ब्रिटेन के प्रधान मन्त्री लायड जार्ज, अमेरिकन-संयुक्त-राज्य के प्रेसीडेण्ट विलसन और फ्रान्स के प्रधान मन्त्री क्लेमेन्शू (Clemenceau) का रहा। कई मास के वाद-विवाद के पश्चात् वरसेल्स की सन्धि पर हस्ताक्षर हुए, जिसकी मुख्य-मुख्य धाराएँ ये थीं—

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१—जर्मनी के नये प्रजातन्त्र-राज्य को अन्य यूरोपीय राष्ट्रों ने स्वीकार कर लिया, परन्तु जर्मन राष्ट्र के उन प्रान्तों को, जिनमें अन्य जातियाँ बसी हुई थीं, यह अधिकार दिया गया कि वे जिस प्रकार चाहें अपने शासन-विधान का निपटारा करें।

२—जर्मनी के अफ्रीका वाले उपनिवेश उसको न लौटाये गये, और इसके अतिरिक्त जर्मनी की सेना तथा ज़हाजी बेड़ों को भी बहुत कम कर दिया गया, क्योंकि मित्र राष्ट्रों को यह भय था कि कहीं जर्मनी वाले फिर भयंकर उपद्रव न खड़ा करदें।

३—एलसेस (Alsace) तथा लॉरेन (Lorraine) के प्रान्त जो पहले फ्रान्स के अंग थे और जिन पर जर्मनों ने अनुचित अधिकार जमा लिया था, फ्रान्स को वापस दिला दिये गये।

४—जर्मनी को युद्ध के लिये बहुत बड़ा हर्जाना देना पड़ा, जिसके वसूल करने के लिये सार की घाटी (Saar Valley) ज़मानत के रूप में मित्र राष्ट्रों को सौंप दी गई। इस घाटी में लोहे और कोयले की खानें हैं, और यह अभी चार पांच वर्ष हुए हर्जाना वसूल होने पर जर्मनी को वापस दी गई है।

५—आस्ट्रिया तथा हँगरी के साम्राज्य तोड़ कर कई भागों में विभक्त कर दिये गये। आस्ट्रिया और हँगरी अब छोटे-छोटे दो प्रजातन्त्र-राज्य रह गये, और इनके अतिरिक्त मध्य यूरोप में जेकोस्लोवेकिया (Czeco-Slovakia) तथा यूगोस्लेविया (Yugo-Slavia) नामक दो नये राष्ट्र स्थापित किये गये।

६—पोलेंड का पुराना राष्ट्र भी फिर से स्थापित किया गया, और व्यापार की सुविधा के लिये डेनज़िग (Danzig) का बन्दरगाह जर्मनी से लेकर उसे दे दिया गया।

७—टर्की की शक्ति यूरोप में बस नाम मात्र ही को रह गई, और उसका कुछ भाग यूनानियों को दे दिया गया। परन्तु थोड़े ही समय पीछे मुस्तफ़ा कमालपाशा के नेतृत्व में तुर्कों ने यूनानियों से लड़ कर अपना बहुत-सा भाग फिर वापस ले लिया।

८—मैसोपोटामिया का शासन ब्रिटेन को, और सीरिया का शासन फ्रान्स

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

को सौंपा गया, परन्तु यह ठहरा लिया गया कि इन देशों की आर्थिक तथा राजनैतिक स्थिति ठीक हो जाने के पश्चात् इनको स्वतन्त्र कर दिया जायगा। इस प्रकार के सौंपे हुए राज्यों को अँग्रेज़ी में मैन्डेट्स (Mandates) कहते हैं।

युद्ध का प्रभाव—

इस यूरोपीय महायुद्ध के कई महत्व-पूर्ण परिणाम निकले। राजनैतिक दृष्टि से तो एक मुख्य बात यह हुई कि कई राष्ट्रों में निरंकुश शासन का अन्त होकर वहाँ पर प्रजा-तन्त्र राज्य स्थापित हुए। रूस के ज़ार, जर्मनी और क़ैसर, आस्ट्रिया के सम्राट् और टर्की के सुलतान जैसे शक्तिशाली शासकों को राज्य-सिंहासन से हटना पड़ा और उनके स्थान पर प्रजा-तन्त्र-राज्य स्थापित कर दिये गये। इस प्रकार यूरोप के प्रत्येक राष्ट्र में नियमानुमोदित प्रजा-तन्त्र-राज्य का आरम्भ हुआ। आर्थिक दृष्टि से यह युद्ध बड़ा हानिकारक सिद्ध हुआ। इससे समस्त भू-मण्डल के व्यापार को बहुत बड़ा धक्का पहुँचा। ब्रिटेन इत्यादि यूरोप के देशों को, जहाँ खाद्य पदार्थ अन्य देशों से आते हैं, बड़े कष्ट भोगने पड़े, और इन पदार्थों का मूल्य अधिक बढ़ जाने के कारण जन-साधारण को बड़ा दुःख पहुँचा। युद्ध-काल में इतना अधिक व्यय हो गया था कि युद्ध के पश्चात् कर्मचारियों तथा कारख़ानों में काम करने वाले मज़दूरों का वेतन कम करना पड़ा, जिससे हड़तालें होने लगीं, और एक नई व्यावसायिक समस्या उठ खड़ी हुई। सरकार को राज-कर भी बढ़ा देने पड़े, और कई देशों का जातीय-ऋण भी बहुत बढ़ गया। इन सब आर्थिक दुर्घटनाओं से साम्यवादियों (Socialists) को अपने विचार फैलाने का अच्छा अवसर मिल गया, और कई देशों में उनकी शक्ति बढ़ने लगी। युद्ध का सामाजिक क्षेत्र में भी बहुत बुरा प्रभाव पड़ा, और बहुत-सी जन-संख्या नष्ट हो जाने के कारण भाँति-भाँति की सामाजिक समस्याएँ उपस्थित हो गईं। कहा जाता है कि यूरोप का महाद्वीप, विशेषकर उसका मध्य भाग युद्ध के बुरे परिणामों से अब तक मुक्त नहीं हो सका है।

लीग आफ़ नेशन्स—

युद्ध समाप्त होने पर भू-मण्डल के समस्त राजनीतिज्ञों का यह विचार

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

होने लगा कि युद्ध द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों का निबटारा करना कोई उचित उपाय नहीं है। युद्ध-काल में—विशेष कर वर्तमान समय में जब विज्ञान की इतनी उन्नति हो चुकी है, मनुष्य मात्र की इतनी हानि होती है कि विजयी तथा पराजित दोनों पक्षों की स्थिति को बहुत बड़ा धक्का पहुँचता है। प्रेसिडेण्ट विलसन के अनुरोध से वर्साई की सन्धि में एक धारा यह भी रक्खी गई कि भविष्य में अन्तर्राष्ट्रीय बखेड़ों का निर्णय करने के लिए एक राष्ट्र संघ (League of Nations) स्थापित किया जाय, जो बिना युद्ध किये ही आपस में समझौता तथा बातचीत करा कर इस प्रकार के प्रश्नों का निबटारा कर दिया करे। इस राष्ट्रसंघ में आजकल भूमण्डल के प्रायः सभी मुख्य-मुख्य राष्ट्र सम्मिलित हैं, और वर्तमान समय में कई महत्त्व-पूर्ण अन्तर्राष्ट्रीय बखेड़ों का इसके द्वारा निबटारा भी हुआ है। परन्तु राष्ट्रसंघ की सबसे बड़ी कमज़ोरी यह है कि उसके पास अपने निर्णय को कार्य रूप में परिणत करने के लिये कोई संतोषजनक साधन नहीं है। यदि कोई राष्ट्र उसके निर्णय को न माने तो ऐसी स्थिति में राष्ट्रसंघ केवल यह कर सकता है कि अन्य राष्ट्रों का उससे व्यापारिक सम्बन्ध-विच्छेद करा के उस पर दबाव डालने का प्रयत्न करे। छोटे राष्ट्रों के लिये तो यह उपाय सफल हो सकता है, परन्तु किसी प्रबल राष्ट्र के विरुद्ध इस उपाय का चलना बहुत कठिन है। अभी कुछ दिन हुए जापान ने चीन पर हस्तक्षेप करने के सम्बन्ध में राष्ट्रसंघ के निर्णय की तनक भी परवा न की; और इटेली वालों ने भी ऐसा ही किया, और अबीसीनिया को हड़प कर लिया। इधर सन् १९३७ से जर्मनी बराबर अपनी शक्ति बढ़ाता चला जाता है। आस्ट्रिया जर्मनी से सम्मिलित हो गया, जेकेस्लोवेकिया पर जर्मनी ने बलपूर्वक अधिकार जमाया। राष्ट्रसंघ खड़ा खड़ा तमाशा देखता रहा; और अब सितम्बर सन् १९३९ से जब नया जर्मन युद्ध आरम्भ हुआ तो राष्ट्रसंघ साँस लेने लगा है।

परन्तु फिर भी यह मानना पड़ेगा कि राष्ट्रसंघ की स्थापना से भूमण्डल को बहुत लाभ हुआ है। राष्ट्रसंघ मनुष्य जाति के उपकार के हेतु भी बहुत से कार्य करता रहता है। उसके अधीन सर्व-राष्ट्रीय मज़दूर सम्मेलन (International Labour Association) सर्व-राष्ट्रीय-शिक्षा सम्मेलन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(International Educational Association) इत्यादि कई उपयोगी संस्थाएँ हैं, जो भूमण्डल भर के लिये सामाजिक सुधार का कार्य कर रही हैं। राष्ट्रसंघ में ब्रिटेन का बहुत बड़ा प्रभाव है, क्योंकि ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न-भिन्न "स्वतन्त्र प्रदेशों" को भी पृथक् रूप से इसके लिये प्रतिनिधि भेजने का अधिकार है। भारतवर्ष स्वतन्त्र प्रदेश नहीं है, परन्तु फिर भी उसकी महत्त्व-पूर्ण स्थिति के कारण उसको राष्ट्रसंघ में एक स्थान मिला हुआ है।

बीसवीं शताब्दी के प्रसिद्ध प्रधान मन्त्री

एसक्विथ—

जार्ज पंचम के राज्य-काल का सबसे प्रथम प्रधान मन्त्री एसक्विथ (Asquith) था। इसी के मंत्रित्व-काल में जार्ज पंचम का राज्याभिषेक हुआ और यूरोपीय महायुद्ध छिड़ा। युद्धकाल में राजनैतिक दलबन्दी का विचार छोड़ कर एसक्विथ के साथ साथ अन्य दलों के नेताओं ने भी मन्त्रि-मण्डल के साथ सहयोग करना स्वीकार कर लिया था, जिसके कारण मन्त्रि-मण्डल "जातीय मन्त्रि-मण्डल" (National Ministry) के नाम से पुकारा जाने लगा। एसक्विथ ने युद्ध-संचालन के कार्य को बड़ी कुशलता पूर्वक किया, और ब्रिटिश साम्राज्य के भिन्न भिन्न भागों से सैनिक बुला कर साम्राज्य की पूर्ण शक्ति का युद्ध में प्रयोग किया। अपनी योग्यता के कारण उसको लार्ड आक्सफ़ोर्ड की उपाधि प्रदान की गई।

लायड जार्ज—

सन् १९१६ में एसक्विथ के पश्चात् लायड जार्ज (Lloyad George) प्रधान मन्त्री हुआ। वह अपनी योग्यता का एसक्विथ के मन्त्रित्वकाल में ही परिचय दे चुका था और उस काल में वह युद्ध-सचिव (War Minister) के पद पर आरूढ़ था। प्रधान मन्त्री होने पर उसने युद्ध संचालन के लिये नये नये विभाग स्थापित किये, और पनडुब्बी नावें, हवाई जहाज़ इत्यादि काफ़ी संख्या में बनवा कर शत्रुओं के अच्छी तरह से दाँत खट्टे किये। युद्ध समाप्त होने पर वर्साई की सन्धि की धाराएँ निर्धारित करने में भी लायड जार्ज ने बड़ा प्रमुख भाग लिया। यह उसी की राजनैतिक योग्यता का परिणाम था

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कि युद्ध काल की जटिल समस्याओं का संतोषजनक निबटारा हो सका। सन् १९२२ में आयरलैंड के सिनफ़ियन दल के क्रान्तिमय आन्दोलन के काल

डेविड लायड जार्ज

में लायड जार्ज के समर्थकों की संख्या कम होने लगी, और उसको अपने पद से त्यागपत्र देना पड़ा।

बोनार ला—

लायड जार्ज के त्यागपत्र के समय से लिबरल दल की शक्ति कम होने लगी, और उसके स्थान पर कन्ज़रवेटिव दल की प्रधानता बढ़ने लगी। अतः कन्ज़रवेटिव दल का नेता बोनर ला (Bonar Law) प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ। परन्तु स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण वह अधिक समय तक शासन कार्य का संचालन न कर सका, और उसके स्थान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर कन्ज़रवेटिव दल का दूसरा नेता बाल्डविन (Baldwin) प्रधान मंत्री बनाया गया।

बोनर ला

रैमसे मैकडोनेल्ड—

हम उपर लिख चुके हैं कि देश में आर्थिक समस्याओं के बढ़ जाने के कारण एडवर्ड सप्तम के राज्य-काल में एक नये राजनैतिक दल का संगठन हुआ, जो मज़दूर दल (Labour Party) के नाम से प्रसिद्ध है। सन् १९२४ में इस दल का नेता रैमसे मैकडोनेल्ड (Ramsay Macdonald) पहली बार प्रधान मंत्री नियुक्त हुआ। उसके दल की शक्ति अभी पूरी तरह संगठित न हुई थी, अतः उसको थोड़े ही दिनों पश्चात् त्यागपत्र देना पड़ा। परन्तु १९२९ में उसको दूसरी बार प्रधान मंत्री बनने का अवसर प्राप्त हुआ। उसके इस दूसरे मंत्रित्व-काल में कोयले की खानों के मज़दूरों ने भयंकर हड़ताल

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

की, जिसके कारण देश में बड़ी खलबली मची। सन् १९३१ में मैकडोनेल्ड ने अपने मंत्रि-मण्डल में अन्य राजनैतिक दलों के सदस्यों को भी सम्मिलित

रैमसे मैकडोनेल्ड

कर लिया, और इस समय से वर्तमान जातीय मंत्रि-मण्डल (National Ministry) का आरंभ हुआ। इसी मंत्रि-मण्डल के समय में भारतीय राउन्डटेबिल कान्फ्रेन्स (Indian Round Table Conference) की बैठकें हुईं, और ब्रिटिश तथा भारतीय राजनीतिज्ञों ने मिलकर भारतीय शासन विधान का रूप निर्णय किया। सन् १९३५ में स्वास्थ्य ठीक न होने के कारण रैमसे मैकडोनेल्ड ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया।

बाल्डविन—

रैमसे मैकडोनेल्ड के त्यागपत्र देने पर बाल्डविन को प्रधान मंत्री के पद

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पर पुनः नियुक्ति हुई। इससे पहले दो बार और बाल्डविन प्रधान मंत्री रह चुका था; परन्तु उस काल में उसके मंत्रि-मण्डल में केवल कन्ज़रवेटिव दल के सदस्य सम्मिलित थे। उसके मंत्रि-मण्डल में समस्त राजनैतिक दलों का सहयोग था, और जातीय मंत्रि-मण्डल का कार्य उसी तरह से चलता रहा जिस प्रकार रैमसे मैक्डोनेल्ड के नेतृत्व में सन् १९३१

बाल्डविन

में आरंभ हुआ था। बाल्डविन के मंत्रित्व काल में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ हुईं। यह ऊपर बतलाया जा चुका है कि सम्राट जार्ज पंचम के शासन को २५ वर्ष हो जाने पर साम्राज्य के सब भागों में सन् १९३५ के मई मास में सिलवर जुबिली बड़े समारोह से मनाई गई थी। दूसरी महत्वपूर्ण घटना इटली और ऐबीसीनिया का युद्ध था। अफ्रीका के पूर्वी भाग में ऐबीसीनिया का एक स्वतन्त्र देश था। इटली के सर्वाधिकारी (Dictator) मुसोलिनी ने इस देश को इटली के साम्राज्य में सम्मिलत करने के अभिप्राय

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ने सन् १६३५ के अक्टूबर मास में उस पर चढ़ाई कर दी और मई सन् १६३६ तक उस समस्त देश पर अधिकार कर लिया। इंगलैंड ने इस समय केवल यह कार्य सफलता पूर्वक किया कि इस युद्ध की ज्वाला यूरोप के अन्य देशों तक न फैलने दी।

हम ऊपर यह भी बतला आये हैं कि २० जनवरी सन् १६३६ के दिन जार्ज पंचम परलोक सिधारे, और उनके पश्चात् उनके बड़े पुत्र एडवर्ड एलबर्ट ४१

जार्ज षष्ठ

वर्ष की आयु में राजसिंहासन पर बैठे। यह अविवाहित थे और जिस स्त्री से वे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विवाह करने की इच्छा करते थे उसके लिये पार्लियामेण्ट अपनी स्वीकृति नहीं दे सकती थी। इस विषय पर बाल्डविन से परामर्श लेकर उन्होंने १० दिसम्बर सन् १९३६ को राज्य-पद त्याग दिया और फिर वहां से फ्रान्स चले गये। कुछ दिन पश्चात उस स्त्री से विवाह कर लिया। सन् १९३९ में जर्मन युद्ध छिड़ने पर वे इंगलेंड आये और अँग्रेजी सेना में कार्य करने लगे। इनके पद त्यागने पर इनके छोटे भाई जार्ज षष्ठ राज सिंहासन पर बैठे।

नेविल चेम्बरलेन—

२८ मई सन् १९३७ को बाल्डविन ने अपने पद से त्यागपत्र दे दिया और वह पद मि० नेविल चेम्बरलेन (Neville Chamberlain) ने ग्रहण किया। यह स्वयं कन्ज़र्वेटिव दल के सदस्य हैं, परन्तु इनके मंत्रि-मण्डल में लिबरल तथा मज़दूर दल के मंत्री भी सम्मिलित हैं। अतः इनका दल पार्लियामेण्ट में राष्ट्रीय दल कहलाता है और इनका मंत्रि-मण्डल राष्ट्रीय मंत्रिमण्डल के नाम से प्रसिद्ध है।

इनके मंत्रित्व काल में इंगलैंड को एक बहुत बड़ी आपत्ति का सामना करना पड़ रहा है। जर्मनी का सर्वाधिकारी हर हिटलर साम्राज्य विस्तार का बड़ा महत्वाकांक्षी है। उसने पहले तो जैसा कि हम ऊपर बतला आये हैं, आस्ट्रिया तथा ज़ेकोस्लेविका पर अधिकार किया और फिर सितम्बर १९३९ में पोलैंड पर चढ़ाई आरंभ कर दी। प्रधान मंत्री चेम्बरलेन ने बहुत दिन तक इंगलैंड को युद्ध से दूर रखने का प्रयत्न किया, परन्तु पोलैंड की इस घटना के पश्चात उन्हें जर्मनी के विरुद्ध युद्ध छेड़ना ही पड़ा। जर्मनी ने एक मास ही के भीतर पोलैंड पर अधिकार कर लिया, और फिर वह इंगलैंड तथा फ्रान्स से लड़ने के लिये पश्चिमी मोर्चे पर आ डटा। युद्ध की छेड़ छाड़ समुद्र पर तथा वायुयानों द्वारा जारी है और देखिये आगे चलकर इस युद्ध का क्या परिणाम निकलता है।

उधर जर्मनी के मित्र रूस ने पोलैंड के कुछ भाग पर अधिकार किया और उसके पश्चात फिनलैंड पर अधिकार करने के लिये वह भरसक प्रयत्न कर रहा है। परन्तु फिनलैंड निवासी भी अपनी स्वतन्त्रता की रक्षा के लिये बड़ी वीरता से लड़ रहे हैं और अन्य देशों से भी उसे सहायता मिल रही है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Exercises.

1. Describe the political position in Europe just before the out-break of the Great War.
2. What various nations took part in the Great War? Why did they take the particular sides for which they fought?
3. What were the various theatres of the Great War? How far is it correct to say that Sea Power saved Britain in this War just as it had done on previous occasions?
4. What important settlements were made by the Treaty of Versailles?
5. Describe the ideals for which the League of Nations stands. Give a brief account of its achievements and failures.
6. What important results followed the Great European War?
7. Give a short account of the career and ministry of Lloyad George.
8. Write short notes on :—

   House af Windsor, The Allies, Marshall Foch, Emden, Battle of Jutland, President Wilson, Ramsy Macdonald and Baldwin.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इकतालीसवाँ परिच्छेद

वर्तमान शासन-प्रणाली

सन् १२६५	साइमन की पार्लियामेण्ट
,, १२९५	आदर्श पार्लियामेण्ट की बैठक
,, १३४१	लोक-सभा तथा लार्ड-सभा का पृथक् होना
,, १६८८	गौरव-पूर्ण राज्य-क्रान्ति
,, १६९४	त्रि वार्षिक नियम
,, १७१६	सप्त वार्षिक नियम
,, १९११	पार्लियामेण्ट ऐक्ट

राजाओं के अधिकार—

प्राचीन काल में इङ्गलैंड के समस्त शासन-विधान पर राजा ही का पूर्ण अधिकार था। नियम बनाना, दण्ड देना, न्याय करना, कर लगाना, युद्ध लड़ना इत्यादि सब राजा ही का काम माना जाता था। वह अपनी सहायता के लिये मन्त्री तथा प्रधान कर्मचारी नियत करता था, परन्तु इन सब को राजा ही की आज्ञा में रहना पड़ता था, और बिना उसकी अनुमति के वे स्वयं कुछ भी न कर सकते थे। जनता के अधिकार क्या हैं, इनका कभी विशेष रूप से निर्णय न हुआ, और राजा जो चाहते थे मनमानी करते थे। इंगलैंड के राजनैतिक इतिहास का सरल सारांश यह है कि राजा के यह सब अधिकार धीरे धीरे छिनते गये और शासन-कार्य की बागडोर जनता के प्रतिनिधियों के हाथों में आती गई।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ऐंग्लों-सेक्सन राजाओं के शासन काल में विटान सभा (Witan) राजा को शासन-कार्य में सहायता देती थी, और राजा पूर्णतया स्वेच्छाचारी नहीं था। परन्तु नारमन राज्य स्थापित होने पर राजाओं ने निरंकुश शासन आरम्भ किया। कहीं राजा जान की शासन काल में मेगनाकार्टा (Magna Carta) द्वारा राजाओं के अधिकारों को सीमित करने का प्रयत्न किया गया। लंकास्टर वंश के राजा तो पार्लियामेण्ट की आज्ञा का ही पालन करते थे। परन्तु ग्रह-युद्ध (Wars of the Roses) काल में पार्लियामेण्ट की शक्ति पूर्णतया क्षीण हो गई, और उसके पश्चात् ट्यूडर वंशीय शासकों को स्वेच्छाचारी राज्य स्थापित करने का अवसर प्राप्त हुआ। पार्लियामेण्ट पूर्णतया उनके अधीन थी, और कोर्ट आफ स्टार चेम्बर तथा हाई कमीशन कोर्ट न्यायालय पूर्ण रूप से उनकी निरंकुशता के उदाहरण थे। स्टुअर्ट काल में राजाओं तथा पार्लियामेण्ट के मध्य अधिकारों का संघर्ष चला और अन्त में पार्लियामेण्ट की विजय हुई। सन् १६८६ की गौरव पूर्ण क्रान्ति के पश्चात् राजाओं की निरंकुशता का काल समाप्त हुआ और देश में नियमानुमोदित शासन की स्थापना हुई। हनोवर वंश का राज्य स्थापित होते ही शासन कार्य पर मन्त्रियों का अधिकार बढ़ता चला गया और राजा का काम केवल मन्त्रियों के कार्य में अनुमति देना रह गया। परन्तु शासन अब भी राजा ही के नाम से होता है, और वास्तव में शासन-नीति इत्यादि सब पार्लियामेण्ट निर्धारित करती है। राजा का केवल नाम रहता है और शासन-विधान पर आजकल वास्तविक अधिकार प्रधान मन्त्री का होता है, जो अपने सहकारियों सहित पार्लियामेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी है।

सम्राट् के विशेष अधिकार—

इस प्रकार शासन-संचालन से राजा का अब कोई संबंध नहीं रहा है, परन्तु फिर भी उसके कुछ विशेष अधिकार हैं। पार्लियामेण्ट के वादविवाद तथा मंत्रि-मण्डल के समस्त कार्य की राजा को बराबर सूचना दी जाती है। राज-नियमों पर भी उसी के हस्ताक्षर होते हैं, यद्यपि प्रथा ऐसी पड़ गई है कि पार्लियामेण्ट के बनाये हुए नियमों पर राजा सदा हस्ताक्षर कर देता है। देश के सिक्के सब राजा ही के नाम से चलते हैं, और उपाधि इत्यादि सब

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

राजा ही के नाम से प्रदान की जाती हैं। राज्य के सब कर्मचारी अब भी राजा ही के नौकर कहलाते हैं, यद्यपि उनकी नियुक्ति मन्त्रियों के परामर्शानुसार ही की जाती है। राजा का व्यक्तिगत रूप से भी बड़ा प्रभाव पड़ता है, और उसके अनुभव तथा योग्यता से मन्त्रि-मण्डल वाले सदा सहायता लेते हैं। यदि ब्रिटिश साम्राज्य में राजा न होता तो उसके भिन्न-भिन्न भागों के पारस्परिक संघठन में बड़ी कठिनाई पड़ती। प्रधान-मन्त्री के हाथ में शासन केवल कुछ काल के लिये आता है, जिसके कारण उसके प्रति समस्त साम्राज्य की भक्ति होना असंभव है, परन्तु राजा के नाम में कुछ ऐसा आकर्षण होता है कि उसके कारण समस्त प्रजा की भक्ति बड़ी सुगमता से प्राप्त हो सकती है। भाग्यवश ब्रिटेन के पिछले तीन राजा विक्टोरिया, एडवर्ड सप्तम तथा जार्ज पंचम ऐसे योग्य तथा नीति निपुण हुए हैं कि इनके कारण जनता की श्रद्धा तथा भक्ति में कोई कमी नहीं आई, और इनका व्यक्तिगत सम्मान इतना बढ़ा हुआ रहा है कि उससे देश तथा विदेश सब ओर बड़ा अच्छा प्रभाव पड़ सका है। विक्टोरिया के प्रधान-मन्त्री उससे जटिल राजनैतिक समस्याओं पर परामर्श करते थे। एडवर्ड सप्तम ने अपने व्यक्तिगत प्रभाव से कई बार इँगलैंड को युद्ध से बचाया, और जार्ज पंचम के सम्मान का केवल इतना प्रमाण काफ़ी है कि कुछ वर्ष हुए जब वे रोग-ग्रस्त थे, तो सारे ब्रिटिश साम्राज्य में कोलाहल मच गया था, और प्रजा ने उनके स्वस्थ होने के लिये हृदय से प्रार्थना की थी।

पार्लियामेण्ट—माध्यमिक काल—

इंगलैंड की पार्लियामेण्ट का रूप-निर्णय तेरहवीं शताब्दी में हुआ। पहले केवल बड़े ज़मीदार तथा बड़े बिशप ही पार्लियामेण्ट में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रित किये जाते थे। परन्तु सन् १२६५ में साइमन डी-माँटफोर्ट ने यह प्रथा चलाई कि जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधियों को भी पार्लियामेण्ट में स्थान मिलना चाहिये। उसने प्रत्येक नगर तथा प्रत्येक काउंटी से प्रतिनिधि आमंत्रित किये और इस प्रकार उसने साधारण जनता के प्रतिनिधियों से भी शासन कार्य तथा कर लगाने के सम्बन्ध में परामर्श लेने की प्रथा प्रचलित की। साइमन ने इतना अवश्य किया था कि केवल अपने ही पक्ष

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

के लोगों को आमंत्रित किया। आगे चलकर राजा एडवर्ड प्रथम ने इस प्रथा को और भी दृढ़ कर दिया, और उसकी बुलाई हुई सन् १२६५ की आदर्श पार्लियामेण्ट (Model Parliament) में ज़मीदार, विशप तथा जनता के प्रतिनिधि सब सम्मिलित हुए थे। कुछ काल तक पार्लियामेण्ट के सब सदस्य एक ही स्थान पर सम्मिलित होते थे, परन्तु १३४१ में पार्लियामेण्ट दो भागों में विभक्त हो गई। ज़मीदारों तथा विशपों वाला भाग लार्ड-सभा (House of Lords) और जनता के प्रतिनिधियों वाला भाग लोक-सभा (House of Commons) के नाम से प्रसिद्ध हुआ। उस समय की पार्लियामेण्ट को बहुत कम अधिकार प्राप्त थे। राजाओं को युद्ध आदि के कारण जब कभी नये कर लगाने की आवश्यकता होती थी तो वे पार्लियामेण्ट को बुलाते थे। पार्लियामेण्ट को जब कभी कोई नये राजनियम बनवाने होते थे, वह प्रार्थना-पत्र के रूप में राजा के सम्मुख पेश किये जाते थे। शक्तिशाली राजा चाहते तो पार्लियामेण्ट की स्वीकृति बिना ही प्रजा से धन वसूल कर लेते थे। परन्तु कर लगाने, नये राजनियम बनाने और मंत्रियों को पार्लियामेण्ट के प्रति उत्तरदायी बनाने का प्रयत्न जारी था। पार्लियामेण्ट ने राजाओं के मंत्रियों पर मुक़द्दमा चलाने (Impeachment) का अधिकार भी प्राप्त कर लिया था। एडवर्ड द्वितीय तथा रिचार्ड द्वितीय को पदच्युत करके पार्लियामेण्ट ने अपनी शक्ति का भी परिचय दिया था। परन्तु गृह-युद्ध (Wars of the Roses) काल में बैरनों ने आपस में लड़कर पार्लियामेण्ट को शक्तिहीन कर दिया और राजाओं को अपनी शक्ति बढ़ाने का अवसर प्राप्त हुआ।

पार्लियामेण्ट–आधुनिक काल—

ट्यूडर काल में शासकों ने निरंकुश शासन किया और पार्लियामेण्ट उनके हाथ में कठपुतली के समान नाचती थी। इसके कई कारण थे। रोज़ेज के युद्ध-काल में बैरन अधिकांश संख्या में लड़ मर कर समाप्त हो चुके थे। इन्हीं लोगों की पार्लियामेण्ट में प्रधानता थी। पार्लियामेण्ट के नये सदस्यों को पार्लियामेण्ट के कार्य-क्रम का अनुभव न था और न वे अपने अधिकारों को पहचानते थे। वे राजाओं की आज्ञा का पालन करना ही अपना कर्त्तव्य

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

समझते थे ! दूसरे ट्यूडर शासक सच्चे देश हितैषी थे और जो कुछ भी करते थे देश के हित के ही लिये करते थे। देश में सुख शान्ति स्थापित करना वे अपना मुख्य कर्त्तव्य समझते थे ; अतः पार्लियामेण्ट भी उनका विरोध करना उचित नहीं समझती थी। ट्यूडर काल के अन्तिम दिनों तक देश में राष्ट्रीयता का भाव उत्पन्न हो चुका था जिसने स्टुअर्ट काल में जाकर राजाओं का जीवन दुखमय कर दिया।

पार्लियामेण्ट ने वास्तविक शक्ति स्टुअर्ट काल में प्राप्त की। इसके लिये राजा तथा पार्लियामेण्ट में पूरी शताब्दी भर संघर्ष चलता रहा, इसी के कारण चार्ल्स प्रथम की बलि चढ़ाई गई और जेम्स द्वितीय को देश निकाला दिया गया। अन्त में इस संघर्ष में पार्लियामेण्ट ही की विजय हुई, और गौरव पूर्ण क्रान्ति (Glorious Revolution) के पश्चात् राजा के समस्त अधिकार धीरे-धीरे पार्लियामेण्ट ने अपने हाथों में ले लिये। हनोवर काल के आरम्भ होते ही पार्लियामेण्ट ने देश के शासन विधान में प्रधान स्थान प्राप्त किया। ब्रिटेन का वर्तमान शासन "जनता का शासन" (Democracy) इसी लिये कहलाता है कि शासन की सारी बागडोर पार्लियामेण्ट के हाथों में है, जिसमें जनता के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं।

लार्ड-सभा —

पार्लियामेण्ट की लार्ड-सभा में कुलीन वंशों के लोग (Nobles) तथा बिशप (Bishops) सम्मिलित होते हैं। इंगलैंड के बहुत से कुलीन वंशों को पैतृक उपाधियाँ प्राप्त हैं, जिनके कारण इन कुलों के सबसे बड़े पुत्र वह उपाधि ग्रहण करने तथा लार्ड-सभा में सम्मिलित होने के अधिकारी हो जाते हैं। इसी प्रकार स्काटलैंड तथा उत्तरी आयरलैंड में भी बहुत से कुलीन घराने हैं, परन्तु इन भागों से केवल एक नियत संख्या लार्ड-सभा में सम्मिलित होने के लिये निमन्त्रित की जाती है। राजवंश के लोग भी लार्ड-सभा के सदस्य होते हैं। इसके अतिरिक्त इंगलैंड तथा उत्तरी आयरलैंड के चर्च के बड़े बिशपों को भी लार्ड-सभा के सदस्य होने का अधिकार प्राप्त है, परन्तु स्काटलैंड के चर्च में पादरी न होने के कारण वहाँ के चर्च का लार्ड-सभा में कोई स्थान नहीं है। लार्ड-सभा का प्रधान लार्ड चांसलर (Lord

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

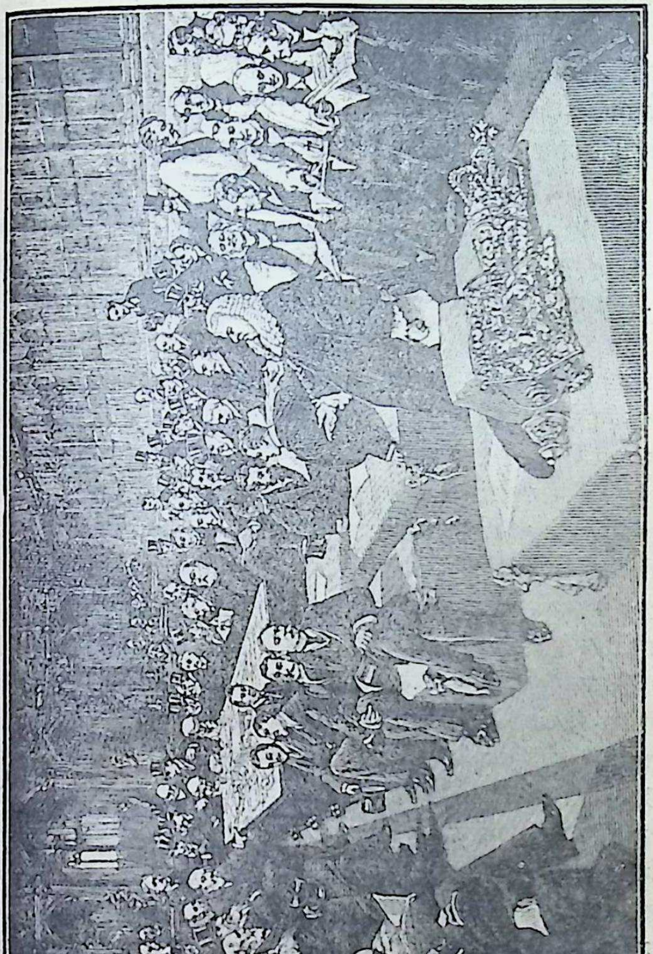

लार्ड-सभा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

Chancellor) कहलाता है, और उसके सदस्यों की संख्या लगभग ७५० है। लार्ड-सभा ब्रिटिश राज्य का सब से बड़ा न्यायालय भी माना जाता है, और अन्तिम अपीलें इसी के सम्मुख पेश होती हैं। इस कार्य के लिये लार्ड-सभा की एक प्रीवी कौंसिल (Privy Council) बनी हुई है, जिसकी बैठकों में बड़े अनुभवी न्यायाधीश न्याय करते हैं।

लोक सभा—

पार्लियामेण्ट का दूसरा भाग अर्थात् लोक-सभा, देश का प्रतिनिधि-मण्डल है। उसमें आजकल ६१५ सदस्य होते हैं, जिनमें ४६२ इंगलैंड से, ३६ वेल्स से, ७४ स्काटलैंड से और १३ उत्तरी आयरलैंड से चुने जाते हैं। पहले लोक-सभा के निर्वाचन में वोट देने का केवल पूँजी वालों ही को अधिकार था, परन्तु जैसा ऊपर लिखा जा चुका है, वोट देने का अधिकार धीरे-धीरे बढ़ाया गया, और आजकल २१ वर्ष से अधिक आयु के प्रत्येक स्त्री-पुरुष को वोट देने का अधिकार प्राप्त है। केवल पागल, राजापराधी, दिवालिये इत्यादि इस अधिकार से वंचित हैं, क्योंकि उनके विषय में यह विश्वास करना कठिन है कि वे अपने वोट देने के अधिकार का उचित प्रयोग कर सकेंगे। सन् १६११ के नियम के अनुसार पार्लियामेण्ट की अवधि पाँच वर्ष की गई है, और उसके सदस्यों को ४०० पाउंड वार्षिक वेतन भी मिलने लगा जो बढ़ते बढ़ते ७५० पाउंड हो गया है। लोक-सभा का प्रधान स्पीकर (Speaker) कहलाता है, और सभा के कार्यों के नियमानुसार संचालन का भार उसी पर होता है। लोक-सभा में आजकल तीन राजनैतिक दल हैं, एक कन्ज़रवेटिव (Conservative) जिसका मुख्य उद्देश्य यह है कि प्रचलित शासन-प्रणाली में यथासंभव कोई परिवर्तन न किया जाय, दूसरा लिबरल (Liberal) जिसका लक्ष्य यह है कि सुधारों के लिये सदा तैयार रहना चाहिये, और तीसरा लेबर (Labour) जिसका मुख्य उद्देश्य मज़दूरों के अधिकारों की रक्षा करना है। लोक-सभा में जिस राजनैतिक दल की संख्या अधिक होती है उसी के हाथों में मंत्रि-मण्डल तथा शासन के संचालन का कार्य सौंपा जाता है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोक-सभा

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

लोक-सभा तथा लार्ड-सभा का संबंध—

सन् १९११ से पहले लोक-सभा तथा लार्ड-सभा को समान अधिकार प्राप्त थे, परन्तु इस वर्ष के पार्लियामेण्ट-नियम (Parliament Act of 1911) के अनुसार लोक-सभा की प्रधानता बढ़ गई है। ऐसा होना उचित भी है, क्योंकि लोक-सभा ही में देश के प्रतिनिधि सम्मिलित होते हैं, और वास्तव में वही जातीय सभा है। धन संबंधी प्रश्नों पर लोक-सभा ही में सारा वाद-विवाद होता है; और लार्ड-सभा में इस प्रकार के प्रस्ताव केवल सूचना के लिये भेजे जाते हैं। लार्ड-सभा वाले इन आर्थिक प्रस्तावों में कोई संशोधन नहीं कर सकते, और वहाँ इन पर कोई वादविवाद भी नहीं होता। इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार के प्रस्तावों में भी लोक-सभा ही की प्रधानता है। जिस नियम को लोक-सभा तीन बार पास कर देती है, यदि उसको लार्ड-सभा अस्वीकृत भी करे, तो भी वह राजा के हस्ताक्षर होने पर राज-नियम बन सकता है। मंत्रि-मण्डल पर भी वास्तविक दबाव लोक-सभा ही का है, क्योंकि लोक-सभा ही में समर्थकों की संख्या अधिक होने के कारण प्रधान मंत्री की नियुक्ति होती है, और लोक-सभा ही के अविश्वास का प्रस्ताव पास कर देने पर प्रधान मंत्री तथा उसके सहकारियों को अपने पदों से त्यागपत्र देना पड़ता है।

राज-नियम बनने की प्रणाली—

राज-नियम बनने का प्रस्ताव पार्लियामेण्ट के किसी भी भाग में उपस्थित किया जा सकता है, परन्तु धन संबंधी प्रस्ताव पहले लोक-सभा ही में पेश किये जाते हैं। इन प्रस्तावों पर तीन बार विचार (Three Readings) किया जाता है। पहली बार प्रस्ताव पढ़ कर सुना दिया जाता है, और उसके छपने की आज्ञा दे दी जाती है। दूसरी बार प्रस्ताव के मूल सिद्धान्तों पर वाद-विवाद होता है, और काट-छाँट करने के पश्चात् कुछ सदस्यों की एक कमेटी नियत कर दी जाती है जो प्रस्ताव की धाराओं का रूप निर्धारित करती है। कमेटी से तैयार होकर प्रस्ताव तीसरी बार पूरी सभा में फिर पेश किया जाता है। इस बार उसकी प्रत्येक धारा पर अलग-अलग विचार किया जाता है, और जिन धाराओं में संशोधन की आवश्यकता होती है, उनमें आव-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

श्यकतानुसार परिवर्तन भी कर दिया जाता है। तीसरी बार स्वीकृत होने पर

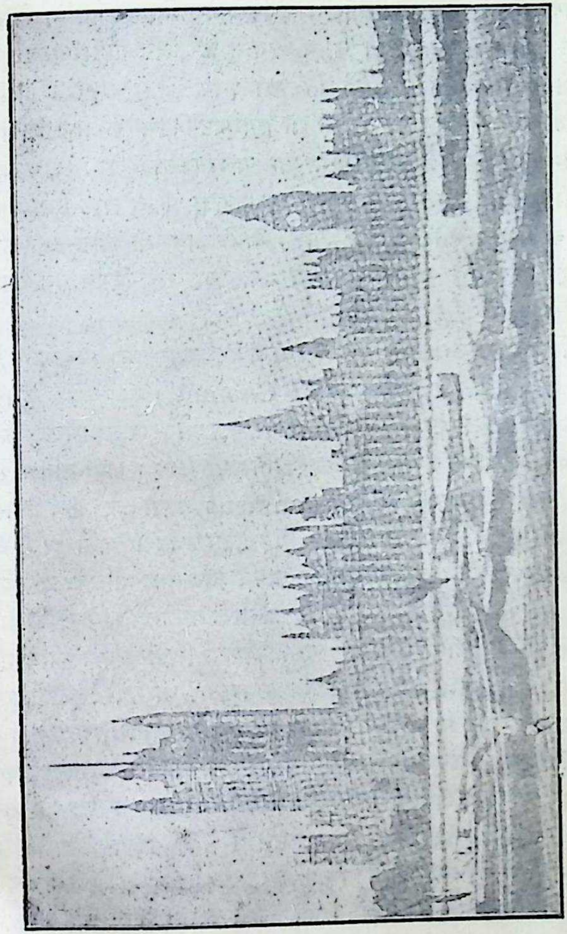

पार्लियामेण्ट हाउस

प्रस्ताव उस सभा से पास किया हुआ मान लिया जाता है, और उसको पार्लियामेण्ट की दूसरी सभा में भेज दिया जाता है, जहाँ उस पर फिर उसी

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकार तीन बार विचार होता है। यदि वहाँ भी वह प्रस्ताव पास हुआ, तो इसके पश्चात् उसे राजा के हस्ताक्षरों के लिये भेज दिया जाता है, जिसके बाद वह राज-नियम बन जाता है। नियम बनाने के लिये साधारणतया पार्लियामेण्ट की दोनों सभाओं की स्वीकृति आवश्यक है; परन्तु जैसा कि ऊपर लिखा जा चुका है, सन् १६११ के पार्लियामेण्ट-नियम के अनुसार लोक-सभा की प्रधानता बढ़ गई है। लार्ड-सभा का पास किया हुआ प्रस्ताव लोक-सभा में अस्वीकृत होने पर राज-नियम नहीं बन सकता, परन्तु लोक-सभा यदि किसी प्रस्ताव को बराबर तीन बार पास किये जाय, तो लार्ड-सभा का विरोध होते हुए भी राजा के हस्ताक्षर होने के पश्चात् वह राज-नियम बन सकता है।

मंत्रि-मण्डल—

पार्लियामेण्ट का काम नियम बनाना है, और इन नियमों के अनुसार शासन-संचालन करना मंत्रि-मण्डल (Cabinet) का काम है। प्राचीन काल के मंत्री केवल राजा के अधीन होते थे, और पार्लियामेण्ट को उनके कार्यों की देख-भाल करने का कोई अधिकार न था। माध्यमिक काल की पार्लियामेण्टों ने अभियोग (Impeachment) चला कर मंत्रियों पर अधिकार जमाने की चेष्टा की, और इसके पश्चात् सत्रहवीं शताब्दी में यह स्पष्ट रूप से निश्चित हो गया कि राज-मंत्री अपने कार्य तथा नीति के लिये पार्लियामेण्ट के सम्मुख उत्तरदायी है। इसके अतिरिक्त अठारहवीं शताब्दी के आरंभ काल तक मंत्रियों की नियुक्ति में किसी विशेष सिद्धान्त का ध्यान न रक्खा जाता था, केवल राजा जिनको योग्य समझता था मंत्री बना लेता था। स्टुअर्ट शासन-काल के अन्तिम भाग में, जब राजनैतिक दलों का संगठन आरंभ हुआ, उस समय यह प्रश्न उपस्थित हुआ कि किस दल वालों को मंत्री बनाया जाय। विलियम तृतीय ने इसी में सुभीता समझा कि सब मंत्री एक ही राजनैतिक दल के हों, जिससे उनकी नीति में कोई मतभेद न होने पावे। तब से यही प्रथा चली आती है कि एक ही राजनैतिक दल में से मंत्रियों की नियुक्ति होती है; और मंत्रि-मण्डल को प्रत्येक कार्य्य में पार्लियामेण्ट की लोक-सभा से काम पड़ने के कारण दूसरी प्रथा यह चल पड़ी कि लोक-सभा में जिस दल की अधिक संख्या हो उसी दल वालों को मंत्रि-

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मण्डल में स्थान दिया जाता है। परन्तु कुछ दिनों से इस प्रथा में परिवर्तन होने लगा है कि आवश्यकतानुसार मंत्रि-मण्डल में अन्य दलों के नेतागण भी सम्मिलित कर लिए जाते हैं। ऐसे मंत्रि-मण्डल का नाम राष्ट्रीय मंत्रि-मण्डल (National Ministery) पड़ गया है, यद्यपि इस समय तो लोक-सभा में कंज़रवेटिवों ही की प्रधानता है।

पहले स्वयं राजा मंत्रि-मण्डल का प्रधान होता था, परन्तु हनोवर शासन स्थापन होने के समय से यह प्रथा बदल गई। जार्ज प्रथम ने अँग्रेज़ी भाषा न जानने के कारण मंत्रि-मण्डल की बैठकों में जाना बन्द कर दिया, और ऐसी अवस्था में मंत्रियों ही में से एक प्रधान-मंत्री (Prime Minister) होकर मंत्रि-मण्डल का नेता होने लगा। प्रधान-मंत्री का प्रभाव तथा अधिकार धीरे-धीरे बढ़ता गया, और अन्त में उसने इतनी शक्ति प्राप्त करली कि अपने सहकारी मंत्रियों की नियुक्ति भी उसी के हाथों में आगई। आजकल लोक-सभा में जिस राजनैतिक दल की प्रधानता होती है, उसी दल का नेता प्रधान-मंत्री बनाया जाता है और अपने सहकारी मंत्रियों का चुनाव पूर्णतया उसी पर छोड़ दिया जाता है। इस प्रकार मंत्रि-मण्डल के संगठन में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती; और प्रधान-मंत्री जो नीति निर्धारित करता है, उसी का उसके सहकारी-मंत्री सहर्ष अवलम्बन करते हैं।

प्रधान-मंत्री अपने पद पर तभी तक रह सकता है, जब तक लोक-सभा में उसके दल की प्रधानता बनी रहे। यदि उसके समर्थकों की संख्या कम हो जावे, या मंत्रि-मण्डल की ओर से पेश किया हुआ कोई प्रस्ताव लोक-सभा अस्वीकृत करदे, तो ऐसी स्थिति में सारा मंत्रि-मण्डल अपने पद से त्याग-पत्र दे देता है; और जिस नये दल की प्रधानता स्थापित हो गई हो उसका नेता प्रधान-मंत्री बनकर अपना नया मंत्रि-मण्डल बनाता है। इस प्रकार मंत्रि-मण्डल तथा लोक-सभा की नीति में कभी कोई अन्तर नहीं होने पाता; क्योंकि मतभेद होते ही मंत्रि-मण्डल बदल जाता है।

Exercises.

1. Explain the position of the British Crown in the Modern British Constitution.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. Describe the Constitution of the House of Lords, and point out its powers.
3. How is the House of Commons constituted, and what special privileges does it enjoy ?
4. Describe the relation between the two Houses of Parliament, and explain the significance of the Parliament Act of 1911.
5. Explain fully the various stages through which a bill passes before becoming an act.
6. Describe the working of "Cabinet Government," and explain the special features of the British Cabinet.
7. What is the position of the Prime Minister in the British Constitution, and what special responsibilities are attached to his office ?

———

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

House of Hanover

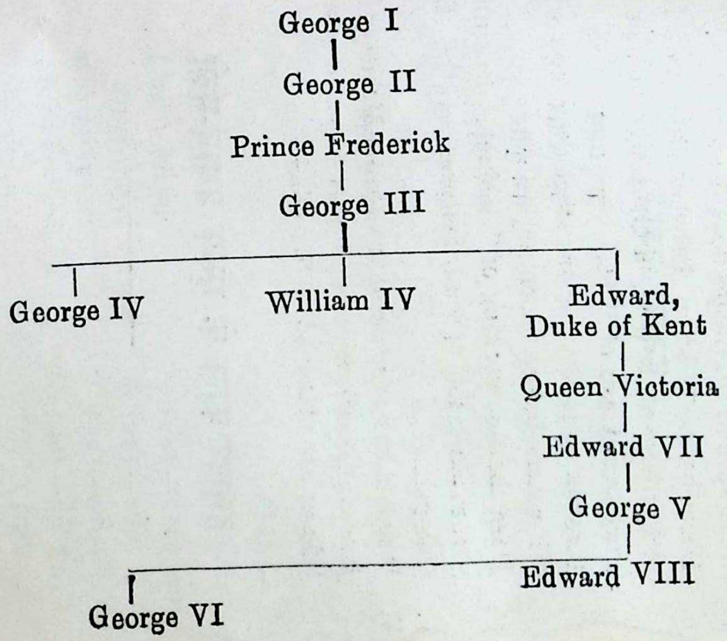

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

हनोवर वंश

सन् १७१४—१७२७	जार्ज प्रथम
,, १७२७—१७६०	जार्ज द्वितीय
,, १७६०—१८२०	जार्ज तृतीय
,, १८२०—१८३०	जार्ज चतुथ
,, १८३०—१८३७	विलियम चतुर्थ
,, १८३७—१६०१	विक्टोरिया
,, १६०१—१६१०	एडवर्ड सप्तम
,, १६१०—१६३६	जार्ज पंचम
,, १६३६	एडवर्ड अष्टम
,, १६३६	जार्ज षष्ठ

हनोवर काल के मुख्य प्रधान-मंत्री

सन् १७२१—१७४२	वालपोल (विग)
,, १७४४—१७५४	पेल्हम (विग)
,, १७५७—१७६१	पिट-न्यूकैसेल (विग)
,, १७७०—१७८२	लार्ड नार्थ (टोरी)
,, १७८३	फ़ाक्स और नार्थ
,, १७८३—१८०१ ,, १८०३—१८०६	छोटा पिट (टोरी)
,, १८२७	केनिंग (टोरी)
,, १८२७—१८३०	वेलिंगटन (टोरी)
,, १८३०—१८३४	ग्रे (विग)

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सन् १८३४—१८४१	मेलवोर्न (विग)
,, १८४१—१८४६	पील (कन्ज़रवेटिव)
,, १८४६—१८५२	लार्ड जान रसेल (लिबरल)
,, १८५२	लार्ड डरबी (कन्ज़रवेटिव)
,, १८५२—१८५५	लार्ड अबरडीन (लिबरल)
,, १८५५—१८५८ } ,, १८५६—१८६५ }	पामर्सटन (लिबरल)
,, १८६६—१८६८	लार्ड डरबी (कन्ज़रवेटिव)
,, १८६८—१८७४	ग्लेडसटन (लिबरल)
,, १८७४—१८८०	डिज़रायले (कन्ज़रवेटिव)
,, १८८०—१८८५	ग्लेडसटन (द्वितीय बार)
,, १८८५—१८८६	सैलिसबरी (कन्ज़रवेटिव)
,, १८८६	ग्लेडसटन (तृतीय बार)
,, १८८६—१८९२	सैलिसबरी (कन्ज़रवेटिव)
,, १८९२—१८९५	ग्लेडसटन तथा रोज़बरी (लिबरल)
,, १८९५—१९०१	सैलिसबरी (द्वितीय बार)
,, १९०२—१९०५	बालफ़ोर (कन्ज़रवेटिव)
,, १९०५—१९०८	हेनरी कैम्पबेल-बैनरमैन (लिबरल)
,, १९०८—१९१७	एसक्विथ (लिबरल)
,, १९१७—१९२२	लायड जार्ज (लबरल)
,, १९२२—१९२३	बोनर ला (कन्ज़रवेटिव)
,, १९२३—१९२४	बाल्डविन (कन्ज़रवेटिव)
,, १९२४	रैमसे मैकडोनेल्ड (मज़दूर दल)
,, १९२५—१९२९	बाल्डविन (द्वितीय बार)
,, १९२९—१९३५	रैमसे मैकडोनेल्ड (द्वितीय बार)
,, १९३५—१९३७	बाल्डविन (तृतीय बार)
,, १९३७ से	नेविल चेम्बरलेन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

U. P. HIGH SCHOOL PAPERS.

HANOVERIAN PERIOD.

1925.

1. What circumstances led to the loss of the American Colonies?
2. Narrate the story of the struggle between Great Britain and Nepoleon.
3. Write a short account of the development of the British Empire in the nineteenth century.

1926.

1. Why did England take part in the Seven Years War? What were the results of the war?
2. Describe the effect of the Napoleonic wars on England.

1927.

1. What did England gain by the Treaty of Paris (1763)?
2. What were the "Reform Acts." What changes did the Reform Act of 1832 make in the British constitution?

1928.

1. Mention the causes and results of the war of American Independence.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

2. What do you know of the Industrial Revolution?
3. Sketch the career of Pitt the Younger. Why is he regarded as one of the greatest statesmen that England has produced ?
4. What changes were effected by the Second and Third Reform Acts ?
5. Give a short account of the Chartist movement and the causes of its failure.
6. Describe the foreign policy of Palmerston.

1929.

1. Briefly narrate the causes of the Seven Years' War and its result.
2. Narrate the circumstances which led to the passing of the First Reform Act. State its provisions and their effect on the constitution of England.
3. What are the chief dominions and colonies of the British Empire ? Are all they alike ? Describe the relations between the mother country and the dominions.
4. Trace briefly the relations between England and Ireland in the 19th century.
5. Sketch the career of Sir Robert Walpole and mention the causes of his fall.

1930.

1. Trace the main stages in the growth of England as a great sea power. What causes have contributed to this result ?
2. Who were the Whigs and Tories ? How did they come into existence ? Describe the position of the Whigs under George I.
3. What were the difficulties, social and economic, caused by the Napoleonic Wars ? How did Parliament try to meet them ?
4. Describe the career and policy of Gladstone.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1931.

1. What did England gain by the Treaties of Utrecht (1713) and Paris (1763) ?
2. Sketch the career of Willim Pitt the Elder (Lord Chatham).
3. Describe some of the important scientific discoveries and machanical inventions of the nineteenth century.
4. Trace the growth of responsible Government in the British Dominions.
5. Sketch the history of the 'Home Rule' movement in Ireland.

1932.

1. Who were the Whigs and the Tories? How did these parties come to be formed ? What were their differences in regard to (*a*) home affairs and (*b*) foreign policy between 1680 and 1760.
2. Give a brief sketch of the career of Sir Robert Walpole as a minister. What do we mean when we call him the *first* Prime Minister of England?
3. Describe the principal features of the Industrial Revolution.
4. Why did the American colonies of Great Britain issue a Declaration of Independence in 1776 ? How was this quarrel ultimately settled.
5. Why had constitutional reforms become necessary in Great Britain in the 19th century ? Describe the various measures by which reforms were effected in the 19th century ?
6. Why was England generally hostile to Russia in the 19th century ?
   Why and how did they make up their differences?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1933.

1. Give a sketch of the career of William Pitt Earl of Chatham and point out his services to England.
2. What was the condition of the industrial workers in England after 1815? How was their condition improved?
3. Compare and contrast the domestic and foreign policies of Gladstone and Disraeli?
4. Give a brief sketch of the relations of Great Britain and Germany between 1870 and 1914.
5. Why is Lloyad George regarded as one of the best Prime Ministers of England?

1934.

1. Give an account of the career and achievements of William Pitt, the Younger.
2. What were the aims of Napoleon, and how were they frustrated by England?
3. Trace the growth of the British Empire during the nineteenth century.
4. What do you know about the Irish Home Rule Movement? Give briefly its history in the nineteenth century.

1935.

1. State the causes of the revolt of the American Colonies of England and the reasons for its success.
2. Give a sketch of the political career of Robert Walpole.
3. Describe the main provisions of Reform Acts 1832, 1867, 1884—85.
4. What were the principal differences between the Liberal and Conservative parties during the latter half of the nineteenth century.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1936.

1. Write a brief account of Industrial Revolution, and point out the principal changes introduced by it.
2. Sketch the career of the Younger Pitt.
3. Trace the course of events which led England to the Great War of 1914.

1937.

1. Who were Jacobites ? Describe the efforts made by them to capture the English throne.
2. Give an account of the foreign policy of Lord Palmerston.
3. What were the chief defects in the system of Parliamentary representation in the beginning of the nineteenth century ? How and when were they removed ?

1938.

1. Describe how America became independent. How far was George III responsible for this ?
2. Describe the career and character of Robert Walpole, laying special stress upon his foreign policy.
3. What do you understand by cabinet government ? Trace its growth in England.

1939.

1. Describe the career of William Pitt the Elder, and estimate the importance of his work.
2. Give a brief account of England's struggle with Napoleon, and mention the causes of her success.
3. What were the causes which led to the pass[age] of the Reform Act of 1832 ? What were [its] chief provisions ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

RAJPUTANA HIGH SCHOOL PAPERS.

1931.

1. Give the main features of the Parliamentary Reforms in England in the 19th century.
2. Sketch the career of Sir Robert Walpole laying special stress upon his Home Policy.
3. What was the Industrial Revolution? Describe briefly the expansion of Commerce and Industry in the 19th century.
4. Describe the career and policy of William Pitt—the Great Commoner.
5. Describe Gladstone's Irish Policy.

1932.

I. Sketch the causes and results of the American War of Independence.
2. What changes were effected by the Second and Third Reform Acts?
3. What do you know of the domestic policy o Sir Robert Peel?
4. Why did England wage war against Napoleon Account for her success.
5. Trace the growth of the Party Sys England.

1933.

1. Describe the causes and effects of the Seven Years' War.
2. Give a brief account of the changes brought about by the Industrial Revolution in England.
3. What were the chief grievances of the Irish after the Union? How did Mr. Gladstone attempt to remove them?
4. Describe briefly the policy of England towards her colonies in the 19th century.

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

5. Give a short account of the various Reform Acts passed in the 19th century.

1934.

1. Describe briefly the causes and results of the Seven Years' War.
2. Give your estimate of the character and policy of Pitt, the Younger.
3. Describe briefly the colonial expansion of England in the 19th century.

1935.

1. Give a brief sketch of the career of Sir Robert Walpole, and point out his services to England.
2. What made the American Colonies of Great Britain issue a Declaration of Independence in 1776? How was the quarrel ultimately settled?
3. Describe the important Parliamentary reforms of the nineteenth century.

1936.

…etch the career of Chatham with special reference to the part he played in the Seven Years' War.
2. …ive an outline of the struggle between England …d Napoleon, and indicate its main effects.
3. Explain the chief provisions of the first Reform Act.
What were the grievances of Ireland in the nineteenth century? How far did Gladstone remove them?

1937.

1. Give a short account of the causes and results of the Seven Years' War.
2. What do you know of the Industrial Revolution? What were its effects?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

3. Sketch the career of Sir Robert Peel, and point out his services to England.

1938

1. Sketch the career of Sir Robert Walpole, and point out his services to England
2. What led to the War of American Independence ? What were its effects.
3. Who, in your opinion, was the best Prime Minister of England in the 19th century ? Give reasons

1939.

1. Why is Pitt the Elder famous in English history?
2. Why did England go to war against Napoleon ? Mention the principal causes of her success.
3. What do you know of the Industrial Revolution?
4. Give a short account of the Anti-Corn law movement.

C. P. HIGH SCHOOL CERTIFICATE EXAMINATION PAPER I.

1931

1. Why did the power of the Crown increase the Tudors.
2. Explain t... ses of the War of American Indep... nd account for the failure of ...

G... Wha... the be... What... Beaconsf...

...auses of distress in England at ... the nineteenth century ?

...ou know of Disraeli (Earl of ...) ?

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

1932.

1. Describe briefly the events that led to t[illegible] Reformation in England.
2. What were the causes of the struggle betwe[illegible] the first two Stuart kings and their Parl[illegible]ments ?
3. Give a short account of the expansion of t[illegible] British Empire in the 18th and 19th centuries.
4. Why did the people of England demand Refor[illegible] Bills in the 19th century ? What did these Bi[illegible] refrom ?

1933.

1. Why did Philip II invade England ? Accou[illegible] for the defeat of the Spansih Armada.
2. What were the causes and the results of t[illegible] Glorious Revolution in England ?
3. Narrate the story of British colonisation in [illegible] seventeenth century.
4. Explain what you understand by the Industia[illegible] Revolution. Briefly describe its political n[illegible] economic effects.

1934.

Exp[illegible] did Queen Elizabeth secure Engla[illegible]d Act. [illegible] [illegible]al greatness ?

2. Briefly describe the causes by which Parlia[illegible]ent became [illegible] more powerful during the reig[illegible] of William and Mary.
3. Sho[illegible] clearly the importance [illegible] [illegible]lts victories in the Napoleonic s[illegible]
4. Gi[illegible] a short account of the [illegible]ial Revolution? British Empire in the 19th centu[illegible]

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu